

প্রকাশক–
দারুল কলম
আশ্রাফাবাদ (কুমিল্লাপাড়া), কামরাঙ্গীরচর, ঢাকা-১২১১
ফোন ঃ ৭৩২ ০২২০

মাদানী নেছাব প্রকাশনা – ১০

প্রথম প্রকাশ–
রামাযান, ১৪২৮ হিজরী
অক্টোবর, ২০০৭ খৃষ্টাব্দ

প্রচ্ছদঃ

অক্ষর বিন্যাস ও অঙ্গসজ্জা
হাসান মিছবাহ

কম্পিউটার কম্পোজ–
দারুল কলম কম্পিউটার
আশ্রাফাবাদ (কুমিল্লাপাড়া), কামরাঙ্গীরচর, ঢাকা-১২১১
ফোন ঃ ৭৩২ ০২২০

মুদ্রণে ঃ মোহাম্মদী প্রিন্টিং প্রেস
৪৯, হরনাথ ঘোষ রোড, ঢাকা- ১২১১
ফোন ঃ ৮৬২২৩১৩

হাদিয়া ঃ ২০০/০০ টাকা মাত্র

أعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

(١) الحمد لله رب العلمين * الرحمن الرحيم * ملك يوم الدين *
اياك نعبد وَ اياكَ نستعين * اهدِنا الصراط المستقيم * صِراط
الذين أنعمتَ عليهم، غَير المغضوبِ عَليهم وَ لا الضالين *

بيان اللغة

أعوذ (আমি আশ্রয় গ্রহণ করছি) (ن، عَوْذا و عِياذاً وَ مَعاذا)
عاذَ به : اعتصَمَ به وَ التجَأَ إليه ·
جاء في القرآن : قالت إني أعوذ بالرحمٰن منك إن كنتَ تقيًّا ·
و جاء : إني عُذْتُ بِربي وَ ربِّكم من كلِّ متكبرٍ جبار ·
أعاذَه باللّٰهِ : دَعا له بالحِفْظِ و حَصَّنَه باسمِ اللّٰهِ ·
(তাকে আল্লাহর নামে সুরক্ষিত করলো)
جاء في القرآن : إني أُعِيذُها بِكَ و ذُرِّيَّتَها من الشيطٰن الرجيم ·
تَعَوَّذَ به و استعاذَ به = عاذبه
قال تعالى : فإذا قرأت القرآن فاستَعِذْ بالله من الشيطٰن الرجيم
الشيطن : النونُ فيه أَصْلِيَّة، مِنْ شَطَنَ، أي تَباعَدَ (দূর হয়েছে)
و قيل : النون زائدة، مِن شاطَ يَشِيط : احترقَ غَضَبًا
(ক্রোধে জ্বলেছে)
فمعنى الشيطانِ البعيدُ عَنْ رحمَةِ اللّٰه، أوِالمحترِقُ غضَبا على الإنسانِ،
و الشيطانُ اسْمٌ لِكلِّ مُفسِدٍ منَ الجن و الإنسِ و الحيَوانات
(অনিষ্টকারী ও দুষ্ট জ্বিন বা মানুষ বা প্রাণীকে শয়তান বলা হয়
যেমন- شَياطِينُ الإنسِ وَ الجنِّ)
الرجيم (বিতাড়িত, অভিশপ্ত) رَجمَه (رَجْمًا، ن) رماه بالحجارة - قتله

بالحجارة - لعنه - طرده - هَجَره، فهو مرجوم و رجيم ·
رَجَم (ن، رَجْمًا) : تكلم بالظن ·
قاله رَجْمًا بالغيب، أي : قال ذلك ظنًّا منْ غيرِ دليل
الرحمن - الرحيم : هما من الرحمة (على وَزْنِ فَعْلانَ و فعيلٍ)، و معنى الرحمنِ عظيمُ الرحمَةِ و كثيرُها، و معنى الرحيمِ دائِمُ الرحمَةِ، لأن فعلانَ يدل على الكثرة، و فعيلًا يدل على الدوام ·
و لا يُطلَقُ الرحمٰنُ إلا على اللّٰهِ تعالى، و الرحيمُ يُستعمَل في غيره أيضًا ·
الحمد : الثناء بالجميل على جِهَةِ التعظيم مَعَ المحبَّةِ
মুহব্বতের সাথে, ভক্তির ভিত্তিতে উত্তম গুণের প্রশংসা করা।
الله : قيل أصلُه إلٰهٌ، فَحُذفتِ الهمزَةُ و أُدخِل عليه الألفُ و اللام، فَخُصَّ بِذاتِ اللّٰهِ تعالى، وَ الْإِلٰهُ اسْمٌ لكل معبود ·
الرب : هو مصدرٌ معناه التربيَةُ و إصلاحُ شُؤونِ الغير، أُستعمِل للفاعل، أي : مَنْ يُربِّي و يُصلِح شؤونَ الغير ·
و لايقال الربُّ بلا إضافَةٍ إلا لله تعالى، أما بالإضافةِ فيقال لله و لغيرِ الله، فيقال : ربُّ العالمين، و يقال : ربُّ الدارِ ·
العالمين : العالَم اسمُ جنسٍ لا واحدَ له من لَفظِه · و جُمِعَ العالَمُ نظَرًا إلى أنواعِه، فيقال : عالَم الإنسان، و عالَم الحيَوان و عالم النبات، و عالم الجَماد، و عالم الجن و الملائكة ·
و هو مُشتقٌّ مِنَ العلامَةِ، لأن العالَمَ علامةٌ على وجودِ الخالق ·
الدين : معناه الطاعة و الجزاء · يوم الدين : يوم الجزاء ·
قال تعالى : و مَنْ أحسَنُ دينا (أي : طاعَةً) مِمَّنْ أسلم وجهَه لله و هو مُحسن · و قال : و أخلَصُوا دينَهم لله (أي : طاعَتَهم)
و الدين : الشريعَة، أي : ما شَرَعَه الله تعالى لعباده على لسانِ الأنبياء كما قال : إن الدين عندَ اللّٰهِ الإسلامُ ·
اهدنا (دُلَّنا) : هَدٰى (ض، هُدًى و هَدْيًا و هِدايةً) : أرشَدَه و دَلَّه
يقال : هَداه الله الطريقَ أو إلى الطريقِ أو للطريقِ ·
قال تعالى : قُل إنني هداني ربي إلى صراطٍ مستقيم

و قال : الحمد لله الذي هدانا لهذا

وَ الهداية : إراءَةُ الطريقِ، قال تعالى : إنا هَديناه السبيلَ، أي : أريناه طريقَ الخيرِ و الشرِّ و طريقَ الثواب و العِقاب .

والهداية : الإيصال إلى المطلوب، قال تعالى : إنك لا تهدي مَنْ أحببتَ و لكن اللّٰه يهدي مَن يشاء

و في قوله تعالى : فَاهْدُوهم إلى صراطِ الجَحيم، اسْتِهزاءٌ، كما قال تعالى : فَبَشِّرهم بعذاب أليم .

اهتَدٰى : طلَبَ الهدايَةَ و قَبِلَهـا . وَجَدَ الطريقَ . و يكونُ الاهتداءُ في أمورِ الدنيا و أمورِ الآخرَةِ،

قال تعالى : هو الذي جَعلَ لكم النجومَ لِتَهتدوا بها ، و قال تعالى : فَإن أسلَموا فقَدِ اهتَدَوا .

وَ الهُدٰى : مصدرُ هَدٰى، قال تعالى : إن علينا لَلْهُدٰى .

المستقيم (সোজা, সরল) الذي لا عِوَج فيه (যাতে কোন বক্রতা নেই)

استقامَ الأمرُ : صَلَحَ و استوى (সঠিক হলো, নিখুঁত হলো)

استقام على أمرٍ : ثبَتَ عليه و لَزِمَه (তার উপর অবিচল হলো এবং তাকে নিজের জন্য লাযিম করে নিলো)

المغضوب عليهم : و هم اليهودُ، لأن اللّٰهَ غَضِبَ عليهم لِعِنادهم .

ضَلَّ الطريقَ / عن الطريقِ : فَقَدَ الطريقَ (ض، ضَلالاً و ضَلالَةً)

ضَلَّ السبيلَ / عن السبيلِ : عَدَلَ عن الصراطِ المستقيم .
সরল পথ থেকে বিচ্যুত হলো

ضل عمَلُه / سَعْيُه : ضَاعَ و بَطَلَ .

أَضَلَّه : جعلَه يَضِل . أضل اللّٰهُ أعمالَهم : أبْطَلها

و الضَلال : العُدول عَنِ الصراط المستقيم، وَ ضِدُّه الهدايَةُ، و يُستعمل بِمعنى الخَطَإ و السهْوِ و النسيان، و لِذلك نُسِبَ الضَّلالُ إلى الأنبياءِ و إلى الكُفارِ، وَ إنْ كانَ بين الضلالَين بَوْنٌ بَعيد .

جاء في يعقوب عليه السلام : إنك لفي ضلالك القديم .

بيان الإعراب

بسم : جارٌّ و مجرورٌ متعلِّق بفعلٍ محذوفٍ، و هو أَبْدَأُ، أو هو متعلق بخبرٍ محذوف، و أصلُ العبارَةِ : ابتدائي ثابتٌ بسم الله .

الله : لفظُ الجلالَةِ مضافٌ إليه مجرورٌ، و الرحمٰن الرحيم صِفتان للّٰهِ تعالى

الحمد : مبتدأ مرفوع، وَ لِلّٰهِ جارٌّ و مجرورٌ متعلق بخبر محذوف، و هو ثابت أو واجب .

رب : صفةٌ لِلَفْظِ الجلالَة أو بَدَلٌ منه، تَبِعَه في الجرِّ . الْعٰلمين مضاف إليه مجرور، و علامةُ جرِّه الياءُ، لانه مُلحقٌ بِجَمْعِ المذكَّرِ السالِمِ .

الرحمن الرحيم : صِفتان لِلَفْظِ الجلالَةِ أو بَدَلان منه، و كذا مالك يوم الدين .

إياك : ضميرٌ منفَصِلٌ عن الفعلِ في مَحَلِّ نصبٍ، مفعولٌ به مقدَّم، والتقديم يُفيد الحَصْرَ و التخصيصَ .

اهد : فعلُ أمرٍ في معنى الدعاء . و "نا" ضمير متصل في محل نصبٍ مفعولٌ به أولُ، و الفاعل ضميرٌ مستَتِرٌ وجوبًا، و هو أنت، و الصراط مفعول به ثان أو منصوبٌ بِنَزْعِ الخافِضِ، و المستقيم : صفةٌ لِلصراط .

صراط ... هذا بدَل مِن : الصراطَ، و الذين اسمُ موصولٍ مضافٌ إليه في محل جر، و الجملة بعدها صِلَتُه

غير المغضوب عليهم : هذا بدَل مِنْ : الذين، و الضالين معطوف على المغضوب عليهم، ولا زائِدَةٌ، لِتاكيدِ معنى النَّفْيِ، و معنى النفيِ (موجودٌ) في غَيْرٍ، و هذه الزيادةُ كثيرةٌ في كلام العَرَب .

و المعنى : اهدِنا الصراطَ المستقيمَ، وهو صراطُ الذين أنعمتَ عليهم، و هو صراطُ غيرِ المغضُوبِ عليهم، و صراطُ غير الضالين

الترجمة

সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ রাব্বুল আলামীনের, যিনি রাহমান, রাহীম, যিনি বিচার দিনের মালিক।
আমরা আপনারই ইবাদত করি এবং আপনারই সাহায্য চাই।
আপনি আমাদেরকে বাতলে দিন ছিরাতুল মুস্তাকীম, অর্থাৎ ঐ লোকদের পথ যাদেরকে আপনি নেয়ামত দান করেছেন, গযবগ্রস্ত (ইহুদী) এবং গোমরাহ (নাছারা) দের পথ কিছুতেই নয়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) রাব্বুল আলামীন, রাহমান, রাহীম, ছিরাতুল মুস্তাকীম, নেয়ামত ইত্যাদি শব্দগুলোর আলাদা আবেদন রয়েছে, এজন্য এগুলোর বাংলা প্রতিশব্দ ব্যবহার করা হয়নি। তুমি ইচ্ছা করলে বাংলা প্রতিশব্দ ব্যবহার করে এভাবে তরজমা করতে পারো–

সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর, যিনি বিশ্ব-জগতের প্রতিপালক, যিনি পরম দয়ালু; চিরদয়াময়, যিনি বিচারদিবসের অধিপতি। আমরা আপনারই উপাসনা করি এবং আপনারই সাহায্য প্রার্থনা করি।

আপনি আমাদেরকে প্রদর্শন করুন সরল পথ; যাদের প্রতি আপনি করুণা বর্ষণ করেছেন[১] তাদের পথ; যারা অভিশপ্ত ও পথভ্রষ্ট তাদের পথ কিছুতেই নয়।

رحمن এর কাঠামো (ওযন) হলো فعلان যা বিরাটতা ও অধিকতা বোঝায়, তাই এর তরজমা করা হয়েছে, পরম দয়ালু। আর رحيم এর কাঠামো হলো فعيل যা دوام ও স্থায়িত্ব বোঝায়, তাই তরজমা করা হয়েছে, চিরদয়ালু।

(খ) 'জগতের' পরিবর্তে 'বিশ্বজগতের' বলার উদ্দেশ্য হলো বহুবচনের অর্থ রক্ষা করা। কেউ কেউ তরজমা করেছেন, সমগ্রজগতের / সারা জাহানের / সকল সৃষ্টির – এগুলো গ্রহণযোগ্য।

(খ) ملك يوم الدين – শব্দের 'সমশ্রেণিতা' রক্ষা করার জন্য 'বিচার দিনের মালিক' এবং 'বিচার দিবসের অধিপতি' তরজমা করা হয়েছে।

(গ) 'অভিশপ্ত' দ্বারা ইহুদী এবং 'পথভ্রষ্ট' দ্বারা খৃস্টানসম্প্রদায় উদ্দেশ্য, তাই তরজমায় দুই বন্ধনীর মাঝে তা যুক্ত করা হয়েছে। 'নাছারা' হচ্ছে কোরআনী শব্দ তাই 'খৃস্টান'-এর পরিবর্তে তা ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঘ) غير المغضوب عليهم و لا الضالين এখানে لا অব্যয়টি নাফীর অর্থকে তাকীদ করেছে, বাংলায় তা প্রকাশ করা হয়েছে

১. কিংবা 'যাদেরকে আপনি কল্যাণ দান করেছেন

'কিছুতেই' শব্দটি যোগ করে।
এভাবেও তরজমা হতে পারে- যারা অভিশপ্ত তাদের পথ নয়, এবং নয় যারা ভ্রষ্ট তাদেরও পথ।

أسئلة :

١ - ماذا تعرف عن الرحمن و الرحيم ؟
٢ - اذكر معنى الهداية
٣ - أعرب قوله تعالى : الحمد لله رب العالمين
٤ - أيَّ صراطٍ أريدَ بالصراط المستقيم ؟
٥ - শব্দের 'সমশ্রেণীতা' রক্ষা করে সূরাতুল ফাতিহার দু'রকম তরজমা বলো
٦ - জগত ও বিশ্বজগতের পার্থক্য বলো

(٢) و مِنَ الناسِ من يقولُ اٰمنا بالله وَ باليومِ الاٰخِرِ وَ ما هم بِمُؤمنين * يُخٰدعون اللّٰه و الذين اٰمنوا ، و ما يَخْدَعون اِلّا انفُسَهم و ما يَشعرون * في قلوبهم مَرَضٌ فَزادَهم اللّٰه مَرَضا ، و لهم عذاب اليم بما كانوا يَكذبون * و اذا قيل لهم لا تُفسدوا في الارض قالوا اِنما نحن مُصلحون * اَلا اِنهم هُمُ المُفْسِدون وَ لكنِ لا يَشعرون * و اذا قيل لهم اٰمِنوا كَما اٰمن الناسُ قالوا اَنُؤْمِن كما اٰمن السُّفَهاء ، اَلا اِنهم هم السفهاء و لكن لا يعلمون * و اذا لَقُوا الذين اٰمَنوا قالوا اٰمَنا ، و اذا خَلَوا الى شَيٰطينهم قالوا اِنّا معكم اِنما نحن مُستَهزِءون * اللّٰه يستَهزِئُ بهم و يَمُدُّهم في طُغْيانِهم يَعمَهون * اولئك الذين اشتَرَوُا الضلٰلةَ بالهُدٰى، فما رَبِحَتْ تِجارتُهم و ما كانوا مُهْتَدين *

بيان اللغة

الناس : اسمُ جمعٍ لا واحدَ له من لَفْظِه، و مادَّتُه همزةٌ و نونٌ و سينٌ، و حُذِفت فاؤُه، و أصلُه أُناسٌ، و الواحد إنسان .

يُخْدعون : خادَعه (مُخادَعة و خِداعا) : خَدَعه (و فيه معنى المُبالَغة)
خَدعَه (ف، خَدْعًا) : أظهَرَ له خلافَ ما يُخفِيه، و أراد به مَكرُوهًا
তাকে ধোকা দিলো
السفهاء : جمعُ سفيهٍ : الأحمَق، الجاهِل . سَفِهَ (س، سَفَهًا، سَفَاهًا، سَفاهَةً)
قَلَّ عقلُه و خَفَّ . جَهِلَ নির্বোধ হলো। মূর্খ হলো
يستهزئ بهم : (أي : يعاقبُهم على استِهزائِهم) استَهْزَأَ به : هَزَأَ به
هَزَأَ به و منه (ف، هَزْءاً و هُزُوءًا) سخر به أو منه তাকে উপহাস করলো
هَزِئَ به و منه (س، هُزْءًا، هُزُؤًا و هُزُوءا) : هزأ
وإذا خَلَوا إلى شيٰطينهم : (أي : ذهبوا إلى رُؤسائهم و لَقُوهم في خَلْوَةٍ)
خلا فلانٌ بِصاحِبِه (ن، خَلْواً و خَلْوَةً) : انفرَد به في خَلوة
و يقال : خَلا إليه و خلا معه
خلا المكانُ (ن، خُلُوًّا و خَلاءً) : فَرَغ عمّا كان فيه .
يقال : خلا المكانُ مِنْ أهلِه و عَنْ أهلِه
خلا الوقتُ و الشهرُ و الشَّبابُ : مضى و ذهب
يَمُدُّهم : (তাদেরকে ঢিল দেন) (ن، مَدًّا) و له مَعانٍ، و إليك بعضَها :
مد اللّٰهُ الأرضَ : بَسَطَها . مد اللّٰهُ عُمرَه : أطالَه
مد الرجلَ في ... : أمْهَلَه في .... (وهو المقصودُ في الاية)
তাকে কোন বিষয়ে সুযোগ দিলো / ঢিল দিলো
مد يدَه إلى .... : بَسَطَها إلى ....
مد بصَرَه /عينَه إلى : طَمَح إليه و طَمِع فيه
مد الشيءَ : زاد فيه (يقال : مد النُّهَيْرُ النهرَ)
قال تعالى : (١) و هو الذي مَد الأرضَ و جعل فيها رواسِيَ و أنهارًا
(٢) الم ترَ إلى رَبك كيف مَد الظلَّ ؟
(٣) و لا تَمُدَّنَّ عينَيْكَ إلى ما مَتَّعنا به .
(٤) و البحرُ يَمده من بعدِه سبعةُ أبحُرٍ (أي يَزيده)
طُغيان : تجاوُزُ الحدِّ في الظلم أو في الماء، (ف)

قال تعالى : (١) لما طَغَى الماءُ حملنُكم في الجارِيَة .
(٢) اِذهب إلى فرعونَ إنه طَغَى .
أطغاه المالُ / السُّلطانُ : جعَله طاغيًا .
يعمهون : العَمَه : التردُّد في الأمر من التحيُّرِ (ف) দিশেহারা হওয়া
قال تعالى : زيَّنَّا لهم أعمالَهم فهم يَعْمَهون .

بيان الإعراب

و مِن الناس مَن يقول : من الناس متعلق بمحذوفٍ، خبرٌ مقدَّم، و مَن يقول موصولٌ و صلةٌ، و هو مبتدأ مؤخَّرٌ، و أصلُ العبارةِ : مَنْ يقول أمنا معدودٌ مِن الناسِ .

و ما هم بمؤمنين : الواو حاليَّة، و الباء حرفُ جرٍّ زائد يؤكِّد معنى النفْيِ .

إلا أنفسهم : إلا أداةُ حصرٍ، و أنفسَهم مفعول به

مرضا : هذا مفعول به ثان، أو تمييزٌ من نسبة الفعل إلى المفعول، و هو تمييزٌ محوَّل عن المفعول به، و أصل العبارة : زاد اللهُ مرضَهم

بما كانوا يكذبون : الباء سببية، و ما مصدرية، أي : بِكَوْنِهم يَكذِبون، و حرفُ الجرِّ متعلقٌ بمحذوفٍ، و هو نعتٌ ثانٍ لـ : عذابٌ، أي : عذاب أليم مُسْتَحَقٌّ بِكَونِهم كاذبين .

إذا : ظرفٌ للزمن المستقبَل فيه معنى الشرطِ، و هو مضاف إلى شرطه و معتلِّق بجوابه . و قد يخلو إذا مِنْ معنى الشرط .
و كلُّ ظرفٍ يُضاف إلى جملة بعدَه .

لقوا : ضمير الفاعل يرجع إلى : مَنْ، و هم المنافقون، الذين أمنوا بِألسنتهم و كفروا بقلوبهم .

في طغيانهم : حرف الجر مع مجروره يتعلق بـ : يمد، و جملة يعمهون في مَحَلٍّ نصبٍ حالٌ من مفعولِ يمُدُّ

أولئك : اسمُ اشارةٍ مبنيٌّ على الكسرِ، في مَحَلٍّ رفعِ مبتدأٌ، و الموصول مع صلته خبر .

الترجمة

আর মানুষের মাঝে কিছু লোক এমনও রয়েছে যারা বলে, ঈমান

এনেছি আমরা আল্লাহর প্রতি এবং শেষ দিনের প্রতি, অথচ তারা 'মোটেও' মুমিন নয়।

'দাগাবাজি' করে তারা আল্লাহর সাথে, এবং যারা ঈমান এনেছে তাদের সাথে; অথচ (বাস্তবে) ধোকা দিতে পারে না তারা নিজেদেরকে ছাড়া কাউকে; অথচ (সে সম্পর্কে) তারা অনুভূতি রাখে না।

তাদের অন্তরে রয়েছে বিরাট 'মরয', অনন্তর বাড়িয়ে দিয়েছেন তাদেরকে আল্লাহ 'মরয'। আর তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব, (ঈমানের দাবীর বিষয়ে) তাদের মিথ্যা কথনের কারণে।

আর যখন বলা হয় তাদেরকে, ফাসাদ করো না তোমরা যমিনে, তখন তারা বলে, আমরা তো 'শুধু' সংশোধন করি।

সাবধান! নিঃসন্দেহে তারাই হলো ফাসাদকারী, কিন্তু তারা (সে সম্পর্কে) অনুভূতি রাখে না।

আর যখন বলা হয় তাদেরকে, ঈমান আনো তোমরা যেমন ঈমান এনেছে অন্য লোকেরা, তখন তারা বলে, আমরা কি ঈমান আনবো যেমন ঈমান এনেছে নির্বোধেরা! সাবধান! নিঃসন্দেহে তারাই নির্বোধ, তবে তারা (তা) জানে না।

আর যখন দেখা করে তারা তাদের সঙ্গে যারা ঈমান এনেছে তখন তারা বলে, ঈমান এনেছি আমরা। আর যখন একান্তে মিলিত হয় তাদের 'দুষ্ট নেতাদের' সঙ্গে তখন বলে, অবশ্যই আমরা তোমাদের সঙ্গে আছি; আমরা তো শুধু তামাশা করি। আল্লাহ তাদের তামাশার জবাব দেন এবং ঢিল দেন তাদেরকে তাদের স্বেচ্ছাচারের ক্ষেত্রে, এমন অবস্থায় যে, দিশেহারা হয় তারা।

ওরা ঐ সমস্ত লোক যারা খরিদ করেছে হেদায়াতের বিনিময়ে গোমরাহি। ফলে লাভজনক হয়নি তাদের 'তেজারাত' এবং তারা হেদায়াতপ্রাপ্তও হয়নি।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و من الناس من يقول (আর মানুষের মাঝে কিছুলোক এমনও রয়েছে যারা বলে) এটি হচ্ছে মূল তারকীবের অনুগামী তরজমা। সরল বাংলায় এমন তরজমাও হতে পারে–

(০) মানুষের মাঝে কিছু লোক বলে ...,

(০০) একদল লোক বলে, ...

(খ) و ما هم بمؤمنين (অথচ তারা 'মোটেও' মুমিন নয়)–

অতিরিক্ত ب অব্যয়টি যে তাকীদ প্রকাশ করেছে, 'মোটেও' শব্দটি হচ্ছে সেই তাকীদের তরজমা।

(গ) يُخَدِّعون এর মাঝে يَخْدَعون এর তুলনায় অতিশয়তার অর্থ রয়েছে। সুতরাং يخادعون এর তরজমা হবে, তারা দাগাবাজি/ ধোকাবাজি/ফেরেববাজি করে, আর يَخْدَعون এর অর্থ হবে, তারা ধোকা দেয়।

(ঘ) و الذين اٰمنوا (এবং যারা ঈমান এনেছে তাদের সাথে) সাধারণভাবে মাওছূল ও ছিলাহ-এর শাব্দিক তরজমা করাই উত্তম, যেমন এখানে করা হয়েছে। তবে এমন তরজমাও করা যায়, 'আল্লাহর সাথে এবং মুমিনদের সাথে ....'

(ঙ) مرض এর তানবীনকে تعظيم বা বিরাটত্ব প্রকাশের জন্য নেয়া হয়েছে। এখানে 'ব্যাধি'-এর পরিবর্তে 'মরয' ব্যবহার করা হয়েছে এজন্য যে, তাতে নিন্দাভাব অধিক প্রকাশ পায়।

فَزَادَهم اللّٰهُ مَرَضا (অনন্তর বাড়িয়ে দিয়েছেন তাদেরকে আল্লাহ 'মরয') مَرَضا কে দ্বিতীয় مفعول به ধরে এ তরজমা করা হয়েছে। مَرَضا কে তামীয ধরে এবং তামীযের মূলরূপটি বিবেচনা করে তরজমা করা যায়, 'অনন্তর বাড়িয়ে দিয়েছেন আল্লাহ তাদের 'মরয''।

(চ) انما نحن مصلحون (আমরা তো 'শুধু' সংশোধন করি) 'শুধু' হচ্ছে انما এর 'হছর' এর তরজমা, আর 'তো' হচ্ছে إن এর তাকীদের তরজমা।

'সংশোধন করি' এখানে اسم الفاعل কে مضارع অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে। থানবী (রহ) مُستهزِؤون এর ক্ষেত্রে তা করেছেন, কিন্তু مصلحون এর ক্ষেত্রে তা করেননি। কিতাবের তরজমায় مستهزؤون ও مصلحون উভয় ক্ষেত্রেই তা করা হয়েছে।

(ছ) ألا এর তরজমা, থানবী (রহ) করেছেন 'মনে রেখো', আর শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, 'জেনে রেখো'। অধিকাংশ বাংলা মুতারজিম এটাকেই অনুসরণ করেছেন। তবে حرف التنبيه হিসাবে এর সর্বোত্তম তরজমা হলো, 'সাবধান'।

(জ) يستهزئ بهم (তাদের তামাশার জবাব দেন) শাব্দিক তরজমার পরিবর্তে হাকীকতের ভিত্তিতে এ তরজমা করা হয়েছে।

(ঝ) يعمهون (এমন অবস্থায় যে, তারা দিশেহারা হয়) এটি তারকীব অনুগামী তরজমা। সরল তরজমা এমন হতে পারে– ফলে তারা দিশেহারা হয়ে পড়ে।

(ঞ) اشتروا (খরিদ করেছে) বিকল্প তরজমা, 'গ্রহণ করেছে'। তখন تجارتهم এর তরজমা হবে, 'তাদের বিনিময়'।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ الناسُ .

٢ – اذكر معانِيَ مَدَّ - يَمُدُّ - مَدًّا .

٣ – عَلامَ عُطِفَ قولُه تعالى : و الذين آمنوا .

٤ – عَيِّنِ الشرطَ و جوابَه في قولِه تعالى : و إذا قيل لهم ....

٥ – يَخدعون ও يخادعون এর তরজমার পার্থক্য আলোচনা করো

٦ – ألا এর তরজমা আলোচনা করো

(٣) هو الذي خلَقَ لكم ما في الارضِ جَميعا ثم استوٰى إلى السماء فَسَوّٰهن سبعَ سمٰوٰتٍ و هو بِكلِّ شيءٍ عليم * و اذ قال ربُّك للملٰئكةِ اني جاعِل في الارض خليفةً، قالوا أتَجعل فيها مَن يُفسِد فيها و يَسْفِك الدماءَ، و نحن نُسبِّح بحَمْدِك و نُقَدِّس لكَ، قال اني أعْلَم ما لا تَعلمون * و عَلَّم اٰدمَ الاسماءَ كلَّها ثم عَرَضَهم على الملٰئِكَةِ فقال اَنبِئُوني بِاسماء هٰؤلاَءِ ان كنتم صٰدقين * قالوا سُبحٰنك لا عِلْمَ لنا اِلاَّ ما عَلَّمْتَنا ، اِنك انت العليمُ الحكيم * قال يٰاٰدمُ اَنبِئْهُم باسمائِهم، فَلمَّا اَنْبَأهم بِاسمائهم قال اَلَمْ اَقُل لكم اِني اعلَم غيبَ السمٰوٰت و الارض و اَعلم ما تبدون و ما كنتم تكتُمون *

بيان اللغة

سَوّٰهن (সেগুলোকে নিখুঁতভাবে বানালেন) سَوَّى شيئًا تَسْوِيَة : قَوَّمَه و عَدَّلَه و جعله سَوِيًّا সুষ্ঠ, সঠিক ও নিখুঁত বানালো

سَوّٰى بينَهما : ساوٰى بينهما ، أي جَعَلَهما يَتَماثَلانِ و يَتَعادلانِ
উভয়কে সমান করলো, উভয়ের মাঝে সমতাবিধান করলো

استَوٰى شيءٌ : استقام و اعتدل — সুষ্ঠু, সঠিক ও নিখুঁত হলো

استوى الشيئان : تساويا — বস্তুদুটি সমান হলো

استوى على سَريرِ المُلْكِ — রাজসিংহাসনে আরোহণ করলেন। রাজত্বভার গ্রহণ করলেন

استوى إليه : قَصَدَه و توجَّهَ إليه — তার অভিমুখী হলো

الرحمٰن على العرشِ اسْتَوٰى : ارتَفَع على العرشِ (و نحن لا نعرف حقيقَةَ هذا الاستواء، و لٰكِنْ نُؤمِن بما قاله الرحمٰن)

إذ : اسمُ ظرف بِمعنى حِينٍ، مبنيٌّ على السُّكونِ، يكون ظرفًا لِحَدَثٍ ماضٍ، و تُضاف إلى جملة فعلية و اسمية . و قد تُحذف الجملة، و يُنَوَّن إذ عِوَضًا عن الجملةِ، و يُكْسَرُ إذ حِينَئِذٍ .

خليفة : (الهاء للمبالغة) جمعه خلائف و خلفاء : النائب، المستخلَف، السلطان الأعظم .

الخلافة : النيابة عن الغير، الإمامة، مَنْصِب الخليفة .

و النيابة تكون لِغَيْبَةِ المَنُوبِ عنه و لموته و لِعَجْزِه، و تكونُ لِتشريف المُستخلَف، و على هذا الوجه الأخير جعل اللّٰه الإنسانَ خليفتَه في الأرض . استخلفه : جعله خليفة

جاعل (বানানো) جعل (ف. جعلا) هذا فعل عام، يُستعمل مكانَ كثير من الأفعال، نحو : أوجَدَ و خلَقَ، و صَيَّر، و عَيَّن، و اتخذَ، و وضَعَ
সৃষ্টি করলো, বানালো, নির্ধারণ/নিযুক্ত করলো, গ্রহণ করলো, স্থাপন করলো

يسفِك الدماء : (يُرِيقها) (রক্তপাত করবে) (ض، سَفْكًا)

نسبح : التسبيح . تنزيه الله تعالى — আল্লাহর পবিত্রতা বর্ণনা করা

سَبَّح اللّٰهَ و سَبَّح لِلّٰهِ . — আল্লাহর পবিত্রতা বর্ণনা করলো

سبح بِحَمْدِ اللّٰه — আল্লাহর প্রশংসা করার মাধ্যমে তাঁর পবিত্রতা বর্ণনা করলো

نقدس : قَدَّسَ لِلّٰهِ : عظَّمه و أعلَن كبرياءَه

عَرَض عليه شيئًا (ض، عَرْضًا) : أَراه إيَّاه، قَدَّمه إليه . পেশ করলো
أنبِؤوني (আমাকে অবহিত করো) أنبأه و نَبَّأه الخبرَ أو بالخبرِ : أخبَره به
تكتُمون : (تُخفون) كتَم شيئا (ن، كَتْما و كِتمانا) : أخفاه
و يتعَدَّى كتَمَ إلى مفعولين، فيُقال : كتمتُ فلانًا الحديثَ، و تُزاد مِنْ جوازًا في المفعولِ الأول، فيقال : كتمتُ مِن فلانٍ الحديثَ

بيـان الإعراب

هو الذي خلق لكم ما في الأرض جميعا : هو في محل رفع مبتدأ، و الذي اسمٌ موصولٍ في محل رفعٍ خبرٌ، و الجملة التي بعده صلَتُه .
و ما اسمٌ موصولٍ في محل نصب مفعول به، و في الأرض يتعلق بمحذوف، و هو صِلة الموصول
جميعا : (هو بمعنى مجتمعا) حال من مفعولِ خلَقَ، و هو : ما .
إلى السماء : يتعلق بـ : استوى على وجهِ التضمين، لأنه يتضمَّن معنى قَصَدَ أو توجَّه . و سبعَ سمٰوٰتٍ مفعول به ثان لـ : سَوَّاهن،
و إذ قال ربك للملئكة : إذ في محل نصب مفعولٌ لِفعلٍ محذوف، و هو اذكُرْ، او هو ظرفٌ لـ : قالوا، و أصل العبارة على الوجه الأول : اذكر حينَ قولِ ربِّك للملٰئكة ...، و على الوجه الثاني : قال الملٰئكةُ حينَ قولِ ربِّك لهم ...
و نحن نسبح بحمدك : هذه الجملة حال من فاعل تجعل، و بحمدك يتعلق بمحذوف، و هو حال من فاعِلِ نُسبح، أي : متلبسين بحمدك .
و علم آدم الأسماء ثم عرضهم على الملئكة : الأسماء مفعول به ثان لـ : عَلَّم، و هو على حذفِ المضاف إليه، أي : أسماءَ المُسَمَّيَاتِ .
و جملةُ عَرَضَهُم عطفٌ على جملةِ علَّمَ آدم الأسماءَ، أي : عرض مُسَمَّيَاتِ الأسماء، و غَلَبَ العُقَلاءَ عَلىٰ غيرِ العُقَلاء، فَأَتىٰ بِضمير العقلاء .
أنبؤوني : فعلُ أمرٍ، و فاعلٌ و مفعولٌ به، و الأمرُ هنا لِلتعجيز .
سبحنك : مفعولٌ مطلق، و هو مصدرٌ لا يُستعمَل إلا مضافا، منصوبٌ بإضمارِ فعْلِه أي : نسبح سبحنك .

لا علم لنا : لا نافية للجنس، و عِلْمَ اسمُها المبني على الفتح، و لنا متعلق بِخَبَرٍ لا المحذوفِ ·

أنت : ضميرُ فصلٍ، لا محلَّ له من الإعراب، و العليم خبرُ إن الأولُ، و الحكيم خبر إن الثاني · و يجوز أن يكون أنت ضميرا منفصلا في محل رفع على الابتداء، خبره العليم الحكيم · و الجملة الإسمية في محل رفع خبر إن ·

الترجمة

তিনিই ঐ সত্তা যিনি সৃষ্টি করেছেন তোমাদের (উপকারের) জন্য যা কিছু যমীনে আছে তা 'সকল'। তারপর 'অভিমুখী' হলেন তিনি আসমানের (সৃষ্টির) দিকে, অনন্তর নিখুঁতভাবে বানালেন সেগুলোকে সাত আসমান। আর তিনি তো সর্ববিষয়েই অবগত।

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করুন) যখন বললেন আপনার প্রতিপালক ফিরিশতাসমাজকে, আমি বানাতে যাচ্ছি পৃথিবীতে একজন 'খলীফা'। তারা নিবেদন করল, আপনি কি বানাবেন সেখানে এমন সম্প্রদায় যারা ফাসাদ করবে সেখানে এবং রক্তপাত ঘটাবে! অথচ আমরা পবিত্র বর্ণনা করে চলেছি আপনার প্রশংসাসহ এবং বড়ত্ব ঘোষণা করে চলেছি আপনার। তিনি বললেন, নিঃসন্দেহে আমি জানি যা তোমরা জানো না।

আর তিনি আদমকে (বস্তুসমুদয়ের) সকল নাম (ও গুণ)-এর ইলম দান করলেন। তারপর তিনি উপস্থাপন করলেন সেগুলোকে ফিরেশতাদের সামনে, অনন্তর বললেন, বলে দাও তোমরা আমাকে এগুলোর নাম, যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাকো (খেলাফতের যোগ্যতার ধারণার ক্ষেত্রে)।

তারা নিবেদন করলো, আপনি চিরপবিত্র, আপনি আমাদেরকে যা ইলম দান করেছেন তা ছাড়া আমাদের কোন ইলম নেই। নিঃসন্দেহে আপনিই সর্বজ্ঞানী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

তিনি বললেন, হে আদম! বলে দাও তুমি তাদেরকে এগুলোর নাম। অনন্তর যখন বলে দিলেন আদম তাদেরকে সেগুলোর নাম তখন আল্লাহ বললেন, আমি কি বলিনি তোমাদেরকে যে, আমি জানি আসমান (সমূহের) ও যমীনের সমস্ত গোপন বিষয় এবং জানি (ঐ বিষয়) যা প্রকাশ করো তোমরা এবং যা গোপন করো তোমরা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) خلق لكم (সৃষ্টি করেছেন তোমাদের [উপকারের] জন্য) ل অব্যয়টি অনুকূলতা, কল্যাণ ও উপকারিতা প্রকাশ করে, علٰى অব্যয়টি এর বিপরীত, এ জন্য বন্ধনীতে 'উপকারের' কথাটি যোগ করা হয়েছে।

ثم استوى إلى السماء (তারপর 'অভিমুখী' হলেন তিনি আসমানের [সৃষ্টির] দিকে) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, আসমানের দিকে মনোনিবেশ করলেন/মনোযোগী হলেন। আল্লাহর শানে এই শব্দপ্রয়োগ অসঙ্গত মনে হয়।

(খ) فسوّٰهن سبعَ سمٰوٰت (অনন্তর নিখুঁতভাবে বানালেন সেগুলোকে সাত আসমান) আল্লাহ তাআলা خلق এর পরিবর্তে سَوّٰى ব্যবহার করেছেন, যাতে নিখুঁত হওয়ার অর্থ রয়েছে। তাই سوى এর তরজমা শুধু 'সৃষ্টি করেছেন' করা সঠিক নয়।

(গ) إني جاعل (বানাতে যাচ্ছি) 'বানাবো' এর পরিবর্তে 'বানাতে যাচ্ছি' তরজমা করার কারণ এই যে, তাতে إن এর তাকীদ উঠে আসে এবং নিরংকুশ ক্ষমতার অভিব্যক্তি প্রকাশ পায়। থানবী (রহ) 'বানাবো' তরজমা করেছেন এবং তাকীদের জন্য স্বতন্ত্র শব্দ 'অবশ্যই' ব্যবহার করেছেন। কিন্তু তাতে নিরংকুশ ক্ষমতার ভাবটি প্রকাশ পায় না।

(ঘ) و إذ قال ربك للملٰئكة (আর [ঐ সময়কে স্মরণ করুন] যখন বললেন আপনার প্রতিপালক ফিরেশতাসমাজকে) এ বন্ধনী যুক্ত হয়েছে ব্যাকরণগত প্রয়োজনে।

এখানে الملٰئكة এর ক্ষেত্রে বহুবচনের পরিবর্তে সম্প্রদায়গত দিকটি প্রধান, তাই 'ফিরেশতাসমাজ' তরজমা করা হয়েছে। 'ফিরেশতাসম্প্রদায়'ও বলা যায়। 'ফিরশতাদেরকে' এ তরজমাও ভুল নয়।

(ঙ) 'খলীফা' শব্দটির স্বতন্ত্র আবেদন ও মর্যাদা রয়েছে। তাই বাংলা প্রতিশব্দ 'প্রতিনিধি' এর ব্যবহার এ ক্ষেত্রে সঙ্গত মনে হয় না। শায়খায়ন نائب (স্থলবর্তী) শব্দটি ব্যবহার করেছেন।

(চ) من يُفسد فيها (এমন সম্প্রদায় যারা ফাসাদ করবে সেখানে) শব্দগতভাবে من হচ্ছে মুফরাদ, এ হিসাবে পরবর্তী ফেয়েল দু'টি মুফরাদ এসেছে, কিন্তু ফিরেশতাদের উদ্দেশ্য হযরত আদম (আঃ) নন, বরং মানবসম্প্রদায়, তরজমায়

সেটাই বিবেচনা করা হয়েছে।

(ছ) نقدس لك و (এবং বড়ত্ব ঘোষণা করে চলেছি আপনার) استمرار ও অব্যাহততার দিক বিবেচনা করে এ তরজমা করা হয়েছে।

(জ) علم آدمَ الأسماء كلَّها (তিনি আদমকে [বস্তুসমূদয়ের] সকল নাম [ও গুণ] এর ইলম দান করলেন) থানবী (রহ) বলেছেন, এখানে الأسماء শব্দটি বৃহত্তর অর্থে, অর্থাৎ নাম ও ছিফাত উভয় অর্থে এসেছে। বন্ধনীতে সেদিকেই ইঙ্গিত করা হয়েছে। আর প্রথম বন্ধনীতে উহ্য مضاف إليه এর দিকে ইঙ্গিত রয়েছে।

أسئلة :

١ – ما معنى الخلافَةِ و كم قِسما النِّيابَةُ ؟ و على أيِّ وجهٍ كانت خلافةُ الإنسان في الأرض ؟

٢ – أعرب قوله : خليفةً .

٣ – علامَ عُطف قولُه تعالى : و يسفِك الدماء ؟

٤ – بم يتعلق قوله : بحمدك ؟

٥ – سوّٰهن এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – قلنا للملئكة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) يٰبني إسرءيلَ اذكروا نِعمَتي التي انعمتُ عليكم و اَوفوا بِعهدي اُوفِ بِعَهدكم، و ايّايَ فَارْهَبون * و اٰمنوا بما اَنزلتُ مصدِّقا لما مَعَكم و لا تكونوا اَوَّلَ كافرٍ به، و لا تَشتروا باٰيتي ثَمنا قَليلا، وَ اِيَّاي فَاتَّقون * و لا تَلْبِسوا الحقَّ بِالباطِلِ و تَكتُموا الحق وَ انتم تعلمون * و اَقِيموا الصَّلٰوة و اٰتوا الزكٰوةَ و اركَعُوا مَع الرّٰكعين * اَ تأمرون الناسَ بِالبِرِّ و تَنْسَوْنَ انفُسكم و انتم تَتلون الكِتٰب، اَ فَلا تعقِلون * و استَعينوا بِالصَّبرِ و الصلٰوة، وَ اِنَّها لَكبيرَةٌ اِلَّا على الخٰشِعين *

الذين يظنون انهم ملقوا ربهم و انهم اليه رجعون * يبني
اسرءيل اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم و اني فضلتكم على
العلمين * و اتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا و لا
يقبل منها شفاعة و لا يؤخذ منها عدل و لا هم ينصرون *

بيان اللغة

اسرائيل : عَلَمٌ أعجميٌّ، مُنع مِن الصرفِ، و هو مركب إضافي، فانَّ إسرا هو العبدُ بِالعِبْرِيَّة، وَ إيلَ هو الله، و هو لَقَبٌ لِيعقوبَ عليه السلام .

نِعمة : جمعها نِعَم، (مَا أُنعِم به من رزقٍ و مالٍ و غيرهما)
রিযিক, মাল, ইত্যাদি যা দান করা হয়েছে, নেয়ামত।

و النِّعْمَة : الحال الحَسَنة উত্তম অবস্থা

نَعمة : الرَّفاهَة و طِيبُ العَيشِ، সচ্ছলতা ও প্রাচুর্য

نَعيم : ما استُمْتِعَ به যা ভোগ করা হয়

سَعَةُ العيشِ و حُسن الحالِ সচ্ছলতা ও প্রাচুর্য, উত্তম অবস্থা

يقال : نعيم الجنة، نعيم الدنيا، جنات النعيم

أنعَمَ عليه بِشيءٍ : أعطاه إياه · نَعَّمه : جَعَلَه ذا نَعيمٍ

أوفُوا : (তোমরা পূর্ণ করো) أَوفَى بالوَعْدِ و العَهْدِ (إيفاءً) و وَفَى بالوعدِ (ض، وَفاءً) : عَمل بالوعد و حافَظ عليه ওয়াদা রক্ষা করলো

وَفَّى نَذرَه و أَوْفَى : أَدَّى النذرَ নযর পূর্ণ করলো

أوفَى الكيلَ : أَتَمَّ الكيلَ মাপ পূর্ণ করে দিলো

أوفَى فلانًا حقَّه : أعطاه إيَّاه وافيا تامًّا তাকে তার হক পূর্ণরূপে দান করলো

وَفَّى فلانًا/إلى فلانٍ حقَّه = أوفَى

فارهَبون : رَهِبه (س، رَهَبا، رَهْبَة) خافه · أرهبه : أخافه

لا تلبِسوا : لَبَس عليه الأمرَ (ض، لَبْسًا) : خَلَطه عليه حتى لا يعرفَ حقيقَتَه তার জন্য বিষয়টিকে বিভ্রাটপূর্ণ করে দিল

لَبَس الحقَّ بالباطِلِ : خَلَطه به حتى لا يُمكِنَ تَمْيِيزُ الحق من الباطل

হককে বাতিলের সাথে মিশিয়ে/গুলিয়ে ফেললো।

জটিল হলো, বিভ্রাটপূর্ণ হলো　　　　التبس عليه الأمرُ

خٰشعين : خَشَع (ف، خُشوعا) خَضَع و ذَلَّ و خاف

অনুগত হলো, ভয় করলো।

আপন প্রতিপালকের অনুগত হলো　　　　خَشَع لربه : خَضَع له.

নীচু হলো　　　　خشع صوتُه : انخَفَضَ (و خشعت الأصوات للرحمٰن)

لا تجزي : (যথেষ্ট হবে না, উপকার দান করবে না)

جَزٰى شيءٌ (ض، جَزاءً) كَفٰى و أغنٰى

তাকে তা দ্বারা প্রতিদান দিলো　　　　جَزٰى فلانًا بكذا : كافَأَه بكذا

তাকে তার প্রতিদান দিলো　　　　جَزاه على كذا

তাকে অমুকের পক্ষ হতে প্রতিদান দিলো　　　　جزاه عَن فلانٍ

عَدل : فِداء মুক্তির বিনিময় إنصاف ন্যায়বিচার

بيان الإعراب

اسرءيل : مضاف إليه مجرور بالفتحة، لأنه ممنوع من الصرف للعلميَّة و العُجْمَةِ .

أنعمت عليكم : الجملة صلة الموصول، و العائد محذوف، أي : بها

أوف : مضارع مجزوم، لأنه جواب الطَّلَب، و علامَةَ جَزمه حَذفُ لامِه، لأنه ناقص، و فيه معنى جوابِ الشرط، أي : إن تُوفوا أوفِ .

إياي : ضمير منفصل مبني في محل نصب مفعول به لِفعلٍ مقدَّر، يُفَسِّره الفعلُ المذكور، و ليس مفعولا به مقدَّما للفعل المذكور، لأنه قَدِ اسْتَوْفٰى مفعولَه، و هو الياء المقدَّرة، و الأصل : فارهبوني .

معكم : ظرفُ مكان، متعلق بِشِبْهِ فعل محذوف، و هو صلة الموصول .

أوَّلَ كافرٍ : خبرُ الناقصِ، و به (أي : بما أنزلتُ) يتعلق بـ : كافر .

إياي فاتقون : تُعرَب إعرابَ إيَّايَ فارهبون

و الفاء في هذا التركيب الذي تكرَّرَ في القرآن كثيرًا، فيها قولان : أحدهما أنها عاطفة، عُطف بها الجملة المذكورة على الجملة المقدرة، أي : تَنَبَّهوا فارهَبوا . و ثانيهما أنها زائدة جاءت لتوكيد المعنى و تَزيينِ اللفظ .

و تكتموا : الواو عاطفة، و تكتموا مضارع مجزوم عطفا على تلبسوا، داخلةٌ تحتَ حكمِ النهي، أو هي واوُ المعيَّةِ، و المضارع منصوب بـ : أن التي تقدَّر بعدَها . و أصل العبارة : لا تلبسوا الحق بالباطل مع كتمان الحق .

و يجوز أن يكون المصدر المؤوَّل معطوفا على مصدرٍ مأخوذٍ من الكلام السابق، أي : لا يَكُنْ منكم لَبْسُ الحق بالباطلِ و كتمانُ الحق .

الذين يظنون : الموصول مع صلته نعت لـ : الخشعين، أو خبر لمبتدأ محذوف، أي : هم الذين .

يوما : مفعول به على حَذفِ مضاف، أي : عذابَ يومٍ، و الجملة التي بعده في محل نصب نعتٌ له .

شيئا : مفعول به أو مفعول مطلق نابَ عن المصدر، أي : لا تجزي نفس عن نفس جزاءً شيئًا (أي : لا قليلا و لا كثيرا) .

الترجمة

হে বনী ইসরাঈল! স্মরণ করো তোমরা আমার ঐ (সকল) নেয়ামত যা দান করেছি আমি তোমাদেরকে এবং পূর্ণ করো আমার (সঙ্গে কৃত তোমাদের) প্রতিশ্রুতি, তাহলে পূর্ণ করবো আমি তোমাদের (সঙ্গে কৃত আমার) প্রতিশ্রুতি। আর আমাকেই শুধু ভয় করো। আর ঈমান আনো ঐ কিতাবের প্রতি যা আমি নাযিল করেছি, যা সত্যায়ন করে তোমাদের সঙ্গে বিদ্যমান কিতাবকে।

আর তোমরা তার (কোরআনের) প্রথম অস্বীকারকারী হয়ো না। আর গ্রহণ করো না আমার আয়াত (বিধান)গুলোর বিনিময়ে সামান্য মূল্য। আর আমাকেই শুধু 'পূর্ণভাবে' ভয় করো।

আর মিলিয়ে ফেলো না তোমরা সত্যকে মিথ্যার সাথে 'জেনেশুনে' এবং সত্যকে গোপনও করো না। আর তোমরা (ইসলাম গ্রহণ-পূর্বক) কায়েম করো ছালাত এবং আদায় করো যাকাত এবং বিনয় অবলম্বন করো বিনয় অবলম্বনকারীদের সঙ্গে।

কী আশ্চর্য! মানুষকে তোমরা আদেশ করো নেক কাজের, আর ভুলে যাও নিজেদের; অথচ তোমরা তেলাওয়াত করে থাকো (তাওরাত) কিতাব; তো তেমরা কি (কিছুই) বোঝো না।

আর শক্তি অর্জন করো তোমরা ছবর ও ছালাতের মাধ্যমে। আর

নিঃসন্দেহে ছালাত কঠিন অবশ্যই, তবে তাদের উপর নয় যারা 'খুশু' অবলম্বনকারী, যারা খেয়াল রাখে যে, অবশ্যই তারা তাদের প্রতিপালকের সম্মুখীন হবে এবং তাঁরই কাছে ফিরে যাবে তারা।

হে বনী ইসরাঈল! স্মরণ করো তোমরা আমার ঐ (সকল) নেয়ামত যা দান করেছি আমি তোমাদেরকে এবং (স্মরণ করো কোন কোন ক্ষেত্রে) সমগ্র বিশ্বের উপর তোমাদেরকে 'অগ্রমর্যাদা' দানের বিষয়টিকে।

আর ভয় করো তোমরা ঐ দিনকে (যেদিন) কোন উপকার করতে পারবে না কেউ কারো এবং কবুল করা হবে না কারো পক্ষ হতে কোন সুফারিশ, এবং গ্রহণ করা হবে না কারো থেকে কোন 'মুক্তিপণ', আর না তাদেরকে (কোন প্রকার) সাহায্য করা হবে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اركعوا مع الركعين (এবং বিনয় অবলম্বন করো বিনয় অবলম্বনকারীদের সঙ্গে), এ তরজমা হযরত থানবী (রহ) এর। তিনি বলেন, আমল দুই প্রকার, যাহেরি ও বাতেনি। যাহেরি আমল দুই প্রকার, জানি ও মালি। তো আমল হলো মোট তিন প্রকার, আর এখানে এই তিন প্রকার আমলের উদাহরণ উল্লেখ করা হয়েছে। ছালাত হলো জানের আমল, যাকাত হলো মালের আমল, আর বিনয় ও 'তাওয়াযু' হলো নফসের আমল। আর যেহেতু নফসের বিনয় ও তাওয়াযু হাছিল হওয়ার ক্ষেত্রে ছোহবতের বিরাট আছর রয়েছে সেহেতু তাওয়াযুওয়ালাদের সঙ্গ ও ছোহবত গ্রহণের আদেশ করা হয়েছে। এ তরজমার ভিত্তি হলো ركوع এর আভিধানিক অর্থ। অন্য তরজমা- তোমরা রুকু করো (ছালাত আদায় করো) রুকুকারী (ছালাত আদায়কারী)দের সাথে।

এ তরজমার ভিত্তি হলো ركوع এর পারিভাষিক অর্থ- এখানে অংশ (রুকু) দ্বারা সমগ্র (ছালাত) বোঝানো হয়েছে এবং জামাতের ইহতিমাম করতে বলা হয়েছে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর তোমরা অবনত হও নামাযে, যারা অবনত হয় তাদের সঙ্গে।

(খ) لا تجزي نفس عن نفس شيئا (কোন উপকার করতে পারবে না/কাজে আসবে না কেউ কারো) এ তরজমার সূত্র এই যে,

جزى এর একটি অর্থ হচ্ছে كَفَى و أَغْنَى এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা।

বিকল্প তরজমা- কেউ কারো পক্ষ হতে কোন দাবী পরিশোধ করতে পারবে না। (যেমন অমুকের যিম্মায় এত ওয়াক্তের নামায রয়েছে, আর অন্য কেউ বললো, আমার নামায নিয়ে তাকে মাফ করা হোক) এ তরজমার সূত্র, এই যে, جَزَى عنه এর অর্থ হলো, قَضَى و أَدَّى عنه এটি থানবী (রহ) এর তরজমা.

(গ) إياي فارهبون এবং إياي فاتقون থানবী (রহ) উভয় ক্ষেত্রের তরজমায় পার্থক্য করেছেন; প্রথম ক্ষেত্রে শুধু 'ভয় করো' লিখেছেন, আর দ্বিতীয় ক্ষেত্রে লিখেছেন, পূর্ণরূপে ভয় করো।

তিনি তার তরজমার পক্ষে যুক্তি প্রদর্শন করে বলেন-

رَهْبة হচ্ছে ভয়ের প্রথম পর্যায়, আর تقوى হলো ভয়ের চূড়ান্ত পর্যায়।

(ঘ) أفلا تعقلون থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, তাহলে তোমরা কি এতটুকু বোঝো না।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, তাহলে কেন তোমরা চিন্তা করো না।

মূল অর্থ হলো আকল ব্যবহার করা, যার ফল হলো বুঝ অর্জিত হওয়া।

(ঙ) واستعينوا অধিকাংশ বাংলা তরজমা এই, 'আর তোমরা ধৈর্য ও নামাযের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা করো'।

এ তরজমা থেকে মনে হয় যেন ধৈর্য ও নামাযের মাধ্যমে আল্লাহর কাছে সাহায্য প্রার্থনা করতে বলা হয়েছে। এ তরজমা সঠিক নয়। আসলে আল্লাহ বলেছেন, সম্পদলিপ্সা ও যশলিপ্সা থেকে মুক্তি লাভের জন্য তোমরা ছবর ও ছালাতের মাধ্যমে শক্তি সঞ্চয় করো। ছবর দ্বারা সম্পদলিপ্সা দূর হবে, আর ছালাত দ্বারা যশলিপ্সা দূর হবে। থানবী (রহ) এটা পরিষ্কার করেছেন।

এ তরজমাও হতে পারে, 'তোমরা ছবর ও ছালাতের সাহায্য গ্রহণ করো'।

(চ) ছবর ও খুশু হচ্ছে ইসলামের নিজস্ব শব্দ। সুতরাং কোরআনের তরজমায় এগুলোর প্রতিশব্দ ব্যবহার করা সঙ্গত নয়।

أسئلة :

١ - اشرح وَفّى و أَوْفى

٢ - أعرب قوله : أوفِ

٣ - أعرب قوله : و تكتُموا

٤ - أعرب قوله : شيئا

٥ - و اركعوا مع الرّكعين এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - و استعينوا بالصبر و الصلاة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ اذ قلتُم يموسٰى لن نُؤمِن لك حَتّٰى نرى اللّٰه جَهْرَةً فاخَذَتكم الصّٰعِقَةُ و انتم تنظُرون * ثم بعثْنٰكم من بعدِ موتكم لعلكم تَشكرون * و ظَلَّلْنا عليكم الغَمامَ و انزلنا عليكم المَنَّ و السَّلْوٰى، كلوا من طَيِّبٰت ما رَزقنٰكم، وَ ما ظلمونا و لٰكِنْ كانوا انفُسَهم يظلِمون * وَ اذ قلنا ادخُلوا هذه القريَةَ فكلوا منها حيثُ شِئتُم رَغَدًا و ادخلُوا البابَ سُجَّدًا و قولوا حِطّةٌ نغفِرْ لكم خَطٰيٰكم، و سَنَزيد المحسنين * فَبَدَّل الذين ظلَموا قولًا غيرَ الذي قِيلَ لهم فانزلنا على الذين ظلموا رِجْزًا من السماء بما كانوا يفسُقون *

بيان اللغة

جَهرة : عَلانِيَةً (প্রকাশ্যে) وَعِيانا (স্বচক্ষে) و أصلُ الجَهْرِ الظهور

جَهَر شيءٌ (ف، جَهْرًا) عَلَنَ و ظَهَر

جَهر بالقولِ (ف، جَهْرًا، جِهارا) أعلنه — প্রকাশ্যে বলল

جهر بالقراءة : قرأ بصوتٍ عال يسمعه الجميعُ — শব্দ করে পড়ল

جَهر شيئا : رآه بلا حِجابٍ

صاعقة : صَيْحَة العذاب، أو هي نار محرقة . العذاب المهلك . جسم ناري مشتَعِلٍ يسقُط من السماء في رَعْدٍ شديد (বজ্র) و جمعها صواعق

صَعِقَ الرجل (س، صعقا) : غُشِيَ عليه বেঁহুশ হয়ে গেলো

ظَلَّلَ فلانا (ছায়াদান করলো) يقال ظلله بكذا و ظلل اللّٰهُ عليه الغمامَ
আল্লাহ তার উপর মেঘের ছায়া বিস্তার করলেন।

ظَلَّله من الشمسِ তাকে রোদ থেকে ছায়াদান করলো

مَنٌّ : قيل : المَنُّ شيء كالطَّلِّ فيه حَلاوة يسقُط على الشجَرِ، و هو الذي أنزلَه الله بقدرته في البَرِّيَّة على بني اسرائيلَ ·

السلوى : طير معروف

رغدا : أي أكلا واسعا، هنيئا، لا عَناءَ فيه
প্রচুর ও উপাদেয় আহার, যাতে কোন কষ্ট নেই।

رَغِدَ العيشُ (س، رَغَدًا) : نَعُم و طاب و اتسَع
জীবন প্রাচুর্যপূর্ণ ও সুখময় হলো।

رَغُد العيشُ (ك، رَغَدًا و رَغادَةً) : رَغِد

حطة : مصدر بمعنى حُطَّ عنا ذنوبَنا (ن)، أي : أَبعِد عنا ذنوبَنا ·

خطايا : جمع خَطيئة : ذنب

رجزا : أي عذابا

بيان الإعراب

قلتم : هذه الجملة في محل جر بإضافة الظرف إليها، و قد تقدم أنَّ كلَّ ظرفٍ يضاف إلى الجملة التي بعدها،

لن نؤمن لك : هنا حذفُ المضاف، أي : لن نؤمن لِأَجْلِ قولك

و حتى حرف جرٍّ و غايةٍ، و حرفا الجرِّ يتعلقان بـ : نؤمنَ

نرى : مضارع منصوب بـ : أن المضمرةِ وجوبًا بعد حتى، و علامة النصب الفتحة المقدرة، لِتَعذُّرِ ظهورِها على الألف ·

جهرة : مصدر لازم في مَوضِع الحال من لفظ الجلالة، أي : نراه ظاهرا، أو مصدر متَعَدٍّ في موضع الحال من فاعل الرُّؤية، أي : نرى الله جاهرين بالرؤية، و يجوز أن يكون مفعولا مطلقا لفعل محذوف، أي : جهرتم بهذا القول جهرةً، و يجوز أيضا أن يكون مفعولا مطلقا نائبا عن المصدر، لأنه في معنى الرؤية، يقال : جهر شيئا

أي : رآه بلا حجاب، و المعنى : حتى نرى الله رؤية بلا حجاب ٠

كلوا من طيبات ما رزقناكم : الجملة في محل نصب مَقُول القول، أي : و قلنا : كلوا من ... و من تبعيضيّة

هذه القرية : الهاء حرف تنبيه، و ذه اسم إشارة في محل نصب علي المفعولية، و القرية بدَل من اسم الإشارة ٠

فكلوا : الفاء حرف عطفٍ، عُطفت به الجملة التالية على الجملة السابقة

حيث : ظرف مكان لمحذوف، أي : متنقلين مكان مشيئتكم

رغدا : صفة نائبة عن المفعول المطلق، أي : أكلا رَغَدا، يقال : عَيش رغَد و رَغيد، أي : طيب

الفائدة : كل ظرفٍ مكانيٍّ محدودٍ غيرِ مشتَقٍّ لا يجوز نصبه على الظرفية، بل يجب جرُّه بـ : في، نحو جلست في الدار، و أقمت في البلد، و صليت في المسجد، إلَّا إذا وقَع بعدَ دَخَلَ و نَزَلَ و سَكَنَ، فيجوز نصبُه على الظرفيَّة أو على نزعِ الخافِضِ، و الصحيح أنه منصوب علي المفعولية

حطة : خبر لمبتدأ محذوف، أي : مسألتنا حطة، أو هو مصدر استعمل مكان حط عنا ذنوبنا ٠

قولا : مفعول به لـ : بدل، و غير نعت لـ : قولا ٠

الترجمة

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন তোমরা বললে, হে মূসা! আমরা (আল্লাহর প্রতি) কিছুতেই ঈমান আনবো না তোমার কথায় আল্লাহকে প্রকাশ্যে দেখা পর্যন্ত। তখন পাকড়াও করলো তোমাদেরকে (আযাবের) বজ্র তোমরা দেখতে দেখতে। তারপর পুনর্জীবিত করলাম আমি তোমাদেরকে তোমাদের মৃত্যুর পর, যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করো।

আর ছায়া বানালাম আমি তোমাদের উপর মেঘকে এবং নাযিল করলাম তোমাদের উপর 'মান্না' ও সালওয়া, (আর বললাম) আমি যে উত্তম রিযিক দান করেছি তোমাদেরকে তা থেকে আহার করো তোমরা। আর (আদেশ লঙ্ঘন করে) কোন ক্ষতি করেনি তারা আমার, বরং নিজেদেরই ক্ষতি করছিলো।

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন আমি বললাম, প্রবেশ করো তোমরা এই জনপদে এবং যেখানে ইচ্ছা (বিচরণ করে) জনপদের উত্তম খাদ্যসমূহ থেকে আহার করো, স্বচ্ছন্দে। আর প্রবেশ করো তোমরা (শহরের) দরজা দিয়ে, অবনত অবস্থায়, আর বলতে থাকো, 'ক্ষমা' (চাই), (তাহলে) মাফ করে দেবো আমি তোমাদেরকে তোমাদের অন্যায়গুলো এবং অবশ্যই আমার দান বাড়িয়ে দেবো 'অন্তর' থেকে নেক আমলকারীদেরকে। অনন্তর যারা অবিচার করেছে তারা পরিবর্তন করলো এমন শব্দ, যা তাদেরকে আদেশকৃত শব্দ থেকে ভিন্ন। অনন্তর যারা অবিচার করেছে তাদের উপর আমি আসমান থেকে আযাব নাযিল করলাম তাদের আদেশ অমান্য করতে থাকার কারণে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لن نؤمن لك (আমরা [আল্লাহর প্রতি] কিছুতেই ঈমান আনবো না তোমার কথায়) আমাদের তরজমার ভিত্তি এই যে, ل অব্যয়টি হচ্ছে কারণবাচক। এক্ষেত্রে بالله অংশটি এখানে উহ্য হবে, অর্থাৎ– তোমার কথার কারণে আল্লাহর প্রতি কিছুতেই আমরা ঈমান আনবো না।

কোন কোন তরজমায় আছে, তোমার (নবুয়তের) প্রতি আমরা কিছুতেই ঈমান আনবো না। তারা ل অব্যয়কে অনুকূলতাবাচক ধরেছেন। এ ক্ষেত্রে لك এর উহ্যরূপ হবে لنبوتك তরজমাতুল কোরআনের পথিকৃত আলিমগণ প্রথমোক্ত তরজমা করেছেন।

(খ) لعلكم تشكرون (যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ/স্বীকার করো) শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'যাতে তোমরা অনুগ্রহ স্বীকার করো।

(গ) و ظللنا عليكم الغمام (আর ছায়া বানালাম আমি তোমাদের উপর মেঘকে) الغمام এর مفعولية প্রকাশ করার জন্য এ তরজমা করা হয়েছে। বিকল্প তরজমা এই– আর আমি তোমাদের উপর মেঘের ছায়া বিস্তার করলাম, বা তোমাদেরকে মেঘের ছায়া দান করলাম।

(ঘ) من طيبات ما رزقناكم (আমি যে উত্তম রিযিক দান করেছি তোমাদেরকে তা থেকে) (ن) رَزْقًا এটি শুধু দান করা অর্থেও

ব্যবহৃত হয়। তবে মাদ্দাহর মূল অর্থটি তরজমায় বিবেচনা করা হয়েছে।

من طيبات ما رزقناكم এর তারকীবের সাথে তরজমার তারকীবগত পার্থক্য রয়েছে। কারণ এখানে আরবী তারকীব অনুসরণ করলে তরজমা সহজ ও সুন্দর হয় না, তবে তরজমায় আয়াতের মর্ম রক্ষা করার চেষ্টা করা হয়েছে।

(ঙ) ما ظلمونا (তারা কোন ক্ষতি করেনি আমার) শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) এ তরজমা করেছেন, কিতাবে তা অনুসরণ করা হয়েছে। বিকল্প তরজমা এই- তারা আমার প্রতি কোন অবিচার/জুলুম করেনি বরং ....

(চ) منها (জনপদের উত্তম খাদ্যসমূহ থেকে) এখানে উহ্য মুযাফ বিবেচনা করে তরজমা করা হয়েছে, অর্থাৎ من طيباتها আর যামীরের مرجع উল্লেখ করা হয়েছে স্পষ্টায়নের জন্য।

(ছ) سُجَّدا (অবনত অবস্থায়), মূল সিজদা এখানে উদ্দেশ্য নয়, কেননা ঐ অবস্থায় প্রবেশ করা সম্ভব নয়।

(জ) المحسنين। 'অন্তর থেকে' নেক আমলকারীদেরকে- এটা থানবী (রহ)-এর তরজমা। তিনি এর কারণ বলেছেন যে, إحسان অর্থই হচ্ছে আন্তরিকভাবে ইবাদত করা, যেন তুমি আল্লাহকে দেখতে পাচ্ছো, কিংবা অন্তত আল্লাহ তোমাকে দেখতে পাচ্ছেন, এই বিবেচনায় তরজমা হতে পারে, 'সমর্পিত চিত্তে সৎকর্মকারীদেরকে'

أسئلة :

١ - اذكر معنى ظلل

٢ - ما هما المن و السلوى ؟

٣ - أعرب قوله : جهرةً ·

٤ - علام عُطف جملةُ أخذتكم الصعقة ·

٥ - ظللنا عليكم الغمام এর মূল তরজমা এবং বিকল্প তরজমা বলো

٦ - سنزيد المحسنين এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) إن الذين اٰمنوا و الذين هادُوا و النصٰرٰى و الصابِئين مَنْ اٰمَن بالله و اليومِ الاٰخرِ و عَمِل صٰلحا فَلهم اجرُهم عند ربِّهم، وَ لا خوف

عليهم و لا هم يَحزنون * وَ إذ اخذنا مِيثاقَكم و رفَعنا فوقَكم الطور، خُذوا ما اٰتينٰكم بِقُوَّةٍ و اذكُروا ما فيه لعلكم تَتقون * ثم تَولَّيتم من بَعدِ ذلك، فَلولا فضلُ اللّٰه عليكم و رحمَتُه لَكُنتم مِنَ الخٰسرين * و لَقد علِمتم الذين اعتَدَوا منكم في السَّبت فَقلنا لهم كونوا قِرَدَةً خاسِئين * فجعلنٰها نَكالا لما بينَ يَدَيها و ما خلفَها و مَوعِظة لِلمتقين *

بيان اللغة

هادوا (نَشَأُوا في اليَهودِيَّة) (هَوْدًا، ن) ইহুদীরূপে প্রতিপালিত হয়েছে

هاد الرجل : تاب و رجع إلى الحق، (إنا هُدنا إليك)

اليَهودِيُّ : واحد اليَهودِ . المنسوبُ إلى اليهود . الهُود : اليَهود

قال تعالى : و قالوا كونوا هودا أو نصارى تهتدوا .

اليهود : قومٌ من أصلٍ سامِيٍّ، قيل : إنهم سُمُّوا كذلك بِاسْمِ يَهوذا أَحَدِ أبناء يعقوبَ .

نصارى : جمعُ نَصرانِيٍّ، من تَنَصَّرَ أي : دَخَل في دينِ النصرانِيَّة .

النصرانِيَّةُ دينُ اتباعِ المسيحِ عليه السلام

الصابئون : جمعُ صابِئٍ، من يتركون دينَهم و يَدينون بِدينٍ آخَرَ . قوم يعبدون الكواكب و يزعُمون أنهم على ملةِ نوحٍ .

صَبَأَ من شيءٍ إلى شيءٍ : انتقل، يقال صبأ الرجلُ : ترك دينه و دانَ بدينٍ آخر (ف، صُبُوءًا)

توليتم : (أعرضتم) تَوَلَّى عن شيءٍ : أعرض عنه وَ تركه

تولى فلانا : أحبه و اتخذه وَلِيًّا

تولى الأمرَ : قام بالأمر، أخذ زِمامَ الأمرِ .

اعتَدَوا : (تجاوَزُوا الحَدَّ) اعتدى عليه : ظلمه

العُدْوان : الظلم، تجاوُزُ الحدِّ في أمرٍ . لا عدوانَ عليه : لا سبيل و لا سلطان عليه .

خاسئين : خَسَأَ الكلبُ و غيره (ف، خَسْئًا، خُسُوءًا) : بَعُدَ و ذَلَّ

خسأ الكلبَ و غيرَه : طرده و أبعده

খসأ البَصَرُ : كَلَّ و أَعْيا দৃষ্টি ক্লান্ত হলো, ধাঁধিয়ে গেলো।

جاء في القرآن الكريم : ينقلب إليك البصر خاسئا

نَكالًا: أصل النكالِ المنعُ، و سميت العقوبَةُ الشديدة نكالا ، لأنه يمنع غيرَ المعاقَب أن يفعل فعله، و يمنع المعاقَبَ أن يعود إلى فعله الأول، و لا يُسمي العِقابُ نَكالا حتى يكونَ مانعًا .

بيـان الإعراب

و النصٰرى و الصّٰبئين : اسمَانِ معطوفان بِوَاوِ العطف على اسمِ إنَّ .

مَنْ امن بالله ... : الموصول مع صلته في موضِع نصب بَدَلٌ من اسمِ إن

فلهم أجرهم : الفاء زائدة جِيْءَ بها لِتضَمُّنِ الموصول معنى الشرط، و هذه الجملة خبر إن .

و عندَ ظرف متعلق بمحذوف منصوب على كونه حالًا من أجر .

ثم توليتم : العطفُ بحرفِ التَّراخِي يدل على أنهُمُ امْتَثَلوا بالأمرِ أوَّلاً ثم أعْرَضوا عنه، فالإشارة بِـ : ذلك إلى الامتثال المفهومِ مِنْ حرفِ التراخي، أو إلى الأخذ و الرفع و القول .

فلولا : الفاء استئنافية، و لولا حرف امتناع لوجود ، و اللام واقعة في جواب لولا .

و لولا تَختص بالجملة الاسمية، و الاسمُ الواقعُ بعدَها مبتدأٌ خبَرُهُ واجبُ الحذفِ، ويَكثُر دخولُ اللام في جوابِ لولا إن كان مثبتا ، و يَقِلُّ إن كان منفيا بـ : ما ، و يمتنع إن كان منفيا بغير ما .

و لقد علمتم الذن اعتدوا منكم : الواو استئنافية، و اللام جواب قَسَمٍ محذوف، و قد حرف تحقيق.

منكم متعلق بمحذوف حال من فاعل اعتدوا ، و في السبت يتعلق بـ : اعتدوا، لأنه ظرف الاعتداء .

قردة : خبر الناقص، و خاسئين خبر ثان، و لا مانع من جعلها صفة .

فجعلنها نكالا : الضمير يعود إلي العقوبة المفهومة من قوله تعالى : كونوا قردة خاسئين ·

لما بين يديها و ما خلفها : كِنايَةٌ عن الأمَمِ التى شَهِدَت هذه العقوبَةَ أو سَمعت · و الجار و المجرور متعلق بمحذوف، و هو صفة لـ : نكالا

موعظة : عطف على : نكالا ·

الترجمة

যারা ঈমান এনেছে এবং যারা ইহুদী হয়েছে এবং নাছারা ও ছাবিঈগণ, (অর্থাৎ তাদের মধ্য হতে) যারা ঈমান এনেছে আল্লাহর প্রতি এবং শেষ দিনের প্রতি এবং নেক আমল করেছে অবশ্যই তাদের জন্য রয়েছে তাদের পুরস্কার তাদের প্রতিপালকের নিকট, আর তাদের নেই কোন আশংকা এবং তারা দুশ্চিন্তাগ্রস্তও হবে না।

আর (স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন নিলাম আমি তোমাদের প্রতিশ্রুতি এবং উত্তোলন করলাম তোমাদের উপর তূরকে (এই বলে যে,) যে কিতাব তোমাদেরকে আমি দান করেছি তা গ্রহণ করো দৃঢ়তার সঙ্গে এবং তাতে যে সকল বিধান রয়েছে তা স্মরণ রেখো, যাতে তোমরা মুত্তাকী হতে পারো। এরপর (তা থেকে) ফিরে গেলে তোমরা তা মান্য করার পর। তো যদি না হতো তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও অনুকম্পা (তাহলে) অবশ্যই তোমরা হয়ে যেতে মহাক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত।

আর তোমরা তো জেনেছোই তাদের পরিণতি, তোমাদের মধ্য হতে যারা সীমালঙ্ঘন করেছে শনিবারের বিষয়ে, ফলে বললাম আমি তাদের উদ্দেশ্যে, হয়ে যাও তোমরা ধিকৃত বানর। অনন্তর বানালাম আমি ঐ ঘটনাকে দৃষ্টান্তমূলক শাস্তি ঐ ঘটনার সমসাময়িকদের জন্য এবং ঐ ঘটনার পরবর্তীদের জন্য এবং (বানালাম) মুত্তাকীদের জন্য উপদেশের বিষয়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إن الذين آمنوا و الذين ... (যারা ঈমান এনেছে এবং যারা ...)
সকল বাংলা তরজমায় إن এর প্রতিশব্দ 'অবশ্যই' বা 'নিঃসন্দেহ' কে বাক্যের শুরুতে যুক্ত করা হয়েছে, অথচ উদ্দেশ্য হচ্ছে 'খবর'-এর তাকীদ, তাই কিতাবের তরজমায়

তাকীদের প্রতিশব্দটি খবরের শুরুতে যুক্ত করা হয়েছে।

এখানে চারটি সম্প্রদায়কে উল্লেখ করতে গিয়ে আল্লাহ তা'আলা দু'টি স্বতন্ত্র শৈলী ব্যবহার করেছেন। অর্থাৎ প্রথম দুটির ক্ষেত্রে মাওছূল ও ছিলাহ্ এবং দ্বিতীয় দু'টির ক্ষেত্রে মুফরাদ ইসম, এ শৈলী-ভিন্নতার নিশ্চয় কোন হেকমত রয়েছে, শায়খুলহিন্দ (রহ) তাঁর তরজমায় শৈলী-ভিন্নতার বিষয়টি বিবেচনায় এনেছেন, কিন্তু থানবী (রহ) অভিন্ন শৈলী গ্রহণ করে তরজমা করেছেন, 'মুসলমান এবং ইহুদী এবং নাছারা এবং ছাবেঈ সম্প্রদায়।'

কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে।

(খ) خوف এর বাংলা প্রতিশব্দ কেউ লিখেছেন 'ভয়', কেউ লিখেছেন 'ভয়ভীতি'। এক লফযের একটি প্রতিশব্দই উত্তম। শায়খুলহিন্দ (রহ) উর্দু প্রতিশব্দ ڈر এর পরিবর্তে خوف ব্যবহার করেছেন।

থানবী (রহ) اندیشہ ব্যবহার করেছেন। এর অনুসরণে 'শংকা' বা 'আশংকা' ব্যবহার করা যায়।

لا هم يحزنون এর অধিকাংশ বাংলা তরজমায় 'দুঃখিত হবে না', এসেছে। শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) যথাক্রমে غمگین ও مغموم ব্যবহার করেছেন। 'দুশ্চিন্তা' হচ্ছে এর নিকটতম বাংলা প্রতিশব্দ।

(গ) أخذنا ميثاقكم (নিলাম আমি তোমাদের প্রতিশ্রুতি) শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) তরজমা করেছেন 'তোমাদের থেকে' প্রতশ্রুতি নিলাম যার আরবী দাঁড়ায়- أخذنا منكم الميثاق। কোন কোন বাংলা তরজমায় সেটাই অনুসরণ করা হয়েছে। তবে এই পরিবর্তন ছাড়াও তরজমা হতে পারে, যেমন কিতাবে করা হয়েছে।

(ঘ) من بعد ذلك (তা মান্য করার পর) অর্থাৎ من بعد ذلك الامتثال এখানে مشار إليه উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে, স্পষ্টায়নের উদ্দেশ্যে।

توليتم (তোমরা 'ফিরে গেলে') কেউ কেউ লিখেছেন- 'মুখ ফিরিয়ে নিলে' কিন্তু এই পরিবর্তনের তেমন প্রয়োজন নেই।

(ঙ) فلولا فضل الله عليكم و رحمته (তো যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও অনুকম্পা না হতো) – এটা হচ্ছে বাংলার স্বাভাবিক বিন্যাস, পক্ষান্তরে 'যদি না হতো তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও অনুকম্পা' এই বিন্যাসে রয়েছে আলাদা ভাব ও আবেদন, যা আয়াতের উদ্দেশ্যের অন্তর্ভুক্ত বলে মনে হয়। তদুপরি এটা কোরআনি তারতীবের প্রায় অনুরূপ, তাই বাক্যটির এ বিন্যাস গ্রহণ করা হয়েছে।

رحمة এর স্বাভাবিক বাংলা প্রতিশব্দ হচ্ছে 'দয়া বা করুণা' কিন্তু 'অনুগ্রহ'-এর পর অনুকম্পা শব্দটি সব দিক থেকে অধিকতর উপযুক্ত।

من الخسرين (মহাক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত) উর্দু উভয় তরজমায় تباه শব্দটি রয়েছে। বাংলা তরজমাগুলোতে এর অনুসরণে 'ধ্বংস ও বরবাদ' শব্দদু'টি ব্যবহৃত হয়েছে। এটা গ্রহণযোগ্য, তবে কিতাবের তরজমায় মূল শব্দ অনুসরণ করা হয়েছে। ال এর দিকে লক্ষ্য করে 'মহা' শব্দটি যোগ করা হয়েছে। 'অবশ্যই তোমরা হয়ে যেতে মহাক্ষতিগ্রস্ত' – এ তরজমাও হতে পারে।

(চ) و لقد علمتم (আর তোমরা তো জেনেছোই) এখানে 'তো' এবং 'ই' হচ্ছে ل ও قد এর তাকীদপ্রকাশক প্রতিশব্দ।

لقد علمتم এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, 'তোমরা তো জানোই'; শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, 'তোমরা ভালো করেই জেনেছো।'

উভয় তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে একান্ত প্রয়োজন ছাড়া পরিবর্তন না করার নীতি অনুযায়ী কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা গ্রহণ করা হয়েছে।

(ছ) جعلنها نكالا لما بين يديها و ما خلفها (বানালাম আমি ঐ ঘটনাকে দৃষ্টান্তমূলক শাস্তি, ঐ ঘটনার সমসাময়িকদের জন্য এবং ঐ ঘটনার পরবর্তীদের জন্য) যামীর তিনটির مرجع অভিন্ন, অধিকাংশ বাংলা তরজমায় তা খেয়াল করা হয়নি। যেমন একটি তরজমায় রয়েছে– 'আমি এ ঘটনাকে তাদের সমসাময়িক ও পরবর্তীদের শিক্ষা গ্রহণের জন্য এক দৃষ্টান্ত এবং মুত্তাকীদের জন্য উপদেশস্বরূপ করেছি।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة "نكال"

٢ - أعرب اسم إن و خبرها إعرابا مُجْمَلاً .

٣ - علام يدل حرف التراخي في قوله تعالى : ثم توليتم ؟ و إلام أشير باسم الإشارة ؟

٤ - ماذا تعرف عن لولا ؟

٥ - أخذنا ميثاقكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - فلولا فضل الله عليكم و رحمته لكنتم من الخسرين এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) بَلىٰ مَن كسَبَ سَيِّئَةً و احاطَتْ به خطيئَتُه فاولئك اصحٰب النار، هم فيها خٰلِدون * وَ الذين اٰمنوا و عَملوا الصّٰلِحٰت اولئك اَصحٰب الجنةِ، هم فيها خٰلدون * وَ إِذ اَخَذْنا ميثاقَ بني اِسرءيلَ لا تعبدون اِلاَّ اللّٰهَ، و بالوالدين اِحسانا وَ ذي القُرْبىٰ و اليتٰمىٰ و المسٰكين وَ قولوا للناس حُسْنًا و اَقِيموا الصلٰوة و اٰتُوا الزكٰوة، ثم توليتم الا قليلا منكم و انتم مُعرِضون *

بيان اللغة

كَسَبَ : لأهله (ض، كَسْباً) طلب الرِّزق و المعيشَةَ لهم،
পরিবারের জন্য উপার্জন করলো।

كسب المال : رَبِحه و حصل عليه بِعَمَله

كسب شيئا : ناله و جمعه و حصل عليه

كسب الإثم : ارتكبه

اكتسب المال/الإثم : كسب

أحاطت (গ্রাস করে/পেয়ে বসে) أحاط القومُ بالبلدِ : تَجَمَّعُوا حولَه و أَحْدَقوا به
ঘেরাও করলো

أحاطَ بالأمرِ : أدركَه من جَميعِ أَطرافِه و نَواحِيه

বিষয়টি পূর্ণরূপে অনুধাবন করলো

أحاطَتْ به الخطيئةُ : لَزِمَتْه فلم يَجْتَنِبْها و لم يتخلص منها

পাপটি তাকে গ্রাস করলো বা পেয়ে বসলো, ফলে সে তা পরিহার করতে বা তা থেকে মুক্ত হতে পারলো না।

خَطِيئَة : خِطْءٌ، جمعها خَطِيئَاتٌ و خَطايَا — পাপ, অন্যায়

خِطْءٌ : خطيئة، جمعها أَخْطاءٌ

حُسن : يراد به الوصفُ، و معناه الجَمال، و يراد به ذا الوصفِ، و معناه كلُّ جميلٍ و طَيِّبٍ، و جمعه مَحاسِنُ (على غير القياسِ)

حَسُن (ك، حُسنا) جَمُل، فهو حَسَنٌ و هي حَسْناءُ، و الجمع حِسان (للمذكر و المؤنث)

بيان الإعراب

من : اسم موصولٍ و شرطٍ جازمٌ و هو في محل رفع مبتدأ، و كسب : فعل ماض في محل جزم صلة و شرط .

فأولئك : الفاء رابطة بين الشرط و جوابه، و اسم الإشارة مبتدأ، و أصحب النار خبره، و الجملة جواب الشرط، و الشرط و جوابه خبر لـ : من . و يجوز أن يكون الموصول و صلته مبتدأ، و جواب الشرط هو الخبر

لا تعبدون : لا نافية، و الخبر هنا بمعنى النهي، أي لا تعبدوا، و هذه الجملة لا محل لها من الإعراب، لأنها مفسرة .

و بالوالدين : الواو حرف عطفٍ عُطف به على معنى النهي، و حرف الجر يتعلق بفعل محذوف، أي : و أحسنوا بالوالدين، و إحسانا مفعول مطلق للفعل المحذوف .

ذي القربى : معطوف على الوالدين .

و قولوا : الواو حرف عطف، و لكن لا بد من حذف، أي : و قلنا لهم قولوا، و للناس متعلق بـ : قولوا، و حسنا صفة لمفعول مطلق محذوف، أي : قولا حسنا .

ثم توليتم : معطوف على محذوف، أي فقبلتم الميثاق ثم توليتم، و قيل : ثم هذه استئنافية، و قليلا مستثنى بـ : إلا من فاعل تولى

و أنتم معرضون : الواو حالية، و الجملة في محل نصب على أنها حال، و هي حال مؤكدة، لأنها في معنى توليتم ·

الترجمة

যারা গোনাহ্ কামাই করে, আর ঘেরাও করে ফেলে তাদেরকে তাদের গোনাহ্ (এমন কি ঈমানকেও নিশ্চিহ্ন করে ফেলে) ওরাই হলো জাহান্নামী; তারা সেখানেই চিরকাল থাকবে। আর যারা ঈমান আনে এবং নেক আমল করে, ওরাই হলো জান্নাতী; তারা সেখানেই চিরকাল থাকবে।

আর (স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন নিলাম আমি বনী ইসরাঈলের অঙ্গীকার (যে,) ইবাদত করো না তোমরা আল্লাহ্ ছাড়া কারো, আর মা-বাবার সঙ্গে পূর্ণ সদাচার করো, এবং (সদাচার করো) আত্মীয়দের, এতীমদের এবং মিসকীনদের সঙ্গে, আর বলো সাধারণ লোকদের সঙ্গে উত্তম কথা এবং কায়েম করো ছালাত এবং আদায় করো যাকাত।

(তোমরা অঙ্গীকার তো করলে, কিন্তু) তারপর বিমুখ হয়ে ফিরে গেলে তোমরা (সকলে তোমাদের অঙ্গীকার থেকে) অল্পসংখ্যক ছাড়া তোমাদের মধ্য হতে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) كسب এর শব্দগত দিক বিবেচনা করে শায়খুলহিন্দ (রহ্) তরজমা করেছেন جس نے گناہ کمایا বাংলায়ও গোনাহ 'কামাই করা'র ব্যবহার রয়েছে, তাই কিতাবে এ তরজমা গ্রহণ করা হয়েছে।

كسب এর মাঝে যেহেতু চেষ্টা করে অর্জন করার অর্থ রয়েছে সেহেতু থানবী (রহ্) তরজমা করেছেন, 'যারা ইচ্ছাকৃত গোনাহ্ করে।'

এ দুটি তরজমা হলো সর্বোত্তম, তবে 'যারা পাপকাজ করে বা পাপ অর্জন করে'– এ দুটোও গ্রহণযোগ্য তরজমা।

গোনাহ্ কোন মানুষকে ঘেরাও বা বেষ্টন করে ফেলার অর্থই হলো নেকের কোন চিহ্ন তার মাঝে না থাকা, এমন কি অন্তরে বিন্দু পরিমাণ ঈমান থাকলেও 'বেষ্টন' সাব্যস্ত হবে না। তাই বন্ধনীতে বিষয়টি পরিষ্কার করা হয়েছে।

(খ) هم فيها خلدون (তারা সেখানেই চিরকাল থাকবে) 'সেখানেই' হচ্ছে فيها কে অগ্রবর্তী করার কারণে সৃষ্ট حصر বা বিশিষ্টতার তরজমা।

(গ) أخذنا ميثاق بني اسرائيل এখানে এই সংযোজনের কারণ এই যে, পরবর্তী বাক্যটি হচ্ছে ميثاق এর ব্যাখ্যা।

(ঘ) এবং (সদাচার করো) আত্মীয়দের ... এ বন্ধনীর ভিত্তি হলো ব্যাকরণের প্রসিদ্ধ নিয়ম, العطف يُفيد تكرارَ العامل

(ঙ) و انتم معرضون 'বিমুখ হয়ে' এখানে 'হাল-বাক্য'কে 'মুফরাদ হাল' এ রূপান্তরিত করা হয়েছে। বিকল্প তরজমা- 'আর তোমরা বিমুখ হলে/উপেক্ষা করলে,' এ তরজমায় حال কে عطف এ রূপান্তরিত করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - ما هو معنى الحُسْنِ ؟

٢ - كيف يعود ضميرُ المذكر الغائبِ و إشارةُ الجمع المذكر إلى "مَن" ؟

٣ - أعرِب قولَه تعالى : "توليتم إلا قليلا منكم" إعرابا مفصَّلا .

٤ - يُعرَب مَنِ الموصولةُ و الشرطية على وَجهين، فما هما ؟

٥ - من كسب سيئة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - و أنتم معرضون এর তরজমা ব্যাখ্যা করো

(٨) وَ لقَد جاءَكم موسٰى بالبيّنٰتِ ثم اتخذتُم العِجْلَ مِن بَعده و
اَنتم ظٰلِمون * وَ إِذ اَخَذنا ميثاقَكم و رفعنا فوقَكم الطور،
خُذوا ما اٰتينٰكم بِقُوة وَ اسمعوا، قالوا سَمِعنا و عَصَينا، و
اُشرِبوا في قُلوبِهِمُ العِجْلَ بِكُفرهم، قل بِئْسَما يأمُرُكم به
اِيمانكم اِن كنتم مؤمنين * قل اِن كانَتْ لكُمُ الدارُ الاٰخِرَةُ عِند
اللهِ خالصَةً من دُونِ الناس فَتَمنَّوا الموتَ اِن كنتُم صٰدقين * و
لن يَتَمَنَّوه اَبدا بما قدمت اَيديهم، وَ الله عليم بِالظّٰلمين * و
لَتَجِدنَّهم اَحْرَصَ الناسِ على حَيٰوة، وَ من الذين اَشْرَكوا، يَوَدُّ

أَحدُهم لو يُعَمَّر الفَ سَنَةٍ، و ما هو بِمُزَحْزِحِهٖ من العَذابِ ان يُعمَّر، و الله بصير بما يعملون *

بيان اللغة

أشربوا في قلوبهم : خالَطَ حبُّ العجلِ قلوبَهم و دخل في قلوبهم

تمنوا (আকাঙ্ক্ষা করো) تَمَنّٰى شيئا : اشتاق إليه و أحب أن يناله

أُمنِيَّة : بُغْيَةٌ، ما يَبتغيه المرءُ و ما يَتَمَناه، و الجمع أمانيُّ

خالصة : (بِصِلَةِ : لِ অব্যয়যোগে ل) خَلَص (ن، خُلوصا) : صفا

خَلَص من القومِ : اعتَزَلَهم و انفَصَل منهم

خلص إليه : وصل . خَلَص له : صار خالِصًا له

أَخلص الشيءَ : أصفاه و نَقَّاه، يقال : أخلص له الحبَّ و النصيحةَ তাকে আন্তরিক ভালোবাসা বা উপদেশ দান করলো।

أخلَصَ لِلّٰهِ دينَه : تَركَ الرياءَ فيه দ্বীনকে আল্লাহর জন্য খালিছ করলো

أحرص: أفعلُ حريصٍ (اسم التفضيل এর حريص) حَرَص على شيءٍ (ض، حِرْصًا) : اشتدت رغبتُه فيه কোন কিছুর প্রতি লোভী/ব্যাকুল হলো

حَرَص على المالِ/على العلمِ

يود (কামনা করে) وَدَّه (س، وُدًّا، مَوَدَّةً) أحبه، تمناه

وَدُودٌ : الكَثيرُ الحبِّ، (يستوي فيه المذكر و المؤنث)، و هو من أسماء الله تعالى . المودة : المحبة، الوُدُّ : الحب .

يعمر : عمّر الله فلانا : أطال عمره، فهو معَمَّر

مزحزح : (مُبعِد) زَحْزَحَ عن : باعَدَهٗ و نَحَّاه، تزحزح : تباعد و تَنحّٰى

بيان الإعراب

من بعده : أي مِن بَعدِ ذَهابِه إلي الطور لِلِقائي .

و اشربوا : الجملة معطوفة على قالوا، أو حال من فاعل القول بِتَقديرِ قَدْ .

في قلوبهم : حرف الجر مع مجروره متعلق بـ : اشربوا .

و العجل مفعول ثان، على حذف المضاف، أي : حُبَّ العِجْلِ .

بِكُفرِهم : متعلق ثان بـ : اشربوا، و الباء سَبَبِيَّة، أي بِسَبَبِ كُفرِهم .

بئس : فعلٌ ماضٍ جامِدٌ لإنْشاء الذَّمِّ، و ما نكِرةٌ موصوفَة بمعنى شيء، و هو في محل نصب تمييز للضمير المستَتِرِ الذي هو فاعل بِئسَ، أي : بِئسَ (هو) شيئًا يأمركم به إيمانُكم . و جملة يأمركم به إيمانكم في محل نصب صفة لـ: ما

و يجوز أن يكون ما موصولا فاعلَ بِئس، و الجملة صلة .

و المخصوصُ بالذم محذوف، أي : حبُّ العجلِ، و هو مبتدأ مؤخر، و جملة بئسما يأمركم به إيمانكم خبر مقدم .

كنتم مؤمنين : شرط، و جواب الشرط محذوف على قَرِينَةِ الجملة السابقَةِ .

الدار الآخرة : اسمُ كان المؤخَّرُ، و لكم متعلق بخبرِ كان المحذوفِ المقدَّمِ، أي : إن كانَتِ الدار الآخرةُ ثابتةً لكم

عندَ الله خالِصةً من دون الناس : خالصةً حال من الدارُ، و عندَ الله ظرفٌ مقدم متعلق بـ : خالصةً، و مِن : متعلق بـ : خالصةً .

كنتم صدقين : شرط، و جواب الشرط محذوف دل عليه الجوابُ الأول .

أحرصَ الناس : مفعولُ تجد الثاني، و على حيوة متعلق بِـ : أحرصَ .

و من الذين .. الواو عاطفة، و المعطوف محذوف، أي : و أحرصَ من الذين أشركوا، و المحذوف معطوف على أحرصَ المذكورِ .

لو يعمر : لو هذه مصدرية غيرُ عاملةٍ، أي يود التعميرَ، و هي خاصَّةٌ بِفعلِ الوُدِّ . و المصدر المؤول مفعول به لِـ : يود

و ما هو بمزحزحه من العذاب أن يعمر : الواو حالية، و ما نافية حجازية ١ (أي عاملة عمل ليس)، و الضمير اسمها، مزحزحِه مجرور لفظا منصوب محلا على أنه خبر ما، و من العذاب يتعلق بـ : مزحزحه، و الضمير في قوله "ما هو " راجع إلى التعمير الذي يدل عليه المصدر المؤول السابق : لو يعمر، و قوله : أن يعمر بدل من الضمير .

الترجمة

আর অতিঅবশ্যই এনেছিলেন মূসা তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট

١ - سميت ما هذه حجازية، لأن أهل الحجاز يعملونها عمل ليس، اما بنو تميم فلا يعملونها، فيقال حينئذ : ما هذه تميمية .

প্রমাণাদি, (কিন্তু) এরপর বানিয়েছিলে তোমরা বাছুরকে (উপাস্য) তাঁর (তূর পবর্তে আমার সাক্ষাতের উদ্দেশ্যে গমনের) পর, (এ বিষয়ে) অবশ্যই তোমরা যালিম (অপরাধকারী) ছিলে।

আর (স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন নিলাম আমি তোমাদের অঙ্গীকার এবং উত্তোলন করলাম তোমাদের উপর তূরকে (এবং আদেশ করলাম যে,) গ্রহণ করো তোমরা ঐ কিতাবকে যা দান করেছি আমি তোমাদেরকে, দৃঢ়তার সঙ্গে এবং (আনুগত্যের উদ্দেশ্যে) শ্রবণ করো। (তখন) তারা (মুখে তো) বললো, শুনলাম, কিন্তু (অন্তরে বললো) অমান্য করলাম। কারণ, মিশে গিয়েছিলো তাদের অন্তরে 'বাছুরপ্রীতি' তাদের কুফুরির ফলে। আপনি বলুন, যদি তোমরা মুমিন হয়ে থাকো (তাহলে) তোমাদের ঈমান তো বড় মন্দ আদেশ করছে তোমাদেরকে!

আপনি বলুন, যদি দারুল আখিরাত (এর নায-নেয়ামত) আল্লাহর নিকট শুধু তোমাদেরই জন্য নির্ধারিত হয়ে থাকে লোকদের পরিবর্তে, তাহলে তোমরা (অন্তত মুখে) আকাঙ্ক্ষা প্রকাশ করো মৃত্যুর, যদি (এই দাবীর ক্ষেত্রে) তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাকো, কিন্তু তারা কখনো কিছুতেই মৃত্যুর আকাঙ্ক্ষা করবে না, তাদের কৃতকর্মের কারণে। আর আল্লাহ পূর্ণ অবগত এই যালিমদের (অবস্থা) সম্পর্কে।

আর অতিঅবশ্যই পাবেন আপনি তাদেরকে জীবনের প্রতি সকল মানুষের চেয়ে লোভী, এমনকি মুশরিকদের চেয়েও (লোভী)। আকুতি পোষণ করে তাদের প্রত্যেকে হাজার বছর আয়ু লাভের। অথচ দীর্ঘায়ু লাভ করা তো তাকে আযাব থেকে দূরে রাখতে পারবে না। আর তারা যা করছে সে সম্পর্কে আল্লাহ সর্বদর্শী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) جاءكم موسى بالبينٰت (এনেছেন তোমাদের কাছে মূসা সুস্পষ্ট প্রমাণাদি) أتى بـ এবং جاء بـ এর দু'টি তরজমা হতে পারে, (কিছু এনেছে এবং কিছু নিয়ে এসেছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) দ্বিতীয়টি এবং থানবী (রহ) প্রথমটি গ্রহণ করেছেন।

ب কে مصاحبة অর্থে مع এর সমার্থক ধরে তরজমা করা যায়, 'সুস্পষ্ট প্রমাণাদিসহ এসেছেন।

(খ) ثم اتخذتم العجل من بعده (এরপর বানিয়েছো তোমরা

বাছুরকে উপাস্য তাঁর পর) এ তরজমার ভিত্তি এই যে, اتخذ ফেয়েলটি جعل এর সমার্থক এবং এর দ্বিতীয় মাফঊল উহ্য রয়েছে।

(গ) قالوا سمعنا و عصينا তারা (মুখে তো) বললো, শুনলাম, কিন্তু (অন্তরে বললো) অমান্য করলাম – سمعنا ও عصينا দু'টোই তাদের মুখের উচ্চারণ ছিলো না, এ বিষয়টি পরিষ্কার করার জন্য বন্ধনী ব্যবহার করা হয়েছে।
দু'টোকেই তাদের মুখের উচ্চারণ ধরে এভাবে তরজমা করা যায়, তারা (তৎক্ষণাৎ) বললো, শুনলাম, কিন্তু (পরে বললো) অমান্য করলাম।

(ঘ) 'কারণ'– و اشربوا বাক্যটিকে ব্যাকরণগতভাবে স্বতন্ত্র বাক্য এবং অর্থগতভাবে পূর্ববর্তী قالوا سمعنا و عصينا বাক্যের হেতু বিবেচনা করে তরজমা করা হয়েছে 'কারণ'। এক্ষেত্রে واو অব্যয়টি হবে استئنافية
এটিকে হাল বা মাতূফ হিস্যাবেও তরজমা করা যায়।

(ঙ) বাছুরপ্রীতি মিশে গিয়েছিলো– উহ্য মুযাফকে বিবেচনায় রেখে এবং متعدى কে لازم ধরে তরজমা করা হয়েছে।

(চ) بئسما يأمركم به إيمانكم (তোমাদের ঈমান তো বড় মন্দ আদেশ করছে তোমাদেরকে!) থানবী (রহ) يأمر এর তরজমা করেছেন– تعلیم کررها هے
শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা হলো سکھاتاهے দু'টোই ভাব অনুবাদ। কিতাবে শাব্দিক অনুবাদ করা হয়েছে। কটাক্ষের দিকে লক্ষ্য করে, 'তালিম' দেয়– তরজমা করা যায়। থানবী (রহ) এর তরজমায় বিস্ময়ের প্রকাশ রয়েছে, কিতাবের তরজমায় তা অনুসরণ করা হয়েছে।

(ছ) (অন্তত মুখে) থানবী (রহ) এর ব্যাখ্যা থেকে এটা গ্রহণ হয়েছে। তাঁর তরজমাও এদিকে ইঙ্গিত করে।

(জ) بما قدمت أيديهم 'তাদের কৃতকর্মের কারণে' এটা ভাবঅনুবাদ। কিছুটা শাব্দিকতা রক্ষা করে এ তরজমা করা যায়, 'যে আমল তারা পাঠিয়েছে তার কারণে'।
'ঐ আমলের কারণে যা তাদের হাত অগ্রবর্তী করেছে'– এ তরজমা 'সুন্দর' নয়।
থানবী (রহ) ما এর তরজমা করেছেন 'কুফুরি আমল'

(ঝ) অধিকাংশ বাংলা তরজমায় تمنوا এবং يود উভয় ক্ষেত্রে 'কামনা বা আকাঙ্ক্ষা' ব্যবহার করা হয়েছে। তবে হাজার বছরের দীর্ঘায়ুর ক্ষেত্রে আকুতি শব্দটি অধিক উপযোগী। থানবী (রহ) هوس শব্দ ব্যবহার করেছেন, যার বাংলা প্রতিশব্দ হতে পারে লালসা বা লোলুপতা।

(ট) 'এই যালিমদের'– থানবী (রহ) ال অব্যয়কে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক ধরে এ তরজমা করেছেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ خالصةً .

٢ – اذكر وَجْهَي الإعرابِ في بئسما .

٣ – أعرب قوله تعالى : عند الله خالصةً من دون الناس . (لك)

٤ – أعرب قوله تعالى : لو يعمر ألف سنة

٥ – بئسما يأمركم به ايمانكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – بما قدمت أيديهم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٩) اَلَم تعلَمْ ان اللّٰهَ له ملك السمٰوٰت وَ الارض، وَ ما لكم مِن دُون
اللّٰه مِن وَليٍّ و لا نصير * اَم تريدون اَن تَسئلوا رَسولكم كما
سُئِل موسٰى مِن قبلُ، و مَن يتبَدَّلِ الكفرَ بالإيمان فقَدْ ضَلَّ
سواءَ السبيلِ * وَدَّ كثير مِن اَهلِ الكتٰب لو يَرُدُونكم من بَعدِ
ايمانكم كُفارا، حَسَدًا من عندِ اَنفسهم من بعدِ ما تبين لهم
الحقُّ، فاعفوا وَ اصفحوا حتى ياتِيَ اللّٰه بِاَمْرِه، اِنَّ اللّٰه على كلِّ
شيءٍ قدير * و اَقيموا الصلٰوةَ و اٰتوا الزكٰوةَ، و ما تُقدموا
لِاَنفُسِكم من خيرٍ تجدوه عندَ الله، اِن الله بما تعملون بصير *

بيان اللغة

سواء : وَسَط (মধ্যস্থান) يقال : في سَواءِ الجحيم، و في سواء السبيل و قال تعالى : سواء عليهم أ أنذرتهم أم لم تنذرهم، أي : يستوي الأمران في أنهما لا يُغنيان .

يردون : (ن، رَدًّا) رَدَّه عن .. : صَرَفَه و منَعه - أرجعه
رده إليه : أعاده، أرجعه
رد عليه : خَطَّأَ قولَه
رد عليه الهديةَ : لم يقبَلها . رد عليه السلام : أجابه
حسدا : حَسَده (ن، حَسَدًا) تَمنّى أن يزولَ نِعمتَه
و غَبَطه (ض، غَبْطًا) : تَمَنّى أن يحصُلَ له مثلُ ما حصل له، مِن غيرِ أن يتمنّى زوالَها عنه . و رُوي : المؤمن يَغبط و المنافق يحسد
اصفحوا : صفح عنه : أعرض عنه (ف، صَفْحًا) صفَح عن ذنبه : عفا عنه
اعفوا : عفا عَن ذَنبِه/عنه ذنبَه (ن، عَفْوًا) : سامحه

بيان الإعراب

ما لكم من دون الله من ولي : ولي مجرور لفظا، مرفوع محلا، على أنه مبتدأ مؤخر، و لكم يتعلق بخبر مقدم .
من دون الله : متعلق بمحذوف منصوب على أنه حال من : ولي
كما سئل : الكاف حرف جر، و ما مصدرية، و المصدر المؤول في محل جر بالكاف، متعلق بمفعول مطلق محذوف، أي : تسألوا رسولكم سؤالا كسُؤالِ قومِ موسى نبيَّهم موسى . و يجوز أن يكون الكافُ اسمًا بمعنى مِثْلٍ، في محل نصب مفعول مطلق نائب عن المصدر، أي : سُؤالا مِثلَ سؤالِ قومِ موسى نبيَّهم موسى .
كفارا : إن كان (يردون) بمعنى يُرجعون فهو حال من مفعول يردون، و إن كان بمعنى (يُصَيِّرون) فهو مفعول به ثان .
حسدا : مفعول لأجله، منصوب عامله يردون أو ود
من عند أنفسهم : يتعلق بـ : ود، و من بعد ما يتعلق بـ : ود أيضا، و المعنى : تمنوا أن ترتدوا عن دينكم، وَ تَمَنِّيهم ذلك من عند أنفسهم لا من حبِّ الحقِّ، لأنهم ودوا ذلك من بعد ما تبين لهم أنكم على الحق.
فاعفوا : هذه الجملة جواب شرطٍ مقدر، أي : إذا كان الأمر كذلك فاعفوا
و ما تقدموا لأنفسكم من خير : الواو استئنافية، و ما اسم شرط جازم مبني في محل نصب مفعول به مقدم، و تقدموا فعل الشرط .

و من حرف جر بياني، و هو متعلق بحال محذوفة من : ما، أي : ما تقدموا لأنفسكم معدودا من خير

الترجمة

কিতাবীদের অনেকে তাদের মনের প্রতিহিংসাবশত 'মনেপ্রাণে' চায় যে, তোমাদের মুমিন হওয়ার পর তারা তোমাদেরকে কাফির বানিয়ে ফেলবে। (তারা এটা চায়) তাদের সামনে হক প্রকাশিত হওয়ার পর।

যাই হোক, তোমরা ক্ষমা করো এবং মার্জনা করো আল্লাহ তাঁর ফায়ছালা জারী করা পর্যন্ত। নিঃসন্দেহে আল্লাহ সর্বকিছুরই উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

আর কায়েম করো তোমরা ছালাত এবং আদায় করো যাকাত। আর যা কিছু নেক আমল তোমরা নিজেদের (কল্যাণের) জন্য আগে পাঠাবে তা পাবে আল্লাহর কাছে। (কারণ) আল্লাহ তো তোমাদের সকল কৃতকর্ম সম্পর্কেই পূর্ণ অবলোকনকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'মনেপ্রাণে' চায় যে, – ود এর অর্থের মাঝে ইচ্ছা ও কামনার প্রবলতা রয়েছে। তাই থানবী (রহ) دل سے چاهتے هيں ব্যবহার করেছেন এবং উপরোক্ত কারণও নির্দেশ করেছেন।

(খ) 'যে', হচ্ছে হরফুল মাছদার لو এর প্রতিশব্দ। এ কারণেই তরজমায় ফেয়েলের প্রতিশব্দরূপে ফেয়েল ব্যবহৃত হয়েছে। لو এর প্রতিশব্দ ব্যবহার না করে প্রত্যক্ষ মাছদার ব্যবহার করা যায়, যেমন–

'মনেপ্রানে তারা তোমাদেরকে কাফির বানিয়ে ফেলতে চায়।

(গ) ود ফেয়েলটি থেকে ... من بعد ما অংশটির দীর্ঘ দূরত্বের কারণে বন্ধনীতে ফেয়েলটি পুনরুক্ত হয়েছে। বিকল্প তরজমা এই হতে পারে–

.... তাদের সামনে হক প্রকাশিত হওয়ার পরও নিছক মনের প্রতিহিংসাবশত তারা মনেপ্রাণে চায় যে, তোমাদের মুমিন হওয়ার পর তোমাদেরকে তারা কাফির বানিয়ে ফেলবে।

من عند أنفسهم অংশটির যে তিন তারকীব উপরে বর্ণিত হয়েছে, কিতাবের তরজমায় সেগুলোর কোনটি অনুসরণ করা

হয়নি, বরং এটিকে حسدا এর متعلق রূপে তরজমা করা হয়েছে। তরজমাটি চিন্তা করলেই তা বোঝা যাবে।

(ঘ) حتى يأتي الله بأمره (আল্লাহ তাঁর ফায়ছালা জারী করা পর্যন্ত) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, আল্লাহর ফায়ছালা আসা পর্যন্ত। অর্থাৎ তারা متعديএর তরজমা করেছেন لازم দ্বারা। এ পরিবর্তন অশুদ্ধ না হলেও অসঙ্গত। শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) তা পরিবর্তন করেন নি।

(ঙ) لأنفسكم নিজেদের (কল্যাণের) জন্য – ل অব্যয়টি কল্যানের অর্থ নির্দেশ করছে। 'যা কিছু' এখানে ما এর মাঝে عموم এর অর্থ বিবেচনা করা হয়েছে।
'আগে পাঠাবে' বিকল্প তরজমা ঃ অগ্রবর্তী করবে, বা আখেরাতে পাঠাবে।

(চ) (কারণ) এ দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, পরবর্তী বাক্যটি পূর্ববর্তী বাক্যের জন্য হেতুবাচক।

أسئلة :

١ – ماذا تعرف عن كلمة سواء ؟

٢ – ما الفرق بين حَسَدَ و غَبَطَ ؟

٣ – عَيِّن مفعولَ ود ٠

٤ – ما الفرق بين إعراب ما تقدموا و بين إعراب ما تقدموه ٠

٥ – মনেপ্রাণে চায় – এ তরজমার ব্যাখ্যা দাও

٦ – حتى يأتي الله بأمره এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١٠) وَ مَن يَرغَبُ عن ملةِ ابرهيمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نفسَه، وَ لقد
اصطَفَينٰه في الدنيا ، وَ اِنه في الاٰخرة لمن الصّٰلحين * اِذ قال
له ربُّه اَسْلِم، قال اسلَمْتُ لرب العٰلمين * وَ وَصّٰى بها ابرهيمُ
بنيه وَ يعقوبُ، يٰبَنِيَّ اِن اللّٰهَ اصطَفٰى لكم الدينَ فلا تَموتُنَّ اِلاّ
وَ انتم مسلِمون * ام كنتُم شُهَداءَ اِذ حضَر يعقوبَ الموتُ، اذ
قال لِبَنِيه ما تعبدون مِن بعدي، قالوا نَعبد اِلٰهَك و اِلٰهَ ابائِك

ابرهيمَ و اسمٰعيلَ و اسحٰق اِلهًا واحدا ، و نحن له مسلمون *
تلك اُمَّة قد خلَتْ، لَها ما كسَبت وَ لكم ما كسَبتُم، و لا تُسئلون عَمَّا كانوا يَعملون * وَ قالوا كونوا هُودًا أو نَصٰرى تهتَدوا ، قل بَل مِلَّة ابرهيمَ حنيفا ، وَ ما كان مِنَ المشركين *
قولوا اٰمنا بِاللّٰهِ و ما اُنزِلَ إلينا و ما اُنزِلَ إلى ابرهيِمَ و اسمٰعيل و اسحٰق و يعقوبَ و الاسباط وَ ما اُوتيَ موسٰى و عيسٰى و ما اُوتيَ النبيُّون من ربهم، لا نفرِّق بينَ احدٍ منهم، وَ نحن له مسلمون * فان اٰمنوا بِمِثْلِ ما اٰمنتُم به فَقَدِ اهتَدوا ، و اِن تَولوا فَاِنَّما هم في شِقاق، فَسَيَكفِيكَهُم اللّٰه، و هو السميع العليم *

بيان اللغة

يرغب : (س، رَغَبًا ، رَغْبَةً)، إذا قِيلَ رغِب فيه أو إليه فمعناه حَرَصَ عليه و طَمِع فيه و مال إليه، قال تعالى : إنا إلى الله راغبون ·
و إذا قيلَ رغِب عنه فمعناه صَرَف رَغْبَتَه عنه و زَهِدَ فيه ·
و سَفِه نفسه : حَمَلها على السفَهِ (انظر ٢/١/٣)
নির্বুদ্ধিতার পরিচয় দিলো। নিজেকে নির্বোধ বানালো।
وَصّٰى : وَصَّاه بِشَيْءٍ (تَوْصِية) : أمره به و فَرَضه عليه ·
তাকে কোন কিছুর আদেশ করলো।
قال تعالى : وَ وَصَّينا الإنسانَ بِوَالِدَيْهِ إحسانًا ·
وَصّٰى فلانًا و أوصاه : جَعَله وَصِيَّه، يَتصرَّف في أَمْرِه و ماله و عِياله بعدَ موته
তাকে অছী বা তত্ত্বাবধায়ক নিযুক্ত করলো
وَصِيَّةٌ و الجمع وَصايا
যা অছিয়ত করা হয়, ইচ্ছাপত্র, উপদেশ
شُهداء : جمع شَهيدٍ : مَن قُتل في سبيل اللّٰه، و الشهداء جمع شاهدٍ و شَهيد : مَن يؤدي الشهادةَ، و مَن كان حاضِرا و مُشاهِدًا لشيءٍ

شَهِد على كذا (س، شَهادة) أخبر به خبرًا قاطعًا সাক্ষ্য দিলো
شهد المجلسَ (س، شُهودا) حَضَرَ المجلِسَ
شَهِد شيئًا : عايَنَه و شاهَده অবলোকন করলো

حنيف : مَن يميل من الشرّ إلى الخير، و من الدين الباطل إلى الدين الحق، و الجمع حُنفاء . الدين الحنيف : المستقيم الذي لا عِوَجَ فيه، و هو الإسلام . وَ الحنفاء مَن كانوا علي دينِ إبراهيمَ في الجاهِلية

الأسباط : جمع سِبطٍ، و هم حَفَدَة يعقوبَ، أي : ذرية أبنائه . و كانوا اثنَيْ عَشَرَ سِبْطًا . خلت (انظر : ٣/١/٢)

بيان الإعراب

أم : حرف عطفٍ عُطف به على محذوف، أي : أ تَدَّعُون أم كنتم حاضرين .

إذ (انظر : ٣/١/٣) هو ظرف لـ : شهداء، و الجملة في محل جر بإضافة الظرف إليها . و إذ الثانيةُ بدل من إذ الأولى .

من بعدي : متعلق بـ : تعبدون، أو متعلق بمحذوف منصوب على أنه حال من فاعل تعبدون، أي : ما تعبدون عائشين من بعدي .

إلها واحدا : بَدَلٌ مِنْ إِلٰهَك، ويجوز أن يكون منصوبا على الحال، لأن الجامدَ إذا وُصِفَ أتىٰ حالا، أي : نعبد الهك متوحّدا .

قد خلت : الجملة في محل رفع صفة لـ : أمة

عما : هي مركبة من : عن و ما، ما اسم موصول، أي : عن العمل الذي كانوا يعملونه، و يجوز أن تكون ما مصدرية .

مِلةَ إبرهيمَ : مفعول به لفعل محذوف، أي : بل نتبع ملة ابراهيم، و حنيفا حال من إبراهيم

و اسمعيل و إسحق.... أسماء معطوفة بِوَاوَاتِ العطف على إبراهيم .

ما أوتي موسى : معطوفة علي ما أنزل .

سيكفيكهم : أصل الضمير الثاني إياهم، و هو مفعول به ثان

لا نفرق بين أحد منهم : النكرة الواقعة في سِيَاقِ النفي تُفيد العمومَ، و لِذلك صَحَّ دخولُ بين عليها، و هي لا تكون إلا بين شيئين .

و من يرغب : الواو استئنافية، و من اسم استفهام في محل رفع مبتدأ، معناه النفي و الإنكار، أي : لا يرغب عن ملة إبراهيم إلا من سفه نفسه . إلا : أداة استثناء، و المستثنى منه محذوف .

الترجمة

আর কে বিমুখ হতে পারে ইবরাহীমের মিল্লাত থেকে, ঐ ব্যক্তি ছাড়া যে সাব্যস্ত করে নিজেকে নির্বোধ! আর আমি তো নির্বাচন করেছি তাঁকে দুনিয়াতে (রিসালাত ও নবুওতের জন্য)। আর অতিঅবশ্যই তিনি আখিরাতে পুণ্যবানদের মাঝে শামিল হবেন।

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন বললেন তাঁকে তাঁর প্রতিপালক, তুমি অনুগত হও। তিনি বললেন, অনুগত হলাম আমি রাব্বুল আলামীনের।

আর এই মিল্লাত গ্রহণেরই 'অছিয়ত' করে গিয়েছেন ইবরাহীম তাঁর পুত্রদেরকে এবং ইয়াকুব (তার পুত্রদেরকে এবং বলেছেন), হে আমার পুত্রগণ! নিঃসন্দেহে আল্লাহ নির্বাচন করেছেন তোমাদের জন্য এই দ্বীন (ইসলাম) কে। সুতরাং মৃত্যু বরণ করো না তোমরা 'মুসলিম' না হয়ে।

(তোমরা কি কোন প্রমাণের ভিত্তিতে দাবী করো যে, ইবরাহীম ও ইয়াকূব ইহুদী বা নাছারা ছিলেন) নাকি ইয়াকূবের কাছে মৃত্যু উপস্থিত হওয়ার সময় তোমরা (সেখানে) উপস্থিত ছিলে! যখন বললেন তিনি আপন পুত্রদেরকে, 'কিসের' ইবাদত করবে তোমরা আমার পরে? তারা বললো, ইবাদত করবো আমরা আপনার ইলাহের এবং আপনার পূর্বপুরুষ ইবরাহীম, ইসমাঈল ও ইসহাকের ইলাহের, অর্থাৎ (লা-শরীক) এক ইলাহের, আর আমরা (আমৃত্যু) তাঁরই অনুগত থাকবো।

এঁরা ছিলেন এক সম্প্রদায়, যারা বিগত হয়েছেন, তারা যা অর্জন করেছেন সেটাই তাদের কাজে আসবে, আর তোমরা যা অর্জন করেছো সেটাই তোমাদের কাজে আসবে। তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাও করা হবে না তাদের কর্ম সম্পর্কে, (নসবের সুবাদে তাদের কর্ম দ্বারা তোমাদের উপকার লাভ করা দূরের কথা)।

তারা বলে, হয়ে যাও তোমরা ইহুদী বা নাছারা (তাহলে) তোমরা সৎপথপ্রাপ্ত হবে। আপনি বলুন, (তা কিছুতেই হবে না) বরং আমরা তো ইবরাহীমের মিল্লাতই অনুসরণ করবো, যিনি ছিলেন সত্যপন্থী,

আর ছিলেন না তিনি মুশরিকদের দলভুক্ত।
বলো তোমরা, ঈমান এনেছি আমরা আল্লাহর প্রতি এবং ঐ আহকামের প্রতি যা নাযিল করা হয়েছে আমাদের প্রতি এবং যা নাযিল করা হয়েছে ইবরাহীম ও ইসমাঈল ও ইসহাক ও ইয়াকূব ও 'আছবাত'-এর প্রতি এবং যা (কিতাব ও মুজিযা) দেয়া হয়েছে মূসা ও ঈসাকে এবং যা দেয়া হয়েছে অন্য নবীদেরকে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে, এমনভাবে যে, (ঈমান আনার ক্ষেত্রে) পার্থক্য করি না আমরা তাদের কারো মাঝে। আর আমরা তো তাঁরই অনুগত।
এখন তারা যদি ঐভাবে ঈমান আনে যেভাবে তোমরা ঈমান এনেছো তাহলে তো তারাও সত্যপথ প্রাপ্ত হবে, আর যদি তারা (তা থেকে) সরে যায় তাহলে তারা বিরোধিতায় লিপ্ত আছে। সুতরাং তাদের মোকাবেলায় অবশ্যই আল্লাহ আপনার জন্য যথেষ্ট হবেন। আর তিনিই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞানী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ومن يرغب عن ملة ابراهيم الا من ... (আরকে বিমুখ হতে পারে ইবরাহীমের মিল্লত থেকে ঐ ব্যক্তি ছাড়া যে ...) نفي ও استثناء দ্বারা যে حصر বা সীমাবদ্ধায়নের অর্থ সৃষ্টি হয় তার ইছবাতি তরজমা এরকম- তারাই শুধু ইবরাহীমের মিল্লাত থেকে বিমুখ হতে পারে যারা .....

এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা, আর উপরের তরজমাটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর।

سفه نفسه শায়খুলহিন্দ (রহ) نفسه কে سفه এর মাফউল ধরে তরজমা করেছেন। কিতাবে সেটাই অনুসরণ করে লেখা হয়েছে, নিজেকে নির্বোধ সাব্যস্ত করে।

থানবী (রহ) نصب بنزع الخافض এর ভিত্তিতে তরজমা করেছেন, যারা নিজেদের স্বভাবেই নির্বোধ।

(খ) وصى এর তরজমায় অনেকেই 'নির্দেশ' ব্যবহার করেছেন। কিতাবে অছিয়ত শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে। কারণ তা আলাদা গুরুত্ব বহন করে।

(গ) 'এই দ্বীনকে' এখানে ال কে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে।

(ঘ) ما تعبدون من بعدي (কিসের ইবাদত করবে তোমরা আমার পরে?) এখানে ما হচ্ছে غير عاقل এর জন্য, থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় এ বিষয়টি বিবেচনায় রেখেছেন, কিতাবে তাঁকে অনুসরণ করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, তোমরা কার ইবাদত করবে?

(ঙ) الهاء واحد এর তরজমায় অধিকাংশ মুতারজিম এটাকে স্বতন্ত্র বাক্যরূপে তরজমা করেছেন, 'তিনি এক আল্লাহ, বা এক ইলাহ'। থানবী (রহ) মূল তারকীব তথা বদলের ভিত্তিতে তরজমা করেছেন। অপ্রয়োজনীয় পরিবর্তন পরিহারের উদ্দেশ্যে কিতাবে সেটাই অনুসরণ করা হয়েছে।

(চ) (আমৃত্যু) এ সংযোজনের কারণ, এখানে ইসমিয়্যা বাক্যটি অব্যাহততার অর্থ প্রদান করছে।

(ছ) حنيفا এটিকে ملة এর ছিফাত ধরে থানবী (রঃ) তরজমা করেছেন, 'যাতে কোন বক্রতা নেই।' (বিকল্প তরজমা, যা সরল বা সত্যাভিমুখী)

(জ) 'আছবাত' দ্বারা এখানে উদ্দেশ্য হলো ইয়াকূব (আঃ)-এর বারটি বংশধারা। কিতাবের তরজমায় এর বাংলা প্রতিশব্দ ব্যবহার করা সঙ্গত মনে হয়নি।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة حنيف .

٢ – أعرب أم

٣ – أعرب قوله تعالى : إلها واحدا .

٤ – علام عطف قوله تعالى : ما أوتي موسى ؟

٥ – سفه نفسه এর তরজমা পর্যালোচনা কলো

٦ – حنيفا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١) سَيقول السُّفهاء مِن الناس ما وَلّٰهم عن قبلَتِهم التي كانوا عليها ، قل لِلّٰه المشرِقُ و المغرِبُ، يَهدي من يَشاء الى صراط مستقيم* وَ كذٰلك جَعلنٰكم اُمّةً وَسَطا لِتَكونوا شُهداء على الناس و يكونَ الرسولُ عليكم شَهيدا ، و ما جعلنا القِبلَةَ التي كنتَ عليها اِلّا لِنعلمَ مَن يتَّبِع الرسُول مِمَّن ينقلِب على عَقِبَيْهِ، و اِنْ كانَتْ لَكبيرةً اِلا على الذين هَدَى اللّٰه، و ما كان الله لِيُضِيع ايمانَكم، اِنَّ اللّٰه بالناس لَرَءوف رحيم *

بيـان اللـغـة

وَلّٰهم (تولية) : صَرَفهم (انظر ٣ / ١/ ٦) তাদেরকে ফিরিয়ে রাখলো

وَلّٰى الشيءُ : ذهب و أدبر و مضى

وَ لّٰى الشيءَ/عن الشيءِ : تركه و أَعْرَض عنه، أدبر عنه و انصرف . يقال : ولى مُدبرا و ولى هاربًا

وَلّٰى فلانًا الأمرَ : جعله وَاليًا عليه

وَسَطا : الوسَط (بفتح السين) للمذكر و المؤنث و الواحد و الجمع : المعتدل (بينَ الرديءِ و الجيدِ) উত্তম ও অধমের মাঝামাঝি, মধ্যম

الخيرُ (وهو ما بين الإفراطِ و التفريطِ، كالجُودِ بينَ الإسرافِ و البُخلِ) উত্তম গুণ, উত্তম গুণের অধিকারী। ন্যায়পরায়ন

أمّةٌ وَسَط : خِيارٌ و عُدولٌ

وسَط الشيءِ : ما بين طَرَفيه (وسَطُ الحبل / الرأس / الدار) কোন বস্তুর মধ্যবর্তী স্থান

الوسْط (بسكون السين) : ظرفٌ بمعنى بينَ، يقال : جلس وَسْطَ القوم، أي : بينهم

شهداء : (انظر ٣/ ١ / ١٠)

ينقلب على عقبيه : يَرتَدُّ على دُبُرِه (و المراد الإعراض و الانصراف)
পিছন ফিরে সোজা চলে যায়।

انقلب إلى : انصرف إلى، رجع إلى . انقلب عن : انصرف عن
قلب الشيءَ (قلبا، ض) جَعل أعلاه أَسْفَلَه أو يمينَه شِمالا أو باطنَه ظاهرًا উল্টালো-পাল্টালো (উপরকে নীচে করলো, ডানকে বামে করলো, বাহিরকে ভিতরে করলো)

قَلَبَه إلى : صرَفه إلى . قال تعالى : يعذب من يشاء و يرحم من يشاء و إليه تُقلَبون .

قَلَّب الشيءَ : مبالغةٌ في قَلَب

عقبيه : تثنيةُ عَقِبٍ في حالة الجر و النصب، و هو مُؤَخَّرُ القَدَمِ গোড়ালী و سقوط نون التثنية للإضافة .

رؤوف : (কোমল, সদয়) و الرؤوف من إسماء الله الحسنى . رؤف به (ك، رَأْفَةً، رَآفَةً) : رحمه أشدَّ الرحمةِ و عَطَفَ عليه . قال تعالى : و جعلنا في قلوب الذين اتبعوه رأفة و رحمة .

بيان الإعراب

من الناس : الجار و المجرور متعلقان بمحذوفٍ حالٌ مِنْ السفهاءِ، أي : معدودين من السفهاء، و القائلون هم اليهودُ .

ما ولهم عن قبلتهم التي كانوا عليها : ما اسم استفهام بمعنى أيُّ شيءٍ مبتدأ، و الجملة خبر ما .

الموصول في محلِّ جر صفة لـ : قبلتهم، عليها، أي : عاكفين عليها في الصلاة، و هو خبر الناقص، و المراد بهذه القبلة بيت المَقْدِسِ .

و كذلك جعلنكم أمة وسطا : الواو استئنافية، و المعنى : يا معشر المسلمين ! جعلناكم امة خيارًا عُدولا جَعْلاً كجعلِ الكعبة قبلتَكم بَدَلَ بيتِ المقدس . فالإشارة بـ : ذلك إلى جَعْلِ الكَعبة قِبلة مَكان بيت المقدس، و الجار مَعَ مجروره متعلق بمصدر محذوفٍ .

و يجوز أن يكون الكاف إسمًا بمعنى مثلٍ، و هو في محل نصبٍ صِفَة للمصدر المحذوفِ .

تكونوا : منصوب بـ : أنِ المضمَرَة بعدَ لام التعليلِ، و المصدر المؤَّول في محل جر . على الناس متعلق بـ : شُهداءَ .

القبلةَ : مفعولُ جعلنا الأوَّل، و التي اسم موصول في مَحَل نَصْب صِفة للقبلَة، أمَّا المفعول الثاني فهو محذوف، أي : مَنسوخَة .

إلا لِنعلمَ من يَتَّبِع الرسولَ : إلا أداة حَصْر لا عَمَل لها ، و لنعلم متعلق بـ : جعلنا ، و الموصول وَصلته مَفعول نَعلم، وَ ممن ينقلِب على عَقِبيه، يتعلق بـ : نعلم، لأنه يَتَضمَّن معنى نُمَيِّز . و المعنى : إنما جعلنا القِبلَة التي كنتَ عليها لِنمَيِّز المتبعين مِنْ غير المتبعين .

و إن : الواو اعتراضِيَّة أو حالِية، و إن مخففة من الثقيلة، لا عَمَل لها، لأنها دَخلت على جملة فعلية .

كانت : اسم الناقص ضمير مستتر تقديره هي، أي : التوليةُ إلي الكعبة، و كبيرةٌ خبره، و اللام هي الفارقة بين إن النافية و إن المخففة، و هذه اللام لازمة .

إلا : أداة استثناء، و على الذين في موضع نصب على الاستثناء، و المستَثْنى منه مَحذوف، أي : و إن كانت لكبيرة على الناس إلا على الذين هداهم اللّٰه .

وَ لَك أن تجعلَ إلا أداة حصرٍ، و يَعتمِد الحصر على معنى النفي المفهومِ من السِّياق، أي : لا تَسْهُل إلا على الذين هداهم الله

و ما كان الله ليضيعَ إيمانَكم : الواو عاطفة و ما نافية .

لِيُضيعَ : اللام لام الجحود التي يجب أن تكون مسبوقَة بـ : كونٍ مَنْفِيٍّ . و يُضمَر أن بعد لام الجحود وجوبًا وَ بَعْد لام التعليل جوازًا .

و المصدر المؤول في محل جر بلام الجحود ، و لام الجحود الجارَّة متعلِقَة دائمًا بخبرِ كانَ المحذوف، و أصلُ العبَارةِ : و ما كان الله مريدًا لإضاعَة إيمانكم .

إن الله ... : هذه الجملة تعليلية، لا محل لها من الإعراب .

ফায়দা ঃ নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম এবং ছাহাবাগণ হিজরতের পূর্বে মক্কায় এবং হিজরতের পরে মদীনায় প্রথম দিকে

বাইতুল মাকদিস অভিমুখী হয়ে ছালাত আদায় করতেন। বাইতুল মাকদিসই ছিলো ইহুদীদের এবং মুসলিমদের কিবলা। কিন্তু নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের অন্তরের আকাঙ্ক্ষা ছিলো, কা'বাতুল্লাহই যেন কিবলা হয়। আল্লাহ তা'আলা তাঁর প্রিয় নবীর আরযু পূর্ণ করে যখন تحويل القبلة বা কিবলা পরিবর্তনের আদেশ দিলেন তখন ইহুদীরা মূর্খের মত সমালোচনা শুরু করলো যে, মুহম্মদ স্বদেশের এবং স্বজাতির টানে কিবলা পরিবর্তন করেছেন, অচিরেই তিনি স্বজাতির ধর্মে ফিরে যাবেন। সে সম্পর্কে আল্লাহ আগেই আয়াত নাযিল করেছেন।

الترجمة

এখন তো অবশ্যই বলবে, (এই) নির্বোধ লোকেরা কোন্ কারণ মুসলিমদেরকে ফিরিয়ে দিলো তাদের (পূর্ববর্তী) কিবলা (বাইতুল মাকদিস) থেকে, যার উপর তারা (স্থির) ছিলো!

(উত্তরে) আপনি বলুন, মাশরিক ও মাগরিব তো আল্লাহরই। তিনি যাকে ইচ্ছা করেন (তাকে) সরল পথ প্রদর্শন করেন।

এভাবেই বানিয়েছি আমি তোমাদেরকে উত্তম উম্মত, যাতে তোমরা সাক্ষ্য দানকারী হও (নবীগণের পক্ষে এবং পূর্ববর্তী) লোকদের বিপক্ষে, আর (তোমাদের) রাসূল তোমাদের পক্ষে সাক্ষ্যদানকারী হন। আর যে কিবলার উপর আপনি (ইতিপূর্বে স্থির) ছিলেন তাকে আমি (রহিত) করেছি শুধু এজন্য যে, যারা রাসূলকে অনুসরণ করে তাদেরকে আমি পৃথকভাবে চিনে রাখবো ঐ লোকদের থেকে যারা উল্‌টো পায়ে ফিরে যায়।

আর নিঃসন্দেহে এই কিবলা পরিবর্তন (লোকদের উপর) কঠিন হয়েছে, তবে তাদের উপর নয় (যাদেরকে) আল্লাহ হিদায়াত দান করেছেন। আর আল্লাহ তোমাদের ঈমান (নামাযের ছাওয়াব) নষ্ট করার ইচ্ছুক নন। (কারণ) আল্লাহ মানুষের প্রতি অত্যন্ত দয়ালু (ও) করুণাময়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) سيقول (এখন তো অবশ্যই বলবে) এই س এর দু'টি অর্থ রয়েছে, অতিসত্বরতা এবং তাকীদ। থানবী (রহ) তার তরজমায় উভয় অর্থ বিবেচনায় এনেছেন। তাকীদের জন্য ضرور ব্যবহার করেছেন। 'অতিসত্বরতা' এর জন্য সাধারণ উর্দূ

শব্দ হচ্ছে عنقريب (অতিসত্বর বা অচিরেই) কিন্তু এর পরিবর্তে তিনি "اب تو" (এখন তো) ব্যবহার করেছেন। কারণ এখানে অসন্তোষের ভাব বিদ্যমান রয়েছে। আর এই শব্দটি অতিসত্বরতা যেমন বোঝায় তেমনি অসন্তোষের ভাবও প্রকাশ করে। কোন কোন উর্দূ তরজমায় عنقريب এবং বাংলা তরজমায় অচিরেই শব্দ এসেছে যা আয়াতের সঠিক ভাবপ্রকাশক নয়।

(খ) থানবী (রহ) বন্ধনীতে (এই) ব্যবহার করে বলেছেন, السفهاء এর ال হচ্ছে বিশিষ্টতাপ্রকাশক।

(গ) 'নির্বোধ লোকেরা'- কোরআনি তারকীবে من الناس হচ্ছে হাল। বাংলায় ছিফাতের তারকীব না করে উপায় নেই। কিন্তু কোন কোন মুতারজিম 'লোকেরা' বাদ দিয়ে শুধু 'নির্বোধেরা' লিখেছেন, এটা সঠিক নয়।

(ঘ) ما ولهم عن قبلتهم (কোন্ কারণ মুসলিমদেরকে ফিরিয়ে দিলো তাদের কিবলা হতে) ما এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন کس چیز نے থানবী (রহ) করেছেন کس بات نے বাংলা মুতারজিমগণ লিখেছেন 'কিসে'। আসলে এখানে প্রশ্নটি 'কারণবাচক', তাই কিতাবে 'কোন্ কারণ' তরজমা করা হয়েছে। کس بات نے এটিও মূলতঃ কারণবাচক প্রশ্ন।

ولهم এবং قبلتهم - এখানে একটি যামীরের তরজমা ইসমে যাহির দ্বারা করা হয়েছে শায়খুলহিন্দের অনুকরণে।

(ঙ) التي كانوا عليها (যার উপর তারা [স্থির] ছিলো) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'যে দিকে তারা পূর্বে অভিমুখী হতো'। একটি বাংলা তরজমায় আছে- 'তারা এ যাবত যে কিবলা অনুসরণ করে আসছিলো'- এ দু'টি হচ্ছে ভাবঅনুবাদ। কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ) এর অনুসরণে শব্দানুগ তরজমা করা হয়েছে এবং বন্ধনীতে كانوا এর খবরের দিকে ইংগিত করা হয়েছে।

(চ) من يشاء -এখানে 'যাকে ইচ্ছা তাকে' এর চেয়ে 'যাকে ইচ্ছা করেন তাকে' তরজমাটি অধিক যথার্থ।

لله শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা করেছেন- الله هى كا هے (আল্লাহরই) থানবী (রহ) এর তরজমা হলো الله هي كى ملك هيں (আল্লাহরই মালিকানাধীন বা নিয়ন্ত্রণাধীন) ل অব্যয়টি

মালিকানাপ্রকাশক। থানবী (রহ) সেটা পরিষ্কার করে দিয়েছেন।

(ছ) أمة وسطا (উত্তম উম্মত) وسط এর একটি অর্থ- মধ্যপন্থী, অন্য অর্থ উত্তম ও ন্যায়পরায়ণ। অধিকাংশ তাফসীরকার দ্বিতীয়টি গ্রহণ করেছেন, কিতাবেও সেটাই গ্রহণ করা হয়েছে। থানবী (রহ) جو نہایت اعتدال پر ہے (যে উম্মত অত্যন্ত মধ্যপন্থার উপর রয়েছে) লিখেছেন, শায়খুলহিন্দ লিখেছেন امت معتدل (মধ্যপন্থী উম্মত) কিন্তু اعتدال ও معتدل এর পূর্ণ অর্থ ও মর্ম 'মধ্যপন্থা' ও 'মধ্যপন্থী' দ্বারা প্রকাশ পায় না, তাই কিতাবে এ তরজমা পরিহার করা হয়েছে।

(জ) على الناس ও عليكم এখানে প্রথম على অব্যয়টি বিপক্ষতার অর্থে এসেছে, কিন্তু দ্বিতীয়টি স্বপক্ষতাপ্রকাশক ل এর স্থানে এসেছে। উদ্দেশ্য হলো على الناس ও عليكم এর মাঝে শ্রুতিসদৃশতা রক্ষা করা, বাংলায় এই অর্থগত ভিন্নতা প্রকাশ করা উচিত।

শায়খুলহিন্দ (রহ) على এর শাব্দিক তরজমা করেছেন لوگوں پر এবং (تم پر)

থানবী (রহ) উভয়ের অর্থগত পার্থক্য নির্দেশ করে লিখেছেন لوگوں کے مقابلے میں (লোকদের মোকাবেলায়) এবং تمہارے لئے (তোমাদের জন্য)

অধিকাংশ বাংলা তরজমায় উভয় ক্ষেত্রে 'জন্য' ব্যবহার করা হয়েছে, যা সঠিক নয়। কিতাবে থানবী (রহ)-এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে।

و ما جعلنا القبلة التي كنت عليها إلا لنعلم من يتبع الرسول ممن ينقلب على عقبيه (আর যে কিবলার উপর আপনি [স্থির] ছিলেন তাকে আমি [রহিত] করেছি শুধু এ জন্য যে, যারা রাসূলকে অনুসরণ করে তাদেরকে আমি পৃথকভাবে চিনে রাখবো ঐ লোকদের থেকে যারা উল্টো পায়ে ফিরে যায়) কিতাবে এ আয়াতটির যথাসম্ভব শব্দানুগ তরজমা করার চেষ্টা করা হয়েছে। যথা- [ক] মাওছূল من কে অপরিবর্তিত রাখা হয়েছে।

[খ] তাযমীনের নিয়মে نعلم এর মাঝে نُمَيِّزُ এর যে অর্থ অন্তর্ভুক্ত রয়েছে তা বিবেচনায় আনা হয়েছে।

[গ] على عقبيه এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।
এ আয়াতের সহজবোধ্য ভাবতরজমা এই– আগে আপনি যে কিবলার উপর ছিলেন, তা শুধু এ জন্য ছিলো যে, আমি জেনে নেবো, কে রাসূলের আনুগত্য করে, আর কে পিছনে হটে যায়।
এ তরজমায়– من কে استفهامية তে পরিবর্তন করা হয়েছে এবং ممن এই متعلق কে عطف এ পরিবর্তন করা হয়েছে।
কেউ কেউ ينقلب على عقبيه এর তরজমা করেছেন– 'পিঠটান দেয়' এটা শোভনীয় নয়।

أسئلة :

١ – اشرح مَعانِيَ الوسَط و الوسْط
٢ – اشرح إعراب قوله : و كذلك جعلناكم
٣ – بم يتعلق قوله : ممن ينقلب ؟
٤ – أعرب قوله تعالى : إلا على الذين هدى الله
٥ – ما ولهم এখানে ما এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – عليكم ও على الناس উভয় ক্ষেত্রে على এর প্রতিশব্দ পর্যালোচনা করো

(٢) قَد نرىٰ تقلُّبَ وجهِك في السَّماء، فَلَنُوَلِّيَنَّك قبلةً ترضٰها، فَوَلِّ وجهَك شَطْرَ المسجدِ الحرام، وحيثُ ما كنتم فَوَلُّوا وجوهَكم شطرَه، وَ ان الذين اُوتوا الكتٰبَ لَيَعلمون اَنه الحقُّ من ربهم، و ما الله بِغافلٍ عَمَّا يَعملون * وَ لَئِنْ اتيتَ الذين اُوتوا الكتٰب بِكُلِّ اٰيَةٍ ما تَبِعُوا قبلَتَك، و ما انتَ بِتابعٍ قبلَتَهم، و ما بعضُهم بتابعٍ قبلَةَ بَعضٍ، وَ لَئِنِ اتَّبعتَ اهواءَهم من بعدِ ما جاءَك مِنَ العلمِ انك اذا لَمِنَ الظّٰلمين *

بيان اللغة

تقلُّبَ وجهِك : أي تطلُّعَك إلى جِهَةِ السماءِ معَ الاضطراب .

نولينك : (অবশ্যই তোমাকে ফেরাবো) وَلَّاه إلى ... কোন দিকে ফেরালো
تَرْضٰى : (তুমি পছন্দ করো) (رِضًا ، رِضْوانا ، مَرْضاةً)
رَضِيَ عنه ضِدُّ سَخِطَ عليه . قال تعالى : رضي الله عنهم و رضوا عنه
رضي شيئًا و به و عنه : اختاره و قَبِله و أحبه
قال تعالى : أرضيتم بالحيٰوة الدنيا مِنَ الآخرة .
رضي له شيئًا : اختاره له، قال تعالى : رضيت لكم الإسلام دينا
أرضاه (إرضاء) : جعله يَرْضٰى، قال تعالى : يُرضونكم بِأَفْواهِهم و تَأبٰى قلوبُهم .
تَراضَيَا : رضي كلٌّ منهما بِصاحِبِه
ارتضاه : رضيه، اختاره
شطر : نصفُ الشيءِ أو الجزءِ منه، و الجمع أَشْطُرٌ و شُطور، و الشطر مصدرٌ استُعْمِل ظرفًا بمعنى الناحيةِ . شَطرَ المسجدِ : جِهةَ المسجدِ
شَطَر شيئًا (ن، شَطْرًا) : قَسَمَه، جعله نِصفين
حيثُما : اسمُ شرطٍ جازمٌ محله النصبُ على الظرفيَّة المكانيَّة، و أصله حيث، وهو ظرف مكانٍ مَبني على الضَّم، يُضاف إلى الجمَل، و تتصل به ما الكافَّةُ فيتَضَمن معنى الشرطِ و يَجزِم فعلين، و في المصحف يُكتَب ما منفصلةً عن حيثُ
الحرام : (مصدر من باب فرح و كرم) حرُم عليه الأمرُ : امتنع عليه و صار حرامًا عليه . و استعمِل صفةً بمعنى الممنوعِ و المحرَّمِ و المقدَّس
تابع (اسم فاعل مِن تَبِعَ) تبعه (س، تَبَعا) مَشى خلفه، سَارَ في أَثَرِه . انقادَ إليه
اِتَّبعه : تَبِعه . حَذا حَذْوَه وَ اقتَدٰى به তার অনুগমন/অনুসরণ করলো
اتبع القرآنَ و الحديثَ : عمل بهما

بيان الإعراب

قد : حرفٌ يُختَصُّ بالفعل، يُفيد التوقُّعَ مع المضارع، نحو : قد يقدَم الغائبُ اليومَ، و التقليلَ، نحو : قد يصدُق الكذوب، أي : قَلَّما يصدُق

و التحقيقَ مع الماضي، نحو : قد أفلح المؤمنون
و تقريبَ الماضي لِلحال، نحو : قد قام فلان
و هو هنا للتكثير، يَدلُّ على كثرَة التقلُّب، أو هو حرف تحقيق، لأن الفعل لفظُه مضارع وَ معناه ماضٍ، أي قد رَأينا
في السماء : يتعلق بـ : تقلبَ، أو بمحذوفٍ، حال من كاف الخِطاب، أي : ناظِرًا في السَّماء .
فَلَنولينَّك : الفاء للتعليل، و قبلةً مفعول به ثانٍ، و يجوز نصبها على نزع الخافض، أي : إلى قبلة، و ترضاها صفة لـ : قبلةً .
شطرَ : ظرف متعلق بـ : وَلِّ، و الحرام صفة للمسجد بمعنى المحرَّم .
و حيث ما : الواو استئنافية، و حيثما اسم شرطٍ جازم في محل نصب على الظرفيَّة، يتعلق بجواب الشرط، و كنتم فعل تام بمعنى وجدتم، و الجملة في محل جزم شرط . وكان القياسُ أن تكونَ هذه الجملة في محل جر بالإضافة لو لا المانعُ، وهو كونُها مِن عوامِلِ الأفعال .
فولوا : الفاء رابطة، و الجملة جواب الشرط .
الفائدة : حيث ظرف مكانٍ مبنيٌّ على الضم، و مضافٌ إلى الجمل، فهو يقتضي جرَّ ما بعده، و ما يقتضي الجر لا يقتضي الجزمَ، فَلَمَّا وصلت بـ : " ما " اقتضى الجزم وَ زالَ عنها مَعنى الإضافَةِ .
و لئن : الواو استئنافية، وَ اللام مُوَطِّئَة للقسَم .
وَطَّأَ الشيءَ : هَيَّأه — তাকে প্রস্তুত করলো
أي : أن هذه اللامَ تُوَطِّئُ للقَسَم
এই লামটি কসমের জন্য ক্ষেত্র প্রস্তুত করে, অর্থাৎ এ কথা বোঝায় যে, এখানে কসমের অব্যয় ও ফেয়েল উহ্য রয়েছে।
أتيت الذين : فعل و فاعل و مفعول به، وَ أُوتوا الكتابَ صلة الموصولِ، و الجار مع مجروره متعلق بـ : أتيت، و الجملة شرط
ما تبعوا قبلتك : هذه الجملة لا محل لها من الإعراب، لأنها جوابُ القسَم .
وَإذا اجتمَعَ شرط و قسَمٌ فالجواب للمتقدِّم منهما، و قد قامَ جواب القسَم مَقام جواب الشرطِ .
وَ لك أن تقولَ : جوابُ القسَم قرينةٌ تدل على جواب الشرط المحذوفِ .

و ما أنت .. و ما بعضهم ... بعض : الواو الأولى اعتراضيّة، وَ الجملَة معترضَة، فلا مَحَل لها من الإعرَاب ·
وَ الواو الثانية عاطِفة عُطفتْ بها الجملة الثانيةُ على السابِقَة ·

و لئن اتبعت : الواو استئنافية أو عاطفة، عطفت بها الجملة الشرطية على سابِقَتها، و هي لئن أتيت ...

إذاً : لا محل لها من الإعراب، أداة جواب و جزاءٍ، جِيْءَ بها لتوكيد القسَم و هذه الجملة جواب القسَم، لا جواب الشرطِ، لذلك لم ترتَبِطْ بالفاء ·

الترجمة

আমি দেখছি (ব্যাকুলতার কারণে) আসমানের দিকে বারবার আপনার 'মুখফেরা'। সুতরাং অতিঅবশ্যই আমি ফিরিয়ে দেবো আপনাকে ঐ কেবলার দিকে, যা আপনি পছন্দ করেন। এখন থেকে ফেরাতে থাকুন আপনি আপনার চেহারা (নামাযে) মসজিদুল হারামের দিকে। আর তোমরা যেখানেই থাকো ফেরাতে থাকো তোমাদের চেহারা সেদিকে।

আর যাদেরকে দান করা হয়েছে কিতাব, অতিঅবশ্যই তারা জানে যে, এটাই তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে (আগত) 'সত্যবিধান'। (সুতরাং এটা তাদের 'জ্ঞানপাপ') আর আল্লাহ তাদের 'আচরণ' সম্পর্কে 'মোটেই' বেখবর নন।

আর যাদেরকে দান করা হয়েছে কিতাব, যদি আপনি তাদেরকে যাবতীয় প্রমাণও প্রদান করেন তারা অনুসরণ করবে না আপনার কিবলা। আর আপনিও অনুসারী হতে পারেন না তাদের কিবলার। এমন কি তাদের একদলও অন্য দলের কিবলার অনুসারী কিছুতেই হবে না।

আর আপনার কাছে যে ইলম এসেছে তারপরও যদি আপনি তাদের 'খেয়াল খুশির' অনুসরণ করেন, তাহলে নিশ্চিতই আপনি যালিমদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবেন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) (ব্যাকুলতার কারণে) বাস্তব অবস্থার প্রেক্ষিতে এই বন্ধনী যুক্ত হয়েছে। তাছাড়া تقلب শব্দটিতেও ব্যাকুলতার মর্ম রয়েছে। সে হিসাবে তরজমা করা যায়– 'আকাশের দিকে বারবার

আপনার ব্যাকুল 'দৃষ্টিপাত' আমি লক্ষ্য করেছি।
قد এখানে تكثير এর জন্য এসেছে; 'বারবার' শব্দটি সে কারণেই যুক্ত হয়েছে, তবে বারংবারতা আল্লাহর رؤية এর নয়, বরং رؤية এর মাফউলের অর্থাৎ تقلب الوجه এর।

(খ) 'ফিরিয়ে দেবো'-এর পরিবর্তে 'অভিমুখী করবো' হতে পারে, প্রথমটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর এবং দ্বিতীয়টি থানবী (রহ)-এর তরজমা।

(গ) فول وجهك شطر المسجد الحرام (এখন থেকে ফেরাতে থাকুন আপনি আপনার চেহারা মসজিদুল হারামের দিকে) অংশকে সমগ্র অর্থে গ্রহণ করে এ তরজমা হতে পারে- আপনি নিজেকে মসজিদুল হারামের অভিমুখী করুন।
وجوهكم এর ক্ষেত্রেও একই কথা।
'এখন থেকে'- এটি হচ্ছে فَ এর ভাবতরজমা। 'ফেরাতে থাকুন'- এখানে وَلِّ এবং وَلُّوا এর মাঝে استمرار এর অর্থ রয়েছে। থানবী (রহ) তার তরজমায় এটা বিবেচনা করেছেন। আর শায়খুলহিন্দ (রহ) শব্দানুগ তরজমা করেছেন এভাবে, ফেরাও তুমি তোমার চেহারা।

(ঘ) أنه الحَقُّ (এটাই সত্য বিধান) যামীরের مرجع হচ্ছে تحويل القبلة এই বিধান, এটা বিবেচনা করে শুধু 'সত্য'-এর পরিবর্তে 'সত্য বিধান' বলা হয়েছে, কিংবা বলা যায়- 'এ বিধানই সত্য'। মোটকথা, স্পষ্টায়নের জন্য مرجع এর উল্লেখ করাই এখানে উত্তম। কোন তরজমায় এটা উল্লেখ করা হয়নি।
الحق এর ال কে كمال এর অর্থে গ্রহণ করে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'সম্পূর্ণ' সঠিক। তিনি حصر বা বিশিষ্টায়নের বিষয়টি এনেছেন পরে। তাঁর তরজমা হলো- তারা জানে যে, এটা সম্পূর্ণ সঠিক, তাদের প্রতিপালকেরই পক্ষ হতে। শায়খুলহিন্দ (রহ) শুধু حصر এর বিষয়টি লক্ষ্য রেখে তরজমা করেছেন- তারা জানে এটাই সঠিক, তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে।

(ঙ) আর যাদেরকে দান করা হয়েছে কিতাব যদি আপনি তাদেরকে যাবতীয় প্রমাণও প্রদান করেন- এটা আরবী তারকীবানুগ তরজমা।

শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা– যদি আপনি আহলে কিতাবের 'কাছে' সমস্ত 'নিদর্শন আনেন'।
থানবী (রহ)-এর তরজমা– যদি আপনি আহলে কিতাবের 'সামনে' সমস্ত 'প্রামাণ' পেশ করেন। বাংলা তরজমাগুলোতে এ দুটোই অনুসরণ করা হয়েছে। এবং তা গ্রহণযোগ্য অবশ্যই।

(চ) 'অনুসারী হতে পারেন না' ب অব্যয়টির 'তাকীদ' এর প্রেক্ষিতে এ তরজমা।

أسئلة :

١ – اشرح معاني قد
٢ – أعرب وجهك .
٣ – أعرب من ربهم في قوله تعالى : أنه الحق من ربهم
٤ – ماذا تعرف عن اجتماع القسم و الشرط ؟
٥ – আসমানের দিকে বারবার আপনার 'মুখফেরা' আমি দেখেছি – এখানে 'বারবার' শব্দটির তাৎপর্য আলোচনা করো।
٦ – ما أنت بتابع قبلتهم এর দুটি তরজমা করো এবং উভয় তরজমা পর্যালোচনা করো।

(٣) إن في خلق السمٰوٰت وَالارضِ و اختلاف الَّيل وَ النهار و الفُلْكِ التي تَجري في البَحر بِما ينفَعُ الناسَ و ما أنزل اللّٰهُ من السماء مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا به الارضَ بعدَ موتِها وَ بَثَّ فيها من كلِّ دابَّةٍ، و تَصريف الريٰح و السَّحاب المسَخَّرِ بينَ السماءِ وَ الارضِ لَاٰيٰتٍ لِقَومٍ يَعْقِلون *

بيان اللغة

اختلاف : مصدرٌ اختلف الشيئان : لم يتفقا অভিন্ন হলো না, ভিন্ন হলো
اختلف الرجلان : أخذ كلٌّ واحدٍ طريقًا غيرَ طريق الآخر في حاله أو قوله
কথায় বা কাজে একে অন্য থেকে ভিন্ন পথ গ্রহণ করলো।
وَ الاختلاف بين الناس قد يقتضي التنازُعَ فاستعمل هذا اللفظُ في

المنازَعَة وَ الجِدال، و قيل : اختلف الرجلان মতবিরোধ করলো, বিবাদ করলো।

اختلاف الليل و النهار : تَعاقُبُهما أَيْ مَجيءُ كل واحدٍ منهما خلفَ الآخر وَ عَقِبَه

الفلك : ما عَظُم مِنَ السفُنِ، يُطلَق على المفرَدِ و الجمعِ، وَ إذا كان مُفردًا فهو مُذكر، وَ إذا كانَ جمعًا فهو مؤنث، لأنه جمعٌ مكسَّرٌ، و التكسيرُ هنا مُقَدَّر، لأن ضمةَ الجمعِ كالضمةِ في أُسْد، و ضمةَ المفردِ كالضمة في قُفْل

بث : أصلُ البَثِّ التفريقُ ছড়িয়ে ফেলা

بَثَّ الريحُ الترابَ : أثارت মাটি/ধূলো উড়ালো বা ছড়িয়ে ফেললো

بث الله الخَلقَ : خَلقَهم و نَشَرَهم في الأرض وَ أكثَرَهم

قال تعالى : وَ بث فيهما رجالا كثيرًا و نساءً

بث الخبرَ : أذاعَه প্রচার/সম্প্রচার করলো

البَثُّ : الحالُ، أشدُّ الحزنِ الذي لا يَصْبِر عليه صاحِبُه فَيَبُثُّهُ .

تصريف : مصدرُ صرف الأمرَ : دَبَّره و وَجَّهَه পরিচালনা করলো

تصريف الرياح وَ السحاب : تَقليبُها و نقلُها من حالٍ إلى حالٍ বাতাস ও বায়ু পরিচালনা

بيان الإعراب

اختلاف الليل : معطوف على خَلقِ، و الفلكِ معطوف على اختلافِ (و لك أن تقولَ : معطوفٌ على خلقِ، و كلا التعبيرَينِ جائزان)

بما ينفع الناسَ : ما اسم موصول، مبنيٌّ في محل جر و الجملة بَعده صِلة، أي: بالذي ينفَع الناسَ، أو هي نكِرة موصوفَة بمعنى شَيءٍ، و الجملة بَعدها صِفة، أي : بِشَيءٍ ينفَع الناسَ .

و الجار مع مجروره يتعلق بمحذوف، هو حال من فاعلِ تجْري، أي : مُتلبسةً بما ينفَع الناس، أو هو متعلق بـ : تجري

و ما أنزل الله : الموصول معطوف على : الفلكِ أو على : خلقِ، في محل جر، و من السماء يتعلق بـ : أنزل، و من ماء يتعلق بمحذوف هو حال من مفعولِ أنزلَ، أي : ما أنزله الله من السماء حالَ كونه ماءً

أحيا : معطوف على أنزل، و كذلك بَثَّ، و مِن كُلِّ دابَّةٍ يتعلق بحال من مَفعولِ بَثَّ المحذوفِ، أي : و ما بثه فيها كائنا من كل دابة، أو هو يتعلق بـ : بث

و تصريف : معطوف على خلق، و السحاب معطوف على خلق

المسخر صفة للسحاب، و بين ظرف مكان متعلق بـ : المسخر

الترجمة

আসমানসমূহের ও যমীনের সৃষ্টিতে এবং রাত ও দিনের বিবর্তনে এবং নৌযানসমূহে, যা চলাচল করে সমুদ্রে মানুষের উপকারী দ্রব্য নিয়ে এবং পানিতে, যা আল্লাহ্ আসমান থেকে নামিয়েছেন, অনন্তর সজীব করেছেন তা দ্বারা ভূমিকে তার বিশুষ্কতার পর এবং 'বিস্তারিত' করেছেন তাতে সর্বপ্রকার প্রাণী এবং বিভিন্ন প্রকার বাতাসের পরিচালনে এবং আসমান ও যমীনের মাঝে নিয়ন্ত্রণকৃত মেঘমালায় (এ সকল বিষয়ে) অবশ্যই নিদর্শনাবলী রয়েছে ঐ সম্প্রদায়ের জন্য যারা আকল (বুদ্ধি) রাখে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'আসমানসমূহের ও যমীনের সৃষ্টিতে'– বিকল্প তরজমা, 'আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিতে'।
'এবং নৌযানসমূহে যা মানুষের উপকারী দ্রব্য নিয়ে সমুদ্রে চলাচল করে'– বিকল্প তরজমা, 'এবং সমুদ্রে ভাসমান, মানুষের উপকারী দ্রব্যে বোঝাই নৌযানসমূহে'
'এবং পানিতে যা আল্লাহ্ আসমান থেকে নামিয়েছেন'– বিকল্প তরজমা, 'এবং বারিধারায় যা আল্লাহ আকাশ থেকে বর্ষণ করেছেন।
'অনন্তর সজীব করেছেন তা দ্বারা ভূমিকে তার বিশুষ্কতার পর'– বিকল্প তরজমা, 'তা দ্বারা বিশুষ্ক ভূমিকে সজীব করেছেন'।

(খ) একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে 'এবং নদীতে নৌকাসমূহের চলাচলে মানুষের জন্য কল্যাণ রয়েছে' ব্যাকরণগত দিক থেকে এ তরজমা গুরুতর ভুল।

(গ) শায়খুলহিন্দ (রহ) أحيا ও مَوْتِها এর المعنى الحقيقي অনুসারে

তরজমা করেছেন – যমীনকে তার মরে যাওয়ার পর যিন্দা করেছেন। আর থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, المعنى المجازي অনুসারে। কিতাবে দ্বিতীয়টি অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঘ) و تصريفِ الرياح (এবং বিভিন্ন প্রকার বাতাসের পরিচালনে) থানবী ও শায়খুলহিন্দ (রহ) উভয়ে تصريف الرياح এর তরজমা لازم রূপে করেছেন, هواوں کے بدلنے میں
কিতাবে متعدي রূপে তরজমা করা হয়েছে, (বায়ুসমূহের পরিবর্তনে)
কিতাবের তরজমায় رياح কে প্রকারগত বহুবচন ধরা হয়েছে, যেমন মৃদুমন্দ বায়ু, প্রবল বায়ু, শীতল বায়ু, গরম বায়ু ইত্যাদি।

(ঙ) (এ সকল বিষয়ে) এ অংশটি সংযোজন করা প্রয়োজন إن এর খবরের দীর্ঘতার কারণে, শায়খুলহিন্দ (রহ) এটা বন্ধনী ছাড়া এনেছেন, কিতাবে এটাকে বন্ধনীতে আনা হয়েছে, থানবী (রহ) এটা সংযোজন করেন নি।

(চ) يعقلون এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, عقلمندوالوں کیلئے অর্থাৎ তিনি মুফরাদ প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন। থানবী (রঃ) বাক্যের তরজমা বাক্য দ্বারা করেছেন, কিতাবে সেটাকেই অনুসরণ করা হয়েছে।

(ছ) المسَخَّر শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন جوکہ تابعدار ہے اسکے حکم کا (যা তার হুকুমের অনুগত) অর্থাৎ المسخر এর পর لحكم الله এ অংশটি তিনি উহ্য ধরেছেন। থানবী (রহ) তা করেননি। কারণ এর তেমন কোন প্রয়োজনীয়তা নেই। এখানে শুধু এ কথা বোঝানো হয়েছে যে, মেঘমালাকে শূন্যে ঝুলন্ত রাখা হয়েছে।

(জ) السحاب হচ্ছে ইসমে জিনস। কিতাবে বহুবচনরূপে তরজমা করা হয়েছে। 'মেঘের মাঝে' এ তরজমাও হতে পারে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ الفُلْكِ

٢ – أعرب قوله : بما ينفع الناس

٣ – أعرب قوله : من كل دابة

٤ – ما هو اسم إن ؟

৫ – تصريفِ الرياح এর তরজমা পর্যালোচনা করো
৬ – তা দ্বারা ভূমিকে তার বিশুষ্কতার পর সজীব করেছেন– এর বিকল্প তরজমা বলো

(٤) وَ مِن الناس مَن يتخذُ مِن دُون الله انداداً يُحبونهم كَحُب الله، و الذين اٰمنوا اَشَدُّ حُبّاً لِلّه، وَ لو يَرَى الذين ظَلَموا اذ يَرونَ العذابَ، اَنَّ القوةَ لِلّه جَميعا، وَ اَنَّ الله شديدُ العَذابِ * اذ تَبَرَّأَ الذين اتُّبِعوا مِنَ الذين اتَّبَعوا وَ رَاَوُا العذابَ و تقطَّعَتْ بهم الاسبابُ * وَقال الذين اتَّبعوا لو اَنَّ لنا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ منهم كما تَبرَّءُوا منا، كذلك يُريهم الله اعمالَهم حَسَرٰتٍ عليهم، و ما هم بخرجين من النار *

بيان اللغة

تَبَرأ منه : تَخَلص منه، تَخلّى عنه، قَطَع معه العَلاقَة তা থেকে/তার থেকে মুক্ত হলো, তার সাথে নিঃসম্পর্কতা ঘোষণা করলো।

بَرَّأه من .... : خَلَّصه من ...

بَرَّأه مِنَ العَيبِ أو الذنبِ أو التُّهمَة : قَضٰى بِبَرا ءَته منه দোষ থেকে বা পাপ থেকে বা অভিযোগ থেকে তাকে মুক্ত ঘোষণা করলো।

الأسباب : جمعُ سَبَبٍ، و أصلُه الحَبْلُ، وَ المراد به ما يَكون بينَ الناسِ مِنْ رَوابِطَ، كالنسَب و الصداقَة، أوِ المراد منه كلُّ شيءٍ يُتوَصَّلُ به إلى غيره

যা কিছুর সাহায্যে অন্য কিছুতে উপনীত হওয়া যায়, উপায়, ওছিলা

تَقَطَّعَتْ بهم الأسبابُ : عَجَزوا وَ انقطَعَتْ سُبُلُهم، أَوِ انقطَعَت بينَهم الروابِطُ و زالَتِ المودَّةُ .

كرة : رَجعة و عَودة إلى الحالة التي كان فيها

حَسَراتٍ : جمع حسرَةٍ و هي أشدُّ الندَم على شيءٍ فَائتٍ হারানো জিনিসের উপর ভীষণ আফসোস।

بيان الإعراب

و من الناس : الواو استئنافية، و الجملة مستأنفَة مَسُوقَة لِبيَانِ أَنَّ بعضَ الناس لم يعتَقِدِ الوحدانيةَ بعد أن ثبتت بالدليل القاطع .

من يتخذ من دون الله أندادا : من اسم موصولٍ أو نكرة موصوفةٌ في محل رفع مبتدأ مؤخَّر، و يتخذ صلةُ مَنْ أو صفة لها، و من دون الله يتعلق بـ : يتخذ أو بحال مقدَّمَةٍ، أي : يتخذ الأندادَ معدودةً من دون الله .

كحب الله : الكاف نائب مفعول مطلقٍ، أي : يُحبونهم حُبًّا كحبِّ اللّٰه، أو مثلَ حب اللّٰه، و المصدر مضاف إلىٰ مفعوله .

أشدُّ حبا لله : لله يتعلق بـ : حبا، و هو تمييز من النسبة القائمة بين أَفْعَلَ و فاعِلِه .

إذ : إذ هنا ظرفٌ للزمن المستقبَل، اُستعِيرَ من الماضي، متعلق بـ : يرى، مضاف إلى الجملة بعده .

أن القوةَ لِلّٰه : أي : ثبوتَ القوة للّٰه، و هذا المصدر المؤول قائمٌ مقام مفعولَيْ يَرىٰ، لأنه من رؤيَة القلب لا البَصَرِ، و جميعا حال من الضمير المستتر في خبر أن المحذوف، و جواب الشرط محذوف، أي : لَا ستَعْظَمُوا مَا حَلَّ بِهِمْ .

إذ تبرأ : ظرف يتعلق بفعل محذوف، و هو : يعلمون شِدةَ العذاب

وَ رَأوا العذابَ : الواو حالية، و الجملة في محل نصب حال من فاعل تبرأ، بتقدير قد، أو هي معطوفة على جملة تبرأ .

و تقطعت بهم الأسباب : الجملة معطوفة على ما تقدم، و الباء سببية، أي : بسبب كفرهم، أو هي بمعنى عن .

لو أن لنا كرة : لو هنا قائم مقام فعل التمني، أي : نتمنى، و المصدر المؤول مفعول هذا الفعل المفهوم من لو، أي : نتمنى ثبوت كرة لنا أو هو حرفُ شرطٍ يَحمِل معنَى التمني، و المصدر المؤول فاعلٌ لفعلٍ محذوف، أي : لو ثَبتَ وجودُ الكرةِ لنا .

فنتبرأ : المضارع منصوب بـ : أن المضمرة وجوبا بعد فاء السببية المسبوقة بالتمني، و جواب الشرط محذوف، أي : لَتَبَرَّأْنا منهم .

كذلك يُريهم الله اعمالهم : الكاف اسم بمعنى مثلٍ، مضافٌ، في محل نصبٍ نائبٌ عن مفعولٍ مطلق، لأنه صفة لمصدرٍ محذوف، أو هو حرف جر و تشبيهٍ متعلقٌ بالمصدر المحذوفِ . و الإشارة بـ : ذا إلى الإراء المفهوم من كلام سابق .

و التقدير : يُريهم إراءةً مثلَ ذلك الإراءِ، و أعمالَهم مفعول به ثانٍ، و حسراتٍ حال من المفعول الثاني و عليهم متعلق بالحال .

الترجمة

আর মানুষের মাঝে একদল এমনও রয়েছে যারা গ্রহণ করে আল্লাহর পরিবর্তে অন্যান্য সমকক্ষ। তারা ভালোবাসে (কথিত) সমকক্ষদেরকে আল্লাহর প্রতি (মুমিনদের) মুহব্বতের মত। আর যারা ঈমান এনেছে, আল্লাহর প্রতি মুহব্বতের ক্ষেত্রে তারা (মুশরিকদের চেয়ে) অধিক প্রবল।

যারা যুলম করেছে, হায় তারা যদি (দুনিয়াতে) কোন আযাব দেখার সময় এটা বুঝতো যে, সমস্ত ক্ষমতা আল্লাহর জন্য এবং (এটাও বুঝতো যে,) আল্লাহ ভীষণ আযাবদানকারী।

(আযাবের ভীষণতা তারা বুঝতে পারবে) যখন যাদের অনুসরণ করা হয়েছে তারা দায়মুক্ত হয়ে যাবে, তাদের থেকে, যারা অনুসরণ করেছিলো এমন অবস্থায় যে, তারা আযাব প্রত্যক্ষ করবে এবং তাদের কুফুরির কারণে কর্তিত হয়ে যাবে সমস্ত উপায়-অবলম্বন।

আর যারা অনুসরণ করেছিলো তারা বলবে, কোনভাবে যদি আমাদের জন্য শুধু একবার ফেরা সম্ভব হতো যাতে আমরাও সম্পর্কমুক্ত হতে পারি তাদের থেকে, যেমন (আজ) তারা সম্পর্কমুক্ত হয়ে গেছে আমাদের থেকে।

এভাবেই আল্লাহ তাদেরকে তাদের (বদ) আমলগুলো দেখাবেন তাদের জন্য অনুতাপের বিষয়রূপে। আর তারা কিছুতেই বের হতে পারবে না জাহান্নাম থেকে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) كحب الله (আল্লাহর প্রতি [মুমিনদের] মুহব্বতের মত) এখানে حب এর ফায়েল উল্লেখ করা হয়েছে। আর এ উপমা হচ্ছে বাহ্যত, অন্যথায় আল্লাহর প্রতি মুমিনদের মুহব্বত তথাকথিত সমকক্ষদের প্রতি মুশরিকদের ভালোবাসার চেয়ে বহুগুণ প্রবল। (এ তরজমা করা হয়েছে صفوة التفاسير অবলম্বনে)

থানবী (রহ) লিখেছেন, তারা তাদের প্রতি এমন ভালোবাসা

পোষণ করে যেমন ভালোবাসা আল্লাহর প্রতি পোষণ করা কর্তব্য।

(খ) থানবী (রহ) أَشَدُّ কে তুলনামূলক গুণের পরিবর্তে অতিশয়তার অর্থে গ্রহণ করে লিখেছেন- আর যারা মুমিন, তাদের (শুধু) আল্লাহর প্রতি অত্যন্ত সুদৃঢ় ভালোবাসা রয়েছে।

(গ) لو يرى এখানে থানবী (রহ) অত্যন্ত সুন্দর তরজমা করেছেন। আল্লাহ তাঁর দরজা বুলন্দ করুন, আমীন। তিনি لو কে শুধু আকাঙ্ক্ষাবাচক অর্থে গ্রহণ করে বলেছেন, لو এর কোন জওয়াব উহ্য ধরার প্রয়োজন নেই, তাছাড়া তিনি يرون العذاب এর পরে في الدنيا উহ্য ধরেছেন, ফলে আয়াতের মর্ম সুস্পষ্ট হয়ে গেছে। (কিতাবের তরজমায় তাকেই অনুসরণ করা হয়েছে।

إذ تبرأ এটিকে তিনি উহ্য يعلمون شدة العذاب এর ظرف ধরে তরজমা করেছেন; ফলে তারজমা হয়েছে সহজবোধ্য। অধিকাংশ বাংলা তরজমায় মর্মগত অস্পষ্টতা এবং ভুল রয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ الأسبابِ

٢ - أعرب قوله : أن القوة لله

٣ - أعرب : لو أن لنا كرة

٤ - بم يتعلق قوله إذ تبرأ

٥ كحب الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ أشد حبا لله এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ مِن الناس مَن يعجبك قولُه في الحيوة الدنيا ويُشهِد اللّٰه على ما في قَلبه، وَ هو ألَدُّ الخِصام * وَ اذا تَولّٰى سعى في الارضِ لِيُفسد فيها وَ يُهلكَ الحرثَ و النسلَ، و الله لا يحب الفساد * و اذا قيل له اتَّقِ اللّٰه اخذَتْه العِزَّة بِالْإثم فَحَسْبُه جَهَنَّم، وَ لَبِئْسَ المِهاد * وَ من الناس مَن يشري نفسَه ابتغاءَ مرضاتِ اللّٰه، و اللّٰه

رَءوف بالعباد * يٰأَيُّها الذين اٰمنوا ادخُلوا في السِّلْم كافَّةً، و لا تَتبعوا خُطُوت الشيطٰن، انه لكم عدو مبين * فان زَلَلْتم مِن بعد ما جاءتكم البينٰت فاعلَموا ان الله عزيزٌ حكيم *

بيـان اللغـة

يُشهد (সাক্ষী রাখে) أَشهَده على كذا : جَعله يَشْهَد عليه

أَلَدُّ : لَدَّ يَلَدُّ (س، لَدَدًا) : اشتدت خصومتُه فهو ألد و هي لَدَّاءُ

ঘোরতর (শত্রু বা বিবাদকারী)

الخِصام : جمعُ خَصْم، كصَعْبٍ وَ صِعاب (বিবাদকারী, প্রতিপক্ষ)

خَصَمه (ض، خَصْما، خِصامًا، خُصومَةً) : غَلَبه في الخِصام

বিবাদে তাকে পরাস্ত করলো।

خَصِم (س، خَصَمًا و خِصاما) : أَحْكَمَ الخصومَةَ و هو خَصِمٌ

জোরদার বিবাদ করলো

خاصَمه (مخاصمة، خِصاما) جادلَه و نازَعه، فهو مُخاصِم و خَصيم

اختصم القومُ و تَخاصموا : خاصَم بعضُهم بعضًا

الحرث : إلقاء البَذر في الأرض، و يُسَمَّى المحروثُ حَرْثًا

و روي : أُحرث في دنياك لآخرتك

حَرَثَ الأرضَ (ن، حَرْثًا) شَقَّها بالمحراث لِيَزْرَعَها

النَّسْلُ : الانفصال عَنِ الشيء، نَسَل الشيءُ (ن، نُسولًا) : انفصَلَ عن غيره و سقَط، نَسل الثوبُ عن الإنسان .

و نَسَل الماشِي (ض، نسْلا) : أسرَعَ، قال تعالى : وَهم من كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلون، أي : مِنْ كُلِّ أرضٍ . نَسَلَ الولدَ : وَلَدَه

و النسل : الولد، لكونه ناسلا عن أبيه أو لأنه ينسُل، أي : يسقط من بطن أمه بسرعة

العزة : الحمِيَّة و الأَنَفَة (আত্মমর্যাদা, জাত্যাভিমান)

العزة بالإثم (গোনাহের প্রতি একরোখা টান)

المهاد : المكان المُمَهَّد و المُوَطَّأ، و قيل الفِراشُ المهيَّأُ للنوم، و المَهْدُ في معناه

يَشْرِي : يَبيع (ض، شِراءً، شِرىً) باع - اشترى

السلم : بكسر السين بمعنى الإسلام، و بفتحها بمعنى الصلح، و أصله من الاستسلام ، قال الإمام الراغب : السلام و السِّلم و السَّلم : الصلح، و قال في المصباح : السِّلم و السَّلم : الصلح، يذكر و يؤنث

حَسْبُه : اسمٌ بمعنى كافٍ، و اسمُ فعلٍ، يقال : حسبك هذا، أي : اكتَفِ به، و حسبُك مِنْ شَرٍّ سَماعُه، أي يَكفيك أن تسمَعَه لِتَبتعدَ عنه

و الحسَب : القَدْرُ، يقال الأجرُ بِحَسَبِ العمل

زللتم : زَلَّت قَدَمُهُ (ض، زَلاًّ، زَلَلا) زَلَقَت তার পা ফসকে গেলো, তার পদস্খলন হলো।

الزلَل : الإعراض عن الطريق المستقيم، و أصلُه في القدم، ثم استعمِل في الأمور المعنَوية

بيـان الإعراب

في الحيوة : يتعلق بـ : قولُه، أو بـ : يُعجبك، فَعلى الأول يكون القولُ صادرًا في الحياة الدنيا ، و على الثاني يكون الإعجابُ صادرا فيها .

يُشهد: هذه الجملة معطوفة على يعجبك، أو هي مستأنفة

و هو ألد الخصام : الواو حالية، و الجملة بعدها حال من فاعلِ يُشهد

و إذا قيل له : الجار مع مجروره يتعلق بالفعل، و جملة اتق الله في محل رفعٍ نائبُ فاعلٍ للفعل .

بالإثم : متعلق بمحذوف، و هو حال من الفاعل أو المفعول، أي : متلبسةً أو متلبسًا بالإثم، و الباء لِلمُصاحَبة، أو الجار مع مجروره متعلق بالفعل، وَ الباء للسبَبِيَّة .

حسبُه : خبر مقدم، و جهنم مبتدأ مؤخر، و الفاء فصيحة، و هي ما تُفصح عن شرطٍ مقدَّر، أي : إذا كان هذا شأنُه فحسبُه جهنم

و لبئس المهاد : اللام واقعة في جواب القسم المحذوف، أي : أقسم و الله .

و جملة بئس المهاد خبر مقدم، و المخصوص بالذم محذوف للقرينة السابقة، مبتدأ مؤخر، أي : جهنم .

ابتغاءَ : مفعول لأجله، و المصدر مضاف إلى مفعوله .

كافة : حال من واو الجماعة، أي : مجتمعين

إنه لكم عدو : الجار مع مجروره متعلق بـ : عدو

الترجمة

আর মানুষের মাঝে একজন এমনও আছে যার দুনিয়াবি উদ্দেশ্যের 'কথাবার্তা' মুগ্ধ করে আপনাকে, আর তার অন্তরে যা আছে সে বিষয়ে সাক্ষী রাখে সে আল্লাহকে, অথচ সে (আপনার) ঘোর বিরোধী। আর যখন সে (আপনার কাছ থেকে) ফিরে যায় (তখন) সে 'দৌড়ঝাঁপ' করে এলাকায়, ফাসাদ (ও গোলযোগ) করার জন্য সেখানে এবং বরবাদ করার জন্য ফসল ও 'নসল'। আল্লাহ কিন্তু পছন্দ করেন না ফাসাদ। আর যখন বলা হয় তাকে, ভয় করো আল্লাহকে, তখন পাপের কারণে 'শ্লাঘা' তাকে পেয়ে বসে। তো জাহান্নামই তার জন্য যথেষ্ট। আর নিঃসন্দেহে তা কত না মন্দ ঠিকানা! পক্ষান্তরে মানুষের মাঝে একজন এমনও আছে যে নিজের জান পর্যন্ত 'খরচ' করে ফেলে আল্লাহর সন্তুষ্টির সন্ধানে। আর আল্লাহ (এমন) বান্দাদের প্রতি অতি দয়ালু।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো দাখেল হয়ে যাও তোমরা ইসলামে পরিপূর্ণরূপে। আর শয়তানের 'কদম কদম' অনুসরণ করো না। (কারণ) সে তো তোমাদের খোলা দুশমন। তো যদি তোমরা 'পদস্খলিত' হও তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণাদি আসার পরও তাহলে জেনে রেখো যে, আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'আর মানুষের মাঝে একজন' من শব্দগতভাবে যেমন মুফরাদ, তেমনি এখানে অর্থগত ক্ষেত্রেও তা মুফরাদের জন্য এসেছে। কারণ প্রথম ক্ষেত্রে উদ্দেশ্য হলো আখনাস বিন শোরায়ক নামক এক ব্যক্তি, আর দ্বিতীয় ক্ষেত্রে উদ্দেশ্য হলেন হযরত ছোহায়ব রূমী। তাই من এর তরজমায় 'একদল' এর পরিবর্তে 'একজন' করা হয়েছে। (অন্যান্য তরজমায় বিষয়টি বিবেচনা করা হয়নি।)

(খ) দুনিয়াবি উদ্দেশ্যের 'কথাবার্তা'- এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা, তিনি (রহ) লিখেছেন, লোকটি ঈমানের দাবী করে যা কিছু বলতো তা দুনিয়াবি উদ্দেশ্য লাভের জন্যই বলতো।

তিনি রূহুল মাআনির হাওয়ালা দিয়ে লিখেছেন, القول في كذا। অর্থ হচ্ছে, 'কথার উদ্দেশ্য এই'–

في الحيوة الدنيا কে يعجبك এর সাথে متعلق ধরলে তরজমা হবে, পার্থিব জীবনে তো তাদের কথা আপনাকে মুগ্ধ করে, (কিন্তু আখেরাতে তা কোন কাজে আসবে না।)

কথা ও 'কথাবার্তা' দুটোই গ্রহণযোগ্য। শায়খুলহিন্দ (রহ) প্রথমটি এবং থানবী (রহ) দ্বিতীয়টি ব্যবহার করেছেন।

(গ) سعى শব্দের অর্থ চেষ্টা করেছে, আর سعى في الأرض এর মাঝে অতিশয়তা আছে, শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) অতিশয়তার বিষয়টি বিবেচনায় রেখে دوڑ دهوپ তরজমা করেছেন। কিতাবে তাদের অনুসরণে 'দৌড়ঝাপ' তরজমা করা হয়েছে। বাংলা তরজমাগুলোতে বিষয়টি বিবেচনা করা হয়নি।

একটি তরজমায় আছে, "তখন সে পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টি করে, আর শস্যক্ষেত্র ও জীবজন্তুর বংশ ধ্বংস করার চেষ্টা করে।" এ তরজমায় ব্যাকরণগত বিচ্যুতি রয়েছে।

(ঘ) আয়াতটি মদীনার এক লোক সম্পর্কে নাযিল হয়েছে, সুতরাং الأرض এর অর্থ 'পৃথিবী' হতে পারে না। থানবী (রহ) বলেছেন, এখানে ال অব্যয়টি বিশিষ্টতাজ্ঞাপক, অর্থাৎ বিশেষ ভূখণ্ড, অর্থাৎ মদীনা উদ্দেশ্য। এ জন্য কিতাবে তরজমা করা হয়েছে। 'এলাকায়'। থানবী (রহ) এর তরজমা হলো, 'শহরে'।

(ঙ) শ্রুতিসৌন্দর্যের জন্য ফসল-এর সঙ্গে 'নসল' ব্যবহার করা হয়েছে। এখানে নসল দ্বারা মানববংশ উদ্দেশ্য নয়, গবাদিপশু উদ্দেশ্য। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, كهيت اور مواشي

(চ) أخذته العزة بالإثم (পাপের কারণে তাকে পেয়ে বসে 'শ্লাঘা') العزة এর প্রতিশব্দ হতে পারে, অহং, দম্ভ, বড়াই; তবে 'শ্লাঘা' শব্দটি সবচেয়ে উপযুক্ত। এখানে ب অব্যয়কে سببية এবং أخذت এর সংঙ্গে সম্পৃক্ত ধরে এ তরজমা করা হয়েছে। 'পাপলিপ্ততার দম্ভ তাকে পেয়ে বসে'– এ তরজমাও হতে পারে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, তখন তার আত্মাভিমান তাকে পাপানুষ্ঠানে লিপ্ত করে– এ তরজমা ব্যাকরণসম্মত নয়।

শায়খায়নের তরজমা এ রকম, অহং/আত্মাভিমান তাকে পাপের প্রতি প্ররোচিত করে।

(ছ) يشري نفسه (জান পর্যন্ত খরচ করে ফেলে) অর্থাৎ মাল তো খরচ করেই, প্রয়োজন হলে জানও খরচ করে। يشري এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন بيچتا هے (বিক্রি করে) থানবী (রহ) লিখেছেন, ছোহায়ব রূমীর ঘটনায় বর্ণিত রয়েছে যে, হিজরতের সময় মুশরিকরা যখন তাঁকে ঘেরাও করে ফেললো, তখন তিনি বললেন, তোমরা জানো যে, আমি তোমাদের শ্রেষ্ঠ তীরন্দাজ, সুতরাং আমার তূনীরে একটি তীর থাকতে তোমরা আমার কাছে পৌছতে পারবে না। এরপর তোমরা যা ইচ্ছা তা করতে পারবে; তবে মক্কায় আমার মাল রাখা আছে, তোমরা তা নিয়ে আমার পথ ছেড়ে দিতে পারো। তারা তাতে রাজি হলো। এ ঘটনায় বাহ্যত তিনি অর্থের বিনিময়ে প্রাণ ক্রয় করেছিলেন।

কিন্তু আমি 'ক্রয়'-এর পরিবর্তে 'বিক্রয়' অর্থ গ্রহণ করেছি এ জন্য যে, প্রশংসার বিষয় হচ্ছে জান খরচ করা, জান বাঁচানো নয়, আর ছোহায়ব (রাঃ) জান খরচ করতেও প্রস্তুত ছিলেন।

(জ) 'কদম-কদম' এটি 'পদচিহ্নসমূহ' কিংবা পদাংক-এর বিকল্প-রূপে ব্যবহৃত হয়েছে। 'পদাংক অনুসরণ' মূলত উত্তম ক্ষেত্রে হয়।

'তোমরা শয়তানের পিছনে পিছনে চলো না'– এ তরজমাও হতে পারে।

'প্রকাশ্য শত্রু'-এর চেয়ে 'খোলা দুশমন' কথাটি অধিক জোরালো। 'প্রাকাশ্য শত্রু' কথাটির 'দেহে' আভিজাত্যের ছাপ আছে, আর 'খোলা দুশমন' কথাটির গায়ে ঘৃণা ও অসন্তোষের ছাপ আছে।

(ঝ) فإن زللتم (যদি তোমরা পদস্খলিত হও) এটি আরবী তারকীবের অনুগামী তরজমা। 'যদি তোমরা পদস্খলনের শিকার হও' এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য, তবে তা শব্দানুগ নয় 'যদি তোমাদের পদস্খলন ঘটে' এটা অপেক্ষাকৃত উন্নত তরজমা।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة النسل

٢ - أعرب قوله تعالى : في الحيوة الدنيا عَلىٰ وَجْهَيْهِ.
٣ - بم يتعلق قوله : بالإثم، و عَيِّنْ معنى الباءِ حسَبَ الإعرابِ ·
٤ - أعرب الجملة الشرطية الأخيرة إعرابا مفصلا ·
٥ - سعى في الأرض এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - فإن زللتم এর সম্ভাব্য তরজমাগুলো এবং সেগুলোর স্তর নির্ধারণ করো

(٦) هل يَنظرون إلا ان ياتِيَهم اللّٰه في ظُلَلٍ من الغَمامِ وَ الملٰئِكَةُ و قُضِي الامرُ، و الى الله تُرجَع الامورُ * سَلْ بني إسرا ءيلَ كم اٰتَينٰهم مِن اٰيةٍ بَيِّنةٍ، وَ من يبدل نعمةَ الله من بعد ما جاءَته فان الله شديدُ العقاب * زُين للذين كفروا الحيوةُ الدنيا و يَسخرون مِنَ الذين اٰمنوا ، وَ الذين اتقوا فوقَهم يوم القيٰمة، وَ الله يَرزق مَن يشاءُ بِغير حساب * كان الناس اُمَّةً واحدةً، فبَعَث اللّٰه النبيّٖن مُبَشرين وَ منذِرين، وَ أنْزلَ معهم الكتٰبَ بالحق ليحكُم بينَ الناس فيما اختلَفوا فيه، وَ ما اختَلَف فيه الا الذين اُوتوه من بعد ما جاءتهم البينٰت بَغْياً بينهم، فَهدى اللّٰه الذين اٰمنوا لما اختلفوا فيه من الحق باذنه، وَ الله يهدي من يشاء الى صراط مستقيم *

بيان اللغة

ظُلَلٌ : جمعُ ظُلَّةٍ، كغرفَةٍ و غُرَفٍ · وَ الظُّلَّة : سَحابةٌ تُظِلُّ، و أكثَرُ استعمالِه فيما يُكْرَه، نحو : عذابُ يوم الظلة · وَ الظلة أيضا شيءٌ كَهَيْئَةِ الصُّفَّةِ تُظِلُّك، وَ كلُّ ما يُسْتَظَلُّ به ·

غمام : سحاب أبيض رقيقٌ، و القطعة منه غمامة، و جمعه غمائم · و في معناه غيم (و القطعة منه غيمة و جمعه غيوم) ·

بغيا بينهم : البغي الفساد · و البغي العُدوان و الطغيان و العِصيان و الظلم
بغي الرجل (ض، بغيا) : عَدَلَ عن الحق و تجاوَزَ الحدَّ
بغى عليه : اعتدى عليه و شَقَّ عصا طاعَتِه ·

بيـان الإعراب

هل : هنا بمعنى الإنكار و التوبيخ، و ينظرون بمعنى ينتظرون ·

إلا : أداة حصر، و المصدر المؤول في محل نصب مفعولُ ينظرون، أي : ما ينتظرون إلا إتيانَ الله، و الجملة مستأنفة، مسوقة لتوبيخ المعرضين عن الإسلام و الزالّين المخطِئين ·

في ظلل : متعلق بـ : يأتي أو بمحذوف، هو حال من الفاعل ·

من الغمام : متعلق بـ : كائنةٍ، و هي صفة لـ : ظللٍ، و الملئكة عطف على لفظ الجلالة ·

و قضى الأمر : الواو عاطفة، و الجملة معطوفة داخلة في حَيِّزِ الانتظار، أو هي استئنافية، و الجملة بعدها مستأنفة ·

سل : فعل أمر، أصله اسأل، وقع فيه حذف للتخفيف ·

بني : مفعول به منصوب بالياء و حذفت النون للإضافة، اسرائيل : مضاف إليه مجرور بالفتحة للعلمية و العُجْمَةِ ·

كم ءاتينٰهم من ءاية : كم اسم استفهام في محل نصب مفعول به ثان مقدم لـ : اتيناهم، لأن الاستفهام يقتضي صدر الكلام، و أيةٍ مجرور لفظا منصوب محلا على أنه تمييزُ كمِ الاستفهاميَّةِ ·

و إذا فُصِل بين كم و بين مميِّزها فالأحسن أن يؤتى بـ : من

و من يبدل نعمة الله : الواو استئنافية، و من اسم شرط جازم مبني على السكون في محل رفع مبتدأ، و يبدل مضارع مجزوم، لأنه فعل الشرط

فإن : الفاء رابطة و الجملة في محل جزم جواب الشرط، و الشرط مع جوابه في محل رفع خبر المبتدأ ·

وَ لك أن تقول : الفاء تعليليَّة، و الجملة بعدها تُعَلِّل الجوابَ المقدَّر، أي : من يبدل نعمة الله يعاقِبْه اللّٰه ·

الحياة : نائب فاعل مرفوع بالضمة، و الدنيا صفة لـ : الحياة مرفوعة مِثلَها بالضمة المقدرة على الألف لِتعذُّرِ ظهورها عليها

و ذُكِّر الفعل جوازًا لِكون نائب الفاعل مؤنثا غيرَ حقيقي ·

و يسخرون : الواو استئنافية، أو عاطفة عطفت بها الجملة الثانية على

الجملة السابقة المستأنفة .

و يحتمل أن تكون خبرًا لمبتدأ محذوف، أي : وهم يسخرون

فبعث الله : الجملة معطوفة على جملة مقدرة اختصارًا و إيجازًا، أي : كان الناس متفقين على الحق فاختلفوا فبعث الله .

وَ أنزل معهم الكتب : مَعَ ظرفٌ مكانٍ يدل على المصاحبَةِ متعلق بـ : أنزل، أو بمحذوف هو حال من الكتبَ ، أي : و أنزل الكتبَ مُصاحِبًا لهم، أو وأنزل الكتبَ مُبشِّرًا و مُنذِرا معهم .

بالحق : متعلق بـ : أنزل، وَ الباء لِلْمَلابسَة، أي : أنزله إنزالا متلبسا بالحق، أو متعلق بحال من الكتابَ محذوفةٍ، أي : متلبسا بالحق، و الكتاب بمعنى الكُتُبِ، أو هو يعود على كل نبي مرسَل .

إلا : أداة حصر لا محل لها من الإعراب، و الذين فاعل اختلف .

من بعدِ : حرف الجر مع مجروره يتعلق بـ : اختلف

بغيا : مفعول لأجله، أو حال مؤوّلة باسمٍ مشتَقٍّ، أي باغين، و بينَهم ظرفُ مكانٍ متعلق بـ : بغيا، منصوب على الظرفية، أو متعلق بنعت لـ : بغيا، أي : بغيا حاصلا بينهم .

وجملة وما اختلف فيه إلا الذين أوتوه ... معترضةٌ .

وَ معنى الاية : و ما اختلف في الكتاب المنَزّل لإزالَةِ الاختلاف إلا الذين أُعطوا الكتابَ، أي إنهم عَكَسوا الأمرَ، فجعلوا ما أنزل لإزالة الاختلاف سَبَبًا لزيادَةِ الاختلاف، فهذا يدل على غايةِ عنادهم لِلْحَقِّ و بُعدِهم عنه .

لما اختلفوا فيه من الحق : من هذه بَيانيَّة جاءت لِبيَان الموصول، يتعلق بمحذوفٍ حالٌ، أي : هَداهم لما اختلفوا فيه معدودا من الحق، أي : هَداهم الله لِلحق الذي اختلفوا فيه

بإذنه : متعلق بـ : هدى، أي : بفضله

الترجمة

তারা কি শুধু এই প্রতীক্ষায় আছে যে, আল্লাহ (তাদেরকে আযাব দেয়ার জন্য) তাদের সামনে আসবেন মেঘের বিভিন্ন ছায়ায় এবং (আসবেন) ফিরেশতাগণ, আর সব কিছু খতম হয়ে যাবে; বস্তুত

আল্লাহরই বরাবরে রুজু করা হবে (পুরস্কার ও 'তিরস্কার'-এর) যাবতীয় 'মোকদ্দমা'।

(একটু) জিজ্ঞাসা (তো) করুন আপনি বনী ইসরাঈলকে (তাদের আলিমদেরকে), আমি তাদেরকে সুস্পষ্ট কত নিদর্শন দান করেছি (লাম)। বস্তুত যারা পরিবর্তন করে ফেলে আল্লাহর নেয়ামতকে (নিদর্শনাবলীকে) [১] তা তাদের কাছে আসার পর, (তাদের জন্য) নিঃসন্দেহে আল্লাহ কঠিন আযাবদাতা।

শোভিত করা হয়েছে যারা কুফুরি করেছে তাদের জন্য দুনিয়ার জীবনকে। আর তারা উপহাস করে তাদেরকে যারা ঈমান এনেছে, অথচ যারা (আপন প্রতিপালককে) ভয় করবে তারা কেয়ামতের দিন তাদের উপরে থাকবে। বস্তুত আল্লাহ যাকে ইচ্ছা করেন, তাকে রিযিক দান করেন বেলাহিসাব।

(শুরুতে) মানুষ (দ্বীনের দিক থেকে) এক জাতি ছিলো, (তার পর তারা বিভক্ত হয়ে পড়ে), অনন্তর প্রেরণ করেছেন আল্লাহ নবীদেরকে সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে এবং নাযিল করেছেন তাদের সঙ্গে কিতাব সত্যভাবে, যাতে তিনি মানুষের মাঝে ফায়ছালা করে দেন (ঐ বিষয়ে) যে বিষয়ে তারা মতভেদ করেছে।

বস্তুতঃ ঐ কিতাবের বিষয়ে তারাই মতভেদ করেছে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে, তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শনাবলী আসার পর। (তারা মতভেদ করেছে শুধু) পরস্পর জেদাজিদির কারণে।

অনন্তর আল্লাহ আপন অনুগ্রহ দ্বারা মুমিনদেরকে ঐ সত্যের দিকে পথ প্রদর্শন করেছেন যে সম্পর্কে 'এই কিতাবীরা' মতভেদ করেছে। আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছা করেন তাকে ছিরাতুল মুস্তাকীম-এর দিকে পরিচালিত করেন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) هل ينظرون إلا (তারা কি শুধু এই প্রতীক্ষায় আছে যে, ...) প্রশ্নধর্মী এই তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) থেকে গ্রহণ করা হয়েছে। আরবীতে প্রশ্নশব্দটি যেমন انكار ও توبيخ এর জন্য এসেছে তেমনি তরজমাতেও প্রশ্নশব্দটি অস্বীকার ও তিরস্কারের অর্থে হবে। কোরআনের তরজমার ক্ষেত্রে এই মূলানুগতা প্রশংসনীয়।

১. হেদায়াতের পরিবর্তে গোমরাহী বেছে নেয়।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন- 'তারা শুধু এ অপেক্ষায় আছে যে, ...' এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য ও সুন্দর। সকল বাংলা মুতারজিম এটা অনুসরণ করেছেন।

(খ) و الملائكة (এবং [আসবেন] ফিরেশতাগণ) আরবী ভাষার প্রসিদ্ধ 'ব্যাকরণসূত্র' হলো- العطف يقتضي تكرار العامل এই সূত্র ধরে (আসবেন) ফেয়েলটি পুনরুক্ত করা হয়েছে।

আয়াতে الله ও الملئكة এর মাঝে في ظلل من الغمام এর ব্যবধান আনা হয়েছে। أن يأتيهم الله و الملئكة في ظلل বলা হয়নি। অথচ ফিরেশতাগণও মেঘের ছায়ার মাঝে আসবেন। এই ব্যবধান রক্ষা করা আদবের দাবী। সুতরাং তরজমায়ও তা বিবেচনায় থাকা দরকার।

শায়খুলহিন্দ (রহ) এটা বিবেচনা করেছেন, যা অধিকাংশ (উর্দূ ও) বাংলা তরজমায় করা হয়নি।

(গ) বাংলা মুতারজিমগণ وقضى الأمر এর তরজমা করেছেন, 'এবং (তারপর) সব কিছুর মীমাংসা হয়ে যাবে।' এতে উদ্দেশ্য পরিষ্কার হয় না। থানবী (রহ) লিখেছেন- اور سارا قصه هي ختم هو جائے (এবং সমস্ত কিস্সাই খতম হয়ে যাবে।) তিনি তার তরজমার পক্ষে যুক্তি প্রদর্শন করে লিখেছেন- আমাদের উর্দু ভাষায় এটা হালাক করার প্রতি ইংগিতবাহী। এ তরজমার উৎস হলো জালালাইনের এই ব্যাখ্যা- وَتَمَّ أمرُ إهلاكِهم

(ঘ) و إلى الله تُرجَع الأمور এবং আল্লাহরই বরাবরে রুজু করা হবে (পুরস্কার ও তিরস্কারের) যাবতীয় 'মোকদ্দমা'- এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা। এ সম্পর্কে তিনি বলেন- এ তরজমার ভিত্তি হলো তাফসীরুল খাজিনের এই ব্যাখ্যা- أي إلى الله تَصير أمورُ العباد في الآخرة و هو المجازِي على الأَعمال بالثوابِ وَ العِقاب .

পুরস্কারের সঙ্গে সংগতি রক্ষার জন্য শাস্তি অর্থে তিরস্কার শব্দটি ব্যবহৃত হয়েছে।

(ঙ) (একটু) জিজ্ঞাসা (তো) করুন- বন্ধনীর সংযোজন সম্পর্কে থানবী (রহ) বলেছেন, এ দ্বারা ইংগিত করা হয়েছে যে, প্রশ্নটির উদ্দেশ্য হলো 'প্রশ্ন-পাত্র'দের প্রতি ভর্ৎসনা।

(চ) বস্তুত যারা আল্লাহর নেয়ামতকে (নিদর্শনাবলীকে) পরিবর্তন

করে ফেলে (হেদায়াতের পরিবর্তে গোমরাহী বেছে নেয়) এ বন্ধনী দুটি থানবী (রহ) যুক্ত করেছেন নেয়ামত পরিবর্তন করার অর্থ ব্যাখ্যা করার জন্য।

(ছ) একটি বাংলা তরজমায় و الذين اتقوا এর তরজমা করা হয়েছে, 'যারা সংযত হয়ে চলে'। কোরআনের বিশিষ্ট শব্দগুলোর ক্ষেত্রে এভাবে 'অবাধ' বাংলা প্রতিশব্দ ব্যবহার করা কোরআনের 'তাহরীফে মানাবী' বা মর্মবিকৃতির কারণ হতে পারে। তাকওয়া ও সংযম উভয়ের ভাব ও মর্ম এবং হৃদয়ে উভয় শব্দের প্রতিক্রিয়া এক নয়।

একটি তরজমায় রয়েছে, যারা তাকওয়া অবলম্বন করে- এটি উত্তম।

(জ) যাতে তিনি মানুষের মাঝে (কিংবা যাতে ঐ কিতাব মানুষের মাঝে) ফায়ছালা করে দেন (বা দেয়), ليحكم এর مرجع হিসাবে দু'রকম তরজমা হতে পারে।

(ঝ) 'বস্তুত' এটি الواو الاستئنافية এর তরজমা।

(ঞ) بغيا بينهم (তারা মতভেদ করেছে) পরস্পর জেদাজিদির কারণে- فعل ও مفعول لأجله এর মাঝে দীর্ঘ ব্যবধানের কারণে ফেয়েলটিকে বন্ধনীর মাঝে পুনরুক্ত করা হয়েছে।

পরস্পর 'জেদাজেদির' কারণে এ তরজমা থানবী (রহ) থেকে গ্রহণ করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, পরস্পরের যিদের কারণে।

বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে পরস্পরের বিদ্বেষের কারণ।

'নিজেদের মাঝে স্বেচ্ছাচারের কারণে, এ তরজমাও হতে পারে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة ظلة

٢ - أعرب قوله تعالى : كم اتيناهم من ايه

٣ - ما هو مرجع ضمير الفاعل في ليحكم

٤ - أعرب قوله : بغيا بينهم

٥ - هل ينظرون إلا أن يأتيهم الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - و الذين اتقوا 'যারা সংযত হয়ে চলে' - এ তরজমা সম্পর্কে মন্তব্য করো

(٧) أَمْ حَسِبتم ان تدخُلوا الجنةَ و لما ياتِكم مَثَل الذين خلَوا من قبلِكم، مَسَّتهم الباساءُ و الضَّرّاء و زُلزِلوا حتى يقولَ الرسول و الذين اٰمنوا مَعه مَتى نصرُ اللّٰه، اَلا اِن نصرَ اللّٰه قريب * يَسئلونك ماذا يُنفِقون، قل ما اَنفَقتُم مِن خيرٍ فَلِلْوالدَينِ و الاَقْرَبِين وَ اليتٰمٰى وَ المسٰكينِ وَ ابْنِ السبيل، و ما تَفعلوا من خيرٍ فَان الله به عليم * كُتِبَ عليكم القتالُ و هو كُرْه لكم، وَ عسى ان تَكرَهوا شيئًا و هو خير لكم، وَ عسى ان تُحبوا شيئًا وَ هو شَرٌّ لكم، و الله يَعلم و انتم لا تَعلمون * يَسئلونك عَنِ الشهر الحرامِ قتالٍ فيه، قل قتالٌ فيه كبير، وَصدٌّ عن سبيل الله و كفرٌ به و المسجدِ الحرامِ، و اخراجُ اهلِه منه اكبرُ عندَ الله، وَ الفتنةُ اكبر مِنَ القَتْلِ، وَ لا يَزالون يُقاتِلونكم حَتّٰى يَرُدُّوكم عَنْ دينِكم ان استَطاعوا، وَ من يَرْتَدِدْ منكم عَن دينِه فيَمُت وَ هو كافِرٌ فاولئك حَبِطت اعمالُهم في الدنيا وَ الاخرة، وَ اولئك اصحٰب النار، هم فيها خٰلِدون *

بيان اللغة

مَسَّتْ : مَسَّ شيئًا (س، ن، مَسًّا، مَسِيسًا) : لَمَسَه بِيَده (ض)، يقال : مَسَّه الكِبَرُ و المرَض : أصابَه، و مَسَّه العَذاب : أصابه

আযাব তাকে আক্রান্ত করেছে। সে আযাবে আক্রান্ত হয়েছে। সে আযাবগ্রস্ত হয়েছে।

البأساء : الفَقْرُ، المشَقَّةُ، الداهِيَة — দারিদ্র্য, কষ্ট, বিরাট বিপদ

الضراء : الشِّدَّة، كلُّ حالَةٍ تَضُرُّ، سوءُ الحالِ — কঠিন অবস্থা, দুর্দশা

وَ الضُّرُّ أيضا سُوء الحالِ، و لكنَّ الضراءَ يُقابِله السَّراءُ و النعماءُ و البَأساءَ، و الضرَّ يقابِله النفعُ، قال تعالى : و لئن أذقناه نعماء بعد ضراء، و قال : و لا يملِكون لأنفسهم ضَرًّا و لا نَفعًا

مستـهم البأسـاء و الضراء : أصابتهم দারিদ্র্য ও দুর্দশা তাদেরকে আক্রান্ত করেছে, তারা দারিদ্র্যপীড়িত ও দুর্দশাগ্রস্ত হয়েছে।

حسبتم : ظننتم، يقـال : حسبت زيدا قـائما من باب تعب، أي بِكسر سين الماضي وَ فَتْحِها في المضارِعْ، في لغةِ جميع العرَبِ، إلا بني كِنانَةَ، فإنهم يَكسِرون سينَ المضارع و الماضي على غيرِ قياس . و المصدر حِسبانا بالكسر .

و حَسَبتُ المال (حِسابا، و حُسبانا و حِسبانا، ن) : أحصيتُه عددا

مَثَل : المَثَل بمعنى المِثْلِ، أي المشابِهُ لِغَيره في معنًى منَ المعاني মত, সদৃশ

وَ لَمَّا يأتِكم : لما أداة جزمٍ و نفيٍ تَجزِم المضارعَ و تَنْفِيه و تَقْلِبُه ماضِيًا ك : لم، إلا أن النفيَ في لما مُستَمِرٌّ إلي الحال .

كُرْهٌ : مَكروهٌ تكرَهه، قال ابن قُتَيبةَ : الكره بالضم المشقة، و بالفتح الإكراه .

الصد : المنع، يقال : صده عن شيء، منعه عنه (ن)

يرتد : يرجع، قال الإمام الراغب : الارتداد و الردة الرجوع، لكن الردة تختص بالكفر، أي : الرجوع من الإيمان إلي الكفر، و الارتداد يستعمل فيه و في غيره

خير و شر : يكون وصفًا و يكون اسمَ تفضيلٍ، حذفت منه الهمزة، و تُقدَّرُ مِنْ معَ مجرورِه

بيـان الإعراب

أم حسبتم : أم هذه منقطعة، بمعني بل، و همزة الاستفهام محذوفة، و المعنى بل أ حسبتم، و الاستفهام للتوبيخ و الإنكار .

و المصدر المؤول (أن تدخلوا) سُد مَسَدَّ (أي قامَ مَقامَ) مفعولي حسب، على رَأيِ سِيبَوَيْهَ، و سد مسد المفعول الأول، و المفعول الثاني محذوف على رَأيِ الأَخْفَشِ، أي : أم حسبتم دخولَ الجنة مُحقَّقًا .

و لما يأتكم : الواو حالية، و الجملة بعدها في محل نصب حال من واو الجماعة في : تدخلوا .

مستهم البأساء والضراء : الجملة مستأنفة، كأن قائلا قال : كيفَ كان ذلك المَثَلُ ؟ فقيل : مَستهم البأساءُ وَ الضراء، أو هي تفسيرية، وِ على كلٍّ حالٍ لا محل لها من الإعراب .

زلزلوا حتى يقولَ الرسول وَ الذين امنوا معه : الجملة معطوفة على مَستهم، وَ حتى : حرف جر وَ غايةٍ، و المضارع منصوب بـ : أنْ مضمرةً بعد حتى، و الموصول معطوف علي الرسولُ، و معه يتعلق بـ : امنوا أو بـ : يقول .

متى : اسم استفهام مبني في محل نصب على الظرفية الزمانية، و الظرف متعلق بمحذوف هو خبر مقدم، أي : نصرُ الله آتٍ متى ؟

ماذا ينفقون : ما اسم استفهام في محل نصب مفعول به مقدم لـ : ينفقون، و هذا الإعراب بجعل "ماذا " كلمة واحدة .

و يجوز أن يكون ما اسمَ استفهام في محل رفع مبتدأ، و ذا اسمَ موصول في محل رفع خبر، و الجملة في محل نصب مفعول مقدم لـ : ينفقون .

فللوالدين : الفاء رابطة بين الشرط و جوابه، و التقدير : فهو ثابت للوالدين

و عسى : الواو استئنافية، و عسى من أفعال القرب، و هو إذا لم يأت بعده اسم ظاهر، فعلٌ تامٌّ، و المصدر المؤول في محل رفع فاعلُه، كما ترى في هذه الآية، و التقدير : قَرُبَ كرهُكم شيئا

وإذا أتى بعده اسم ظاهر، فهو ناقص، و الاسم الظاهر اسمه، و المصدر المؤول خبره، نحو : عسى ربكم أن يرحمكم، و عسى ربكم أن يهلك عدوكم، و عسى الله أن يأتي بالفتح . و لا يكون خبر عسى و فاعله إلا فعلا مستقبلا منصوبا بـ : أن

و هو خير لكم : الجملة حال من شيئا . و لا عِبرةَ بكونه نكرةً لوجود الرابط، و هو الواو .

قتال فيه : بدلُ اشتمالٍ من الشهر، لأن الشهر يشتمل على القتال، لأنه واقع فيه، وَ فيه : يتعلق بالمصدر أو بنعت للمصدر، و المعنى : يسألونك عن القتال في الشهر الحرام .

قتال فيه كبير : هذا بمعنى القتال فيه إثم كبير
و المسجد الحرام : معطوف على : سبيل الله، و جاز هذا العطف لأن معنى صَدٌّ عن سبيل الله و كفرٌ به واحد ·
حتى : حرف جر بمعنى إلى أو كي، متعلق بـ : يقاتلون ·
إن استطاعوا : حذف المفعول به اختصارًا لدلالة القرينة عليه، أي : إن استطاعوا ردكم، و جواب الشرط محذوف، أي ردواكم عن دينكم ·

الترجمة

নাকি তোমরা ধারণা করছো যে, তোমরা চলে যাবে জান্নাতে, অথচ এখনো আসেনি তোমাদের কাছে তাদের মত অবস্থা যারা বিগত হয়েছে তোমাদের পূর্বে। ধরেছিলো তাদেরকে অনটন ও দুর্দশা এবং (বিভিন্ন বিপদাপদ দ্বারা) তাদেরকে প্রকম্পিত করা হয়েছিলো, এমন কি বলে উঠলেন রাসূল ও যারা ঈমান এনেছে, তাঁর সঙ্গে কখন (আসবে) আল্লাহর (প্রতিশ্রুত) সাহায্য! শোনো, অবশ্যই আল্লাহর সাহায্য নিকটবর্তী।
জিজ্ঞাসা করে তারা আপনাকে, (ছাওয়াবের জন্য) তারা কী (এবং কোথায়) খরচ করবে? আপনি বলুন, যা তোমরা খরচ করবে তা প্রাপ্য হলো মা-বাবার এবং নিকটাত্মীয়দের এবং এতীম বাচ্চাদের এবং মিসকীনদের এবং মুসাফিরের। আর যা কিছু নেক কাজ তোমরা করবে, আল্লাহ্ (তা'আলা) সে বিষয়ে পূর্ণ অবগত।
ফরয করা হয়েছে তোমাদের উপর লড়াই করা, অথচ তোমাদের জন্য তা অপ্রিয়। বস্তুত এটা খুবই সম্ভব যে, কোন কিছুকে তোমরা অপছন্দ করবে, অথচ তা তোমাদের জন্য উত্তম। এবং খুবই সম্ভব যে, কোন কিছুকে তোমরা পছন্দ করবে, অথচ তোমাদের জন্য তা মন্দ। বস্তুত আল্লাহ্ জানেন, আর তোমরা জানো না।
জিজ্ঞাসা করে তারা আপনাকে 'হারাম' মাস সম্পর্কে, তাতে লড়াই করা সম্পর্কে। আপনি বলুন, তাতে লড়াই করা বিরাট পাপ, তবে আল্লাহর রাস্তা থেকে বাধা দেয়া এবং আল্লাহর সাথে কুফুরি করা এবং মসজিদে হারাম থেকে বাধা দেয়া এবং মসজিদে হারামের বাসিন্দাদেরকে সেখান থেকে বের করে দেয়া আল্লাহর নিকট আরো বড় অপরাধ। আর ফেতনা করা তো হত্যাকাণ্ড থেকেও বড়।
আর লড়াই করে যাবে তারা তোমাদের বিরুদ্ধে তোমাদেরকে

তোমাদের দ্বীন থেকে ফিরিয়ে দেয়া পর্যন্ত, যদি তারা (তা) করতে পারে (তাহলে অবশ্যই তারা তা করবে)।
আর তোমাদের মধ্য হতে যারা ফিরে যাবে আপন দ্বীন থেকে অনন্তর মারা যাবে কাফির অবস্থায়; ওরাই, বরবাদ হবে তাদের আমল (সমূহ) দুনিয়া ও আখেরাতে। আর ওরাই হলো জাহান্নামের বাসিন্দা; তারা তাতে চিরস্থায়ী হবে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'চলে যাবে জান্নাতে' এতে বিনা কষ্টে লাভ করার ভাব রয়েছে, সুতরাং এটি 'প্রবেশ করবে' এবং 'দাখেল হবে'-এর চেয়ে অধিক মূলানুগ।
'তাদেরকে প্রকম্পিত করা হয়েছিলো' এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা। এর যুক্তি এই যে, زلزلوا এর মাঝে ফায়েল-এর প্রতি ইঙ্গিত রয়েছে। অর্থাৎ বোঝা যায় যে, কোন অদৃশ্য সত্তা পরীক্ষার উদ্দেশ্যে তাদেরকে বিপদাপদ দ্বারা প্রকম্পিত করেছিলেন। থানবী (রহ) লাযিম এর তরজমা করেছেন, তাতে অদৃশ্য সত্তার কর্তৃকারকত্বের আভাস ফুটে উঠেনি।
দ্বিতীয়তঃ زلزلوا এ দু'টি ز রয়েছে, যা কঠিন মাখরাজের হরফ, সুতরাং তরজমাতেও কঠিন মাখরাজবিশিষ্ট শব্দ বাঞ্ছনীয়, তাই শায়খুলহিন্দ (রহ) جھڑ جھڑائے گئے ব্যবহার করেছেন। কোন কোন বাংলা মুতারজিম 'বিচলিত হয়ে পড়েছিলো' লিখেছেন, অথচ 'বিচলিত' হচ্ছে কোমল উচ্চারণের শব্দ, তদুপরি তা পূর্ণ মূলানুগও নয়।

(খ) متى نصر الله কখন আসবে আল্লাহর (প্রতিশ্রুত) সহায্য? এ বন্ধনী থানবী (রহ)-এর। উদ্দেশ্য এদিকে ইঙ্গিত করা যে, প্রশ্নের উদ্দেশ্য সংশয় প্রকাশ করা নয়, বরং প্রতিশ্রুত সাহায্যের প্রতি ব্যাকুলতা প্রকাশ করা।

(গ) ماذا ينفقون (ছাওয়াবের জন্য) কী খরচ করবে তারা- এই বন্ধনীতে ইঙ্গিত রয়েছে যে, এ প্রশ্ন ছিলো নফল ও ঐচ্ছিক খরচ করা সম্পর্কে।
(এবং কোথায়) এ বন্ধনী এসেছে শানে নুযূল অনুযায়ী, যাতে বলা হয়েছে যে, হযরত আমর ইবনুল জামূহ (রা) রাসূলুল্লাহ

ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামকে জিজ্ঞাসা করেছিলেন–
ماذا ننفق من أموالنا و أين نضعها

(ঘ) ما انفقتم (যা তোমরা খরচ করবে তা প্রাপ্য হলো মা-বাবার) 'প্রাপ্য হলো', এটি لام এর অর্থ, যা استحقاق ও হকদার হওয়া বোঝায়, থানবী (রহ) এ তরজমা করেছেন। অন্যরা 'মা-বাবার জন্য' এ সাধারণ শব্দ ব্যবহার করেছেন।

(ঙ) و المسكين (এবং মিসকীনদের) উর্দূ তরজমা করা হয়েছে محتاجوں এবং বাংলা তরজমা করা হয়েছে অভাবগ্রস্তদের। কিন্তু কোরআনি শব্দটি এখানে অধিক উপযুক্ত মনে হয়, কারণ বাংলায়ও এর ব্যবহার রয়েছে।

(চ) 'এতীম বাচ্চাদের'– থানবী (রহ) এ তরজমা করেছেন এ জন্য যে, এখনকার লোকপ্রচলনে বয়স্ক পিতৃহীনকেও এতীম বলা হয়, অথচ শরীয়তে নাবালিগকেই শুধু এতীম বলা হয়। সুতরাং ভুল ধারণার সম্ভাবনা দূর করার জন্য এই সংযোজন বাঞ্ছনীয়।

(ছ) ابن السبيل 'মুসাফিরের' আয়াতে ابن السبيل ছাড়া অন্য শব্দগুলোর বহুবচন ব্যবহার করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) তরজমার এ পার্থক্য বিবেচনায় রেখেছেন। কিতাবে তাঁদের অনুসরণ করা হয়েছে।

(জ) و المسجد الحرام থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– আল্লাহর সাথে কুফুরি করা এবং মসজিদুল হারামের সাথে– অর্থাৎ তিনি المسجد الحرام-কে به এর যামীরের উপর عطف করেছেন। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন– 'এবং মসজিদে হারাম থেকে'

বাংলা তরজমাগুলোতে বিনা প্রয়োজনে عن এর তরজমা বাদ পড়েছে। তারা তরজমা করেছেন, 'আল্লাহর পথে বাধা দেয়া'।

(ঝ) إخراج এর তরজমা কেউ করেছেন 'বহিষ্কার করা'। এটা ঠিক আছে। কেউ করেছেন 'তাড়িয়ে দেয়া', মূল থেকে এভাবে সরে যাওয়ার কোন প্রয়োজন নেই।

(ঞ) أولئك حبطت (ওরাই, বরবাদ হবে তাদের আমল দুনিয়া ও আখেরাতে) ওদেরই আমল দুনিয়া ও আখেরাতে বরবাদ হবে, এ তরজমা করা যায়, তবে কিতাবে মূল তারকীব অনুসরণ করা হয়েছে। বরবাদ-এর পরিবর্তে 'নিষ্ফল' করা যায় এবং

কেউ কেউ তা করেছেন, তবে বরবাদ হচ্ছে উপযুক্ততর। থানবী (রহ) غارت এবং শায়খুলহিন্দ (রহ) ضائع ব্যবহার করেছেন।

أسئلة :

١ – بَيِّن الفرق بَيْنَ الردة و الارتداد ·

٢ – اشرح إعراب قوله تعالى : أن تدخلوا الجنة ·

٣ – أعرب قوله تعالى : ماذا ينفقون ·

٤ – اذكر الوجهين في إعراب عسى و ما بعده ·

٥ – 'চলে যাবে জান্নাতে' – এ তরজমার সার্থকতা আলোচনা করো

٦ – زلزلوا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) مَن ذا الذي يُقرِض الله قرضًا حَسَنا فَيُضٰعِفه له اَضعافًا كثيرةً، و الله يَقبِضُ و يَبْصط و اليه تُرجَعون * اَلَمْ تر الى الملاءِ من بني اسرا ءيل من بَعد مُوسٰى ، اذ قالوا لِنَبِيٍّ لهُمُ ابْعَثْ لنا مَلكا نُقاتِل في سَبيل الله، قال هل عَسَيْتُم اِن كُتبَ عليكم القتالُ اَلاَّ تُقاتِلوا، قالوا وَ مالنا الا نقاتل في سبيل الله و قد اُخرِجنا من ديارنا وَ ابنائنا ، فَلَما كُتب عليهم القتال تَوَلَّوا اِلا قليلا منهم، و الله عليم بالظّٰلمين *

بيان اللغة

يُقرِض (করয দেবে) أقرضه : أعطاه قرضًا ، يقال : أقرضه المالَ (و غيرَه) القرض : اسمُ مصدرٍ، لأن المصدر إقراض، و القرض هنا بمعنى المقرض و يَظهر أثرُ ذلك في الإعراب ·

يضاعف (বাড়িয়ে দেবেন) أضعف الشيءَ و ضَعَّفه و ضاعَفه : ضَمَّ إليه مِثْلَه فَصاعِدًا বস্তুটির সাথে তার অনুরূপ বা একাধিক অনুরূপ যুক্ত করলো, দ্বিগুণ বা কয়েকগুণ করলো।

الضِّعْفُ : هو لفظ يقتضي وجودُ أحدِهما وجودَ الآخر، كالنصف و الزوج ·

ضِعفُ الشيءِ، مِثْلُه في المقدار أو العَدَد، فالضعفُ إذا أضيف إلى العَدَدِ يقتَضي ذلك العددَ و مِثلَه، فَضِعفُ الواحِد إثنان وَ ضعفُ العَشَرة عشرون، و هكذا . و قولُك أعطِه ضعفَيْ واحِدٍ يعني الواحدَ وَ مِثلَيه، و ذلك ثلاثة .

الضعف يستعمَل أيضا بمعنَى المثلِ و زيادةٍ غيرِ محصورَةٍ، فقولك : لك ضعفه يعنى لك مثلاه أو ثلاثة أمثاله أو أكثرُ، و جمع الضعف أضعافٌ .

الملأ : أشرافُ القوم الذين يملأون العُيونَ منظرًا و الصُّدورا هَيْبَةً ، وهو اسم جمعٍ، لا واحد له سম্প্রদায়ের গন্যমান্য ও অভিজাত গোষ্ঠী

بيــان الإعراب

من : اسم استفهام في محل رفع مبتدأ، و ذا اسم إشارة في محل رفع خبر، و الذي بدل من اسم الإشارة أو نعت له .

قرضا حسنا : مفعول مطلق، (و قال بعضهم : هو نائب مفعول مطلق، لأنه مستعملٌ في مكان إقراضًا)، و يجوز أن يكون بمعنى الشيء المُقْرَض فيكون مفعولا به ثانيًا و حسنا صفته .

فيضعِفَه : الفاء سببية، و يضاعفَ مضارع منصوب بـ : أن مضمرةً بعد فاء السببية الواقعة جوابا للاستفهام .

و المصدر المؤول " أن يضاعفه " معطوف علي مصدر مُنتَزَعٍ من الكلام السابق، أي من ذا الذي يكون منه قرض فمضاعفة من الله

أضعافا : حال من مفعولِ يضاعِف، و أجاز أبو حيانَ أن يكون مفعولا به، إذ ضَمَّنَ يضاعف معنى يُصَيِّر .

ألم تر إلى الملأ : الهمزة للاستفهام التعجبي، و تر من الرؤية البصرية بمعنى ألم تنظر، فجاز استعمال "إلى" بعدها

أو من الرؤية القلبية، و لكنها تضمنت معنى الانتهاء، فصحت تعديته بـ : إلى، و المعنى : ألم ينته إلي علمك حالهم .

و المراد بجملة " ألم تر" التشويق، أي : تشويق السامع إلى معرفة ما بعدها .

من بني إسرائيل : متعلق بمحذوف هو حال من الملأ، أي : كائنين من بني اسرائيل، و من بعد موسى، متعلق بالمحذوف، حال ثانية من الملأ، و مِن الثانيةُ لابتداءِ الغايَةِ و الأولى تبعيضيَّةٌ أو بيانِيَّة .

إذ قالوا : الظرف يتعلق بمضاف محذوف، أي : قصة الملأ أو حديث الملأ .

عسيتم : فعل القرب و الرجاء و اسمه، و ألا تقاتلوا مصدر مؤول خبر عسى.

كتب عليكم القتال : شرط، و جواب الشرط محذوف أي لا تقاتلوا، و الجملة الشرطية معترضة

ما لنا أن لا نقاتل : ما استفهامية في محل رفع مبتدأ، و لنا متعلق بالخبر، أي : أيُّ عذرٍ ثابتٌ لنا، و ألا نقاتل : منصوب بنزع الخافض، أي في : أن لا نقاتل

قليلا : مستثنى بـ : إلا منصوب بالفتحة، و منهم متعلق بصفة لـ : قليلا، و قليلا صفة لموصوف محذوف، أي : عددا قليلا كائنا منهم .

الترجمة

কে আছে যে করয দেবে আল্লাহকে উত্তম করয, যাতে আল্লাহ বাড়িয়ে দেন তা বহুগুণে। আর আল্লাহই (জীবিকা) সংকুচিত করেন এবং সম্প্রসারিত করেন। আর তাঁরই দিকে তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তন করানো হবে।

আপনি কি দেখেন নি মূসার পরবর্তী বনী ইসরাঈলের (বিশিষ্ট লোকদের) জামাতকে, যখন বললো তারা তাদের এক নবীকে, নিযুক্ত করুন আমাদের জন্য একজন বাদশাহ, তাহলে লড়াই করবো আমরা আল্লাহর রাস্তায়।

তিনি বললেন, এমন সম্ভাবনা কি আছে যে, তোমরা লড়াই করবে না, যদি ফরয করা হয় তোমাদের উপর লড়াই।

তারা বললো, আমাদের এমন কী কারণ আছে যে, আমরা লড়াই করবো না, অথচ আমাদেরকে বহিষ্কৃত করা হয়েছে আমাদের বস্তি থেকে এবং আমাদের পুত্র (কন্যা)দের থেকে।

অনন্তর যখন ফরয করা হলো তাদের উপর লড়াই তখন তারা ফিরে গেলো তাদের মধ্য হতে অল্প সংখ্যক ছাড়া (সকলেই)। আর আল্লাহ যালিমদের সম্পর্কে সম্যক অবগত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قرضا حسنا এটিকে দ্বিতীয় মফউল ধরে তরজমা করা হয়েছে, مفعول مطلق হিসাবে তরজমা হবে, 'আল্লাহকে করয দেবে উত্তম করয দান করা' অথবা 'আল্লাহকে অবশ্যই উত্তম করয দেবে'। (দ্বিতীয় তরজমাটি করা হয়েছে مفعول مطلق এর উদ্দেশ্যকে সামনে রেখে।)

(খ) يضاعف অর্থ দ্বিগুণ বা বহুগুণ করবেন। যেহেতু পরে أضعافا শব্দটি এসেছে সেহেতু يضاعف ফেয়েলটির মাঝে শুধু বৃদ্ধি করার অর্থটি বিবেচনা করা হয়েছে, আরবীতে এর প্রচুর উদাহরণ রয়েছে।

(গ) ما এর সাধারণ অর্থ হলো أي شيء এখানে পূর্বাপরের প্রেক্ষিতে أي سبب এর তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) إلا قليلا منهم 'তাদের মধ্য হতে অল্পসংখ্যক ছাড়া'– এটি শাব্দিক তরজমা, 'তাদের কয়েকজন ছাড়া সকলে' এ তরজমাও করা যায়।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة الضعف

٢ – أعرب قوله : من ذا الذي

٣ – ما إعراب قوله : قرضا حسنا

٤ – أعرب قوله : مالنا أن لا نقاتل

٥ – قرضا حسنا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – إلا قليلا منهم এর তরজমা কী কী হতে পারে, বলো

(١) تِلك الرسلُ فَضَّلنا بعضَهم على بعض ، منهم مَن كَلَّم الله و رَفع بعضَهم درجٰتٍ، و اٰتينا عِيسى ابنَ مريمَ البينٰت وَ ايدنٰه بروح القُدُس، وَ لو شاءَ الله ما اقتَتَل الذين مِن بَعدهم مِن بَعد ما جاءتهم البيّنٰتُ و لٰكن اختَلَفوا فَمِنهم مَنْ اٰمنَ و منهم مَنْ كَفَر، وَ لو شاء الله ما اقتَتَلوا، وَ لٰكِنَّ الله يفعَل ما يُريد *

بيان اللغة

فضلنا (শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি) فَضَّله على غَيرِه : جَعله أو عَدَّه أفضلَ منه

تفضل عليه : أحسَن إليه

تفضل عليه : اِدَّعٰى الفضلَ عليه

قال تعالى : يريد أن يتفضل عليكم

و الفضل : الأفْضلِيَّةُ

و كلّ عطيّةٍ لا تلزَم مَنْ يُعطِي يقال لها فَضْلٌ — দান, অনুগ্রহ

كما قال تعالى : و اسألوا الله من فضله .

رفعنا : قال الإمام الراغب : الرفع يكون في الأجسام الموضوعَةِ إذا أَعليتَها عن مكانِها، كما قال تعالى : و رفعنا فوقكم الطور، و كما قال : الله الذي رفع السمٰوٰتِ بغير عَمَدٍ ترونَها .

و يكون في البناء إذا طوَّلْتَه، كما قال تعالى : و إذ يرفع إبرهيم القواعد من البيت .

و يكون في الذكر إذا جعلتَه ذِكراً طيبًا، كما قال تعالى : و رفعنا لك ذكرك .

و يكون في المنزلة إذا شرَّفْتَها، كما قال تعالى : و رفعنا بعضَهم فوق بعضٍ دَرَجاتٍ، و كما قال تعالى : نرفع درجاتٍ مَنْ نشاء، و كما قال تعالى : في بيوت أذن الله أن تُرفَع، أي تُشَرَّفَ .

رفع الإناءَ إلى المائدة، أي حملَها و نقَلَها إلى المائدة، و رفع صوتَه أي :جَهَرَ به . قال تعالى : لا ترفعوا اصواتكم فوق صوت النبي، و رفع فلانا إلى الحاكم، أى : قدَّمه إليه لِيُحاكِمَه .

درجت : جمع دَرَجةٍ، ما تَضَعُ عليه قدَمَك لِتَصْعدَ إلى أعلىٰ সিঁড়ির ধাপ و يُعَبَّر بها عَنِ المنزلَة الرفيعَةِ، قال تعالى : لهم درجاتٌ عند ربهم، و قال : هم درجاتٌ عندَ الله، أي : ذُو دَرَجاتٍ عندَ الله . الرُّتبَة و الفَضْلُ، يقال : له عليه درجة، و قال تعالى : و للرجال عليهن درجة .

أيدناه : أي قَوَّيناه، و القُدُس : الطُّهْر و البرَكة، و رُوح القدُسِ هو جبريلُ عليه السلام .

بيان الإعراب

تلك : تي اسم إشارة، مبني على السكون الظاهرِ على الياء، و هي محذوفة لالتقاء الساكنين، و اللام للدلالة علي بُعدِ الإشارة، و الكاف ضميرُ الخِطابِ يَلْحَقُ باسم الإشارة البعيدِ .

و تلك مبتدأ و الرسل خبره، أو هو بدل من اسم الإشارة، و جملة فضلنا خبره، و على بعض يتعلق بـ : فضلنا

منهم من ... : منهم يتعلق بخبر مقدم محذوف، و الموصول مبتدأ مؤخر، و العائد في الصلة محذوف، أي : كلمه الله .

و يجوز أن يتعلق الجار و مجروره بمحذوف، هو نعت لمبتدأ محذوف، أي : بعض معدود منهم من كلمه الله، فالموصول حينئذ هو الخبر .

و رفع : معطوفة علي : كلم، و درجات منصوب بنزع الخافض : في أو إلى . و يجوز أن يكون حالا مِن : بعضَهم، علي حذفِ المضاف، أي : ذَوي درجات .

و لو شاء الله ما اقتتل الذين ... : الواو استئنافية، و لو شرطية، و مفعول المشيئَة مَحذوف على العادَة، أي : لو شاء الله عَدَمَ اقتتالِهم، و جملة شاء الله شرط، و جملة ما اقتتل الذين جواب شرط .

و من بعدهم، أي : الذين جاؤوا من بعدهم، و الضمير يعود إلى الرسل، و المراد بالموصول الأمَمُ التي جاءت مِنهم الرسلُ، و الجملة الثانية " و لو شاء الله ما اقتتلوا " تاكيد للأولى ٠

من بعد ما .... : يتعلق بـ : اقتتل، و ما مصدرية، و المصدر المؤول في مَحَل جر بالإضافَةِ، أي : مِن بَعدِ مَجيءِ البينات ٠

الترجمة

ঐ রাসূলগণ, আমি মর্যাদা দান করেছি তাঁদের কতিপয়কে কতিপয়ের উপর। (যেমন) তাদের মধ্য হতে এমনও রয়েছে যার সঙ্গে আল্লাহ 'কালাম' করেছেন, আর উন্নীত করেছেন তিনি তাদের কতিপয়কে বহু মর্যাদায়। আর দান করেছি আমি ঈসা ইবনে মারয়ামকে সুস্পষ্ট প্রমাণাদি এবং শক্তি যুগিয়েছি তাঁকে পবিত্র আত্মার মাধ্যমে।

আর ইচ্ছা করতেন যদি আল্লাহ তাহলে যারা রাসূলদের পরে এসেছে তারা তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণাদি আসার পরও পরস্পর লড়াই করতো না, কিন্তু তারা মতভেদে লিপ্ত হয়েছে, ফলে তাদের মধ্য হতে কেউ ঈমান এনেছে, আর কেউ কুফুরি করেছে। আর যদি ইচ্ছা করতেন আল্লাহ তাহলে তারা পরস্পর লড়াই করতো না, কিন্তু আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তাই করেন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض (ঐ রাসূলগণ, মর্যাদা দান করেছি আমি তাদের কতিপয়কে কতিপয়ের উপর) আরবী ব্যাকরণের অনুকরণে এ তরজমা করা হয়েছে এবং بعض এর প্রকৃত প্রতিশব্দ ব্যবহৃত হয়েছে।

সরল তরজমা এমন হতে পারে– আমি ঐ রাসূলদের কাউকে কারো উপর মর্যাদা দান করেছি।

অথবা– আমি কোন রাসূলকে কোন রাসূলের উপর মর্যাদা দান করেছি।

(খ) (যেমন) এ বন্ধনী থানবী (রহ) ব্যবহার করেছেন, এ দিকে ইঙ্গিত করার জন্য যে, সামনে বিশেষ মর্যাদা প্রদানের উদাহরণ বর্ণিত হচ্ছে।

(গ) و رفع بعضهم درجات (আর উন্নীত করেছেন তিনি তাদের কতিপয়কে বহু মর্যাদায়) درجات শব্দটি একে তো বহুবচন, তদুপরি তানবীন হচ্ছে প্রচুরতাজ্ঞাপক, তাই তরজমায় 'বহু' শব্দটি যুক্ত হয়েছে। তা ছাড়া نصب بنزع الخافض এর দিকটিও বিবেচনা করা হয়েছে।

(ঘ) كلم الله 'কথা বলেছেন' এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে এটি সাধারণ ক্ষেত্রের ব্যবহার, আল্লাহ তাআলার শানে 'কালাম করেছেন' অধিক উপযোগী মনে হয়। এদিকে লক্ষ্য করেই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন كلام فرمايا

(ঙ) عيسى ابنَ مريمَ 'মারয়ামপুত্র ঈসাকে' এর পরিবর্তে ঈসা ইবনে মারয়ামকে- বলাই সঙ্গত। থানবী (রহ) এটাই করেছেন, পক্ষান্তরে শায়খুলহিন্দ (রহ) مريم كے بيٹے তরজমা করলেও ঈসাকে অগ্রবর্তী রেখেছেন। তার তরজমা হলো-

اور دیے ہم نے عیسی مریم کے بیٹے کو

(আর দিয়েছি আমি ঈসা, মারয়ামের পুত্রকে)

কারণ আরবী ব্যাকরণ অনুযায়ী বদলই হচ্ছে মূল উদ্দেশ্য। অথচ 'মরয়ামপুত্র ঈসাকে' এ তরজমায় ঈসা নামটি উদ্দেশ্য হয়ে পড়ে। অবশ্য ابن مريم কে عيسى এর صفة বিবেচনা করে উক্ত তরজমা করা যায়; যেমন বাংলা মুতারজিমগণ করেছেন। কিন্তু 'বদল' এর তারকীবই এখানে অগ্রগণ্য, যাতে ঈসা (আঃ)-এর জন্মসংক্রান্ত আল্লাহর কুদরতের বিষয়টি এখানে প্রাধান্যে আসে।

(চ) من بعدهم রাসূলদের পরে- এখানে স্পষ্টায়নের জন্য যামীরের স্থলে مرجع ব্যবহার করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة الرفع كما جاء في بيان اللغة

٢ - أعرب كلمة الرسل

٣ - اذكر الاحتمالات في إعراب درجات

٤ - أعرب قوله تعالى : و آتينا عيسى بن مريم البينت .

٥ - درجات এর তরজমায় 'বহু' শব্দটি সংযোজনের কারণ বলো

٦ - كلم الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) أَوْ كَالَّذِي مَرَّ على قريةٍ و هي خاوِيَة على عُروشِها ، قال أنّى يُحي هذه اللّٰهُ بعدَ موتِها ، فَأماتَه الله مائةَ عام ثم بعَثَه، قال كم لبِثتَ، قال لبِثتُ يومًا او بعضَ يوم، قال بَل لبِثتَ مائةَ عام فانظُرْ الى طعامِكَ و شَرابِك لَمْ يَتَسَنَّهْ، و انظُرْ إلى حمارك، و لنجعَلَكَ ايَة للناس و انظر الى العِظام كيفَ نُنْشِزُها ثم نَكسُوها لَحما ، فَلَمَّا تَبيَّن له قال أعلم ان اللّٰهَ على كلِّ شيءٍ قدير *

بيان اللغة

مر : مَرَّ شيءٌ (ن، مَرا، مُرورا، مَمَرًّا) : مضى — বিগত হলো

مر فلانا أو به أو عليه : اجتازه — অমুককে অতিক্রম করলো (তার পাশ দিয়ে বা তার কাছ হয়ে)

قرية : القرية اسم للموضع الذي يجتمع فيه الناس — জনপদ, নগর, গ্রাম

خاوية : ساقطة، و الخاوية : الداهية و المصيبة العظيمة

خَوِي المكانُ و البيتُ و خَويت الدار (س، خَواءً و خَوًى و خُوِيًّا و خَوايَةً) (ويأتي من باب ضرب أيضا) خَلا مما كان فيه ·

و خَوِي البيتُ : هَلك أهلُه و هو قائِمٌ بِلا ساكِنٍ — ঘরের বাসিন্দারা মরে গেলো, আর ঘর জনশূন্য অবস্থায় খাড়া থাকলো।

يقال خَوِي بطنُه من الطعام

عروشها : جمع عَرْشٍ، و العرشُ في الأصل شيءٌ مسقَّفٌ — ছাউনীযুক্ত কিছু

عرشُ البيتِ : سقفُه، و سُمِّي مجلسُ السلطان عرشًا لِعلُوِّه، و عرشُ الله ما لا يعلَم البشرُ حقيقَتَه إلا اسمَه، و ليس كما تذهب إليه أوهامُ العامَّةِ ·

لم يتسنه : لم يتغَيَّرْ و لم يفسُد · سَنِه الطعامُ و الشرابُ (س، سَنَهًا) و تَسَنَّه : تغيَّر و تعفَّن — নষ্ট হলো, পচলো

نُنشزها : (نركِّب بعضَها على بعضٍ) أنشزَ شيئًا : رفعه عن مكانه

أنشز اللهُ عِظامَ الميِّتِ : رفعَها إلى مَوضِعها و ركَّب بعضَها على بعضٍ
نكسو : كَسا فلانًا ثوبًا (ن، كَسْوًا) أعطاه إياه أو ألبسه إياه
و في دعاء لُبْسِ الثوب الجديدِ : الحمد لله الذي كَساني ما أُوارِيْ (أستُر) به عَورتي .

بيان الإعراب

أوكالذي مر على قرية : أو حرف عطف، و الكاف هنا اسمٌ بمعنى مِثْلٍ في محل جر معطوف على الموصول الأول في الاية السابقة .
و التقدير :ألم تر إلى الذي حاجَّ إبرهيمَ أو (الم تر إلى) مِثْلِ الذي مَرَّ على قرية .
و يجوز أن تكون في محل نصب مفعولا به لفعل محذوف .
تقديره : أ رأيت مثل الذي ... و حُذِفَ الفعلُ لدلالة " ألم تر" عليه، و الغرض التعجب .
و أجاز الزمخشريُّ زيادةَ الكافِ، و الموصولُ بعدَها معطوف على الموصول الأول في الاية السابقة .
على عروشها : يتعلق بـ : خاويَةٌ، و المعنى : سقطت السقوفُ أولاً ثم سقطت عليها الأَبْنِيَةُ
أنى يُحيي هذه الله : أنى بمعنى متى ظرف منصوب بـ : يحيى، أو بمعنى كيف، حال من : هذه، و العامل فيها يحيى، و هذه اسم إشارة في محل نصب مفعول به مقدمٌ، و قد حذف المشار إليه اختصارًا، لأن ما قبله يدل عليه، أي : كيف يُحيى الله هذه القريةَ ؟
أمات : فيه تضمين، لأن الظرفَ الذي بعده لايَليق به، أي : ألبثَه ميِّتًا مائةَ عام، وَ مِائةَ اسمُ عددٍ اكتسَبَ الظرفيةَ مما أضيف إليه .
كم لبثت : كم اسم استفهام مبني على السكون، و هو للعدد المبهَم، و مميِّزها محذوف، يُفسِّره الجوابُ، كأنه قيل : كم وقتا لبثت .
و هو في محل نصب على أنه ظرفُ زمان، اكتسب الظرفيَّة من مميزها، متعلق بـ : لبثت .
و يجوز أن يكون مفعولا به مقدما إذا كان لبثت بمعنى قضيت .

انظر إلى طعامك : هذه الجملة جواب شرط مقدر، أي : إن لم تَطْمَئِنَّ في أمر البَعْثِ فانظر . و جملة لم يتسنه في محل نصب حال من الطعام و الشراب معًا بمعنى الغِذَاءِ .

وَ لِنَجْعَلَكَ : الواو عاطفة، و حرف الجر مع ما بعده متعلق بفعل محذوف، أي : فعلنا ذلك لِتَطْمَئِنَّ في أمر البَعْثِ و لنجعلك آية للناس .

تَبَيَّنَ : ضمير الفاعل يعود إلى ما يُفهم مِنَ الكلام السابقِ، أي : لما تبين له أمرُ البعثِ .

الترجمة

কিংবা (তুমি কি দেখো নি) ঐ ব্যক্তির মত ঘটনা যে অতিক্রম করছিলো এক জনপদের উপর দিয়ে এমন অবস্থায় যে, ঐ জনপদের ঘরবাড়ী পড়ে ছিলো সেগুলোর ছাদের উপর। সে (অবাক হয়ে) বললো, কীভাবে জীবিত করবেন এই জনপদকে আল্লাহ্ এই জনপদের মৃত্যুর পর! তখন মৃত রাখলেন তাকে আল্লাহ্ একশ বছর। তারপর পুনর্জীবিত করলেন তাকে। তিনি বললেন, কত (সময়) অবস্থান করেছো? সে বললো, অবস্থান করেছি একদিন কিংবা একদিনের কিছু। তিনি বললেন, বরং তুমি অবস্থান করেছো একশ বছর। সুতরাং তুমি তাকাও তোমার খাদ্য ও পানীয়-এর দিকে, তা (একটুও) পচেনি। আর তাকাও তোমার গাধার দিকে (কেমন পচে-গলে গিয়েছে!)

(এটা আমি করেছি পুনর্জীবনের বিষয়ে তুমি আশ্বস্ত হওয়ার জন্য) আর তোমাকে মানুষের জন্য (আমার কুদরতের) একটি নিদর্শন বানানোর উদ্দেশ্যে।

আর তাকাও হাড়গুলোর দিকে, কীভাবে আমি সংযোজন করি এগুলোকে, তারপর এগুলোকে গোশতের আবরণ পরাই। যখন সুস্পষ্ট হলো তার কাছে (পুনর্জীবনের বিষয়টি) তখন সে বলে উঠলো, আমি জানি যে, অবশ্যই আল্লাহ্ সবকিছুরই উপর পূর্ণশক্তিমান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) কিংবা (তুমি কি দেখো নি) ঐ ব্যক্তির মত ঘটনা– এখানে 'ঘটনা' শব্দটিকে পূর্বাপরের অনিবার্য দাবীর কারণে যোগ করা

হয়েছে, এটা থানবী (রহ) করেছেন। আর عطف যেহেতু تکرار العامل দাবী করে সেহেতু এখানে পূর্ববর্তী ألم تر পুনরুক্ত হয়েছে। পক্ষান্তরে كالذي যদি উহ্য رأيت এর مفعول به হয় তাহলে তরজমা হবে, 'কিংবা তুমি কি দেখোছে ঐ ব্যক্তির মত ঘটনা যে ......

(খ) و هي خاوية على عروشها ('এমন অবস্থায় যে, ঐ জনপদের ঘরবাড়ী পড়ে ছিলো সেগুলোর ছাদের উপর') هي এর মারজি' হচ্ছে قرية আর উদ্দেশ্য হচ্ছে بيوت القرية তরজমায় সেটা বিবেচনা করা হয়েছে।

এটি শাব্দিক অনুবাদ। কোন কোন বাংলা মুতারজিম তরজমা করেছেন–

(ক) এক বিধ্বস্ত জনপদের পাশ দিয়ে অতিক্রম করলো।

(খ) এমন এক জনপদের পাশ দিয়ে যা ধ্বংসস্তূপে পরিণত হয়েছিলো।

এটি মোটামুটি গ্রহণযোগ্য তরজমা হলেও এর ত্রুটি এই যে, বিধ্বস্ত জনপদের যে চিত্রটি কোরআন তুলে ধরেছে তা এখানে রক্ষিত হয়নি। এই কোরআনি চিত্র অক্ষুণ্ন রাখার জন্যই উভয় শায়খ শাব্দিক তরজমা করেছেন এবং কিতাবে সেটাকেই অনুসরণ করা হয়েছে

(গ) শায়খুলহিন্দ (রহ) শুধু هذه এর প্রতিশব্দ اسکو ব্যবহার করেছেন, আর থানবী (রহ) উহ্য مشار إليه সহ তরজমা করেছেন اس بستی کو

কয়েকজন বাংলা মুতারজিম بعد موتها এর তরজমা করেছেন 'মৃত্যুর পর' এবং 'মরণের পর' ها যমীরটি তারা কেন বাদ দিয়েছেন তা বোধগম্য নয়। থানবী (রহ) এর তরজমায় যামীরটি বিবেচিত হয়েছে। শায়খুলহিন্দের তরজমায় যামীরটি বাদ গেলেও বাক্যের গঠন থেকে তা বোধগম্য হয়।

(ঘ) একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'আর লক্ষ করো তোমার খাদ্যসামগ্রী ও পানীয় বস্তু, আর তোমার গাধাটাকে– ওসব অবিকৃত রয়েছে।'

এই একটি নমুনা থেকেই বোঝা যায়, কোন কোন বাংলা তরজমা কতটা অদায়িত্বশীল।

(ঙ) قال أعلم (সে বলে উঠলো, আমি জানি)– 'বললো' এর

পরিবর্তে 'সে বলে উঠলো', এ তরজমা করার কারণ হলো আল্লাহর কুদরত অবলোকনের উচ্ছ্বাসভাবটুকু প্রকাশ করা। উভয় শায়খ তরজমা করেছেন "كه اٹها".

أسئلة :

١ - اشرح قوله : لم يتسنه مُجَرَّدًا و مَزيدًا
٢ - أعرب قوله تعالى : أو كا الذي مر على قرية
٣ - عَرِّفِ الفاء في قوله تعالى : فانظر إلى طعامك و شرابك
٤ - كيف جاز إفرادُ الفاعلِ في لم يتسنه و هو يعود على الطعام و الشراب كِلَيْهِما ؟
٥ - وهي خاوية على عروشها এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - قال أعلم এর তরজমা যদি করা হয়, 'সে বললো, আমি জানি', তাহলে কী ক্রটি দেখা দেয় ?

(٣) وَ إِذ قال ابرهيمُ ربِّ أرني كيفَ تحي الموتٰى؟ قال أوَلم تُؤمن، قال بَلٰى وَ لٰكن ليَطْمَئِنَّ قلبي، قال فَخذ اربعَةً من الطيرِ فَصُرْهن اليك ثم اجعَل على كلِّ جبَل منهن جزءً ثم ادعُهن يَأتينك سَعيا، وَ اعلَمْ ان اللّٰهَ عزيز حكيم *

بيان اللغة

ليطمئن : الطُّمأنينَة وَ الإطمِئْنان السُّكون وَ الرَّاحَةُ، و عَدَمُ السكونِ لا يُنافي الإيمانَ و العِرفانَ، و الطمأنينة لها مَراتِبُ، و هذه الطمأنينة التي طلبَها خليل الله إبراهيمُ عليه السلام هي أعلى المراتِب، التي تَليق بمقام النبوَّة، و هي لا تحصل إلا للأنبياء و الرسل .

قلبي : القلب هو العضو المعروف في الصدر، و سُمي قلب الإنسان قلبًا لِتَقَلُّبه و تبدُّلِ أحواله.

الطير : الطائر كلُّ ذي جَناحٍ يسبَح في الهواء، جمعه طير و طيور، و يستعمل الطير في معنى الجنس أيضا .

صرهن : بضم الصاد ، (و يجوز كسرها) ، فعل أمر من صار يصور (صَوْرًا) أي : أَمِلْهن و قَرِّبهن.

بيان الإعراب

و إذ : الواو استئنافية، و الظرف متعلق بـ : اذكر المحذوفِ .

رب : منادًى بأداة نداء محذوفةٍ، و هو مضاف لياء المتكلم المحذوفَةِ، منصوبٌ بالفتحة المقدرة على آخره، و تَعَذَّرَ ظهورُ الفتحةِ لاشتغال المحل بالكسرة التي طلبَتْها ياءُ المتكلم .

و الجملة في محل نصب مقول القول .

أرني : فعلُ أمرِ الإراءَةِ، و كيف حال مقدمة من الفعل تُحيي، وَ جملة كيف تحيي الموتى في مَحل نصب مفعولُ أرني الثاني .

بلى : حرف جوابٍ لإيجاب النفي الذي سَبَقَ في السؤالِ.

ليطمئن : اللام لام التعليل، و المصدر المؤول في محل جر باللام متعلق بفعل محذوف، أي : بلى آمنت و لكن سألتُك عن كيفيَّةِ الإحياء ليطمئن قلبي

فخذ : الفاء الفصيحة، و هي ما يدخل على جواب شرط محذوف، أي : إذا أردتَ معرفَةَ ذلك فخذ ...

و من الطير جار و مجرور متعلق بصفة محذوفة لـ : أربعةً، و إذا كان تمييزُ العدد اسمَ جمعٍ جاز الجر بِمِنْ أو بالإضافَة، و يجوز أن يكون الجار و المجرور متعلقا بـ : خذ، و التمييز محذوف، أي : خذ من الطير أربعة طيور .

منهن : متعلق بمحذوف حال من جُزْءًا، لأنه كان في الأصل صفةً لـ : جزءا، فلما تقدمت الموصوفَ أعرِبَتْ حالا، و جزءا هو المفعول به لـ : اجعل، و على كل جبل يتعلق بـ : اجعل بِتَضمينه معنَى أَلْقِ .

سعيا : مصدر في موضع الحال، أي : ساعياتٍ أو مُسْرعاتٍ، أو نائب عن مفعول مطلق، أي : إتيانًا سريعًا

الترجمة

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন বললেন ইবরাহীম, (আয়) রাব! আমাকে দেখান, কীভাবে জীবিত করবেন আপনি মৃতদেরকে। তিনি বললেন, তবে কি তুমি বিশ্বাস করো নি। তিনি বললেন, অবশ্যই, তবে (আমি আবদার করছি) যাতে আশ্বস্ত হয় আমার হৃদয়। তিনি বললেন, তাহলে তুমি চারটি পাখী ধরো, অনন্তর সেগুলোকে (পোষ মানিয়ে) আকৃষ্ট করো তোমার প্রতি। তারপর (কয়েকটি পাহাড় নির্বাচন করে) রেখে দাও প্রতিটি পাহাড়ের উপর সেগুলোর এক একটি অংশ। তারপর ডাক দাও সেগুলোকে, আসবে সেগুলো তোমার কাছে ছুটে। আর জেনে রেখো যে, অবশ্যই আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞার অধিকারী।

ফায়দা ঃ ইবরাহীম (আঃ) এর এ আবদার সন্দেহের কারণে, কিংবা বিশ্বাসের অল্পতার কারণে ছিলো না, বরং তাঁর উদ্দেশ্য ছিলো, পুনর্জীবিত করার স্বরূপ অবলোকন করা এবং বিভিন্ন রূপ চিন্তা করার চঞ্চলতা থেকে অন্তরকে স্থিরতা দান করা।

আর যেহেতু এমন ভুল ধারণা করার অবকাশ ছিলো যে, সন্দেহের ভিত্তিতে প্রশ্ন করা হয়েছে সেহেতু আল্লাহ তা'আলা প্রশ্ন করেছেন- أو لم تؤمن যাতে ইবরাহীম (আঃ) بلى বলে উত্তর দেন, আর তিনি মানুষের ভুল ধারণা থেকে মুক্ত হয়ে যান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) كيف تحيي الموتى (কীভাবে জীবিত করবেন আপনি মৃতদের) কোরআনের শব্দ হচ্ছে الموتى। কিন্তু বাংলা মুতারজিমগণ তরজমা করেছেন, 'মৃতকে' এটা ঠিক মনে হয় না। উভয় শায়খ উর্দূতে বহুবচনের শব্দ ব্যবহার করেছেন।

(খ) أولم تؤمن (তবে কি তুমি বিশ্বাস করোনি) এখানে প্রশ্নের মাঝে একটি জোরালো ভাব রয়েছে; সেটা প্রকাশ করার জন্য 'তবে' শব্দটি যুক্ত হয়েছে।

বাংলা মুতারজিমগণ لم تؤمن এর তরজমা مضارع দ্বারা করেছেন (তুমি কি বিশ্বাস কর না?) উভয় শায়খ অতীতকালীন ক্রিয়া ব্যবহার করেছেন- (کیا تو نے یقین نہیں کیا) কিতাবে তা

অনুসরণ করা হয়েছে।

(গ) بلى এর বাংলা প্রতিশব্দ 'অবশ্যই' হতে পারে, আবার 'কেন নয়' হতে পারে। শায়খুলহিন্দের তরজমায় উর্দূ প্রতিশব্দ এসেছে کیوں نہیں থানবী (রহ)ও প্রায় একই প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন। ভাবগত দিক থেকে এটাই উত্তম, তবে কিতাবের তরজমায় এ বিষয়টি বিবেচনা করা হয়েছে যে, بلى যেমন একশব্দ, তেমনি তার প্রতিশব্দটিও যেন একশব্দ হয়।

(ঘ) ليطمئن قلبي (যাতে আশ্বস্ত হয় আমার হৃদয়) এর বিকল্প তরজমা হচ্ছে–

(ক) যাতে আমার অন্তর প্রশান্ত হয়।

(খ) যাতে আমার কলবে ইতমিনান আসে।

(ঙ) فصرهن إليك (অনন্তর সেগুলোকে [পোষ মানিয়ে] আকৃষ্ট করো তোমার প্রতি) صرهن এর শাব্দিক অর্থ আকৃষ্ট করো إلى অব্যয়টিও তা নির্দেশ করে। বাংলা মুতারজিমগণ লিখেছেন– (ক) তোমার বশীভূত করো (খ) নিজের পোষ মানিয়ে নাও। কিতাবে এটাকে বন্ধনীতে এনে মূল তরজমায় শাব্দিক অর্থটি বিবেচনা করা হয়েছে।

(চ) (কয়েকটি পাহাড় নির্বাচন করে) এই বন্ধনী যোগ করা হয়েছে তাফসীরে রূহুল মাআনীর বর্ণনার ভিত্তিতে।

أسئلة :

١ – ما هو القلب ؟

٢ – أعرب قوله : ليطمئن قلبي

٣ – اذكر وجوه الإعراب في قوله : من الطير

٤ – أعرب قوله : سعيا

٥ – أو لم تؤمن এর তরজমায় 'তবে' শব্দটি যোগ করার কারণ কী

٦ – صرهن إليك এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) اَيَوَدُّ احدُكم ان تكونَ له جنة من نَخيلٍ و اعنابٍ تجري من تحتها الاَنْهٰرُ، له فيها من كل الثمرٰت و اَصابَه الكِبَرُ و له ذريَّة ضُعفاء، فاصابَها اِعصارٌ فيه نارٌ فاحترقَتْ، كذلك يُبين الله لكم

الآيٰتِ لعلكم تَتَفكرون * يايها الذين امَنوا انفِقوا مِنْ طيبٰتِ ما كسَبْتم و مما اخرَجْنا لكم منَ الارضِ، و لا تَيَمَّموا الخبيثَ منه تُنفِقون و لستُم بٰاخِذيه اِلا اَنْ تُغمِضوا فيه، وَ اعلموا ان الله غَنِيٌّ حميد *

بيان اللغة

نخيل : جمع نخلٍ، و النخل اسمٌ جنسٍ لشجر معروف، يستعمل في الواحد و الجمع، و الواحدة نخلة، و النخيل أيضا بستان النخل .

أعناب : جمع عنب، و العنب اسم جنس لثمر معروف، و الواحدة عنبة .

الثمرات : الثمر اسمُ جنسٍ لِكُلِّ ما يُؤتيه الشجَرُ، يؤكَلُ أو لا يُؤكَل، و جمعه ثِمار و أثمار، و الواحدة ثمرة، و جمعها ثَمَرات، فالجمعُ يكون تارةً مِن اسْمِ الجنس و تارةً مِنَ المفردَةِ .

و يقال لكل نفعٍ صدر عَنْ شيءٍ : ثَمَرَتُه، كقولك : ثمرة العلم العمل الصالح، و ثمرة العمل الصالح الجنة

ذرية : اسمٌ يجمَعُ نَسْلَ الإنسان مِنْ ذَكَرٍ و أُنْثى، يستعمَل في الواحد و الجمع، و جمعُها ذَرارِيٌّ

إعصار : الإعصار ريحٌ تهُبُّ بشدةٍ و تُثير الغبارَ و ترتفع كالعَمود إلى السماء .

لا تيمموا : لا تقصِدوا

تُغمضوا : أغمَضَ الرجل في أمرٍ : تَساهَل فيه، و أصله أغمَض الرجل عينَيه :أَطْبَقَ، أي : أغلَقَ جَفْنَيْهما

و أغمَضَ عن شيءٍ : تجاوَزَ عنه .

بيان الإعراب

أ يود أحدكم أن تكون له جنة : همزة الاستفهام هنا تُفيد النفيَ و الإنكارَ، و لكن لا يتعلق الإنكارُ بجميعِ ما تَعلَّق به الوُدُّ، بل اِنما يتعلق بـ :

إصابة الإعصار و الاحتراق، و المصدر المؤول في محل نصب مفعول يود .

و جنةٌ اسمُ تكونَ المؤخَّرُ، و له يتعلق بمحذوف هو خبر تكونَ المقدَّمُ

من نخيل : الجار و مجروره متعلق بمحذوف هو صفة لـ : جنةٌ، و أصل العبارة : أ يود أحدكم أن تكون جنة كائنة من نخيل و أعناب ثابتة له .

تجري : هذه الجملة صفة ثانية لـ : جنةٌ .

له فيها من كل الثمرات : له يتعلق بمحذوف هو خبر مقدم، و المبتدأ محذوف، أي : رِزقٌ، و مِنْ حرفُ جر بيانيٌّ يتعلق بمحذوف هو صفةٌ للمبتدأ المؤخر المحذوفِ، و فيها يتعلق بمحذوف هو حال من المبتدأ،

و أصل العبارة : رزقٌ كائنٌ من كلِّ الثمرات حالةَ كونِه فيها ثابتٌ له .

و الجملة صفة ثالثة لـ : جنة .

كذلك : الكاف حرف جر و تشبيهٍ، يتعلق بمفعول مطلق محذوفٍ، أو هو اسمٌ بمعنى مِثْلٍ، نائبُ مفعول مطلق أي : يبين الله لكم آياته بَيانًا كذلك أو مثل ذلك البيان .

من طيبات ما كسبتم : مِنْ للتبعيض، يتعلق بـ : أنفقوا، و هو في محل نصب مفعول به لـ : أنفقوا، أي : أنفقوا بعض الطيبات، و ما اسمٌ موصولٍ أو حرفٌ مصدريٌّ، و الموصول أو المصدر المؤول في محل جر مضاف إليه .

و مما أخرجنا لكم : عطف على : مِنْ طَيِّباتِ، و في الكلام حذفُ مضافٍ، أي : مِنْ طيباتِ ما أخرَجْنا لكم .

منه : يتعلق بمحذوفٍ هو حال مِنْ الخَبيثَ، أي : لا تقصدوا الخبيث معدودا مما كسبتم و مما أخرجنا لكم، و في هذا الإعراب يُقَدَّرُ رَابِطٌ في الجملة التي بعده، أي :تنفقونه .

و يجوز تعليق الجار و المجرور بـ : تنفقون، و حينئذ لا يحتاجُ إلي تقدير الرابط .

و جملة تنفقونه، أو منه تنفقون في محل نصب حال من فاعل التيمُّمِ، أو من مفعوله

وَ لستم بآخذيه : هذه الجملة في محل نصب حال مِنْ وَاوِ تُنفقون، و الباء حرف جر زائد، و آخذيه ... (أكمل العبارة) ·

إلا أن تغمضوا فيه : إلا أداة حصر، و المصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض، أي : بأن تغمضوا فيه، و هو يتعلق بـ : اخذيه، و المعنى : أنتم لا تأخذون المال الخبيثَ إلا وقتَ إغماضِكم فيه أو إلا بإغماضِكم فيه

الترجمة

তোমাদের কেউ কি পছন্দ করতে পারে যে, থাকবে তার একটি বাগান খেজুরের এবং আঙ্গুরের, যার নীচ দিয়ে বয়ে যাবে 'নহর-নালা'। তার জন্য তাতে থাকবে অন্য সকল প্রকার (প্রয়োজনীয়) ফলমূল। এ অবস্থায় আক্রান্ত করলো তাকে বার্ধক্য, অথচ তার রয়েছে দুর্বল সন্তানসন্ততি। তখন আক্রান্ত করলো ঐ বাগানকে এক ঘূর্ণিঝড়, যাতে রয়েছে আগুন। ফলে তা ভষ্ম হলো। এভাবেই বর্ণনা করেন আল্লাহ তোমাদের জন্য নিদর্শনাবলী, যাতে তোমরা চিন্তা করতে পারো।

হে (ঐ লোকেরা) যারা ঈমান এনেছো, তোমরা যা উপার্জন করেছো এবং যমীন থেকে তোমাদের জন্য আমি যা বের করেছি তার উৎকৃষ্ট অংশ থেকে কিছু (আল্লাহর রাস্তায়) খরচ করো। আর তোমরা নিকৃষ্ট বস্তুর ইচ্ছা করো না যে, তা থেকে খরচ করবে, অথচ তোমরা তা কিছুতেই গ্রহণ করবে না, সে বিষয়ে নমনীয়তা অবলম্বন করা ছাড়া। আর তোমরা জেনে রাখো যে, আল্লাহ চিরনির্মুখাপেক্ষী, চিরপ্রশংসিত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ... أيود أحدكم أن (তোমাদের কেউ কি পছন্দ করতে পারে যে, ...) অধিকাংশ মুতারজিম তরজমা করেছেন–

তোমাদের কেউ কি চায় যে, কিংবা পছন্দ করে যে, ...

এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে এখানে ইসতিফহামের উদ্দেশ্য যে নফী ও ইনকার, তা কিতাবের তরজমায় অধিকতর স্পষ্ট। ود এর মাঝে যেহেতু পছন্দ করা ও আকাঙ্ক্ষা করা উভয় অর্থ রয়েছে সেহেতু এমন তরজমাও করা যায়, তোমাদের কেউ

কি আকাঙ্ক্ষা/কামনা করতে পারে যে, ...

(খ) تجري من تحتها الانهار (যার নীচ দিয়ে বয়ে যাবে 'নহর-নালা' কোন কোন বাংলা তরজমায় 'নদী' শব্দটি এসেছে অথচ এখানে الأنهار দ্বারা নদী উদ্দেশ্য নয়, বাগানে জলসেচের নালা ও খাল উদ্দেশ্য।

এ কারণেই কোন উর্দূ তরজমায় ندی বা دریا ব্যবহার করা হয়নি, বহুবচন যোগে نهریں শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে। তাই কিতাবে অর্থগত ও বচনগত উভয় দিক বিবেচনা করে নহর-নালা ব্যবহার করা হয়েছে।

নালা শব্দটি পরিহার কলে 'নহরসমূহ' বলা যায়।

এখানে বহুবচনের আলামত 'সমূহ' বর্জন করে শুধু 'নহর' তরজমা করা যায় না এ কারণে যে, পরবর্তীতে ثمرات এর ক্ষেত্রে ফলফলাদি বা ফলমূল তরজমা করতে হচ্ছে। পাশাপাশি দু'টি বহুবচনের একটিতে বহুবচনের চিহ্ন ব্যবহার করা এবং অন্যটিতে না করা অসুন্দর মনে হয়।

(গ) له فيها من كل الثمرات (তার জন্য তাতে থাকবে অন্য সকল প্রকার [প্রয়োজনীয়] ফলমূল) এর তরজমা কেউ কেউ লিখেছেন–

(ক) সেখানে নানা রকম ফলমূল থাকবে।

(খ) সেখানে সর্বপ্রকার ফলমূল রয়েছে।

উভয় ক্ষেত্রে له এর তরজমা অনুপস্থিত। তদুপরি প্রথমটিতে كل এর তরজমাও অনুপস্থিত। এটা কোন যুক্তিতে গ্রহণযোগ্য হলেও আল্লাহর কালামের তরজমার ক্ষেত্রে অবশ্যই সতর্কতার পরিপন্থী।

(প্রয়োজনীয়) এ বন্ধনী যোগ করে থানবী (রহ) লিখেছেন, উদ্দেশ্য হলো এদিকে ইঙ্গিত করা যে, এখানে الاستغراق الكلي (বা প্রকৃত সার্বিকতা) উদ্দেশ্য নয়, বরং الاستغراق العرفي (বা প্রচলিত সার্বিকতা) উদ্দেশ্য।

(ঘ) فأصابه الكبر ('এ অবস্থায় আক্রান্ত করলো তাকে বার্ধক্য' আয়াতের ব্যাকরণ ও ক্রিয়াকাল বিবেচনা করে এ তরজমা করা হয়েছে।

'এ অবস্থায় সে বার্ধক্যগ্রস্ত হলো 'এ তরজমা তারকীবানুগ ও শব্দানুগ না হলেও গ্রহণযোগ্য।

و له ذرية ضعفاء এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন– 'তার সন্তানসন্ততি দুর্বল' কিন্তু له ذرية ضعفاء এবং ذريته ضعفاء উভয়ের তরজমা অভিন্ন হতে পারে না।

তদ্রূপ কেউ কেউ 'দুর্বল' এর সঙ্গে 'অসহায়' যোগ করেছেন, এটাও অপ্রয়োজনীয়।

(ঙ) إعصار فيه نار (এক ঘূর্ণিঝড়, যাতে রয়েছে আগুন) এর তরজমা 'অগ্নি-ক্ষরা ঘূর্ণিঝড়' মন্দ নয়। কিন্তু উভয় শায়খ তাদের উর্দূ তরজমায় 'বাক্য'-এর স্থলে বাক্য ব্যবহার করেছেন। আর কিতাবে তাঁদের অনুসরণ করা হয়েছে। তবে থানবী (রহ) বন্ধনী ব্যবহার করে লিখেছেন, যাতে রয়েছে আগুন (অর্থাৎ আগুনের উপাদান)

(চ) বাংলা মুতারজিমগণ تتفكرون এর তরজমা করেছেন অনুধাবন করা বা বুঝতে পারা। কেন করেছেন তা বোধগম্য নয়। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– تاکہ تم غور کرو আর থানবী (রহ) লিখেছেন, تاکہ تم سوچا کرو (যেন তোমরা চিন্তা করো) কিতাবের তরজমায় তাঁদের অনুসরণ করা হয়েছে।

(ছ) و لستم بآخذيه (অথচ তোমরা তা কিছুতেই গ্রহণ করবে না) ب অব্যয়টি যে তাকীদ প্রকাশ করছে, কোন বাংলা তরজমায় তা বিবেচনা করা হয়নি। উভয় শায়খ তা বিবেচনা করেছেন।

(জ) إلا أن تغمضوا فيه (সে বিষয়ে নমনীয়তা অবলম্বন করা ছাড়া) أغمض এর পরে في অব্যয় যুক্ত হলে তখন অর্থ হয়– কোন বিষয়ে প্রশ্রয়ের আচরণ করা বা শিথিলতা ও নমনীয়তা প্রদর্শন করা। উর্দূতে এ ক্ষেত্রে چشم پوشی کرنا এ বাগ্‌ধারা ব্যবহার করা হয়। উভয় শায়খ এ তরজমা করেছেন।

চোখ বুজে থাকা, চোখ বন্ধ করে রাখা, বা চোখ বন্ধ করে নিয়ে নেয়া ইত্যাদিতে সে অর্থ প্রকাশ পায় না, অথচ বাংলা তরজমাগুলোতে তাই করা হয়েছে।

এ ক্ষেত্রে কিতাবের তরজমা অধিকতর মূলানুগ মনে হয়।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة الثمر

٢ – بم يتعلق إنكار الاستفهام في قوله تعالى : أيود أحدكم ؟ و فيم استعمل كلمة مِن في هذه الجملة ؟

٣ - هـل يجوز أن تكون جملة تجري حالا من جنة و كيف ذلك ؟

٤ - أعـرب "منـه " في قوله : و لا تيمـمو الخبيث منه تنفقـون

٥ - اعـصار فيه نار এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - الأنـهار এর তরজমা আলোচনা করো

(٥) إن تُبدوا الصدقٰتِ فَـنِعِمَّا هي، وَ إن تُخفـوها وَ تؤتوها الفقـراءَ فَهـو خيرٌ لكم، وَ يكفِّرُ عنكم من سَيِّآتِكم، و الله بما تعملون خبير * ليس عليك هُدٰىهم و لكن اللّٰه يَهدي مَنْ يشاء، و ما تُنفِقوا من خَيرٍ فَلانفُسكم، وَ ما تُنفِقون الا ابتغاءَ وَجْهِ الله، و ما تُنفِقوا مِنْ خَير يُوَفَّ اليكم وَ انتم لا تُظلَمون * للفقراء الذين أُحصِروا في سَبيل الله لا يَستطيعون ضَرْبًا في الاَرْضِ، يحسَبُهم الجاهِلُ اغنياءَ مِنَ التعفُّفِ، تعرِفُهم بِسيمٰهم، لا يسئلون الناسَ الحافًا، و ما تُنفِقوا من خَيرٍ فان اللّٰه به عليم *

بيـان اللغـة

يكفر : أصل التكفير السَّتْرُ و التغطِيَةُ أَوِ الإزالَـةُ، فمعنى تَكفيرِ السيئاتِ أن يَسْتُرَها الله بِستار العَفْوِ و الغُفران، أو أن يُزيلَها من كتاب الأعمال، و إلى هذا المعنى أشار سبحانه و تعالى بقوله : إن الحسناتِ يُذهبن السيئاتِ .

يوف : انظر ٤/١/٣

أحصِروا : (حُبِسوا و مُنِعوا) . الحَصْرُ و الإحصار مَعناهما المنعُ مِن طريقِ البَيْتِ (أو مِنْ كَسْبِ المعَاش)، فالإحصار يقال في المنع الظاهِرِ كالعدو، و المنعِ الباطنِ كالمرَضِ أو الجهادِ أو الاشتغالِ بالعلم، و الحصرُ لا يقال إلا في المنع الباطِن .

و يُحمَل قوله تعالى : فإن أحصرتم على المنع الظاهِرِ و الباطِنِ، و

كذلك قوله تعالى : للفقراء الذي احصروا في سبيل الله ·

التعفف : الكف و الامتناع، و أصل العِفَّةِ الكف عَمَّا لا يَحِلُّ و لا يجمّل من قَولٍ أو فعلٍ ·

عف (ض، عِفَّةً، عَفافًا) و تَعفَّفَ وَ استَعَفَّ (عن ...) : كَفَّ عما لا يجمّل من হারাম ও অসঙ্গত আচরণ বা উচ্চারণ لا يحل و قول أو فعل থেকে সংযত থাকলো।

السيما و السيماء : العَلامة التي يُعرَف بها الشيءُ · وردت كلمة السيما في القرآن في ست مواضع، و لم ترد كلمة السيماء في موضع ·

قال تعالى : و على الأعراف رجال يَعرفون كلا بسيماهم ·

و قال : و نادى أصحب الأعراف رجالا يعرفونهم بسيماهم ·

و قال : و لو نشاء لأريناكهم فلعرفتهم بسيماهم ·

و قال : سيماهم في وجوههم من أثر السجود ·

و قال : يعرف المجرمون بسيماهم ·

إلحاف : إلحاح و إصرار في السؤال، جاء في الحديث : من سأل و له أربعون درهما فقد ألحف ·

بيــان الإعراب

فَنِعِمَّا هي : الفاء رابطة، لأن الجواب فعل جامد، و مَواضِعُ رَبْطِ الجواب بالفاء هي : الاسمية و الطلَبية و الجامد و ما و لن و قد ·

وَ نِعِما أصلُها نِعمَ ما، أدغِمت الميمان فصارت نعما · نعم فعل جامد لإنشاء المدح، و ما نكِرةٌ بمعنى شيءٍ في محل نصب، تمييزٌ لفاعلِ نعمَ المستَتِرِ، الذي جاء مُبهَمًا بلا مرجعٍ، فاحتاج إلي تمييزٍ يُزيل الإبهامَ و يُبين المرادَ ·

وَ أصل العبارَة : فَنِعِمَ (هو) شيئًا إبداؤُها، فالضمير "هي" مخصوصٌ بالمدح على حذفِ المضاف ·

و هي ضميرٌ منفصل في محل رفع مبتدأ مؤخر، خبره جملة نعما

و يجوز أن تكون ما معرفة بمعنى الشيء، فهي الفاعل لـ : نعم

و التقدير : نعم الشيء إبداء الصدقات

و جملة نعما هي اسمية في محل جزم جواب الشرط .

و يكفر : الواو استئنافية، و الجملة خبر لمبتدأ محذوف، أي : و الله يكفرُ...

و قُرِئَ بجزم الفعل عطفًا علي محل الجواب السابق، و من سيئاتكم يتعلق بمحذوف هو صفة لمفعول به محذوف، أي شيئا معدودا من سيئاتكم. هذا على رَأيِ سيبَوَيْهَ، و عند أبي البَقاء هي زائدة، و عند غيرهما هي للتبعيض تنوب عن مفعولِ يكفر، أي يكفر عنكم بعض سيئاتكم .

و ما تنفُقوا من خير : الواو استئنافية، و ما اسم شرطٍ جازمٌ في محل نصب مفعول به مقدم لـ : تنفقوا، و هو الشرط، و من هنا بيانية متعلقة بمحذوف هو حال من : ما، أو هي زائدة، و خير تمييز ما مجرور لفظا منصوب محلا .

فلأنفسكم : الفاء رابطة لجواب الشرط، و الجار مع مجروره متعلق بمحذوف هو خبر لمبتدأ محذوف، أي : فهو ثابت لأنفسكم .

و ما تنفقون إلا ابتغاء وجه الله : الواو اعتراضية، و الجملة بعدها معترضة لا عَلاقة لها بما قَبْلَها و ما بَعدها إعرابًا . و ما نافية . و إلا أداة حصر، أي : إنما تنفقون ابتغاءَ وجهِ اللّٰه .

و ابتغاءَ مفعول لأجله لـ : تنفقون، أو هو مصدر في موضع الحال، أي : مبتغين وجه الله .

و ما تنفقوا من خير : الجملة معطوفة على سابقتها، و يوف جواب الشرط

للفقراء : متعلق بخبر محذوف، و المبتدأ محذوف أيضا، و التقدير : صَدَقاتُكم مستَحَقَّة للفقراء .

و يجوز تعليق اللام بفعل محذوف، أي : اِعجَبوا للفقراء الذين ....

لا يستطيعون : الجملة في محل نصب حال من فاعل أحصروا .

يحسبهم الجاهل أغنياء من التعفف : الجملة حال ثانية أو مستأنفة لا محل لها من الإعراب، و أغنياء (على وزن أفعلاء) مفعول به ثان لـ :

يحسبهم، و منع من التنوين، لأنه محلق بالأسماء الممدودة المؤنثة ·
و من سببية، و هي مع مجرورها في موضع نصب مفعول لأجله لـ :
يَحْسَب، وَ لم يأتِ المفعولُ لأجله منصوبًا، لاختلاف الفاعِل في الفعلِ
و المصدَرِ، ففاعلُ الحِسبان هو الجاهل، و فاعل التعفف هم الفقراء،
وَ اتحاد الفاعل في الفعل وَ المصدَر شرطٌ من شروطِ كونِ المفعول لأجله
منصوبًا ·

تعرفهم بسيماهم : الجملة حال ثالثة أو مستأنفة ·

إلحافا : مصدر في موضع الحال، أي مُلحِفين، أو مفعول مطلق لفعل
محذوفٍ، أي يُلحِفون إلحافًا ·

الترجمة

যদি প্রকাশ করো তোমরা (তোমাদের) দানছাদাকা তবে তা কত না উত্তম! আর যদি গোপন করো তোমরা তা এবং (গোপনে) দান করো তা গরীবদেরকে তবে গোপন করা অধিকতর উত্তম তোমাদের জন্য। আর তিনি (এর বরকতে) মোচন করবেন তোমাদের কিছু গোনাহ। আর আল্লাহ তোমাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে সম্যক অবগত। আপনার দায়িত্ব নয় তাদেরকে হেদায়াত দান করা, বরং আল্লাহ হেদায়াত দান করেন যাকে ইচ্ছা করেন।

আর তোমরা যা কিছু মাল খরচ করবে তা তোমাদেরই মঙ্গলের জন্য হবে। আর তোমরা তো (অন্য কোন উদ্দেশ্যে) খরচ করো না, আল্লাহর সন্তুষ্টির অন্বেষণের উদ্দেশ্য ছাড়া। আর তোমরা যা কিছু মাল খরচ করবে, তা পূর্ণরূপে ফিরিয়ে দেয়া হবে তোমাদের দিকে। আর তোমরা, কোন অন্যায় করা হবে না তোমাদের প্রতি।

(ছাদাকা প্রাপ্য হলো প্রয়োজনগ্রস্ত) গরীবদের জন্য, যারা আবদ্ধ হয়ে পড়েছে আল্লাহর রাস্তায়। (জীবিকার সন্ধানে) তারা বিচরণ করতে পারে না ভূমিতে। অজ্ঞ ব্যক্তি মনে করে তাদেরকে অভাবমুক্ত (তাদের হাত পাতা থেকে) সংযত থাকার কারণে।

চিনতে পারেন আপনি তাদেরকে তাদের লক্ষণ দ্বারা। সুয়াল করে না তারা মানুষের কাছে 'কাকুতি' করে। আর তোমরা যা কিছু মাল খরচ করবে, আল্লাহ সে সম্পর্কে অবশ্যই সম্যক অবগত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إن تبدوا الصدقات (যদি প্রকাশ করো তোমরা দান-ছাদাকা প্রকাশ করো) আয়াতের মূল তারকীব থেকে সরে গিয়ে 'যদি তোমরা প্রকাশ্যে দান করো' এরূপ তরজমা করার কোন প্রয়োজন নেই, কিন্তু প্রায় সকল বাংলা মুতারজিম তা করেছেন।
'দান-ছাদাকা' দ্বারা বহুবচনের অর্থ প্রকাশ করা হয়েছে। 'ছাদাকাসমূহ' বলা যায়।

(খ) فنعما هي (তবে তা কত না উত্তম!) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা। نعم এর প্রতি লক্ষ্য রেখে তরজমায় মুগ্ধতার ভাব প্রকাশ করা হয়েছে। থানবী (রহ)-এর তরজমায়ও ন্যূনতম প্রশংসাভাব রয়েছে। তিনি লিখেছেন تب بهی اچهی بات هے (তবু তা ভালো) কিন্তু যারা বাংলা করেছেন, 'তবে তা ভালো', তাদের তরজমায় মুগ্ধতা বা প্রশংসাভাব আসেনি।

(গ) فهو خير لكم (তবে গোপন করা অধিকতর উত্তম তোমাদের জন্য) এখানে যামীর ব্যবহার করলে পূর্ববর্তী দু'টি যামীরের কারণে মর্মগত দুর্বোধ্যতা সৃষ্টি হওয়ার আশংকা ছিলো।

(ঘ) و ما تنفقوا من خير (আর তোমরা যা কিছু মাল খরচ করবে) 'আর যা কিছু খরচ করবে'- এ তরজমায় من خير এ অংশটি অনুক্ত থেকে যায়। শায়খুলহিন্দ (রহ) তাঁর তরজমায় এটি উল্লেখ করেছেন। থানবী (রহ) প্রথম স্থানে উল্লেখ করেননি, দ্বিতীয় স্থানে করেছেন। এই পার্থক্যের কারণ বোধগম্য নয়।

(ঙ) يوف إليكم (তা পূর্ণরূপে ফিরিয়ে দেয়া হবে তোমাদের দিকে) إليكم এর কারণে يوف এর মাঝে يرجع অর্থটি অন্তর্ভুক্ত হয়েছে, আর অন্তর্ভুক্ত অর্থটিও তরজমায় বিবেচনায় আনা হয়েছে।

أسئلة :

١ - ما الفرق بينَ الحصرِ و الإحصار، و عَلامَ حمِل في هذه الاية و في قوله تعالى : فان احصرتم ·

٢ - اذكر مواضِعَ ربطِ جوابِ الشرط بالفاء ·

٣ - ما هي أراء المعربين في إعراب قوله من سيئاتكم ·

٤ - أعرب قوله : فنعما هي .

৫ - فنعما هي এর তরজমা পর্যালোচনা করো।

৬ - يوف إليكم এর তরজমা আলোচনা করো।

(٦) إن الدينَ عند الله الاسلام، و ما اختَلَفَ الذين أُوتو الكتٰب الا من بَعدِ ما جاءهم العلمُ بغيًا بينَهم، وَ مَن يكفُرْ بايٰتِ الله فان اللّٰه سريعُ الحِساب * فَإن حاجُّوك فقل اسلَمْتُ وجهِيَ لله و مَنِ اتَّبَعَنِ، وَ قل للذين اوتوا الكتٰب و الاميّٖن ء اسلَمتم، فَإن اسلَموا فَقَدِ اهتَدوا، وَ ان تولَّوا فانما عليكَ البَلاغ، و الله بَصير بالعباد * إنَّ الذين يكفُرون بايٰت الله و يقتُلون النبين بِغَيْرِ حَق، و يقتُلون الذين يَامرون بالقِسْطِ منَ الناس، فَبَشرهم بعَذاب اليم * اولئك الذين حَبِطت اعمالُهم في الدنيا وَ الاٰخرة وَ ما لهم من نٰصرين *

بيان اللغة

بغيا : انظر ٦/٢/٣)

الدين : (انظر ١/١/٣)

يكفر : الكُفْر في اللغة سَتر الشيءِ، و كُفْرُ النعمةِ و كفرانُها سَتْرُها بتركِ أداءِ شُكرِها، وَ أعظمُ الكفرِ جُحود الوَحْدانِيَّة أو الشريعةِ أو النبوة، أي : سَتْرُها، و الكفران في جحود النعمة أكثرُ استعمالًا، و الكفر في الدين أكثرُ، و الكفور فيهما جميعًا .

كَفَرَ الرجل : جَحَد الواحدانِيةَ أو الشريعَةَ أو النبوةَ أو ثلاثَتَها، قال تعالى : قال الذين كفروا للذينَ اٰمَنوا اتبِعوا سبيلَنا .

و قال تعالى : و من شكر فإنما يشكر لنفسه و من كفر فإن ربي غني كريم، و قال : لئن شكرتم لأزيدنكم و لئن كفرتم إن عذابي لشديد . . هذا من كفران النعمة .

و يقال كفر بالله و بنعمة الله و كفر نعمة الله
قال تعالى : كيف تكفرون بالله و كنتم أمواتا فأحياكم .
و قال : و بنعمة الله هم يكفرون، و قال : و اشكروا لي و لا تكفرون
و يُطلق الكفر على كل فعلٍ مذموم كما يُطلق الإيمان على كل فعلٍ محمود، قال تعالى في السحر : و ما كفر سليمان و لكن الشياطين كفروا يعلمون الناس السحر .
و يقال كفر فلان بالشيطان إذا آمن و خالَفَ الشيطانَ . قال تعالى : فمن يكفُرْ بالطاغوت و يؤمن بالله، و يُعَبَّر عن التبرِّي بالكفر، قال تعالى : و يوم القيٰمة يكفر بعضكم ببعض، أي يَتبرَّأ بعضُكم من بعضٍ .

بيـان الإعراب

إن الدين عند الله الإسلام : إن حرفُ نصبٍ و توكيدٍ مشبَّهٌ بالفعل، (و المطلوب منك أن تعين اسم إن و خبره) عند حال من الدين، أي : إن الدين مقبولا عند الله الإسلام، و العامل في الحال معنى التوكيد، و ليت و كأن و هاء التنبيه و إن في الحال، لأنها تضمنت معانيَ التمني و التشبيه و التنبيه و التوكيد . عاملة
و ما اختلف الذين اوتوا الكتب إلا ... : الواو استئنافية، و ما نافية، و إلا أداة حصر، لا محل لها من الإعراب، و من بعد يتعلق بـ : اختلف، و أعرِبْ أنت قوله : ما جاءهم العلم .
بغيا : أعرب هذه الكلمة مستعينا بما سَبَقَ (انظر ٦/٢/٣)
و من يكفر ..... : من اسم شرط جازم في محل رفع مبتدأ و يكفر فعل الشرط، و الجملة الاسمية جواب الشرط، و الشرطية خبر من .
و لك أن تقول : من اسم موصول و شرط، و الفعل صلة و شرط، و الموصول مع صلته مبتدأ، و الجملة الاسمية جواب شرط و خبر .
و بعضهم قالوا : جواب الشرط محذوف، أي : يُحاسِبْه الله، أو فالله محاسبه (عن قريب)، و جملة إن الله سريع الحساب تعليل لجواب الشرط المحذوف .

و من اتبعن : الواو للعطف أو للمعية، فالموصول مع صلته معطوف على ضمير الفاعل المتصل، أو مفعول معه ·

و جاز العطف دون أن يؤكد الضمير المرفوع المتصل بضمير منفصل لوجود الفاصل بين المعطوف و المعطوف عليه

و لك أن تجعل من مبتدأ و خبره محذوف، أي : و من اتبعني أسلم وجهه لله ·

أ أسلمتم : الجملة الاستفهامية في محل نصب مقول القول، و معنى الاستفهام الأمر ·

فبشرهم : الجملة في محل رفع خبر إن، و الفاء واقعة في جواب الموصول، لما فيه من رائحة الشرط ·

الترجمة

নিঃসন্দেহে (গ্রহণযোগ্য) দ্বীন আল্লাহর নিকট একমাত্র ইসলাম।

আর যাদেরকে দান করা হয়েছে কিতাব তারা তাদের কাছে (ইসলামের সত্যতার) ইলম আসার পরই (মুসলমানদের সাথে) মতবিরোধ করেছে, শুধু পরস্পর বিদ্বেষবশত। আর যারা অস্বীকার করবে আল্লাহর বিধানসমূহকে, (আল্লাহ অতিসত্বর তাদের হিসাব নেবেন।) কেননা আল্লাহ ত্বরিত হিসাব গ্রহণকারী।

তারপরো যদি 'তর্কবাজি' করে তারা আপনার সাথে তাহলে আপনি বলে দিন, আমি তো সমর্পণ করেছি নিজেকে আল্লাহর সমীপে (আমি) এবং যারা আমাকে অনুসরণ করেছে (তারা)।

আর আপনি বলুন যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তাদেরকে এবং (আরবের) উম্মীদেরকে, তোমরা কি (আল্লাহর সামনে) আত্মসমর্পণ করলে? অনন্তর যদি তারা আত্মসমর্পণ করে তাহলে তো তারা হিদায়াতপ্রাপ্ত হলো, আর যদি তারা (সত্য থেকে) সরে যায় (তাহলে আপনি বিষণ্ন হবেন না), কেননা আপনার দায়িত্ব তো শুধু পৌঁছে দেয়া। আর আল্লাহ তো বান্দাদের বিষয়ে সর্বদর্শী।

তো যারা অস্বীকার করে আল্লাহর বিধানসমূহকে এবং 'নাহক' কতল করে নবীদেরকে এবং কতল করে ঐ লোকদেরকে যারা ইনছাফের আদেশ করে 'খোশখবর' দিন আপনি তাদেরকে

যন্ত্রণাদায়ক আযাবের। ওরাই তারা যাদের সমস্ত আমল বরবাদ হয়েছে, দুনিয়াতে এবং আখেরাতে। আর নেই তাদের জন্য কোন সাহায্যকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إن الدين عند الله الإسلام (নিঃসন্দেহে [গ্রহণযোগ্য] দ্বীন আল্লাহর নিকট একমাত্র ইসলাম) বন্ধনীতে গ্রহণযোগ্য শব্দটি যুক্ত হয়েছে ব্যাকরণগত প্রয়োজনে।
'একমাত্র' শব্দটি যোগ করার কারণ এই যে, ইসম ও খবর উভয় অংশের لام التعريف 'হছর' এর অর্থ প্রদান করে।
কিতাবের তরজমাটি কোরআনী তারতীবের নিকটতর। পক্ষান্তরে 'নিঃসন্দেহে ইসলামই আল্লাহর নিকট একমাত্র দ্বীন' এ তরজমা কোরআনী তারতীবের বিপরীত।
অন্য তরজমায় রয়েছে- 'নিশ্চয় ইসলাম আল্লাহর একমাত্র ধর্ম' এ তরজমা ত্রুটিপূর্ণ।

(খ) الذين اوتوا الكتاب (যাদেরকে দান করা হয়েছে কিতাব) উভয় শায়খ এর তরজমা করেছেন 'আহলে কিতাব'। কোরআনের বিভিন্ন স্থানে أهل الكتاب ব্যবহার করা হয়েছে। কিন্তু এখানে এর পরিবর্তে الذين أوتوا الكتاب বলে এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, তাদেরকে কিতাব দান করা ছিলো আল্লাহর পক্ষ হতে বিরাট অনুগ্রহ, যার দাবী ছিলো ইখতিলাফ না করা। সুতরাং তরজমায় এই বিশেষ দিকটি বিবেচনায় থাকা সঙ্গত।

(গ) و من يكفر بايت الله (আর যারা অস্বীকার করবে আল্লাহর বিধানসমূহকে) প্রায় সকল বাংলা তরজমায় 'নিদর্শনাবলী' লেখা হয়েছে, যা ঠিক নয়। এখানে ايت الله এর অর্থ আল্লাহর বিধানসমূহ। শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) এ তরজমাই করেছেন।

(ঘ) فان الله سريع الحساب (কেননা আল্লাহ ত্বরিত হিসাব গ্রহণকারী) কিতাবের তরজমার ভিত্তি এই যে, এখানে جواب الشرط উহ্য রয়েছে। আর এ বাক্যটি হচ্ছে হেতুবাচক। এটিকে جواب الشرط বিবেচনা করেও তরজমা করা যায়।

যেমন সকল বাংলা মুতারজিম করেছেন। তারা লিখেছেন– (তো) আল্লাহ্ হিসাব গ্রহণে অত্যন্ত তৎপর।

'কল্পচিত্র'-এর দিক থেকে তৎপর শব্দটি আল্লাহর শানে অশোভনীয় মনে হয়।

(ঙ) فإن حاجوك فقل (তারপরো যদি 'তর্কবাজি' করে তারা আপনার সাথে তাহলে আপনি বলে দিন।) 'তর্কবাজি' ব্যবহার করা হয়েছে তাদের তর্কের অযৌক্তিকতা ও নিন্দনীয়তা প্রকাশ করার উদ্দেশ্যে। শুধু 'তর্ক করে' বললে, নিন্দনীয়তার প্রকাশ ঘটে না।

বলুন,– এর পরিবর্তে 'বলে দিন' লেখা হয়েছে সিদ্ধান্ত ও বক্তব্যের চূড়ান্ততা প্রকাশ করার জন্য।

(চ) بغير حق (নাহক) এর তরজমা 'অন্যায়ভাবে'-এর পরিবর্তে 'নাহক' অধিকতর উপযোগী। কারণ এতে গর্হিতভাবটি অধিক প্রকাশ পায়। তবে 'অন্যায়ভাবে' শব্দটি অগ্রাধিকার পেতে পারে এ দিক থেকে যে, তখন কোরআনী তারতীব রক্ষা করে এভাবে লেখা যায়– এবং কতল করে নবীদেরকে অন্যায়ভাবে।

(ছ) فبشرهم (তাহলে'খোশখবর' দিন আপনি তাদেরকে) সুসংবাদ– এর পরিবর্তে খোশখবর শব্দটি কটাক্ষের ভাব বেশী প্রকাশ করে, আর সেটাই এখানে উদ্দেশ্য।

(জ) حبطت أعمالهم (যাদের সমস্ত আমল বরবাদ হয়েছে)– 'সমস্ত' শব্দটি থানবী (রহ) যোগ করেছেন, কারণ এখানে সার্বিকতাই উদ্দেশ্য।

(ঝ) و ما لهم من نصرين (আর নেই তাদের জন্য কোন সাহায্যকারী) 'তাদের (জন্য) কোন সাহায্যকারী নেই' এর পরিবর্তে কিতাবের তরজমায় যে বিন্যাস গ্রহণ করা হয়েছে তাতে তাকীদ ও জোরালোভাব রয়েছে, যা আয়াতের من অব্যয়টি প্রকাশ করছে। তদুপরি তা কোরআনি তারতীবের অনুকূল।

أسئلة :

١ – ما معنى الكفرِ في اللغة و كيف يتحقق المعنى اللغويّ في كفرانِ النعمةِ ؟ اذكر ايةً تدل على أن الكفرَ يستعمَل في معنى التبري

٢ – إلام أضيف شِبهُ الفعل في قوله : سريع الحساب، و ما هو التركيب الأصلي هنا ؟

٣ – أعرب قوله : من الناس

٤ – اذكر أصل العبارة في قوله تعالى : و ما لهم من ناصرين ·

٥ – الذين أوتو الكتب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – بغير حق এর দু'টি তরজমার কোনটি কী কারণে অগ্রাধিকার পায়?

(٧) قُل يٰأهل الكتٰبِ تعالَوْا إلى كلمَةٍ سواءٍ بينَنا و بينَكم الا نعبدَ الا اللّٰهَ و لا نُشرك به شيئًا و لا يتخذَ بعضُنا بعضًا اَربابًا مِنْ دون اللّٰهِ، فان تَوَلَّوا فَقولوا اشهَدُوا بِانا مُسلمون * قل يٰاهلَ الكِتٰبِ لم تُحاجون في إبرهيمَ و ما انزلَتِ التورٰةُ و الانجيلُ اِلا من بَعده، اَفَلا تعقِلون * هانتم هؤلاء حاجَجْتُم فيما لَكم به عِلم فَلِمَ تحاجُّون فيما ليسَ لكم به عِلم، و الله يَعلم و انتم لا تَعلمون * ما كان ابرهيم يهودِيًّا و لا نَصرانيا وَلٰكن كان حَنيفا مسلما ، وَ ما كان مِنَ المشركين *اِنَّ اولٰى الناس بابرهيمَ لَلذين اتَّبعوه و هذا النبيُّ و الذين امنوا ، و الله وَلِيُّ المؤمنين *

بيان اللغة

حنيفا : الحَنَف هو مَيلٌ عن الضلالِ إلى الاستقامَة، و الحنيف هو المائل عنه الى ذلك · جمعه حنفاء · و قد ورد هذه اللفظ في القرآن في عَشَرة مواضِعَ، و جمعه في موضعين ·

ولي : الوَلاء يستعمل في القُرْبِ من حيثُ الدينَ و من حيث الصداقَةُ و النصرةُ · وَالاه : أحبه و نصره (موالاة و وِلاءً)

وَ الوَلِيُّ و المولٰى في معنى الفاعِل، أي : الموالِي و في معنى المفعول، أي : الموالٰى، يقال : ولي الله، ولا يقال : مولى الله، و يقال : الله

ولي المؤمنين و مَولاهم، و أَوْلىٰ به : أَحَقٌّ به، و أقرَبُ إليه .

سواء : اسم بمعنى الاستواء، أجرِيَ مَجْرىٰ المصادر، فلذلك لا يثنّى و لا يُجمَع، قالوا : هما سواء، و هم سَواء، أي : متساوان و متساوون، و يقال في المثنى : سَيّئان أو سَواءان، و جمعه على غير القياس سَواسٍ وَ سَواسِيَّة .

وَ إذا كانت سَواءٌ بعدَ همزة ألتسويَةِ فلا بدَّ مِنْ أَمْ، اسمين كانَتِ الكلِمتان أم فِعلَين، و إذا كان بعدَها فعلان بغير همزة التسوية عُطِف الثاني بأو، تقول : سواء عليَّ قمتَ أو قعدت، وإذا كان بعدها مصدران عطف الثاني بالواو و بأو، تقول : سواء على قيامك و قعودك، و قيامك أو قعودك .

بيان الإعراب

سواء : صفة، و بيننا متعلق بـ : سواء، لأنها أجريت مجرى المصادر .

ألا نعبد إلا الله : مكونة من أَنِ المصدريَّةِ و لا النافيَةِ، و المصدر المؤول بَدَلٌ من : كلمةٍ، أو هو خبر لمبتدأ محذوف، أي : هي ألا نعبد إلا الله

و لا يتخذ : الفعل منصوب بـ : أن عن طريق العطف، (و المطلوب منك أن تعين مفعولي هذا الفعل، و أن تعرب قوله : من دون الله)

في إبرهيم : أي : في دين إبراهيم، لأن المجادلَةَ إنما تكون في الأوصافِ لا في الذواتِ .

و ما أنزلت التورة و الانجيل إلا من بعده : الواو حالية، و إلا أداة حصر، و من بعده يتعلق بـ : أنزلت .

أ فلا تعقلون : الهمزة للاستفهام الإنكاري التعجبي، وهي داخلة على مقدَّر، هو المعطوف عليه بـ : فاء العطف، أي : ألا تتفكرون فلا تعقلون بُطلانَ قولِكم .

هانتم هولاء : الهاء للتنبيه، و أنتم مبتدأ، و هؤلاء خبره، و جملة حاججتم حالية أو مستانفة . و يجوز أن تكون هؤلاء بدلاً من المبتدأ أو مؤكِّدة له، و جملة حاججتم في محل رفع خبر المبتدأ .

فيما لكم به علم : علم مبتدأ مؤخر، و لكم متعلق بـ : خبر مقدم محذوف .

و به يتعلق بمحذوف هو حال مقدمة من علم، و كان في الأصل صفة علم، فلما تقدم أعرب حالا . و أصل العبارة : علم متعلق به ثابت لكم، و الجملة صلة الموصول

للذين اتبعوه : الموصول مع صلته خبر إن .

الترجمة

আপনি বলুন, হে আহলে কিতাব! এসো এমন এক বক্তব্যের দিকে যা আমাদের মাঝে এবং তোমাদের মাঝে সমান (স্বীকৃত); (তা এই) যে, ইবাদত করবো না আমরা আল্লাহ ছাড়া (কারো) এবং শরীক করবো না তার সাথে কোন কিছুকে, এবং বানাবে না আমাদের কেউ কাউকে রব আল্লাহ ছাড়া। অনন্তর যদি তারা (সত্য থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে আপনি বলে দিন, তোমরা সাক্ষ্য থেকো যে, আমরা তো আত্মসমর্পণকারী।

হে আহলে কিতাব! কেন তর্ক করো তোমরা ইবরাহীম সম্পর্কে, অথচ তাওরাত ও ইন্‌জীল তো নাযিল করাই হয়েছে তাঁর পরে, সুতরাং তোমরা কি বোঝবে না?

দেখো, তোমরা এই লোকেরা (ইতিপূর্বে) তো তর্ক করেছোই (এমন বিষয়ে) যে বিষয়ে তোমাদের কিঞ্চিৎ জানা ছিলো, এখন কেন (এমন বিষয়ে) তর্ক করছো যে বিষয়ে তোমাদের কোন জানা নেই, বস্তুত আল্লাহ জানেন, আর তোমরা জানো না।

ইবরাহীম না ছিলেন ইহুদী, না ছিলেন নাছারা; বরং তিনি ছিলেন 'হানীফ' [১] (অর্থাৎ) মুসলিম। আর ছিলেন না তিনি মুশরিকদের দলভুক্ত।

নিঃসন্দেহে মানুষের মাঝে ইবরাহীমের ঘনিষ্টতম (ও বিশিষ্টতম) তারাই যারা (তাঁর সময়ে) তাঁর অনুসরণ করেছিলো এবং এই নবী এবং যারা (এই নবীর প্রতি) ঈমান এনেছে। আর আল্লাহ মুমিনদের অভিভাবক।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تعالوا إلى كلمة (এসো এমন এক বক্তব্যের দিকে) كلمة এর অর্থ- শব্দ, বাক্য, বক্তব্য। এখানে সঙ্গত কারণেই তৃতীয়

১. বাতিলের প্রতি বিমুখ, হকের প্রতি অনুরাগী।

অর্থটি গ্রহণ করা হয়েছে।

দু'টি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'এসো সে কথায়' এটি মূলত কোন প্রসঙ্গে উপনীত হওয়ার অর্থে ব্যবহৃত হয়, 'কোন বিষয়ে অভিন্নমত গ্রহণ করা' অর্থে এটি ব্যবহৃত হয় না। তাছাড়া 'কথা'-এর চেয়ে বক্তব্য অধিকতর ভাবগম্ভীর।

তৃতীয় একটি তরজমায় আছে, 'এসো সেই বিষয়ের দিকে'– এটি উদ্দিষ্ট অর্থ প্রকাশ করছে বটে, তবে كلمة এর প্রতিশব্দরূপে 'বিষয়'-এর ব্যবহার পূর্ণ যথার্থ নয়।

سواء এর তরজমা কেউ করেছেন 'একই' কেউ করেছেন 'সমান', কেউ করেছেন অভিন্ন।

অভিন্ন শব্দটি সুন্দর, তবে তা سواء এর প্রতিশব্দ নয়, এর প্রতিশব্দ হলো সমান, তবে এখানে তা উদ্দিষ্ট অর্থে সুস্পষ্ট নয়। তাই কিতাবের তরজমায় বন্ধনীতে 'স্বীকৃত' শব্দটি যোগ করে উদ্দিষ্ট অর্থকে স্পষ্ট করা হয়েছে।

(খ) ألا نعبد إلا الله (তা এই) যে, ইবাদত করবো না আমরা আল্লাহ ছাড়া (কারো)– একটি বাংলা তরজমায় আছে, যেন ইবাদত না করি, যেন শরীক না করি, যেন গ্রহণ না করে। উভয় শায়খও এ তরজমা করেছেন, কিন্তু কথা হলো, এটি فعل النهي এর তরজমা, অথচ আয়াতে আছে أن ও مضارع বিনা প্রয়োজনে শব্দার্থ থেকে দূরে সরা সঙ্গত নয় বলে কিতাবে শাব্দিক তরজমা করা হয়েছে। যদিও উপরের তরজমা গ্রহণযোগ্য। একটি তরজমায় রয়েছে, করি না, এবং করে না– এটি ভুল। কারণ এখানে উভয় পক্ষের চলমান অভ্যাস সম্পর্কে বলা হয়নি, বরং উভয় পক্ষের আগামী করণীয় সম্পর্কে বলা হয়েছে।

(গ) و لا يتخذ بعضنا بعضا أربابا من دون الله (এবং বানাবে না আমাদের কেউ কাউকে রব আল্লাহ ছাড়া) একটি তরজমায় আছে– 'আমাদের একে অপরকে রব বানাবে না' এটা ঠিক নয়। কেননা তাতে এ ভুল ধারণার সম্ভাবনা রয়েছে যে, মুসলমান ও কিতাবীরা একে অপরকে 'রাব' রূপে গ্রহণ না করার প্রতিজ্ঞা করা হচ্ছে।

(ঘ) اشهدوا بأنا مسلمون (তোরা সাক্ষ্য থাকো যে, আমরা তো মুসলিম) এখানে أن ও اسمية থেকে যে তাকীদ অনুভূত হয় তা

প্রকাশ করা হয়েছে 'তো' দ্বারা। উভয় শায়খ تو দ্বারাই তাকীদ প্রকাশ করেছেন, একটি তরজমায় 'অবশ্যই' ব্যবহৃত হয়েছে। একটি তরজমায় রয়েছে, আমরা মুসলিম, তোমরা সাক্ষী থেকো– মনে হয় তিনি তাকীদের কোন শব্দ ব্যবহার না করে বাক্যের বিন্যাস থেকেই তাকীদ আনতে চেয়েছেন। কিন্তু কোরআনী তরতীবের খেলাফ করার কী প্রয়োজন ছিলো?

'সাক্ষী থাকো' এবং 'সাক্ষী থেকো' দুটোই গ্রহণযোগ্য।

(ঙ) و ما أنزلت التورة و الانجيل إلا من بعده (অথচ তাওরাত ও ইনজীল তো নাযিল করাই হয়েছে তাঁর পরে) أنزلت ও نزلت এক নয়। সকল বাংলা মুতারজিম نزلت এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন (সম্ভবত) শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর অনুকরণে। থানবী (রহ) أنزلت এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন। কিতাবের তরজমায় সেটারই অনুসরণ করা হয়েছে। কারণ نزلت এর মাঝে শুধু অবতরণের দিকটি আসে, পক্ষান্তরে أنزلت এর মাঝে অবতারণকারীর প্রতিও প্রচ্ছন্ন ইঙ্গিত রয়েছে।

(চ) ما ও إلا যোগে লব্ধ 'হাছর' ও সীমাবদ্ধায়নের অর্থটি থানবী (রহ) مگر ও نهيں সহযোগে প্রকাশ করেছেন। অর্থাৎ তিনি শাব্দিকতা অনুসরণ করেছেন। কিতাবের তরজমায় এবং সকল বাংলা তরজমায় শায়খুলহিন্দ (রহ) এর অনুকরণে نفي এর স্থলে إثبات এর শৈলী ব্যবহার করা হয়েছে।

তবে অন্যরা লিখেছেন, "অথচ তাওরাত ও ইনজিল তো তাঁর পরেই নাযিল হয়েছে।

'তাঁর পরেই' কথাটি দ্ব্যর্থবোধক। যথা (ক) তাঁর পরেই নাযিল হয়েছে তাঁর আগে নাযিল হয়নি।

(খ) তাঁর (মৃত্যুর) পরপর নাযিল হয়েছে।

এই দ্ব্যর্থতা এড়ানোর জন্য কিতাবের তরজমা হলো, 'অথচ তাওরাত ও ইনজিল তো নাজিল করাই হয়েছে তাঁর পরে'।

(ছ) حاججتم فيما لكم به علم (তর্ক করেছো যে বিষয়ে তোমাদের কিঞ্চিৎ জানা ছিলো) لم تحاجون فيما ليس لكم به علم (কেন তর্ক করছো যে বিষয়ে তোমাদের কোন জানা নেই) উভয় ক্ষেত্রে علم এর তরজমায় 'কিঞ্চিত' ও 'কোন' যোগ করা হয়েছে, এর কারণরূপে থানবী (রহ) বলেন–

إن النكرةَ تَخْتَصُّ في الإثبات و تَعُمُّ في النفي

(জ) ها انتم هؤلاء حاجـجتم (দেখো, তোমরা এই লোকেরা [ইতিপূর্বে] তো তর্ক করেছোই) 'দেখো' হচ্ছে সতর্কীকরণ অব্যয় ها এর তরজমা। এখানে هؤلاء কে أنتم থেকে বদল এবং حاججتم কে খবর ধরে তরজমা করা হয়েছে।

(ঝ) (অর্থাৎ) থানবী (রহ) বন্ধনী যুক্ত করে এদিকে ইঙ্গিত করেছেন যে, مسلما শব্দটি দ্বিতীয় খবর বা ছিফাত হলেও মূলতঃ তা حنيفا এর ব্যাখ্যা রূপে এসেছে।

أسئلة :

١ – اذكر ما تعرف عن كلمَةٍ سواءٍ ·

٢ – ما سببُ اعتبارِ حذفِ المضاف في قوله : في إبراهيم ؟

٣ – علامَ عُطف قوله : لا تعقلون ؟

٤ – اذكر خَيْرَ الإعرابَيْنِ في قوله تعالى : "ها أنتم هولاء حاجـجتم "

٥ – 'আমরা মুসলিম, তোমরা সাক্ষী থেকো' এ তরজমা সম্পর্কে মন্তব্য করো

٦ – إلى كلمةٍ سواءٍ এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) وَدَّتْ طائِفَةٌ من أَهلِ الكتٰب لو يُضِلونكم، و ما يُضِلون الا انفُسَهم و ما يَشعرون * ياهلَ الكتٰبِ لم تكفُرون بايٰت الله و انتُم تَشْهَدون * يٰاهلَ الكتٰبِ لم تَلبِسُون الحقَّ بالباطِلِ و تكتُمون الحقَّ و انتم تَعلمون * و قالت طائِفَة من اهلِ الكتٰبِ اٰمِنوا بالذي اُنزل على الذين اٰمَنوا وجهَ النهار و اكفُروا اٰخِرَه لعلهم يَرجعون *

بيان اللغة

وجه النهار : أَوَّلَ النهار و صَدْرَ النهارِ، و أصل الوجهِ الجارِحَةُ، و لكون الوجه أولَ ما يُستَقبَل مِنْ بَدَن الإنسانِ، استعمِل في مستقبَلِ كلِّ شيءٍ و في أَشْرفِه فقيل : وجهُ النهارِ، وجهُ القومِ ·

و يعبر عن الذات بالوجه، قال تعالى : و يبقى وجه ربك، و قال : كل شيء هالك إلا وجهَه ·

ود : تستعمل وَدَّ بمعنى تمَنّى، فيستعمَل معَها لو، و إذا كانت بمعنى أَحَبَّ لا يجوز إدخالُ لو فيها أبدًا

بيان الإعراب

لو يُضلونكم : لو مصدرية، أي : تمَنَّت إضلا لَكم

و ما يضلون إلا أنفسَهم : الواو حالية، و الجملة في محل نصب حال من فاعِل يُضلون، و ما يَشعرون عَطفٌ على الجملة السابقة ·

وجه النهار : ظرف زمان متعلق بـ :'امِنوا

لعلهم يرجعون : الجملة تعليلية لا محل لها من الإعراب، و قيل : جملة الرجاء هذه في مَحل نصبٍ على الحال، أي : راجين رُجوعَهم عن دينهم

الترجمة

অবশ্যই মনেপ্রাণে চায় আহলে কিতাবের একটি দল যে, যদি গোমরাহ করতে পারে তারা তোমাদেরকে! অথচ তারা গোমরাহ করতে পারে না নিজেদেরকে ছাড়া (কাউকে), কিন্তু তারা (তা) বোঝে না। হে আহলে কিতাব! কেন অস্বীকার করো তোমরা আল্লাহর আয়াতসমূহকে[১] অথচ (একান্ত মজলিসে মৌখিকভাবে) স্বীকার করো তোমরা (তা)।

হে আহলে কিতাব! কেন মিশিয়ে ফেলো তোমরা হককে বাতিলের সাথে এবং গোপন করে ফেলো হককে, অথচ তোমরা (তা) জানো।

আহলে কিতাবের একটি দল (শলাপরামর্শরূপে একে অন্যকে) বলেছে, যারা ঈমান এনেছে, তাদের উপর যা নাযিল করা হয়েছে, তোমরা তার উপর ঈমান নিয়ে এসো দিবসের মুখে (দিনের প্রথম ভাগে), আর (তা) অস্বীকার করে বসো দিবসের শেষ ভাগে। হয়ত (এ কৌশলে বিভ্রান্ত হয়ে) তারা (তাদের দ্বীন থেকে) ফিরে যাবে।

১. ইনজিলে ও তাওরাতে মুহাম্মদ ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের নবুওয়াতের সত্যতা সম্পর্কে বর্ণিত আয়াতসমূহের অস্বীকৃতির প্রতি বিশেষভাবে ইঙ্গিত করা উদ্দেশ্য।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ود এটি مضارع এর স্থলে ব্যবহৃত হয়েছে নিশ্চিতি প্রকাশ করার জন্য, কিতাবের তরজমায় সেটা আলাদাভাবে বিবেচনা করা হয়েছে।

ود এখানে তীব্র আকাঙ্ক্ষা বুঝিয়েছে, তাই 'মনেপ্রাণে' কথাটি যোগ করা হয়েছে। থানবী (রহ) লিখেছেন- دل سے چاهتے هيں বিকল্প তরজমা- আহলে কিতাব তোমাদেরকে গোমরাহ করার আকাঙ্ক্ষা পোষণ করে।

(খ) و أنتم تشهدون (অথচ তোমরা [তা] স্বীকার করো) تشهدون শব্দটি স্বীকার করা অর্থেও ব্যবহৃত হয়, এখানে সেটাই উদ্দেশ্য, সাক্ষ্য দেয়া উদ্দেশ্য নয়; কারণ সাক্ষ্য দেয়া হয় প্রকাশ্য মজলিসে। থানবী (রহ) বিষয়টি পরিষ্কার করেছেন।

(গ) لم تَلبِسون (কেন মিশিয়ে ফেলো) و تكتُمون (এবং গোপন করে ফেলো) মিশ্রিত করো এবং গোপন করো-এর পরিবর্তে এ তরজমা করা হয়েছে তাদের অপতৎপরতার ভাবটা প্রকাশ করার জন্য; যা পূর্বাপর থেকে মাফহূম হয়। শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমায় এই তৎপরতামূলক ভাবটি রক্ষিত হয় নি, থানবী (রহ) তা রক্ষা করেছেন।

(ঘ) آمِنوا بالذي أنزل على الذين'امَنوا وجهَ النهار (যারা ঈমান এনেছে, তাদের উপর যা নাযিল করা হয়েছে, তোমরা তার উপর ঈমান নিয়ে এসো দিবসের মুখে) বিকল্প তরজমা- মুমিনদের উপর অবতীর্ণ কিতাবের প্রতি। দিনের প্রথম ভাগে তোমরা (মৌখিক) ঈমান আনো

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ "الوجه"

٢ - أعرب قوله : من أهل الكتب

٣ - ليس الوجهُ اسمَ ظرفٍ فَمِمَّ أخذَ الظرفيةَ ؟

٤ - أعرب قوله : " لعلهم يرجعون "

٥ - ودت طائفة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - 'কেন মিশিয়ে ফেলো' এ তরজমার উদ্দেশ্য বলো

(٩) فَمن تولّٰى بعدَ ذلك فأولئك هم الفٰسِقون * أفَغيرَ دينِ اللّٰه
يَبْغون و له أسْلَم مَنْ في السمٰوٰت و الارضِ طَوْعًا و كَرْهًا و
اليه يُرجَعون * قل امنا بالله و ما أُنزِل عَلينا و ما أُنزِل على
ابرهيمَ و اسمٰعيل و اسحٰق و يعقوبَ وَ الاَسْباطِ و ما أُوتي
موسٰى و عِيسٰى و النبيُّون من ربهم، لا نُفرق بينَ أحدٍ منهم و
نحن له مُسلِمون * و من يبتَغِ غيرَ الاسلام دينًا فلن يُقبَل
منه، و هو في الاٰخِرة مِنَ الخٰسرين * كيف يَهدي الله قومًا
كَفَروا بعدَ ايمانِهم و شَهِدوا أنَّ الرسولَ حَقٌّ و جاءهم
البَينٰت، وَ اللّٰه لا يَهدي القومَ الظّٰلمين * اولئك جَزاؤُهم ان
عليهم لعنةَ اللّٰهِ و الملٰئكَةِ و الناس أجمعين * خٰلدين فيها،
لا يُخفَّف عنهم العَذابُ و لاهم يُنظرون * إلا الذين تابوا من
بَعدِ ذلك و أصْلَحوا، فَانَّ الله غَفور رحيم *

بيان اللغة

يبغون : بَغٰى شيئًا (ض، بُغْيَةً) : طلَبَه و اجتَهَد في طَلَبِه، يقال : بَغيتُ لك الأمرَ و بغيتُك الأمرَ : طلبتُه لك، قال تعالى : يَبغونكم الفتنةَ .

و في معنى الطلَب يكثُر استعمال ابتغٰى، لا بغٰى
قال تعالى : يَبتغون فضلًا من الله وَ رِضوانًا، و هذا في أمرٍ محمودٍ،
و قال تعالى : لقد ابتغوا الفتنةَ من قبلُ، و هذا في أمر مذموم .
بغى (ض، بَغْيًا) : اعتَدٰى، قال تعالى : فإن بغت إحدٰهما على الأُخرٰى .
و بغى : تَسلَّط و ظَلَم، قال تعالى : و لو بَسط الله الرزقَ لعباده لَبَغَوا في الأرض . بَغٰى على الإمام : خرجَ عن طاعَتِه

طوعا و كرها : الطوع الانقياد عن رضًى، و الكَرْه و الكُره الانقياد عن غيرِ رضًى

طاع (ن، طَوْعا) انقاد، طاعَه و له بمعنى أطاعَه

كره الشيء (س، كَرْهًا، كُرها، كَرَاهَةً، كراهِيَةً) : خلافُ أحبه، عَافَه (س) অপছন্দ করলো, ঘৃণা করলো

فالرجل كاره، و الشيء مكروه

و الإكراه : حملُ الإنسان على ما يكرَهه ؟ বাধ্য করা

كَرَّهَ إليه الأمرَ: صَيَّره كريهًا إليه বিষয়টিকে তার কাছে ঘৃণ্য করলো

بيان الإعراب

أ فغير دين الله يبغون : همزة الاستفهام هنا للإنكار، و الفاء زائدة

و يجوز أن يكون الفاء حرفَ عطفٍ عُطف به الجملة التاليةُ على الجملة السابقةِ، و المعنى : فأولئك هم الفاسِقون فغيرَ دين الله يَبغُون، ثم توسَّطتِ الهمزةُ بينهما .

و يجوز أن يكون العطفُ على محذوفٍ، أي : أيَتولَّون عَنِ الحق فَيبغون غيرَ دين اللّهِ

و له أسلم : الواو حالية و الجملة بعدها في محل نصب حال من فاعل يبغون .

طوعا وَ كَرْهًا : أي : طائِعين وَ كارهين، أو هما مفعولان مطلقان لفعلَين محذوفَين .

فاولئك هم الفاسقون : الجملة جواب الشرط .

وهم ضميرٌ فصلٍ لا محل له من الإعراب، و ضميرُ الفصلِ ما يتوسَّط بينَ المبتدَإ و الخبر المعرَّفِ باللام، ليُعلمَ أن ما بعده خبرٌ و ليس نعتًا، و هو يدل على نوعٍ منَ التوكيد للحُكم .

و يجوز أن يكون هم الفاسقون مبتدأ و خبرا، و الجملة خبر أولئك .

ما أُنزل علينا : الموصول معطوف على لفظ الجلالة .

ما أنزل على إبرهيم : هذا الموصول معطوف على الموصول الأول .

إسمعيل و اسحق و يعقوب و الأسباط أسماءٌ معطوفة على إبرهيمَ بحُروفِ العَطْفِ .

و ما أوتيَ موسى و عيسى و النبيُّون من ربهم : هذا الموصول معطوف على الموصول السابق .

غيرَ الإسلام دينًا : المركب الإضافي مفعول به لـ : يبتغ، و دينا تمييز، و يجوز أن يكون المركب حالا من دينا لأنه في الأصل نعتا لـ : دينا، ثم تقدم عليه، و دينا على هذا الوجه مفعول به .

و هو في الآخرة من الخسرين : عُطِفت هذه الجملة على جواب الشرط .

كيف يهدي الله : اسم الاستفهام هنا بمعنى النفي، و قد يكون للتعجب و الاستنكار، و هو حال من فاعل يهدي

ويقع كيف خبرًا عن مبتدإٍ، نحو : كيف أنت ؟ أو خبرًا مقدما لـ : كان، نحو : كيف كنت ؟

و في قولك : كيف بخالد، الباء حرف جر زائد، و خالد مجرور لفظا مرفوع محلا على الابتداء، و كيف في محل رفع خبر مقدم

و قد يكون في محل نصب مفعولا مطلقا، نائبا عن المصدر كما في قوله تعالى : الم تر كيف فعل ربك بأصحب الفيل ؟ أي : فعل بهم فعلا عظيما .

و يكون حالا، نحو : كيف مضى أخوك ؟ أي : مضى أخوك مُتكيِّفاً بأيَّةِ كيفيَّةٍ ؟

و شهدوا : الجملة معطوفة على جملة كفروا، لأن الواوَ تدل على الجمع و لا يقتضي الترتيبَ، فالمعنى : كيف يَهدي الله قومًا شهدوا أن الرسولَ حقٌّ ثم كفَروا بعدَ إيمانهم ؟

وَ يصِحُّ العطفُ على معنى الفعلِ في إيمانهم، لِأَن معناه : كيفَ يَهدي اللّٰه قومًا كفَروا بعدَ أنْ آمَنوا بالله ثم شَهدوا أن الرسولَ حق .

و يصح أن تكون الجملة حالا بتقدير قد قبلها، أي : و قد شهدوا .

و أن الرسول حق، مصدر مؤول منصوب بنزع الخافض، أي : بأن الرسول حق، فهو متعلق بشهدوا .

و جاءهم البيِّنت : عَطفٌ على شهدوا

أولئك جزاؤهم أن عليهم لعنةَ الله : اولئك مبتدأ أول، و جزاؤهم مبتدأ ثانٍ، و المصدر المؤوّل خبرٌ جزاؤهم، و الجملة الإسمية خبرٌ أولئك ·

خالدين فيها : الضمير يعود إلى اللعنة أو إلي النار التي تدل عليها اللعنة، و خالدين حال من الضمير في عليهم

إلا : أداة استثناء، و الذين في محل نصب مستثنى من أولئك

الترجمة

আর যারা (সত্য থেকে) মুখ ফিরিয়ে নেবে এরপর, ওরাই হলো (পূর্ণরূপে) হুকুম অমান্যকারী। (তাহলে) তারা কি আল্লাহর দ্বীন ছাড়া অন্য কিছুরই সন্ধান করছে, অথচ তাঁরই কাছে আত্মসমর্পণ করেছে যারা আসমানে এবং যমীনে আছে (কেউ) স্বেচ্ছায় এবং (কেউ) অনিচ্ছায়, আর তাঁরই কাছে প্রত্যাবর্তন করানো হবে তাদেরকে।

আপনি বলে দিন, আমরা (তো) ঈমান এনেছি আল্লাহর প্রতি এবং তার প্রতি যা আমাদের উপর নাযিল করা হয়েছে এবং যা নাযিল করা হয়েছে ইবরাহীমের উপর এবং ইসমাঈলের উপর এবং ইসহাকের উপর এবং ইয়াকূবের উপর এবং তাঁর বংশধরদের উপর এবং যা দান করা হয়েছে মুসাকে এবং ঈসাকে এবং (অন্যান্য) নবীদেরকে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে। আমরা পার্থক্য করি না তাদের মধ্য হতে কারো মাঝে, আর আমরা তো তাঁরই অনুগত।

আর যে সন্ধান করবে ইসলাম ছাড়া অন্য কোন দ্বীন তা কিছুতেই গ্রহণ করা হবে না তার কাছ থেকে, বরং সে আখিরাতে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

কীভাবে হেদায়াত দান করবেন আল্লাহ এমন সম্প্রদায়কে যারা কুফুরি করেছে নিজেদের ঈমান আনার পর এবং এ সাক্ষ্য দানের পর যে, রাসূল সত্য এবং তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণাদি আসার পর। আল্লাহ তো হেদায়াত দান করেন না এ ধরনের যালিম সম্প্রদায়কে। ওরা, তাদের প্রতিফল এই যে, তাদের উপর রয়েছে লা'নত আল্লাহর এবং ফিরিশতাদের এবং মানুষের সকলেরই, এমন অবস্থায় যে তারা তাতে চিরকাল থাকবে। হালকা করা হবে না তাদের থেকে আযাব, এবং তাদেরকে মুহলতও দেয়া হবে না, তবে তাদেরকে যারা এরপর তাওবা করেছে এবং (নিজেদেরকে) সংশোধন করেছে। কারণ আল্লাহ অতিক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) اولئك هم الفاسقون (ওরাই হলো [পূর্ণরূপে] হুকুম অমান্যকারী) فسق এর মূল অর্থ আনুগত্য ত্যাগ করা (আংশিক বা সার্বিক), ব্যবহৃত অর্থ পাপাচার করা। এখানে মূল অর্থ অনুসারে তরজমা করা হয়েছে।
থানবী (রহ) বন্ধনীতে 'পূর্ণ' শব্দটি যোগ করার যুক্তি দিয়ে বলেছেন, مطلق দ্বারা এখানে كامل উদ্দেশ্য। সুতরাং الفاسقون কে الكافرون দ্বারা ব্যাখ্যা করা যায়। স্থানের বিশিষ্টতা এ অর্থকেই দাবী করে, সাধারণ বা আংশিক অবাধ্যতা নয়।

(খ) له أسلم (তাঁরই কাছে আত্মসমর্পণ করেছে) و إليه يرجعون (আর তাঁরই কাছে প্রত্যাবর্তন করানো হবে তাদেরকে) له এর অগ্রবর্তিতা আল্লাহর প্রতি আত্মসমর্পনের বিশিষ্টতা দাবী করে, যেমন إليه এর অগ্রবর্তিতা আল্লাহর দিকে প্রত্যাবর্তনের বিশিষ্টতা দাবী করে, কিন্তু কোন কোন বাংলা তরজমায় দ্বিতীয় বিশিষ্টতাকে বিবেচনায় আনা হয়েছে, প্রথমটিকে আনা হয়নি। অথচ উভয় বিশিষ্টতাই সমান গুরুত্বপূর্ণ।

(গ) أفغير دين الله يبغون ([তাহলে] তারা কি আল্লাহর দ্বীন ছাড়া অন্য কিছুরই সন্ধান করছে) প্রায় সকলেই এরকম তরজমা করেছেন– তারা কি চায় আল্লাহর দ্বীন ছাড়া অন্য দ্বীন!
আয়াতে دين শব্দটি একবার এসেছে, তরজমায় শব্দটিকে দুবার আনা সঙ্গত মনে হয় না।
কিতাবের তরজমায় দু'টি বিষয় লক্ষ্য করা হয়েছে।

(ক) همزة الاستفهام এর উদ্দেশ্য إنكار কে ফুটিয়ে তোলা– এ জন্য বন্ধনীতে 'তাহলে' যোগ করা হয়েছে। এটি ف এর তরজমা নয়, কারণ তা زائدة

(খ) مفعول به এর অগ্রবর্তিতার উদ্দেশ্যকে প্রকাশ করা। সে জন্য 'অন্য কিছুর'-এর সঙ্গে 'ই' যোগ করা হয়েছে।

(ঘ) এবং তার বংশধরদের উপর– এখানে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, الاسباط এর ال হচ্ছে مضاف إليه পরিবর্ত।

(ঙ) و الله لا يهدي القوم الظالمين (আর আল্লাহ তো হেদায়াত দান করেন না এ ধরনের যালিম সম্প্রদায়কে) তরজমায় 'এ ধরনের' শব্দটি যোগ করার কারণ হিসাবে থানবী (রহ)

বলেছেন, এখানে ال হচ্ছে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক অর্থাৎ এখানে উপরোক্ত দোষে দুষ্টবিশেষ যালিমরা উদ্দেশ্য।
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমায় ال কে جنس এর অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে। দুই দৃষ্টিকোণ থেকে দু'টোই গ্রহণযোগ্য।

(চ) جزاء এর উর্দূ তরজমায় سزا এসেছে। এর অনুকরণে কোন কোন বাংলা তরজমায় 'সাজা' ব্যবহার করা হয়েছে। যারা প্রতিফল ব্যবহার করেছেন কিতাবে তাদের অনুসরণ করা হয়েছে

(ছ) و الملئكة و الناس أجمعين (ফিরেশতাদের এবং মানুষের সকলেরই) 'ফিরেশতাদের এবং সকল মানুষের' এ তরজমা ভুল, কারণ أجمعين হচ্ছে الملائكة ও الناس উভয়ের তাকীদ।

(জ) لا يخفف عنهم العذاب و لا هم ينظرون (হালকা করা হবে না তাদের থেকে আযাব এবং তাদেরকে মুহলতও দেয়া হবে না) আযাব, হালকা ও মুহলত, এ শব্দগুলোর মাঝে সমশ্রেণীতা রক্ষা করা হয়েছে। এভাবেও তরজমা হতে পারে– তাদের থেকে শাস্তি লঘু করা হবে না, এবং তাদেরকে অবকাশ দেয়া হবে না।

أسئلة :

١ – اشرح معنى بغى و ابتغى
٢ – أعرب قوله تعالى : أ فغير دين الله يبغون .
٣ – أعرب كلمة دينا .
٤ – اذكر مواضِعَ إعرابِ كيفَ
٥ – أولئك هم الفاسقون এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – أ فغير دين الله يبغون তারা কি চায় আল্লাহর দ্বীন ছাড়া অন্য কোন দ্বীন– এ তরজমার ত্রুটি আলোচনা করো

(١٠) إن الذين كفَروا بعد ايمانِهم ثم ازدادوا كُفْرًا لن تُقبَلَ توبتُهم، وَ اولئك هم الضالون *إن الذين كفَروا و ماتوا وهم كُفار فلن يُقبَلَ من اَحدِهم ملءُ الارض ذَهَبًا و لو افتدى به، اولئك لهم عَذاب اليم، و ما لهم من نّصرين *

بيان اللغة

ازدادوا : ازدادَ مطاوع زادَ شيئًا وَ زادَ : كَثُر و نَما و زادَ شيئًا : جعلَه يَزيد، و زَدا فلانًا شيئًا : أعطاه إياه زيادةً .
ازدادَ : كَثُرَ
ملء : مِقدارُ ما يَأخذُه الإناء المتَلِئُ، يقال : أَعطِني مِلْأَ الإناءِ، أي : أعطني مقدارَ ما يَسَعه هذا الإناءُ .
لوْ افتدى به : (أي : لو قَدَّم مِلْءَ الأرضِ كَفِديَةٍ) فِدىً و فِداءٌ، معناهما حفظ الإنسان عن شيءٍ يكرَهه بِبَذْلِ شيءٍ يُحِبه
فَداه (ض، فِدًى، فِداءً) استنقذه بمالٍ أو غيرِه فَخَلَّصه مما كان فيه
মাল বা অন্য কিছুর বিনিময়ে তাকে উদ্ধার করলো।
يقال : فديتُه بمالٍ و فديتُه بِنَفْسِي
و الفِدْيَةُ و الفِداء : ما يُقدَّم من مالٍ و نحوِه لتخليص أحدٍ، ما يقدَّم لله جزاءً لتقصيرٍ في عبادَةٍ .
افتدى : قدم الفديَةَ عن نفسِه
افتدى بِشَيْءٍ কোন কিছুকে মুক্তিপণরূপে দিলো

بيان الإعراب

كفرا : تمييزٌ محولٌ عن الفاعِل، أي أزداد كفرُهم،
و أولئك هم الضالون الواو استئنافية أو عاطفة، و قيل هي لِلحال، و المعنى : لن تُقبَلَ توبتُهم من الذنوبِ في حالٍ أنَّهم ضالون .
فلن يقبلَ : الفاء رابِطَة، لأن الموصولَ فيه رائحَةُ الشرطِ، و إنما دخلَتِ الفاء هنا و لم تدخُلْ في قوله تعالى : لن تُقبلَ توبتُهم، لأن الفاء تدل على أن الجزاء ثابت بالقيد السابق، و هنا جاء القيد بقوله تعالى : و ماتوا و هم كفار، و لم يذكر هذا القيد هناك .
ذهبا : تميز من نسبة الفعل و نائب الفاعل

الترجمة

যারা (স্থায়ীভাবে) কুফুরি করেছে তাদের ঈমান গ্রহণের পর, তারপর তাদের কুফুরি বেড়েই চলেছে, নিঃসন্দেহে কিছুতেই কবুল

করা হবে না তাদের (অন্যান্য) তাওবা। আর ওরাই হলো গোমরাহ।
যারা কুফুরি করেছে এবং কাফির অবস্থায় মরেছে, নিঃসন্দেহে কিছুতেই কবুল করা হবে না তাদের কারো কাছ থেকে যমীনভর সোনা, যদিও সে তা বিনিময়রূপে দিতে চায়। ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব। আর তাদের জন্য কোন সাহায্যকারীই থাকবে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) (স্থায়ীভাবে) বন্ধনী দ্বারা এ কথা বোঝানো হয়েছে যে, কুফুরি বৃদ্ধি পাওয়ার অর্থ হলো মৃত্যু পর্যন্ত কুফুরির উপর স্থিরথাকা, এবং মৃত্যুর সময় কুফুরি থেকে তাওবা না করা।
(খ) 'অন্যান্য' এই বন্ধনী দ্বারা বোঝানো হয়েছে যে, এখানে তাওবা দ্বারা উদ্দেশ্য হলো কুফুরির উপর বহাল থেকে সাধারণ গোনাহ থেকে তাওবা। সুতরাং পূর্ববর্তী আয়াতে যে তাওবা কবুল করার কথা বলা হয়েছে তার সাথে এর কোন বিরোধ থাকলো না। বলাবাহুল্য যে, এ বন্ধনী ছাড়া উদ্দেশ্য স্পষ্ট হয় না, তাই থানবী (রহ) এ বন্ধনী সংযোজন করেছেন।
(গ) 'মরেছে' তাচ্ছিল্য প্রকাশের জন্য এ শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – ما معنى مِلْءُ
٢ – أعرب قوله كفرًا
٣ – عرف "هم" في قوله : تعالى : اولئك هم الضالون
٤ – أعرب قوله : ذهبا
٥ – স্থায়ীভাবে – এ বন্ধনী দ্বারা কী বোঝানো হয়েছে ?
٦ – ماتوا এর তরজমা 'মরেছে' করার উদ্দেশ্যে কী ?

(١) يٰأيها الذين امنوا لا تتخذوا بطانة من دونكم لا يألونكم خبالا، وَدُّوا ما عَنِتم، قد بَدتِ البَغضاء من أفواههم، و ما تُخفي صُدورهم أكبرُ، قد بيّنّا لكم الايٰتِ ان كنتم تعقِلون * هانتم أُولاءِ تحبونهم و لا يُحِبونكم وَ تؤمنون بالكتٰب كلِّه، وَ إذا لقوكم قالوا امنا، وَ اذا خَلَوا عَضّوا عَليكم الانامِلَ مِنَ الغيظِ، قل موتوا بِغَيظكم، ان الله عليم بِذات الصُّدور * إن تَمْسَسكم حَسَنة تسؤهم، وَ ان تُصِبكم سَيئة يفرَحوا بها، وَ إن تَصبروا وَ تتقوا لا يضُركم كَيدهم شَيئا، إن الله بِما يعمَلون مُحيط *

بيان اللغة

بِطانة : جمعها بَطائِنُ، و هي ما يُبَطَّن به الثوبُ، و هي خِلاف الظِّهارَة

কাপড়ের যে অংশ বা যে পাল্লা ভিতরের দিকে রাখা হয়, এর বিপরীত হলো ظهارة

و تستعمَل البِطانَة للصديق الحميم الذي يكشِف له الرجلُ عن أسرارِه

শব্দটিকে অন্তরঙ্গ বন্ধুর জন্য ধার করে ব্যবহার করা হয়

أبطنَ الثوبَ و بطَّنه   কাপড়ের ভিতর-পাল্লা দিলো।

أبطنَ فلانًا : قرَّبه و كشَف له عن أسراره

خَبال : فَساد و هَلاك و نُقصان   অনিষ্ট, ক্ষতি, বরবাদি

خَبَل فلانا (ض، خَبْلًا) أفسد عقلَه، يقال : خبله الحزنُ و الدهرُ وَ الشيطان . خَبِل (س، خَبَلا و خَبالا) فسد عقلُه و جُنَّ .

لا يَألونكم خَبالا : أي لا يَدَعُون جُهدًا لِجَلْبِ الفَساد لكم .

عَنِتم : عَنِت فلان، (س، عَنَتا) : وقع في مَشقة و شِدَّة

أعنَته : أوقَعه في مَشقة وشِدة، قال تعالى : و لو شاء الله لَأَعْنتكم

العَنَت : الخطأ، العِناد

خلوا : (انظر إلى ٢/١/٣) ·

عضوا : عَضَّه و به و عليه (س، عضا) : أمسكه بأسنانه

দাঁত দিয়ে তা কামড়ালো বা কামড়ে ধরলো।

عَض عليه : لَزِمه و تمسَّك به তা আকড়ে ধরলো و في الحديث: عليكم بِسُنتي و سنة الخلفاء من بَعدى، عَضُّوا عليها بالنَّواجذِ ·

عضَّ عليه يدَه : ندم، و عُبِّر به عن الندم، لأن الناس يفعلون ذلك عندَ الندم ·

الغَيظ : الغضب و السَّخَط ক্রোধ ও প্রচণ্ড অসন্তোষ

غاظه : (ض، غَيْظا) و أغاظه : أغضبه أشدَّ الغضَبِ

اغتاظ : مُطاوِعُ غاظه ক্রুদ্ধ হলো (غاظه এর অনুবর্তী)

تَمْسَسْكم : مَسَّ (س، مَسًّا) (انظر إلى ٧/٣/٣)

تَسُؤْهم : ساءَ فلانا (ن، سُوءًا، سَوْءًا، مَساءَةً) : فَعَل به ما يَكرهه

তার সাথে মন্দ আচরণ করলো।

ساءه شيءٌ : أحزنه، ما سَرَّه কোন কিছু তার কাছে খারাপ লাগলো

ساء شيءٌ : قَبُح، ساءت سيرتُه

ساءَ به ظَنًّا : لم يَحسُن فيه ظَنُّه তার সম্পর্কে মন্দ ধারণা করলো

أساء الرجلُ : أتى بِسَيِّئٍ، أي : فعل فعلا قبيحا

أساء الشيءَ : لم يُحسن عملَه কোন কিছুর অসদ্ব্যবহার করলো

أساء إليه (وبه) : عامَلَه معاملة سيئةً তার প্রতি মন্দ আচরণ করলো

بيان الإعراب

يا أيها الذين : يا أداة نداء، و أيُّ : منادىً مبنى على الضم في محل نصب، و ها حرف تنبيه، الذين : اسم موصول مبني على الفتح في محل نصب بدل من:أيُّ ·

بطانة : مفعول به، و مِن دونِكم يتعلق بنعتٍ محذوف لـ : بطانةً، أي : معدودةً من دونكم، أو يتعلق بـ : تتخذوا ·

لا يألونكم : الجملة مستأنفة أو هي صفة ثانية لـ : بطانةً .

ألا في الأمرِ : قَصَّر فيه، فهو لازم، ثم استعمَلوا متعدِّياً إلى مفعولين، فقالوا : لا آلوكَ نُصحا ، على تضمين الفعل معنٰى لا أنقُصُك .

ف : كُم مفعولٌ به أولٌ، و خَبالاً مفعول به ثانٍ .

(শাব্দিক অর্থ– তোমাদেরকে কম করে দেবে না ফাসাদ, অর্থাৎ তোমাদেরকে পূর্ণরূপে ফাসাদ দান করবে।)

و إذ كان الفعل لازمًا فضميرُ الخطاب في يألونكم منصوب على نزع الخافض، و خبالا منصوب كذلك أيضا ، أي : لا يألون لكم في الخبال

(শাব্দিক অর্থ– তোমাদের জন্য ফাসাদের ক্ষেত্রে ক্রটি করবে না।)

ما عنتم : أي : وَدُّوا عَنَتَكم، أي : مشقتكم .

من أفواههم : يتعلق بـ : بدت، أو هو متعلق بحال محذوفة، أي خارجةً من أفواههم .

و ماتُخفي : الواو للحال أو للاستئناف، فالجملة حالية أو استئنافية . و ما الموصولة مع صلتها مبتدأ، و أكبر خبر .

إن كنتم تعقلون : جواب الشرط محذوف، أي فَلَا تتخذوهم بطانةً .

هأنتم : ها حرف تنبيهٍ و أنتم مبتدأ وَ أولاءِ خبر، و جملة تحبونهم حالية أو مستأنفة .

و يجوز أن يكون أولاءِ منادىً، أي : يا هؤلاءِ، فتكون الجملة خبرًا

ولا يحبونكم : الجملة معطوفة على السابقة، و جملة تؤمنون معطوفة على سابقتها .

عضوا عليكم الأناملَ من الغيظِ : عليكم متعلق بحال محذوفةٍ، أي : عضوا الأناملَ غاضبين عليكم .

من الغيظ : من هنا للسببية، يتعلق بـ : عضوا ،

بغيظكم : هذا في موضِع الحالِ بمعنٰى مغتاظين، أو هو متعلق بحال محذوفة، أي متلبسين بغيظكم .

لا يضركم : الفعل جواب شرطٍ مجزوم، و حُرِّك بالضمة اتِّباعًا لضمة الضاد ، و هي القاعدة في الفعل المضاعَف، و يجوز تحريكه بالفتحة لِخِفَّتها .

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, 'রাজদার' বানিও না তোমরা তোমাদের আপনজন ছাড়া (কাউকে), তারা তো তোমাদের অনিষ্ট সাধনে কোন ত্রুটি করে না। তোমাদের বিপন্ন হওয়াই তারা কামনা করে। (মাঝে মধ্যে) বিদ্বেষ প্রকাশ পেয়েই যায় তাদের মুখ থেকে। আর যে বিদ্বেষ লুকিয়ে রাখে তারা তাদের অন্তরে তা আরো গুরুতর। আমি তো বর্ণনা করে দিয়েছি তোমাদের জন্য নির্দেশনাবলী। যদি তোমরা বুদ্ধি রাখো (তাহলে তাদেরকে রাজদার বানিও না।)

দেখো, এই তোমরা তো ভালোবাসো তাদেরকে, কিন্তু তারা ভালোবাসে না তোমাদেরকে, অথচ তোমরা ঈমান রাখো সকল (আসমানি) কিতাবের প্রতি।

আর যখন দেখা করে তারা তোমাদের সাথে তখন বলে, আমরা ঈমান এনেছি, কিন্তু যখন তারা একান্ত হয় তখন তারা তোমাদের বিরুদ্ধে আঙ্গুল কামড়ায় আক্রোশবশত। আপনি বলুন, মরো তোমরা তোমাদের আক্রোশ নিয়ে, আল্লাহ্ তো পূর্ণ অবগত অন্তরের বিষয় সম্পর্কে।

যদি স্পর্শ করে তোমাদেরকে কোন কল্যাণ কষ্ট দেয় তা তাদেরকে, আর যদি পেয়ে বসে তোমাদেরকে কোন অকল্যাণ তাহলে তারা তাতে আনন্দিত হয়। তবে তোমরা যদি ছবর করো এবং তাকওয়া অবলম্বন করো তাহলে তাদের চক্রান্ত তোমাদের কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না। (কারণ) আল্লাহ্ তো তাদের যাবতীয় কর্ম বেষ্টন করে আছেন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لا تتخذوا بطانة (তোমরা [কাউকে] রাজদার বনিও না) 'কাউকে' এটি মূলত لا تتخذوا এর উহ্য প্রথম মফউলের তরজমা।

'রাজদার' মানে এমন ব্যক্তি যাকে আপন ভেবে কথা বলা হয়, বাংলায় এর যথাশব্দ না পেয়ে উর্দু বা ফার্সীর 'রাজদার' শব্দটিকে কিতাবের তরজমায় গ্রহণ করা হয়েছে, অন্যরা 'অন্তরঙ্গ বন্ধু' ব্যবহার করেছেন, যা بطانة -এর যথার্থ প্রতিশব্দ নয়।

(খ) قد بدت البغضاء (প্রকাশ পেয়েই যায়)- অর্থাৎ চেপে রাখতে চেয়েও পারে না, তাদের অজান্তেই মুখ ফসকে বের হয়ে যায়।

উভয় শায়খ তাদের তরজমায় এই ভাবটুকু তুলে এনেছেন কিন্তু বাংলা তরজমাগুলোতে তা উঠে আসেনি। তারা শুধু 'প্রকাশ পায়' লিখেছেন।'

একটি তরজমায় আছে- তাদের মুখেই ফুটে বেরোয়' এটিও সুসঙ্গত নয়।

'বিদ্বেষ (তো) তাদের মুখ থেকে প্রকাশ পেয়েই গেছে', এ তরজমাও হতে পারে। এখানে ماضي এর শব্দানুগ তরজমা করা হয়েছে।

(গ) و ما تخفي صدورهم أكبر (আর যে বিদ্বেষ তাদের অন্তর লুকিয়ে রাখে) এটি শব্দানুগ তরজমা। উভয় শায়খ এখানে ভাবতরজমা করেছেন। থানবী (রহ)-এর তরজমা- আর যে পরিমাণ তাদের অন্তরে রয়েছে।

শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা- 'আর যা কিছু লুকায়িত আছে তাদের মনে'।

কিতাবে ما এর স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

'আর যে বিদ্বেষ তারা তাদের অন্তরে লুকিয়ে রাখে' এটি সরল তরজমা।

(ঘ) و تؤمنون بالكتب كلّه (অথচ তোমরা সকল [আসমানী] কিতাবের প্রতি ঈমান রাখো) আয়াতের ভাবধারা অনুসরণ করে এখানে 'হাল' রূপে বাক্যটির তরজমা করা হয়েছে, কিন্তু আরবী ব্যাকরণ মতে এটি হাল নয়, কেননা مضارع مثبت হাল হলে তার শুরুতে واو الحال আসে না; কিন্তু বাংলায় عطف এর তরজমা করা হলে আয়াতের ভাবধারা রক্ষিত হয় না।

(ঙ) عضوا عليكم الأنامل من الغيظ (তারা তোমাদের বিরুদ্ধে আঙ্গুল কামড়ায় আক্রোশবশত) 'তোমাদের বিরুদ্ধে' হচ্ছে عليكم এর তরজমা। এর সম্পর্ক الغيظ এর সাথে নয়, বরং عضوا এর সঙ্গে, কিংবা উহ্য হাল غاضبين এর সঙ্গে। বাংলা তরজমাগুলোতে লেখা হয়েছে, তারা তোমাদের প্রতি আক্রোশবশতঃ আঙুল কামড়ায়- এটি ব্যাকরণগত ত্রুটি।

উভয় শায়খের তরজমায় বিষয়টি বিবেচিত হয়েছে।

(চ) 'আঙ্গুল' এখানে বাংলা বাগ্ধারা অনুসরণ করা হয়েছে, উভয় শায়খও উর্দু বাগ্ধারা অনুসরণ করেছেন। শব্দানুগ তরজমা হলো, আঙ্গুলের অগ্রভাগ।

(ছ) إن تَمْسَسْكم حسَنَةٌ تسؤهم 'যদি স্পর্শ করে তোমাদেরকে কোন কল্যাণ কষ্ট দেয় তা তাদেরকে' বিকল্প তরজমা– তোমাদের ভালো কিছু হলে তাদের কষ্ট হয় আর তোমাদের মন্দ কিছু হলে তাতে তারা আনন্দিত হয়।

(জ) (কারণ) এ দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, পরবর্তী বাক্যটি হেতুবাচক।

أسئلة :

١ – اذكر معنى البطانة .

٢ – أعرب قوله : لا يألونكم خبالًا .

٣ – بم يتعلق قوله : من أفواههم ؟

٤ – بم يتعلق قوله : بغيظكم ؟

٥ – بطانة এর তরজমা আলোচনা করো

٦ – بدت البغضاء من افواههم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) هذا بَيان للناس و هُدًى و موعِظةٌ للمتقين * و لا تَهِنوا و لا تحزَنوا و انتم الاَعْلَون اِن كنتم مُؤمنين * اِن يمسَسْكم قَرحٌ فَقد مس القومَ قَرحٌ مِثلُه، و تلك الايام نُداوِلها بينَ الناس، و لِيعلمَ اللّٰه الذين اٰمنوا و يتخذَ منكم شُهداءَ، و اللّٰه لا يحب الظّٰلمين * وَ لِيُمَحِّص اللّٰه الذين اٰمنوا و يَمْحَقَ الكٰفرين * ام حسبتم ان تدخلوا الجنةَ و لما يعلَمِ اللّٰه الذين جاهَدوا منكم و يعلمَ الصّٰبرين * و لقد كنتم تمنون الموتَ من قبلِ ان تلقَوه، فقد رايتموه و انتم تَنظرون * و ما محمد اِلا رَسولٌ، قد خلَتْ من قبله الرُسُل، اَفَاِئن مات او قُتل

انقلبتم على أَعقابِكم، و من ينقَلِبْ على عَقِبَيْهِ فلن يَضرَّ الله شيئًا ، و سَيَجزِي الله الشّٰكرين * و ما كان لِنَفْسٍ ان تموتَ الا باذنِ الله كتابًا مؤجَّلا، و مَن يُرد ثوابَ الدنيا نُؤته منها ، و مَن يُرد ثوابَ الاٰخِرة نؤتِه منها ، و سَنَجزي الشّٰكرين *

بيان اللغة

بيان : البَيان، الكَشْفُ عن الشيء ، و يسمّٰى ما بُيِّن به بيانًا . و سُمي الكلامُ بيانًا ، لأنه يكشِف عن المعنى المقصود إظهارُه . و سمى ما يُشرَح به المُجْمَل و المبهَمُ بيانًا .

لا تهنوا : (لا تَضعُفوا) وَ هَنَ (يَهِن وَهْناً ، ض) ضَعُفَ .

الوَهْنُ ضَعْفٌ مِن حيثُ الخَلقُ و الخُلُقُ

رب إني وهن العظم مني، هذا ضَعف من حيث الخَلْق

و الوَهن في الاية التي نحن فيها هو ضَعف من حيث الخُلُق

أوهنه : أضعفه

قَرْحٌ و قُرح : الجُرْح، قَرَحه (قَرْحًا ، ف) جرحه

نداولها بين الناس : أي نجعلها مرة لهولاء و مرة على هولاء

تداول القوم الأمرَ : أخذه مرة هؤلاء و مرة هؤلاء লোকেরা বিষয়টিকে পালাক্রমে গ্রহণ করলো।

داول الأمرَ بينَهم : جعله تارة لهؤلاء و تارة لهؤلاء

ليمحص : لِيُنَقِّيَهم و يُطهرهم (عن الذنوب)، و أصل المَحْصِ تخليص الشيء مما فيه من عيب .

مَحَقَ الشيءَ (ف، مَحْقًا) : نقَصَه أو أهلَكه و أبادَه

بيان الإعراب

هذا بيان للناس : ها حرف تنبيه، و ذا اسم اشارة، في محل رفع مبتدأ و بَيانٌ خبرُه، و للناس متعلق بـ : بيانٌ إن كان مصدرًا، و بنعتٍ

محذوف، إن كان المراد منه ما بُين به، أي : نافع للناس .

للمتقين متعلق بـ : موعظةٌ، إن كان مصدرًا، و بنعت محذوف، إن أريد به ما يُوعَظ به، أي : نافعةٌ .

لا تهنوا : و أصله لا توْهِنوا، فحذفت الواوُ لوقوعها بين تاءٍ و كسرةٍ .

كنتم مؤمنين : شرط، و جوابه محذوف دل عليه السابق، أي : فلا تهنوا

يمسَسْكم : شرط و جوابه محذوف، أي فتَأسَّوا، و من زعَم أن جوابَ الشرط هو فقد مس ... فقد أخطأ، لأن الماضيَ معنًى لا يكون جوابا، والشرطية إنما تكون في المستقبَل .

و تلك الأيام : اسم الإشارة مبتدأ، و الأيام بدل منه، و الجملة خبره .

و إن شئتَ قلتَ : الأيام خبر المبتدأ، و الجملة حال من معنى اسم الإشارة، أي نُشير إلى الأيامِ حالَةَ كونِها مداوَلَةً .

و ليعلم : الواو زائدة، و المصدر المؤول في محل جر باللام، و هو متعلق بـ : نداول .

و يتخذَ : معطوف على : يعلمَ، و منكم يتعلق بـ : يتخذ أو بحال محذوفة متقدمة، كانت في الأصل صفة لـ : شهداء . و اعترضت الجملة : و الله لا يحب الظلمين، بين العلل .

و ليمحص : هذا معطوف على : ليعلم، و أعيد اللام لاعتراض الجملة

و لما يعلم : الواو حالية . و لما حرف جازم للمضارع .

و يعلمَ : مضارع منصوب بعد واو المعية بـ : أن

تمنون : أصله تتمنون، فحذفت إحدى التاءين للتخفيف

رأيتموه : هذه الواو لإشباع الضمة

تنظرون، أي : سببَ الموت

ما محمد إلا رسول : إلا أداة حصر بين المبتدأ و الخبر

ما كان لنفس أن تموت إلا بإذن الله : المصدر المؤول في محل رفع اسم كان، و لنفس متعلق بخبر كان المحذوف و إلا أداة حصر، و بإذن الله حال بمعنى : إلا مأذونًا لها، أو متعلق بحال محذوفة، أي : إلا متلبسة بإذن الله .

كتابًا مؤجّلا : هذا مصدر منصوب على أنه مفعول مطلق، أي : كتب ذلك كِتابًا مؤجلا (أي : مؤقّتًا لا يتقدم و لا يتأخر) .

الترجمة

এটি (কোরআন) হলো বিশদ বিবরণ (সাধারণভাবে) সমস্ত মানুষের জন্য এবং হেদায়াত ও উপদেশ (বিশেষভাবে) মুত্তাকীদের জন্য।

আর তোমরা (জিহাদের ক্ষেত্রে) হীনবল হয়ো না এবং (সাময়িক পরাজয় বা হতাহতের জন্য) দুঃখিত হয়ো না, আর তোমরাই হবে বিজয়ী, যদি তোমরা মুমিন হও।

যদি পেয়ে থাকে তোমাদেরকে কোন জখম (তাহলে সান্ত্বনা গ্রহণ করো) কারণ অবশ্যই পেয়েছে (শত্রু) কাওমকেও ঐ জখমের মত জখম। আর ঐ দিনগুলোকে আমি অদলবদল করে থাকি মানুষের মাঝে, যাতে আল্লাহ (প্রকাশ্যভাবে) জেনে নেন ঐ লোকদেরকে যারা ঈমান এনেছে তোমাদের মধ্য হতে এবং যেন তিনি গ্রহণ করেন তোমাদের মধ্য হতে কিছু শহীদ– আর আল্লাহ পছন্দ করেন না যালিমদেরকে– এবং যেন আল্লাহ পবিত্র করেন তাদেরকে যারা ঈমান এনেছে এবং যেন তিনি বরবাদ করে দেন কাফিরদেরকে।

আচ্ছা, তোমরা কি মনে করো যে, তোমরা চলে যাবে জান্নাতে, অথচ এখনো আল্লাহ 'প্রকাশ করেন নি' তাদেরকে যারা তোমাদের মধ্য হতে জিহাদ করেছে, এবং তাদেরকেও প্রকাশ করেন নি যারা ধৈর্যশীল।

আর তোমরা তো অবশ্যই মৃত্যুর আকাঙ্ক্ষা করতে, মৃত্যুর সম্মুখীন হওয়ার পূর্বে। তো অবশ্যই তোমরা তা দেখে নিয়েছো, তোমাদের চোখ খোলা অবস্থায়।

মুহাম্মদ তো রাসূল ছাড়া অন্য কিছু নন। বিগত হয়েছেন তাঁর পূর্বে রাসূলগণ। সুতরাং তিনি যদি মৃত্যুবরণ করেন, কিংবা নিহত হন তাহলে কি ফিরে যাবে তোমরা উল্টো পায়ে?

আর যে ফিরে যায় উল্টো পায়ে সে আল্লাহর কিছুতেই কোন ক্ষতি করতে পারবে না। আর অবশ্যই প্রতিদান দেবেন আল্লাহ শোকর গুজারদেরকে।

কোন নফস-এর মৃত্যু ঘটা সম্ভব নয়, আল্লাহর ফায়ছালা ছাড়া, (তা লেখা হয়েছে আল্লাহর পক্ষ হতে) মেয়াদ-নির্ভর কিতাবে।

আর যে ব্যক্তি চায় দুনিয়ার ফলাফল দেবো আমি তাকে তা থেকে,

আর যে চায় আখেরাতের ফলাফল দান করবো আমি তাকে তা থেকে। আর অবশ্যই প্রতিফল দান করবো আমি শোকর আদায়কারীদেরকে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) هذا بيان للناس (এটি [কোরআন] হলো বিশদ বিবরণ সমস্ত মানুষের জন্য) এখানে هذا এর مشار إليه স্পষ্ট করার জন্য (কোরআন) এই বন্ধনী আনা হয়েছে। কোন কোন বাংলা তরজমায় الناس এর তরজমা করা হয়েছে, মানবসম্প্রদায়/জাতি। কিন্তু এখানে الناس দ্বারা সম্প্রদায় ও জাতিগত দিকটি উদ্দেশ্য নয়, উদ্দেশ্য হলো عموم الأفراد শায়খায়নের তরজমায়ও সেটি বিবেচনা করা হয়েছে।

(খ) فقد مس القوم قرح مثله 'পেয়েছে (শত্রু) কাওমকেও ঐ জখমের মত জখম' বন্ধনী দ্বারা এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, القوم এর ال হচ্ছে للعهد الخارجي

'যদি তোমাদের কোন যখম লেগে থাকে' এ তরজমা শব্দানুগ নয়, তবে কাছাকাছি।

'যদি তোমরা আহত হয়ে থাকে তাহলে তারাও তো আহত হয়েছে'– এ তরজমা সুন্দর, তবে মূল থেকে দূরবর্তী। শব্দানুগ তরজমা হলো– 'যদি তোমাদেরকে স্পর্শ করে কোন ক্ষত তাহলে (শত্রু) সম্প্রদায়কেও তো স্পর্শ করেছে অনুরূপ ক্ষত'।

(গ) ليعلم ও ليتخذ (যেন জেনে নেন এবং যেন গ্রহণ করেন) এর বাংলা তরজমাগুলোতে আছে 'যেন জানতে পারেন, এবং যেন গ্রহণ করতে পারেন' এখানে 'পারা' শব্দের প্রয়োগ শোভনীয় মনে হয় না; শায়খায়ন তা করেন নি।

একটি বাংলা তরজমায় شهداء এর তরজমা করা হয়েছে, 'কিছু সাক্ষী' অথচ আলোচ্য আয়াতের যুদ্ধপ্রসঙ্গ থেকেও 'শহীদ' অর্থ বোঝা যায়।

(ঘ) أم حسبتم (আচ্ছা, তোমরা কি মনে করো) 'আচ্ছা' শব্দটি হচ্ছে أم المنقطعة এর তরজমা, যা بل এর সমার্থক। থানবী (রহ) এর তরজমা করেছেন, "هاں" শব্দ দ্বারা। তারপর তিনি ব্যাখ্যা দিয়ে বলেছেন, এই أم হচ্ছে, বক্তব্য থেকে বক্তব্যান্তরে

গমনের অব্যয়। আমাদের উর্দু ভাষায় এর প্রতিশব্দ হচ্ছে هاں কোন বাংলা তরজমায়, এমনকি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এরও তরজমায় এ বিষয়টি বিবেচনায় আসেনি।

বাংলায় বক্তব্যান্তরে গমনের অব্যয় হলো, 'আচ্ছা'

(ঙ) و لما يعلم (অথচ এখনো আল্লাহ্ প্রকাশ করেন নি) অর্থাৎ আল্লাহর ইলমের মধ্যে যা রয়েছে ঘটনার মাধ্যমে সেটা মানুষের মাঝে প্রকাশ করেন নি।

থানবী (রহ) লিখেছেন, 'জানেন নি' কথাটা সর্বসাধারণের জন্য বিভ্রান্তিকর, তাই সেটা এড়িয়ে 'এখনো দেখেনই নি' (دیکھاهي نهيں) তরজমা করেছি।

একই কারণে সেটাকেও এড়িয়ে কিতাবে 'প্রকাশ করেন নি' তরজমা করা হয়েছে।

(চ) 'এবং তাদেরকেও প্রকাশ করেন নি'– এখানে দু'টি কথা, (ক) আয়াতে علم শব্দটি দুবার এসেছে, শায়খায়ন তাদের তরজমায় তা বিবেচনা করেছেন। বাংলা তরজমাগুলোতে তা বিবেচনা করা হয়নি। যেমন, 'তোমরা কি মনে করো যে, তোমরা জান্নাতে প্রবেশ করবে যতক্ষণ না আল্লাহ্ জানেন তোমাদের মধ্যে কে জিহাদ করেছে ও কে ধৈর্য ধরেছে'।

(খ) ويعلم এখানে ব্যাকরণগতভাবে واو অব্যয়টি للمعية কিন্তু ভাষাগত সীমাবদ্ধতার কারণে উর্দু ও বাংলা তরজমায় عطف এর তারকীব অনুসরণ করা হয়েছে।

و أنتم تنظرون (তোমাদের চোখ খোলা অবস্থায়) এটি ভাবতরজমা, অবশ্যই তোমরা তা দেখে নিয়েছো তাকিয়ে তাকিয়ে, এটি মুলানুগ তরজমা, তবে এখানে জুমলা হালকে মুফরাদ হালে রূপান্তরিত করা হয়েছে।

(চ) انقلبتم على أعقابكم (ফিরে যাবে তোমরা উল্টো পায়ে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, 'পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে/পশ্চাদ-পসরণ করবে/পিঠ ফিরিয়ে পিছু হটবে। এসব তরজমা মেনে নেয়া যায়, তবে কিতাবের তরজমাটি মূলানুগ। এ তরজমা করা হয়েছে শায়খুলহিন্দ (রহ) এর অনুসরণে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة البيان

٢ – عين جواب الشرط في قوله تعالى : إن يمسسكم قرح

٣ – ما إعراب "منكم" في قوله تعالى : الذين جاهدوا منكم

٤ – أعرب قوله تعالى : فلن يَضرَّ الله شيئًا

٥ – هذا بيان للناس এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – و لما يعلم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٣) يٰاَيها الذين امنوا اِن تُطيعوا الذين كفروا يَردُّوكم على اَعقابكم فتنقَلِبوا خٰسرين * بَلِ اللّٰه مَولاكم، و هو خيرُ النّٰصرين * سنُلقِي في قلوب الذين كفروا الرُّعْبَ بما اَشرَكوا باللّٰه مِا لم يُنَزل به سُلطٰنًا ، وَ مَاوٰهم النارُ، و بِئسَ مَثْوَى الظّٰلمين * و لقد صَدقكم الله وعدَه اذ تَحُسُّونهم باذنه، حتى اذا فَشِلتم و تنازَعتم في الأمر و عصَيتم من بعدِ ما ارٰكم ما تحبون، منكم مَن يريد الدنيا و منكم من يريد الاخرةَ، ثم صَرَفكم عنهم لِيَبتلِيَكم، و لقد عَفا عنكم، و الله ذُو فَضل على المؤمنين *

بيان اللغة

مولىً : انظر (٧/٣/٣) فتنقلبوا : انظر (١/٢/٣)

الرعب : الخوف و الفَزَع، قال تعالى : فَقذَف في قلوبهم الرعبَ، أي : ألقى

سلطان : السلطان، التسلط و الغلبة و القوة আধিপত্য, শক্তি, ক্ষমতা

قالى تعالى : ليس له سلطان على الذين امنوا و على ربهم يتوكلون، إنما سلطانه على الذين يتولونه

و يستعمل في صاحب السلطان، أي : الملك و الوالي و الحاكم .

و سمى الحجة سلطانا ، قال تعالى : الذين يجادلون في ايات الله بغير سلطان مبين *

مثوى : المثوى المكان الذين يكون مَقَرَّ الإنسان وَ مأواه .

ثَوٰى بالمكانِ (ض، ثُوِيًّا) أقام فيه

تَحُسُّونهم : (تَقتُلونهم) و أصل الحَسّ الضرب على مكان الحِسّ، و الضرب على مكان الحس قد يُؤَدّي إلى القتل، فعُبر به عن القتل، و قيل : حسستُه، أي قتلته (ن، حَسًّا) حس الشيءَ : استأصَله .

فشلتم : الفَشَل ضعفٌ مع جُبْنٍ ভীরুতা ও অক্ষমতা

فشل (س، فَشَلا) ضَعُف و جَبُن، قال تعالى : و لا تنازعوا فتفشلوا و تذهب ريحكم

فشل عن الأمر : انصرف عنه ضعفا و جبنًا

فشل في الأمر : أخْفَق، أي : لم ينجح ব্যর্থ হলো

بيان الإعراب

فتنقلبوا خاسرين : الجملة معطوفة على جواب الشرط

بما أشركوا : ما حرف المصدر، و المصدر المؤول في محل جر بالباء متعلق بـ : نلقي، و الباء سببية، أي : بسببِ إشراكِهم بالله مالم يُنَزِّل به سلطانا . و ما اسم موصول، و الجملة صلته، أو هو نكرة موصوفة، و الجملة في محل نصب نعت لها، أي : شيئا لم ينزل به سلطانا .

ولقد صدقكم الله وعده : اللام داخلة على جواب قسَم محذوف .

وعدَه منصوب بنزع الخافض، لأن صَدَقَ يتعدى لِاثْنَيْنِ، أحدُهما بنفسِه و الآخرُ بحرفِ الجر، أي : بِوَعْدِه، وقيل : وَعْدَه مفعول به ثانٍ منصوب .

إذ : ظرف للزمن الماضي مبني على السكون، في محل نصب على الظرفية، متعلق بـ : صدق، و جملة تحسونهم في محل جر بإضافة الظرف إليها، أي : حينَ حَسِّكم إياهم .

حتى إذا فشلتم : حتى حرف غاية و جر بمعنى إلى، وهو متعلق بـ : تحسون، أي : تقتلونهم إلى حين فَشَلِكم، و عَلَّقه الزمخشريُّ بـ : صَدَقَكم، أي : صدقكم الله وعدَه إلى حين فشَلِكم، و هو أيضا صحيح . و إذا في هذا الإعراب اسم ظرف مجرد من معنى الشرط و يجوز أن تكون حتى ابتدائية، و إذا في هذا الإعراب اسم ظرف و

شرط، يتعلق بجوابه، و جواب إذا محذوف، أي : منعكم نصره فانهزمتم ·
و هذا في غزوة أحدٍ، انتصروا ثم فَشِلوا و تنازَعوا في أمر المُقامِ في الجبَل فانهزموا ·
من بعد ما أراكم ما تحبون : أي النصرَ و الغلَبةَ على العدو، و ما الأُولى مصدرية، و الثانية موصولة، و ما تحبون مفعول به ثان لـ : أرى
ثم صرفكم عنهم : الجملة معطوفة على جواب إذا المحذوف، أي منعكم نصره ثم صرفكم عنهم ·
ليبتليكم : اللام للتعليل، أي : ردكم عنهم ليمتحِنَ صبرَكم و ثَباتَكم ·

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, যদি আনুগত্য করো তোমরা তাদের, যারা কুফুরি করেছে তাহলে ফিরিয়ে দেবে তারা তোমাদেরকে (তোমাদের গোড়ালির উপর অর্থাৎ) পিছনের দিকে (অর্থাৎ পূর্বের কুফুরির দিকে), অনন্তর ফিরে যাবে তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত অবস্থায়। [১] বরং আল্লাহই তোমাদের অভিভাবক, আর তিনি সর্বোত্তম সাহায্যকারী।
এখন আমি, ভীতি প্রক্ষেপণ করবো তাদের অন্তরে যারা কুফুরি করেছে, তারা আল্লাহর সঙ্গে শরীক করার কারণে এমন বস্তুকে, যার স্বপক্ষে তিনি অবতীর্ণ করেন নি কোন প্রমাণ। আর তাদের ঠিকানা (হলো) জাহান্নাম, আর অবিচারকারীদের বাসস্থান (জাহান্নাম) কত না মন্দ!
আর অবশ্যই আল্লাহ তোমাদেরকে সত্য করে দেখিয়েছেন তাঁর ওয়াদা, যখন 'সমূলে নিপাত' করছিলে তোমরা তাদেরকে তাঁর আদেশে; এমন কি যখন তোমরা (নিজেরাই) সাহস হারালে এবং পরস্পর বিভেদ করলে (পাহাড়ে অবস্থানের) আদেশ সম্পর্কে এবং তোমরা (রাসূলের কথা) অমান্য করলে যা তোমরা ভালোবাসো তা তিনি তোমাদেরকে দেখানোর পর (তখন তিনি তোমাদেরকে সাহায্য করা বন্ধ করলেন, আর তোমরা পরাজিত হলে।)

১. অর্থাৎ ক্ষতিগ্রস্ত ও বরবাদ হয়ে যাবে।

তোমাদের মধ্য হতে কতিপয় ছিলো এমন যারা চাচ্ছিলো দুনিয়া, আর তোমাদের মধ্য হতে কতিপয় ছিলো এমন যারা চাচ্ছিলো আখেরাত, তারপর তিনি সরিয়ে দিলেন তোমাদেরকে তাদের থেকে, যেন পরীক্ষা করেন তিনি তোমাদেরকে, তবে অবশ্যই তিনি তোমাদেরকে মাফ করে দিয়েছেন। আর আল্লাহ তো মুমিনদের প্রতি খুবই অনুগ্রহশীল।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) على أعقابكم 'তোমাদের গোড়ালির উপর'– বন্ধনীর মাঝে শাব্দিক তরজমা করা হয়েছে, আরবী বাগ্‌ধারায় এর অর্থ হলো উল্টো দিকে এবং পিছনের দিকে এবং আগের অবস্থায় ফিরিয়ে দেয়া, ভাব অর্থটি বন্ধনীর বাইরে রাখা হয়েছে। তারপর আয়াতের উদ্দিষ্ট অর্থটি দ্বিতীয় বন্ধনীর মাঝে দেয়া হয়েছে।

(খ) و هو خير النصرين এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন 'এবং তার সাহায্য সব থেকে উত্তম' এটি মূল থেকে দূরবর্তী, পক্ষান্তরে থানবী (রহ) লিখেছেন, 'তিনি সব থেকে উত্তম সাহায্যকারী', এটি মূলের নিকটবর্তী। আমরা যেহেতু বিনা প্রয়োজনে মূল থেকে সরার পক্ষপাতী নই সেহেতু কিতাবে দ্বিতীয় তরজমাটি অনুসরণ করা হয়েছে।

(গ) بما أشركوا 'শরীক করার কারণে এমন বস্তুকে' ما কে نكرة موصوفة ধরে এ তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) مأوى অর্থ যে স্থানে অশ্রয়ের জন্য মানুষ গমন করে, এ জন্য 'ঠিকানা' তরজমা করা হয়েছে। পক্ষান্তরে مثوى অর্থ যেখানে মানুষ অবস্থান ও বাস করে, তাই 'বাসস্থান' তরজমা করা হয়েছে। থানবী (রহ) উভয় শব্দের এই অর্থগত পার্থক্য বর্ণনা করা সত্ত্বেও উভয় শব্দের অভিন্ন তরজমা করেছেন, অর্থাৎ স্থান বা জায়গা। আর শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন ঠিকানা।

কিতাবের তরজমায় উভয় শব্দের অর্থগত পার্থক্য বিবেচনা করা হয়েছে।

(ঙ) إذ تحسونهم 'যখন তোমরা তাদেরকে সমূলে নিপাত করছিলে'– حس শব্দটিতে নির্মূল করার ভাব রয়েছে, তাই 'হত্যা করছিলে' এর পরিবর্তে এ তরজমা করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ سلطان ·

٢ - أعرب قولَه : ما لم ينزل به سلطانا ·

٣ - أعرب قوله : إذ تحسونهم باذنه ·

٤ - متى يكون إذا اسمَ ظرفٍ مجردًا من معنى الشرط في قوله تعالى : حتى إذا فشلتم ؟

(٤) إذ تُصعِدون و لا تَلْوُن على أحدٍ و الرسول يدعوكم في أُخرٰكم فَأَثابكم غَمًّا بغَمٍّ لِكيلا تحزَنوا على ما فاتكم و لا ما أصابكم، و الله خبير بما تعملون * ثم أنزَل عليكم من بَعدِ الغَمِّ أَمَنَةً نُعاسًا يغشى طائِفَةً منكم و طائفةٌ قد أهمَّتْهم انفُسُهم يظنون بالله غيرَ الحق ظنَّ الجاهلِيَّة، يقولون هل لنا من الأمْرِ من شيءٍ، قل إن الامرَ كلَّه لِلّٰه، يُخفون في أنفسِهم ما لا يُبدون لك، يقولون لو كان لنا من الأمْر شيءٌ ما قُتلنا هٰهنا، قل لو كنتم في بُيوتكم لبرَزَ الذين كُتب عليهم القتلُ الى مَضاجِعهم، و ليبتليَ اللّٰهُ ما في صدوركم و لِيمحِّصَ ما في قلوبكم، و الله عليم بذات الصدور *

بيان اللغة

تُصعِدون : (تذهَبون في الأرض بعيدًا) قال أهل اللغة : الصُّعود الذهاب في المكان العالي، و الإصعاد الذهاب في الأرض المستَوِيَةِ ·

لا تلوون على أحد : لا تلتفتون إلى أحد، كما يفعل المنهزم، و أصله من لَيِّ العنُق (لَوىٰ يَلوِي، لَيًّا) ঘাড় ফেরানো

أثابكم : جازاكم، و أصل الثوب رجوع الشيء إلى حالته الأولى التي كان عليها، يقال : ثاب فلان إلى داره، و ثاب إلى الله (ن، ثَوْبًا، ثَوَبانًا)

أثابه (إثابة) : أعاده، رجعه ، كافأه و جازاه

و الإثابة تستعمَل في المحبوب، قال تعالى : فأثابهم الله بما قالوا جنّتٍ تجري من تحتها الأنهر.

و استعمِل في المكروه قليلا، كما في هذه الآية

و الثواب جزاء العمل الذي يرجع إلى الإنسان، يستعمَل في الخير و الشر، و الأكثرُ في الخيرِ ، قال تعالى : ثوابًا من عند الله، و الله عنده حُسْنُ الثوابِ، و قال تعالى : فآتاهم الله ثوابَ الدنيا و الأخرة، و المَثوبة : الثواب معنىً و استعمالا . حسن ثواب

غما : أصل الغم سَترُ الشيء، و سمي السحاب غمامًا لكونه ساترًا لضوء الشمس، و الغَمُّ و الغُمَّةُ : الكَرْب و الكُرْبَة، মুছীবত, পেরেশানি

لأن الغم يستُر سرورَ القلب، و غَمَّه (ن، غَمًّا) : حَزَنَه

أمنة : أصل الأمنِ طمأنينة النفس و زَوال الخوف স্বস্তি, ভয় থেকে স্বস্তি

أمن (س، أَمْنًا، أَمانًا، أمانَة، أَمَنًا، أَمَنَة) اِطمَأَنَّ و لم يَخَف، أو زَال خَوفُه আশ্বস্ত হলো, স্বস্তি লাভ করলো

أَمِنَ الشرَّ أو مِنَ الشرِّ : سلم منه অনিষ্ট বা মন্দ থেকে নিরাপদ হল

أَمِنَ فلانًا على شيءٍ : وَثِقَ به و اطمأن إليه কোন বিষয়ে আশ্বস্তির সাথে তার প্রতি আস্থা স্থাপন করলো।

أَمِنَ فلانًا على شيءٍ، جعله أمينا عليه তাকে কোন কিছুর তত্ত্বাবধায়ক বানালো

نُعاسا : النعاس، النوم القليل লঘু নিদ্রা و النعاس : السِّنة তন্দ্রা

يَغشٰى : غَشِيه الأمرُ : غطاه و ستَره و استولى عليه (س، غَشْيًا)

বিষয়টি তাকে আচ্ছন্ন করলো, ঢেকে ফেললো।

يقال : غشيه النعاس، عشيه العذاب، غشيه الموت

أَهَمَّتهم : أَقلقَتهم و احزنَتهم আত্মচিন্তা উৎকণ্ঠি/ব্যতিব্যস্ত করলো

أهم الأمرُ فلانًا : أقلَقَه، أثارَ اهْتِمامَه উৎকণ্ঠিত করলো, চিন্তিত করলো, ভাবালো, মনোযোগ আকর্ষণ করলো।

هَمَّ بالأمرِ (ن، هَمًّا) : عَزَم على القيام به و لم يفعَله

مَضاجع : (ج) مضجَع ، (موضع الضُّجوع، أي موضعُ وَضْعِ الجنب) و يستعمَل في مكان النوم و الموت و الدفن শয্যা গ্রহণের বা শয়নের স্থান

ضَجَع (ف، ضَجْعًا، ضُجوعا) : وضع جنبه على الأرض أو نحوها

اضطجع : ضجع

بيان الإعراب

إذ تصعدون : الظرف يتعلق بـ : عفا في الآية السابقة، أو هو مفعول به لفعل محذوف، أي : اذكروا، و الجملة في محل جر بالإضافة .

و لا تلوون عطف على : تصعدون، أو الواو حالية، و الجملة في محل نصب على الحال .

و الرسول يدعوكم : الجملة حال من فاعل تصعدون، و في أخراكم يتعلق بمحذوف حال من فاعل يدعو، أي : قائما في أخراكم .

غما : مفعول به ثان لـ : أثابكم . و بغم يتعلق بصفة محذوفة، أي غما متصلا أو متلبسا بغم، أي : غُموما مُتَعاقِبةً، أو يتعلق بـ : أثابكم، و الباء للسببية، أي : جازاكم على صنيعكم غَمًّا بسببِ غَمِّكم للرسول .

لكي لا تحزنوا على ما فاتكم : اللام لام التعليل و الجر، و لا نافية لا عمل لها في الإعراب،

و الموصول في محل جر بـ : على، و هو متعلق بـ : تحزنوا، و المصدر المؤول في محل جر باللام، متعلق بـ : عفا .

و لا ما أصابكم : معطوفة على الموصول السابق، و لا زائدة لتاكيد النفي .

ثم أنزل عليكم : ثم حرف عطف للترتيب مع التراخي، و الفاء للترتيب بلا تراخ، و الواو للجمع فقط، بلا اعتبار للترتيب، و الجملة معطوفة على أثابكم، و من بعد الغم متعلق ثان بـ : أنزل .

و نعاسًا بدل من أمَنَةً، و هو بدلُ اشتمالٍ، لأن كُلاًّ منهما يشتَمِل على الأخر.

و لا بد في بدَل الاشتمال من عائدٍ يعود على المبدَل منه، و هو هنا محذوف، أي : نعاسا (موجودا) فيها، أي : في الامنة .

و طائفة قد اهمتهم أنفسهم : الواو حالية، و طائفة مبتدأ، و جاز الابتداء بالنكرة لوَصْفِها بمحذوفٍ دل عليه القَرينة السابِقة، و هي منكم، و أصل العبارة : و طائفة معدودة من غيركم ·

أو جاز الابتداء بالنكرة لواو الحال و الجملة بعدها هي الخبر ·

يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية : الجملة حال من مفعول أهمتهم، أو هذه الجملة هي الخبر، و جملة قد أهمتهم أنفسُهم صفة لـ : طائفَةٌ ·

غيرَ الحق صفة لمفول مطلق محذوف، أي يظنون ظنًّا غيرَ صحيحٍ، و ظنَّ الجاهليةِ بدَل من غيرَ الحق، أو هو منصوب بنزع الخافض، أي : كظن الجاهلية ·

و بالله، أي : في الله، أي : في حكم الله

يقولون هل لنا من الأمر من شيء : هذه الجملة بدل من جملة يظنون ·

هل : حرف استفهام معناه النفي، أي ليس لنا ·

و شيءٍ مجرور لفظا بـ : منِ الزائدة، مرفوع محلا، لأنه مبتدأ مؤخر، و (ثابت) لنا خبره المقدم · و من الأمر متعلق بمحذوف حال، و هو صفة تقدمت على الموصوف فأعربت حالا، و أصل العبارة : هل شيء معدود من الأمر ثابت لنا ؟

و ليبتلي الله ما في صدوركُم : الجملة معطوفة على محذوف، أي الزم الله عليكم الهزيمة في أحد لِمَصَالِحَ تجهَلونها و ليبتليَ ·

الترجمة

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন তোমরা (পলায়নের উদ্দেশ্যে) ছুটে যাচ্ছিলে, আর ফিরেও তাকাচ্ছিলে না কারো দিকে, অথচ রাসূল তোমাদেরকে ডাকছিলেন তোমাদের পিছনে (দাঁড়িয়ে)। তখন আল্লাহ তোমাদেরকে প্রতিদান দিলেন দুঃখ, (রাসূলকে তোমাদের) দুঃখ দানের কারণে, যেন তোমরা (শোকে শক্ত হও এবং) দুঃখিত না হও ঐ গনীমতের কারণে যা তোমাদের হাত ছাড়া হয়েছে, এবং ঐ বিপদের কারণে যা তোমাদের উপর এসে পড়েছে। আর আল্লাহ তোমাদের কর্ম সম্পর্কে পূর্ণ অবগত।

তারপর ঐ দুঃখের পর তিনি অবতীর্ণ করলেন তোমাদের উপর স্বস্তি অর্থাৎ তন্দ্রা, যা আচ্ছন্ন করে রেখেছিলো তোমাদের একটি দলকে, আর (তোমাদের দলভুক্ত নয় এমন) একটি দল, তাদেরকে ব্যতিব্যস্ত করে রেখেছিলো তাদের আত্মচিন্তা। ধারণা করছিলো তারা আল্লাহ সম্পর্কে জাহেলিয়াতের ধারণার মত নাহক ধারণা; তারা বলছিলো, সিদ্ধান্তের ক্ষেত্রে আমাদের (জন্য) কি কোনও অধিকার রয়েছে? (নেই।) আপনি বলুন, সিদ্ধান্ত তো সবটুকুই আল্লাহর অধিকারে।

(আসলে) তারা লুকিয়ে রাখে তাদের মনে এমন সব কথা যা (স্পষ্টরূপে) প্রকাশ করে না আপনার সামনে।

তারা বলে, যদি আমাদের জন্য সিদ্ধান্তের কোন অধিকার থাকতো (তাহলে) আমরা নিহত হতাম না এখানে। আপনি বলুন, যদি তোমরা থাকতে তোমাদের বাড়ী-ঘরেও (তাহলে) যাদের উপর নিহত হওয়ার তাকদীর লেখা হয়েছে তারা অবশ্যই বের হয়ে আসতো তাদের 'শয়নক্ষেত্রে'।

আর (এসব ঘটনা আল্লাহ ঘটিয়েছেন) যেন আল্লাহ, যা তোমাদের মনে আছে তা পরীক্ষা করেন এবং যেন তিনি পরিশোধন করেন যা তোমাদের অন্তরে আছে। আর আল্লাহ মনের সব কথা সম্পর্কে পূর্ণ অবহিত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'ছুটে যাচ্ছিলে'– تصعدون এর অর্থ শায়খায়ন করেছেন 'উপরের দিকে চলে যাচ্ছিলে' কিন্তু إصعاد এর আভিধানিক অর্থে শুধু গমন রয়েছে; 'উর্ধ্ব ভূমি'-এর বন্ধন নেই, যেমনটি রয়েছে صعود এর ক্ষেত্রে।

(খ) في أخراكم -এর তরজমায় (দাঁড়িয়ে) বন্ধনীটি যোগ করে ব্যাকরণগত স্বরূপ তুলে ধরা হয়েছে।

শায়খায়ন এবং তাঁদের অনুসরণে বাংলা মুতারজিমগণ في কে من অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন, তোমাদের পিছন থেকে।

(গ) بغم (দুঃখ দানের কারণে) এখানে ب অব্যয়টিকে سببية এর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করা হয়েছে এবং বন্ধনীতে غم মাছদার এর ফায়েল ও মাফউলে বিহী নির্ধারণ করা হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'তোমাদের উপর এলো শোকের পর শোক।' ব্যাকরণগত দিক থেকে غما بغم এর তরজমা 'শোকের পর শোক' ঠিক আছে, কিন্তু أثاب এর এ তরজমা কীভাবে সঙ্গত হয়?

(ঘ) ما فاتكم (ঐ গনীমতের কারণে যা তোমাদের হাতছাড়া হয়েছে) এবং ما أصابكم (ঐ বিপদের কারণে যা তোমাদের উপর এসে পড়েছে) উভয় ما এর স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

এ তরজমায় لا এর তাকীদী মর্ম উঠে আসেনি। সে ক্ষেত্রে তরজমা হবে, যেন তোমরা দুঃখিত না হও তোমাদের হাতছাড়া হওয়া গনীমতের কারণে, আর না তোমাদের উপর এসে পড়া বিপদের কারণে।

(ঙ) একটি বাংলা তরজমায় خبير এবং عليم উভয় শব্দের প্রতিশব্দ লেখা হয়েছে 'অবহিত'। শায়খায়ন তাঁদের উর্দু তরজমায় শব্দগত পার্থক্য বিবেচনায় রেখেছেন। কিতাবে তাদের অনুসরণে خبير এর প্রতিশব্দরূপে 'অবগত' এবং عليم এর প্রতিশব্দরূপে 'অবহিত' ব্যবহার করা হয়েছে।

(চ) ثم أنـزل عليكم من بعد الغم امنة نعاسا (তারপর ঐ দুঃখের পর তিনি অবতীর্ণ করলেন তোমাদের উপর স্বস্তি অর্থাৎ তন্দ্রা) من بعد الغم ঐ দুঃখের পর- এখানে 'ঐ' দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, الغم এর ال হচ্ছে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক।

স্বস্তি অর্থাৎ তন্দ্রা অবতীর্ণ করলেন- একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে- তোমাদের দুঃখের পর নিরাপত্তা দিলেন। 'দেয়া'-এর জন্য আরবীতে স্বতন্ত্র শব্দ থাকা সত্ত্বেও আল্লাহ্ যখন أنزل ব্যবহার করেছেন তখন বিষয়টি আমাদেরকে বিবেচনায় রাখতে হবে। তদুপরি এখানে امنة থেকে বদল نعاسا শব্দটি ছেড়ে দেয়া হয়েছে।

(ছ) (তোমাদের দলভুক্ত নয়) দ্বারা দ্বিতীয় طائفة এর উহ্য متعلق এর প্রতি ইঙ্গিত করা হয়েছে। অর্থাৎ طائفة معدودة من غير جنسكم উদ্দেশ্য হলো মুনাফিক দল।

(জ) هل لنا من الأمر من شيء (সিদ্ধান্তের ক্ষেত্রে আমাদের [জন্য] কি কোনও অধিকার রয়েছে?) একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে 'আমাদের হাতে কি কিছু করার নেই?' এ তরজমা ভুল।

কারণ মুনাফিকদের বক্তব্যের মূল ছিলো, যুদ্ধের সিদ্ধান্ত গ্রহণের সময় তাদের মতামতের মূল্য না দেয়ার অভিযোগ।
এখানে আছে من شي আর সামনে আছে শুধু شيء তরজমায়ও এ পার্থক্য বিবেচনা করা দরকার।
من অব্যয়টি, যাকে আমরা অতিরিক্ত বলি, তা এসেছে বক্তব্যকে জোরালো ও তাকীদপূর্ণ করার জন্য। কারণ প্রশ্নশৈলীর ব্যবহার প্রমাণ করে যে, এখানে তাদের ক্ষোভ ছিলো প্রচণ্ড। বাংলা তরজমাগুলোতে এ পার্থক্য বিবেচিত হয়নি।
(জন্য) এটিকে বন্ধনীতে এনে বোঝানো হয়েছে لِ এর প্রতিশব্দরূপে এর প্রয়োজন নেই।
(নেই) এ বন্ধনী দ্বারা প্রশ্নের উদ্দেশ্য পরিষ্কার করা হয়েছে।

(ঝ) لبرز الذين كتب عليهم القتل إلى مضاجعهم (যাদের উপর নিহত হওয়ার তাকদীর লেখা হয়েছে তারা অবশ্যই বেরিয়ে আসতো তাদের 'শয়নক্ষেত্রে') এর তরজামা একজন করেছেন এভাবে– তারা অবশ্যই বেরিয়ে আসতো নিজেদের অবস্থান থেকে। এ তরজমা সুস্পষ্ট ভুল।
এই বের হওয়া যেহেতু সাধারণ বের হওয়া নয়, বরং এখানে দু'টি ভাব রয়েছে, প্রথমত নিজের ইচ্ছার বিরুদ্ধে নিয়তির টানে বের হওয়া, দ্বিতীয়তঃ দ্রুততা, এজন্যই خرج এর পরিবর্তে برز ব্যবহার করা হয়েছে; থানবী (রহ) তরজমা করেছেন نکل پڑتے (বেরিয়ে পড়তো)
مضاجع শব্দ ব্যবহারে কটাক্ষ রয়েছে। বাংলায় 'শয়নক্ষেত্রে' বললেই কটাক্ষভাব রক্ষিত হয়।

أسئلة :

١ – اشرح مادّةَ ثوبٍ على حَدِّ علمِك .
٢ – اشرح إعراب في أخراكم .
٣ – أعرب قوله : غما بغم .
٤ – أعرب غير الحق و ظن الجاهلية .
٥ – و الرسول يدعوكم في أخراكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – عليم ও خبير এর প্রতিশব্দ সম্পর্কে আলোচনা করো

(٥) وَ ما أَصَابكم يومَ التقى الجَمعٰنِ فَبِإذن الله وَ لِيعلمَ المؤمنين * و لِيعلمَ الذين نافَقوا ، و قيل لهم تَعالوا قاتِلوا في سبيل الله او ادفَعوا ، قالوا لو نَعلم قِتالا لا اتَّبعنٰكم، هم لِلكُفْرِ يومَئذٍ اَقرَبُ منهم للإيمان، يقولون بِأفواهِهم ما ليسَ في قُلوبهم، و الله أعلَم بما يكتُمون * الذين قالوا لِإخوانهم و قَعَدوا لو اَطاعونا ما قُتلوا ، قل فادرَءوا عن انفُسِكم الموتَ ان كنتم صٰدقين *

بيان اللغة

جَمْعٌ : (جمعه جُموع) الجَماعَة . المجتَمِعون . الجيش، و هو المراد هنا .

ادفعوا : دَفَع شيئا (ف، دَفْعًا) : أبعَدَه و نَحّاه و أزالَه بقوة . يقال : دفعته عني، و دفَع عنه الأذى و الشر .

قال الإمام الراغب : الدفع إذا عُدّيَ بـ : إلى اقتضى معنَى الإنالةِ، قال تعالى : فادفعوا إليهم أموالَهم

و إذا عدى بـ: عن اقتضى معنى الحِمايَة

ادرؤوا : أي ادفعوا و أبعدوا (ف، دَرْءًا)

بيان الإعراب

فبإذن الله : أي : فهو حاصل بإذن الله و الفاء رابطة، لأن في الموصول رَائحَة الشرط .

و ليعلم المؤمنين : اللام للتعليل، متعلق بما تعلق به الباء، أي : فهو حاصل بإذن الله و (حاصل) ليعلم المؤمنين .

و ليعلم : هذا المصدر المؤول معطوف على المصدر المؤول السابق .

و لك أن تعلقهما بفعل محذوف، أي : وفعل الله ذلك ليعلم المؤمنين و ليعلم الذين نافقوا .

تعالوا قاتلوا : الجملة الثانية بدل من الأولى، و ادفعوا معطوفة على قاتلوا

قالوا : هذه الجملة لا محل لها من الأعراب، مستأنفة بيانية .
هم للكفر يومئذ أقرب منهم للإيمان : هم مبتدأ، و الجار مع مجروره متعلق بـ : أقربُ .
و يومَ ظرف زمانٍ مضافٌ لظرف آخرَ، و هو متعلق بـ : أقربُ .
و التنوين في إذ تنوينٌ عِوَضٍ عن جملةٍ محذوفة، أي : يومَ إذ قالوا ذلك .
و أقرب خبر، و للإيمان يتعلق بـ : أقربُ مثلَ للكفر، أي : هم يومئذ أقربُ منهم، جُعِلَ المفضَّلُ و المفضَّلُ عليه واحدًا لاختلافِ الحَيْثِيَّةِ، أي : هم يومَئذٍ من حيثُ الكفرُ أقرَبُ منهم من حيثُ الإيمانُ .
الذين قالوا : الذين خبر لمتبدأ محذوف، أي : هم الذين قالوا لإخوانهم .
و قعدوا : الجملة حالية بتقدير قد .
فادرؤوا : جواب شرط مقدر، أي : إن كنتم صدقين في دعواكم فادرؤوا
كنتم صدقين : هذا شرط و جوابه محذوف دل عليه ما قبله .

الترجمة

আর যে বিপদ বিপর্যস্ত করেছে তোমাদেরকে দুই সৈন্যদল মুখোমুখি হওয়ার দিন তা আল্লাহরই হুকুমে হয়েছে এবং (হেয়েছে) যেন তিনি (বাস্তব ঘটনার মাধ্যমে) জানেন মুমিনদেরকে এবং যেন জানেন তাদেরকে যারা নিফাক করেছে। আর তাদেরকে বলা হলো, (যুদ্ধের ময়দানে) এসো; (তারপর সাহাস হলে) লড়াই করো, কিংবা (সাহস না হলে অন্তত সংখ্যাবৃদ্ধির মাধ্যমে) প্রতিরোধ করো। তারা বললো, যদি আমরা (এটাকে) যুদ্ধ বলে জানতাম (তাহলে) অবশ্যই অনুগমন করতাম তোমাদের। তারা সেদিন কুফরের অধিকতর নিকটবর্তী ছিলো তাদের ঈমানের (নিকটবর্তী হওয়ার) তুলনায়।
বলে তারা তাদের মুখে এমন কথা যা তাদের অন্তরে নেই। আর আল্লাহ তো বেশ জানেন (ঐ বিষয়) যা তারা (অন্তরে) গোপন রাখে।
তারা এমন লোক যারা (যুদ্ধ থেকে) বসে পড়ে, আপন ভাইদের

সম্পর্কে বলে, যদি তারা আমাদের কথা মানতো (তাহলে) তাদেরকে হত্যা করা হতো না (তারা নিহত হতো না)।
আপনি বলুন, (তাই যদি হয়) তাহলে হটাও দেখি তোমরা নিজেদের থেকে মৃত্যুকে, যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাকো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و ما أصابكم يوم التقى الجمعن (যে বিপদ বিপর্যস্ত তোমাদেরকে করেছে দুই সৈন্যদল মুখোমুখি হওয়ার দিন) এ তরজমা যেমন গ্রহণযোগ্য তেমনি আয়াতের তারতীবেরও অনুকূল। পক্ষান্তরে 'যে দিন দু'দল পরস্পর মুখোমুখী হয়েছিলো সেদিন তোমাদের উপর যে বিপর্যয় ঘটেছিলো তা ....' এ তরজমা গ্রহণযোগ্য হলেও আয়াতের তারতীবের বিপরীত। তাছাড়া এ তরজমায় দিন শব্দটি দু' বার ব্যবহৃত হয়েছে।

ما أصابكم এর বিকল্প তরজমা– তোমাদের উপর যে বিপদ (নেমে) এসেছিলো বা আপতিত হয়েছিলো।

بإذن الله (তা আল্লাহরই হুকুমে ঘটেছে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, – 'আল্লাহর অনুমতিক্রমে' কিন্তু বিষয়টি অনুমতির নয়, বিষয়টি হচ্ছে হুকুম ও ফায়ছালার, আর إذن শব্দটি উভয় অর্থেই ব্যবহৃত হয়।

(খ) فبإذن الله وليعلم المؤمنين (তা আল্লাহরই হুকুমে ঘটেছে এবং [ঘটেছে] যাতে তিনি জানেন) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, 'তা আল্লাহর অনুমতিক্রমেই ঘটেছে, যাতে তিনি জানতে পারেন', এখানে واو العطف না থাকলে এ তরজমা নিখুঁত হতো, কিতাবের তরজমায় আতফের তারকীব রক্ষিত হয়েছে। আর বন্ধনীতে (ঘটেছে) কথাটি যুক্ত করার যুক্তি এই যে, আতফ আমিলের তাকরার প্রমাণ করে।
দ্বিতীয় তারকীব অনুযায়ী তরজমা হবে এই– তা আল্লাহরই হুকুমে ঘটেছে, আর তিনি তা করেছেন যাতে তিনি জানেন মুমিনদেরকে এবং যেন জানেন তাদেরকে যারা নিফাক করছে।

(গ) لو نعلم قتالا (যদি আমরা [এটাকে] যুদ্ধ বলে জানতাম)

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'যদি আমরা যুদ্ধ করতে যানতাম তাহলে .....' এটা ভুল।

তারা যুদ্ধ না জানার অজুহাত পেশ করেনি; অসম যুদ্ধের আপত্তি করেছে। ঘটনা থেকেও যেমন এটি বোঝা যায়, তেমনি সাধারণ ভাষাজ্ঞান থেকেও বোঝা যায়।

(ঘ) هم للكفر يومئذ اقرب منهم للإيمان (তারা সেদিন কুফুরের অধিক নিকটবর্তী ছিলো তাদের ঈমানের নিকটবর্তী হওয়ার তুলনায়) একটু জটিল হলেও এ তরজমা মূলানুগ। অধিকাংশ বাংলা তরজমা এরূপ, সেদিন তারা ঈমান অপেক্ষা কুফুরের নিকটতর ছিলো, এ তরজমা সহজ হলেও মূলানুগ নয়। মূলের তারকীবগত বৈশিষ্ট্য ও সৌন্দর্য এখানে প্রকাশ পায়নি।

(ঙ) قعدوا এর متعلق হবে عن الحرب কিংবা في بيوتهم দ্বিতীয়টি হিসাবে তরজমা হবে, তারা (ঘরে) বসে থেকে আপন ভাইদের সম্পর্কে বলে।

থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় দুটোই বিবেচনায় এনেছেন। তাঁর তরজমা হলো, যারা যুদ্ধে না গিয়ে ঘরে বসে থেকে আপন ভাইদের সম্পর্কে বলে। কিতাবের তরজমায় শুধু প্রথমটিকে বিবেচনা করা হয়েছে।

(চ) তাই যদি হয়- এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, فادرؤوا এর পূর্বে شرط উহ্য রয়েছে।

فادرؤوا عن أنفسكم الموت (তাহলে হটাও দেখি তোমরা নিজেদের থেকে মৃত্যুকে) আয়াতের মাঝে চ্যালেঞ্জের যে ভাব রয়েছে তা প্রকাশ করার জন্য 'হটাও'-এর পরিবর্তে 'হটাও দেখি' বলা হয়েছে।

বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে, তবে নিজেদেরকে মৃত্যু থেকে বাঁচাও- এখানে অপ্রয়োজনে মূল তারকীব লঙ্ঘন করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح " دَفَعَ "

٢ - أعرب قوله : فبإذن الله ·

٣ - اشرح وَحْدَةَ المفضَّلِ و المفضَّلِ عليه في قوله : هم أقرب منهم ·

٤ - أعرب قوله : وقعدوا ·

(٦) وَ لا تحسَبنَّ الذين قُتلوا في سَبيل الله اَمْواتًا ، بل اَحياءٌ عندَ ربهم يُرزَقون * فَرحين بما اٰتهم اللّٰه من فَضْله و يَستبشِرون بالذين لم يَلحَقُوا بِهم من خَلفِهم، اَلاَّ خوف عليهم وَ لا هم يحزَنون * يَستبشِرون بنعمَةٍ منَ اللّٰه و فَضْلٍ، وَ ان اللّٰه لا يُضيع اجرَ المؤمنين * الذين استجابوا لله وَ الرسول من بَعد ما اَصابهم القَرْحُ، للذين احسَنوا منهم وَ اتقوا اجرٌ عظيم * الذين قال لهم الناس إن الناسَ قد جمَعوا لكم فاخشَوْهم فزادَهم إيمانا ، و قالوا حَسْبُنا اللّٰه و نِعم الوَكيل * فانقلَبوا بِنعمَة من الله و فَضلٍ لم يمسَسْهم سُوء، و اتبعوا رضوانَ الله، و الله ذُو فضلٍ عظيم *

بيان اللغة

يستبشرون : (يفرَحون)، و ليس الاستفعال هنا لِطَلَب االفعل، أي : لطلب البِشارَة، بل هو للفعل المجرد ، كقوله تعالى : و استغنى الله

لم يلحقوا : لحق به (لِحاقًا ، لُحوقًا ، س) أدركه، و لَصِق به و انضم إليه

ألحق فلانا بفلان : ضمه إليه، و نسبه إليه

أحسن : فَعل أو قال ما ما هو حَسَنٌ

أحسن الشيءَ : أجاد صَنْعَه و اَتقَنَه، قال تعالى : وصوركم فأحسن صوركم ٠

أحسن إليه : قدم إليه معروفًا و جَميلا و مُعاملة حَسَنةً

بيان الإعراب

الذين قتلوا : مفعول به أول لـ : لا تحسبن، و أمواتا مفعول به ثان، وفي سبيل الله متعلق بـ : قتلوا ، أو متعلق بمحذوف حال من نائب الفاعل، أي : مجاهدين في سبيل الله ٠

بل أحيـاء : بل هنا حرف عطفٍ يَعطِف جملةً على جملة، و أحيـاء خبر لمبتدأ محذوف، أي : هم أحيـاء، و ليست بل التي تَعطِف مُفرَدًا على مفرَدٍ، لأن المعنى حينئذ : لا تحسبنهم أحياءً، و هو فاسد

عند ربهم : ظرف متعلق بـ : يرزقون، أو هو متعلق بمحذوف خبر ثان، و هو : مقبولون عند ربهم .

و يرزقون : خبر ثالث أو ثان، أو هو في محل رفع نعت لأحياء .

فرحين بما ... : حال من ضمير يرزقون، و الموصول مع صلته متعلق بـ : فرحين، و من فضله متعلق بـ : اتاهم، و تكون من سببيةً .

ويجوز أن تكون من تبعيضيةً، تتعلق بـ : حال محذوفة أي : بما اتاهم الله كائنا من فضله

و يستبشرون بالذين : الجملة معطوفة على فرحين؛ لأن الصفة المشبهة تُشبه المضارعَ، فالمعنى : يفرحون و يستبشرون، و في هذا الإعراب الجملة معطوفة على الحال . و يجوز أن يكون أصل العبارة : و هم يستبشرون . فالجملة الاسمية في محل نصب حال من ضمير فرحين، و قدر المبتدأ لأن واو الحال لا تباشر المضارع المثبت .

و من خلفهم متعلق بمحذوف حال من فاعل يلحقوا، أي : كائنين أو باقين من خلفهم

أن لا خوف : أن مخففة من المثقلة، أي : أنه، و لا خوف عليهم في محل رفع خبر أن المخففة .

و المصدر المؤول مجرور محلا، أي : بأن لا خوف، و هو متعلق بـ : يستبشرون .

و خوف مبتدأ مرفوع، و عليهم متعلق بخبر محذوف .

و لا هم يحزنون : الواو عاطفة و لا زائدة لتاكيد النفي

من الله : متعلق بصفة محذوفة، أي نازلةٍ من الله، و فضل معطوف على نعمة، و متعلقه محذوف بالقرينة السابقة، و المصدر المؤول معطوف على نعمة .

الذين استجابوا : خبر لمبتدأ محذوف، أو نعت لـ : المؤمنين

الذين قال لهم الناس : الموصول في محل نصب مفعول به لفعل محذوف، أي أمدح

لم يمسسهم سوء : الجملة حال من فاعل انقلبوا

الترجمة

(হে সম্বোধিত ব্যক্তি) যাদেরকে কতল করা হয়েছে আল্লাহর রাস্তায় তাদেরকে মৃত ধারণাও করো না, বরং (তারা) জীবিত, তাদের প্রতিপালকের নিকট তাদেরকে রিযিক প্রদান করা হয়; অবস্থা এই যে, আল্লাহ্ আপন অনুগ্রহে তাদেরকে যা দান করেছেন তাতে তারা আনন্দিত এবং তারা আনন্দ প্রকাশ করে ঐ লোকদের সম্পর্কে যারা (শাহাদাতের মাধ্যমে) যুক্ত হয়নি তাদের সঙ্গে, (বরং) তাদের পিছনে রয়েছে, (আনন্দ প্রকাশ করে এই মর্মে) যে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তাদের দুশ্চিন্তাগ্রস্ত হবে না। তারা আনন্দ প্রকাশ করে আল্লাহর পক্ষ হতে প্রাপ্ত নেয়ামত ও দান সম্পর্কে এবং এ সম্পর্কে যে, আল্লাহ্ নষ্ট করেন না মুমিনদের আজর।

যারা আল্লাহ্ ও রাসূলের ডাকে সাড়া দিয়েছে জখম তাদেরকে বিপর্যস্ত করার পরও; তাদের মধ্য হতে যারা নেক আমল করেছে এবং তাকওয়া অবলম্বন করেছে তাদের জন্য রয়েছে বিরাট প্রতিদান।

(আমি প্রশংসা করি ঐ লোকদের) যাদেরকে (আবদে কায়স গোত্রের) লোকেরা বলেছিলো, (মক্কার) লোকেরা অতি অবশ্যই (লোকলস্কর) একত্র করেছে তোমাদের (মোকাবেলার) জন্য, সুতরাং ভয় করো তোমরা তাদেরকে। কিন্তু এ কথা তাদের ঈমান (আরো) বাড়িয়ে দিয়েছিলো, আর তারা বলেছিলো, আমাদের জন্য যথেষ্ট আল্লাহ্। আর তিনি কত না উত্তম ব্যবস্থাপক! অনন্তর তারা ফিরে এলো আল্লাহর পক্ষ হতে (অবতীর্ণ) নেয়ামত ও দানে পরিপূর্ণ হয়ে, এমনভাবে যে, স্পর্শ করেনি তাদেরকে কোন মন্দ। আর তারা অনুগমন করেছে আল্লাহর সন্তুষ্টির। আর আল্লাহ্ বিরাট অনুগ্রহের অধিকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) (হে সম্বোধিত ব্যক্তি) এ দ্বারা এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, এখানে সম্বোধন নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামকে খাছ

নয়, বরং তা আম।

(খ) 'যাদেরকে কতল করা হয়েছে'- এ তরজমা করা হয়েছে থানবী (রহ)-কে অনুসরণ করে। বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে 'যারা নিহত হয়েছে', এ তরজমা ভুল নয়, তবে নির্ভুলও নয়।

لا تحسبن (ধারণাও করো না) এর তরজমায় তাকীদের দিকটি বিবেচিত হওয়া উচিত। শায়খায়নের তরজমায় তাকীদ রক্ষিত হয়নি। তারা লিখেছেন, نه سمجھ এবং مت خيال كر (ধারণা করো না) অথচ থানবী (রহ) অন্যান্য ক্ষেত্রে لا تحسبن এর তরজমা করেছেন, هر گز مت خيال كر বাংলা তরজমাগুলোতে তাকীদের জন্য 'কখনো' 'কিছুতেই' ইত্যাদি শব্দ এসেছে। কিতাবে অনুসৃত পন্থাই এ ক্ষেত্রে উত্তম।

(গ) فرحين (অবস্থা এই যে,) হালের তারকীব রক্ষা করে এ তরজমা করা হয়েছে। থানবী (রহ) ও শায়খুলহিন্দ (রহ) স্বতন্ত্র বাক্যের তরজমা করেছেন। বাংলা মুতারজিমগণ তা অনুসরণ করেছেন।

فرحين কে অর্থগতভাবে مضارع বিবেচনা করেই يستبشرون কে তার উপর عطف করা হয়েছে। সুতরাং উভয় ক্ষেত্রেই মোযারে দ্বারা তরজমা করা যায়, যেমন কেউ কেউ করেছেন, কিন্তু কিতাবে শব্দগত দিক অনুসরণ করে উভয় ক্ষেত্রের তরজমায় পার্থক্য করা হয়েছে।

'আপন অনুগ্রহে'- এখানে ب কে سبب এর অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে।

(ঘ) من بعدما أصابهم القرح (জখম তাদেরকে আক্রান্ত করার পরও) এখানে من অব্যয়টি অতিরিক্ত রূপে এসেছে তাকীদের জন্য। কিন্তু যদি এভাবে তরজমা করা হয়, 'জখম হওয়ার পর বা আঘাত পাবার পর যারা ...., তাহলে তাকীদের ভাবটি ছুটে যায়। তাছাড়া আয়াতের তারতীব থেকেও বিচ্যুতি ঘটে। কিতাবের তরজমায় তাকীদ ও তারতীব (যথাসম্ভব) বিবেচনা করা হয়েছে।

(ঙ) الذين قال لهم এটিকে উহ্য أمدح এর مفعول به বিবেচনা করে তরজমা করা হয়েছে।

ل অব্যয়টি বিরুদ্ধতা বোঝায় না, সুতরাং 'তোমাদের বিরুদ্ধে

জমা করেছে' এ তরজমা ঠিক নয়, শায়খায়ন তরজমা করেছেন- তোমাদের মোকাবেলার জন্য।

থানবী (রহ) 'মোকাবেলা'কে বন্ধনীর মাঝে রেখেছেন।

إن الناس قد جمعوا لكم এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'লোক জমায়েত হয়েছে'- এ তরজমা ভুল।

(চ) শায়খুলহিন্দ (রহ) حسبنا الله (আমাদের জন্য যথেষ্ট আল্লাহ্) এর তরজমায় তারতীব রক্ষা করেছেন; কোন কোন বাংলা তরজমায় তা রক্ষা করা হয়নি।

أسئلة :

١ - ماذا تعرف عن : أَحْسَنَ

٢ - أعرب قوله تعالى : أحياء عند ربهم يرزقون

٣ - كيف جاز عطف الفعل المضارع على الصفة المشبهة ؟

٤ - أعرب قوله : من خلفهم

٥ - لا تحسبن এর তরজমা পর্যালোচন করো

٦ - يستبشرون ও فرحين এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) فَان كذبُوك فَقد كُذب رسُل من قَبلِك جاءوا بالبينٰت و الزبُر و الكتٰب المنير * كل نفسٍ ذائقَةُ الموتِ، وَ اِنما تُوفَّونَ اُجورَكم يومَ القيٰمةِ، فمن زُحزح عن النار و ادخِلَ الجنةَ فقد فاز، و ما الحيٰوة الدنيا اِلا مَتاع الغُرور * لَتُبلَون في اَموالِكم و اَنفسِكم، وَ لتسمعُنَّ من الذين اُوتوا الكتٰب من قبلِكم و منَ الذين اَشركوا اذًى كثيرًا، و ان تَصبِروا و تتقوا فَان ذلك من عَزم الامور *

بيان اللغة

الزبر : جمع زَبْرٍ و هو مصدر سمي به المكتوب، كالكتاب، ثم جُمع على زُبرٍ كما جُمع كتابٌ على كتب

نفس : جمعه أنفس و نفوس، و معنى النفسِ الروحُ، كما في قوله تعالى :

أَخرِجوا أنفسَكم، يقال : خرجت نفسُه، و جادَ بنفسه، أي : مات
و النفس ذاتُ الشيءِ، قال تعالى : تعلم ما في نَفسي وَ لا أعلم ما في نَفسِك ٠
و نفسُ الشيءِ عينُ الشيءِ يقال : جاء هو نفسُه و بنفسه ٠
و النفسُ قوة باطنيَّةٌ في داخل الإنسان، يقال : النفس المطمئنة (مؤنثة)

توفون : وَفَّى فلانًا حَقَّه (توفيةً) أعطاه إياه وافيا تاما
قال تعالى : إنما يُوَفَّى الصابرون أجرَهم بغير حساب
و قال : من كان يريد الحيوة الدنيا و زينتها نوف إليهم أعمالهم فيها
و قال تعالى : و إبراهيم الذي وفى، أي : أَدَّى جميعَ ما طُولِبَ به ٠

أذًى : الأذى مايَصل إلى الحيَوان من الضرَر ٠
و أذي فلان (س، أَذًى) أصابه أذًى، و أَذِيَ بشيءٍ : تَضَرَّر به و تَأَلَّم منه ٠
آذاه (يؤذيه إيذاءً و أَذِيَّة و أَذًى) أصابه بِأَذًى ٠
تَأَذَّى به : أذي به

عزمِ الأمور : أي الأمورِ التي يُعزَم عليها، فالمصدر بمعنى اسم المفعول
عزم فلان (ض، عَزْمًا و عَزيمةً) جَدَّ و صَبَر স্থীর প্রতিজ্ঞ ও ধৈর্যপূর্ণ হলো
عَزَمَ الأمرَ و على الأمرِ : أراد فعلَه إرادةً قويةً

بيان الإعراب

كذبوك : شرط جوابُه محذوف، أي : فاصبِر كما صبَر الرسل قبلَك حين تكذيبِ الناس إياهم
فقد كذب رسل : الفاء تعليلية، و من قبلك متعلق بصفة لـ : رسلٌ، و جملة جاؤوا صفة ثانية لـ : رسل أو حال
و إنما : الواو استئنافية، و أجورَكم مفعول به ثان لـ : توفون
فمن زحزح : الفاء استئنافية، و من اسم شرط جازم في محل رفع مبتدأ، و الشرط وجوابه خبر المبتدأ

و الإعراب الآخر أنَّ مَنْ اسمٌ موصولٌ و شرطٍ، و الجملة الأولى صلته و شرطه، و الموصول مع صلته مبتدأ و جواب الشرط هو خبر المبتدأ

و ما الحيوة الدنيا إلا متاع الغرور : ما نافية مهملة، و الحيوة الدنيا مبتدأ، و إلا أداة حصر لا محل لها من الإعراب، و متاع الغرور خبر المبتدأ

لتبلون : اللام واقعة في جواب القسَم المقدر، و الجملة بعدها جواب القسَم .

من قبلكم : متعلق بمحذوف حال من نائب الفاعل

أذى : مفعول به لـ : تسمعن

فإن ذلك من عزم الأمور : الجملة المقترنة بالفاء لا محل لها من الإعراب، لأنها تعليل لجواب الشرط المحذوف، و الفاء تعليلية، أي : إن تصبروا و تتقوا فهو خير لكم فان ذلك ....

و لك أن تجعلها هو الجوابَ، و تكون الأشارة إلى صبر المخاطبين .

الترجمة

অনন্তর যদি 'ঝুটলায়' তারা আপনাকে তাহলে (দুঃখ করবেন না, কেননা) ঝুটলানো হয়েছে বহু রাসূলকে আপনার পূর্বে, যারা এনেছিলেন সুস্পষ্ট প্রমাণাদি এবং বিভিন্ন ছহীফা এবং প্রদীপ্ত কিতাব।

প্রত্যেক প্রাণই মৃত্যু আস্বাদন করবে। আর পূর্ণরূপে প্রদান করা হবে তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিদান কেয়ামতেরই দিন।

সুতরাং যাকে দূরে রাখা হবে জাহান্নাম থেকে এবং দাখেল করা হবে জান্নাতে সে-ই সফলকাম হবে। আর দুনিয়াবী যিন্দেগী তো ধোকার সামান ছাড়া কিছুই নয়। অবশ্যই (আগামীতে) পরীক্ষা করা হবে তোমাদেরকে তোমাদের মালের ক্ষেত্রে এবং তোমাদের জানের ক্ষেত্রে (তাতে ক্ষতি দিয়ে)। আর অতিঅবশ্যই তোমরা শোনতে পাবে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তোমাদের পূর্বে এবং যারা 'শিরক' করে তাদের পক্ষ হতে কষ্টদায়ক কথা, তবে যদি তোমরা ছবর করো এবং তাকওয়া অবলম্বন করো তাহলে (তা তোমাদের জন্য কল্যাণকর হবে, কেননা) সেটা হচ্ছে দৃঢ় প্রতিজ্ঞার কর্মবিশেষ।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) 'তাহলে দুঃখ করবেন না' এটি جواب الشرط উহ্য থাকার প্রতি ইঙ্গিত, কারণ পরবর্তী বাক্যটি جواب الشرط হওয়ার উপযুক্ত নয়।

(খ) বহু রাসূলকে, এতে ইংঙ্গিত রয়েছে যে, رسل এর তানবীন হচ্ছে আধিক্য প্রকাশের জন্য।

(গ) كل نفس ذائقة الموت (প্রত্যেক প্রাণই মৃত্যু আস্বাদন করবে) نفس যেমন প্রাণ অর্থে ব্যবহৃত হয় তেমনি প্রাণী অর্থেও ব্যবহৃত হয়। সুতরাং উভয় তরজমা এখানে চলতে পারে।
প্রত্যেক প্রাণই মৃত্যু আস্বাদন করবে। এটি তারকীবানুগ তরজমা। প্রচলিত তরজমা। প্রতিটি প্রাণীকেই মৃত্যুর স্বাদ গ্রহণ করতে হবে।

(ঘ) 'কেয়ামতেরই দিন', এই সীমাবদ্ধায়নটি এসেছে إنما থেকে। এর অর্থ এই যে, কিয়ামতের আগে পূর্ণ জাযা দেয়া হবে না। আংশিক দেয়া হতে পারে, বা দেয়াই না হতে পারে।
এ তরজমা থানবী (রহ) এর অনুসরণে। কোন কোন বাংলা তরজমায় إنما কে বিবেচনায় আনা হয়নি।

(ঙ) দুনিয়াবী যিন্দেগী- বিকল্প তরজমা- দুনিয়ার যিন্দেগী, কিংবা পার্থিব জীবন।

أسئلة :

١ - ماذا تعرف عن كلمةِ نفسٍ ؟
٢ - أعرب قوله : من قبلك ·
٣ - اشرح إعرابَ كلمة الموتِ ·
٤ - أعرب قوله : أذىً كثيرًا ·
٥ - رسل এর তরজমা 'বহু রসূলকে' করার কারণ কী ?
٦ - إنما توفون اجوركم يوم القيمة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) وَ إذ اخذَ الله ميثاقَ الذين اُوتوا الكِتٰب لَتُبيِّنُنَّه للناس و لا
تكتُمونه، فَنَبذوه وراءَ ظهورهم و اشتَرَوا به ثَمنًا قليلا،
فَبِئس ما يَشترون * لا تحسَبَنَّ الذين يفرَحون بما اَتَوا و

يُحِبُّونَ أن يُحمَدُوا بما لم يَفعلوا فَلا تحسَبَنهم بِمفازَة منَ العَذابِ، وَ لهم عذاب أليم * وَ لله مُلك السمٰوٰت وَ الارضِ، و الله على كلِّ شيءٍ قدير *

بيان اللغة

نَبذوه : طَرَحوه (نَبْذًا، ن) النبذ : إلقاء الشيء و طرحُه لِقلّةِ الاعتداد به، فيقال : نبذتُه نبذَ النعلِ الخَلِق ؛ قال تعالى : فأخذناه و جنوده فنبذناهم في اليم ·

مَفازة : فازَ بالخير (ن، فَوْزًا، مَفازًا، مَفازَةً) কল্যাণ অর্জন/লাভ করলো
فازَ من الشر : نجا و تَخلص
قال الإمام الراغب : المفازَة مصدرٌ فاز، و الاسم الفوز
قال تعالى : فلا تحسبنهم بمفازة من العذاب، أي : لا تحسبنهم يفوزون و يتخلصون من العذاب ·

بيان الإعراب

و إذ أخذ الله : هذه الاية لِبيَان كِتمانهم شواهدَ نبوته صلى الله عليه وسلم، و الواو استئنافية، و الظرف متعلق بمحذوف، أي : اذكر وقتَ أخذِ الله ميثاقَهم، و الجملة في محل جر بالإضافة ·

لَتبيننُّه : اللام لام القسَم الذي يدل عليه أخذُ الميثاق، كأنه قال لهم : بالله لتبيننه

ولا تكتمونه : الجملة معطوفة على السابقة أو الواو حالية ·

بئس ما يشترون : بئس فعل ماض جامد لإنشاء الذم، و ما نكرة موصوفة بمعنى شيءٍ في محل نصب على التميز، و هي مفسِّرة لفاعل بئس، أي بئس (هو) شيئًا و جملة يشترون صفة لـ : ما ·

و يجوز أن تكون ما مصدرية، و الجملة مصدر مؤول، أي : بئس شراؤهم، و هو الفاعل، و المخصوص بالذم محذوف أي : هذا ·

الذين يفرحون بما أتوا : الموصول مع صلته مفعول، و الجار مع مجروره متعلق بـ : يفرحون .

أن يحمدوا : هذا المصدر المؤول مفعول به، و بما لم يفعلوا متعلق بـ : يحمدوا

فلا تحسبنهم : الفاء زائدة لتحسين اللفظ، و لا تحسبن هذا مثلُ الأول جاء مكرَّراً لطولِ الكلام المتَّصِلِ بالأولِ .

بمفازة من العذاب : الجار في موضع المفعول به الثاني لـ : تحسبنهم، و من العذاب يتعلق بصفة محذوفة لـ : مفازة، إن اعتُبِرت اسم مكان. و بمفازة إن اعتبرت مصدرًا ميميًّا .

الترجمة

(আর স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন গ্রহণ করেছেন আল্লাহ্ তাদের প্রতিশ্রুতি যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে যে, অবশ্যই তোমরা সুস্পষ্টরূপে বর্ণনা করবে কিতাব (এর সমুদয় বাণী) কে সাধারণ মানুষের জন্য, আর তা গোপন করবে না। অনন্তর ছুঁড়ে ফেললো তারা ঐ প্রতিশ্রুতিকে তাদের পিঠের পিছনে এবং খরিদ করলো তার বিনিময়ে 'অল্পমূল্য'। সুতরাং কত না মন্দ, যা তারা খরিদ করছে।

(হে সম্বোধিত ব্যক্তি) তুমি মনেই করো না তাদেরকে যারা নিজেদের কৃত (মন্দ) কর্মের প্রতি খুশী হয় এবং চায় যে, যে (নেক) কাজ তারা করেনি তার জন্য তাদের প্রশংসা করা হোক, তুমি মনেই করো না তাদেরকে যে, তারা (দুনিয়াতে) বিশেষ আযাব থেকে বেঁচে যাবে। আর (আখেরাতে) তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

আর আল্লাহরই জন্য রয়েছে আসমানের ও যীমনের রাজত্ব। আল্লাহ্ সকল কিছুরই উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ... ميثاق الذين এটি مركب إضافي কিতাবের তরজমায় এ তারকীব রক্ষা করা হয়েছে, যদিও বাংলা (এবং উর্দূ) বাক্যের স্বাভাবিক কাঠামো হিসাবে তরজমা হয়- 'কিতাবীদের থেকে প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছেন'। শায়খায়ন তা-ই করেছেন। কিন্তু

কিতাবের তরজমার মূলনীতি হলো অপ্রয়োজনে মূল থেকে সরে না যাওয়া।

(খ) থানবী (রহ) لتبينن এর তরজমা করেছেন, তোমরা 'প্রকাশ করে দেবে'। 'প্রকাশ করবে'-এর পরিবর্তে এ তরজমা করার কারণ হচ্ছে তাকীদ রক্ষা করা। শায়খুলহিন্দ (রহ) তা করেন নি।

কিতাবের তরজমায় তাকীদের অর্থ প্রকাশ করা হয়েছে স্বতন্ত্র শব্দ 'অবশ্যই' দ্বারা। আর বিষয়টির স্পষ্টায়নের জন্য যামীরের পরিবর্তে ইসমে যাহির ব্যবহার করা হয়েছে।

(গ) فنبذوه وراءَ ظهورهم (অনন্তর ফেললো তারা ঐ প্রতিশ্রুতিকে তাদের পিঠের পিছনে ছুঁড়ে) 'পিঠের পিছনে' এর পরিবর্তে 'পৃষ্ঠের পশ্চাতে' হতে পারে। উদ্দেশ্য, তুচ্ছ ভেবে আমল না করা।

এখানে স্পষ্টায়নের জন্য যামীরের مرجع উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) واشتروا به ثمنًا قليلًا (এবং খরিদ করলো তার বিনিময়ে 'অল্পমূল্য') মানুষ বস্তুর বিনিময়ে মূল্য ক্রয় করে না, বরং মূল্যের বিনিময়ে বস্তু ক্রয় করে। এখানে তারতীব পরিবর্তনের উদ্দেশ্য হলো তুচ্ছ মূল্যের প্রতি তাদের আগ্রহের বিষয়টি প্রকাশ করা। কিতাবের তরজমায়ও মূলের তারতীব অনুসরণ করা হয়েছে। অবশ্য اشتروا কে أخذوا এর অর্থে গ্রহণ করে এই তরজমা করা যায়, 'তার বিনিময়ে তারা অল্পমূল্য গ্রহণ করেছে।'

(ঙ) طول الفصل এর কারণে لا تحسبن এর তাকরার হয়েছে। তরজমায় সেটা বিবেচনায় রাখা সঙ্গত। শায়খুলহিন্দ (রহ) তা করেছেন, থানবী (রহ) করেননি। বাংলা তরজমা-গুলোতেও করা হয়নি।

মনেই করো না'- এ তরজমা করা হয়েছে তাকীদ প্রকাশের জন্য।

থানবী (রহ) লিখেছেন, কিছুতেই কিছুতেই মনে করো না। সম্ভবত তিনি لا تحسبن এর تكرار -এর স্থলে শুধু তাকীদ-শব্দের تكرار করেছেন।

(চ) 'বিশেষ প্রকারের আযাব' এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি বলেন, العذاب এর ال কে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক ধরে এ তরজমা করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ مفازةٍ .
٢ – كيف يكون اللام لامَ القسَم في قوله لتبيننه .
٣ – و لا تكتمونه : إن كانت هذه الواو للحال فكيف اتت قبل المضارع .
٤ – بم يتعلق قوله : بمفازة من العذاب ؟
٥ – لتبينن এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – و اشتروا به ثمنا قليلا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٩) إن في خَلقِ السمٰوٰت و الارضِ وَ اختلاف الَّيلِ و النهار لاٰيٰتٍ لِاُولي الاَلْباب * الذين يذكُرون الله قِياماً و قُعوداً و على جُنوبِهم و يتفكرون في خَلق السمٰوٰت وَ الارض، ربَّنا ما خلقتَ هذا باطلًا، سُبحنك فَقِنا عذابَ النار * ربنا اِنك مَنْ تُدخِل النار فَقد اخزيتَه، و ما للظّٰلمين من اَنصار * ربنا اِننا سَمعنا مُناديا يُنادي للإيمان اَنْ اٰمِنوا بربكم فَاٰمنا، ربنا فاغفِر لنا ذنوبَنا و كفِّر عنا سَيِّاٰتنا و توفَّنا مع الاَبرار* ربنا و اٰتِنا ما وَعدتنا على رُسلِك و لا تُخزِنا يومَ القيٰمة، انك لا تُخلف الميعاد *

بيان اللغة

قياما : جمع قائم، و قُعودًا جمع قاعدٍ، و جُنوب جمع جَنْبٍ .
أخزيته : أهنته و أذللته و فضحته (ف، فضحا)
أخزاه : أخجَله، قال تعالى حكايةً عن قول لوطٍ لقومه : فاتقوا الله و لا تُخزون في ضيفي .

خَزِى (س، خَزًى و خِزْيَةً) : ذَلَّ و افتضَح
توفنا : تَوفَّى حقه (تَوفِّيا) أخذ حقه أخذًا وافيا .
و قد عُبر عن الموت و النوم بالتَّوَفِّي، قال تعالى : الله يَتَوفى الأنفسَ حين موتها، و قال : هو الذي يتوفاكم بالليلِ .
الأبرار : جمع بَرٍّ، و البَرَرة جمع بَارٍّ : صالحٌ، مطيع، محسن، صادق
بَرَّ خالقَه : أطاعَه، و بَرَّ والديه : أحسن إليهما (س، بِرًّا)
البِرُّ : الخير، الصلاح، الصِّدق، العمل الصالح .

بيان الإعراب

لآيٰت : اللام لام التوكيد، تدخل على المبتدأ و اسم إن، و لِأُولى الألَباب متعلق بمحذوف نعتٌ لأيات، أي : نافعةٌ .
الذين يذكرون الله : صفة لـ :أولى الألباب، أو بدَل منه، أو خبَر لمبتدأٍ محذوف، أي : هم الذين، أو في محل نصب علي المدح، أي أمدح الذين ...
و قِياما و قُعودا حالان، و على جُنوبهم متعلق بمحذوف هو حال، أي : مضطجعين، و المعنى : يذكرون الله في جميع الأحوال .
ربنا : جملة النداء في محل نصب مقول القول المحذوف، أي : يقولون ربنا ... و هذه الجملة حال من فاعل يذكرون و يتفكرون .
و باطلا منصوب بنزع الخافض أي بالباطل، و عند الزمخشري هو نائب عن المصدر و صفته، أي : خلقًا باطِلاً .
سُبحنك : مفعول مطلق و هو مَع فعلِه المحذوف جملة معترضة، لا محل لها من الإعراب، و الفاء عاطفة للترتيب، أي : نَزَّهناك فَقِنا
وَ يجوز أن يكونَ فَقِنا جوابَ شرطٍ مقدَّر، أي : إذا شئتَ جزاءَنا فَقِنا
من تدخل النار فقد أخزيتَه : من اسم شرط جازم في محل نصب مفعول به مقدم، و تُدخل النار شرط، والفاء رابطة لجواب الشرط لِاقْترانِ الجواب بِقَدْ، و أخزيتَه في محل جزم جواب الشرط .
و الجملة الشرطية في محل رفع خبر إن

ينادي للإيمان : اللام للتعليل أو بمعنى إلى، تتعلق بـ : ينادي، و أن حرف التفسير، و هو الواقع بعد جملة فيها معنى القول دون حروفه، و الجملة بعده لا محل لها من الإعراب، مفسرة للجملة السابقة .

على رسلك : متعلق بـ : و عدتنا، على حذفِ مضافٍ، أي : على أَلْسِنَةِ رُسلِك، أو يتعلق بحال محذوفة، أي منزلا على رسلك .

الترجمة

আকাশমণ্ডল ও পৃথিবীর সৃষ্টিতে এবং রাত্রি ও দিবসের আবর্তনে অতিঅবশ্যই নিদর্শনাবলী রয়েছে, জ্ঞানের অধিকারীদের জন্য, যারা স্মরণ করে আল্লাহকে দাঁড়ানো অবস্থায় এবং বসা অবস্থায় এবং পার্শ্বশয়ন করা অবস্থায় এবং চিন্তা করে আকাশমণ্ডল ও পৃথিবীর (আর বলে, হে) আমাদের প্রতিপালক! সৃষ্টি সম্পর্কে আপনি একে সৃষ্টি করেন নি নিরর্থক সৃষ্টি করা। আমরা আপনার পবিত্রতা বর্ণনা করি, সুতরাং রক্ষা করুন আপনি আমাদেরকে জাহান্নামের আযাব থেকে। (হে) আমাদের প্রতিপালক, আপনি যাকে দাখেল করবেনজাহান্নামে নিঃসন্দেহে তাকে তো আপনি অপদস্থই করবেন। আর যালিমদের তো কোনই সাহায্যকারী নেই।

(হে) আমাদের প্রতিপালক! অবশ্যই আমরা শুনেছি এক আহব্বানকারীকে ঈমানের দিকে আহ্বান জানাতে যে, ঈমান আনো তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের প্রতি, তাই আমরা ঈমান এনেছি। (হে) আমাদের প্রতিপালক! সুতরাং আপনি আমাদের অনুকূলে আমাদের (বড় বড়) গোনাহ মাফ করুন, এবং আমাদের থেকে মোচন করুন আমাদের (ছোট ছোট) বদ আমল এবং ওয়াফাত দান করুন আমাদেরকে নেককারদের সঙ্গে।

(হে) আমাদের প্রতিপালক! আর আপনি আমাদেরকে দান করুন, যা আপনি আমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন আপনার রাসূলদের যবানীতে। আর অপদস্থ করবেন না আপনি আমাদেরকে কেয়ামতের দিন, আপনি তো খেলাফ করেন না ওয়াদা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) অতিঅবশ্যই– إن ও لام التوكيد দুটোর তাকীদরূপে দুটি তাকীদী শব্দ যোগ করা হয়েছে।

(খ) لأولي الألباب এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'বোধ শক্তি-সম্পন্নদের জন্য' এটি সঠিক তরজমা নয়। কারণ এটি أولو الألباب এর তুলনায় লঘু শব্দ। শায়খায়ন তরজমা করেছেন, 'আকল ওয়ালাদের জন্য'।

(গ) قياما وقعودا এর পরে رقودا و না বলে, اسلوب পরিবর্তন করে على جنوبهم و বলা হয়েছে, সুতরাং 'শুয়ে বা শোয়া অবস্থায়' এমন তরজমা করা ঠিক নয়। সঠিক তরজমা হলো, পার্শ্বশয়ন করা অবস্থায়। পার্শ্বশয়নের কথা বলার কারণ এই যে, এটি হচ্ছে মানুষের শোয়ার সর্বোত্তম ছুরত।

(ঘ) تدخل النار অনেকে তরজমা করেছেন 'জাহান্নামে ফেলা বা নিক্ষেপ করা' এবং তা ভুল নয়। তবে মনে রাখতে হবে যে, নিক্ষেপের জন্য আরবীতে আলাদা একাধিক শব্দ রয়েছে তারপরও আল্লাহ তা'আলা تدخل শব্দটি ব্যবহার করেছেন। সুতরাং তরজমার ক্ষেত্রে বিষয়টি বিবেচনায় থাকা দরকার।

(ঙ) فقد أخزيته (তাকে তো আপনি অপদস্থই করবেন) 'তো' হচ্ছে قد এর তরজমা। আর ماضي এর সুনিশ্চিতি প্রকাশ করার জন্য 'ই' যোগ করা হয়েছে।

(চ) 'আমাদের অনুকূলে' এটি لنا এর তরজমা, যা অধিকাংশ মুতারজিমের তরজমায় ছুটে গেছে।

أسئلة :

١ - اشرح معنى التوفي .

٢ - أعرب قوله : على جنوبهم .

٣ - أعرب قوله : و ما للظالمين من أنصار .

٤ - ما إعراب قوله : باطلا ؟

٥ - على جنوبهم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - من تدخل النار এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١٠) فَاستجابَ لهم رَبهم أني لا أُضِيع عمَلَ عامِلٍ منكم من ذكَرٍ أَو أُنثى، بعضُكم من بعضٍ، فالذين هاجَروا و أُخرجوا من ديارهم و أُوذوا في سَبيلي و قٰتلوا و قُتلوا لَأُكَفِّرن عنهم

سَيِّئَاتِهِم و لَأُدخِلَنَّهم جَنّٰتٍ تجري من تحتها الانهار، ثَوابًا من عندِ اللّٰه، و اللّٰه عِندَه حُسْنُ الثَّواب *

بيان اللغة

ذكر أو انثى : الذكَر ضِدُّ الأُنْثٰى নর, পুরুষ قال تعالى: و ليس الذكر كالأنثى، و جمعه ذُكور و ذُكْران

قال تعالى : ذُكرانًا و إناثا ، و الأنثى خلاف الذكر و جمعه إناث নারী

حُسنٌ : الحُسن الجمال و الطِّيب، و الحُسن كل طيب مرغوب فيه، و جمعه محاسن (على غير القياس)

حَسُنَ (حُسْنًا ، ك) : جَمُل، طاب، فهو حَسَن، و هي حَسْناءُ، و جمعهما حِسان ·

بيان الإعراب

أني لا أضيع : المصدر المؤول في مَحَل نصب بنزع الخافض، و هو هنا باءُ السبَبِ، أي : فاستجابَ لهم ربهم بسبَبِ أني لا أضيع ...

منكم : متعلق بمحذوف هو صفة لـ : عامل، من ذكر متعلق بمحذوف هو حال من عامل، لأنه نكرة موصوفة، أي : عامل معدود منكم حالةَ كونِه من ذكَر أو أنثٰى

أو هو صفة ثانية لـ : عامل · و يجوز أن يكون بدلا مُطابِقا من : منكم

بعضكم من بعض : مبتدأ و متعلق بخبر محذوف، و الجملة مستأنفة لبَيان شِرْكَةِ النساء مَعَ الرجال في الثواب ·

الذين : اسم موصول، و الجمل التي بعده صلاته، و الموصول مع صلاته مبتدأ، و الجملة القَسَمية خبر المبتدأ ·

لأكفرن : اللام داخلة على جواب قسَم محذوف ·

و لأدخلنهم : و الواو عاطفة عطفت بها : لأدخلنهم على : لأكفرنهم

ثوابا : مفعول مطلق لفعل محذوف، يفيد التاكيدَ، أي يُثابون ثوابًا ·

ويجوز أن يكون في موضع الحال من ضمير المفعول به، و المصدر مؤول باسم المفعول، أي : مثابين بها .

من عند الله : حرف الجر متعلق بنعت محذوف لـ : ثوابا ، أي : ثوابا مقدما من عند الله .

الترجمة

তো মঞ্জুর করলেন তাদের প্রতিপালক তাদের দু'আ, কারণ আমি বরবাদ করি না তোমাদের কোন আমলকারীর আমল, হোক নর, কিংবা নারী। তোমরা একে অপরের মধ্য হতে গণ্য।

সুতরাং যারা হিজরত করেছে এবং বহিষ্কৃত হয়েছে নিজেদের বাড়ীঘর থেকে এবং নিপীড়িত হয়েছে আমার পথে এবং লড়াই করেছে এবং (তাদের অনেকে) নিহত হয়েছে অবশ্যই মোচন করে দেবো আমি তাদের থেকে তাদের সমস্ত মন্দ আমল এবং অবশ্যই দাখেল করবো আমি তাদেরকে এমন বাগবাগিচায় যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় বিভিন্ন নহর। এটা আল্লাহর পক্ষ হতে বিনিময়রূপে দেয়া হবে। আর আল্লাহ, তাঁরই নিকট রয়েছে উত্তম বিনিময়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) তো – এটি فاء الاستئناف এর তরজমা। এটি فاء العطف নয়, সুতরাং এর তরজমা 'অতঃপর' করা ঠিক নয়। استجاب এর তরজমা শায়খুলহিন্দ করেছেন, 'কবুল করলেন' আর থানবী (রহ) করেছেন 'মঞ্জুর করলেন।' প্রথম তরজমাটি تقبل বা قبل এর ক্ষেত্রে অধিক উপযোগী, পক্ষান্তরে দ্বিতীয় তরজমাটি استجاب এর ক্ষেত্রে অধিক উপযোগী।

(খ) فاستجاب لهم ربهم أني لا أضيع (তো মঞ্জুর করলেন তাদের প্রতিপালক তাদের দুআ। কারণ আমি বরবাদ করি না) কোন কোন বাংলা মুতারজিম এভাবে তরজমা করেছেন– তাদের ডাকে সাড়া দিয়ে বললেন, (কিংবা তাদের ডাকে এই বলে সাড়া দিলেন,) যে, আমি নষ্ট করিনা ... এটি প্রকৃতপক্ষে أن التفسيرية এর তরজমা, সুতরাং এ তরজমা ব্যাকরণগতভাবে গ্রহণযোগ্য নয়। কিতাবে ব্যাকরণসম্মত তরজমা করা হয়েছে।

তবে তরজমার সরলায়নের জন্য এটিকে বাক্যাংশ-এর পরিবর্তে স্বতন্ত্র বাক্যরূপে এবং হেতুবাচক বাক্যরূপে তরজমা করা হয়েছে।

(গ) لا أضيع এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'বিফল করি না,' এটি গ্রহণযোগ্য।

(ঘ) 'আমার পথে নিপীড়িত হয়েছে' বলা হলে ধারণা হয় যে, في سبيلي এর সম্পর্ক শুধু أوذوا এর সঙ্গে, অথচ এর সম্পর্ক হচ্ছে পূর্ববর্তী বিষয়ত্রয়ের সঙ্গে; এমন কি عطف এর কারীনা থেকে বোঝা যায় যে, পরবর্তী দুটি বিষয়েরও সাথে এটি সম্পৃক্ত। এই নিগূঢ় বিষয়টির দিকে লক্ষ্য রেখে 'আমার পথে' অংশটিকে কিতাবের তরজমায় পরে আনা হয়েছে।

(ঙ) (এবং তাদের অনেকে) এ দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, قاتلوا এবং قتلوا এর সঙ্গে সম্পৃক্ত যামীরের مرجع অভিন্ন হওয়া অনিবার্য নয়। কারণ লড়াইয়ের ফযীলত নিহত হওয়ার উপর 'মওকূফ' নয়।

(চ) 'তাদের গোনাহগুলো দূর/মাফ করে দেবো'- এ তরজমায় عنهم অংশটি বাদ পড়ে যায়।
'সমস্ত' বলে এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, মাফ করার বিষয়টি শুধু ছাগীরার সাথে খাছ নয়, বরং ছগীরা ও কাবীরা উভয় প্রকার গোনাহ্ উদ্দেশ্য।

(ছ) একটি বাংলা তরজমায় لأدخلنهم এর তরজমা করা হয়েছে, 'তাদেরকে দান করবো' – এটা গ্রহণযোগ্য হতে পারে এই তারকীব হিসাবে যে, তাযমীনের নিয়মে أدخل এর মাঝে أعطي এর অর্থ অন্তর্ভুক্ত রয়েছে। তখন ... ثوابا অংশটি جنت থেকে বদল হবে। তরজমা- অবশ্যই আমি তাদের দান করবো এমন বাগবাগিচা যার তলদেশ দিয়ে নহর প্রবাহিত হয়। অর্থাৎ এমন প্রতিদান যা আল্লাহর পক্ষ হতে আগত।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة الحُسن .
٢ - أعرب قوله : أني لا أضيع عملَ عامل .
٣ - بم يتعلق قوله : من ذكر أو أنثى ؟
٤ - أعرب قوله : ثوابا .

٥ – اوذوا في سبيلي আমার পথে নিপীড়িত হয়েছে– এই তরজমাটি পর্যালোচনা করো

٦ – لأدخلنهم (তাদেরকে দান করবো) এর তরজমা কীভাবে গ্রহণযোগ্য হতে পারে ?

(١١) لا يَغُرَّنَّك تقلُّب الذين كفروا في البلادِ * مَتاع قليل، ثم مَاوٰهم جهنم، وَ بِئسَ المِهاد * لكنِ الذين اتقَوا ربهم لهم جنّٰت تجري من تحتها الاَنْهٰر خٰلدين فيها نُزُلًا من عند الله، و ما عندَ الله خيرٌ للابرار *

بيان اللغة

تقلَّبَ في البلاد : أي تَنقَّل فيها كيفَ يشاء و حيثُ يشاء .

المهاد : الفِراش . الأرض المنخَفِضة المستَوِية . قاعُ البحر أو النهر، جمعه أَمْهِدَة و مُهُد . مَهَد الفراشَ (ف، مَهْدًا) : بَسَطه

نزلا : بضمتين أو بضم فسكون، ما يقام للنازل، طعام الضيف

بيان الإعراب

لا يغرنك : جملة مستأنفة لنهي النبي عن الاغترار، و هو في الحقيقة نهيٌ لأصحابه و أتباعه عن الاغترار بِتَجَبُّرِ الكافرين في الأرض و سَعةِ عَيْشِهم .

تقلب : فاعل للفعل السابق، و مصدر أضيف إلى فاعله، و في البلاد متعلق بـ : تقلب

متاع قليل : خبر لمبتدأ محذوف، أي : هو متاع قليل

الذين : الموصول مع صلته مبتدأ و الجملة الاسمية التي بعده خبره، و جملة تجرى من تحتها الانهر صفة المبتدأ المقدم . و خالدين حال منصوبة من الضمير المجرور في لهم .

نزلا من عند الله : نزلا حال من جنات أو تمييز منصوب، و من عند الله متعلق بصفة محذوفة لـ : نزلا .

الترجمة

যারা কুফরি করেছে, দেশে দেশে তাদের অবাধ বিচরণ যেন আপনাকে বিভ্রান্ত না করে বসে। এ তো সামান্য উপভোগ, তারপর তাদের আশ্রয়স্থল হলো জাহান্নাম। আর (তা) বড় মন্দ বিশ্রামস্থল। কিন্তু যারা ভয় করেছে তাদের প্রতিপালককে তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে মেহমানদারিরূপে রয়েছে (জান্নাতের) এমন বাগবাগিচা যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় বিভিন্ন নহর; তাতে তারা চিরকাল থাকবে। আর যা কিছু আল্লাহর কাছে আছে নেক বান্দাদের জন্য তা অতিউত্তম।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) التقلب في البلاد এর মাঝে ভোগ ও স্বেচ্ছাচার-এর ভাব রয়েছে, নিছক ঘুরে বেড়ানো এখানে উদ্দেশ্য নয়। এ জন্যই 'অবাধ বিচরণ' অর্থ করা হয়েছে।

কেউ কেউ লিখেছেন, 'যারা অবিশ্বাস করে দেশ-বিদেশে ঘুরে বেড়ায় তারা যেন তোমাকে বিভ্রান্ত না করে।

এ তরজমা থেকে মনে হয়, 'অবিশ্বাস করে' অংশটি 'ঘুরে বেড়ায়'-এর ফায়েল থেকে হাল; তদ্রূপ এখানে বিভ্রান্ত করার ফায়েল বানানো হয়েছে ব্যক্তিদেরকে, প্রকৃতপক্ষে لا يغرن এর ফায়েল হচ্ছে تقلبهم

তাছাড়া এখানে نون التوكيد এর তরজমা অনুপস্থিত। এখানে তাকীদের স্বাভাবিক শব্দ হলো 'কিছুতেই'। একটি তরজমায় তা ব্যবহার করে লেখা হয়েছে– 'তাদের অবাধ বিচরণ যেন কিছুতেই তোমাকে বিভ্রান্ত না করে।' এটি সুন্দর তরজমা।

কিতাবে তাকীদের ভাবটি তুলে ধরা হয়েছে বাংলার নিজস্ব 'বাক-ধারা'র মাধ্যমে। 'যেন বিভ্রান্ত না করে' এটা হলো তাকীদমুক্ত, পক্ষান্তরে 'যেন বিভ্রান্ত না করে ফেলে/ না করে বসে' এগুলো হচ্ছে তাকীদযুক্ত। এক মুতারজিম লিখেছেন, নগরীতে কাফিরদের চালচলন যেন তোমাদেরকে ধোকা না দেয় – এ তরজমা শুদ্ধ নয়।

(খ) শায়খুলহিন্দ (রহ) مأوى ও مهاد দুটোরই তরজমা লিখেছেন, ঠিকানা। এটা চলতে পারে। তবে মূলের শব্দভিন্নতা তরজমায়ও রক্ষা করতে পারলে ভালো হয়। থানবী (রহ) তা

করেছেন। তিনি مأوى এর তরজমা করেছেন ঠিকানা, আর مهاد এর তরজমা করেছেন বিশ্রামস্থল। কিতাবের তরজমায় শব্দভিন্নতা রক্ষা করা হয়েছে, তবে একটু অন্যভাবে।

(গ) جنت এর অধিকাংশ বাংলা তরজমায় জান্নাত ব্যবহার করা হয়েছে, অথচ উভয় শায়খ বাগ-বাগিচা ব্যবহার করেছেন। এর কারণ الجنة। একবচন দ্বারা জান্নাত বোঝানো হয়, আর جنت বহুবচন দ্বারা জান্নাতের বাগবাগিচা বোঝানো হয়। এ জন্যই থানবী (রহ) '(জান্নাতের) বাগবাগিচা' এই বন্ধনীসহ তরজমা করেছেন। বাংলা মুতারজিমগণ এ বিষয়টি লক্ষ্য করেননি।

(ঘ) الذين থেকে من عند الله পর্যন্ত একটি দীর্ঘ বাক্য। উর্দু ভাষায় (আরো বিশেষ করে বাংলাভাষায়) দীর্ঘ বাক্যকে কঠিন এবং ছোট বাক্যকে সহজ মনে করা হয়, তাই উভয় শায়খ পুরো আয়াতের তরজমা করেছেন তিনটি স্বতন্ত্র বাক্য দ্বারা।

خلدين فيها এবং نزلا من عند الله কে তারা স্বতন্ত্র বাক্যে তরজমা করেছেন।

কিতাবে نزلا কে তামীয ধরে তরজমা করা হয়েছে, আর خلدين কে স্বতন্ত্র বাক্যে তরজমা করা হয়েছে। কিতাবে দুটি স্বতন্ত্র বাক্যে তরজমা করা হয়েছে মূলের কাছাকাছি থাকা এবং তরজমার সরলতা উভয়টি রক্ষা করার জন্য। বাংলায় অধিকাংশ মুতারজিম শায়খায়নের অনুসরণে তিনটি স্বতন্ত্র বাক্যে তরজমা করেছেন। এটাও গ্রহণযোগ্য। তাদের তরজমা হলো, 'সেখানে তারা স্থায়ী হবে। এটা আল্লাহর পক্ষ হতে আতিথ্য'।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة مهاد

٢ – أعرب قوله : تقلب الذين كفروا في البلاد .

٣ – أعرب قوله : خلدين فيها

٤ – ما هو المخصوص بالذم في قوله : بئس المهاد ؟

٥ – لا يغرنك تقلب الذين كفروا في البلاد এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – جنت এর প্রতিশব্দ পর্যালোচনা করো

(١٢) وَ إِن من أَهلِ الكتٰب لَمَن يؤمِن بالله و ما أُنزِل اليكم و ما
أُنزل اليهم خٰشعين لله، لا يَشترون بٰايٰت الله ثمنًا قليلا،
اولئك لهم أَجرهم عِند ربهم، إِن الله سَريع الحساب * يايها
الذين اٰمَنوا اصبِروا وَصابروا و رابطوا، و اتقوا الله لعلكم
تُفلحون *

بيان اللغة

أهل : أهلُ الرجلِ في الأصل مَن يكون معه في مَسْكَنٍ و احد، و يعبَّر
بأهل الرجل عَنِ امْرَأتِه ·
و يقال أهلُ بيتِ الرجل مجازًا مَنْ يكونُ مِنْ نَسَبه، و إذا أُطلِقَ
أهلُ البيتِ عُرِفَ به أهلُ بيتِ النبي صلى الله عليه وسلم، قال
تعالى : إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجسَ أهلَ البيت ·
و أهل الإسلام هم المسلمون و أهل الكتٰب هم اليهود و النصٰرى، و
جمع الأهل أهلون و أَهالٍ
خشعين : خَشَع (ف، خُشوعا) خَضَعَ، ذل، خاف
خشع لربه : ذل و استكان و ركع আপন প্রতিপালকের প্রতি দীনতা
ও বিনয় প্রকাশ করলো, বিনয়াবনত হলো।
خشع صوتُه : انخفض و خشع بصرُه : انخفض
قال تعالى : الذين هو في صلاتهم خٰشعون و قال : و كانوا لنا
خٰشعين، و خَشَعت الأصوات للرحمن، و قال : خاشعةً أبصارُهم، و
قال : ابصارُها خاشعة
و خشعت الأرض : يَبِست لعدم المطر، قال تعالى : و من آياته
أنك ترى الأرض خاشعة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت و رَبَتْ (أي
اهتزَّ و تحرَّك نباتُها و رَبا و نَما و حَسُن ·
اصبروا و صابروا : الصبر حبسُ النفس على شيءٍ يَطلُبه منه العقل و
الشرع، و حبسُ النفسِ عن شيءٍ ينهاه عنه العقل و الشرع ·

فالصبر لفظ عام ٠

و معنى قوله تعالى "اصبروا و صابروا" - اصبروا على عبادة الله و جاهدوا أهواءكم

و صابره : غالبه في الصبر،

و اصطَبَرَ على : صبَر على ....، قال تعالى : فاعبده و اصطبر لعبادته

و قال : و امر أهلك بالصلوة و اصطبر عليها ٠

رابطوا : رابط (مرابطة و رباطا) : لازم الثَّغْرَ و موضِع المخافة (ليكون الناس في أمن و طمأنينة ٠ و الثغر الموضع الذي يخاف منه هجوم العدو ٠

رَبط شيئا بشيء (رَبْطًا، ن) شده (ن) বাঁধলো

ربط الله على قلبه (بالصبر) : قَوّى الله قلبه بالصبر আল্লাহ তার অন্তরে ধৈর্য ও নির্ভয়তা দান করলেন।

بيان الإعراب

و إن من أهل الكتب : الواو استئنافية : و من يؤمن بالله مبتدأ مؤخر، و اللام لام التوكيد، و من أهل الكتب متعلق بخبر مقدم محذوف ٠

ما أنزل إليكم : هذا معطوف علي لفظ الجلالة، و ما أنزل إليهم معطوف على الموصول السابق ٠

و خاشعين حال من الضمير في يؤمن، و مرجع الضمير من، و هو هنا مفرد لفظا و جمع معنى، و جملة لا يشترون حال ٠

الترجمة

নিঃসন্দেহে কিতাবীদের মধ্য হতে এমনও কিছু লোক অবশ্যই রয়েছে যারা আল্লাহর প্রতি বিনয়াবনত হয়ে ঈমান রাখে আল্লাহর প্রতি এবং যা তোমাদের প্রতি নাযিল করা হয়েছে তার প্রতি এবং যা তাদের প্রতি নাযিল করা হয়েছে তার প্রতি। এবং গ্রহণ করে না আল্লাহর আয়াতসমূহের মোকাবেলায় সল্পমূল্য। ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে তাদের প্রতিপালকের নিকট তাদের প্রতিদান। নিঃসন্দেহে আল্লাহ দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা (বিপদ ও কষ্টের মুখে) ছবর করো এবং (দুশমনের মোকাবেলা করার সময়) অবিচল থাকো, এবং সদা প্রস্তুত থাকো। আর (সর্বাবস্থায়) ভয় করতে থাকো আল্লাহকে, যাতে তোমরা কামিয়াব হতে পারো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و إن من এখানে তাকীদের দু'টি অব্যয় রয়েছে, إن ও لام التوكيد থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় দুটোকেই বিবেচনায় রেখেছেন, অধিকাংশ উর্দু ও বাংলা তরজমায় উভয় তাকীদ রক্ষিত হয়নি।

(খ) ঈমান রাখে আল্লাহর প্রতি এবং ... এ তরজমায় মূলের তারতীব যেমন রক্ষিত হয়েছে তেমনি عطف এর তরজমা করাও সহজ হয়েছে।

আল্লাহর প্রতি ঈমান রাখে– এ তরজমায় পরবর্তী দুটি عطف এর তরজমা সুন্দর হয় না। শায়খায়ন এভাবেই সরল তরজমা করেছেন। বাংলা তরজমাগুলো সুন্দর হয়নি। যেমন একটি তরজমা–

'কিতাবীদের মধ্যে এমন লোক আছে যারা আল্লাহর প্রতি বিনয়াবত হয়ে তাঁর প্রতি এবং তিনি তোমাদের ও তাদের প্রতি যা অবতীর্ণ করেছেন তাতে অবশ্যই ঈমান আনে।'

(গ) ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে .... এটি মূলানুগ তরজমা।

একটি তরজমায়– এরাই তারা যাদের জন্য রয়েছে।

অন্য তরজমায়– তারাই হলো সে লোক যাদের জন্য ....

এ দু'টি তরজমায় অনাবশ্যক শব্দ রয়েছে।

অন্য তরজমায়– তাদের জন্য আল্লাহর কাছে পুরস্কার রয়েছে। এটি সরল তরজমা মনে হলেও অত্যন্ত ত্রুটিপূর্ণ। প্রথমতঃ তরজমায় أولئك শব্দটি বাদ পড়েছে, এবং দুই ইসনাদের পরিবর্তে একটি ইসনাদ এসেছে।

দ্বিতীয়তঃ خبر এর অগ্রবর্তিতার কারণে সৃষ্ট حصر তরজমায় উঠে আসেনি।

তৃতীয়তঃ عند ربهم এর তরজমা 'তাদের রাবের কাছে' না হয়ে 'আল্লাহর কাছে' হবে কোন্ যুক্তিতে?

(ঘ) اصبروا و صابروا দুটি বাংলা তরজমায় রয়েছে– তোমরা ধৈর্য

ধারণ করো এবং ধৈর্যধারণে প্রতিযোগিতা করো এবং যুদ্ধের জন্য সদা প্রস্তুত থাকো। এখানে صابروا এর উপরোক্ত তরজমা আভিধানিকভাবে হয়ত ঠিক, কিন্তু কিতাবে ব্যাখ্যাসহ যে তরজমা করা হয়েছে তা থানবী (রহ)-এর তরজমা থেকে লব্ধ।

أسئلة :

١ – اشرح "خشع"

٢ – أعرب قوله : خشعين لله

٣ – أعرب قوله : عند ربهم

٤ – اشرح محل إعراب جملة لا يشترون

٥ – بايت الله (আল্লাহর আয়াতসমূহের মোকাবেলায়) এর তরজমার ভিত্তি কী ?

يشترون এর তরজমা পর্যালোচনা করো।

٦ – اولئك لهم أجرهم عند ربهم এর তারকীবানুগ ও সরল তরজমা করো

(١) يٰايها الذين اٰمَنوا لا تأكُلوا اَموالكم بَينكم بِالباطِل اِلا اَنْ تكونَ
تِجارةً عن تراضٍ منكم، و لا تقتُلوا انفسَكم، اِن الله كانَ بكم
رَحيما * وَ من يَفعل ذلك عُدوانًا و ظُلمًا فَسَوف نُصليه نارًا،
وَ كان ذلك عَلى اللّٰه يَسيرًا * اِن تجتَنِبوا كبٰئر ما تُنهون عنه
نُكفِّر عنكم سَيِّاٰتِكم و نُدخلكم مُدخَلًا كريمًا * و لا
تَتَمنوا ما فَضَّل اللّٰه به بعضَكم على بعضٍ، لِلرجال نَصيب مما
اكتَسبوا، وَ لِلنساء نَصيب مما اكتسَبْن، وَ سْئَلوا اللّٰه من
فَضْلِه، ان الله كان بِكلِّ شيءٍ عليما *

بيان اللغة

تَراضٍ : تراضَيا (تراضيًا) : أَظْهَر كلٌّ واحدٍ منها الرضا بِصاحبه

رَضِيَه و رَضيَ به (رِضًا و رِضاءً و رِضوانًا و مَرْضاةً، س) اختارَه و قَبِلَه — পছন্দ করলো, কবুল করলো

رضيتُ بالله ربًّا — প্রতিপালকরূপে আল্লাহকে আমি গ্রহণ করেছি

أ رَضيتُم بالحياةِ الدنيا منَ الآخرةِ — তোমরা কি আখেরাতের মোকাবিলায় দুনিয়াবি যিন্দেগীকে পছন্দ করেছো ?

رضيتُ لكم الإسلامَ دينًا — দীনরূপে ইসলামকে তোমাদের জন্য পছন্দ করেছি/ নির্বাচন করেছি/ অনুমোদন করেছি।

رضيَ عنه : أَظْهرَ فَرَحه و سُرورَه به — তার প্রতি সন্তুষ্ট হলো

رضي الله عنهم و رَضوا عنه

وَ رِضَى العبدِ عَن اللّٰه أن لا يكرَهَ قضاءَه فيه، و رِضَى اللّٰه عن العبدِ أن يراه في طاعَتِه

وَ الرِّضوانُ الرضا الكثيرُ، و خُصَّ لفظُ الرضوانِ في القرآن بالله تعالى، لِأن رضَا اللهِ هو أعظَمُ الرِّضى . قال تعالى : يَبْتغُون فَضْلاً من اللهِ و رضوانًا .

و قال : يُبَشِّرُهم ربهم بِرَحْمَةٍ منه وَ رضوانٍ . وَ قال : وَ رِضْوانٌ مِنَ اللّه أكبرُ .

اكتَسَبوا : الاكتساب بمعنى الكَسْبِ، و الفرق بينهما أن الكسبَ يكون لنفسِه و لغيره و الاكتساب لا يكون إلا لِنفسه و قد وَرَدَ الكسْبُ في القرآن في فعل الصالحات و السيئاتِ

قال تعالى : يقول ربنا آتِنا في الدنيا حَسنةً و في الآخرة حَسَنةً و قِنا عذابَ النار، أولئك لهم نَصيبٌ مما كسبوا .

و قال : إن الذين يكسِبون الإثمَ سيجزَون بما كانوا يقتَرفون .

وَ قد وَرد الاكتساب في الصالحات كَما في هذه الآيَة، و في السَّيئات، كقوله تعالى : لِكُلِّ امْرِئٍ منهم ما اكتَسَب منَ الإثمِ .

و قال تعالى : لها ما كسَبت و عليها ما اكتَسَبت .

خُص هنا الكسبُ بالصالح و الاكتسابُ بالسيِّءِ

مُدخلا : اسم ظرفٍ من الادخال، أي مكان الإدخال .

بيان الإعراب

يايها الذين آمنوا : سَبَق إعرابُ النداء هذا في (١/٤/٣)

بينَكم : ظرف متعلق بـ : لا تَأكلوا

بالباطِل : أي : متلبسين بالباطل، أي : بالطريقَة التي لا يُبيحها الشرعُ .

إلا أن تكونَ تجارةً : إلا أداةُ استثناءٍ، و تجارةً خبرُ تكونَ، و اسمُها الضمير الغائدُ إلى لفظ المعامَلةِ المفهومِ من السابق، أي : إلا أن تكون المعاملةُ تجارةً (صادرة) عن تراضٍ منكم، و منكم متعلق بـ : تراض، و تراضٍ مجرور بكسرة مقدَّرة على الياء المحذوفةِ لالتقاء الساكنَين .

و المصدر المؤول في موضِع نصب على الاستثناء المنقَطِع، لأن التجارةَ ليست من جِنْسِ الأموال المأكولَة بالباطِل .

إن الله كان بكم رحيمًا : بكم يتعلق بـ : رحيمًا، و الجملة تعليلٌ لِلمنع، لا محل لها من الإعراب .

و مَن يفعل ذلك : مَن اسم موصول و شرطٍ، و الجملة التالية صلة و شرطٌ، و الموصول مع صلَتِه مُبتدأ، وَ اسم الإشارة مفعول به، و الإشارةُ إلى ما نُهِيَ عنه في السابِق، أو إلى القتلِ على وجهٍ خاصٍّ .

عُدوانا و ظُلما : مصدران في موضِع نصبٍ عَلى الحال، أي : مُعتدين وَ ظالمين، أو هما مفعولان لِأَجْلِهما .

فسوفَ نُصليه نارًا : الفاء رابِطة لجَواب الشرط، يَجب ذِكرُها قبلَ سوف، وَ الضمير المنصوب مفعولٌ به أولٌ، و نارًا مفعول به ثانٍ، و الجملة جوابُ الشرطِ و خبر المبتدأ .

و لك أن تقولَ : مَن اسم شرطٍ جازم في محل رفعٍ مبتدأ، و الجملة الشرطية خبرُ المبتدأ .

إن تجتنبوا كبائرَ ما تُنهون عنه : هذا كلام مستأنَف لِلدعوة إلى اجتنابِ الكَبائِر .

كبائرَ مفعول به و مضاف، و ما الموصولة مضاف إليه، و جملة تُنهون عنه لا محل لها من الإعراب، لأنها صلةُ الموصول، و نُدخلكم معطوفة عَلى جواب الشرط .

و مُدخلًا اسم مَكانٍ، فهو مفعول به ثانٍ على السَّعَةِ، أو ظرفُ مَكانٍ، أو هو مصدرٌ ميمي، فهو مفعول مطلق .

للرجال نصيب مما اكتسَبوا :

نصيبٌ مبتدأ مؤخر، وَ لِلرجال متعلق بخبَرٍ مقدَّم محذوف .

و مِن حرف جرٍّ، و ما اسم موصولٍ، و الجملة صلة، و العائد محذوف، الموصول مع صلَتِه في محل جر بـ : من، و الجار مع مجروره متعلق بصفة للمبتدأ محذوفةٍ، و أصلُ العبارة : نصيبٌ معدود مما اكتسَبه الرجال ثابِت لهم .

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, গ্রাস করো না তোমরা একে অন্যের সম্পদ নিজেদের মাঝে অন্যায়ভাবে; তবে এই যে, তা হবে

তোমাদের পক্ষ হতে পরস্পরের সম্মতিতে (সম্পন্ন) ব্যবসা। আর হত্যা করো না তোমরা নিজেদেরকে (একে অন্যকে)। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ তোমাদের প্রতি চিরদয়ালু।

আর যে তা করবে সীমালঙ্ঘন করে এবং জুলুম করে, অবশ্যই ঝলসাবো আমি তাকে আগুনে। আর সেটা আল্লাহর জন্য অবশ্যই সহজ।

যদি পরিহার করো তোমরা ঐ সমস্ত গোনাহের বড়গুলোকে যা থেকে তোমাদেরকে নিষেধ করা হচ্ছে তাহলে মোচন করে দেবো আমি তোমাদের থেকে তোমাদের (লঘু) মন্দ আমলগুলো এবং প্রবেশ করাবো তোমাদেরকে এক সম্মানিত স্থানে। আর আকাঙ্ক্ষা করো না তোমরা এমন বিষয়ের যা দ্বারা আল্লাহ শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছেন তোমাদের কতিপয়কে কতিপয়ের উপর।

পুরুষেরা যে আমল অর্জন করবে তার হিসসা তাদের জন্য সাব্যস্ত হবে, এবং নারিরা যে আমল অর্জন করবে তার হিসসা তাদের জন্য সাব্যস্ত হবে।

আর প্রার্থনা করো তোমরা আল্লাহর কাছে তাঁর অনুগ্রহ। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ সর্ববিষয়ে পূর্ণ অবগত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لا تأكلوا ... بالباطل অন্যায়ভাবে গ্রাস করো না- এরূপ ক্ষেত্রে বাংলা ভাষায় গ্রাস ও আত্মসাৎ শব্দদু'টি অতিউত্তম শব্দ। তাই অন্যান্যের মত কিতাবের তরজমায়ও তা ব্যবহার করা হয়েছে।

কিন্তু আল্লাহ তা'আলা তাঁর পাক কালামে যে শব্দ ব্যরহার করেছেন তার প্রতিশব্দ হলো- খাওয়া لا تأكلوا অর্থ তোমরা খেয়ো না, বা তোমরা খাবে না। যেহেতু মাল দ্বারা উপকৃত হওয়ার স্থূলতম রূপ হলো খাওয়া সেহেতু বিশেষভাবে সেটাকে নিষেধ করা হয়েছে। সুতরাং উপকৃত হওয়ার অন্যান্য 'ছূরত'ও অনিবার্যভাবেই নিষিদ্ধ হবে।

এ জন্যই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন نہ کھاو আর থানবী (রহ) তরজমা করেছেন مت کھاو তারপর তিনি বন্ধনীতে লিখেছেন مت برتو (ব্যবহার করো না)। তিনি আরো লিখেছেন, এ ব্যাখ্যার উদ্দেশ্য এদিকে ইঙ্গিত করা যে,

أكل দ্বারা উদ্দেশ্য হচ্ছে সামগ্রিক ব্যবহার।

(খ) পরস্পরের সম্মতিতে 'সম্পন্ন' ব্যবসা– এখানে 'সম্পন্ন' শব্দটি হচ্ছে تجارة এর উহ্য ছিফাতের প্রতিশব্দ।

(গ) إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم (তবে এই যে, তা হবে তোমাদের পক্ষ হতে পরস্পরের সম্মতিতে সম্পন্ন ব্যবসা) এ তরজমায় আয়াতের মূল তারকীবী কাঠামো অক্ষুণ্ণ রয়েছে এবং বাংলা বাক্যকাঠামোও বিশুদ্ধ রয়েছে। এ ক্ষেত্রে শায়খুলহিন্দ (রহ)কে অনুসরণ করা হয়েছে।

বিদ্যমান বাংলা তরজমাগুলোতে আয়াতের তারকীবী কাঠামো অনুসরণের চেষ্টা করা হয়নি, একটি তরজমা এই–

'কিন্তু তোমাদের পরস্পর রাযী হয়ে ব্যবসা করা বৈধ।'

উক্ত তরজমার টীকায় বলা হয়েছে যে, বৈধ শব্দটি এখানে উহ্য রয়েছে। কিন্তু আয়াতের তারকীব এ ধরণের কোন শব্দ দাবী করে না। থানবী (রহ) এ শব্দটি এনেছেন ব্যাখ্যামূলক ভাবে।

(ঘ) و كان ذلك على الله يسير (আর সেটা আল্লাহর জন্য অবশ্যই সহজ) এখানে তাকীদের অর্থটি উঠে এসেছে على الله এর তাকদীম থেকে। থানবী (রহ) তাকীদবাচক শব্দ (بالكل) বন্ধনীতে ব্যবহার করেছেন।

(ঙ) إن تجتنبوا كبائر ما تنهون عنه যদি পরিহার করো তোমরা ঐ সমস্ত গোনাহের বড়গুলোকে যা থেকে তোমাদেরকে নিষেধ করা হচ্ছে– এখানে ما এর স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে এবং আয়াতের তারকীবী কাঠামো অনুসরণ করা হয়েছে।

থানবী (রহ) এর তরজমা এরূপ–

(ক) যে সকল কাজ থেকে তোমাদেরকে নিষেধ করা হচ্ছে–

(جن کاموں سے تمکو منع کیا جاتا ہے)

এটা হলো ما تنهون عنه এর তরজমা।

(খ) সেগুলোর মধ্যে যেগুলো গুরুতর কাজ–

(ان میں جو بھاري کام هیں)

এটা كبائر এই একটি মাত্র শব্দের তরজমা।

(গ) যদি তোমরা সেগুলো থেকে বাঁচতে থাকো-
(اگر تم ان سے بچتے رہو)
এ তরজমায় আয়াতের তারকীবী কাঠামো যেমন 'ভাঙ্গচুর' হয়েছে তেমনি শব্দসংখ্যা মূল থেকে অনেক বেড়ে গেছে, তদুপরি তা সহজবোধ্য হয়নি।
শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা এরূপ-
(ক) যদি তোমরা বাঁচতে থাকবে- (اگر تم بچتے رہو گے)
এটি ان تجتنبوا এর তরজমা।
(খ) ঐ সমস্ত গোনাহের বড়গুলো থেকে- এটি كبائر ما এর তরজমা
(গ) যা থেকে তোমাদেরকে নিষেধ করা হচ্ছে- এটি ما تنهون عنه এর তরজমা।
এ তরজমার শব্দ সংখ্যা যেমন কম তেমনি তা মূলানুগ, সর্বোপরি তরজমায় সরলতাও রক্ষিত হয়েছে। এটিকে অনুসরণ করে কিতাবের তরজমাকে অধিকতর সরল করা হয়েছে।
বিদ্যমান বাংলা তরজমাগুলোর মধ্যে নীচের তরজমাটি তুলনামূলক ভালো-
(ক) তোমাদেরকে যা নিষেধ করা হয়েছে- এটি ما تنهون عنه এর তরজমা।
তবে 'যা থেকে' বলা হলে عنه এর তরজমা এসে যেতো।
(খ) তার মধ্যে যা গুরুতর তা থেকে বেঁচে থাকলে-
এটি ان تجتنبوا كبائر এর তরজমা, তবে-
'তার গুরুতরগুলো থেকে বেঁচে থাকলে'
এভাবে লিখলে শব্দসংখ্যা কম হতো এবং মূলানুগ হতো।
কয়েকটি বাংলা তরজমায় 'বেঁচে থাকলে' দ্বারা শর্ত ও জওয়াবকে একই বাক্যে একীভূত করা হয়েছে। ফলে তরজমার বাক্য দীর্ঘ হয়েছে।
এর চেয়ে এটা ভালো- যদি বেঁচে থাকো তাহলে ......
আরেকটি কথা, কিতাবের তরজমায় 'পরিহার করো' শব্দটি ব্যবহার করার কারণে كبائر এর প্রতিশব্দটিকে مفعول به রূপে বহাল রাখা সম্ভব হয়েছে। পক্ষান্তরে 'বেঁচে থাকো' শব্দটি ব্যবহার করলে كبائر এর তরজমা করতে হয় 'বড় বড় গোনাহ

حرف الجر و مجرور থেকে' – অর্থাৎ مفعول به এর তরজমা হয়ে যায় তাই 'বেঁচে থাকো'-এর চেয়ে 'পরিহার করো' উত্তম।

أسئلة :

١ – ما الفرق بين الرضا و الرضوان ؟

٢ – أعرب قوله : عن تراض منكم .

٣ – أعرب الكلمتين عدوانا و ظلما .

٤ – أعرب قوله : و ندخلكم مدخلا كريما .

٥ – لا تأكلوا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – ان تجتنبوا এর দু'টি তরজমা হচ্ছে

(ক) যদি তোমরা পরিহার করো

(খ) যদি তোমরা বেঁচে থাকো– তুলনামূলক আলোচনা করো।

(٢) إن اللّٰه لا يُحِب مَن كان مُختالا فخورًا * الذين يَبخلون و يَأمرون الناسَ بالبُخلِ و يكتُمون ما اٰتٰهم اللّٰه مِن فَضْلِه، و اَعْتدنا لِلكٰفرين عذابًا مهينًا * وَ الذين يُنفِقون اموالَهم رئاءَ الناسِ وَ لا يؤمنون باللّٰه وَ لا باليومِ الاٰخِر، وَ مَن يكُنِ الشيطٰن له قرينًا فَساءَ قرينًا * وَ ماذا عَليهم لو اٰمَنوا باللّٰه وَ اليومِ الاٰخرِ وَ انفَقوا مما رزَقَهم اللّٰه، و كان اللّٰهُ بهم عَليما * إن الله لا يظلِم مِثقالَ ذرَّةٍ، وَ ان تَكُ حسَنَةً يُضٰعفها و يُؤتِ من لدُنْه اجرًا عَظيما * فكيفَ إذا جِئنا مِنْ كلِّ امةٍ بشَهيد وَ جِئنا بك عَلٰى هٰؤلاءِ شهيدًا * يَومئِذ يَودُّ الذينَ كفَروا و عَصَوُا الرسولَ لو تُسَوّٰى بِهِمُ الارضُ، و لا يكتُمون الله حديثا *

بيان اللغة

مختالا : اِختالَ : تكبَّر، اختالَ في مَشْيِه : تَمايَل و تكبَّر في مَشيِه، أي : مَشٰى مِشْيَةَ متكبرٍ .

فخورا : فَخَر الرجلُ (ف، فَخْرًا و فَخارًا) : تكبر — অহংকার করলো
تَباهٰى بِما لَه وَ ما لِقومه من مَحاسِنَ — নিজের এবং স্বগোত্রের
যে সকল গুণ ও কীর্তি রয়েছে তা নিয়ে গর্ব করলো।

وَ الرجل فاخِرٌ و فَخور .. تَفاخَر : تَعاظَمَ و تكبَّر

تَفاخَر القومُ : فَخَر بعضُهم على بَعضٍ

رِءاءَ : رَاءاه (يُرائِي، مُراءاةً و رِءاءً و رِياءً) أراه أنه علىٰ خيرٍ و صَلاحٍ و هو علىٰ خلافِ ذلك (তাকে দেখালো যে, সে সদ্‌গুণ ও সততার উপরে আছে, অথচ সে সেটার বিপরীত অবস্থার উপর আছে) তার সামনে ভালো মানুষ সাজলো।

قَرين : فلان قِرنُ فلان، أي : مِثلُه في الوِلادَة — সে অমুকের সমবয়সী
وَ فُلان قِرنُه أو قَرينه، أي : مِثله في وصفٍ من الأوصاف
সে অমুকের সমকক্ষ (কোন গুণে)

و جمع القِرن أَقران، و جمع القرين قُرَناءُ

قَرَن شيئا بشيءٍ و قَرن بينَهما (ف، قَرْنًا، قِرانًا) — একত্র করলো

اقترن شيءٌ بشيءٍ — যুক্ত হলো, একত্রিত হলো

مِثقال : ما يُوزَنُ به — যা দ্বারা ওযন করা হয়

مِثقالُ الشيءِ : وَزْنُه (و الجمع مَثاقِيلُ) — কোন কিছুর সমপরিমাণ

ذرة : أصغرُ جزءٍ في عُنْصُرٍ ما — যে কোন পদার্থের ক্ষুদ্রতম অংশ, কণা

بيان الإعراب

مَن كان مختالا فخورًا : الموصول مع صِلَتِه مفعول به، و مختالًا فخورًا خبرٌ بعدَ خبرٍ .

الذين يَبخلون : كلام مستأنف لِلنهي عَنِ البُخلِ و ذَمِّه . والموصولُ مع صِلَتِه مبتدأ، و خبره محذوف، أي : جديرون بِكلِّ ذمٍّ و مَلامةٍ .
أو هو خبر لمبتدأ محذوف أي : هم الذين .....

و يجوز أن يكونَ بدَلا مِنْ : مَن كان مختالا فخورًا، و إفرادُ الصلةِ بِاعتبار لَفظِ الموصول، فانه مفرَدٌ لفظا، و جَمْعُ البدَلِ باعتبار معنَى الموصولِ، فانه هنا للجمع معنًى .

مِن فَضله : يتعلق بـ : آتاهم، و من سببية حِينَئذٍ، أو يتعلق بمحذوف هو حال مِن : ما آتاهم الله، أي : معدودًا من فضلِه، و من حِينَئذٍ بَيانية .

وَ الذين يُنفِقون : معطوف على الموصول السابق، وَ رِءاءَ الناسِ، حال مؤوَّلَةٌ أي : مُرائين الناس، أو مفعول من أجلِه، أي : لِيُراؤونَ الناسَ .

وَ من يكن الشيطانُ له قرينًا : الواو استئنافية، و من اسم شرطٍ في محل رفعٍ مبتدأ، وَ الجملة التاليَة شرط، و الفعل مجزوم بالسكونِ على الشرطية

وَ قَرينًا خبرٌ يكن، و له متعلق بمحذوفٍ هو حال مقدَّمة، لأنه كانَ في الأصلِ صفةٌ لـ : قرينا، أي : قرينا ثابتا له

فساءَ قرينا : الفاء رابطة، و ساءَ فعل و فاعل، و قرينًا تمييز مفسِّرٌ للفاعِل، وَ المخصوص بالذم محذوف، أي : هو العائد على الشيطان .

و الجملة في محل جزم جواب الشرط، و فعل الشرط و جوابه خبر مَنْ .

وَ ماذا عليهم لو آمَنوا بالله وَ اليوم الآخِر : ما ذا اسم استفهامٍ يُفيد الذمَّ و التوبيخَ في محل رفع مبتدأ، و عليهم يتعلق بخبر محذوف، أي : ماذا يَقَع عليهم، وَ جواب لو مَحذوف دلَّ عليه السابقُ، أي : لو آمنوا بالله فَماذا يَضُرهم .

وَ يجوز أن تكونَ لو مصدريةً، و المصدر المؤول مَنصوب بِنَزع الخافِضِ، أي : ماذا عليهم في إيمانهم وَ إنفاقِهم .

مما رزقهم الله : متعلق بـ : أَنفَقوا، و الموصول مع صلته في محل جر .

و يجوز أن تكون مِن تبعيضيةً، فتكونَ في محل نصبٍ مفعولا به معنًى، أي : انفَقوا بعضَ ما رزقهم الله .

مثقالَ ذرةٍ : صفة لمصدر محذوف، أي : لا يظلِم أحدًا ظُلما مثقالَ ذرةٍ

و إن تك حسنَةً : اسم تك يعود إلى المثقال، وَ أنِّثَ المثقالُ لإضافتِه إلى

مؤنث، و حسنة خبر تك .

و تك شرط مجزوم، أصله تكن بعدَ حذفِ الواو لالتقاء الساكنين، ثم حُذفت النون تخفيفًا، و يُضٰعِفْها جواب الشرط، و يُؤتِ معطوف عليه .

مِن لدنه : يتعلق بـ : يُؤت، أو بمحذوفٍ هو حال لِتقَدُّمِه علي الموصوف، و هو أجرًا

فَكيف إذا جِئنا : الفاء استئنافية، وَ كيف اسم استفهام، و هو في مِثْلِ هذا التركيبِ يحتَمِل أن يكونَ خبرًا لمبتدأ محذوف، أي : كيف حالُهم، وَ يحتمِل أن يكون حالاً من محذوفٍ، أي كيف يَصنعون .

وَ إذا ظرف زَمان مجرَّد مِن مَعنى الشرطِ متعلق بالمبتدأ المحذوف أو بالفعل المحذوف .

مِنْ كلِّ أمة : يتعلق بـ : جِئنا، أو يتعَلق بمحذوف هو حال مُقدمة، لأنه في الأصل صفة لـ : شهيدٍ، وَ بشهيد متعلق بـ : جئنا .

و جئنا بك على هؤلاء شهيدا : معطوفة على جِئنا الأولى، وَ على هؤلاء متعلق مُقدم بـ : شهيدًا، و هو حال من الضمير المجرور الذي هو مفعول به معنىً .

يَومئِذٍ : الظرف متعلق بـ : يَوَدُّ، و يومَ ظرف مضاف إلى ظرفٍ، و التنوينُ عِوَضٌ عن جملةٍ، أي : يومَ إذ جئنا بشهيدٍ يَود الذين ....

عصَوُا الرسولَ : الجملة معطوفة على كفَروا .

وَ لو مَصدرية، وَ هي لا تكون بعدَ وَدَّ يَود إلا مصدريةً، و المصدر المؤول مفول به لـ : يود، أي يودون تَسوِيةَ الأرضِ بهم

الترجمة

নিশ্চয় আল্লাহ পছন্দ করেন না ঐ ব্যক্তিকে যে অহংকারী, দাম্ভিক, যারা (নিজেরা) কৃপণতা করে, আর আদেশ করে লোকদেরকে কৃপণতার এবং গোপন করে ঐ সম্পদ যা দান করেছেন তাদেরকে আল্লাহ আপন অনুগ্রহে। আর আমি প্রস্তুত করে রেখেছি কাফিরদের জন্য লাঞ্ছনাকর আযাব।

এবং যারা খরচ করে নিজেদের মাল মানুষকে দেখানোর জন্য এবং

না বিশ্বাস রাখে আল্লাহর প্রতি, আর না শেষ দিবসের প্রতি। আর শয়তান হবে যার সাথী, তবে সে তো বড় মন্দ সাথী!

তাদের কী ক্ষতি ছিলো যদি তারা ঈমান আনতো আল্লাহর প্রতি এবং শেষ দিবসের প্রতি আর খরচ করতো ঐ সম্পদ থেকে যা দান করেছেন তাদেরকে আল্লাহ। আর আল্লাহ তাদের বিষয়ে পূর্ণ অবগত।

নিঃসন্দেহে আল্লাহ (কারো প্রতি) যুলুম করবেন না, কণাপরিমাণ (যুলুম করা)।

আর যদি কণাপরিমাণ নেকী হয় তবে দ্বিগুণ করে দেবেন তিনি তা। আর দান করবেন নিজের পক্ষ হতে বিরাট প্রতিদান।

তো কী অবস্থা হবে যখন উপস্থিত করবো আমি প্রত্যেক উম্মত থেকে একজন (করে) সাক্ষী, আর উপস্থিত করবো আপনাকে এদের (এই কাফিরদের) বিরুদ্ধে সাক্ষীরূপে?

যারা কুফুরি করেছে এবং অবাধ্যতা করেছে রাসূলের তারা আকাঙ্ক্ষা করবে সেদিন, হায় যদি ভূমিকে তাদের উপর (ধ্বসিয়ে) সমান করে দেয়া হতো (তাহলে কত ভালো হতো)। আর (সেদিন) তারা লুকাতে পারবে না আল্লাহ থেকে কোন কথা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ঐ ব্যক্তিকে যে অহংকারী দাম্ভিক–

থানবী (রহ) এর অনুসরণে موصول ও صلة এর তরজমা তুলে আনার জন্য এভাবে তরজমা করা হয়েছে। তবে তিনি مختالا ও فخورا এর তরজমা করেছেন فعل مضارع দ্বারা। তাছাড়া তিনি من এর অর্থগত দিক বিবেচনা করেছেন। তাঁর তরজমা এই–

নিঃসন্দেহে আল্লাহ (তাআলা) এমন ব্যক্তিদের প্রতি মুহব্বত রাখেন না যারা নিজেদেরকে বড় মনে করে, দম্ভপূর্ণ কথা বলে।

আয়াতের মূল তারকীব থেকে সরে এসে শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন এভাবে–

নিঃসন্দেহে আল্লাহর পছন্দ হয় না দম্ভকারী, বড়াইকারী।

মূল তারকীব থেকে সরেই যদি আসা হয় তবে এই তরজমা উত্তম হবে–

আল্লাহ্ অহঙ্কারী (ও) দাম্ভিককে মোটেই পছন্দ করেন না।

(খ) আপন অনুগ্রহে- এটি من فضله এর তরজমা, من অব্যয়টিকে হেতুবাচক ধরে এ তরজমা করা হয়েছে।

(গ) (কারো প্রতি) এই বন্ধনী দ্বারা ইশরা করা হয়েছে উহ্য مفعول به এর প্রতি, আর (জুলুম করা) এই বন্ধনী দ্বারা ইশরা করা হয়েছে উহ্য مفعول مطلق এর দিকে।

সরল তরজমা- নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ কারো প্রতি বিন্দুমাত্র জুলুম করেন না।

(ঘ) و إن تك حسنة আর যদি কণাপরিমাণ নেকী হয়- এখানে ইঙ্গিত রয়েছে এদিকে যে, فعل ناقص এর ইসম যামীরটি পূর্ববর্তী مثقال ذرة এর দিকে ফিরেছে। থানবী (রহ) বলেন, যামীরটি ফিরেছে العمل এর দিকে, যা পূর্ববর্তী আলোচনা থেকে মাফহূম হয়। আর ফেয়েলটি مؤنث হয়েছে খবরের দিকে লক্ষ্য করে। তাঁর মতে তরজমা এই- আর যদি আমল একটি মাত্র নেকী হয়।

(ঙ) لو تسوى بهم الأرض (হায়, ভূমিকে তাদের উপর যদি [ধ্বসিয়ে] সমান করে দেয়া হতো) এর তরজমা থানবী (রহ্) করেছেন, 'হায় যদি আমরা ভূমিতে দেবে যেতাম।' মূল থেকে অনেক দূরবর্তী এ তরজমার তেমন প্রয়োজনীয়তা নেই।

শায়খুলহিন্দ (রহ্) তরজমা করেছেন- তারা আকাঙ্ক্ষা করবে যেন বরাবর হয়ে যায় যমীনের।

এখানেও মূল তরকীব রক্ষিত হয়নি। তবে এটি মূলের অপেক্ষাকৃত নিকটবর্তী।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে- কামনা করবে, যদি তারা মাটির সাথে মিশে যেতো।

বলাবাহুল্য যে, এখানে কিতাবের তরজমাটি সবচে' মূলানুগ। কারণ তাতে الأرض কে نائب الفاعل রেখে তরজমা করা হয়েছে।

আয়াতের মূল তারকীব রক্ষা করে তরজমা করা যায়- হায় যদি [ধ্বসিয়ে] সমান করে দেয়া হতো তাদেরকে সহ ভূমিকে!

أسئلة :

١ - اشرح كلمة مثقال .

٢ - أعرب الموصول في قوله تعالى : الذين يبخلون بما اتاهم الله .

٣ - أعرب كلمة رئاء الناس .

٤ - أعرب كلمة مثقالَ ذرةٍ .

٥ - إن الله لا يحب من كان مختالا فخورا এর তরজমা সম্পর্কে বিশদ পর্যালোচনা করো

٦ - لو تُسوّٰى بهم الأرض এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٣) يٰايها الذين اُوتوا الكتٰب اٰمنوا بما نَزَّلنا مُصدقا لما مَعكم مِن قَبلِ ان نَطمِس وجوهًا فنردَّها على اَدبارها اَو نلعَنَهم كما لَعنا اصحٰبَ السبتِ، و كان امرُ الله مفعولًا * اِن الله لا يغفِر ان يُشرَك به و يغفِرُ ما دونَ ذلك لمن يَشاء، وَ من يُشرِك بالله فَقَدِ افتَرٰى اثمًا عظيمًا * اَلم تَرَ الى الذين يزكُّونَ انفُسَهم، بل الله يُزكي مَن يَشاء و لا يُظلَمون فَتيلا * انظُر كيفَ يفتَرون على الكَذِبَ، و كفٰى به اِثمًا مبينًا * اَلم تَرَ الى الذين اُوتوا نصيبًا من الكتٰبِ يؤمِنون بالجِبْتِ و الطاغوتِ و يقولون لِلذين كفَروا هؤلاء اَهْدٰى مِن الذين اٰمَنوا سبيلًا * اولئك الذين لَعَنهم الله، و مَن يلعَنِ الله فَلَن تَجِدَ له نصيرًا *

بيان اللغة

نَطمِس : الطَّمْسُ إزالَة الأثَر بالمحْوِ . طَمَس الشيءَ أو على الشيءِ (ض، طَمْسًا) : شَوَّهه أو مَحاه وأزاله، يقال : طمَستِ الريحُ الأثرَ طَمَس عينَه أو على عينِه : أعماها

قال تعالى : و لو نَشاء لطَمسنا على أعيُنِهم، أي : أزلنا ضوءَها و صورَتها كما يُطمَس الأثرُ .

أو نَلعنهم كما لَعنا اَصحٰب السبتِ : أي : نمسَخَهم كما مَسخنا أصحابَ السبتِ،

و هم الذين اعتَدَوا في السبتِ، فَمسخَهم الله قِردةً و خنازيرَ.

فتيلا : فَتَل الحبلَ (ض، فَتْلًا) لَواه দড়ি পাকালো

فالحبل مفتول و فتيل

فَتَل فلانًا عن رأيه : صرَفه عَن رأيه .

الفتيل : الحبل المفتول . الخيط الذي في شَقِّ النواةِ، و يُراد به الشيءُ الحقيرُ و المقدارُ القليل جدا . و هو المراد في الآية .
খেজুরের দানায় সুতা পরিমাণ ফাটল।

الجِبْتِ : اسم الصنم، ثم صار مستعمَلا لكل باطلٍ .

الطاغوت : مِنَ الطغيان و هو كل ما يُطغِي الإنسانَ و يُضله عَن طريقِ الحق و الهُدْيِ . و الطاغوت كلُّ ما عُبِدَ مِن دون الله منَ الجن و الانسِ و الأصنامِ . و كلُّ جبارٍ متمرِّدٍ يصُد الناسَ عن الله (للواحد و الجمع و المذكر و المؤنث) و يُجمَع على طواغيتَ .

بيان الإعراب

آمِنوا بما نزلنا مُصدقا لما مَعكم : مُصَدِّقًا حال من مفعولِ نزلنا المحذوفِ، الذي يَعود إلى الموصول، و مَعكم ظرفُ مكانٍ يدُل علي المصاحَبَة، متعلق بصلة محذوفة، أي : وُجِد .

وَ الموصول في مَحل جر باللام، و الجار مع مجروره متعلق بـ : مصدقا

من قَبلِ أن نطمِسَ : متعلق بـ : آمِنوا، وَ جملة نَردَّها معطوفة بالفاء العاطِفَة علي نطمِسَ، وَعلى أدبارها متعلق بـ : نردَّ .

أو نَلعنهم كما لَعنا أصحٰب السبتِ : نَلعنهم معطوف بـ : أو على : نردها، و يعود ضمير جمعِ العقلاء إلى أصحاب الوُجوه .

الكاف حرف جر للتشبيه، و المصدر المؤول في محل جر بالكاف، و هو متعلق بمفعول مطلق محذوف، أي : نَلعنهم لعنًا كلعنَتِنا أصحابَ السبتِ .

و يجوز أن يكون الكاف اسمًا بمعنىٰ مِثْلٍ، و المصدر المؤول في محل جر بالإضافة، و المضاف في محل نصبٍ صفةٌ للمفعول المطلق المحذوفِ .

ان الله لا يغفر أن يُشرَكَ به : حرف الجر يتعلق بـ : يُشرَكَ، و المصدر المؤول في محل نصب مفعول به لـ : يغفر .

و يغفر ما دون ذلك : الموصول مفعول به، و دونَ ظرف مكانٍ متعلق بمحذوف، صلة الموصول .

و لا يظلمون فتيلا : الجملة معطوفة على جملة محذوفة، أي : فهم يُثابون و لا يُظلمون فتيلًا .

وَ فتيلا بمعنى قليلًا صفةٌ لمفعول مطلق، فهو نائبُه، أي : لا يظلمون ظلمًا قليلا .

و كفى به إثما : الباء حرف جر زائدٌ، و الضمير المرفوع محلا فاعل كفى، يعود إلى الافتراء الذي يشتَمِل عليه صيغةٌ يفتَرون، فإن كل فعلٍ يشتَمِل على مصدرٍ و زمانٍ، و إثما تمييز منصوب

يؤمنون بالجبت : الجملة حال من واو أوتوا .

سبيلا : تمييز عَن نسبَةِ أهدٰى .

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে, ঈমান আনো তোমরা ঐ কিতাবের প্রতি যা আমি নাযিল করেছি, এমন অবস্থায় যে তা সত্যায়নকারী ঐ কিতাবকে যা তোমাদের সঙ্গে রয়েছে। (ঈমান আনো) এমন হওয়ার আগে যে, আমি মুছে দেবো (তোমাদের) চেহারাসমূহ, অনন্তর ফিরিয়ে দেবো সেগুলোকে সেগুলোর পিছনের দিকে [১] কিংবা লানত দেবো তাদেরকে, যেমন লানত দিয়েছি 'আছহাবে সাবত'কে, [২] আর আল্লাহর ফায়ছালা তো কার্যকর হয়েই থাকে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ মাফ করেন না তার সাথে (কোন কিছুকে) শরীক করা; তাছাড়া অন্য সমস্ত গোনাহ তিনি মাফ করে দেন যাকে ইচ্ছা করেন। আর যে (কোন কিছুকে) আল্লাহর সঙ্গে শরীক করে সে তো মহাঅপরাধ সংঘটন করে।

(হে সম্বোধিত ব্যক্তি) তুমি কি তাকাওনি তাদের দিকে [৩] যারা পবিত্র

১. অর্থাৎ চোখ-নাকবিলুপ্ত চেহারাকে পিছনের দিকে নিয়ে যাবো, আর পিছনের দিকটি সামনে নিয়ে আসবো।

২. শনিবারের আদেশ অমান্যকারীদেরকে

৩. অর্থাৎ বড় আশ্চর্য ঐ লোকেরা যারা ......

বলে দাবী করে নিজেদেরকে, (তাদের দাবী গ্রহণযোগ্য নয়) বরং আল্লাহই পবিত্র করেন যাকে ইচ্ছা করেন। আর (আযাব দেয়ার ক্ষেত্রে) তাদের উপর জুলুম করা হবে না সামান্য পরিমাণও। দেখো, কিভাবে মিথ্যা আরোপ করে তারা আল্লাহর প্রতি। এ মিথ্যা আরোপ যথেষ্ট হয়েছে 'খোল্লম খোল্লা' গোনাহ হিসাবে।
তুমি কি তাকাওনি তাদের দিকে যাদেরকে দেয়া হয়েছে কিতাব থেকে একটি অংশ, তারা মানে জিব্‌ত (প্রতিমা) ও তাগুত (বাতিল শক্তি)-কে, আর যারা কুফুরি করেছে তাদের সম্পর্কে বলে, (সরল) পথের বিচারে এরাই অধিকতর পথপ্রাপ্ত তাদের চেয়ে যারা ঈমান এনেছে। ওরাই (ঐ সমস্ত লোক) যাদেরকে লা'নত দিয়েছেন আল্লাহ। আর আল্লাহ যাকে লা'নত দেন তুমি কিছুতেই পাবে না তার (জন্য) কোন সাহায্যকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) থানবী (রহ) يايها الذين اتوا الكتاب এর পূর্ণ শাব্দিক তরজমা করেছেন, যা কিতাবের তরজমায় অনুসরণ করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন–'
'হে কিতাবীগণ!' তরজমা হিসাবে এটাও গ্রহণযোগ্য।
একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'হে আসমানী গ্রন্থের অধিকারীবৃন্দ!' এটা মানসম্মত তরজমা নয়। প্রথমতঃ আসমানী শব্দটি এখানে অতিরিক্ত এবং অপ্রয়োজনীয়। দ্বিতীয়তঃ সঠিক শব্দচয়ন হলো আসমানী কিতাব কিংবা ঐশীগ্রন্থ। তৃতীয়তঃ বহুবচনের আলামত রূপে 'বৃন্দ'-এর পরিবর্তে 'গণ' ব্যবহার করাই সঙ্গত ছিলো।
অন্য একটি তরজমায় আছে, 'তোমাদের যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে'– এ তরজমাও ত্রুটিযুক্ত। কারণ এখানে এ ধারণা সৃষ্টি হতে পারে যে, সম্বোধিতদের দু'টি দল রয়েছে, একদলকে কিতাব দেয়া হয়েছে, অন্যদলকে কিতাব দেয়া হয়নি; আর সামনের আদেশটি সম্বোধিতদের ঐ অংশের উদ্দেশ্যে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে।
অথচ প্রকৃত অবস্থা এই যে, এখানে শুধু কিতাবীদেরকেই সম্বোধন করা হয়েছে।

(খ) امنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم (ঈমান আনো তোমরা ঐ

কিতাবের প্রতি যা আমি নাযিল করেছি, এমন অবস্থায় যে তা সত্যায়নকারী ঐ কিতাবকে যা তোমাদের সাথে রয়েছে) একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'তোমাদের কাছে যা আছে তার সমর্থকরূপে আমি যা নাজিল করেছি তাতে বিশ্বাস করো'– এ তরজমা আয়াতের ভাবধারার পরিপন্থী। এ তরজমা থেকে মনে হয়, তাদের কিতাবকে সমর্থন করার উদ্দেশ্যেই যেন এ কিতাব নাযিল করা হয়েছে। অথচ এটি একটি পার্শ্ববিষয় যা حال রূপে উল্লেখ করা হয়েছে, এই কিতাবের প্রতি ঈমান আনার জন্য কিতাবীদেরকে উদ্বুদ্ধ করার উদ্দেশ্যে।

ما ও لما উভয়ের স্থানীয় অর্থ করা হয়েছে 'কিতাব'। প্রথমটি দ্বারা উদ্দেশ্য কোরআন। তবে এই তরজমা সঠিক নয়–

'তোমরা ঈমান আনো কোরআনের উপর যা আমি নাযিল করেছি।' – কারণ আল্লাহ প্রত্যক্ষ শব্দ 'কোরআন' এর পরিবর্তে প্ররোক্ষ শব্দ উল্লেখ করেছেন, যাতে কোরআন শব্দ শোনামাত্র তাদের মনে অনাগ্রহ সৃষ্টি না হয় এবং সামনের বক্তব্য থেকে শুরুতেই তারা মুখ ফিরিয়ে না নেয়।

(গ) يايها الذين اوتوا الكتاب থেকে من قبل ان نطمس পর্যন্ত এটি দীর্ঘ আয়াত। অধিকাংশ বাংলা মুতারজিম দীর্ঘ একটিমাত্র বাক্যে এর তরজমা করেছেন, ফলে তরজমার সহজবোদ্ধতা ক্ষুণ্ন হয়েছে।

কিতাবের তরজমায় সহজায়নের জন্য বন্ধনীতে (ঈমান আনো) কথাটি পুনরাবৃত্ত করে বাক্যটিকে খণ্ডিত করা হয়েছে।

(ঘ) থানবী (রহ) وجوها শব্দের তরজমায় বন্ধনীতে (তোমাদের) যুক্ত করেছেন এবং বলেছেন, وجوها এর তানবীন হচ্ছে مضاف إليه এর স্থলবর্তী। এখানে 'প্রত্যক্ষ সম্বন্ধ'কে উহ্য রাখার উদ্দেশ্য হচ্ছে সম্বোধনে কোমলতা আনয়ন।

(ঙ) وكان أمر الله مفعولا (আর আল্লাহর ফায়সালা তো কার্যকর হয়েই থাকে) يكون এর স্থলে كان এর ব্যবহার থেকে জোরালোতার অর্থ এসেছে; কিতাবের তরজমায় সেটা রক্ষা করা হয়েছে 'হয়েই থাকে' এর হ্রস্ব ইকার দ্বারা।

(চ) ان الله لا يغفر ان يشرك به (নিঃসন্দেহে আল্লাহ মাফ করেন না তার সাথে [কোন কিছুকে] শরীক করা) একটি বাংলা

তরজমায় আছে– 'নিঃসন্দেহে আল্লাহ তাকে ক্ষমা করেন না যে তার সাথে শরীক করে' এ তরজমা সঠিক নয়। কারণ, আয়াতে ক্ষমা না করার مفعول হচ্ছে শিরক; শিরককারী নয়। তাছাড়া أن يشرك হচ্ছে ফেয়েলে মাজহুল, ফেয়েলে মারূফ নয়। থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় পুরো বিষয়টি বিবেচনায় এনেছেন।

(ছ) ما دون ذلك থানবী (রহ) ما এর তরজমা করেছেন 'তাছাড়া অন্য সমস্ত গোনাহ'– তিনি বলেন, 'তরজমা অবশ্য লম্বা হয়েছে, তবে স্পষ্টায়নের জন্য তা করা হয়েছে।'
তিনি دون কে سوى এর অর্থে গ্রহণ করে دون ذلك এর তরজমা করেছেন। 'তাছাড়া' (অন্য সমস্ত গোনাহ)।
শায়খুলহিন্দ (রহ) دون কে أقل বা أخف এর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন– এর চেয়ে লঘু গোনাহ যাকে ইচ্ছা করেন মাফ করেন।

(জ) আরবী অভিধানে فتيل এর একটি অর্থ হচ্ছে পাকানো রশি বা সুতা। আরেকটি অর্থ হলো খেজুর দানার লম্বা ফাটল। এখান থেকেই 'তুচ্ছ ও সামান্য পরিমাণ' অর্থে শব্দটিকে ব্যবহার করা হয়। نقير শব্দ দ্বারাও তুচ্ছ পরিমাণ বোঝানো হয়, যার আভিধানিক অর্থ খেজুর দানার পিঠের 'বিন্দুদাগ'। قطمير শব্দটিকেও তুচ্ছ পরিমাণ অর্থে ব্যবহার করা হয়। যার আভিধানিক অর্থ হলো খেজুর দানার উপরের পাতলা পর্দা। তিনটি শব্দই কোরআনে তুচ্ছ পরিমাণ অর্থে এসেছে। সুতরাং স্পষ্ট বোঝা যায় যে, فتيل শব্দটিকে খেজুর দানার লম্বা ফাটল অর্থ থেকেই তুচ্ছ পরিমাণ অর্থে ব্যবহার করা হয়েছে।
বাংলা ও উর্দূতে অবশ্য সুতা পরিমাণ বলে সামান্য পরিমাণ বোঝানো হয়, আরবীতে নয়। সুতরাং و لا يظلمون فتيلا এর তরজমা– তাদের উপর সুতা পরিমাণও জুলুম করা হবে না– করা সঠিক নয়।
শায়খায়ন অবশ্য উর্দূ বাগ্‌ধারা অনুসারে এ তরজমাই করেছেন, আর একটি বাংলা তরজমায় তা অনুসরণ করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – ما معنى الطاغوت ؟

٢ – أعرب قوله : كما لعنا اصحب السبت .

٣ - أعرب قوله : و مَن يشرك بالله فقد افترى إثما عظيما إعرابا مجملا .

٤ - ما إعراب فتيلا في قوله تعالى : و لا يظلمون فتيلا ؟

٥ - و يغفر ما دون ذلك لمن يشاء এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - يايها الذين اوتوا الكتاب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) وَإذا قيلَ لهم تَعالَوا الى ما أنزَل اللّٰهُ و الى الرسولِ رأيتَ المنفقين يَصُدون عنك صُدودًا * فكيفَ إذا أصابتهم مُصيبَةٌ بما قدمت أيديهم ثُم جاءوك يَحلِفون باللّٰه إن أردنا إلا إحسانًا و توفيقًا * اولئك الذين يعلَم اللّٰه ما في قُلوبِهم، فَاعرِض عَنهم وَ عِظهم و قُل لهم في أنفسِهم قَولًا بليغًا *

بيان اللغة

يَصدُّون (يَعرِضون) (ن، صُدودًا) : أعرَض و انصرَف

صَدَّه عن شيءٍ (ن، صَدًّا) منَعه عنه و صَرَف، قال تعالى : هم الذين كفَروا و صَدوكم عَنِ المسجد الحَرام

توفيقًا : وَفَّق بينَ القومِ : أصلَح بينَهم

وَفَّق اللّٰهُ فلانًا : الهمَه الخيرَ আল্লাহ তাকে কল্যাণের সামর্থ্য বা তাওফীক দান করলেন।

بَليغًا (مُؤثِّرًا) : بَلُغَ (ك، بَلاغَةً) فَصُحَ و حَسُنَ بيانُه
বিশুদ্ধভাষী হলো, বাগ্মী হলো।

يقال : بَلُغَ الكلامُ কথা অলংকারমণ্ডিত/বালাগাতসমৃদ্ধ হলো

فهو بليغ و هم بُلغاء، و الكلام بليغ .

بيان الإعراب

إذا قيل لهم : إذا اسم ظرف للزمن المستقبل متضَمِّنٌ معنى الشرط، مضاف إلى شرطه، متعلق بجوابه، و هو رأيت .

و إلى الرسول : عطف على : إلى ما أنزل الله

يصدون : حال من مفعولِ رأيتَ، و صدودًا مفعول مطلق ·

كيف إذا أصابتهم : كيفَ في محل نصبٍ حال، و العامل فيه محذوف، أي : كيفَ يصنَعون، أو هو خبرٌ لمبتدأ محذوفٍ، أي : كيفَ صنعُهم، و إذا اسمُ ظرفٍ للمستقبَل، مُجرَّدٌ من معنَى الشرط، متعلق بالمبتدأ المحذوف أو بالفعل المحذوف ·

ثم : حرف عطف عطف به جاؤوك على أصابتهم ·

إن أردنا : جواب القسَم المفهوم من : يحلِفون بالله ·

إلا : أداة حصرٍ، و إحسانا مفعول به

فأعرِض عنهم : الفاء الفصيحة، التي تُفصِح عن شرطٍ مقدر، اي : تظهره، و المعنى : إذا كانت حالَتُهم كذلك فَاعرِض عنهم ·

في أنفُسِهم : يتعلق بـ : بليغًا، أي : مؤثّرا في نفوسِهم ·

الترجمة

আর যখন বলা হয় তাদেরকে, এসো তোমরা ঐ বিধানের দিকে যা নাযিল করেছেন আল্লাহ এবং (এসো) রাসূলের দিকে (তখন) আপনি দেখতে পাবেন মুনাফিকদেরকে এমন অবস্থায় যে, ফিরে যায় তারা আপনার থেকে পূর্ণরূপে।

তো তাদের কী অবস্থা হবে যখন পাকড়াও করবে তাদেরকে কোন বিপদ, ঐ অন্যায় কর্মের কারণে যা তারা পূর্বে করেছে, তারপর আসবে তারা আপনার কাছে আল্লাহর নামে শপথ করে (যে, আল্লাহর কসম) আমরা ইচ্ছা করিনি কল্যাণসাধন এবং মীমাংসাসম্পাদন ছাড়া (অন্য কিছু)। ওরাই ঐ সমস্ত লোক যে, আল্লাহ জানেন যা তাদের অন্তরে রয়েছে।[১] সুতরাং (বিশেষ হিকমতের কারণে) শিথিল আচরণ করুন আপনি তাদের প্রতি এবং (রিসালাতের দায়িত্ব হিসাবে) উপদেশ দান করুন তাদেরকে এবং বলুন তাদেরকে তাদের (সংশোধন) সম্পর্কে তাৎপর্যপূর্ণ কথা।

১. অর্থাৎ তাদের অন্তরে যে কুফুরি ও নেফাক রয়েছে এবং সেজন্যই যে তারা বিচার মীমাংসার জন্য আপনার কাছে না এসে অন্যের কাছে যায় তা আল্লাহ জানেন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و إذا قيل لهم (আর যখন বলা হয় তাদেরকে) 'বলা হবে'-এর পরিবর্তে 'বলা হয়' বলার কারণ এদিকে ইশারা করা যে, إذا এই ইসমটি مستقبل এর জন্য হলেও এখানে তা ভবিষ্যতকালের শর্তমুক্ত সাধারণ ظرف রূপে এসেছে। কারণ ঘটনাটি ঘটবে এমন নয়, বরং ঘটে গেছে। এ বক্তব্য থানবী (রহ)-এর।

(খ) يصدون عنك صدودا (ফিরে যায় তারা আপনার থেকে পূর্ণরূপে) 'পূর্ণরূপে' হচ্ছে مفعول مطلق এর তরজমা, যা তাকীদ প্রকাশ করছে।

(গ) بما قدمت أيديهم ঐ অন্যায় কর্মের কারণে যা – এটি بما এর তরজমা, যা পূর্বাপর কারীনা থেকে লব্ধ।
যা তারা পূর্বে করেছে– 'তারা' হচ্ছে أيديهم এর তরজমা, কেননা এখানে অংশ দ্বারা সমগ্র উদ্দেশ্য। এখানে পূর্ণ শাব্দিক তরজমাও করা যায়। (অর্থাৎ যা তাদের হস্ত অগ্রবর্তী করেছে)

(ঘ) إن أردنا إلا إحسانا و توفيقا (ইচ্ছা করিনি আমরা কল্যাণসাধন এবং মীমাংসাসম্পাদন ছাড়া [অন্য কিছু]) এটি শাব্দিক তরজমা, তবে উদ্দেশ্যের দিক থেকে أسلوب الإثبات অনুসরণ করে এ তরজমা করা যায়– আমরা কল্যাণসাধন এবং মীমাংসা সম্পাদনেরই শুধু ইচ্ছা করেছি।

(চ) ما في قلوبهم 'যা তাদের অন্তরে রয়েছে'– কোন কোন বাংলা তরজমায় আছে– তাদের অন্তরে কী রয়েছে তা আল্লাহ জানেন, এ তরজমা সঠিক নয়। কারণ কোন مفسر এখানে ما কে استفهامية রূপে গ্রহণ করেন নি।

(চ) فاعرض عنهم সুতরাং শিথিল আচরণ করুন আপনি তাদের প্রতি।
প্রায় সকল বাংলা তরজমায় রয়েছে– আপনি তাদেরকে উপেক্ষা করুন– এ তরজমা ত্রুটিমুক্ত নয়। কারণ উপেক্ষা করার এবং উপদেশ দানের আদেশ একত্র হওয়া অস্বাভাবিক।

أسئلة :

١ – اشرح معانيَ التوفيقِ .

٢ – ما معنى إنْ في قوله تعالى : إن أردنا إلا إحسانا ؟

٣ – أعرب الموصول في قوله تعالى : اولئك الذين يعلم الله

٤ – عرف الفاء الفصيحة .

٥ – فاعرض عنهم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – و إذا قيل لهم এর তরজমায় 'বলা হবে' এর পরিবর্তে 'বলা হয়' কেন ব্যবহার করা হয়েছে, আলোচনা করো

(٥) وَ ما اَرسلنا مِن رسولٍ الا لِيُطاعَ باذنِ اللّٰه، وَ لو اَنَّهم إِذ ظلَموا انفُسَهم جاءوك فاستغفَروا اللهَ و استغفَرَ لهم الرسولُ لَوَجدوا اللّٰه تَوابًا رحيمًا * فَلا وَ رَبِّك لا يُؤمنون حتى يُحَكِّموك فيما شَجَر بينَهم ثم لا يَجدوا في اَنفُسِهم حَرَجًا مما قَضَيْتَ و يُسلموا تَسليما * وَ لو اَنا كَتبنا عَليهم اَنِ اقتُلوا انفسَكم اَوِ اخرُجوا مِن دياركم ما فَعلوه اِلا قليلٌ منهم، وَ لو اَنَّهم فَعلوا ما يُوعَظون به لَكان خيرًا لهم وَ اَشَدَّ تَثبيتًا * وَ اِذًا لاٰتينٰهم مِن لدنا اجرًا عظيما * و لَهَدينٰهم صراطا مستقيمًا * و مَن يُطِعِ اللّٰه و الرسولَ فاولئك مع الذين اَنعَمَ اللهُ عليهم منَ النبين وَ الصديقين و الشهداءِ و الصّٰلحين، و حَسُنَ اولئك رَفيقًا * ذلك الفضلُ من اللّٰهِ، و كَفٰى بالله عَليمًا *

بيان اللغة

يُحَكموكَ : حَكَّم فلانًا في أمرٍ : جعله حَكَمًا

احتَكَمَ الخَصْمانِ و تحاكما إلى الحاكم : رَفَعا خصومَتَهما إليه ليحكُمَ بينَهما .

حَكَم بالأمرِ (ن، حُكْمًا) : قضى به

يقال : حكم له و حكم عليه و حكم بينهما

حكمَ البلادَ : دبّر أمورَ البلادِ

أحكم الشيءَ و الأمرَ : أتقَنَه و جعَله مُحكَمًا

الحُكْمُ : العلم و التفقّه، الحِكمة

الحَكَمُ : مَن يختار لِلوَصْلِ بينَ المتنازعين

شَجَر الأمرُ بينَهم (ن، شُجورًا) اضطَرَب الأمرُ بينهم و تنازَعوا فيه

বিষয়টি তাদের মাঝে গোলযোগপূর্ণ হলো এবং তারা তা নিয়ে বিবাদে লিপ্ত হলো।

تَشاجَر القومُ	পরস্পর বিবাদে লিপ্ত হলো

الحَرَجُ : الضِّيقُ	অপ্রসন্নতা	الإثم	গোনাহ
المشكِلَة	সমস্যা, অসুবিধা	لا حَرَجَ	কোন অসুবিধা নেই

بيـان الإعراب :

مِن رسول : من زائدة، و رسولٍ منصوب محلا، مفعول أرسلنا .

الا لِيُطاعَ بإذن الله : إلا أداة حصر، و ليطاعَ متعلق بـ : أرسلنا، أي : و ما أرسلنا رسولًا لِشَيْءٍ إلا لطاعَتِه، و بإذن الله يتعلق بـ : يطاع .

و لو أنهم : لو شرطية، و جاؤوك خبرُ أن، و إذ ظلَموا أنفُسَهم : ظرف متعلق بـ : جاؤوا، و المصدر المؤول فاعلٌ لفعلٍ محذوف، أي : لو ثبَتَ مجيئُهم و استغفارُهم و استغفارُ الرسول لهم.

فلا وَربِّك : الفاء استئنافية، و لا زائدة لتاكيد القسَم، و الواو حرف قسَمٍ و جر، يتعلق بـ : أُقسِمُ المحذوفِ، و جملة لا يؤمنون جواب القسَم

حتى يحكموك : حتى حرف غاية و جر، و تُضمَر أن بعدَ حتى لتعمَل عَمَلَها، و المصدر المؤول في محلّ جر بـ : حتى .

شجَرَ بينهم : الجملة صلة الموصول، و الموصول في محل جر بـ : في، و المعنى : حتى يُحَكِّموك في الأمرِ الذي اضطَرَب بينَهم فتنازَعوا فيه .

ثم لا يجدوا : هذا معطوف على يُحكموك، و في أنفسِهم يتعلق بـ : يجدوا، و حَرَجا مفعول به لـ : يجدوا .

و إذا نظرتَ إلى أنَّ وَجَدَ يقتضي مفعولين، قلتَ : حرجا هو مفعولُ وجد الأولُ، و في أنفسهم يتعلق بمحذوف، هو مفعول وجد الثاني،

و أصل العبارة : ثم لا يجدوا حرجا مما قضيت ثابتا في أنفسهم .

مما قضيت : من هنا للسببية، يتعلق بـ : حرجا، أو بصفة محذوفة لـ : حرجا، أي : حرجا ناشئا من قضائك .

و لو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا : هذا مِثلُ السابقِ، فالمصدر المؤول فاعل لفعل محذوفٍ، أي : لو ثَبَتَ كتابتُنا عليهم، و المصدر المؤول الثاني مفعول كَتَبْنَا، و قيل : أن هذه تفسيريَّةٌ، لأن كتبنا فيه معنَى القولِ .

ما فعلوه إلا قليل منهم : الجملة جواب شرط، و الضمير المنصوب يعود إلى أحَدِ الأمرَينِ، أو إلى المكتوب عليهم، و إلا أداة حصر لا عمل لها، و قليل مرفوع، لأنه بدَلٌ من فاعلِ فعلوا، و هو بدَلُ بعضٍ من كلٍّ .

أشَدَّ : معطوف بواو العَطْفِ على خيرًا، و تثبيتًا تمييز منصوب .

و إذا لاتيناهم : إذا حرف جوابٍ لسؤالٍ مقدرٍ، كأنه قيل : و ماذا يكون لهم بعدَ التثبيت ؟ فقيل : و إذًا (أي : لو ثبتوا) لآتيناهم ... و اللام واقعة في جواب لَوِ المقدَّرةِ .

صراطا : مفعول به ثان، أو منصوب بنزع الخافض، أي : إلى صراط .

و من يطع الله : من في مَحَل رفعٍ مبتدأ، و يُطع فعل الشرط، مجزوم بـ : مَنْ، و علامةُ جزمِه سكونُ الآخرِ، و حُرِّك بالكسرِ لالتقاء الساكنين .

من النبين : متعلق بمحذوف حال من ضمير عليهم، أي معدودين من النبيين،

رفيقا : تمييز من نسبة الفعل إلى الفاعل أو حال من الفاعل .

الترجمة

আর প্রেরণ করিনি আমি কোন রাসূলকে, তবে শুধু (এজন্য যে,) যেন তার আনুগত্য করা হয় আল্লহর আদেশে।

আর যখন যুলুম করে বসেছিলো তারা [১] নিজেদের উপর তখন যদি (অনুতপ্ত হয়ে ফিরে) আসতো তারা আপনার কাছে, অনন্তর মাফ চাইতো আল্লাহর কাছে এবং রাসূলও তাদের জন্য ইসতিগফার

১. বিচারের জন্য অন্যের কাছে যাওয়ার অপরাধ করার মাধ্যমে।

করতেন [১] তাহলে অবশ্যই পেতো তারা আল্লাহকে তাওবা কবুলকারী, অত্যন্ত দয়ালু (রূপে)।

কিন্তু না, আপনার রাব্বের কসম তারা [২] মুমিন হবে না যতক্ষণ না বিচারক মেনে নেবে তারা আপনাকে নিজেদের মাঝে সৃষ্ট বিবাদের ক্ষেত্রে। তারপর আপনার কৃত ফায়ছালার কারণে তারা তাদের অন্তরে কোন অপ্রসণ্নতা না পাবে এবং (যতক্ষণ না) মেনে নেবে পূর্ণ মেনে নেয়া।

আর যদি আমি বাধ্যতামূলক করে দিতাম তাদের (মুনাফিকদের) উপর (এ বিধান) যে, তোমরা হত্যা করো নিজেদেরকে কিংবা বের হয়ে যাও নিজেদের বাড়ীঘর থেকে, তাহলে তারা তা করতো না, তাদের মধ্য হতে অল্প কয়েকজন ছাড়া।

আর যদি তারা পালন করতো যা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয় (তাহলে) অবশ্যই তা তাদের জন্য উত্তম হতো এবং আরো প্রবল হতো (দ্বীনের বিষয়ে) দৃঢ়তা দানের ক্ষেত্রে। আর তখন অবশ্যই দান করতাম আমি তাদেরকে আমার পক্ষ হতে বিরাট প্রতিদান এবং অবশ্যই প্রদর্শন করতাম আমি তাদেরকে সরল পথ।

আর যে আনুগত্য করবে আল্লাহর এবং (তাঁর) রাসূলের, তো ওরা ঐ লোকদের সঙ্গে থাকবে যাদের উপর আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন, অর্থাৎ নবিগণ এবং ছিদ্দীকগণ এবং শহীদগণ এবং নেককারগণ। আর সঙ্গী হিসাবে ওরা অতি উত্তম (হয়েছেন)। ঐ অনুগ্রহ তো আল্লাহর পক্ষ হতে, আর সর্বজ্ঞরূপে আল্লাহই যথেষ্ট।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) وما أرسلنا من رسول إلا ... আর প্রেরণ করিনি আমি কোন রাসূলকে তবে– এখানে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর অনুসরণে نفي এর তরজমা নফী দ্বারা করা হয়েছে।

পক্ষান্তরে থানবী (রহ) إثبات مع الحصر দ্বারা তরজমা করেছেন। তিনি লিখেছেন– আর আমি সকল পয়গম্বরকে শুধু এজন্য পাঠিয়েছি যে, ...

أداة النفي এর পর نكرة সর্বদা عموم (ব্যাপকতা ও সমগ্রতা)

১. তাদের জন্য মাগফিরাতের সুপারিশ করতেন।

২. মুখে ঈমানের দাবীদার এই লোকেরা।

প্রমাণ করে। সে জন্য শায়খুলহিন্দ বলেছেন 'কোন রাসূল' আর থানবী (রহ) বলেছেন 'সকল পয়গম্বর'।

বাংলা তরজমাগুলোতে এ সূক্ষ্ম বিষয়টি বিবেচিত হয়নি। একটি তরজমায় আছে– রাসূল এ উদ্দেশ্যেই প্রেরণ করেছি।

(খ) لو হচ্ছে অতীতকালীন শর্তের অব্যয়, তা এ কথা বোঝায় যে, শর্তের অস্তিত্ব হলে جواب الشرط এর অস্তিত্ব হতো, যেহেতু শর্তের অস্তিত্ব হয়নি সেহেতু جواب الشرط এর অস্তিত্ব হয়নি। এই নিয়মে ... لو أنهم إذ ظلموا أنفسهم جاؤوك এর অর্থ হলো– যদি তারা আপনার কাছে আসতো এবং .... তাহলে তারা আল্লাহর পক্ষ হতে ক্ষমা লাভ করতো। যেহেতু তারা আপনার কাছে আসেনি এবং ..... সেহেতু তারা ক্ষমা ও দয়া লাভ করেনি। তাছাড়া আয়াতটি একটি ঘটনাকে কেন্দ্র করে অবতীর্ণ হয়েছে, ভবিষ্যতের নিয়ম বর্ণনারূপে নয়। সুতরাং এ তরজমা ঠিক নয়–

'যখন তারা নিজেদের উপর যুলুম করে তখন তারা তোমার নিকট এলে এবং আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করলে এবং রাসূলও তাদের জন্য ক্ষমা চাইলে তারা অবশ্যই আল্লাহকে পরম ক্ষমাশীল ও পরম দয়ালু পাবে'।

শায়খায়ন তাঁদের তরজমায় বিষয়টি লক্ষ্য রেখেছেন।

(গ) تواب এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, ক্ষমাকারী (معاف کرنے والا)

থানবী (রহ) করেছেন, তাওবা কবুলকারী (توبہ کا قبول کرنے والا)

দুটোই গ্রহণযোগ্য। তবে দ্বিতীয়টি শব্দানুগ।

(ঘ) 'পূর্ণ মেনে নেয়া' এটি مفعول مطلق এর তরজমা।

থানবী (রহ) লিখেছেন اور پورا پورا تسلیم کر لیں (এবং পরিপূর্ণরূপে মেনে নেবে)।

শায়খুলহিন্দ (রঃ) লিখেছেন– قبول کرے خوشی سے (খুশির সাথে কবুল করে নিবে)।

বাংলা তরজমাগুলোতে 'সর্বান্তকরণে' এবং 'হৃষ্টচিত্তে' ব্যবহার করা হয়েছে।

বস্তুত সকলেই تسليما এই مفعول مطلق এর তরজমা করতে চেয়েছেন। তবে সম্ভবত এ ক্ষেত্রে 'স্বতঃস্ফূর্তভাবে' শব্দটি অধিকতর উপযোগী।

(ঙ) و لو انا كتبنا عليهم (আর যদি আমি বাধ্যতামূলক করে দিতাম তাদের উপর)- থানবী (রহ) লিখেছেন- فرض کر دیتے (ফরয করে দিতাম) কিতাবে এ তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে। على অব্যয়যোগে كتب এ অর্থই প্রদান করে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন- ان پر حکم کرتے (তাদের উপর হুকুম জারি করতাম) বাংলা তরজমাগুলোতে আদেশ/নির্দেশ শব্দ দু'টি এসেছে। এ তরজমা শব্দানুগ নয়।

(চ) اقتلوا انفسكم এর তরজমা থানবী (রহ) লিখেছেন تم خود کشي کیا کروا (তোমরা আত্মহত্যা করো) এর চেয়ে সুন্দর তরজমা হতে পারে, যেমন শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, ھلاک کرو اپنی جان (তোমরা নিজেদের জান হালাক করে দাও।)
একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে- 'তোমরা নিজেদের প্রাণ উৎসর্গ করো,- এটি সঠিক তরজমা নয়, কারণ এখানে রূপক অর্থ বোঝারও সম্ভাবনা রয়েছে।
'তোমরা নিজেদের প্রাণ বধ করো'- এ তরজমা হতে পারে। তোমরা (পরস্পর) নিজেদেরকে হত্যা করো- এ তরজমা সবচেয়ে সুন্দর মনে হয়, কিন্তু শায়খায়ন তা করেন নি বিধায় কিতাবের তরজমায়ও করা হয়নি।

(চ) و حسن اولئك رفيقا আর সঙ্গী হিসাবে ওরা অতিউত্তম (হয়েছে) - এটি আয়াতের তারকীবানুগ তরজমা। যেহেতু حسن এর উদ্দেশ্য হচ্ছে প্রশংসা ও মুগ্ধতা প্রকাশ করা সেহেতু তরজমা হতে পারে- 'ওরা কত না উত্তম, সঙ্গীরূপে!' 'তাদের সান্নিধ্যই হলো উত্তম' অথবা 'তারা কত উত্তম সঙ্গী!' অবশ্য এগুলো মূলানুগ তরজমা নয়।

(চ) ذلك الفضل من الله (ঐ অনুগ্রহ তো আল্লাহর পক্ষ হতে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, 'এটা আল্লাহর অনুগ্রহ'- কিতাবের তরজমা মূলানুগ। শায়খায়ন এ তরজমাই করেছেন।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ شَجَرَ ·
٢ - أعرب "أَنْ" في قوله : أَنِ اقتُلوا أنفسَكم ·
٣ - اشرح اسم الفعل الناقص في قوله تعالى : لكان خيرًا لهم ·

٤ – أعرب قوله : إلا قليل منهم ·

৫ – يسلموا تسليما এর তরজমা পর্যালোচনা করো

৬ – و ما أرسلنا من رسول এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) اَلم تَرَ الى الذين قِيل لهم كُفُّوا اَيدِيَكم و اَقيموا الصلوٰة و اٰتوا الزكٰوة، فَلَما كُتب عليهم القِتال اِذا فَريق منهم يَخشَون الناسَ كَخشيةِ اللّٰهِ او اَشَدَّ خشيةً، و قالوا رَبّنا لِمَ كتبتَ علينا القِتالَ، لو لا اَخَّرتَنا الى اَجَلٍ قريب * قُل مَتاع الدنيا قَليل، وَ الاٰخِرة خَيرٌ لمن اتقٰى، و لا تُظلَمون فتيلا * اَينما تكونوا يُدرِكْكم الموتُ و لو كنتم في بُروج مشيَّدة، وَ اِن تُصِبهم حَسَنَة يقولوا هذه من عند الله، و اِن تُصبهم سَيئة يقولوا هذه من عندك، قل كلٌّ من عند الله، فَمالِ هؤلاء القَوم لا يكادون يفقَهون حديثا * ما اَصابك مِن حَسَنَةٍ فَمِن الله، و ما اَصابك مِن سَيئة فَمِن نفسِك، و اَرسلنٰك للناس رَسولا، و كفي بالله شَهيدا * مَن يُطِع الرسول فَقد اَطاع الله، و مَن تَولّٰى فَما ارسلنٰك عليهم حفيظا *

بيان اللغة

كُفُّوا : كَفَّ عن الأمرِ (ن، كَفًّا) : انصَرَف عنه و امتَنع

كَفه عن الأمر : صَرَفه و منَعه عنه

يُدركْكم : أدركه الموتُ : أصابه الموت و لَحِقه মৃত্যু তার কাছে পৌঁছলো, মৃত্যু তাকে পাকড়াও করলো

جاء في القرآن :

(١) حتى إذا أدركه الغَرَقُ قال

(٢) لا الشمسُ ينبَغِي لها أن تُدرك القمرَ

(٣) لا يُدركه الأبصار و هو يُدرك الأبصارَ، أي : لا تراه و هو يراها

بُروج : جمعُ بُرْجٍ : الحِصن দুর্গ البيتُ يُبنٰى على سُور المدينة و على سور الحصن বুরুজ

مشيَّدة : (مُحكَمَة) : شَيَّده : أحكَمَ بِناءَه তার নির্মাণ মজবুত করলো

بيـان الإعراب

ألم تر : هذا الجزء من الكلام يدعو المخاطَبَ إلى أن يتعجَّب من الأمرِ الآتي، فالهمزة للاستفهام التعجبي ·

كفوا ايديَكم : أي عن قتال الكفار

لَمَّا : ظرف بمعنى حينٍ متضمِّنٌ معنى الشرط في الماضي، و هو مضاف إلى شرطه متعلق بجوابه، و أصل العبارة : أخذ فريق منهم يخشون الناس حينَ فَرْضِ القتال عليهم ·

إذا : حرفُ فُجاءةٍ لا محل له من الإعراب، يدخل على المبتدأ و الخبر· و فريق مبتدأ، و جاز جعل النكرة مبتدأ لأنه موصوف، و جملة يخشون الناس خبر المبتدأ، و الجملة الفُجائية لا محل لها من الإعراب، لأنها جواب شرط غير حازم ·

كخشية الله : أي : يخشون الناس خشيةً كخشيَة الله أو مِثْلَ خشيَةِ الله ·

أو أشدَّ خشيةً : أو بمعنى بل، و أشدَّ خشيةً معطوف بـ : أو على المفعول المطلق المقدر، و خشية تمييز منصوب · و يجوز أن تكون أشدَّ صفةً مقدمة، أي : يخشون الناس خشية كخشية الله أو خشية أشد من خشية الله ·

لولا : حرف تحضيض مثل هلا، أو هو حرف عرض لا عمل له، و العَرْضُ طلَبٌ بِلينٍ و تَأَدُّبٍ ·

أينما : أين اسم شرط جازم في محل نصب على الظرفية المكانية متعلق بجوابه، و ما زائدة و هي غير لازمة في أين الشرطية، فتقول : أين تكن أكن، و اينما تكن أكن، و تكونوا مجزوم بـ : أين، و هو

فعل تام معناه : نزلتم، و هو في محل جر بالإضافة إلى الظرف ·
و لو كنتم : الواو حالية، و لو حرف شرط غير جازم، و جملة كنتم شرط، و جوابه محذوف دل عليه الكلام السابق ··
و يجوز أن يكون لو حرف مصدر، و الواو بمعنى مع، أي : يدرككم الموت مع كونكم موجودين في بروج مشيدة ·
ما لهؤلاء القوم : ما اسم استفهام أريد به التعجب، في محل رفع مبتدأ، و القومُ بَدَلٌ مِن اسم الإشارة، و الجار متعلق بخبر المبتدأ ·
و جملة لا يفقهون حديثا في محل نصب خبرٌ يكادون، و جملةُ لا يكادون يفقهون حديثا في محل نصب على أنها حال من اسم الإشارة أو مِن بَدَلِه ·
ما اصابك من حسنة : ما اسم شرط جازم في محل رفع مبتدأ، و هو في الأصل اسمٌ موصولٍ · و مِنْ بيانية متعلقة بـ : حال محذوفة ·
فَمِنَ الله : أي : فهو نازل من الله، و الفاء رابطة لجواب الشرط، و الجملة الشرطية خبر ما · و لك أن تقول : ما اسم موصول و شرط و أصابك صلة و شرط، و الموصول مع صلته مبتدأ، و جملة الجواب خبره ·

الترجمة

(হে সম্বোধিত ব্যক্তি) তুমি কি তাকাওনি তাদের দিকে যাদেরকে বলা হয়েছিলো, গুটিয়ে রাখো তোমরা তোমাদের হাত (লড়াই করা থেকে) এবং কায়েম করো ছালাত এবং আদায় করো যাকাত, অনন্তর যখন ফরয করা হলো তাদের উপর লড়াই করা তখন হঠাৎ দেখা গেলো, তাদের একটি দল ভয় করতে লাগলো মানুষকে আল্লাহকে ভয় করার মত, বরং তার চেয়ে ভীষণ ভয় করা। আর তারা বলতে লাগলো (হে) আমাদের প্রতিপালক! কেন ফরয করলেন আমাদের উপর লড়াই করা, না হয় আমাদেরকে অবকাশ দিয়ে দিতেন একটি নিকটবর্তী মেয়াদ পর্যন্ত!
আপনি বলে দিন, দুনিয়ার ভোগ অতি অল্প। আর আখেরাত সর্বদিক থেকে উত্তম তার জন্য যে তাকওয়া অবলম্বন করে। আর তোমাদের উপর যুলুম করা হবে নাসামান্যতম।

তোমরা যেখানেই থাকো, পাকড়াও করবে তোমাদেরকে মৃত্যু, যদিও থাকো মজবূত দুর্গে।

আর যদি স্পর্শ করে তাদেরকে কোন কল্যাণ (তখন) তারা বলে, এটি আল্লাহর পক্ষ হতে; আর যদি আক্রান্ত করে তাদেরকে কোন মন্দ (তখন) তারা বলে, এটা তোমার পক্ষ থেকে হয়েছে। আপনি বলে দিন (ভালো ও মন্দ) সকল কিছু আল্লাহর পক্ষ হতে হয়।

তো হলো কি এই সম্প্রদায়ের যে তারা বুঝতেই চায় না কোন কথা।

(হে মানুষ) যা কিছু কল্যাণ তোমাকে স্পর্শ করে তা আল্লাহর পক্ষ হতে আসে; আর যা কিছু মন্দ তোমাকে আক্রান্ত করে তা তোমার নফসের পক্ষ হতে আসে। আর প্রেরণ করেছি আমি আপনাকে সমস্ত মানুষের জন্য রাসূলরূপে, আর আল্লাহই যথেষ্ট সাক্ষীরূপে।

যে আনুগত্য করে রাসূলের সে আল্লাহরই আনুগত্য করলো। আর যে মুখ ফিরিয়ে নিলো (আপনার আনুগত্য থেকে) তো (তার বিষয়ে আপনি বিষণ্ন হবেন না) কেননা প্রেরণ করিনি আমি আপনাকে তাদের তত্ত্বাবধানকারীরূপে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) كفوا أيديكم (গুটিয়ে রাখো তোমরা তোমাদের হাত) এর তরজমা কেউ করেছেন, সংযত রাখো, কেউ করেছেন সংবরণ করো, কিতাবের তরজমা হলো গুটিয়ে রাখো।

كف এর মূল অর্থ হলো কোন কাজ করার জন্য উদ্যত হওয়ার পর তা থেকে বিরত হওয়া, উপরের তিনটি শব্দেই এই মূল অর্থটি প্রকাশ পায়। তবে তৃতীয় শব্দটি এ অর্থের জন্য উপযুক্ততম।

(লড়াই করা থেকে) এই বন্ধনী যুক্ত করা হয়েছে থানবী (রহ) এর অনুসরণে।

(খ) قتال এর প্রতিশব্দ কেউ লিখেছেন 'যুদ্ধ', কেউ লিখেছেন 'জিহাদ', (তাদেরকে যুদ্ধের বিধান দেয়া হলো/তাদের প্রতি জিহাদের নির্দেশ দেয়া হলো।)

قتال এর প্রতিশব্দ জিহাদ নয়, আর 'যুদ্ধ' শব্দটি হচ্ছে সাদামাটা ও ভাবহীন, তাই কিতাবে লড়াই শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে। কিতাবের তরজমায় ফরয শব্দটি ব্যবহার করায়

শরীয়তের পরিভাষা যেমন এসেছে তেমনি على অব্যয়টির অর্থও উঠে এসেছে।

(গ) خشية শব্দটি আয়াতে তিনবার এসেছে, কিতাবের তরজমায়ও 'ভয়' শব্দটি তিনবার এসেছে।

অন্যান্য তরজমায় ভয় শব্দটি দুবার এসেছে। যেমন– 'মানুষকে ভয় করছিলো, আল্লাহকে ভয় করার মত, কিংবা তার চেয়েও অধিক।'

একটি তরজমায় 'ভয়' শব্দটি তিনবার এসেছে, কিন্তু كخشية الله এর তরজমা মূলানুগ হয়নি। যেমন– 'মানুষকে ভয় করতে আরম্ভ করলো যেমন করে ভয় করা হয় আল্লাহকে, এমন কি তার চেয়েও অধিক ভয়।'

(ঘ) إذا فريق منهم এখানে إذا হচ্ছে আকস্মিকতাজ্ঞাপক। কোন কোন তরজমায় এটি বিবেচনায় আসেনি। যেমন, 'তখন তারা মানুষকে ভয় করতে লাগলো।'

(ঙ) কোন কোন তরজমায় আছে, যখন তাদেরকে যুদ্ধের বিধান দেয়া হলো ...... আমাদের জন্য কেন যুদ্ধের বিধান দিলেন? আয়াতে উভয় স্থানে على রয়েছে, সুতরাং দু' রকম তরজমার প্রয়োজন ছিলো না।

একটি তরজমায় আছে– যখন তাদের প্রতি জিহাদের নির্দেশ দেয়া হলো .... কেন আমাদের উপর যুদ্ধ ফরয করলে। উভয় স্থানে كتبت - على - قتال এই তিনটি শব্দ রয়েছে, সুতরাং তরজমায় অভিন্ন শব্দ ব্যবহার করাই সঙ্গত ছিলো। তাছাড়া যুদ্ধের সাথে ফরয করা শব্দের প্রয়োগ সুন্দর নয়।

(চ) قليل এর তরজমা অন্যরা করেছেন 'সামান্য', কিতাবের তরজমা হলো, অতি সামান্য। সামান্যের অতিশয়তার অর্থটি এসেছে قليل এর تنوين থেকে। থানবী (রহ) এটি বিবেচনায় এনেছেন। তিনি লিখেছেন, দুনিয়ার ভোগ নিছক কয়েকদিনের জন্য।

(ছ) تصبهم حسنة এবং تصبهم سيئة এর তরজমায় কল্যাণের ক্ষেত্রে স্পর্শ করা এবং অকল্যাণের ক্ষেত্রে আক্রান্ত করা সচেতনভাবেই ব্যবহার করা হয়েছে।

একটি তরজমায় আছে– তাদের কোন কল্যাণ সাধিত হলে এবং তাদের কোন অকল্যাণ সাধিত হলে। এ তরজমাটিও

সুন্দর হয়েছে, কারণ এখানে আয়াতের শব্দগত অভিন্নতা রক্ষিত হয়েছে।

কোন কোন তরজমায় আছে- তাদের কল্যাণ/ভালো হলে এবং তাদের অকল্যাণ/মন্দ হলে।

حسنة এবং سيئة শব্দ দুটি নাকিরাহ, এ তরজমায় তা রক্ষিত হয়নি। তাছাড়া إصابة এর তরজমা সঠিকভাবে আসেনি।

(জ) فما لهولاء القوم (তো হলো কি এই সম্প্রদায়ের) আয়াতে যে জোরালো ভাব রয়েছে, তরজমায় তা রক্ষা করা হয়েছে।

একটি তরজমায় এসেছে, এ সম্প্রদায়ের হলো কী! এটা মোটামুটি ঠিক আছে।

একটি তরজমায় আছে, তাদের পরিণতি কী হবে যারা ...... এ তরজমা মূলানুগ নয়।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة بروج

٢ - اشرح معنى ألم تر ٠

٣ - أعرب قوله : كخشية الله ٠

٤ - أعرب قوله : أينما تكونوا يدرككم الموت ٠

٥ - كتب عليهم القتال এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - إن تصبهم سيئة এবং إن تصبهم حسنة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) فَما لكم في المنفقين فِئَتَين و الله اركَسَهم بِما كَسَبوا، اَتُريدون أن تَهدوا مَنْ اَضَلَّ اللّٰه، وَ مَن يُضْلِلِ الله فَلَن تَجِدَ له سَبيلا * وَدُّوا لو تكفُرون كَمَا كفَروا فَتَكونون سَواءً فَلا تَتَّخِذوا منهم اَولياءَ حتى يُهاجروا في سَبيل الله، فَإنْ تَوَلَّوا فَخُذوهم و اقتُلوهم حَيث وجدتموهم، و لا تَتخذوا منهم وَلِيًّا و لا نَصيرا *

بيان اللغة

أركَسَهم : (أي : رَدَّهم إلى الكُفر) ٠ الرَّكْسُ قلب الشيءِ على رَأسِه رَكَسَه (رَكْسًا، ن) و أركَسَه : رَدَّه و قَلَبه

بيـان الإعراب

فـمـا لـكم في المنافقـين فِئَـتين : الفاء استـئـنافيـة، أو فَـصيـحـة، أي : إذا عَلِمتم حالَهم فأيٌّ عذرٍ ثابتٌ لكم .

في المنافقين، أي : في أمور المنافقين، متعلق بـ : فِئتين، لأنـها في معنىٰ ما لكم تَفْتَرِقون في المنافقين .

و يجوز أن يتعلق بحال محذوفـة، لأنها في الأصل صفة لـ : فئتين، أي : فئـتين مُتَـفرقتين في المنافـقين، و فئـتين حـال مِنْ كـافِ لكم .

و الله أركسـهم .... : الواو حاليـة أو مسـتأنـفـة .

أ تريـدون : الهمزة للاستفـهام الإنـكاري

لو تكفرون : لو مصدريـة بعدَ فـعل الوَدِّ، أي : وَدُّوا كفرَكم .

كَما كَفَروا : أي : وَدُّوا كـفرَكم كُـفرًا كَكـفرِهم أو كـفرًا مثـلَ كـفرهم .

و يجـوز أن تكـون حـالا من مـفعـول ودوا، أي : ودوا كـفـركم مثـل كفرهم، أي : مـماثـلا لكفرهم .

تـكونون سواء : الجملة معطوفـة على : تـكفرون .

فـلا تتخذوا منهم أولياء : الفـاء الفصيـحـة، أي : إذا كانـت هذه حالَهم

و منـهم متعلق بـ : تتخذوا على أنه مفعول به أول، و أولياءَ مفعول بـه ثـانٍ، أي : فـلا تتـخذوهم أولـيـاءَ، و حـتى حرف جر و غـايـة يتعلـق بـ : تتخذوا

ব্যাখ্যা ঃ মুনাফিকদের সাথে আচরণের ক্ষেত্রে ছাহাবা কেরামের মাঝে মতভেদ হয়েছিলো- কারো মত ছিলো তাদের সাথে সম্পূর্ণরূপে সম্পক ছিন্ন করার, আর কারো মত ছিলো সম্পর্ক বজায় রাখার, যাতে তাদের ঈমান আনার আশা থাকে। দ্বিতীয় দলের মতামত নাকচ করে দিয়ে এই আয়াত নাযিল হয়।

الترجـمة

তাহলে তোমাদের কী হলো যে, তোমরা দুই দলে বিভক্ত হয়ে গেলে মুনাফিকদের বিষয়ে, অথচ আল্লাহ পিছনে (কুফুরির দিকে) ফিরিয়ে দিয়েছেন তাদেরকে তাদর কৃতকর্মের কারণে। তোমরা কি চাও যে, তোমরা পথপ্রাপ্ত করবে তাদেরকে যাদেরকে পথভ্রষ্ট

করেছেন আল্লাহ! (প্রকৃত অবস্থা তো এই যে,) আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্য কিছুতেই (খুঁজে) পাবে না তুমি (হিদায়াতের) কোন পথ (বা উপায়)।

(তাদের অবস্থা তো এত গুরুতর যে,) তারা কামনা করে যে, তোমরা কুফুরি করবে যেমন তারা কুফুরি করেছে, অনন্তর হয়ে যাবে তোমরা (উভয় পক্ষ) সমান। সুতরাং বানিও না তোমরা তাদেরকে বন্ধু, আল্লাহর রাস্তায় তাদের হিজরত করা পর্যন্ত।

আর যদি ফিরে যায় তারা (ইসলাম থেকে) তাহলে পাকড়াও করো তাদেরকে এবং হত্যা করো তাদেরকে যেখানে পাও তাদেরকে। আর তাদেরকে না বানাবে বন্ধু, আর না সাহায্যকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) فمالكم 'তাহলে' তোমাদের কী হলো, এখানে ف অব্যয়কে فصيحة ধরে তরজমা করা হয়েছে। استئنافية রূপে তরজমা হবে- তোমাদের কী হলো, কিংবা তো তোমাদের কী হলো।

(খ) في المنافقين 'মুনাফিকদের বিষয়ে' উহ্য مضاف কে বিবেচনায় রেখে তরজমা করা হয়েছে।

(গ) أ تريدون أن تهدوا من أضل الله (তোমরা কি চাও যে তোমরা পথপ্রাপ্ত করবে তাদেরকে যাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছেন আল্লাহ)- এখানে من এর অর্থগত দিক বিবেচনায় রেখে তরজমা করা হয়েছে, কারণ ঘটনা একদল মুনাফিক সম্পর্কে। পক্ষান্তরে و من يضلل এর ক্ষেত্রে একবচনের তরজমা করা হয়েছে, কারণ এটি হচ্ছে মূলনীতি, যা একটি ব্যক্তিসত্তাকে কল্পনা করে বর্ণনা করা হয়, কোন দল সম্পর্কে নয়।

'তোমরা কি চাও যে, আল্লাহ যাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছেন তোমরা তাদের পথপ্রাপ্ত করবে।

এ তরজমা যারা করেছেন তারা ভুল করেননি, তবে কিতাবের তরজমায় কোরআনী তরতীব রক্ষা করা হয়েছে।

(ঘ) (হেদায়াতের) বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, এখানে إلى هدايتهم এই متعلق উহ্য রয়েছে।

(ঙ) فتكونون سواء (অনন্তর হয়ে যাবে তোমরা [উভয় পক্ষ] সমান) একটি বাংলা তরজমায় আছে- 'যাতে তোমরা তাদের সমান হয়ে যাও'- এ তরজমা মূলানুগ নয়।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة أركس ·

٢ - كيف يتعلق قوله : في المنافقين بـ : فئتين و هو اسم جامد ·

٣ - اشرح إعراب الكاف في قوله : كما كفروا ·

٤ - علام عطف قوله : تكونون سواء ؟

٥ - و من يضلل এবং من أضل الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - فتكونوا سواء যাতে তোমরা তাদের সমান হয়ে যাও, এ তরজমায় সমস্যা কী ?

(٨) وَ اِذا ضَرَبتم في الاَرضِ فليسَ عليكم جُناح اَنْ تَقصُروا مِنَ الصلوٰة، اِن خِفتم ان يفتِنَكم الذين كَفَروا، اِنَّ الكٰفرين كانوا لكم عَدوًّا مُبينا * وَ اذا كنت فيهم فَاقَمْتَ لهم الصلوٰة فلتَقُم طائِفَةٌ منهم مَعك وَلْيَأخذوا اَسلِحتَهم، فَاِذا سَجدوا فَلْيَكونوا مِن وَرائِكم، وَ لْتَاتِ طائفةٌ اخرٰى لم يُصلوا فَلْيُصلوا مَعك وَ لْيَاخُذوا حِذْرَهم وَ اسلِحَتَهم، وَدَّ الذين كَفَروا لو تغفُلون عن اسلِحَتِكم وَ اَمْتِعَتكم فَيَمِيلون عَليكم مَيْلَةً واحدة، و لا جُناحَ عليكم اِن كانَ بِكم اَذًى من مَطَرٍ أو كنتُم مرضٰى اَنْ تَضَعوا اسلِحَتَكم، و خذوا حِذْرَكم، ان الله اَعَدَّ لِلكٰفرين عذابًا مُهينا *

بيان اللغة

ضرب في الأرض : سافر و ذهب بعيدا

أن تقصُروا : قَصَر الصلاةَ و مِن الصلاة (ن، قَصْرًا) : صَلّٰى ذاتَ الأربَعِ الركَعاتِ ركعَتَين في السفَر الشرعي ·

কছর পড়লো। চার রাকাতবিশিষ্ট নামাযকে দু' রাকাত পড়লো।

قَصَرَ عن الأمرِ : عَجَز و كف عنه (ن، قُصورًا)

أَقصَر عن شيءٍ : كف عنه و هو يَقدِرٌ عليه

قصَّر الشعرَ (جَزَّ بعضَه) চুল কাটলো, ছাঁটলো, ছোট করলো

قصَّر في شيءٍ কোন বিষয়ে ত্রুটি করলো

يميلون : الميلِ العُدول عن الوَسَط إلى أحَد الجانبين (مَيْلاً، ض)

يقال : مال الحائط و مال الغصن

مال عنه : حادَ و عَدَل عن ... (مال عن الطريق/ عن الحق) সরে গেলো

مال إليه : أحبه و رغب فيه

مال عليه : حمل عليه তার উপর হামলা করলো

بيان الإعراب

و إذا ضربتم في الأرض : إذا خافِضٌ لِشرطه متعلق بجوابه . جملة ضربتم في محل جر بالإضافة، و هي شرط إذا

أن تقصروا : المصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض، أي : في قصر الصلاة، و حرف الجر يتعلق بـ : جُناحَ .

إن خفتم : جواب الشرط محذوف دل عليه ما قبله .

فأقمت : هذه الفاء للعطف، وَ فاءٌ فلتقم رابطة للجواب، و منهم متعلق بصفة محذوفة، و معك ظرف يتعلق بـ : تقم

من ورائكم : هذا يتعلق بخبرِ كان المحذوف .

لم يصلوا : الجملة في محل رفع صفة ثانية لـ: طائفةٌ، و فاء فليصلوا للعطف على : لِتَأتِ

لو تغفُلون : لو هذه مصدرية، و المصدر المؤول مفعولٌ وَدَّ، و جملة يميلون معطوفة على تغفلون، و ميلة مفعول مطلق .

إن كان بكم أذى من مطر : أي : أذىً حادثٌ مِن مَطَر، و هذا الجزء من الكلام اسم الناقص المؤخر، و بكم متعلق بخبر الناقص المحذوف المقدم .

أو : حرف عطف، و كنتم مرضى معطوف على : كان بكم أذًى

أن تضعوا :ي : في أن تضعوا، متعلق بخبر لا المحذوف، و جواب الشرط محذوف دل عليه السابق .

الترجمة

আর যখন পরিভ্রমণ করবে তোমরা ভূখণ্ডে তখন তোমাদের ছালাত 'কছর' করায় তোমাদের কোন দোষ নেই, যদি তোমরা আশংকা করো যে, যারা কুফুরি করেছে তারা তোমাদের আক্রান্ত করবে। নিঃসন্দেহে কাফিররা তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

আর যখন থাকবেন আপনি তাদের মাঝে (বিদ্যমান) এবং কায়েম করবেন তাদের জন্য ছালাত তখন (তারা যেন দু'দলে বিভক্ত হয় এবং) তাদের একটি দল যেন দাঁড়ায় আপনার সঙ্গে, আর তারা যেন (সঙ্গে) নিয়ে নেয় তাদের অস্ত্র। যখন এরা সিজদা সম্পন্ন করবে, তখন এরা যেন অবস্থান করে আপনাদের পিছনে, আর অন্য একটি দল যারা নামায পড়েনি তারা যেন আসে এবং নামায পড়ে আপনার সঙ্গে। আর যেন নিয়ে নেয় তারা তাদের আত্মরক্ষার ব্যবস্থা এবং অস্ত্রশস্ত্র।

যারা কুফুরি করেছে তারা কিন্তু কামনা করে যে, তোমরা অসতর্ক থাকবে তোমাদের অস্ত্র ও সরঞ্জাম সম্পর্কে, ফলে ঝাঁপিয়ে পড়বে তারা তোমাদের উপর একবারে।

আর যদি তোমাদের কোন কষ্ট থাকে বৃষ্টির কারণে কিংবা তোমরা (যদি) অসুস্থ হও তাহলে তোমরা নিজেদের অস্ত্র রেখে দেয়ায় তোমাদের কোন অন্যায় নেই। তবে অবশ্যই (সঙ্গে) নিয়ো তোমরা তোমাদের আত্মরক্ষার (ন্যূনতম) ব্যবস্থা। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ প্রস্তুত করে রেখেছেন কাফিরদের জন্য অপমানজনক শাস্তি।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) وإذا ضربتم في الأرض (আর যখন পরিভ্রমণ করবে তোমরা ভূখণ্ডে) একটি তরজমায় রয়েছে- যখন তোমরা পৃথিবীতে সফর করো। الأرض এর প্রতিশব্দরূপে পৃথিবী, এখানে সঙ্গত নয়। তাছাড়া 'পৃথিবীতে সফর করা' এর ব্যবহার নেই।
কোন কোন তরজমায় আছে- 'দেশে-বিদেশে', এটিও في الأرض এর সঠিক তরজমা নয়।

(খ) فأقمت لهم একটি তরজমায় لهم বাদ পড়েছে, অন্য তরজমায় لهم এর অর্থ করা হয়েছে 'তাদের সঙ্গে'।

(গ) أن تقصروا এর তরজমা সবাই করেছেন, সংক্ষিপ্ত করা, হ্রাস করা ইত্যাদি। কিতাবের তরজমায় এ ক্ষেত্রে পরিচিত ও

পারিভাষিক শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঘ) و ليأخذوا اسلحتهم (আর যেন [সঙ্গে] নেয় তারা তাদের অস্ত্র) কেউ কেউ এর তরজমা করেছেন 'তারা যেন সশস্ত্র থাকে'- ভাবতরজমা হিসাবে এটা ঠিক আছে, তবে তা মূলানুগ নয়।

أسئلة :

١ - اشرح مادّة قَصْر .
٢ - أعرب قوله : أن تقصروا .
٣ - بم يتعلق قوله : مِنْ مَطَرٍ ؟
٤ - علام عطف قوله : كنتم مرضى ؟
٥ - ضربتم في الأرض এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - إن الكفرين كانوا لكم عدوا مبينا (নিঃসন্দেহে কাফিররা তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু) এই তরজমা থেকে কী বোঝা যায় ?

(٩) فَاذا قَضَيتم الصلوٰة فاذكروا الله قِياماً و قُعودًا و على جُنوبِكم، فَاذا اطمَانَنتُم فَاقِيموا الصلوٰة، اِنَّ الصلوٰة كانت على المؤمنين كِتٰباً موقوتا * وَ لا تَهِنوا في ابتغاء القوم، اِن تكونوا تَالَمُون فَانِهم يَالَمُون كَما تَالَمون، وَ ترجون مِنَ الله ما لا يرجون، و كان الله عَليمًا حكيمًا * اِنا اَنزَلنا اليك الكِتٰب بالحَقِّ لِتَحكُم بين الناس بِما اَرٰىك الله، و لا تَكن لِلخائنين خَصيما * وَ استغفِرِ اللهَ، اِن الله كان غَفورا رحيما * و لا تُجادِل عَنِ الذين يَختانون انفُسَهم، اِن الله لا يُحب مَن كان خَوَّاناً اَثيما *

بيان اللغة

مَوقوتا : وَقَتَ شيئًا (يَقِتُ، وَقْتاً ، ض) جَعل له وَقْتًا يفعَلُه فيه .
وَقَتَ اللهُ الصلاةَ : جعل لها وقتًا .
وقَّت : بمعنى وَقَتَ
الوَقْتُ : مقدارٌ مِنَ الزمان قُدِّرَ لأمرٍما ، و الجمع أَوقاتٌ

لا تَهِنوا : الوَهْنُ الضَّعْفُ

وَهَنَ (ض، وَهْنًا) : ضَعُفَ في الأمرِ و العَمَلِ .

أوهَنه : أضعَفه، قال تعالى : إن الله مُوهِنُ كيدِ الكٰفرين

تألَمون : أَلِمَ (س، أَلَمًا) : وَجِعَ — ব্যথা পাওয়া

تَألَّم : تَوجَّع، آلَمَه : أوجَعه

و الأَلَم : الشعورُ بما يُضادُّ اللذَّةَ، و الجمع آلام .

خَصيما : الخصيم : الكثيرُ المخاصَمَةِ — প্রবল বিবাদকারী

خَصِمَ (س، خَصَما و خِصامًا) جادَل، فهو خَصِمٌ

خاصَمَه : جادَله، نازَعه، فهو مُخاصِم و خَصيم، و جمعُ الخصيم خُصَماء و خُصْمانٌ

اختَصَم القوم و تخاصَموا : خاصَم بعضُهم بعضًا

و الخَصْم : المخاصم، يستوي فيه المذكر و المؤنث و الجمع و المفرد، و الجمع خُصوم .

يَختانون : الخِيانَة : نَقْضُ العهدِ و تركُ الوَفاءِ — [illegible]

خانَ الحقَّ، خان العهدَ، خان الأمانة، خان فلانًا (ن، خِيانة)، و نَقيضُ الخيانَةِ الأمانَةُ

و الاختيان : حَمْلُ النفسِ على الخيانَةِ

بيان الإعراب

فاذكروا الله : جواب شرط غير جازم، و قياما و قعودا حال بعد حال، و على جنوبكم يتعلق بمحذوف، حال ثالثة .

على المؤمنين : يتعلق بـ : موقوتا، و كتٰبا خبر كانت، و موقوتا صفتُه

في ابتغاء القوم : يتعلق بـ : تَهِنوا، و المصدر مضاف إلى مفعوله .

فإنهم يألمون : الجملة في محل جزم جواب الشرط

كما تألَمون : أي يَألَمون أَلَمًا كأَلَمِكم أو مثلَ ألمكم

بما أراك الله : ما اسم موصول، و الجملة صلته، و العائد محذوف، و هو المفعول الثاني لـ : أراك، أي بما أراكَه الله، و الإراءة هنا بمعنى العِلم، أي : بما عَلَّمَكه الله

الترجمة

অনন্তর যখন আদায় করে সারবে তোমরা এই ছালাত তখন তোমরা আল্লাহর স্মরণে নিমগ্ন থাকো দাঁড়িয়ে এবং বসে এবং পার্শ্বশয়নের অবস্থায়। অনন্তর যখন তোমরা (সফর থেকে এবং ভীতি থেকে) স্বস্তি লাভ করবে তখন তোমরা (মূল নিয়মে) ছালাত কায়েম করো। নিঃসন্দেহে ছালাত মুমিনদের উপর 'সময়াবদ্ধ' ফরয।

আর হিম্মত হারিয়ো না তোমরা শত্রুদের ধাওয়া করার বিষয়ে, যদি তোমরা (জখমের কারণে) ব্যথাগ্রস্ত হয়ে থাকো তাহলে তারাও তো ব্যথাগ্রস্ত হয় যেমন তোমরা ব্যথাগ্রস্ত হও; তদুপরি তোমরা আশা করো আল্লাহর কাছে এমন কিছু যা তারা আশা করতে পারে না। আর অবশ্যই আল্লাহ সর্বজ্ঞ ও মহাপ্রজ্ঞাময়।

নিঃসন্দেহে আমি নাযিল করেছি আপনার প্রতি কিতাব সত্যসহ যেন আপনি ফায়ছালা করতে পারেন মানুষের মাঝে ঐ 'জ্ঞান' দ্বারা যা 'প্রদর্শন' করেছেন আপনাকে আল্লাহ। আর আপনি বিশ্বাস-ভঙ্গকারীদের পক্ষসমর্থনকারী হবেন না।

আর আপনি ইসতিগফার করুন আল্লাহর কাছে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ পরমক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

আর আপনি বিবাদ করবেন না তাদের পক্ষ হতে যারা বিশ্বাসভঙ্গে প্ররোচিত করে নিজেদেরকে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ ভালোবাসেন না তাকে যে অতিবিশ্বাসভঙ্গকারী এবং অতিপাপাচারী হয়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) فاذا قضيتم الصلوة (অনন্তর যখন আদায় করে সারবে তোমরা এই ছালাত) 'এই ছালাত' – এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি বলেন, এখানে الصلاة এর ال দ্বারা, আলোচ্য ছালাতুল খাওফের কথা বোঝানো হয়েছে, তাই আমরা 'এই ছালাত' তরজমা করেছি।

'আদায় করবে'-এর পরিবর্তে 'আদায় করে সারবে' বলাই এখানে উত্তম।

(খ) فاذكروا الله (তখন তোমরা আল্লাহর স্মরণে নিমগ্ন থাকো) সর্বাবস্থায় যিকির করার আবহ থেকে নিমগ্নতার অর্থটি গ্রহণ করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) যদিও বিষয়টি বিবেচনায়

আনেন নি, কিন্তু থানবী (রহ) তা বিবেচনায় এনেছেন। তিনি লিখেছেন, الله كى ياد ميں لگ جاؤ (আল্লাহর স্মরণে লেগে যাও।) কোন বাংলা তরজমায় বিষয়টি বিবেচনা করা হয়নি।

(গ) وعلى جنوبكم এর তরজমা প্রায় সকলেই করেছেন 'শুয়ে', এমনকি উভয় শায়খও তা করেছেন।

কিন্তু قعودا এর সমওযনের শব্দ رقودا থাকা সত্ত্বেও তা না বলে ভিন্ন শৈলীতে চারটি শব্দ ব্যবহার করে على جنوبكم বলা হয়েছে, নিশ্চয় সূক্ষ্ম কোন উদ্দেশ্যকে সামনে রেখে। মুফাস্‌সিরগণ বলেছেন, على جنوبكم দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, পার্শ্বশয়ন হচ্ছে আল্লাহর নিকট মানবের শয়নের সর্বোত্তম ভঙ্গি। সুতরাং তরজমায় এ সূক্ষ্ম বিষয়টি বিবেচনা করা কর্তব্য।

(ঘ) ... إن الصلاة كانت على المؤمنين (নিঃসন্দেহে ছালাত মুমিনদের উপর সময়াবদ্ধ ফরয) এর তরজমা কেউ করেছেন– নির্ধারিত সময়ে ছালাত কায়েম করা মুমিনদের জন্য অবশ্যকর্তব্য– এ তরজমা মূল থেকে অত্যন্ত বিচ্যুত। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন– 'নিশ্চয় নামায মুসলমানদের উপর ফরয নির্ধারিত সময়ে।'

এ তরজমাও পূর্ণ মূলানুগ নয়। থানবী (রঃ) এর তরজমা হলো– নিশ্চয় নামায মুসলমানদের উপর ফরয এবং (তা) সময়ের সাথে আবদ্ধ।

অর্থাৎ তিনি موقوتا এর তরজমা করেছেন পূর্ণ একটি বাক্য দ্বারা।

তদুপরি উভয় শায়খ على المؤمنين এবং على المسلمين এর মাঝে কেন পার্থক্য করেন নি তা বোধগম্য নয়।

সবদিক বিবেচনা করে কিতাবে মূলানুগ তরজমা করার চেষ্টা করা হয়েছে।

(ঙ) القوم এর শাব্দিক অর্থ সম্প্রদায়। তবে এখানে উদ্দেশ্য শত্রু সম্প্রদায়। তরজমায় এটা বিবেচনায় আনা হয়েছে।

বাংলা মুতারজিমগণ ابتغاء এর তরজমা করেছেন সন্ধান করা। সন্ধান করা আর ধাওয়া করা এক নয়। আর এখানে ধাওয়া করাই উদ্দেশ্য।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة الخصيم و مُلحَقاتِه ·

٢ - أعرب قوله : كتٰبا موقوتًا ·

٣ - أعرب قوله : كما تألَمون ·

٤ - بم يتعلق قوله : بالحق ؟

٥ - على جنوبكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - اذكروا الله আল্লাহর স্মরণে নিমগ্ন থাকো- এখানে নিমগ্ন শব্দটির সংযোজনের সূত্র কী ?

(١٠) وَ الذين اٰمَنوا و عمِلوا الصّٰلِحٰت سنُدخِلهم جنّٰتٍ تجري من
تحتِها الانهٰر خٰلدين فيها أبدًا، وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا، و من اصدَقُ
مِنَ اللّٰه قِيلا * ليسَ بِأمانِيِّكم وَ لا أمانِيِّ أهْلِ الكتٰب، مَن
يعمَلْ سوءً يُجزَ به و لا يَجِدْ له من دون الله وَلِيًّا و لا نَصيرا
* و مَن يعمَلْ من الصّٰلِحٰت مِنْ ذكر او أُنْثٰى و هو مؤمن
فاولئك يَدخلون الجنةَ و لا يُظلَمون نَقيرًا * و مَنْ احسَنُ
دينا مِمَّنْ اسلَمَ وجهَه لله و هو مُحسن و اتَّبع مِلّةَ ابرهيمَ
حَنيفا، وَ اتَّخذ الله ابرهيمَ خليلا * و للّٰهِ ما في السمٰوٰت و
ما في الارض، و كان الله بِكل شَيءٍ مُحيطا *

بيان اللغة

حَقٌّ : قولٌ أو عمَلٌ أوِ اعتقادٌ يُطابِق الصدقَ و الحِكمةَ সত্য, সঠিক, সপ্রমাণিত। সত্যের এবং প্রজ্ঞার অনুগামী কথা, কাজ ও বিশ্বাস।

و الحق من أسماء الله تعالى পরম সত্যময় সত্তা

و يستعمَل الحق ضِدَّ الضلال فيقال : نحن على الحق و أنتم على ضلالٍ ·

حَقَّ الأمرُ (حَقًّا ، ض) صَحَّ و ثَبَتَ و صَدَقَ বিষয়টি সঠিক হলো

সত্য হলো, সপ্রমাণিত হলো, অবশ্য সাব্যস্ত হলো।

حَقَّ الأمرَ (حَقًّا، ن) تَيَقَّنَه، صَدَّقَه

قِيلا :(কথা) مصدرٌ كالقَوْلِ و القَالِ এটি القول এর সমার্থক মাছদার

نَقير : وَقْبَة في ظَهر النواة، و هو كِناية عَن القلة খেজুর দানার পিঠের ক্ষুদ্র ছিদ্র, এটি হচ্ছে ক্ষুদ্রতা ও অল্পতার প্রতি ইঙ্গিত।

بيان الإعراب

وعدَ الله : مفعول به لفعل محذوفٍ أي : خذوا وعدَ الله، و حقا مصدر بمعنَى اسمِ الفاعل، حال من المفعول به ·

و يجوز أن يكون أصل العبارة وَعْدَ الله وعدًا حَقًّا ·

و يجوز أن يكون حَقًّا مفعول مُطلق لفعل محذوفٍ، أي : خذوا وعدَ الله، حَقَّ وعدُ الله حقًّا ·

قيلا : منصوب علي أنه تمييز مِن نِسبَةِ أفعلَ و فاعِله ·

ليسَ بأمانِيِّكم .. : يعود ضميرُ ليس إلى وعدَ الله، أي : ليس ما وَعَدَ اللّهُ مِنَ الثوابِ حاصلًا بأمانِيِّكم و لا بأمانيِّهم، و إنما يحصُل بالإيمان و العمَل الصالح ·

يُجزَ به : هذه الجملة جواب الشرط، و لا يجد معطوف على الجواب

من الصالحات : مِن تفيد التبعيضَ، أي : بعضَ الصالحات، لأن العبدَ لا يستطيع أن يستَوعِب الصالحاتِ ·

مِن ذكر أو أنثى : لِبيان معنى مَن، و هو متعلق بحال محذوفة ·

نقيرا : نعت لمصدر محذوف، لأنه بمعنى قليلا، أي : لا يُظلمون ظلما قليلاً ·

و اتبع : هذه الجملة معطوف علي أسلم، و داخلة في الصلة، و حنيفا حال من فاعل اتبع أو من إبراهيم ·

الترجمة

আর যারা ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে অবশ্যই দাখেল করবো আমি তাদেরকে এমন বাগবাগিচায় যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় বিভিন্ন নহর। তারা সেখানে থাকবে অনন্ত অসীমকাল।

আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন সত্য সত্য প্রতিশ্রুতি। আর কে আল্লাহর চেয়ে সত্যবাদী কথায়? (অবশ্য) আল্লাহর ওয়াদা (শুধু) তোমাদের আকাঙ্ক্ষা দ্বারা এবং আহলে কিতাবের আকাঙ্ক্ষা দ্বারা অর্জিত হবে না, (বরং ঈমান ও নেক আমল দ্বারা অর্জিত হবে)

আর যে বদ আমল করবে তাকে তার প্রতিদান দেয়া হবে, আর সে নিজের জন্য আল্লাহ ছাড়া না পাবে কোন অভিভাবক, আর না কোন বন্ধু।

আর যে কোন নর বা নারী মুমিন অবস্থায় কিছু আমল করবে ওরাই দাখেল হবে জান্নাতে, আর তাদের উপর অবিচার করা হবে না তিল পরিমাণ।

আর কে বেশী উত্তম দ্বীনের দিক থেকে ঐ ব্যক্তির চেয়ে যে নিজেকে আল্লাহর অনুগত করে, এমন অবস্থায় যে, সে সদাচারকারী, আর সে অনুসরণ করে ইবরাহীমের মিল্লাত যিনি সত্যনিষ্ঠ ছিলেন।

আর আল্লাহ তো ইবরাহীমকে খালীল (একান্ত বন্ধু) বানিয়েছিলেন।

আর যা কিছু রয়েছে আসমানসমূহে আর যা কিছু রয়েছে যমীনে তা আল্লাহরই, আর আল্লাহ সব কিছুকেই অবশ্যই বেষ্টনকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) অনন্ত অসীমকাল – خالدين এবং أبدا উভয়ের মাঝে চিরকালীনতার অর্থ রয়েছে, তাই থানবী (রহ) তরজমা করেছেন همیشه، همیشه কিতাবে এরই তরজমা করা হয়েছে।

বাংলা তরজমাগুলোতে আছে (ক) তারা তাতে থাকবে চিরকাল (খ) সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে।

(খ) وعد الله حقا কিতাবের তরজমায় এর মূলরূপ ধরা হয়েছে وعد الله وعدا حقا

মূলরূপটি এমনও হতে পারে اذكروا وعد الله، حق الأمر حقا সে হিসাবে তরজমা হবে– তোমরা আল্লাহর ওয়াদা স্মরণ রেখো, বিষয়টি সুসাব্যস্ত হয়েছে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন–

(ক) আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য এটি মূলতঃ وعد الله حق এ জাতীয় বাক্যের তরজমা। সুতরাং তা সরল তরজমা হলেও মূলানুগ নয়।

(খ) আরেকটি তরজমা– আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন সত্য সত্য। এটিও মূলানুগ তরজমা নয়।

(গ) سندخلهم جنت এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন এভাবে– তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করতে দেয়া হবে, এটা দায়িত্বপূর্ণ তরজমা নয়।

(ঘ) و من أصدق من الله قيلا (আর কে আল্লাহর চেয়ে সত্যবাদী কথায়) এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন– الله سے سچا کون (আল্লাহর চেয়ে সত্যবাদী কে?) তিনি قيلا এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করেননি, তবে তা অনুবাদ-বাক্যের অন্তর্ভুক্ত রয়েছে। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন–

اور الله سے زیادہ کس کا کهنا صحیح هوگا

(আর আল্লাহর চেয়ে বেশী কার কথা সঠিক হবে)

এটি গ্রহণযোগ্য তরজমা অবশ্যই, তবে মূলানুগ নয়।

একটি বাংলা তরজমায় আছে–

কে আল্লাহ অপেক্ষা কথায় অধিক সত্যবাদী।

এটি মূলানুগ তরজমা।

(ঙ) ليس بامانيكم و لا اماني أهل الكتاب (আল্লাহর ওয়াদা না সাব্যস্ত হবে তোমাদের আকাঙ্ক্ষা দ্বারা, আর না আহলে কিতাবের আকাঙ্ক্ষা দ্বারা) এর তরজমা একজন করেছেন– তোমাদের আশার উপরও ভিত্তি নয়, এবং আহলে কিতাবদের আশার উপরও নয়।

এ তরজমায় বক্তব্যের উদ্দেশ্য পরিষ্কার নয়।

অন্য একটি তরজমা হলো– তোমাদের খেয়ালখুশী অনুসারে কাজ হবে না।

– 'কাজ হবে না' এ কথার অর্থ কী? এখানে আসলে ليس এর اسم কোনটি এবং তার খবর কী? তা পরিষ্কার করতে হবে। কিতাবের তরজমায় তা স্পষ্ট হয়েছে। তাছাড়া أماني এর অর্থ 'খেয়ালখুশী' নয়।

শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন 'আশা' এবং 'আকাঙ্ক্ষা'। এখানে ﻻ এর তাকীদ 'শুধু' শব্দটি ব্যবহার করেও আদায় করা যায়।

(চ) কিছু নেক আমল করবে, এখানে من অব্যয়টির ব্যবহার বিবেচনায় আনা হয়েছে। অন্যান্য তরজমায় তা করা হয়নি।

(ছ) نقيرا এর শাব্দিক তরজমা করা হয়নি; বরং শব্দটির ইঙ্গিতার্থ লক্ষ্য করে বাংলায় এর বিকল্প শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।
থানবী (রহ) তরজমা করেছেন ذرا بھی (সামান্যও)
শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, تل بھر (তিল পরিমাণ)।
কিতাবে তাঁর অনুসরণ করা হয়েছে।
কেউ কেউ তরজমা করেছেন– অণুপরিমাণ।

(জ) و اتبع ملة ابراهيم حنيفا এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন– 'ইবরাহীমের সমাজ অনুসরণ করে', 'সমাজ' শব্দটি বাইবেলের এবং ব্রাহ্ম সমাজের পরিভাষা, তাই তা বর্জনীয়।
ملة এর তরজমা করা যায়– তরীকা, ধর্ম, আদর্শ, ধর্মাদর্শ ইত্যাদি।
কেউ কেউ حنيفا কে اتبع এর فاعل থেকে حال ধরে তরজমা করেছেন– 'একনিষ্ঠভাবে ইবরাহীমের সমাজ/ধর্মাদর্শ অনুসরণ করে।' ব্যাকরণগতভাবে এটা ঠিক হলেও উত্তম নয়। কিতাবে শায়খায়নকে অনুসরণ করে তরজমা করা হয়েছে

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ حقًّا ·

٢ – اشرح معنى النقير ·

٣ – أعرب قوله : وَعْدَ اللهِ ·

٤ – علام يعود ضمير ليس ؟

٥ – خالدين فيها أبدا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – و لا يظلمون نقيرا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١) فَبِما نَقْضِهِم ميثاقَهم و كُفرِهم بآيٰت الله و قَتْلِهم الانبياءَ بِغَيرِ حقٍّ و قولِهم قلوبُنا غُلْفٌ، بل طبَعَ الله عليها بِكُفرِهم فَلا يُؤمنون إلَّا قليلا * وَ بِكُفرِهم و قَولِهم على مريمَ بهتانًا عظيمًا * وَ قولِهم إنّا قَتلنا المسيحَ عيسى ابنَ مريمَ رسولَ الله، و ماقتلوه و ما صَلَبوه و لٰكِنْ شُبِّهَ لهم، وَ إن الذين اختلَفوا فيه لَفي شَكٍّ منه، ما لهم به مِن علمٍ الا اتباعَ الظن، و ما قتلوه يَقينًا * بل رفعَه الله اليه، و كان الله عزيزًا حَكيمًا *

بيان اللغة

نَقَضَ (ن، نَقْضًا) : أفسَدَ و أبطَل و هَدَم

نَقض العهدَ و الميثاقَ : نَكَثه (ن، نَكْثًا) ওয়াদা ভঙ্গ করলো

اَنْقَضَ الحِملُ الظهرَ : اثقَلَه ভারাক্রান্ত করলো

غُلْفٌ : جمعُ أغلَفَ، يقال : سَيفٌ أغلَفُ، أي : سَيفٌ في غِلافٍ
খাপবদ্ধ তলোয়ার

قُلوبٌ غُلْفٌ : قلوب مُغَطّاة

كانوا يقولون للنبي صلى الله عليه وسلم : قُلوبنا مُغَطّاة بِأَغطِيَةٍ، فَلا يدخلها كلامُك .

فَرد الله عليهم بقوله : بل طبَع الله عليها بِكفرهم (ف، طَبْعًا)، أي : خَتَم الله عليها (ض، خَتْمًا) .

ما صَلَبوا : صَلَبَ الرجلَ (ن، صَلْبًا) : شَدَّ أطرافَه و عَلَّقه على عُودٍ
শূলে চড়ালো

صَلَّب الرجلَ : صَلَبه، و يقال : صلبه على كذا و صلبه فيه

صَلِيب : مَصْلُوب . ما يُصْلَب عليه

أَشبه شَيءٌ شَيئًا : ماثَلَه، أي كان مِثْلَه — সদৃশ হলো

شَبَّهَه بِشَيءٍ : مَثَّلَه به — তাকে কোন কিছুর সদৃশ সাব্যস্ত করলো

شَبه عليه الأمرَ : أَبْهَمَه عليه حَتَّى اشْتَبَه بِغَيره

شُبِّهَ عليه / له : لُبِّس — তার জন্য বিভ্রাটপূর্ণ করে দেয়া হলো

تَشابَه الشيئان : أَشْبَه كلٌّ منهما الآخرَ حتى التَبَسا

اِشتَبه الأمرُ عليه : اختَلَط و التَبَس

اشتبه في المسأَلةِ : شَكَّ في صِحَّتِها

بيان الإعراب

فبما نقضهم ميثاقهم : يتعلق بمحذوف، أي : لُعنوا بِسَبَب نقضِهم ميثاقَهم و ما زائدة للتوكيد، و ميثاقَهم مفعول المصدر .

كُفرهم : معطوف على نقضِهم، وقتلِهم معطوف على كفرِهم .

قولِهم : معطوف على السابق، وجملة قلوبنا غلف مقول القول .

قليلا : نعت لمصدر محذوف، أي : لا يؤمنون إلا إيمانًا قليلا، أو نعت لظرف محذوف، أي : لا يؤمنون إلا زمانًا قليلا، و الظرف يتعلق بـ : يؤمنون .

و يجوز أن يكونَ منصوبا على الاستثناءِ مِنْ فاعلِ يُؤمنون، أي : لا يؤمنون إلا قليلا منهم

و بكفرِهم : هذا معطوف على : بِنَقضِهم، أو متعلق بفعل محذوف، و هو لُعِنوا، و قولِهم معطوف على كفرِهم .

على مريمَ : يتعلق بـ : قولهم، و بُهتانًا مفعول به للمصدر .

عيسى : بدَلٌ من المسيحَ، و ابنَ مريم بدل من عيسى، و رسولَ الله بدل من عيسى .

لا يعتقد اليهودُ أن عيسى بنَ مريمَ رسولُ الله، بل قالوا ذلك ساخرين، أي : قتلنا هذا الذي يزعُم أنه رسول الله، كما قال فرعون ساخرًا مِن موسى : إن رسولَكم الذي أرسل إليكم لمجنون .

الذين اختلفوا فيه : هذا اسم إن، و في شك يتعلق بخبر إن المحذوف .

و منه يتعلق بنعت محذوف لِـ : شَكٌّ أي : لَفِي شك حادثٍ من جهةِ قَتلِه .

و المعنى : إن الذين اختلفوا في شَأنِ عيسى لَفي شَكٌّ من قتلِه .

الفائدة : رُوي أنه لما رُفِع عيسى و أُلقِيَ شَبَهُه على غَيره فقتَلوه، قالوا : إن كان هذا المقتولُ عيسٰى فأين صاحبُنا ؟ و إن كان هذا صاحبَنا فأين عيسى ؟ فاختلفوا، فقال بعضهم : هو عيسى و قال بعضهم : ليس هو عيسى، بل هو غيره، هكذا وقعوا في شكٍ من قتلِ عيسٰى.

مالهم به من علمٍ : من حرف جر زائد، فـ : علمٍ مجرور لفظًا مرفوع مَحَلا، لأنه مبتدأ مؤخر .

و به يتعلق بـ : علمٍ، و لهم متعلق بخبر مقدم، أي : ما لهم عِلمٌ حَقيقيٌّ بقَتلِ عيسٰى .

إلا اتباعَ الظن : إلا أداة استثناءٍ، و المستثنٰى منصوب بـ : إلا، وهو استثناءٌ منقَطِع، لأن اتباعَ الظن ليس من جنسِ العلمِ، كما تقول : حَضَر التلاميذُ إلا معلمَهم .

يقينا : هو نعتٌ نائبُ المفعول المطلق، أي ما قتلوه قتلًا يقينا، أو هو حال من فاعلِ ما قتلوه، لأن يقينًا في معنٰى متيقنين .

الترجمة

তো (তারা অভিশপ্ত হয়েছিলো) তাদের ওয়াদা ভঙ্গ করার কারণে এবং তাদের অস্বীকার করার কারণে আল্লাহর আয়াতসমূহকে এবং তাদের হত্যা করার কারণে নবীদেরকে অন্যায়ভাবে এবং তাদের (এ কথা) বলার কারণে (যে,) আমাদের হৃদয় তো সুরক্ষিত, (তা নয়) বরং আল্লাহ সেগুলোর উপর মোহর এঁটে দিয়েছেন তাদের কুফুরির কারণে, ফলে তারা ঈমান আনে না, কিন্তু অতি সামান্য।

আর (তারা অভিশপ্ত হয়েছে) তাদের কুফুরির কারণে এবং তাদের (এ কথা) বলার কারণে (যে,) আমরা তো হত্যা করে ফেলেছি মাসীহ ইবনে মারয়ামকে, (স্বঘোষিত) আল্লাহর রাসূলকে, অথচ হত্যা করতে পারেনি তারা তাকে, এমনকি শূলে চড়াতেও পারেনি তাকে, বরং বিষয়টি ঘোলাটে করে দেয়া হয়েছিলো তাদের জন্য।

আর নিঃসন্দেহে যারা মতভেদ করেছিলো তার সম্পর্কে তারা তার হত্যার দিক থেকে (উদ্ভূত) সংশয়ে ছিলো।
এ বিষয়ে কোন জ্ঞানই তাদের নেই, অনুমানের অনুসরণ ছাড়া। আর হত্যা করেনি তারা তাকে নিশ্চিতরূপে, বরং উত্তোলন করেছেন তাকে আল্লাহ আপনার কাছে। আর আল্লাহ তো মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) فبما نقضهم ميثاقهم (তো [তারা অভিশপ্ত] হয়েছিলো] তাদের ওয়াদা ভঙ্গ করার কারণে) 'তো' – এ শব্দটি বাংলায় বক্তব্যের সূচনারূপে ব্যবহৃত হয়। এখানে فاء الاستئناف এর প্রতিশব্দরূপে এটিকে আনা হয়েছে।
এখানে ব্যাকরণগত প্রয়োজনে যে ক্রিয়া উহ্য রয়েছে বন্ধনীতে তা দেখানো হয়েছে।

(খ) قلوبنا غلف (আমাদের হৃদয় তো সুরক্ষিত) এই ইসমিয়্যা বাক্যে যে তাকীদ রয়েছে তার জন্য 'তো' শব্দটি আনা হয়েছে।
غلف এর মূল অর্থ হলো غلاف বা আবরণ দ্বারা আচ্ছাদিত, ভাবার্থ হলো সুরক্ষিত, এখানে ভাবার্থ গ্রহণ করা হয়েছে, যেমন থানবী (রহ) করেছেন।
শায়খুলহিন্দ (রহ) শাব্দিক অর্থ গ্রহণ করেছেন। বাংলা মুতারজিমগণ তা অনুসরণ করে 'আচ্ছাদিত' লিখেছেন।
একটি তরজমায় রয়েছে, আমাদের হৃদয় তো আচ্ছন্ন, এটি সঠিক নয়।

(গ) رسول الله (স্বঘোষিত) আল্লাহর রাসূলকে– এ বন্ধনী যুক্ত হয়েছে তাদের উপহাস প্রকাশ করার জন্য।
'হত্যা করেছি' এর পরিবর্তে 'হত্য করে ফেলেছি' তরজমা করা হয়েছে তাদের গর্বের ভাবটুকু তুলে ধরার জন্য।

(ঘ) و ما صلبوه (এমনকি শূলেও চড়াতে পারেনি তাকে) এখানে و এর তরজমা করা হয়েছে 'এমনকি' দ্বারা। কারণ আয়াতের উদ্দেশ্য এ কথা বলা যে, হত্যা করা তো দূরের কথা, হত্যা করার জন্য যে শূলে চড়ানো আবশ্যক সেটাও তারা করতে পারেনি। و এর তরজমা 'এবং' করা হলে এ ভাব উঠে আসে না।

(ঙ) و لكن شبه لهم (বরং বিষয়টি তাদের জন্য ঘোলাটে করে দেয়া হয়েছিলো) এখানে 'বিষয়টি' দ্বারা বোঝানো হয়েছে যে, شبه এর মাঝে বিদ্যমান هو যামীরের উদ্দেশ্য ঈসা (আঃ) নন, বরং আয়াতে আলোচিত ঈসা (আ) এর হত্যার বিষয়টি উদ্দেশ্য।

কেউ কেউ এমন তরজমা করেছেন, 'তাদের জন্য ঈসা (আ) এর সদৃশ তৈরী করা হয়েছিলো।' এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য।

(চ) তারা তার হত্যার দিক থেকে (উদ্ভূত) সংশয়ে ছিলো– এটি তারকীব অনুগামী তরজমা। সরল তরজমা এরূপ–
তারা তার হত্যার বিষয়ে সংশয়ে ছিলো। থানবী (রহ) شك এর তরজমা করেছেন 'ভুল ধারণা'।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ غُلْفٌ
٢ – اذكر وجوهَ الإعراب في قوله : قليلا .
٣ – أعرب قوله : ما لهم به من علم .
٤ – أعرب قوله : يقينا .
٥ – قلوبنا غلف এর তরজমা পর্যালোচনা করো।
٦ – و ما صلبوه এর তরজমায় 'এবং' এর পরিবর্তে 'এমনকি' কেন করা হয়েছে?

(٢) إِنا أَوحينا اليك كَما أَوحينا الى نُوح وَ النبيّن من بعدِه، و
أَوحينا الى ابرٰهيم و اسمٰعيل و اسحٰق و يَعقوب و الاَسباطِ
وَ عيسٰى و اَيُّوبَ و يونُسَ و هٰرون و سُليمٰن، و اٰتينا داودَ
زَبورًا * و رُسُلًا قد قَصَصنٰهم عليك من قبلُ و رسلًا لم
نقصُصْهم عليك، و كَلَّم الله موسٰى تكليمًا * رُسلا مبشّرين
و مُنذِرين لِئَلَّا يكونَ للناس على الله حُجَّةٌ بعدَ الرسُل، و كان
الله عزيزًا حكيما * لٰكِنِ اللهُ يشهَد بما اَنزَل اليك اَنْزَلَه
بِعِلْمِه، وَ المٰلئِكةُ يشهَدون، و كفٰى بالله شَهيدًا *

بيــان اللـغـة

الأسباط : انظر ١٠/١/٣ يشـهدون : انظر ١٠/١/٣
لم نقصص : قَصَّ شَيئًا (ن، قَصًّا، قَصَصًا) : تَتَبَّعَ أثَرَه.
তার চিহ্ন/পদচিহ্ন অনুসরণ করলো।
جاء في القرآن : وَ قالت لأخته قُصِّيه . و يقال : قَصَّ أثَرَه
قص القصةَ : رَواها
قص عليه القصةَ : أخبره بها — তাকে ঘটনা শোনালো
و القَصَصُ : رِوايَة الخَبَرِ . الخَبَرُ المقصُوصُ .
جــاءَ في القرآن : لَهـو القَصَصُ الحقُّ، في قَصَصِهم عِبـرَةٌ،
فَاقْصُصِ القَصَصَ
حجة : دليل و برهان (ج) حُجَج
أوحينا : الوَحْيُ في اللغة يُطلَق على الإشارة وَ الإيماء .
قال تعالى : فأوحٰى إليهم أَنْ سَبِّحوا بُكرةً و عَشِيًّا
و يُطلَق على الإلهام الذي يَقَع في النفس (من جانب الله تعالىٰ)
كما قال تعالى : وَ أوحينا إلى أمِّ موسٰى أَنْ أرضِعيه، و قال تعالى :
وَ أوحٰى ربُّك إلى النحلِ .
و الوحي ما يُرسِلهُ الله إلى الأنبياء بِوَاسِطَة الملَك أو بِغَيرِ واسِطَةٍ.
و هذا الوحيُ هو المراد في هذه الاية .

بيــان الإعراب

كما أوحينا : الكاف حرف جر للتشبيه، يتعلق بمفعول مطلق محذوف،
وَ ما مصدريَّة أي : أوحينا اليك إيحاءً كإيحائنا إلى نوحٍ.
ويجوز أن يكون الكاف بمعنٰى مِثْلِ نعتٌ لمصدر محذوف، أي :
إيحاءً مِثلَ إيحائنا .
و يجوز أن تكون ما اسمَ موصولٍ، و معناه هنا الوحي، أي : مثلَ
الوحيِ الذي أوحيناه إلى نوحٍ.
من بعده : متعلق بحال محذوفة، أي : آتين من بعده .

رسلا قد قصصناهم : رسلا مفعول به لفعل محذوف، أي : أرسلنا رُسُلا
و جملة قد قصصناهم عليك صفة لـ : رُسُلا
و من قبل يتعلق بـ : قَصَصْنا .
و رسلا لم نقصُصهم عليك : معطوف على السابق .
تكليما : مفعول مطلق مؤكِّد لِرَفْعِ احتمال المجاز .
رسلا مبشرين و منذرين .... : رسلا هذا بَدَلٌ من رسلًا الأوَّلِ و الثاني، أو هو منصوب على المدح، أي : نمدَح رسُلا مبشرين .
لئلا يكون للناس على الله حجة بعدَ الرسل : اللام لام كي، تتعلق بمنذرين أو بـ : مبشرين، أو بمحذوف، أي : أرسلنا هم لئلا يكون ...
و للناس متعلق بخبر مقدم محذوف، و حجة اسم يكون المؤخر، و على الله متعلق مقدم بـ : حجةٌ، أو بحال محذوفةٍ من حجةٌ، أي : حجة ثابتَةٌ على الله، و بعد الرسل ظرف متعلق بالمصدر حجة .
و أصل العبارة : لئلا يكون حجة على الله بعد الرسل قائمَةٌ للناس
'لكِنِ الله يشهَد بِما أنزَلَ إليك : لكن لا عمل له، لأنه مخفف، و لا بد من محذوف، أي : لا يشهَد هٰؤلاء لك بِنَبُوَّتك، 'لكِنَّ اللّٰهَ يشهَد لك بذلك بِما أنزَله إليك .
أنزله بعلمه : هذه الجملة مفسرة لا محل لها من الإعراب، و بعلمه متعلق بحال محذوف، أي متلبسا بعلمه .

الترجمة

নিঃসন্দেহে অহী পাঠিয়েছি আমি আপনার প্রতি যেমন অহী পাঠিয়েছি নূহের প্রতি এবং তার পরবর্তী নবীদের প্রতি।[১] আর আমি অহী পাঠিয়েছি ইবরাহীম এবং ইসমাঈল এবং ইসহাক এবং ইয়াকূব এবং (তার) বংশধরগণ এবং ঈসা এবং ইউনুস এবং হারূন এবং সোলায়মানের প্রতি। আর দান করেছি আমি দাউদকে যাবূর। আর (পাঠিয়েছি) এমন কতিপয় রাসূল যাদের বিবরণ আমি বর্ণনা করেছি আপনার কাছে ইতিপূর্বে এবং (পাঠিয়েছি) এমন বহু রাসূল

১. তার পরে আগমনকারী নবীদের প্রতি

যাদের বিবরণ আমি বর্ণনা করিনি আপনার কাছে (ইতিপূর্বে)। আর কালাম করেছেন আল্লাহ মূসার (আঃ) সঙ্গে সরাসরি।

(আমি পাঠিয়েছি) এমন সকল রাসূল যারা সুসংবাদদানকারী এবং সতর্ককারী, যেন রাসূলদের (আগমনের) পর মানুষের পক্ষে আল্লাহর সামনে কোন অজুহাত না থাকে। আর আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

(ইহুদীরা এর পরো আপনার নবুয়তের সাক্ষ্য দেবে না) কিন্তু আল্লাহ (আপনার নবুয়তের) সাক্ষ্য দিচ্ছেন ঐ কিতাবের মাধ্যমে যা তিনি নাযিল করেছেন আপনার প্রতি, তিনি তা নাযিল করেছেন আপন পূর্ণ জ্ঞানের সঙ্গে। আর ফিরেশতারাও সাক্ষ্য দিচ্ছে। আর (প্রকৃতপক্ষে) সাক্ষী হিসাবে তো আল্লাহই যথেষ্ট।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إنا أوحينا إليك (নিঃসন্দেহে আমি অহী পাঠিয়েছি আপনার)। বিকল্প তরজমা– অবশ্যই আমি আপনার উপর অহী নাযিল করেছি।

(খ) و النبين من بعده (এবং তার পরবর্তী নবীদের প্রতি) – সহজায়নের জন্য বাংলায় মাওছূফ-ছিফাতের তরজমা করা হয়েছে। ব্যাকরণগত প্রয়োজনের দিকে লক্ষ করে তরজমা হতে পারে, তাঁর পরে আগমনকারী নবীদের প্রতি। শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা–

اور ان نبیوں پر جو اسکے بعد ہوئے (এবং ঐ নবীদের উপর যারা তাদের পরে হয়েছেন)

এর অনুকরণে কেউ কেউ বাংলায় তরজমা করেছেন– এবং সে সমস্ত নবী-রাসূলের প্রতি যারা তাঁর পরে প্রেরিত হয়েছেন।

এ তরজমা মূল তারকীব অনুগামী নয়। তা ছাড়া 'রাসূল' শব্দের সংযোজন ঠিক নয়। থানবী (রহ)-এর তরজমা–

اور انکے بعد اور پیغمبروں کے پاس (এবং তাঁর পরে অন্যান্য নবীদের কাছে [পাঠিয়েছি])

এখানে তিনি 'তাঁর পরে' অংশটিকে 'পাঠিয়েছি' এর যারফ ধরে তরজমা করেছেন। এরও উদ্দেশ্য হচ্ছে সহজায়ন।

মূল তারকীব অনুগামী তরজমা হলো– এবং নবীদের কাছে

(অহী পাঠিয়েছি) এমন অবস্থায় যে, তারা তার পরে আগমন করেছেন।

(গ) প্রথম رسلا এর তরজমা করা হয়েছে কতিপয় রাসূল এবং দ্বিতীয় رسلا এর তরজমা করা হয়েছে বহু রাসূল। অর্থাৎ প্রথমটিতে তানবীনকে قلة এর অর্থে এবং দ্বিতীয়টিতে তানবীনকে كثرة এর অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে। এটা করা হয়েছে বাবস্তবতার প্রেক্ষিতে। কারণ, যে নবীদের ঘটনা বর্ণনা করা হয়েছে তাদের সংখ্যা অল্প, আর যাদের ঘটনা বর্ণনা করা হয়নি তাদের সংখ্যা বেশী।

কোন কোন তরজমায় উভয় ক্ষেত্রে 'অনেক' শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঘ) وكلم الله موسى تكليما (আর কালাম করেছেন আল্লাহ মূসার সঙ্গে সরাসরি/প্রত্যক্ষভাবে)– এখানে 'মাফউলে মুতলাক' এর উদ্দেশ্য হচ্ছে কালাম করার ক্ষেত্রে রূপক অর্থের সম্ভাবনাকে নাকচ করা এবং প্রত্যক্ষ অর্থকে সাব্যস্ত করা, সেদিকে লক্ষ্য করে এ তরজমা করা হয়েছে।

(ঙ) لكن الله يشهد কিতাবে এর তরজমা করা হয়েছে থানবী (রহ) এর অনুকরণে এবং তিনি তার তরজমার সপক্ষে রূহুল মাআনীর হাওয়ালায় লিখেছেন–

أي يشهد بنبوتك بسبب ما أنزل إليك

এ তরজমা মতে সাক্ষ্য দানের বিষয় হচ্ছে نبوة এবং সাক্ষ্যদানের মাধ্যম হচ্ছে ما أنزل إليك

শায়খুলহিন্দ (রহ) যে তরজমা করেছেন তার বাংলা দাঁড়ায় এরূপ– কিন্তু আল্লাহ সাক্ষী রয়েছেন ঐ বিষয়ে যা তিনি আপনার উপর নাযিল করেছেন যে, তিনি তা নাযিল করেছেন আপন ইলমের সঙ্গে।

এ তরজমা মতে ما أنزل إليك হচ্ছে সাক্ষ্যদানের বিষয়।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন– আল্লাহ আপনার পতি যা অবতীর্ণ করেছেন তিনি যে তা সজ্ঞানেই করেছেন সে ব্যাপারে আল্লাহ নিজেও সাক্ষী এবং ফিরেশতাগণও সাক্ষী।

এ তরজমা মতে 'সজ্ঞানে নাযিল করা' হচ্ছে সাক্ষ্য দানের বিষয়। এটা ঠিক নয়।

بعلمه এর প্রতিশব্দ 'সজ্ঞানে' নয়, এখানে উদ্দেশ্য এ কথা বলা যে, এই কিতাবে আল্লাহর ইলমের পূর্ণ প্রকাশ রয়েছে, ফলে তা মানবের সাধ্যাতীত।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة الوحي

٢ - أعرب قوله : كما أوحينا إلى نوح ·

٣ - أعرب رُسلاً الثالثَ في الاية ·

٤ - بم يتعلق قوله : على الله ؟

٥ - رسلا এর তরজমা প্রথমে কতিপয় রাসূল এবং পরে বহু রাসূল করার ভিত্তি ব্যাখ্যা করো।

٦ - تكليما এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٣) وَ اذكُروا نعمَةَ الله عليكم و ميثاقَه الذي واثَقَكم به، إذ قلتم سَمِعنا وَ اَطَعنا ، وَ اتقوا الله، إنَّ الله عليم بِذَاتِ الصُّدور * يٰاَيُّها الذين اٰمَنوا كُونُوا قَوَّامِين لِلّٰهِ شُهداءَ بالقِسْطِ، و لا يَجْرِمَنَّكم شَنَاٰنُ قومٍ عَلىٰ اَلاَّ تَعدِلوا ، إعْدِلوا ، هو اقرَبُ للتقوٰى، وَ اتقوا الله، إنَّ الله خَبير بما تعمَلون *

بيان اللغة

واثَقَكم : عاهَدكم، وَاثَقَكم به : قَيَّدكم به

القِسط : العَدْلُ، و هو من المصادر التي يُوَصف بها ، فيُوصَف به الواحدُ و الجمعُ، يقال ميزانٌ قِسط، أي عادل، و مَوازينُ قِسْطٌ، أي عادلة · يقال : قَسَط الرجلُ إذا جارَ و أَقْسَطَ إذا عَدَلَ ·

قال تعالى : أمـا القاسِطون فكانوا لجهنَّمَ حَطَبًا ، و قال : و أَقْسِطوا إن الله يُحب المقسطين ·

و قَسَطَ (ض، قِسْطًا) : عَدَلَ

و قَسَط (ض، قَسْطًا) : جارَ (من الأضداد)

جَرَمه على شيءٍ (ض، جَرْمًا) حمله عليه، حرضه عليه
شَنَآنٌ : بُغْضٌ، شَنَأَ فلانًا (ف، شَنْأً، شَنَآنًا) أبغضه، قال تعالى : إن شانِئَك هو الأبتَرُ، و الأبتَرُ مَنْ لا عَقِبَ له، أي : لا وَلَدَ له

بيان الإعراب

عليكم : متعلق بـ : نعمةَ، إن أريد بها معنَى المصدر، و إن أريد بها الشيءُ الذي أنعِمَ به، فحرف الجر متعلق بحال محذوفة من النعمة
الذي واثقكم به : الموصول صفة لـ : الميثاق ·
إذ قلتم : الظرف متعلق بـ : واثق، و جملة قلتم في محل جر بالإضافة ·
قوامين : خبر الناقص، و لله متعلق بـ : قوامين و شهداءَ خبر ثان، و بالقسط يتعلق به ·

الترجمة

আর স্মরণ করো তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহর নেয়ামতকে এবং তার অঙ্গীকারকে, যা দ্বারা তিনি আবদ্ধ করেছেন তোমাদেরকে, যখন তোমরা বলেছিলে, আমরা শুনলাম এবং মানলাম।
আর ভয় করো তোমরা আল্লাহকে, (কারণ) আল্লাহ তো পূর্ণ অবহিত অন্তরের লুকায়িত বিষয় সম্পর্কে।
হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা (আল্লাহর বিধানের উপর) অবিচল হও আল্লাহর (সন্তুষ্টির) জন্য (এবং) ইনছাফের সাথে সাক্ষ্য দানকারী (হও); আর কোন সম্প্রদায়ের প্রতি বিদ্বেষ যেন মোটেই প্ররোচিত না করে তোমাদেরকে (তাদের বিষয়ে) সুবিচার না করতে। (বরং শত্রু-মিত্র সকলের বিষয়ে) তোমরা সুবিচার করো, (কারণ) তা তাকওয়ার অধিকতর নিকটবর্তী। আর ভয় করো আল্লাহকে, (কারণ) আল্লাহ তোমাদের কর্মকাণ্ড সম্পর্কে পূর্ণ অবগত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إن الله عليم بذات الصدور (আল্লাহ তো পূর্ণ অবহিত অন্তরের লুকায়িত বিষয় সম্পর্কে) صدر হচ্ছে قلب এর ظرف এখানে

ظرف এর তরজমা مظروف দ্বারা করা হয়েছে।
তোমাদের বুকের লুকায়িত বিষয় সম্পর্কে অবহিত – এ তরজমাও হতে পারে।

(খ) كونوا قوامين لله তোমরা (আল্লাহর বিধানের উপর) অবিচল হও আল্লাহর (সন্তুষ্টির) জন্য– থানবী (রহ)-এর অনুকরণে এ তরজমা। তিনি দুটি বন্ধনী দ্বারা قوامين لله এর উদ্দেশ্য সুস্পষ্ট করেছেন, এবং قوامين ও شهداء যে দু'টি পৃথক خبر তাও পরিষ্কার করেছেন।

শায়খুলহিন্দ (রহ) যে তরজমা করেছেন তার বাংলা দাঁড়ায় এ রকম– তোমরা আল্লাহর ওয়াস্তে ইনছাফের সাথে সাক্ষি দেয়ার জন্য দাঁড়িয়ে যেয়ো।

আয়াতের তারকীব যে অর্থ দাবী করে এটি তার সাথে সঙ্গতিপূর্ণ নয়। আয়াতের তারকীব চিন্তা করলেই বিষয়টি পরিষ্কার হয়ে যাবে।

(গ) যেন মোটেই প্ররোচিত না করে তোমাদেরকে (তাদের প্রতি) সুবিচার না করতে।

فعل منفي এর দিকে লক্ষ্য রেখে এ তরজমা করা হয়েছে। 'সুবিচার বর্জনে/সুবিচার পরিত্যাগে যেন প্ররোচিত না করে'– এরূপ তরজমাও হতে পারে।

لا يجرمنكم شنان قوم على ألا تعدلوا এর যে তরজমা উপরে করা হয়েছে তা মূলানুগ।

শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা এরূপ– কোন সম্প্রদায়ের প্রতি শত্রুতার কারণে কিছুতেই ন্যায়বিচার পরিত্যাগ করো না।

এ তরজমা গ্রহণযোগ্য হলেও অপ্রয়োজনে মূল থেকে দূরবর্তী।

لا يجرمنكم যেন মোটেই প্ররোচিত না করে তোমাদেরকে, এখানে 'মোটেই' শব্দটি – হচ্ছে نون التوكيد এর তরজমা।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ القسطِ .

٢ – بم يتعلق قوله : عليكم ؟

٣ – إلام يرجع الضمير في قوله : هو أقرب للتقوى ؟

٤ – ما هو أصل العبارة في قوله : على ألا تعدلوا ؟

৫ – তোমাদের অন্তরের কথা এবং তোমাদের বুকের কথা– এ দুই তরজমার ভিত্তি ব্যাখ্যা করো।

৬ – شنان قوم তারকীবে কী হয়েছে, আর শায়খুলহিন্দের তরজমা অনুসারে তা তারকীবে কী হয় ? এ ক্ষেত্রে কোন্ তরজমাটি তোমার পছন্দ এবং কেন ?

(٤) وَ لقد أخذَ الله مِيثاقَ بني إِسرائيل، و بَعَثْنا منهم اثنَيْ عَشَر نقيبا، وَ قال الله إني معكم، لَئِن اقمتُم الصلوٰة و اٰتيتُم الزكٰوة و اٰمنتُم بِرُسلي و عَزَّرتموهم و اقرَضتُم الله قَرْضًا حَسَنا لَاكفِّرن عنكم سَيِّاٰتِكم وَ لاُدخِلنكم جَنّٰتٍ تجري من تحتها الاَنْهٰر، فَمَن كفَر بعدَ ذلك منكم فَقَدْ ضَلَّ سواءَ السَّبيل * فَبِما نَقْضِهم ميثاقَهم لَعَنّٰهم و جَعلنا قُلوبَهم قٰسِيَةً، يُحَرِفون الكَلِمَ عَن مواضِعِه و نَسوا حَظًّا مما ذُكِّروا به، و لا تَزال تَطلع على خائِنَةٍ منهم إلا قليلا منهم فَاعْفُ عنهم و اصفَح، ان الله يحبُ المحسنين * وَ مِن الذين قالوا إِنا نصٰرٰى اَخذنا ميثاقَهم فَنَسوا حظا مما ذكروا به، فَاَغْرَينا بينَهم العداوَةَ و البَغضاءَ الى يوم القِيٰمَةِ، و سوف يُنَبِّئُهم الله بِما كانوا يصنَعون *

بيان اللغة

نَقيبا : النقيب كبيرُ القومِ المسؤول عن شُؤونهم، جمعه نُقَباءُ

عزرتموهم : عَزَّره : أعانَه و قوَّاه و نَصَره

حظ : نصيب অংশ, হিসসা بَخْتْ ভাগ্য

خائنة : أي خيانة، فهو مصدر على وزن فاعلة .

أغرينا : (ألقينا) أغرٰى بينَ القوم : أفسَد بينَهم

أغرى العداوةَ بينهم : ألقاها و حَرَّضَها . و الاغراء التحريض

بيان الإعراب

بعثنا : معطوف على أَخَذَ، و منهم يتعلق بـ : بَعَثْنا أو يتعلق بحال محذوفة من مفعول بعثنا ·

قال الله : معطوف على السابق · و في أخذ و بعثنا و قال إلتفات ·

لئن أقمتم : اللام مُوطئة للقسَم المحذوف، و المعطوفات في حَيِّزِ الشرط و قرضا مفعول به ثان لـ : أقرض (انظر ٣/٢/...)

لاكفرن : اللام واقعة في جَواب القسَمِ، و الجملة لا مَحَل لها من الإعراب، لِأنها جَواب القسَم، و جواب الشرطِ محذوف دَل عليه جواب القسَم، و إذا اجتَمع القسَم و الشرطُ فالجواب لِلمتقدم منهما · وَ لك أن تقول : إِن جملةَ لأكفرن قامت مَقامَ جوابِ القسَم و الشرط جميعًا ·

فَمَن كفر بعدَ ذلك مِنكم فقد ضَلَّ سواءَ السبيلِ : الإشارة بـ : ذلك إلى الميثاق · وَ منكم يتعلق بحال محذوفة مِن : مَن · و مِن بيانية تُبين المقصودَ مِن : مَنِ الموصولَةِ، أي : مَن كفَر معدودًا منكم · الفاء الأولى استئنافية، و الثانية رابطة لجواب الشرط، و سواءَ السبيل مفعول به، أي : فَقَدَ سواءَ السبيل أو هو منصوب بنزع الخافض، أي : ضَلَّ عن سَواءِ السبيل ·

الترجمة

আর অবশ্যই আল্লাহ্ নিয়েছিলেন বনী ইসরাঈলের অঙ্গীকার এবং আমি (আল্লাহ্) নিযুক্ত করেছিলাম তাদের মধ্য হতে (বারটি গোত্রের জন্য) বারজন নাকীব [১]। আর বলেছিলেন আল্লাহ্, অবশ্যই আমি তোমাদের কাছে রয়েছি (এবং তোমাদের অবস্থা পর্যবেক্ষণ করছি) যদি তোমরা কায়েম করো ছালাত এবং আদায় করো যাকাত এবং ঈমান আনো আমার রাসূলদের প্রতি এবং তাদেরকে (তাদের দায়িত্ব পালনে) সাহায্য করো এবং আল্লাহ্কে উত্তম করয দান করো তাহলে অতি অবশ্যই দূর করে দেবো আমি তোমাদের থেকে তোমাদের গোনাহ্গুলো এবং অতিঅবশ্যই প্রবেশ করাবো

১. নেতা ও তত্ত্বাবধায়ক

তোমাদেরকে এমন বাগবাগিচায় যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় 'নহর-নালা'।

অনন্তর তোমাদের মধ্য হতে যে ব্যক্তি এই অঙ্গীকার করার পর কুফুরি করবে অবশ্যই সে সরল পথ হতে বিচ্যুত হবে।

অনন্তর শুধু তাদের অঙ্গীকার ভঙ্গ করার কারণেই অভিশাপ দিয়েছি আমি তাদেরকে এবং করে দিয়েছি তাদের হৃদয়কে (সত্য গ্রহণের বিষয়ে) কঠিন। তারা (তাওরাতের) বাণী (ও বক্তব্য)-কে তার (শব্দগত ও মর্মগত সঠিক) স্থান থেকে পরিবর্তন করে। আর যে বিষয় দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো তার এক বিরাট অংশ তারা ভুলে গেলো। আর আপনি তো প্রতিনিয়ত অবহিত হচ্ছেন তাদের পক্ষ হতে কৃত কোন না কোন প্রতারণা সম্পর্কে, তাদের অল্প কয়েকজন ছাড়া। সুতরাং ক্ষমা করুন আপনি তাদের এবং মার্জনা করুন। (কারণ) অবশ্যই আল্লাহ ভালোবাসেন সদাচারকারীদের।

আর যারা (দ্বীনের সাহায্য করার দাবীদার হয়ে) বলে, আমরা তো 'নাছারা', তাদের থেকেও আমি নিয়েছিলাম (তাদের) অঙ্গীকার। অনন্তর তারা ভুলে গেলো ঐ বিষয়ের বিরাট অংশ যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো। ফলে ঢেলে দিয়েছি আমি তাদের মাঝে শত্রুতা ও বিদ্বেষ কেয়ামত পর্যন্ত। আর অচিরেই অবহিত করবেন আল্লাহ তাদেরকে তাদের অব্যাহত কর্মকাণ্ড সম্পর্কে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ولقد أخذ الله ميثاق بني إسرائيل (আর অবশ্যই নিয়েছিলেন আল্লাহ্ বনী ইসরাঈলের অঙ্গীকার) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, – 'আল্লাহ বনী ইসরাঈলের কাছ থেকে অঙ্গীকার নিয়েছিলেন'। এটা গ্রহণযোগ্য, তবে মূলানুগ নয়। শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) প্রায় অনুরূপ তরজমা করেছেন। তাঁরা লিখেছেন, بني اسرائيل سے (বানী ইসরাঈল থেকে)।

(খ) بعثنا এর শাব্দিক অর্থ 'প্রেরণ করেছি।' কিন্তু এখানে উদ্দেশ্য হলো নিযুক্ত করা। উর্দু ও বাংলা প্রায় সকল তরজমায় উদ্দেশ্যের দিকটি লক্ষ্য রাখা হয়েছে।

আমি (আল্লাহ) তাদের মধ্য হতে– বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা

হয়েছে যে, এখানে غيبوبة থেকে تكلم এর দিকে إلتفات হয়েছে।

(গ) إني معكم – সঙ্গে থাকার একটি অর্থ হলো সাহায্য করা। অন্য অর্থ হলো অবস্থা পর্যবেক্ষণ করা– এখানে দ্বিতীয় অর্থটি উদ্দেশ্য। বন্ধনীতে সেটা পরিষ্কার করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– میں تمہارے پاس ہوں (আমি তোমাদের কাছে রয়েছি)।
তিনি মূলত معية এর দ্বিতীয় অর্থটির প্রতি ইঙ্গিত করার জন্য সুচিন্তিতভাবে ساتھ (সঙ্গে) এর পরিবর্তে پاس (কাছে) শব্দটি ব্যবহার করেছেন। কিতাবের তরজমায় তাঁকে অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঘ) لاكفرن এখানে তাকীদের দু'টি শব্দ রয়েছে। তাই কিতাবে অবশ্যই-এর পরিবর্তে 'অতিঅবশ্যই' ব্যবহার করা হয়েছে।
সবাই তরজমা করেছেন– তোমার পাপ মোচন করবো/দূর করে দেবো। এতে عنكم এই অংশটি বাদ পড়েছে।
উভয় শায়খ عنكم এর তরজমা করেছেন।
تكفير এর অর্থ সম্পর্কে ইমাম রাগিব লিখেছেন–

ستر الذنب و تغطيته أو إزالته

এখানে عن অব্যয়টি দ্বিতীয় অর্থের প্রতি ইঙ্গিত করছে।

(ঙ) فمن كفر بعد ذلك (অনন্তর যে ব্যক্তি এই অঙ্গীকার করার পর কুফুরি করবে)– এখানে ذلك এর مشار إليه উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে স্পষ্টায়নের উদ্দেশ্যে। বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে– এর পরও।
থানবী (রহ) বন্ধনী ব্যবহার করে লিখেছেন– اس (عہد) کے بعد

(চ) ضل سواء السبيل এর তরজমায় উভয় শায়খ سے (থেকে) ব্যবহার করেছেন। বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে– সরল পথ থেকে বিচ্যুত হবে।
একটি তরজমায় রয়েছে– 'সে তো সরল পথ হারাবে'– এটি বেশ মূলানুগ তরজমা। তবে 'বিচ্যুতি' শব্দটির আলাদা আবেদন রয়েছে বলে কিতাবে উপরোক্ত তরজমা গ্রহণ করা হয়েছে।

(ছ) فبما نقضهم ميثاقهم (অনন্তর শুধু তাদের অঙ্গীকার ভঙ্গ করার কারণেই) এখানে حصر এর অর্থ এসেছে تقديم থেকে এবং

তাকীদের অর্থ এসেছে অতিরিক্ত অব্যয় ما থেকে, তাই কিতাবের তরজমায় 'শুধু' এবং 'ই' ব্যবহার করা হয়েছে।
বিদ্যমান বাংলা তরজমাগুলো এরকম- 'তাদের অঙ্গীকার ভঙ্গের দরুণ আমি তাদেরকে'

(জ) و نسوا حظا مما ذكروا به (আর যে বিষয় দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিল তার একটি বিরাট অংশ তারা ভুলে গেলো।) শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন- তারা ঐ উপদেশ থেকে উপকার লাভ করা ভুলে গেছে যা তাদেরকে করা হয়েছিলো।
কোন কোন বাংলা তরজমায় তা অনুকর করা হয়েছে। এটি মূলানুগ তরজমা নয়।
কিতাবে থানবী (রহ) এর অনুকরণে মূলানুগ তরজমা করা হয়েছে।
حظا এর তানবীন থেকে বিরাটত্বের অর্থ নেয়া হয়েছে।
نسوا কে تركوا অর্থে গ্রহণ করে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'তারা হাতছাড়া করেছে', তবে তিনি نسوا এর শাব্দিক অর্থটিকেও গ্রহণযোগ্য বলেছেন; কিতাবে সেটাই গ্রহণ করা হয়েছে।

(ঝ) على خائنة منهم (তাদের পক্ষ হতে কৃত কোন না কোন প্রতারণা সম্পর্কে) 'তাদের পক্ষ হতে কৃত'- এ তরজমায় ব্যাকরণগত দিকটি রক্ষিত হয়েছে। আর 'কোন না কোন' দ্বারা خائنة এর নাকিরাত্বর তরজমা করা হয়েছে।
থানবী (রহ) বিষয়দু'টি তার তরজমায় বিবেচনা করেছেন। শায়খুলহিন্দ (রহ) ও মোটামুটি বিবেচনা করেছেন।

(ঞ) কোন কোন বাংলা তরজমায় إنا نصرى এর তরজমা করা হয়েছে, আমরা 'খৃস্টান'- এটি মারাত্মক ত্রুটি। কারণ এটি পরবর্তী যুগের ব্যবহৃত শব্দ। পক্ষান্তরে نصرى হচ্ছে কোরআনী শব্দ, যার অর্থ হলো, আল্লাহর দ্বীনের সাহায্যকারী।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ خائنَةٍ

٢ - أعرب كلمة منهم في قوله : و بعثنا منهم اثني عشر نقيبا

٣ - عَرِّفِ اللامَين في قوله : لئن أقمتم و لأكفرن عنكم ·

٤ - أعرب قوله : سواءَ السبيلِ ·
٥ - إني معكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - إنا نَصٰرٰى এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) مِنْ اَجْلِ ذلك، كتَبنا على بني اسرا ءيلَ اَنَّه من قَتل نَفسًا بغَيرِ نفسٍ او فَسادٍ في الاَرْضِ فَكانَّما قتل الناسَ جميعًا، وَ مَنْ احيَاها فَكَاَنَّما اَحيا الناسَ جميعا، وَ لقد جاءَتْهم رُسُلنا بِالبيِّنٰتِ، ثم اِنَّ كثيرًا منهم بعدَ ذلك في الاَرْضِ لَمُسرِفون * اِنَّما جَزاؤ الذين يُحاربون الله وَ رسولَه و يسعَوْنَ في الارضِ فَسادًا اَنْ يُقَتَّلوا او يُصَلَّبوا او تُقَطَّعَ اَيديهم وَ ارجُلُهم مِنْ خلافٍ او يُنفَوا مِنَ الارضِ، ذلك لهم خِزْيٌ في الدنيا و لهم في الاٰخرة عذاب عَظيم * اِلَّا الذين تابوا مِن قَبلِ ان تَقْدِروا عليهم، فاعلَموا اَنَّ الله غفور رحيم * يٰاَيُّها الذين اٰمَنوا اتقوا اللّٰهَ و ابتَغوا اليه الوَسيلَةَ و جاهِدوا في سَبيله لعلكم تُفلِحون * اِن الذين كَفروا لو اَنَّ لهم ما في الاَرْضِ جميعًا و مِثلَه مَعه لِيَفتدوا به مِن عَذاب يَومِ القيٰمَة ما تُقُبِّلَ منهم، وَ لهم عذاب اليم *

بيان اللغة

نفس : النفس الروح · يقال : خرجت نفسُه، جاد بِنَفْسِه، أي : مات
و النفسُ الباطِنُ، جاء في القرآن : تعلَم ما في نَفسي و لا أعلَم ما في نَفسِك ·
و النفس القوة الباطِنَة في الإنسان، نقول النفس الأمّارة بالسوءِ و النفس المطمَئِنة ·
و النفس الذات، قال تعالى : و يُحَذِّركم الله نفسَه (أي : بِـ ذَاتِه)

و نفْسُ الشيءِ ذاتُه و عَيْنُه، يقال : جاء هو نفسُه، و النفس الشخص، و هذا المعنى هو المراد في هذه الآية، و الجمع نُفوس و أنفُسٌ ·

يُنفوا من الأرض (يُطرَدوا و يُخرَجوا منها)

ابتغوا : انظر ١/٣/٣ خِزي : ذِلة، انظر ٩/٤/٣ ليفتدوا : انظر ١٠/٣/٣

نَفاه مِنَ البلَد (ض، نَفْيًا) : طرَدَه و أبعَدَه و أخرَجه من البلَد

نَفٰى شَيْئًا : جَحَده وَ أنكَرَه অস্বীকার করলো।

أخبر أنه لم يقَع তা ঘটেনি বলে খবর দিলো

انتَفٰى الرجلُ : ابتَعَد عن وَطَنِه مَطرودًا ·

انتفى الشيءُ : انقَطَع أَوِ انْعَدَم

ابتغوا : انظر ١/٣/٣ خزي : ذلة، انظر ٩/٤/٣ ليفتدوا : انظر ١٠/٣/٣

الوسيلة : القُرْبٰى নৈকট্য ما يُتَقَرَّبُ به، و الجمع وَسائِلُ যা দ্বারা নৈকট্য অর্জন করা হয়। নৈকট্যের মাধ্যম।

بيـان الإعراب

من أجل ذلك : يتعلق بـ : كتبنا، و الإشارة إلى القتل المذكورِ في قصَّةِ ابنَيْ آدمَ · و المصدر المؤول (أنه من قتل) مفعول به لـ : كتبنا

أنه من قتل ... : الضمير ضمير الشأن و الجملة الشرطية خبر أن ·

بغير نفسٍ يتعلق بـ : قَتَلَ، و الباء في معنى العِوَضِ ·

و فَسادٍ معطوف على : نفسٍ، و في الأرض يتعلق بـ : فسادٍ، أو بصفة محذوفة لـ : فسادٍ ·

فَكأنما قتل : الفاء رابطة، و جميعًا حال بمعنى مجتمعين ·

كثيرا منهم : حرف الجر يتعلق بصفة محذوفة لـ : كثيرًا ·

بعدَ ذلك في الأرضِ : الظرف و كذا حرف الجر يتعلقان بخبر إن ·

جَزاءُ الذين : مضاف و مضاف إليه، و المضاف مبتدأ

فسادًا : أي لِأَجْلِ الفَساد أو مُفسدين ·

أن يقتلوا أو يصلبو أو تقطع أيديهم و أرجلُهم : المصدر المؤول خبرُ جزاءُ المضافِ ·

أرجلُهم معطوف على أيديهم، و مِنْ خلافٍ حال بمعنى مختلفةً أو متعلق بمحذوف . وهو حال من أيديهم و أرجلهم، أي : كائنَةً من خلافٍ، و المعنى : تُقَطَّعُ أيديهم و أرجلُهم مختَلِفَةً، فتقَطَّعُ يَدُه اليمنى و رِجلُه اليُسْرى .

ذلك لهم خِزْيٌ في الدنيا : اسم الإشارة في مَحَل رفع مبتدأ، و جملة لهم خزي في الدنيا في مَحَل رفع خبرٌ ذلك . و خزي (نازل) في الدنيا مبتدأ مؤخر، و لهم يتعلق بخبر مقدم محذوف .

إلا الذين تابوا : إلا حرف استثناء، و الذين تابوا في مَحَل نصب مستثنًى بـ : إلا من : الذين يحاربون الله .

فاعلموا : الفاء فَصيحة، و جملة اعلموا جواب شرط مقدَّرٍ، أي : إن تابوا

يا أيها الذين : يا أداة نداء، و أيٌّ منادًى مبني على الضم، و الذين بدل من أيٌّ : و ها للتنبيه .

إليه الوسيلةَ : إليه يتعلق بحال محذوفة، أي ساعين إليه، أو بـ : الوسيلة لأنها تتضمن معنى التقريب، أي : ابتغوا الوسيلَةَ المقرِّبةَ إليه .

إن الذين كفروا لو أن لهم ما في الأرض جميعا : الذين اسم إن، و الجملة الشرطية خبر إن .

لو شرطية، و المصدر المؤول في محل رفع فاعل فعلٍ محذوف .

و مثلَه معه : مثله معطوف على اسم أن، و هو : ما في الأرض، و معه ظرف متعلق بحال محذوفة، و أصل العبارة : لو ثبت كونٌ ما في الأرض جميعًا وَ مِثْلِه موجودًا معه مملوكين لهم لِيَفتدوا

ليفتدوا به : لام التعليل متعلق بما تعلق به لهم، و به متعلق بـ : يفتدوا، و يرجع الضمير منفردا إلى : ما في الأرض و إلى : مِثْلَه

ما تُقُبِّل منهم : هذا جواب شرطِ لو، و جاء جواب لو بغيرِ لام، لأنه منفي

الترجمة

ঐ (হত্যাকাণ্ডের) কারণেই আমি বনী ইসরাঈলের (এবং সকলের) উপর (এই বিধান) লিখে দিলাম যে, যে ব্যক্তি হত্যা করবে কোন মানুষকে কোন মানুষের বিনিময় ছাড়া কিংবা যমীনে ফাসাদ করার কারণ ছাড়া সে যেন হত্যা করলো লোকদেরকে, সকলকে, আর যে

ব্যক্তি রক্ষা করলো কোন মানবপ্রাণ সে যেন রক্ষা করলো সকল মানবকে, সকলকে।

আর (এই বিধান প্রবর্তনের পর) অবশ্যই এসেছে তাদের কাছে আমাদের রাসূলগণ সুস্পষ্ট প্রমাণাদিসহ, কিন্তু তাদের অনেকে তারপরও সীমালঙ্ঘন করছে যমীনে।

যারা যুদ্ধ করে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধে এবং যমীনে দৌড়ঝাঁপ করে ফাসাদ সৃষ্টির জন্য তাদের সাজা এটাই যে, তাদেরকে 'কঠিনভাবে' হত্যা করা হবে, কিংবা শূলে চড়ানো হবে, কিংবা কেটে ফেলা হবে তাদের হাত ও (তাদের) পা উল্টোভাবে, কিংবা তাদেরকে নির্বাসিত করা হবে অত্র অঞ্চল থেকে। এটা হলো তাদের লাঞ্ছনা দুনিয়াতে, আর তাদের জন্য রয়েছে আখেরাতে বিরাট আযাব।

তবে (তাদের জন্য নয়) যারা তাওবা করবে তোমরা তাদের উপর ক্ষমতা লাভ করার পূর্বে। (যদি তারা তাওবা করে) তাহলে জেনে রাখো যে, আল্লাহ্ পরম ক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, ভয় করো তোমরা আল্লাহকে এবং সন্ধান করো তাঁর প্রতি নৈকট্য লাভের মাধ্যম এবং জিহাদ করো তাঁর পথে, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পারো।

যারা কুফুরি করেছে যদি তাদের (মালিকানাধীন) হতো যা কিছু যমীনে আছে তা সকল এবং তার সাথে তার অনুরূপ, যাতে তারা তা মুক্তিপণ দিতে পারে কেয়ামতের দিনের আযাব থেকে (বাঁচার জন্য), তাহলেও গ্রহণ করা হতো না তা তাদের থেকে। আর তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) এই বিধান লিখে দিলাম– كتبنا এর শাব্দিক অর্থ বিবেচনা করে থানবী ও শায়খুলহিন্দ (রহ) এ তরজমা করেছেন। তবে থানবী (রহ) বন্ধনীতে লিখেছেন– নির্ধারণ করলাম।

সরাসরি এ তরজমাও করা যায়। বিকল্প তরজমা– তাদের জন্য এ বিধান অবশ্য পালনীয় করে দিলাম যে, ...।

جميعا শব্দটি হাল, উদ্দেশ্য হলো তাকীদ, উদ্দেশ্যের দিক থেকেই তাকীদের তরজমা করা হয়েছে 'সকল মানুষকে' এ তরজমাও হতে পারে।

(খ) يسعون في الأرض فسادا (ফাসাদ সৃষ্টি করার জন্য যমীনে দৌড়ঝাপ করে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন– দুনিয়ায় ফাসাদ করে বেড়ায়।
এতে ব্যাকরণগত ক্রটি রয়েছে। কারণ في الأرض এর সম্পর্ক فسادا এর সঙ্গে নয়, বরং يسعون এর সঙ্গে

(গ) أيديهم و أرجلهم তাদের হাত ও (তাদের) পা – দ্বিতীয় যামীরটি বন্ধনীতে এনে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, বাংলায় দ্বিতীয় যামীরটি প্রচলিত নয়, তবে আয়াতের দিকে লক্ষ্য করে বাদ দেয়াও ঠিক নয়।

(ঘ) 'কঠিনভাবে' শব্দটি যুক্ত করার কারণ এই যে, قتل ও صلب এর মাঝে অতিশয়তা রয়েছে। একই কারণে 'কর্তন করা হবে' এর পরিবর্তে 'কেটে ফেলা হবে' তরজমা করা হয়েছে।

(ঙ) مِن قَبلِ أن تَقدِروا عليهم (তোমরা তাদের উপর ক্ষমতা লাভ করার পূর্বে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'তারা তোমাদের আয়ত্ত্বাধীনে আসার পূর্বে'– এটা মূল থেকে বিচ্যুত তরজমা। 'তোমরা তাদেরকে গ্রেফতার করার পূর্বে' – এ তরজমা করা যায়, তবে কিতাবের তরজমায় عليهم এবং قدرة এর শাব্দিকতা রক্ষা করা হয়েছে।

(চ) ما في الأرض جميعا 'যা কিছু যমীনে আছে তা সকল'– এটি তারকীবানুগ তরজমা। এর চেয়ে সহজ তরজমা হচ্ছে– 'সারা দুনিয়ার সকল বস্তু'। থানবী (রহ) এটা করেছেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ النفسِ .

٢ – علام عطف قوله : و من أحياها ....

٣ – بم يتعلق قوله : بعد ذلك ؟

٤ – ما إعراب قوله : فسادا ؟

٥ – দুনিয়ায় ফাসাদ করে বেড়ায়– এ তরজমার ব্যাকরণগত ক্রটি ব্যাখ্যা করো।

٦ – 'কঠিনভাবে' হত্যা করা হবে– এ তরজমার কারণ বলো।

(٦) و قالَتِ اليهودُ يد الله مَغلولةٌ، غُلَّتْ أيديهم و لُعنوا بما

قالوا ۔ بل يَدٰه مَبسوطتٰن، يُنفِق كيفَ يشاء، و لَيَزيدَنَّ كثيرًا منهم ما أُنزِل اليك مِن رَبِّك طُغيانًا و كُفرًا، و اَلْقَيْنا بينَهم العَداوَةَ و البَغْضاءَ الى يَوم القِيٰمَةِ، كُلَّما اَوقدوا نارًا للحربِ اَطْفَأَها الله، و يَسعون في الارضِ فسادًا، و الله لا يُحب المفسدين * وَ لو اَنَّ اهلَ الكتٰبِ اٰمَنوا وَ اتقوا لَكَفَّرنا عنهم سَيِّاٰتِهم وَ لَاُدخِلَنَّهم جنّٰتِ النعيم * وَ لو اَنَّهم اَقاموا التورٰةَ و الانجيلَ و ما اُنزِل اليهم مِن رَبهم لَأَكلوا مِن فَوقِهم وَ مِن تحت اَرجُلِهم، منهم اُمَّةٌ مقتَصِدة، وَ كثير منهم ساءَ ما يَعملون * يٰاَيُّها الرسول بَلِّغْ ما اُنزِلَ اليك من ربك، وَ اِن لم تفعَلْ فَما بلَّغْتَ رِسٰلَتَه، و الله يَعصِمُك مِنَ الناس، اِن الله لا يَهدي القومَ الكٰفِرين * قل يٰاهلَ الكتٰبِ لستُم على شيءٍ حتى تُقيموا التورٰة و الانجيلَ و ما اُنزِل اليكم من ربكم، و لَيزيدن كثيرًا منهم ما اُنزل اليك من ربك طغيانًا و كُفرًا، فلا تَاْسَ على القومِ الكٰفِرين *

بيـان اللـغـة

مَغلولة : (أي : بخيلة) الغُل : طَوْقٌ من حديدٍ أو جِلْدٍ يوضَعُ في اليدِ أو في العُنُقِ .

مَغلولُ اليدِ : كنايَةٌ عن كونِه بخيلًا، و مبسوطُ اليدِ كنايَةٌ عن كونِه كريمًا .

غَلَّ فلانًا (ن، غَلًّا) وَضَع في يَده أو في عُنقِه الغُلَّ .

قال تعالى : خُذوه فَغُلوه [الحاقة ٣٠]

غُلَّت يدُه إلى عنُقِه : تَبْخَلَ و لا تُنفِق، قال تعالى : لا تَجْعَل يدَك مغلولةً إلى عُنقِك (أي : لا تُمسِك يدَك عن الإنفاقِ)

غَلَّ فلانٌ (غُلولًا، ن) : خانَ في الغَنائم و غيرِها، قال تعالى : و مَن يغْلُلْ ياتِ بما غَلَّ يومَ القيٰمة ·

مقتصدة (أي : عادلة و معتدلة)

اقتَصَدَ في أمره : تَوسَّط فَلَمْ يُفْرِط و لم يُفَرِّطْ ·

اقتَصَد في النفَقَة : لم يُسرِف و لم يُقَتِّر (أي لم يبخَل)

فلا تأس (أي فلا تحزن) أسي عليه أو له (س، أَسًا و أَسًى) : حَزِن

بيان الإعراب

غلت أيديهم : جملة دعائية، و لُعنوا معطوفة على : غلت

و ما مصدرية أو موصولة ·

ينفق كيف يشاء : في مَحَل نصبٍ حال من فاعلِ يشاء، أي : يُنفق متكيفًا بأيةِ كيفيةٍ يشاؤها ·

و ليزيدن كثيرا منهم ما أنزل إليك من ربك طغيانا و كفرا : الواو واو القسَم، و القسم المحذوف مجرور بالواوِ، كما قال البعضُ، أو هي استئنافية كما قال الآخرون ·

و اللام واقعة في جواب القسَمِ (عندَ مَنْ جعلوه واوَ القسَم، و هي للتاكيد فقط عندَ غيرهم) ·

و كثيرًا مفعول به لـ : يزيد، و منهم يتعلق بنعت محذوف لـ : كثيرا ·

و ما في مَحل رفعٍ فاعلٌ يزيد، و جملة أُنزِلَ صلة الموصول ·

و طغيانا تمييز من نسبة الفعل : يزيد إلى مفعوله ·

إلى يوم القيامة : يتعلق بحال محذوفة من : العداوةَ و البغضاءَ، أي : ثابتَتَينِ أو قائمَتَينِ إلى يوم القيامَةِ ·

كلَّما : ظرف للزمن المستَمِرِّ، يتضَمَّن معنى الشرطِ · و جملة أوقدوا نارًا للحرب في مَحَل جر بالإضافَة، و هي شرط، و الظرف منصوب متعلق بجواب الشرط ·

و أصل العبارة : أطفأ الله نارَ الحرب كلَّ وقتِ إيقادِهم إياها

وقال البعض : إن كلَّ اسمٌ اكتسَبَ الظرفيَّةَ بإضافَتِه إلى ما ، لأنها مصدرية ظرفية ·

و يسعون : الواو استئنافية

كثير منهم : مبتدأ ، و جملة ساء ما يعملون خبره ·

الترجمة

ইহুদীরা বলে, আল্লাহর হাত শৃঙ্খলিত। শৃঙ্খলিত হোক তাদেরই হাত, এবং অভিশপ্ত হোক তারা তাদের উক্তির কারণে; বরং আল্লাহর উভয় হাত উন্মুক্ত। ব্যয় করেন তিনি যেভাবে ইচ্ছা করেন। আর যা অবতীর্ণ করা হয়েছে আপনার প্রতি আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে, অতি অবশ্যই বাড়িয়ে দেবে তা তাদের অনেকের স্বেচ্ছাচার ও অস্বীকার।

আর ঢেলে দিয়েছি আমি তাদের মাঝে শত্রুতা ও বিদ্বেষ কেয়ামত পর্যন্ত। যখনই তারা জ্বালায় যুদ্ধের আগুন নিভিয়ে দেন তা আল্লাহ। আর যমীনে দৌড়ঝাঁপ করে তারা ফাসাদ সৃষ্টির জন্য, আর আল্লাহ পছন্দ করেন না ফাসাদকারীদের।

আর যদি আহলে কিতাব ঈমান আনতো এবং তাকওয়া অবলম্বন করতো তাহলে অতিঅবশ্যই দূর করে দিতাম আমি তাদের থেকে তাদের গোনাহগুলো এবং অবশ্যই দাখেল করতাম তাদেরকে নেয়ামতের বাগবাগিচায়।

আর যদি তারা পূর্ণরূপে পালন করতো তাওরাত ও ইনজীল এবং এই কিতাব যা (আপনার মাধ্যমে) তাদের প্রতি তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে নাযিল করা হয়েছে, তাহলে অবশ্যই তারা আহার করতো তাদের উপর থেকে এবং তাদের পদতল থেকে। তাদের মাঝে রয়েছে ন্যায়-অনুগামী একটি দল; তবে তাদের অনেকে, বড় মন্দ তাদের কর্মকাণ্ড।

হে রাসূল, পৌঁছাতে থাকুন আপনি যা নাযিল করা হয়েছে আপনার উপর আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে। আর যদি না করেন তাহলে (ধরা হবে যে,) আপনি তাঁর বার্তা (কিছুই) পৌঁছালেন না। আর (ধর্মপ্রচারে আপনার কোন ভয় নেই, কারণ) আল্লাহই রক্ষা করবেন আপনাকে লোকদের থেকে। আল্লাহ তো হেদায়াত দান করেন না কাফির কাওমকে।

আপনি বলুন, হে আহলে কিতাব, তোমরা কোন সঠিক পথের উপরই নেই যতক্ষণ না তোমরা পুরোপুরি পালন করবে তাওরাত ও ইনজীল এবং যে কিতাব (আমার মাধ্যমে) নাযিল করা হয়েছে তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে।
আর যা নাযিল করা হয়েছে আপনার উপর আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে অতিঅবশ্যই তা বাড়িয়ে দেবে তাদের অনেকের স্বেচ্ছাচার ও অস্বীকার। সুরতাং আপনি আফসোস করবেন না কাফির সম্প্রদায়ের বিষয়ে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) يد الله مغلولة আল্লাহর হাত শৃঙ্খলিত– এটি শব্দানুগ তরজমা, ইঙ্গিতার্থ হিসাবে তরজমা হতে পারে– আল্লাহ (বা আল্লাহর হাত) কৃপণতাগ্রস্ত (নাউযুবিল্লাহ)।

(খ) غلت أيديهم এটিকে دعائية ধরে তরজমা করা হয়েছে। খবরবাক্য হিসাবেও তরজমা হতে পারে– তারাই কৃপণতাগ্রস্ত হয়েছে এবং অভিশাপগ্রস্ত হয়েছে তাদের উক্তির কারণে।

(গ) يداه مبسوطتان (তাঁর উভয় হাত উন্মুক্ত) এর বিকল্প তরজমা– তিনি মুক্তহস্ত। ইঙ্গিতার্থ হিসাবে তরজমা হতে পারে– তিনি পরম দানশীল।

(ঘ) وليزيدن كثيرا منهم طغيانا و كفرا (আর অতি অবশ্যই তাদের অনেকের স্বেচ্ছাচার ও অস্বীকার বাড়িয়ে দেবে) বিদ্যমান তারকীবে। طغيانا و كفرا শব্দ দু'টি تمييز হলেও মূলত তা مُحوَّل عن المفعول به তাই পূর্ব তারকীব অনুযায়ী তরজমা করা হয়েছে। কারণ বিদ্যমান তাকীবটি বাংলায় সুপ্রচলিত নয়।

(ঙ) منهم أمة مقتصدة (তাদের মাঝে রয়েছে ন্যায়-অনুগামী একটি দল) উর্দূ ও বাংলা তরজমাগুলো মোটামুটি নিম্নরূপ– তাদের একটি দল সৎ পথের অনুগামী। এটা মূলতঃ أمة منهم مقتصدة এর তরজমা; কিতাবের তরজমাটি আয়াতের তারকীবের অনুগামী।

(চ) وما أنزل إليكم من ربكم (এবং যে কিতাব [আমার মাধ্যমে] নাযিল করা হয়েছে তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে)– এখানে (আমার মাধ্যমে) বন্ধনী ছাড়া এবং

আগের আয়াতে (আপনার মাধ্যমে) বন্ধনী ছাড়া বিষয়টি সুস্পষ্ট হয় না, তাই এ বন্ধনীদুটি যোগ করা হয়েছে।

(ছ) فإن لم تفعل (আর যদি না করেন) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন– যদি আপনি এরূপ না করেন। কোন কোন বাংলা মুতারজিম তা অনুসরণ করেছেন।
এখানে 'এরূপ' শব্দটি অতিরিক্ত এবং অপ্রয়োজনীয়। কারণ বাংলায় এধরনের ক্ষেত্রে 'আর যদি না কর' এর প্রচলন রয়েছে।

(জ) لستم على شيء (তোমরা কোন সঠিক পথের উপরই নেই) তাফসীরের কিতাবে এর ব্যাখ্যায় এসেছে على طريق صحيح সে দিকে লক্ষ্য করে এ তরজমা করা হয়েছে। কোন কোন তরজমায় আছে– 'তোমাদের কোন ভিত্তি নেই।' এটি ত্রুটিপূর্ণ।

أسئلة :

١ – اشرح مادّةَ غُلّ
٢ – اشرح إعراب قوله : كيف .
٣ – أعرب قوله : إلى يوم القيامة
٤ – أعرب قوله : كلما .
٥ – يد الله مغلولة এর তরজমা পর্যালোচনা করো।
٦ – على شيء এর বর্তমান তরজমাটির সূত্র ব্যাখ্যা করো।

(٧) لَقَد اَخذنا مِيثاقَ بني اسرا ءيلَ و ارسلنا اليهم رُسُلا، كلّما
جاءهم رَسول بِما لا تَهْوٰى انفُسهم فريقًا كَذَّبوا و فريقًا
يَقتُلون * و حَسِبوا اَلَّا تكونَ فِتنةٌ فَعَمُوا و صَمُّوا ثم تاب
الله عليهم ثم عَمُوا و صَمُّوا كثير منهم، و الله بصير بما
يعمَلون * لَقَد كفَر الذين قالوا اِن الله هو المسيحُ ابنُ مريمَ،
وَ قال المسيح يٰبني اِسرا ءيل اعبُدوا الله ربي و ربَّكم، اِنه مَن
يُشرِكْ بالله فَقَدْ حَرَّمَ الله عليه الجنةَ و ماوٰه النار، وَ ما

لِلظّٰلِمين مِنْ اَنصار * لَقَد كَفَرَ الذين قالوا اِنَّ الله ثالِثُ
ثَلٰثةٍ م وَ ما مِنْ اِلٰهٍ الا اِلٰهٌ واحِد، وَ اِن لم ينتَهُوا عَمَّا يقولون
لَيَمَسَّنَّ الذين كَفَروا منهم عَذاب اليم * اَفلا يتوبون الى الله و
يَستغفرونه، وَ الله غفور رحيم * ما المسيحُ ابنُ مريمَ الا
رَسول، قَد خلَتْ من قَبلِه الرسُلُ، و امُّه صِدّيقَة، كانا ياكلٰنِ
الطعامَ، انظر كيفَ نُبين لهم الاٰيٰتِ ثم انظُر اَنّٰى يُؤفَكون *

بيان اللغة

لا تَهْوٰى (لا تُحب) هَوِيَ فلانٌ فلانًا (س، هَوًى) أحبه
الهَوٰى (ج) أهواء، العِشق يكون في الخير و الشر . و الهوى شَهوةُ النفسِ
عَمُوا (س، عَمًى) ذهب بَصَرُه كلُّه من عَيْنَيه كِلتَيْهِما، فهو أعمٰى (ج) عُمْيٌ، و عُميان (م) عَمياءُ (ج) عُمْيٌ
عَمِي القلبُ أو الرجلُ: ذهبت بَصيرَتُه و لم يَهتدِ إلى خيرٍ .
عَمِيت عليه الأخبارُ أو الأمورُ : خَفِيت و التبَسَت .
صَمُّوا : (س، صَمًّا، و صَمَمًا) ذهب سمعهم، يقال : صَمَّتْ أذنُه و اٰذانُهم
أَصَمَّ الرجل : صار أصمَّ، و أصمَّه : صَيَّره أصمَّ
يُؤفَكون : يُصرَفون عن الحقِ (ض، أَفْكًا)

بيان الإعراب

كلما : انظر إعرابَه فيما مضى، و جواب كلَّما محذوف، دل عليه السِّياق . أي عَصَوه، و كذبوا جملة مستأنفة بيانية، و يجوز أن يكون كذبوا جوابَ الشرط .
بما لا تهوى : ما موصولة، أريد بها الأحكامُ، أو هي نكرة موصوفة بمعنٰى شيءٍ، و الجملة صفة النكرة .
و حسبوا ألا تكون فتنةٌ : المصدر المؤول قامت مَقام مفعولَي حسب، أي : حسبوا الفتنة معدومةً .

كثير : بدَل من الضمير في عموا و صموا ·
و قال المسيح : الواو حالية ·
و ما للظالمين من أنصار : ما نافية لا تعمَل حِينَ تقدُّم الخبَر، و مِن حرف جر زائد، و أنصارٍ مجرور لفظًا مرفوع مَحَلا، لأنه مبتدأ مؤخر ·
و ما من إله إلا إله واحد : الواو حالية، و مجرورٌ مِنْ مرفوعٌ محلا على الابتداء، و الخبر محذوف أي : موجود ·
و إن لم ينتهوا عما يقولون ليمسن الذين : اللام واقعة في جواب قسم محذوف، و جواب الشرط مَحذوفٌ سَدَّ مَسَدَّه (أي : قامَ مَقامَه) جواب القسَم، وهو قوله تعالى : ليمسن الذين كفروا، لأن التقدير : و لئن لم ينتهوا ·
كيف : حال من فاعل نبين، · و أنى اسم استفهام بمعنى كيف، فهو في محل نصب على الحال · و في يؤفكون حذف، أي : عن الحق ·

الترجمة

অবশ্যই অবশ্যই গ্রহণ করেছিলাম আমি বনি ইসরাঈলের অঙ্গীকার এবং পাঠিয়েছিলাম তাদের কাছে বিভিন্ন রাসূল। যখনই এনেছেন তাদের কাছে কোন রাসূল এমন বিধান যা তাদের মনপুত হয় না, তখনই একদলকে তারা মিথ্যাবাদী বলে দিলো, আর এক দলকে তো হত্যাই করে ফেলতো।

আর তারা ধারণা করেছিলো যে, (তাদের উপর) আসবে না কোন আযাব, ফলে তারা অন্ধ (হয়ে গেলো) ও বধির হয়ে গেলো। তারপর অনুকম্পা করলেন আল্লাহ্ তাদের প্রতি, তারপরো অন্ধ (হয়ে গেলো) ও বধির হয়ে গেলো তারা, তাদের অনেকে। আর আল্লাহ্ তাদের কর্মকাণ্ড সম্পর্কে পূর্ণদর্শী।

অবশ্যই কুফুরি করেছে তারা যারা বলেছে, মসীহ ইবনে মারয়ামই হচ্ছেন আল্লাহ্, অথচ মাসীহ বলেছেন, হে বনী ইসরাঈল, ইবাদত করো তোমরা আল্লাহর, আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালকের। যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে শিরক করবে অতিঅবশ্যই হারাম করে দেবেন আল্লাহ্ তার জন্য জান্নাত। আর তার ঠিকানা হলো জাহান্নাম। আর যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

অতিঅবশ্যই কুফুরি করেছে তারা যারা বলেছে, আল্লাহ তো

তিনজনের একজন; আর অন্য কোন ইলাহ্ নেই এক ইলাহ্ ছাড়া। আর যদি বিরত না হয় তারা তাদের (এই) উক্তি থেকে তাহলে তাদের মধ্যহতে যারা কুফুরি করেছে তাদেরকে অতিঅবশ্যই পাকড়াও করবে যন্ত্রণাদায়ক আযাব। তারপরো কি তারা আল্লাহর কাছে তাওবা করবে না এবং তার কাছে ইসতিগফার করবে না, অথচ আল্লাহ্ পরম ক্ষমাশীল, চিরদয়ালু!

মাসীহ্ ইবনে মারয়াম তো শুধু একজন রাসূল। বিগত হয়েছেন তাঁর পূর্বে বহু রাসূল। তার আম্মা হলেন অতি সত্যবতী। তারা দু'জন খাদ্য আহার করতেন। দেখুন কীভাবে সুস্পষ্ট বর্ণনা করছি আমি তাদের জন্য প্রমাণাদি, তারপর দেখুন কিভাবে তাদেরকে (সত্য হতে) ঘুরিয়ে রাখা হচ্ছে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أرسلنا رسلا শায়খায়ন رسلا এর তরজমা করেছেন 'অনেক রাসূল', এটা হতে পারে। আবার 'বিভিন্ন রাসূল' হতে পারে। কিতাবে দ্বিতীয়টি গ্রহণ করা হয়েছে, কারণ তাফসীর থেকে মনে হয়, এখানে বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন রাসূল প্রেরণের আলোচনা উদ্দেশ্য।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'আমি রাসূল পাঠিয়েছিলাম', এটা ঠিক নয়।

(খ) كلما جاءهم رسول بما لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا و فريقا يقتلون (যখনই এনেছেন তাদের কাছে কোন রাসূল এমন বিধান যা তাদের মনপুত্র হয় না তখনই একটি দলকে তারা মিথ্যাবাদী বলে দিলো, আর একদলকে তো হত্যাই করে ফেলতো) একটি তরজমায় আছে, যখনই কোন রাসূল তাদের নিকট এমন কিছু আনে যা তাদের মনপুত নয় তখনই তারা কতককে মিথ্যাবাদী বলে ও কতককে হত্যা করে।

অন্য তরজমায় আছে– যখনই .... নিয়ে আসতো যা তাদের মন চাইতো না ..... মিথ্যা আরোপ করতো এবং হত্যা করে ফেলতো।

এ তরজমা দু'টিকে কিতাবের তরজমার সাথে মিলিয়ে দেখলেই বোঝা যাবে যে, এ দু'টি তরজমায় ক্রিয়াচয়নে ত্রুটি রয়েছে।

(গ) عَمُوا و صَمُّوا অন্ধ (হয়ে গেলো) ও বধির হয়ে গেলো– এখানে বন্ধনী দ্বারা এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, বাংলা ভাষার শৈলী অনুসারে প্রথম ফেয়েলের অংশবিশেষ উহ্য থাকা সঙ্গত।

(ঘ) عموا و صموا كثير منهم (তারপরো অন্ধ [হয়ে গেলো] ও বধির হয়ে গেলো তারা, তাদের অনেকে) সকলেই তরজমা করেছেন এভাবে– তাদের অনেকেই/অধিকাংশই অন্ধ ও বধির হয়েছিলো।

শায়খায়নের তরজমায় বদলের তরকীবটি উঠে এসেছে, আর কিতাবে সেটাই অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঙ) اعبدوا الله ربي و ربكم (ইবাদত করো তোমরা আল্লাহর আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালকের) একটি বদলের তারকীবানুগ এভাবেও তরজমা করা যায়– 'তোমরা ইবাদত করো আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহর। কেউ কেউ এর তরজমা করেছেন– তোমরা আল্লাহর ইবাদত করো যিনি আমার পালনকর্তা এবং তোমাদের পালনকর্তা। এখানে বিনা প্রয়োজনে মূল তারকীব পরিহার করা হয়েছে।

(চ) 'কোন ইলাহ নেই' এর পরিবর্তে 'অন্য কোন ইলাহ নেই' এ তরজমার কারণ এই যে, এতে তাকীদ ও জোরালো ভাব রয়েছে।

من الله এর অতিরিক্ত من থেকেও তাকীদের অর্থ উঠে এসেছে।

(ছ) أفلا يتوبون إلى الله (তারপরো কি তারা তাওবা করবে না আল্লাহর কাছে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন শায়খুলহিন্দের অনুকরণে এভাবে– কেন তারা তাওবা করে না?

কিতাবে থানবী (রহ)-এর অনুকরণে উপরোক্ত তরজমা করা হয়েছে এবং তা অধিকতর মূলানুগ।

(জ) أمه صديقة (তাঁর আম্মা হলেন অতি সত্যবতী) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন, তার আম্মা হলেন 'ওলী' স্ত্রীলোক। তাঁরা صديقة এর ভাবার্থ করেছেন। কিতাবে শব্দানুগ তরজমা করা হয়েছে।

(ঝ) ثم تاب الله عليهم (তারপর অনুকম্পা করলেন আল্লাহ তাদের

প্রতি) শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, তারপর আল্লাহ তাদের তাওবা কবুল করলেন।

কিতাবে থানবী (রহ) এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে। কারণ, তারা তাওবা করেছিলো, আর আল্লাহ তাদের তাওবা কবুল করেছিলেন, বিষয়টি সম্ভবত এমন নয়, বরং ঘটনা এই যে, তাদের অন্যায় সত্ত্বেও আল্লাহ তাদের প্রতি কোমলতা প্রদর্শন করেছেন, ফলে তারা আরো সীমালঙ্ঘন করেছে।

(ঞ) ثم انظر أنى يؤفكون (তারপর দেখুন, কীভাবে তাদেরকে [সত্য থেকে] ঘুরিয়ে রাখা হচ্ছে) উভয় শায়খ معروف لازم এর তরজমা করেছেন এবং أنى কে أين এর অর্থে গ্রহণ করেছেন। তাঁদের তরজমা হলো- আবার দেখুন তারা উলটো কোথায় যাচ্ছে।

এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে মূল থেকে দূরবর্তী। তদুপরি, এখানে আয়াতে শয়তানের অশুভ শক্তির প্রতি প্রচ্ছন্ন ইঙ্গিত রয়েছে, যা কিতাবের তরজমায় উঠে এসেছে।

أسئلة :

١ - اشرح مادة صَمَّ

٢ - ما جواب كلما في هذه الآية ؟

٣ - أعرب قوله : الا تكون فتنة .

٤ - أعرب كلمةَ كثيرٌ في الآية .

٥ - أرسلنا إليهم رسلا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - أنى يؤفكون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) قل أتعبدون مِن دون الله ما لا يملك لكم ضَرًّا و لا نَفعا ، و الله هو السميع العليم * قل يٰأهل الكتٰب لا تَغْلُوا في دينكم غَيرَ الحقِّ و لا تَتبعوا اهواءَ قومٍ قد ضَلوا من قبلُ و أضَلوا كثيرًا و ضَلُّوا عن سَواءِ السبيل * لُعن الذين كفروا مِن بني اسرا ءيل على لِسان داودَ و عيسى ابنِ مريمَ ؛ ذلك بِما عصَوا وَ كانوا يعتَدون * كانوا لا يَتناهَوْن عن مُنكَرٍ فعلوه ، لَبئسَ ما كانوا يفعَلون *

بيان اللغة

أ تعبدون : الاستفهام للتوبيخ و التعجب .
لا تَغلُوا : (لا تجاوزوا الحدَّ)
غَلا في الأمرِ أو في الدين (ن، غُلُوًّا) : جاوَزَ الحد و أفرَط و تَشدد ، فهو غالٍ و الجمع غُلاة
غَلا السِّعرُ و غيرُه (ن، غَلاءً) زادَ و ارتفَع و جاوزَ الحد .

بيان الإعراب

أ تعبدون من دون الله ما لا يملك : ما اسم موصول في محل نصب مفعول به لـ : تعبدون، و الجملة بعدَه صِلته، أو هي نكِرة موصوفَة، و الجملة في مَحَل نَصب صفة ،
و من دون الله متعلق بحال محذوفةٍ من مفعول تعبدون .
و الله هو السميع العليم : الواو حالية، و الرابط بين الحال و صاحِبها هو الواو، و مَجيء الحالِ بعدَ هذا الكلامِ مُناسِبٌ .
هو ضميرٌ فصلٍ لا محل له، أو ضميرٌ منفصِلٌ في محل رفع مبتدأ .
غير الحق : صفة لمفعول مطلق، أي : غُلُوًّا غيرَ الحق، أو هو حال من ضمير الفاعل، بمعنى مُجاوزين الحقَّ .
مِن قبلُ : متعلق بـ : ضَلوا ، و قبلُ مبني على الضم، لأنه منقطع عن الإضافة لفظا لا معنىً .
من بني إسرئيل : من حرف جر بياني، متعلق بحال محذوفة .
فعلوه : نعت لـ : مُنكر .
لبئس ما كانوا يفعلون : اللام واقعة في جواب قسم محذوف، و بئس فعل ماض جامد لإنشاء الذم، و ما موصول في محل رفع فاعل بئس، أو نكرة موصوفة في محل نصب تمييز لفاعل بئس المستَتِرِ، و المخصوص بالذم محذوف، أي : فَعْلَتُهم .
و جملة كانوا يفعلون صلة ما ، لا محل لها من الإعراب، أو في محل نصب صفة ما النكرةِ .
و جملة بئس ما .... جواب قسَم مقدم .

الترجمة

আপনি বলুন, তোমরা কি উপাসনা করো আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর, যা না তোমাদের অপকারের ক্ষমতা রাখে, আর না উপকারের; অথচ আল্লাহ, তিনিই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞানী।

আপনি বলুন; হে আহলে কিতাব, বাড়াবাড়ি করো না তোমরা তোমাদের ধর্মের বিষয়ে, অন্যায় বাড়াবাড়ি। আর অনুসরণ করো না তোমরা এমন সম্প্রদায়ের খেয়ালখুশির, যারা (নিজেরা) ইতিপূর্বে পথভ্রষ্ট হয়েছে এবং অনেককে পথভ্রষ্ট করেছে। আর বিচ্যুত হয়েছে তারা সরল পথ থেকে।

অভিসম্পাত দেয়া হয়েছে বনী ইসরাঈল থেকে যারা কুফুরি করেছে তাদেরকে দাউদ ও ঈসা ইবনে মারয়ামের যবানে, আর এই অভিসম্পাত এ কারণে যে, তারা অবাধ্যতা করেছে, আর তারা সীমালঙ্ঘন করতো।

যে গর্হিত কাজ তারা করতো তা থেকে তারা পরস্পরকে বারণ করতো না, যা তারা করতো তা কত না নিকৃষ্ট!

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما لا يملك لكم ضرا و لا نفعا যা না তোমাদের অপকার করার ক্ষমতা রাখে, আর না উপকার করার।

বিকল্প তরজমা- যা তোমাদের অপকার বা উপকার কিছুই করতে পারে না।

গাঁয়রুল্লাহর ক্ষেত্রে ইবাদত শব্দটি বাংলায় ব্যবহৃত হয় না। তাই কিতাবের তরজমায় 'উপাসনা' ব্যবহার করা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) 'বন্দেগী' ব্যবহার করেছেন।

(খ) অথচ আল্লাহ, তিনিই সর্বশ্রোতা - এখানে هو কে দ্বিতীয় মুবতাদা ধরে তরজমা করা হয়েছে।

ضمير الفصل হিসাবে তরজমা হবে- অথচ আল্লাহই সর্বশ্রোতা।

(গ) لا تغلوا غير الحق বাড়াবাড়ি করো না, অন্যায় বাড়াবাড়ি - এ তরজমার ভিত্তি এই যে, غير الحق হচ্ছে উহ্য مفعول مطلق এর ছিফাত।

তোমরা অন্যায় বাড়াবাড়ি করো না - এটা সরল তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

(ঘ) أهواء এর তরজমায় 'খেয়ালখুশি' – এর পরিবর্তে প্রবৃত্তি বা খাহেশাত ব্যবহার করা যায়।

(ঙ) الذين كفروا من بني اسرائيل (বনী ইসরাঈল থেকে যারা কুফুরি করেছে) বনী ইসরাঈলের যারা কুফুরি করেছে – এ তরজমা হতে পারে।

لعن الذين كفروا ... এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন বনী ইসরাঈলের মধ্যে যারা কাফের/যারা কুফুরি করেছিলো তারা অভিশপ্ত হয়েছে দাউদ ও ঈসা ইবনে মারয়ামকর্তৃক।

لعن এর দ্বারা অভিসম্পাতকারীর সত্তার প্রতি যে প্রচ্ছন্ন ইঙ্গিত রয়েছে তা এ তরজমায় আসেনি।

তাছাড়া على لسان এর মূলানুগ তরজমা হয়নি। এ তরজমা থেকে ধারণা হতে পারে যে, হযরত দাউদ ও হযরত ঈসা (আঃ) নিজেদের পক্ষ হতে অভিসম্পাত করেছেন।

(চ) আর এই অভিশম্পাত – এখানে ذلك এর مشار إليه উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে থানবী (রহ)-এর অনুকরণে।

أسئلة :

١ – اشرح مادة : غ – ل – و

٢ – أعرب قوله : ما لا يملك .

٣ – أعرب قوله : غير الحق .

٤ – أعرب قوله : لبئس ما كانوا يفعلون .

٥ – 'অন্যায় বাড়াবাড়ি' এ তরজমার সূত্র কী ?

٦ – তারা অভিশপ্ত হয়েছে দাউদ ও ঈসা ইবনে মারয়ামকর্তৃক – এ তরজমা পর্যালোচনা করো।

(٩) تَرٰى كثيرًا منهم يَتَوَلَّون الذين كَفَروا، لَبِئسَ ما قدَّمت لهم انفسُهم اَنْ سخِط الله عليهم و في العَذاب هم خٰلدون * و لو كانوا يؤمنون بالله و النبي و ما انزل اليه ما اتخذوهم اولياءَ و لٰكنَّ كثيرا منهم فٰسِقون * لتجدن اشدَّ الناس عَداوةً لِلذين اٰمَنوا اليَهودَ و الذين اَشْرَكوا، و لتجِدنَّ اقربَهم مَودَّةً

لِلذين اٰمَنوا الذين قالوا اِنـا نَصٰرٰى، ذلك بِاَنَّ منهم قِسِّيسِين و رُهبانًا و انهم لا يَستكبِرون *

بيـان اللغـة

قسـيسنين : جمعُ قِسِّيسٍ، و يُجمَعُ أيضًا على قَساوِسَةٍ، و هو رئيسُ النصارى و عالمهم ·

رهبان : جمع راهب، و هو اسم فاعل من رَهِبَ الله : خافَه (س رَهَبًا، و رُهْبًا) و الراهب : من يتعَبَّد في صَوْمَعَةِ النصارى زاهدًا في أمور الدنيا সংসারত্যাগী খৃষ্টান সাধু। সন্ন্যাসী

رَهبانِيَّة (لا رهبانيـةَ في الإسلام) সন্ন্যাসধর্ম, সংসারবিরাগ

أرهبه : أخافه

بيـان الإعراب

يتولون : الجملة حال من مفعول ترى، و الذين كفروا مفعول يتولون ·

أن سخط الله عليهم : المصدر المؤول مبتدأ مؤخر، و هو المخصوص بالذم، على حذف المضاف، كأنه قيل : بئس زادهم في الآخرة سَبَبُ سَخَطِ الله عليهم ·

و إنما مَسَّتِ الحاجَة إلى حذف المضاف، لأن السخَط المضاف إلى الله لا يُذَم، و إنما يذَمُّ سببُ سَخَطِ الله ·

و ما أنزل إليه : معطوف على النبي ·

أشدَّ الناس : مفعول به أول لـ : تجِد، و عداوةً تمييز، و العامل فيه أشَدَّ، و للذين امنوا يتعلق بـ : عداوةً

اليهود مفعول به ثانٍ، و يجوز العَكْسُ، و الذين أشرَكوا : معطوف على اليهودَ ·

و لتجدن أقربَهم مودة : إعرابه مثل الإعراب السابق، و لِلذين آمنوا متعلق بـ : مَودَّةً، و الذين قالوا مفعول به ثان أو أول ·

ذلك بأن منهم ... : اسم الإشارة مبتدأ، و المصدر المؤول في محل جر

بالباء، و الجار مع مجروره متعلق بخبر ذلك المحذوف ·

و قسيسين اسم أن المؤخر، و منهم متعلق بخبر أن المحذوف، أي : ذلك حاصل بسبب كون القسيسين و الرهبان معدودين منهم

و أنهم لا يستكبرون : معطوف على المصدر المؤول السابق، أي : ذلك حاصل أيضا بسبب عدم استكبارهم ·

الترجمة

দেখতে পাবেন আপনি তাদের থেকে অনেককে যে, তারা বন্ধুরূপে গ্রহণ করে তাদেরকে যারা কুফুরি করেছে। কত না নিকৃষ্ট ঐ কর্ম যা তারা নিজেদের জন্য অগ্রবর্তী করেছে;[১] যা তাদের প্রতি আল্লাহর ক্রোধের কারণ। আর তারা আযাবের মাঝে চিরস্থায়ী হবে।

আর যদি তারা ঈমান আনতো আল্লাহর প্রতি এবং নবীর প্রতি এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা নাযিল করা হয়েছে নবীর উপর তাহলে বন্ধু বানাতো না; তারা তাদেরকে; কিন্তু (বাস্তব এই যে,) তাদের থেকে অনেকেই (চূড়ান্ত) পাপাচারী।

যারা ঈমান এনেছে তাদের প্রতি শত্রুতার ক্ষেত্রে অবশ্যই তুমি মানুষের মাঝে কঠিনতম পাবে ইহুদীদেরকে এবং যারা শিরক করেছে তাদেরকে। আর যারা ঈমান এনেছে তাদের প্রতি ভালোবাসার ক্ষেত্রে অবশ্যই তুমি মানুষের মাঝে নিকটতম পাবে, তাদেরকে যারা বলেছে, নিঃসন্দেহে আমরা নাছারা। তা এই কারণে যে, তাদের মাঝে রয়েছে কতিপয় ধর্মজ্ঞানী এবং কতিপয় সাধুপুরুষ। এবং (তা এই কারণে যে,) তারা অহংকার করে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لبئس ما قدمت (কতনা নিকৃষ্ট ঐ কর্ম যা তারা নিজেদের জন্য অগ্রবর্তী করেছে, যা তাদের প্রতি আল্লাহর ক্রোধের কারণ) একটি তরজমায় এ রকম আছে– কত নিকৃষ্ট তাদের কৃতকর্ম, যে কারণে আল্লাহ্ তাদের প্রতি ক্রোধান্বিত হয়েছেন। এটি বেশ সরল তরজমা, তবে মূল থেকেও বেশ দূরবর্তী। কারণ قدمت শব্দটি দ্বারা বোঝা যায় যে, মানুষ দুনিয়াতে

১. আখেরাতে পাঠিয়েছে।

ভালো মন্দ যে আমলই করে তা সে মূলত আগেভাগে আখেরাতে পাঠিয়ে দেয় এবং সেখানে সে তার সুফল বা কুফল ভোগ করবে। উপরে তরজমায় এ ভাবটি আসেনি।

(খ) و لكن كثيرا منهم فاسقون (কিন্তু তাদের থেকে অনেকেই [চূড়ান্ত] পপাচারকারী) এখানে প্রায় সকল বাংলা তরজমায় فاسقون এর অর্থ করা হয়েছে পাপাচারী/দুরাচার ইত্যাদি, পক্ষান্তরে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, কিন্তু তাদের অনেকে ঈমান থেকেই বঞ্চিত। বস্তুত এটাই এখানে উদ্দেশ্য। কিতাবে শাব্দিক তরজমা করে, বন্ধনীতে 'চূড়ান্ত' শব্দটি যোগ করে সেদিকেই ইঙ্গিত করা হয়েছে। কারণ ঈমান ত্যাগ করাই হচ্ছে পাপাচারের চূড়ান্ত স্তর।

(গ) و انهم لا يستكبرون এবং (তা এই কারণে যে,) তারা অহংকার করে না– এ বন্ধনী যুক্ত করার সূত্র এই যে, عطف সর্বদা عامل এর তাকরার দাবী করে। বক্তব্যের স্পষ্টায়নের জন্য এই বন্ধনীর প্রয়োজন ছিলো।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ قسيسٍ .

٢ – اشرح الآية : لبئس ما قدمت لهم أنفسهم أن سخط الله عليهم .

٣ – ما إعراب مودةً و ما العامل فيها ؟

٤ – بم يتعلق قوله لِلذين آمَنوا ؟

٥ – فاسقون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – (তা এই কারণে যে) এই বন্ধনীটির সূত্র আলোচনা করো

(١) ما عَلى الرسولِ إلَّا البَلاغ، و الله يعلَم ما تُبدون و ما تكتُمون
* قل لا يستَوي الخبيثُ و الطيب و لو أعجَبَك كثرةُ
الخَبيثِ، فاتقوا الله يأولي الألْبابِ لعلكم تُفلِحون * يايها
الذين امَنوا لا تَسئلوا عَنْ أشياءَ إن تُبْدَ لكم تَسُؤْكم، وَ إن
تَسئلوا عنها حِينَ يُنزَّل القرآن تبدَ لكم، عَفا الله عنها، و الله
غفور حليم * قد سَألَها قوم مِن قَبْلِكم ثم اصبَحوا بها
كٰفرين *

بيان اللغة

الخبيث : (ضِدُّ الطيبِ، و هو ما يُكْرَه رداءةً و فسادًا)
خَبُثَ الشيءُ (ك، خُبْثًا و خَباثَة) صار فاسِدًا و رَديئًا و مكرُوها
خَبُثَ فلان : صار ذا خُبثٍ নিকৃষ্ট ও ঘৃণ্য হলো
خَبيث (ج) خُبَثاء و خبُث
خَبيثة (ج) خبائِثُ
شيء : (ج) أشياءُ، على وزن أفعالٍ، كفَرخٍ و أفراخٍ، تُرك صرفُها لِكثرَة الاستعمال

بيان الإعراب

ما على الرسول إلا البَلاغُ : ما نافية، و على الرسول متعلق بمحذوف، خبر مقدم، أي : واجب على الرسول و إلا أداة حصر، و البلاغ مبتدأ مؤخر .
أَبْعِدْ عن الكلام أداةَ النفي و أداةَ الحصر، فَما بَقي فهو المراد مَعَ الحصرِ، فمراد هذه الجملة : البلاغ هو الواجب على الرسول
(পৌঁছে দেয়াই হলো রাসূলের দায়িত্ব)

و لو أعجبك كثرة الخبيث : الواو حالية، و لو مصدرية، و كلُّ لو بعدَ واوِ الحال مصدريّةٌ، و المعنى : لا يستوي الخبيث و الطيب حالَ إعجابِك كثرةَ الخبيث . و المراد تعميم الأحوال، أي لا يستويان في حال، حتى في حالِ إعجابك كثرةَ الخبيثِ .

و هذا خطابٌ لمخاطَب فاعلِ قل، و ليس خطاباً لفاعلِ قل .

فاتقوا الله : الفاء فصيحة، أي : إذا تبيَّنَ لكم هذا فاتقوا الله .

إن تبد لكم تسؤكم : الجملة الشرطية صفة لـ : أشياء

من قبلكم : متعلق بـ : سأل

الترجمة

রাসূলের কর্তব্য শুধু পৌঁছে দেয়া, আর আল্লাহ্ জানেন যা প্রকাশ করো তোমরা এবং যা গোপন করো তোমরা।

আপনি বলে দিন, সমান হতে পারে না অনুত্তম ও উত্তম, যদিও মুগ্ধ করে তোমাকে অনুত্তমের আধিক্য। সুতরাং ভয় করো তোমরা আল্লাহকে, হে জ্ঞানের অধিকারীগণ! যাতে তোমরা সফলকাম হতে পারো।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো; প্রশ্ন করো না তোমরা (অপ্রয়োজনীয়) এমন সব বিষয় সম্পর্কে, যা তোমাদের জন্য প্রকাশ করা হলে অপ্রসন্ন করবে তোমাদেরকে। আর যদি প্রশ্ন করো তোমরা এ সকল বিষয় সম্পর্কে কোরআন নাযিল হওয়ার সময়, তাহলে তা প্রকাশ করে দেয়া হবে তোমাদের জন্য। (অবশ্য) আল্লাহ্ ক্ষমা করে দিয়েছেন (তোমাদের কৃত) বিগত প্রশ্নাবলী। আর আল্লাহ্ তো পরম ক্ষমাশীল, পরম সহনশীল।

তোমাদের পূর্বে (বিভিন্ন উম্মতের) বিভিন্ন লোকেরা কিন্তু এজাতীয় বিষয় জিজ্ঞাসা করেছে, তারপর তারা ঐ সকল বিষয় অস্বীকারকারী হয়ে গেছে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما تبدون و ما تكتمون (যা প্রকাশ করো তোমরা এবং যা গোপন করো তোমরা) এটি থানবী (রহ্)-এর তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ্)-এর তরজমা হলো- যা তোমরা প্রকাশ্যে করো এবং যা তোমরা গোপনে করো।

উভয় তরজমাই গ্রহণযোগ্য। প্রথম তরজমার সম্পর্ক হলো আকীদার সাথে, আর দ্বিতীয় তরজমার সম্পর্ক হলো আমলের সাথে।

(খ) الخبيث و الطيب (অনুত্তম ও উত্তম) উভয় শায়খ এর তরজমা করেছেন, 'অপবিত্র ও পবিত্র'। তাফসীর মতে শব্দ দু'টি যেহেতু ব্যাপক যা মানুষ এবং মানুষের জ্ঞান, গুণ, কর্ম, সম্পদ ইত্যাদি সবকিছুকে অন্তর্ভুক্ত করে সেহেতু কিতাবের তরজমায় সবচে' ব্যাপক অর্থবোধক দু'টি প্রতিশব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।

শায়খায়নের তরজমার ভিত্তি এই যে, পূর্বে হালাল ও হারাম এবং পাক ও নাপাক বস্তুর আলোচনা হয়েছে এবং হালাল ও পাক বস্তুকে গ্রহণ করার এবং হারাম ও অপবিত্র বস্তুকে ত্যাগ করার আদেশ করা হয়েছে, আর এখানে উক্ত আদেশের হিকমত বয়ান করা হয়েছে।

(গ) و لو أعجبك كثرة الخبيث (যদিও মুগ্ধ করে তোমাকে অনুত্তমের আধিক্য) শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, যদিও তোমার কাছে ভালো লাগে অপবিত্রতার আধিক্য।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, যদিও নাপাকির আধিক্য তোমাকে বিস্ময়ে নিক্ষেপ করে।

إعجاب শব্দটি অবশ্য উভয় অর্থকেই ধারণ করে, তবে মুগ্ধতার অর্থে এর ব্যবহার বহুল।

'আপনি বলুন'- এর পরিবর্তে 'বলে দিন' এবং 'সমান হয় না' এর পরিবর্তে 'সমান হতে পারে না' বলা হয়েছে বক্তব্যকে জোরালো করার জন্য, এবং এখানে সেটাই সংগত।

কোন কোন তরজমায় আছে 'সমান নয়/এক নয়'। এটা গ্রহণযোগ্য হলেও মূলানুগ নয়।

(ঘ) لا تسئلوا عن أشياء (প্রশ্ন করো না তোমরা এমন সব বিষয় সম্পর্কে) কোন কোন বাংলা মুতারজিম লিখেছেন- এমন কথাবার্তা জিজ্ঞাসা করো না।

أشياء এর প্রতিশব্দরূপে 'কথাবার্তা' ব্যবহার করার কোন যুক্তি নেই।

উভয় শায়খ তরজমা করেছেন- ایسی باتیں مت پوچھو جو (এমন সব বিষয় জিজ্ঞাসা করো না যা .....)

উর্দূভাষায় بات শব্দটি কথা অর্থে যেমন ব্যবহৃত হয়, তেমনি বিষয় অর্থেও ব্যবহৃত হয়। সম্ভবত বাংলা মুতারজিমগণ উর্দূ তরজমা দ্বারা প্রভাবিত হয়ে 'কথাবার্তা' শব্দটি ব্যবহার করেছেন।

(৬) قد سألها قوم من قبلكم - এখানে قوم এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'একটি সম্প্রদায়'
তাতে মনে হতে পারে যে, এখানে পূর্ববর্তী বিশেষ কোন সম্প্রদায়ের কথা বলা হয়েছে। অথচ বিশুদ্ধ হাদীছে আছে যে, বিভিন্ন সম্প্রদায় এ দোষে দুষ্ট ছিলো। থানবী (রহ) বন্ধনীতে বিষয়টি স্পষ্ট করে দিয়ে লিখেছেন- তোমাদের পূর্বে (বিভিন্ন উম্মতের) বিভিন্ন লোকেরা এ জাতীয় বিষয় জিজ্ঞাসা করেছে।

أسئلة :

١ - ماذا تعرف عن كلمةِ أشياءَ ؟

٢ - أعرب قوله تعالى : و لو أعجبك كثرة الخبيث .

٣ - اشرح حَيثِيَّة الجزم في تبد لكم .

٤ - بم يتعلق " بها " في قوله : ثم اصبحوا بها كفرين ؟

٥ - ولو أعجبك এর তরজমা শায়খায়ন কী করেছেন ? এবং কিতাবে কোন তরজমাটি কেন করা হয়েছে ?

٦ - قد سألها قوم এখানে قوم এর অর্থ একটি সম্প্রদায় করা হলে কী সমস্যা, আলোচনা করো।

(٢) وَ إذا قيل لهم تَعالوا الى ما انزل اللّٰهُ و الى الرَّسولِ قالوا حَسْبُنا ما وَجدنا عليه آباءَنا، اَوَلو كان اباؤُهم لا يعلَمون شيئًا و لا يهتَدون * يايها الذين امَنوا عليكم انفسَكم، لا يَضُركم مَن ضَل اِذا اهتَدَيتم، الى الله مرجِعكم جميعًا فينبئكم بما كنتم تعملون *

بيان اللغة

تعالوا : أمر من باب التفاعل، يستعمل لطلَب الإقبال و القُدوم، قيل

أصله أن يُدعى الإنسان إلى مكانٍ مرتفِع، ثم جعل للدعاء إلى كل مكان و إلى كل أمرٍ ·

حسب : اسم بمعنى كافٍ، و اسم فعل بمعنى اكتَفِ به، أو يكفيك هذا، تقول : حسبُك هذا ·

مرجعكم : هذا مصدر، و كذا الرُّجْعى، و يصح أن يكون كل منهما من الرجوع، و الرجع ·

بيان الإعراب

حسبنا : مبتدأ، أو خبر مقدم، إن كان بمعنى كافٍ، و إن كان بمعنى يكفينا فهو اسم فعلٍ، و الموصول فاعله ·

أ و لو : الاستفهام هنا للتوبيخ، و الواو حالية، و لو مصدرية، و المعنى : أَ حَسْبُهم ما وَجدوا عليه أباءَهم حالَ كونِهم لا يعلَمون شيئًا ؟

عليكم : اسمٌ فعلِ أمرٍ، نُقِلَ من الجار و المجرور إلى معنَى الفعلِ، فهو اسم فعلٍ منقولٌ، و به انتَصَب انفسَكم، و المعنى : احفَظوا أنفُسَكم

لا يضركم من ضل إذا اهتديتم : الموصول فاعل لايضر، و ضل صلة الموصول ·

و إذا اسم ظرف مجرد من معنى الشرط، متعلق بـ : لا يضر، و اهتديتم في محل جر بالإضافة، أي : لا يضركم من ضل حين اهتدائكم

أو هو اسم ظرف يتضمن معنى الشرط، و جواب الشرط محذوف دل عليه السابق، وهو متعلق بجوابه، أي : إذا اهتديتم فلا يضركم

الترجمة

আর যখন বলা হয় তাদেরকে, এসো তোমরা ঐ বিধানের দিকে যা নাযিল করেছেন আল্লাহ এবং (এসো) রাসূলের দিকে তখন তারা বলে, আমাদের জন্য যথেষ্ট ঐ বিধানই যার উপর পেয়েছি আমরা আমাদের পূর্বপুরুষকে।

যদি তাদের পূর্বপুরুষ কোন কিছু না জানে এবং হিদায়াতপ্রাপ্ত না হয় সে অবস্থায়ও কি (তারা যথেষ্ট হবে)?

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা রক্ষা করো নিজেদেরকে (পাপাচারে লিপ্ততা দ্বারা ধ্বংস হওয়া থেকে।) যারা পথভ্রষ্ট হয়েছে তারা (কোন) ক্ষতি করতে পারবে না তোমাদের, যখন তোমরা হিদায়াতের পথে থাকবে। আল্লাহরই দিকে হবে প্রত্যাবর্তন তোমাদের সকলের। তখন তিনি অবহিত করবেন তোমাদেরকে তোমাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تعالوا إلى ما أنزل الله و إلى الرسول (এসো তোমরা ঐ বিধানের দিকে যা নাযিল করেছেন আল্লাহ, এবং [এসো] রাসূলের দিকে) এর বিকল্প তরজমা – এসো তোমরা আল্লাহর নাযিলকৃত বিধানের দিকে এবং রাসূলের দিকে।

(খ) آبائنا (আমাদের পূর্বপুরুষকে) এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, 'আমাদের বড়দেরকে'; অর্থাৎ তিনি শব্দটিকে বংশগত ও আদর্শগত পূর্ববর্তীদের জন্য ব্যাপক বলে সাব্যস্ত করেছেন।
শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, 'আমাদের বাপদাদাদেরকে', অর্থাৎ তিনি শব্দটিকে রক্তগত বংশপরম্পরা অর্থে গ্রহণ করেছেন। বংশপ্রেম ছিলো আরবদের স্বভাবজাত, সেহিসাবে এটিই অধিকতর সংগত। তবে এ বিষয়ের পারিভাষিক শব্দ হলো পূর্বপুরুষ, তাই কিতাবের তরজমায় সেটি গ্রহণ করা হয়েছে। আর বাংলায় এখানে বহুবচনের আলামত যোগ করার প্রয়োজন নেই।

(গ) عليكم أنفسكم – (তোমরা রক্ষা করো নিজেদেরকে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, তোমাদের দায়িত্ব তোমাদেরই উপর, – অর্থাৎ عليكم কে সাধারণ جار ও مجرور ধরা হয়েছে। আর أنفسكم এর মানছূব হওয়ার বিষয়টি বিবেচনা করা হয়নি। এ তরজমা আয়াতের ব্যাকরণ ও মর্ম কোনটির সাথেই সংগতিপূর্ণ নয়।

(ঘ) إلى الله مرجعكم جميعا (আল্লাহরই দিকে হবে প্রত্যাবর্তন তোমাদের সকলের) তোমাদের সবাইকে আল্লাহর কাছে ফিরে যেতে হবে– এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে মূলানুগ নয়। তাছাড়া إلى الله এর অগ্রবর্তিতার কারণে সৃষ্ট হাছর ও

সীমাবদ্ধায়নের বিষয়টি এখানে বিবেচিত হয়নি। 'আল্লাহরই কাছে' বলা হলে সে ত্রুটি দূর হতো।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ حسبٍ ·
٢ – أعرب قوله : حسبنا ما وجدنا عليه آباءنا ·
٣ – ما هو العامل في : انفسَكم ؟
٤ – أعرب قوله : جميعا ·
٥ – থানবী (রহ) ابا ءنا এর কী তরজমা করেছেন এবং তার ভিত্তি কী ?
٦ – 'তোমাদের দায়িত্ব তোমাদেরই উপর' এ তরজমার ত্রুটি আলোচনা করো।

(٣) يومَ يجمَع الله الرسُلَ فيقول ماذا أجبتم، قالوا لا عِلمَ لنا، إنك انت عَلام الغُيوبِ * إذ قال الله يٰعيسى ابنَ مريَمَ اذكُر نعمَتي عليك وَ على وَالدتك م إذ اَيَّدتُك بروح القُدُس، تكلِّم النَاسَ في المهدِ و كَهْلا، وَ إذ علَّمتُك الكتٰب و الحِكمَةَ و التورٰة و الانجيلَ، وَ اذ تخلُق مِنَ الطينِ كهيئَةِ الطير بإذْني فَتنفُخ فيها فَتكون طيرًا باذني و تُبرئ الاكمَهَ و الابرَصَ باذني، وَ إذ تُخرج الموتى باذني، وَ إذ كفَفْتُ بنى اسرا ءيلَ عنك اذ جِئتَهم بالبينٰت فقال الذين كفَروا منهم إنْ هذا إلا سِحر مُبين * وَ إذ اوحَيْتُ الى الحواريّن اَنْ آمِنوا بي و برسولي، قالوا اٰمنا وَ اشْهَدْ بِاَننا مسلمون *

بيان اللغة

الروح : ما تحْصُل به الحَياة، وَ لا يَعلم حقيقَته إلا الله، و هو المذكور في قوله تعالى : و يسئلونك عن الروح قل الروح من أمر ربي، و قال : ونفخت فيه من روحي ·

و سُمي أشرافُ الملائِكَة أرواحًا . و سُمي عيسى عليه السلام رُوحًا، لِمُعجِزَته في إحياء الأموَاتِ .

و سُمي به و بروح القدس جبريلُ عليه السلام . و القدْس و القدُس الطُّهْر،

و سمي روحَ القدس، لأنه يَنزِل من الله بالقُدس، أي : بما يُطَهَّرُ به نفوسُنا من القرآن .

مَهدا : سرير الصبي المولود (ج) مُهود، و المراد به هنا الأيام التي يقضي الصبيُّ في المهد .

كَهْلا : الكهل : مَن جاوز الثلاثين إلى نَحو الخمسين، و الجمع كُهول .

الهيئة : الحال التي يكون عليها الشيءُ، و تكون الهيئةُ محسوسةً و مَعقولةً

অবস্থা, রূপ, কাঠামো (এটি স্থূল হতে পারে, আবার অ-স্থূলও হতে পারে।)

نَفَخ بِفَمه (ن، نَفْخًا) : أخرج منه الريحَ — ফুঁকলো

نَفَخ في الصور — শিঙ্গায় ফুঁক দিলো

أَبْرَأَ الله المريضَ : شفاه

بَرِئَ المريضُ (س، بَرْءًا، بُرْءًا) شفي (و يجيء من كرم أيضا)

أَكْمَهُ : مَن يُولَد أعمى

برص (س، بَرَصًا) ظهر في جسمه البَرَصُ،

هو أبرص و هي برصاء، و هم و هن بُرْصٌ .

البَرَص : بَياضٌ يظهر في الجسد لمرض .

أبرصه الله : أصابه بالبرَص

بيان الإعراب

ماذا أجبتم : ماذا اسم استفهام بمعنى أيَّ شيءٍ، في محل نصب نائب عن مفعول مطلق، أي : أيَّ إجابَةٍ اجبتُم .

إنك أنت علام الغيوب : أنت مبتدأ، و الجملة خبر إن .

إذ قال الله : بدل من يومَ يجمع الله (أي : ما أهوَلَ يومَ الجمعِ و وقتَ قول الله) .

عليـك : يتعـلـق بنعـمتي إن كان اسمَ مصدرٍ، و بحال محذوفة إن كان المراد ما يُنعَم به (أي : اذكر نعمتي نازلـةً عليك) .

إذ أيدتك : ظرف متعلق باسم المصدر أو بالحال المحذوفة .

تكلمِ الناس : حال مِن كافِ أيدتك، أو هي مستأنفة .

و في المهد : متعلق بحال محذوفة من فاعلِ تُكلم، أي : كائنا في المهد، أي : صغيرًا .

و اذ علمتك : معطوف على إذ أيدتك

كهيئة : الكاف بمعنى مثلٍ في محل نصب مفعول به لـ : تَخـلُق، أو هو نعت لمفعول به محذوف، أي : تخلق هيئةً مِثلَ هيئةِ الطير .

بإذني : يتعلق بـ : تخلق،

تنفخ : عطف على تخلق بالفاء، و تكون عطف على تنفخ بالفاء.

و تبرئ : عطف على تخلق بالواو،

و إذ تخرج : عطف على إذ تخلق .

إذ جئتَهم : الظرف في محل نصب متعلق بـ : كففت .

الترجـمة

(কত না ভয়ংকর হবে ঐ দিনটি) যেদিন একত্র করবেন আল্লাহ সকল রাসূলকে (তাদের উম্মতসহ), অনন্তর তিনি বলবেন, কী জওয়াব দেয়া হয়েছিলো তোমাদেকে (তোমাদের উম্মতের পক্ষ হতে)? তারা বলবেন, (এ বিষয়ে) আমাদের কোন জানা নেই। (আপনিই তা জানেন, কারণ) আপনিই তো সকল গোপন বিষয়ের সর্বজ্ঞানী।

(কত না ভয়ংকর হবে সেদিনেরই ঐ সময়টি) যখন আল্লাহ্ বলবেন, হে ঈসা ইবনে মারয়াম, স্মরণ করো আমার অনুগ্রহকে তোমার প্রতি এবং তোমার জননীর প্রতি, যখন আমি সাহায্য করেছি তোমাকে পবিত্র আত্মা দ্বারা, (আর) কথা বলতে তুমি মানুষের সাথে দোলনায় এবং প্রবীণ অবস্থায়। এবং যখন আমি শিক্ষা দান করেছি তোমাকে কিতাব ও প্রজ্ঞা এবং তাওরাত ও ইনজীল।

আর যখন তুমি কাদা দ্বারা পাখীর আকৃতির মত (আকৃতি) গঠন করতে আমার অনুমতিক্রমে এবং ফুঁক দিতে তাতে, ফলে তা পাখী

হয়ে যেতো আমার আদেশে, আর আরোগ্য দান করতে তুমি জন্মান্ধ ও কুষ্ঠরোগীকে আমার আদেশে। আর যখন বের করে আনতে তুমি মৃতদেরকে (কবর থেকে জীবিত অবস্থায়) আমার আদেশে, আর যখন বিরত রেখেছিলাম আমি তোমার থেকে বনী ইসরাঈলকে; যখন এনেছিলে তুমি তাদের কাছে (তোমার নবুয়তের) সুস্পষ্ট প্রমাণাদি; আর তাদের মধ্য হতে যারা (সেগুলো) অস্বীকার করেছিলো তারা বলেছিলো, এ তো সুস্পষ্ট জাদু ছাড়া কিছু নয়।

এবং (ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন প্রত্যাদেশ দান করলাম আমি হাওয়ারীদেরকে (তোমার মাধ্যমে) যে, ঈমান আনো তোমরা আমার প্রতি এবং আমার রাসূলের প্রতি (তখন) তারা বলেছিলো, আমরা ঈমান আনলাম এবং আপনি সাক্ষী থাকুন যে, আমরা পূর্ণ অনুগত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) يوم يجمع الله الرسل (কতা না ভয়ংকর হবে ঐ দিনটি) যেদিন একত্র করবেন আল্লাহ- থানবী (রহ) এ বন্ধনী যোগ করে বলেছেন, অবস্থা হিসাবে এখান يوم এর উহ্য عامل হবে ما أهول জাতীয় কোন ফেয়েল। অন্যরা প্রথাগত- ভাবে أذكر ফেয়েলটি উহ্য ধরেছেন।

(খ) الرسل শায়খুলহিন্দ ও থানবী (রহ) ال এর কারণে 'সকল' শব্দটি যোগ করেছেন। অনেক বাংলা তরজমায় এটা করা হয়নি।

(গ) ماذا أجبتم (কী জওয়াব দেয়া হয়েছিলো তোমাদেরকে) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন- تمکو کیا جواب ملا تها বাংলা তরজমাগুলোতে আছে- তোমরা কী জওয়াব পেয়েছিলে?

(ঘ) لا علم لنا (এ বিষয়ে) আমাদের কোন জানা নেই - এটি মূলানুগ তরজমা। কেউ কেউ লিখেছেন, 'আমরা অবগত নই' এটা মূলানুগ নয়। তাছাড়া نفي الجنس এর জোরালোতাও এখানে আসেনি।

(এ বিষয়ে) এ অংশটিকে একটি বাংলা তরজমায় বন্ধনী ছাড়া আনা হয়েছে, অথচ আয়াতে তা নেই।

(ঙ) إذ قال الله (কতনা ভয়ংকর হবে সে দিনেরই ঐ সময়টি) যখন

বলবেন আল্লাহ্- থানবী (রহ) এ বন্ধনী যোগ করে বলেছেন, এটা এ দিকে ইঙ্গিত করছে যে, اذ হচ্ছে يوم থেকে বদল, বদলুল বা'য।

(চ) 'জননী' হচ্ছে والدة এর প্রতিশব্দ, এখানে এটাই হওয়া উচিত, কারণ والدة দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, তাঁর শুধু জননী ছিলো, والد (জনক) ছিলো না। মা বা মাতা দ্বারা এই বক্তব্য প্রকাশ পায় না, এজন্য থানবী (রহ) والده ব্যবহার করেছেন।

(ছ) تكلم الناس (আর) কথা বলতে তুমি মানুষের সাথে- এই বন্ধনী থানবী (রহ) এর। তিনি বলেন, বন্ধনীর উদ্দেশ্য এদিকে ইঙ্গিত করা যে, এটি স্বতন্ত্র বাক্য أيدتك এর كاف থেকে হাল নয়। কারণ পবিত্র আত্মা দ্বারা সাহায্য করা ঐ অবস্থার সাথে বিশিষ্ট ছিলো না।

(জ) দোলনায় – এটি مهد এর প্রতিশব্দ। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন 'কোলে', আর থানবী (রহ) বন্ধনীসহ লিখেছেন (মায়ের) কোলে। এর ইঙ্গিতার্থ হলো অতিশৈশবে। তিনটি তরজমাই গ্রহণযোগ্য।

(ঝ) كهلا (প্রবীণ অবস্থায়) এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন بڑی عمر میں – কেউ কেউ বাংলা তরজমা করেছেন প্রবীণ/পরিণত বয়সে। এটি মূলত ظرف এর তরজমা। কিতাবের তরজমায় মূল তারকীব অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঞ) পাখীর আকৃতির মত (আকৃতি) – বন্ধনী দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, كهيئة الطير হচ্ছে উহ্য مفعول به এর ছিফাত।

(ট) تخرج الموتى (বের করতে তুমি মৃতদেরকে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, মৃতদেরকে জীবিত করতে। কিতাবের তরজমা হচ্ছে মূলানুগ। تحيي এর পরিবর্তে تخرج এর ব্যবহার অবশ্যই অর্থপূর্ণ। কারণ তিনি কবরস্থ মৃতদেরকে জীবিত অবস্থায় বের করে আনতেন। সেই হিসাবে এভাবে বন্ধনীযুক্ত তরজমা করা যায়- মৃতদেরকে (কবর থেকে জীবিত অবস্থায়) বের করতে।

(ঠ) فقال الذين كفروا منهم (আর তাদের মধ্য হতে যারা [সেগুলো] অস্বীকার করেছিলো তারা বলেছিলো) কেউ কেউ লিখেছেন- যারা কাফির ছিলো বা কুফুরি করেছিলো – এ

তরজমা দ্বারা বিয়টি স্পষ্ট হয় না।
এ তো সুস্পষ্ট জাদু ছাড়া কিছুই নয়- বিকল্প তরজমা- এ তো নিছক সুস্পষ্ট জাদু।

(ঙ) أوحيت إلى الحوارين - প্রত্যাদেশ দান করলাম আমি হাওয়ারীদের প্রতি (তোমার মাধ্যমে- وحي এর মূল অর্থটি অক্ষুণ্ন রেখে তরজমা করার চেষ্টা করা হয়েছে। একটি বাংলা তরজমায় আছে- আমরা হাওয়ারীদের মনে জাগ্রত করলাম যে, ... 'জাগ্রত করলাম' এর পরিবর্তে 'প্রক্ষেপণ করলাম' অধিকতর সুন্দর হতো।
অন্য তরজমায় আছে- আমরা হাওয়ারীদেরকে নির্দেশ দিলাম যে, ...
শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা- دل میں ڈال دیا (অন্তরে প্রক্ষেপণ করলাম)
থানবী (রহ)-এর তরজমা- হাওয়ারীদেরকে (ইনজিলে তোমার যাবনীতে) আদেশ দিলাম ......

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ الهيئةِ .

٢ - أعرب قوله : ماذا أجبتم .

٣ - بم يتعلق قوله : عليك ؟

٤ - عرف كلمة إن و كلمة إلا في الآية .

٥ - ما أجبتم এর তিনটি তরজমা উল্লেখ করো এবং মূলানুগ তরজমা কোনটি বলো।

٦ - على والدتك এখানে والدة শব্দে কী ইঙ্গিত রয়েছে এবং বাংলায় কোন প্রতিশব্দ দ্বারা সেই ইঙ্গিতটি প্রকাশ পায়?

(٤) وَ اِذْ قَالَ اللهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَانْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَ أُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُونِ اللهِ، قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُونُ لِي اَنْ اَقُولَ مَا لَيْسَ لِي، بِحَقٍّ، اِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ، تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَ لَا اَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ، اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ * مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَا اَمَرْتَنِي بِهِ اَنِ اعْبُدُوا اللهَ رَبِّي وَ رَبَّكُمْ، وَ كُنْتُ

عليهم شَهيدا ما دمتُ فيهم، فَلَما توفَّيتَني كنتَ انت الرقيبَ عليهم وَ انت على كلِّ شيءٍ شهيد *إن تُعذبهم فَإنهم عِبادك، وَ إن تغفِر لهم فَإنك انتَ العزيز الحكيم * قال الله هذا يومُ ينفَع الصّٰدقِين صِدقُهم، لهم جنّٰت تجري مِن تحتها الاَنْهٰر خٰلدين فيها اَبَدًا، رضي الله عنهم و رَضوا عنه، ذلك الفوز العظيم *لِلّٰه مُلْك السمٰوٰت وَ الارض وَ ما فيهن، و هو على كل شيءٍ قدير *

بيان اللغة

تَوفاه الله : قَبَضَ روحَه (أي أخذه أخذاً وافيا، و هذا كنايةٌ عن قبضِ الروح)

رقيب : حافظ، حارس، و الرقيب من أسماء الله الحسنى، لأنه الحافظ الذي لا يغيب عنه شيء

رَقَبه (ن، رَقْبًا و رَقابَة) انتَظَره . جاء في القرآن : إني خشيت أن تقول فَرَّقت بينَ بني إسرائيل و لم ترقُبْ قولي

وَرَقَّبَه : لاحَظه و حَرَسَه و حَفِظه

راقَبه (مُراقَبة و رِقابا) : حرَسَه، وضَعه تحتَ الحِراسَة و الرَّقابَة

راقبه : لاحظه، و راقب الله في عمله : خشيه .

بيان الإعراب

و أمي : الواو للعطف، و يجوز أن تكون للمعية .

إلٰهَينِ : مفعول به ثان لـ : اتخذوني، و من دون الله متعلق بنعت محذوف لـ : إلٰهين (أي : معبودَين من دون الله) .

ما يكون لي أن أقول : ما نافية لا عمل لها، و يكون فعل تام بمعنى ينبغي أو يجوز، كما في قوله تعالى : ما كان لنا أن نشرك بالله .

و لي يتعلق بـ : يكون، لأنه تام، و المصدر المؤول (أن أقول) في مَحل رفعٍ فاعلُ يكون .

و يحتَمل أن يكونَ مضارعا ناقِصا ، و المصدر المؤول اسم الناقص،
و لي متعلق بخبر الناقص ·

ما ليس لي بحق : ما موصولة، بمعنى الذي، أي : أن أقول القول الذي ....،
أو هي نكِرة موصوفة، أي : أن أقول قولا ... و الجملة بعدها صفتها
و هي على الحالين مفعول به لـ : أقول ·
و اسم ليس هو الضمير المستتر العائد على : ما
و الباء حرف جر زائد، و حقٍّ خبر ليس ·
و لي يتعلق بمحذوف، قُدِّم الموصوفُ فصار حالا ، و أصل العبارة :
ما ليس حقا ثابتًا لي
و يجوز أن يكون لي متعلقا مقدَّما بـ : حقٍّ ·

أَنِ اعبُدوا الله : أن مصدرية، و المصدر المؤول بدل من : ما أمرتني به، و لا
يجوز أن تكون أن هنا مفسرة، لأنها لاتفسر القول، بل ما هو
بمعنى القول ·

ما دمتُ فيهم : ما هنا مصدرية ظرفية، و دمت فعل ناقص مع اسمه، و
فيهم يتعلق بخبر الناقص، أو هو فعل تام بمعنى أقمت، و فيهم
متعلق به، و المصدر المؤول ظرف لـ : شهيدا ، أي : كنت شهيدا
عليهم مُدَّةَ إقامتي فيهم ·

فإنهم عبادك : الفاء سببية، و جواب الشرط محذوف، أي : فلا مَهْرَب لهم،
و يجوز أن تكون الفاء رابطة لجواب الشرط، و هو حينئذ محمول
على المعنى، أي : إن تعذبهم تَعْدِلْ و إن تغفِر لهم تَتفَضَّلْ ·

هذا يومٌ ... : مبتدأ و خبر، وجملة ينفَع في محل جر بالإضافة، و
ظرف الزمان معرب إذا أضيف إلى فعل معرَبٍ أو إلى جملة اسمية، و
يُبنى على الفتح إذا أضيف إلى فعل مبني ·

الترجمة

এবং (ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন বলবেন আল্লাহ, হে ঈসা ইবনে মারয়াম, তুমি কি বলেছিলে লোকদেরকে (যে,) তোমরা আমাকে এবং আমার আম্মাকেও (দুই) ইলাহ সাব্যস্ত করো

আল্লাহকে ছাড়া? তিনি বলবেন, (পবিত্রতা বর্ণনা করি) আপনার পবিত্রতা, আমার জন্য তো সঙ্গত হবে না এমন কথা বলা, যা বলার অধিকারই আমার নেই। যদি আমি তা বলে থাকি তাহলে অবশ্যই আপনি তা জানবেন, (কারণ) আপনি জানেন, যা আমার অন্তরে আছে, কিন্তু আমি জানি না, যা আপনার অন্তরে আছে। নিশ্চয় আপনিই সকল গোপন বিষয়ের পূর্ণ জ্ঞানী।

আমি তো বলিনি তাদেরকে তবে যা আপনি আমাকে বলার আদেশ করেছেন যে, ইবাদত করো তোমরা আল্লাহর, আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালকের। আর ছিলাম আমি তাদের বিষয়ে অবগত যতদিন তাদের মাঝে ছিলাম। অনন্তর যখন উত্তোলন করলেন আপনি আমাকে তখন আপনিই ছিলেন তাদের উপর তদারককারী; আর আপনি তো সর্ববিষয়ে পূর্ণ অবগত।

আপনি যদি আযাব দেন তাদেরকে তাহলে তারা তো আপনারই বান্দা; আর যদি ক্ষমা করেন তাদেরকে তাহলে নিশ্চয় আপনিই মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞার অধিকারী।

(তখন) আল্লাহ বলবেন, এ হলো সত্যবাদীদেরকে তাদের সত্যবাদিতা উপকার দান করার দিন। তাদের জন্য হবে এমন বাগবাগিচা যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় 'নহরনালা', তাতে তারা থাকবে অনন্তকাল। সন্তুষ্ট হয়েছেন আল্লাহ তাদের প্রতি, আর সন্তুষ্ট হয়েছে তারা আল্লাহর প্রতি। এটাই মহান সফলতা।

আল্লাহরই জন্য রাজত্ব আসমানের এবং যমীনের এবং ঐ সবের যা তাতে রয়েছে। আর তিনি সবকিছুরই উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) আল্লাহ ছাড়া আমাকে এবং আমার আম্মাকেও – এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি বলেন 'ছাড়া' এবং 'ও' সমন্বয়ে এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, دون এর উদ্দেশ্য এখানে مع কেননা তারা আল্লাহর ইলাহিয়্যাত অস্বীকার করতো না, বরং আল্লাহর সঙ্গে ঐ দুজনের ইলাহিয়্যাত দাবী করতো।

তিনি তাঁর বক্তব্যের অনুকূলে তাফসীরে রূহুল মাআনীর বরাত দিয়েছেন।

إلهين (দুই) ইলাহ– বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, বাংলায় এখানে দ্বিবচনের আলামত ব্যবহার করার প্রয়োজন নেই।

(খ) سبحانك (পবিত্রতা বর্ণনা করি আপনার পবিত্রতা) – এর বিকল্প তরজমা – [ক] আপনি চিরপবিত্র [খ] সুবহানাল্লাহ!

(গ) ما يكون لي (আমার জন্য তো সঙ্গত হবে না) -এর তরজমা 'শোভা পাবে না' কিংবা 'শোভন নয়' করা যায় এবং কেউ কেউ তা করেছেন, কিন্তু এটি হচ্ছে লঘু শব্দ, তাই কিতাবের তরজমায় 'সঙ্গত হবে না' ব্যবহার করা হয়েছে।

ما يكون لي ... এর শৈলীতে জোরালো ভাব রয়েছে, সুতরাং কিছুতেই সঙ্গত হবে না, কিংবা 'সঙ্গত হতে পারে না' – এরকম তরজমাও করা যায়।

ما ليس لي بحق 'অধিকারই' আমার নেই – 'ই' যোগ করার কারণ এই যে, بحق এর অতিরিক্ত ب অব্যয়টি তাকীদ প্রকাশ করছে।

(ঘ) 'যা আপনার অন্তরে আছে' – এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা। আয়াতে في نفسي এর সঙ্গে শব্দগত সদৃশতা রক্ষা করার জন্য في نفسك বলা হয়েছে, তাই তরজমাতেও উক্ত সদৃশতা রক্ষা করা হয়েছে, নচেত মন, অন্তর, হৃদয়, ও نفس আল্লাহর শানে ব্যবহৃত শব্দ নয়।

থানবী (রহ) অর্থগত দিক বিবেচনা করে তরজমা করেছেন, আপনি জানেন যা আমার অন্তরে আছে, কিন্তু আমি জানি না যা আপনার জ্ঞানে রয়েছে।

(ঙ) توفيتني (উত্তোলন করলেন আমাকে) কেউ কেউ এর তরজমা করেছেন, আপনি আমাকে লোকান্তরিত করলেন। লোকান্তর সাধারণত মৃত্যু অর্থে ব্যবহৃত হয়, সুতরাং এখানে শব্দটির ব্যবহার সঠিক নয়।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন– 'উঠিয়ে নিলেন' এটি ঠিক আছে, তবে উত্তোলন করা শব্দটি অধিকতর সঙ্গত।

(চ) هذا يوم ينفع الصدقين صدقهم (এ হলো সত্যবাদীদেরকে তাদের সত্যবাদিতা উপকার দান করার দিন) একটি তরজমায় আছে– এই সেই দিন যেদিন সত্যবাদীগণ তাদের সত্যতার জন্য উপকৃত হবে। এটি মূল থেকে বিচ্যুত তরজমা। তাছাড়া এখানে দিন শব্দটি দুবার এসেছে, আর সত্যতা ও সত্যবাদিতা এক নয়।

অন্য তরজমায় আছে– আজ/আজকের দিনে সত্যবাদীদের সত্যবাদিতা তাদের উপকারে আসবে– এ তরজমাও মূলানুগ নয়।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ رقيبٍ .
٢ – أعرب قوله : ما يكون لي أن أقول ناقصا و تاما .
٣ – بم يتعلق ظرف الزمانِ " لما " في قوله : فلما توفيتني كنت أنت الرقيب عليهم ؟
٤ – أعرب قوله : و إن تغفر لهم فإنك أنت العزيز الحكيم .
٥ – اتخذوني و أمي الهين من دون الله এর তরজমা থানবী (রহ) কী করেছেন, এবং কেন করেছেন, ব্যাখ্যা করো।
٦ – تعلم ما في نفسي و لا اعلم ما في نفسك এ আয়াতের তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ لو تَرىٰ إذ وُقِفوا على النار فَقالوا يٰليتَنا نُرَدُّ و لا نكذِّبَ
بِاٰيٰتِ رَبنا و نكونَ من المؤمنين * بَل بَدا لهم ما كانوا يُخفون
من قَبْلُ، و لو رُدُّو لَعادو لما نُهوا عنه وَإنهم لكٰذبون * و قالوا
إنْ هي الا حَياتُنا الدنيا وَ ما نحن بِمَبعوثين * وَ لو تَرىٰ إذ
وُقِفوا على رَبهم، قال اَلَيس هٰذا بِالحق، قالوا بَلىٰ و رَبِّنا ، قال
فَذوقوا العذابَ بما كنتم تكفرون *

بيان اللغة

وقفوا : وَقَفَ (ض، وُقوفا) : قام من جلوس	বসা থেকে দাঁড়ালো
– سَكن بعدَ المشيءِ	চলার পর থামলো
وقَفَ على شيءٍ :إطلع عليه	কোন বিষয় অবগত হলো
وقف بعرفَةَ	আরাফায় উকূফ করলো
وَقَفَه (ض، وَقْفًا) أقامَه، أسْكَنه	দাঁড় করালো, থামালো
وقفه على الأمرِ : أَطْلَعه عليه	তাকে তা অবগত করলো

بيان الإعراب

و لو ترى : الواو استئنافية، و لو شرطية، و المضارع في معنى الماضي، و جواب لو محذوف، أي لو رأيت ذلك لرأيت أمرا شنيعا . و مفعول ترى محذوف، أي لو ترى أحوالهم، و إذ ظرف متعلق بـ : ترى .

فقالوا : الفاء حرف عطف، و أصل العبارة : لو تَرىٰ أحوالَهم حينَ وقفِهم على النار و قولِهم ....

يا ليتَنا : يا حرف نداء، و المنادى محذوف، أي : يا هؤلاء، أو هو حرف تنبيه .

و لا نكذبَ : الواو للمعية، و نكذب منصوب بِأَنِ المضمَرة بعدَ واوِ المعية، و نكونَ عطف على نكذب، و المعنى : أتمنّى رَدَّنا و عدمَ تكذيبنا و كونَنا من المؤمنين .

لِما نُهوا : اللام بمعنى إلى، و الواو في : و إنهم استئنافية

وقالوا : الواو عاطفة عطفت بها الجملة التالية على عادوا، و يجوز أن تكون استئنافية، و الضمير "هي" كناية عن الحياة، و ذُكِر بلا مرجع لِكون المرجِع مفهوما واضحا .

و ربنا : الواو واو القسم، متعلق بمحذوف و هو نقسم .

الترجمة

আর যদি দেখতেন আপনি (তাদের অবস্থা) (ঐ সময়) যখন দাঁড় করানো হবে তাদেরকে জাহান্নামের কিনারে, অনন্তর বলবে তারা, হায় (কত ভালো হয়) যদি ফেরত পাঠানো হয় আমাদেরকে, আর আমরা মিথ্যা সাব্যস্ত না করি আমাদের প্রতিপালকের আয়াতসমূহকে (আসমানী কিতাবকে) এবং হয়ে যাই আমরা মুমিনদের অন্তর্ভুক্ত! (এটা তাদের আন্তরিক আকাঙ্ক্ষা নয়) বরং (আজ কেয়ামতের দিন) প্রকাশ পেয়ে গেছে তাদের সামনে ঐ আযাব[১] যা তারা গোপন করতো ইতিপূর্বে। আর যদি ফেরত পাঠানো হতো তাদেরকে তাহলে অবশ্যই তারা সে কাজই পুনরায় করতো যা থেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছে। বস্তুত তারা তো অবশ্যই মিথ্যাবাদী। আর তারা বলতো, জীবন তো শুধু আমাদের

১. সেই কাজের দিকেই প্রত্যাবর্তন করতো

(এই) পার্থিব জীবন। আমাদের 'আর' পুনর্জীবিত করা হচ্ছে না। আর যদি দেখতেন আপনি (তাদের অবস্থা) (ঐ সময়) যখন দাঁড় করানো হবে তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের সামনে, (আর) তিনি বলবেন, এটা কি আসলেই সত্য নয়? তারা বলবে, আমাদের প্রতিপালকের কসম, অবশ্যই (সত্য)। তিনি বলবেন, তাহলে চেখে দেখো তোমরা আযাব তোমাদের কুফুরি করতে থাকার কারণে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) على অব্যয়টি 'প্রান্ত' অর্থে আসে, তাই على النار এর তরজমা করা হয়েছে, জাহান্নামের কিনারে। আবার عنده অর্থেও আসে, তাই পরবর্তীতে على ربهم এর তরজমা করা হয়েছে, তাদের প্রতিপালকের সামনে।

(খ) হায়, যদি – প্রথম শব্দটি يا এর তরজমা, আর দ্বিতীয় শব্দটি ليت এর তরজমা। একটি তরজমায় আছে– যদি আমাদের প্রত্যাবর্তন ঘটতো। এ তরজমা মূলানুগ নয়।

(গ) بآيٰت ربنا – বাংলা মুতারজিমগণ ايت এর তরজমা করেছেন, নিদর্শনাবলী।
শায়খায়ন তরজমা করেছেন, আয়াতসমূহ, কিতাবের তরজমায় সেটাই গ্রহণ করা হয়েছে; কারণ তাতে বিধান ও নিদর্শন সবই এসে যায়।

(ঘ) كانوا يخفون গোপন করতো – অর্থাৎ মুখে অস্বীকার করতো, يخفون দ্বারা এই ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, মনে মনে তারা আযাবের কথা বিশ্বাস করতো, কিন্তু হঠকারিতার কারণে মুখে তা অস্বীকার করতো। যেমন অন্যত্র বলা হয়েছে– وجحَدوا بها و استيقَنَتها أنفسُهم
সুতরাং এখানে 'যা তারা অস্বীকার করতো' এ তরজমা করা সঠিক নয়।

(ঙ) و إنهم لكٰذبون (বস্তুত তারা তো অবশ্যই মিথ্যাবাদী) 'বস্তুত' – এটি واو الاستئناف এর প্রতিশব্দ। আর إن ও ل এর তাকীদ প্রকাশ করা হয়েছে 'তো' এবং 'অবশ্যই' দ্বারা।

(চ) و قالوا আর তারা বলতো, – এখানে 'আর' দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, এটিও عطف এর মাধ্যমে لو এর জওয়াবের অন্তর্ভুক্ত।

(ছ) بمبعوثين অতিরিক্ত অব্যয়টি দ্বারা যে তাকীদ প্রকাশ পায় তা বাংলায় প্রকাশ করা হয়েছে 'আর' শব্দটি দ্বারা এবং بالحق এর ক্ষেত্রে 'আসলেই' শব্দটি দ্বারা।

أسئلة :

١ - اشرح (وقف - يقف) على اختلاف المصدر.

٢ - اذكر جواب لو في قوله : و لو ترى إذ وقفوا ....

٣ - ما هو الناصب لـ : نكذب.

٤ - بم يتعلق قوله : من المؤمنين ؟

٥ - 'যদি আমাদের প্রত্যাবর্তন ঘটতো' – এটি মূলানুগ তরজমা নয় কেন?

٦ - এটা কি আসলেই সত্য নয় – এখান আসলেই শব্দটিকে কেন আনা হয়েছে?

(٦) قَد خَسِر الذين كَذَّبوا بِلِقاء اللّٰه، حتى إذا جاءَتْهم الساعَةُ
بَغتَةً قالوا يٰحَسرَتَنا على ما فَرَّطنا فيها، وَ هم يحمِلون
أوزارَهم على ظهورهم، ألا سَاءَ ما يَزرون * وَ ما الحيٰوة
الدنيا إلَّا لَعِبٌ و لَهْوٌ، و لَدار الأخِرَةِ خيرٌ للذين يَتقون، أفَلا
تَعقِلون * قَد نَعْلَم إنه لَيَحزُنك الذي يقولون فَإنَّهم لا
يُكَذِّبونك و لٰكن الظّٰلمين بِأيٰت الله يجحَدون * وَ لقَد كُذِبت
رُسلٌ مِن قَبْلِك فَصَبروا على ما كُذبوا و أوذوا حتى اتٰهم
نَصرُنا، و لا مُبدل لِكَلِمٰت الله، و لَقد جاءَك مِن نَبَائ
المرسلين *

بيان اللغة

بغته (ف، بَغْتَةً) : أتاه بغتةً، أي : فَجْأَةً

يا حسرَتنا : (يا نَدامَتَنا و يا أسفَنا)

حَسِر على شَيْءٍ (س، حَسَرًا و حَسْرَةً) : تَلَهَّفَ و حزن على

فَـواتِ شـيءٍ কোন কিছু হাতছাড়া হওয়ার কারণে দুঃখিত হলো এবং অনুতাপ করলো।

الحَسْرَة : الغَمُّ و الحزن على ما فاتَه و الندم عليه ·

فَرَّطَ في الأمرِ : قَصَّر فيه و ضَيَّعه حتى فاتَ ত্রুটি করলো, হাতছাড়া করলো, শিথিলতা করলো।

أَفْرَطَ : جاوزَ الحدَّ من جانِبِ الزيادَةِ و الكَمَال বাড়াবাড়ি করলো, সীমালঙ্ঘন করলো।

فَرَط في الأمر (ن، فَرْطًا) = فرَّط

فَرَطَ عليه : آذاه তার সাথে কষ্টদায়ক আচরণ করলো

يَزِرون : (يحملون) وَزَرَ الشيءَ (ض، وَزْرًا، وِزْرا) حَمَلَه

وِزر (و الجمع أوزار) إثم، حِمل ثقيل পাপ, ভারী বোঝা

و أوزار الحرب : آلاتها و أسلحتها

حَزَنه (ن، حَزْنًا) : غَمَّه و صَيَّره حزينا

حَزِن له و عليه (س، حُزْنًا): اغتَمَّ و صار حزينا

بيـان الإعراب

حتى إذا جاءتهم الساعَة بغتةً : حتى للابتداء، و إذا اسم ظرف و شرط، مضاف إلى شرطه، متعلق بجوابه، و بغتة مصدر في مَوضِع الحال مِن فاعلِ جاءت، أي : باغِتةً، أو هو مصدر لفعل محذوف، أي تبغَتُهمُ الساعَة بغتةً، أو هو مصدر لـ : جاءتهم من غير لفظه ·

يا حسرَتَنا : نداءُ الحسرَةِ و الوَيْلِ على المجاز، و المقصود إظهار غايَة الحسرَةِ ·

على ما فَرَّطنا : أي على تَفْريطِنا، يتعلق بالحسرَة، و فيها يتعلق بـ : فَرَّطنا، و الضمير يعود على الساعَة، أي في أمرِ الساعَة ·

ساءَ : بمعنى بئسَ، فعل جامد لإنشاء الذمِّ، و الفاعل هو الضمير المبهَم، و ما نكِرة موصوفة في مَحَل نصب على التمييزِ، أو هو اسم موصول فاعلُ ساءَ، و جملة يزرون صفة أو صلة ·

و يجوز أن تكون ما مصدرية، أي ساءَ وِزرُهم ·

قد نَعلم : أي قد عَلِمنا ، فالمستقبَل هنا بمعنى الماضي، و كسرَةُ همزة إن لِدخول اللام على خَبرها ، و الضمير ضميرُ الشأنِ، و الجملة خبر إن ، و الموصول فاعلُ يحزنك .

فإنهم لا يكذبونك : الفاء تعليلية، تُعَلل المحذوفَ، أي : و يجب أن لا تحزنَ لِتكذيبهم، فَإنهم لا يكذبونك في باطِنهم، بل يعتقِدون صِدقك، وَ لكِنهم يجحَدون عن عنادٍ .

من نبإ المرسلين : مِن حرف جر زائد، و الفاعل نبأ المرسلين، أو هو للتبعيض، قائم مقام الفاعل، أي بعض نبإ المرسلين .

الترجمة

অবশ্যই (চরম) ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে তারা, যারা মিথ্যা বলেছে আল্লাহর সাক্ষাৎকে, এমন কি যখন এসেই যাবে তাদের কাছে কেয়ামত আচমকা, তখন বলবে তারা, হায় (আমাদের) আফসোস! কেয়ামতের বিষয়ে আমাদের অবহেলা করার উপর।

অবস্থা এই হবে যে, তারা বহন করবে তাদের (পাপের) বোঝা তাদের পিঠে। শোনো, কত না নিকৃষ্ট তা যা বহন করবে তারা!

আর পার্থিব জীবন তো ক্রীড়া ও কৌতুক ছাড়া কিছুই নয়। আর পরকালীন জীবন অবশ্যই উত্তম তাদের জন্য যারা তাকওয়া অবলম্বন করে। সুতরাং তোমরা কি অনুধাবন করো না!

অবশ্যই জেনেছি আমি যে, তারা যা বলে তা নিঃসন্দেহে আপনাকে ক্ষুণ্ন করে। (কিন্তু আপনি ক্ষুণ্ন হবেন না) কারণ তারা (অন্তর থেকে) আপনার প্রতি মিথ্যা আরোপ করে না, কিন্তু এই যালিমরা আল্লাহর নিদর্শনাবলীকেই অস্বীকার করে।

আর নিঃসন্দেহে মিথ্যা আরোপ করা হয়েছে অনেক রাসূলের প্রতি আপনার পূর্বে। তো ছবর করেছেন তারা তাদের প্রতি মিথ্যা আরোপের এবং তাদেরকে কষ্ট দানের উপর, তাদের কাছে আমার সাহায্য আসা পর্যন্ত। আর আল্লাহর 'প্রতিশ্রুতিসমূহের' কোন পরিবর্তনকারী নেই। আর আপনার কাছে তো অবশ্যই এসেছে রাসূলদের কিছু ঘটনা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) শায়খুলহিন্দ (রহ) قد خسر এর তরজমা করেছেন- বরবাদ

হয়েছে – এ তরজমার ভিত্তি হচ্ছে অনিবার্যতা। অর্থাৎ যারা ক্ষতিগ্রস্ত হবে তারা অনিবার্যরূপে বরবাদ হবে।

থানবী (রহ) শব্দানুগ তরজমা করেছেন এবং বাস্তব পরিণতির ভিত্তিতে বন্ধনীতে 'চরম' শব্দটি যোগ করেছেন।

(খ) جاءتهم الساعة (এসেই যাবে তাদের কাছে কেয়ামত) এখানে فعل ماض নিশ্চিতি প্রকাশ করছে, তাই 'এসেই যাবে' তরজমা করা হয়েছে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন– উপস্থিত হবে। এ তরজমা শব্দানুগ না হলেও গ্রহণযোগ্য, তবে নিখুঁত নয়।

(গ) 'অবস্থা এই হবে যে,' থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় এ অংশটি সংযোজন করে লিখেছেন যে, এতে এ বিষয়ে ইঙ্গিত রয়েছে যে, و هم يحملون বাক্যটি حالية তিনি আরো লিখেছেন, এটি قالوا এর যমীর থেকে হাল।

(ঘ) قد نعلم অবশ্যই জেনেছি– এখানে قد অব্যয়টি তাকীদ ও নিশ্চয়তা জ্ঞাপক, আর ফেয়েলটি মাযীর অর্থে ব্যবহৃত।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আমি খুব/বেশ জানি। অর্থাৎ তিনি مضارع কে মোযারে অর্থেই গ্রহণ করেছেন, আর قد অব্যয়টিকে رب এর সমার্থক আধিক্যবাচক ধরেছেন। তবে তিনি বলেছেন, এখানে আধিক্যের অর্থ পূর্ণতা। কারণ অল্পতা ও আধিক্য আল্লাহর শানে প্রযুক্ত নয়।

(ঙ) و لقد كُذبت رسلٌ من قبلك (আর নিঃসন্দেহে মিথ্যা আরোপ করা হয়েছে অনেক রাসূলের প্রতি আপনার পূর্বে)– এ তরজমায় من قبلك কে كذبت এর সাথে সম্পৃক্ত ধরা হয়েছে। এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা।

থানবী (রহ) এটিকে رسل এর ছিফাত ধরে তরজমা করেছেন, আপনার পূর্ববর্তী বহু রাসূলকে ঝুটলানো হয়েছে।

(চ) صبروا على ما كذبوا و اوذوا (তারা ছবর করেছেন তাদের প্রতি মিথ্যা আরোপের এবং তাদের কষ্ট দানের উপর) একটি বাংলা তরজমায় আছে– তাদেরকে মিথ্যাবাদী বলা এবং কষ্ট দেয়া সত্ত্বেও তারা ধৈর্য ধারণ করেছেন।

على ما كذبوا হচ্ছে ধৈর্যধারণের বিষয়। সুতরাং শায়খায়নের অনুসরণে কিতাবে যে তরজমা করা হয়েছে সেটাই সঙ্গত।

(ছ) لا مبدل لكلمت الله (আল্লাহর প্রতিশ্রুতিসমূহের কোন

পরিবর্তনকারী নেই)- এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন। আল্লাহর বাণী/আদেশ কেউ পরিবর্তন করতে পারে না।
প্রথমতঃ এটি মূল তারকীবের অনুগামী তরজমা নয়। দ্বিতীয়তঃ এখানে বলা উদ্দেশ্য যে, আল্লাহ যে সাহায্যের ওয়াদা করেছেন তা কেউ পরিবর্তন করতে পারে না। সুতরাং كلمات অর্থ ওয়াদা বা প্রতিশ্রুতি, আদেশ বা বাণী নয়।
এ জন্যই শায়খায়ন তরজমা করেছেন,

الله کی باتوں کا کوئ بدلنے والا نہیں

(আল্লাহর 'কথাসমূহকে' কোন পরিবর্তনকারী নেই) উর্দূতে بات এবং বাংলায় 'কথা' শব্দটি প্রতিশ্রুতি অর্থে ব্যবহৃত হয়।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة حَسْرَةٍ .
٢ - أعرب قوله : بغتة .
٣ - بم يتعلق قوله : من قبلك ؟
٤ - أعرب قوله : لا مبدل لكلمت الله .
٥ - শায়খুলহিন্দ (রহ) قد خسر এর কী তরজমা করেছেন এবং তার ভিত্তি কী ?
٦ - لا مبدل لكلمات الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো।

(٧) وَمـا مِـن دابَّـةٍ في الأَرض وَ لا طٰئِرٍ يَطـير بجَناحَيْـه إلا أُمَـمٌ أَمْثـالُكم، مـا فَرَّطنا في الكتٰبِ مِنْ شَيءٍ ثم إلى ربهم يُحشَـرون * وَ الذين كذبوا بِاٰيٰتِنا صُمٌّ وبُكم في الظُلُمٰت، مَنْ يَشـا الله يُضْـلِلـه، و مَن يشـا يجـعَلـه على صـراط مستقيم * قل ارءيتَكم إن اتٰكم عذابُ الله اَوْ اَتَتْكم الساعَة اَ غيـرَ الله تَدعـونَ، إن كنـتم صٰدقين * بل إياه تَدعـون فيكشِف ما تدعون اليه إن شاءَ و تنسونَ ما تُشـركون * و لَقَد ارسلنا الى امَم من قَبْلِك فاخذنٰهم بالباساء وَ الضراء

لعلـهم يتَضَرَّعـون * فَلَو لا إذ جاءَهم بأسُـنا تَضَرَّعـوا وَلكن
قَسَـت قلوبُهم و زَيَّن لهم الشيْطن ما كـانوا يعـمَلـون *

بـيـان اللـغـة

دابـة : ما دَبَّ من الحَيَوان যে সকল প্রাণী গড়িয়ে চলে كل حيـوان صغير و كبير . ما يُركَب و يُحمَل عليه .

دَبَّ (ض، دَبًّا و دَبِيبًا) مشى مَشْيًا رُويدًا

دب في ... سـرى (ض، سِرايـة)

أمثالكم : مثل، انظر ٣/٨/٣

يكشِف (أي : يزيل) كَشَفَ شيئا أو عن شيءٍ (ض، كَشْفًا) : أظهره، رفع عنه الغِطاءَ

প্রকাশ করলো, আবরণমুক্ত করলো।

كَشَفَ الله غَمَّه : أزالَه আল্লাহ তার দুশ্চিন্তা দূর করলেন

انكَشَفَ : ظهر، زال

يتضَرعون : تَضَرَّع الرجل : تَذَلَّل দীনতা প্রকাশ করলো

تضرع إلى الله : ابتهل إليه আল্লাহর কাছে কাকুতি মিনতি করলো

بيـان الإعراب

ما من دابة : ما نافيـة، و من حرف جر زائـد، و دابة مبتـدأ محلا، و في الأرض (أي : موجودةٍ في الأرض) صفة لـ : دابة، و طائرٍ معطوف على دابة، و الجملة صفة لـ : طائر .

إلا أمم أمثالكم : إلا أداة حصر بين المبتدأ و الخبر، و أمم خبر دابة، و أمثالكم صفة لـ : أمم .

من شيءٍ : شيءٍ مجرور لفظا منصوب محلا، لأنه مفعول به، أو نائب عن المفعول المطلق بمعنى قليل، أي : ما فرطنا تفريطًا قليلًا .

صم و بكم : صم خبر، و بكم معطوف على الخبر، و في الظلمٰت متعلق بخبر ثان، أي : غارقون في الظلمت، أو هو حال من الضمير المقدر في الخبر، أي : غارقين في الظلمات، أو هو خبر لمبتدأ

محذوفٍ، أي هم غارقون في الظلُمات ·

مَن يشأ الله يُضلله : أعرب مستعينًا بما سَبَق، و مفعول المشيئَةِ في كِلا الفعلَينِ محذوف؛ أي : إضلالَه و هدايتَه

أرأيتكم : كَثُر هذا التعبيرُ في كَلامِ العرَبِ، و كذا أريتَ بدون الكافِ، و معنى أرأيتَ و أرأيتَكَ : أخبِرْني، و لا يُراد به طلَبُ الإخبار، بل يُراد إظهارُ التعجُّبِ

التاء ضمير الفاعل، فإذا اتَّصلَتْ بها كافُ الخِطابِ كانَتِ التاءُ بِلَفظِ الواحد في التثنِيَة و الجمعِ و التأنيثِ، و اختلَفَتْ كافُ الخطاب، فقلتَ في الواحد : أرأيتَك و في التثنية : أرأيتَكما و في الجمع : أرأيتَكم و أرأيتَكن ·

و معنى أرأيتكم : أخبروني، و مراده إظهار التعجب ·

أتاكم عذاب الله : شرط، و جواب الشرط محذوف، أي فَمَنْ تدعون، دل على هذا الجواب الاستفهام الآتِي ·

إن كنتم صادقين : و هنا حذف، أي : في أَنَّ الأصنامَ تنفعكم، و جواب الشرط محذوف، أي فادعوها

لولا ... : تكون على ثلاثة أوجه :

(١) حرف شرطٍ يدل على امتناعِ الجوَابِ لِوُجود الشرطِ : تقول لولا علي لهلك عمر ·

و يكون الشرط جملة اسمية خبرها محذوف وجوبا ·

و يَكثُر اللام في جَوابها، و إذا كان الجواب منفيا بـ : لم امتنع دخول اللام فيه ·

(٢) حرف تحضيض، فَتختَصُّ بالمضارع، و لو كانَ حُكمًا · تقول : لولا تستغفرون الله، و لولا أخرتني إلى أجل قريب ·

(٣) حرف توبيخ، فَتختص بالماضي كما ترى في هذه الاية ·

إذ جاءهم بأسنا يتعلق بـ : تضرعوا ·

الترجمة

ভূমিতে বিচরণকারী সকল (শ্রেণীর) প্রাণী এবং দু' ডানায় উড়ন্ত

সকল (শ্রেণীর) পক্ষী তোমাদেরই মত বিভিন্ন সম্প্রদায় মাত্র। আমি কোন কিছু (লাওহে মাহফূয) কিতাবে (লেখা) ছেড়ে দেইনি। তারপর তাদের প্রতিপালকের(খ) নিকট একত্র করা হবে তাদের (সকল)-কে। যারা মিথ্যা বলে আমার আয়াতসমূহকে তারা (যেন) বধির ও মুক, তারা বিভিন্ন অন্ধকারে (ডুবে) রয়েছে।

আল্লাহ যাকে ইচ্ছা করেন তাকে বিপথগামী করেন, আর যাকে ইচ্ছা করেন তাকে সরল পথে স্থাপন করেন।

আপনি বলুন, বলো তো দেখি, যদি এসে পড়ে তোমাদের উপর আল্লাহর আযাব, কিংবা এসে পড়ে তোমাদের উপর কিয়ামত (তাহলে) তোমরা কি গায়রুল্লাহকে ডাকবে? যদি তোমরা (তোমাদের শিরকী দাবীতে) সত্যবাদী হও (তাহলে উপাস্যদেরকেই ডাকো। তা তো করো না) বরং তাঁকেই তোমরা ডাকো, অনন্তর যে বিপদের জন্য তোমরা (তাঁকে) ডাকো তিনি তা দূর করে দেন, যদি ইচ্ছা করেন। আর তোমরা তো ভুলে যাও ঐ উপাস্যকে যাদেরকে তোমরা শরীক করে থাকো।

আর অতিঅবশ্যই আমি (রাসূল) প্রেরণ করেছি বিভিন্ন উম্মতের উদ্দেশ্যে আপনার পূর্বে। আমি পাকড়াও করেছি অনন্তর তাদেরকে, অনটন ও কষ্ট দ্বারা, যাতে তারা কাতরতা প্রকাশ করে। তো যখন এসে পড়লো তাদের উপর আমার পরাক্রম তখন কেন তারা কাতরতা প্রকাশ করলো না! বরং কঠিন হয়ে গেলো তাদের অন্তর, আর শয়তান তাদের জন্য শোভনীয় রূপ দিতে থাকলো তাদের অব্যাহত কৃতকর্মকে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و ما من دابة বন্ধনীতে 'শ্রেণী' শব্দটি যোগ করে বোঝানো হয়েছে যে, এখানে প্রতিটি فرد উদ্দেশ্য নয়, প্রতিটি শ্রেণী উদ্দেশ্য; পরবর্তী أمم শব্দটি তা প্রমাণ করে, কেননা শ্রেণীকেই أمة বলা যাবে, ফরদকে নয়।

(খ) সম্প্রদায় মাত্র - মাত্র শব্দটি 'হাছরনির্দেশক'। অর্থাৎ তোমাদেরই মত বিভিন্ন সম্প্রদায় ছাড়া আর কিছু নয়।

(গ) صم و بكم তারা (যেন) বধির ও মুক - বন্ধনীর 'যেন' শব্দটি দ্বারা থানবী (রহ) আয়াতে বিদ্যমান তাশবীহের দিকে ইঙ্গিত করেছেন। অবশ্য এটা না করলেও চলে।

(ঘ) يجعل স্থাপন করেন – এটি আক্ষরিক প্রতিশব্দ, 'পরিচালিত করেন' এটি ভাবপ্রতিশব্দ।

(ঙ) أرسلنا إلى أمم من قبلك ([রাসূল] প্রেরণ করেছি বিভিন্ন উম্মতের উদ্দেশ্যে আপনার পূর্বে) এখানে من قبلك কে أرسلنا এর متعلق ধরে তরজমা করা হয়েছে। ভিন্ন তারকীব অনুসারে তরজমা হতে পারে– আপনার পূর্বে বিগত বিভিন্ন উম্মতের কাছে প্রেরণ করেছি।

(চ) و لا طائرٍ يَطير একটি তরজমায় আছে– 'অথবা নিজ ডানার সাহায্যে এমন কোন পাখী উড়ে না, কিন্তু তারা ....

বাংলা বাক্যটি শুদ্ধ নয়, কারণ 'এমন'-এর পর স্বাভাবিকভাবে 'যা' আসার কথা।

তাছাড়া 'এবং'-এর পরিবর্তে 'অথবা'-এর ব্যবহার সঙ্গত নয়।

একটি তরজমায় আছে– 'উড়ে বেড়ায়' – এখানে বেড়ায় শব্দটির সংযোজন সুন্দর নয়।

(ছ) لعلهم يتضرعون (যাতে তারা কাতরতা প্রকাশ করে) কোন কোন বাংলা তরজমায় আছে– বিনীত হয়/কাকুতি মিনতি করে। কিতাবে তরজমা করা হয়েছে শায়খুলহিন্দের অনুকরণে। থানবী (রহ) লিখেছেন, যাতে তারা নরম হয়ে যায়।

زين (শোভনীয় রূপ দিতে থাকলো) এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি অব্যাহততার দিকটি বিবেচনায় এনেছেন।

ما كانوا يعملون (তাদের অব্যাহত কৃতকর্মকে) মাযী ইসতিমরারের তরজমারূপে 'অব্যাহত' শব্দটি যুক্ত হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ دابَّةٍ .

٢ – ماذا تعرف عن لولا ؟

٣ – أعرب قوله : في الظُّلُمات .

٤ – ماذا تعرف عن أرأيتَ و أرأيتَك ؟

٥ – طائرٍ و دابةٍ এর তরজমায় 'শ্রেণী' শব্দটি যোগ করার উদ্দেশ্য বলো

٦ – و لقد أرسلنا إلى أمم من قبلك এ বাক্যটির দুই তারকীব অনুসারে তরজমা করো।

(٨) فَلما نَسوا ما ذُكروا به فَتحنا عليهم أبواب كلِّ شيءٍ حتى إذا فَرِحوا بما أُوتوا أخذنٰهم بغتةً فاذا هم مُبلِسون * فَقُطِعَ دابرُ القومِ الذين ظلَموا ، و الحمدُ لله رَبِّ العٰلمين * قل ارءيتُم إن أخَذ الله سَمْعَكم وَ ابْصارَكم و ختَم على قُلوبكم مَنْ الٰهٌ غيرُالله يَاتيكم به، أُنظر كيفَ نصرِّف الأيٰت ثم هم يَصدِفون * قل ارءيتَكم إن اتٰكم عذاب الله بغتَةً او جَهْرَةً هل يُهلَك إلا القومُ الظّٰلمون * و ما نُرسِل المرسَلين إلَّا مبشرين و منذرين، فَمن امَنَ و اصلَح فَلا خوف عليهم وَ لا هم يحزَنون * وَ الذين كذَّبوا بِايٰتنا يَمَسُّهم العذابُ بما كانوا يفسُقون *

بيان اللغة

أبلَسَ في أمرِه : تحيَّر، و لم يَدر ماذا يفعَل .
صَدَف عن ... (ض، صَدْفًا) : أعرَض، و صدَفَه : صرَفه
دابِر : الدابر التابِع و المتأخِّر، و يكون هذا مَكانًا و زمانًا و مَرتَبَةً .
و قُطِع دابرُ القومِ : أُهلِكُوا جميعًا .

بيان الإعراب

حتى إذا فرحوا : حتى هذه ابتدائية
فإذا هم : هذه إذا الفُجائِيَّةُ، و هي ما يُفيد أنَّ المضمونَ حدَث فَجْأَةً، و إذا الفُجائيَّة لا عمَل لها و لا مَحَل لها مِنَ الإعراب .
إنْ أخذَ الله : هذا شرط و أداة شرطٍ، و جواب الشرط محذوف، أي : فمن يَأتيكم به، وَ الاستفهام يدل على هذا الجواب، و لا يجوز أن يكون هذا الاستفهام جوابًا .
من إله غير الله يأتيكم به : من اسم استفهام في موضع رفع على الابتداء، و إله خبره، و غير الله صفة الخبر، و جملة يأتيكم به صفة ثانية للخبر أو خبر ثان للمبتدأ .

و الهاء في به تعود على السَّمْعِ، لأنه المذكورُ أوَّلاً، أو تعودُ على السمعِ و الأبصارِ بمعنَى المأخوذِ، فجازَ إفراد الضمير .

كيف نصرف : كيف حال من المفعول و العامل فيها نُصَرِّف .

ثم : هذا حرف استئنافٍ، أو هو حرف عطفٍ عُطف به على اُنظر .

إن أتاكم : جواب الشرط محذوف، دل عليه الاستفهام .

الترجمة

অনন্তর যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বাণী যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো তখন খুলে দিলাম আমি তাদের উপর (তাদের জন্য) সকল কিছুর দরজা। এমন কি যখন উল্লসিত হলো তারা ঐ সকল নেয়ামতের কারণে যা তাদেরকে দেয়া হয়েছিলো তখন পাকড়াও করলাম আমি তাদেরকে আচানক। তখন হঠাৎ দেখা গেলো যে, তারা স্তব্ধ। এভাবে কেটে দেয়া হলো ঐ সম্প্রদায়ের শিকড় যারা অবিচার করেছিলো, (হরণ করে) নিয়ে যান আর সকল প্রশংসা আল্লাহ্ রাব্বুল আলামীনের।

আপনি বলুন, বলো দেখি, যদি (হরণ করে) নিয়ে যান আল্লাহ্ তোমাদের কর্ণ ও চক্ষুসমূহ এবং মোহর এঁটে দেন তোমাদের অন্তরসমূহের উপর তাহলে কে আছে আল্লাহ্ ছাড়া এমন উপাস্য, যে এনে দেবে তোমাদেরকে তা। দেখো কিভাবে আমি নিদর্শনাবলী বিভিন্নভাবে বর্ণনা করি, তারপরো তারা বিমুখ হয়।

আপনি বলুন, বলো তো দেখি, যদি এসে পড়ে তোমাদের উপর আল্লাহ্‌র আযাব আচমকা কিংবা প্রকাশ্যে (তাহলে তো জালিম কাওম ছাড়া অন্য কাউকে হালাক করা হবে না, কারণ) যালিম কাওম ছাড়া অন্য কাউকে হালাক করা হয় না।

আর প্রেরণ করিনি আমি রাসূলদেরকে, কিন্তু সুসংবাদদানকারী ও সতর্ককারীরূপে। সুতরাং যারা ঈমান আনবে এবং (নিজেদের আকীদা-আমলকে) সংশোধন করবে তাদের কোন আশংকা নেই এবং তারা দুশ্চিন্তাগ্রস্তও হবে না।

আর যারা মিথ্যা আরোপ করবে আমার আয়াতসমূহের প্রতি, পাকড়াও করবে তাদেরকে আযাব তাদের অব্যাহত নাফরমানির কারণে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) فلما نسوا ما ذكروا به (যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বাণী যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো) এখানে ما এর স্থানীয় অর্থ এবং به এর প্রতিশব্দ উল্লেখ করা হয়েছে।
একটি তরজমায় আছে- তাদেরকে যে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো যখন তারা তা বিস্মৃত হলো।
অন্য তরজমায় আছে- তারা যখন ঐ উপদেশ ভুলে গেলো যা তাদেরকে দেয়া হয়েছিলো।
এ ধরনের তরজমা গ্রহণযোগ্য তবে পূর্ণ মূলানুগ নয়।

(খ) مبلسون এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন حیرت زده (হতবাক বা স্তব্ধ) আর শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন- نا أميد (হতাশ, নিরাশ)।

(গ) فقطع دابر القوم الذين ظلموا (এভাবে কেটে দেয়া হলো ঐ সম্প্রদায়ের শিকড় যারা অবিচার করেছিলো) এর বিকল্প তরজমা- এভাবে জালিম কাউমকে সম্পূর্ণ নির্মূল করা হলো।

(ঘ) يصدفون এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, মুখ ফিরিয়ে নেয়। শব্দটি عن অব্যয়যোগে ব্যবহৃত হয়। সুতরাং এরূপ তরজমা হতে পারে- (সত্য থেকে) সরে যায়।

(ঙ) هل يهلك إلا القوم الظلمون যালিম কাউম ছাড়া অন্য কাউকে হালাক করা হয় না এখানে هل অব্যয়টি نفي এর অর্থে এসেছে। সুতরাং মূলরূপ হবে لا يهلك إلا আর لا আর إلا যেহেতু أداة حصر সেহেতু এমন তরজমা হতে পারে- জালিম কাওমকেই শুধু ধ্বংস করা হবে।

(চ) أرأيتكم ও أرأيتم এর তরজমায় যে পার্থক্য করা হয়েছে তা লক্ষ্য করো।

أسئلة :

١ - اذكر معنى أبلَسَ .

٢ - أعرب قوله : بغتةً أو جهرةً .

٣ - أعرب قوله : فإذا هم مُبلسون .

٤ - أعرب قوله : فلا خوف عليهم .

৫ – তাদেরকে যে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো যখন তারা তা ভুলে গেলো– এ তরজমায় মূল থেকে ভিন্নতা এসেছে কীভাবে ?

৬ – مبلسون এর তরজমা কে কী করেছেন এবং কোন তরজমাটি শব্দানুগ

(٩) قل إني نُهيت أَنْ أعبُدَ الذين تَدعون مِن دون اللّٰه، قل لا أتَّبِعُ أهواءَكم، قد ضَلَلْتُ إذًا و ما أنا مِنَ المهتَدين * قل إني على بَيِّنةٍ من ربي وَ كذبتم به، ما عِندي ما تَستعجِلون به، إنِ الحكمُ إلاَّ لله، يقُص الحقَّ و هو خَير الفٰصِلين * قل لو أنَّ عندي ما تَستعجلون به لَقُضِيَ الامرُ بيني و بينَكم، و الله أعْلَم بالظّٰلِمين *

بيـان اللغـة

أهواءَكم : الهَوٰى يَأتِي لثلاثَةِ مَعانٍ : (١) ميلُ النفسِ إلى الشهوَةِ، (٢) النفسُ المائلةُ إلى الشهوة (٣) شهوةُ النفس، و الجمع أهْواءٌ ·

استعجَله : استَحَثَّه و طلَب منه أن يعجَل ·
استعجَل الرجلُ : عَجِل
عجل (س، عَجَلًا و عَجَلَةً) : أسرَع

خير الفاصلين : فَصَل بينَ الخَصْمَين (ض، فَصْلًا) : قضى
فَصَل شيئًا : قَطَعَه
فَصَل عن غيره : أبعَدَه
فَصَلَ بين شيئَين : فرَّق بينَهما، و أبانَ أحدَهما عن الآخَرِ ·
فصل القومُ عن البَلدِ (ن، فُصولًا) خرجوا ·
جاء في القرآن : و لما فصَلَتِ العِيرُ قال أبوهم : إني لأجد ريحَ يوسف ·

بيـان الإعراب

أن أعبد : المصدر المؤول منصوب بنزع الخافض ·
و من دون الله متعلق بمحذوف، هو حال من مفعول تدعون المحذوف ·

إذًا : حرف جواب و جزاءٍ، لا مَحَل له مِن الإعراب، و فيه معنى الشرطِ، و المعنى : إنِ اتبعتُ أهواءَكم ضللت و ما اهتديتُ، فهو في قوة شرط و جوابٍ ·

على بينة : يتعلق بخبر إنَّ المحذوفِ، و مِن ربي يتعلق بنَعت لـ : بينَةٍ

و كذبتم به : يجوز أن يكون مستأنَفا، و أن يكونَ حالا، بتقدير قَدْ

و الهاء في : به تعود على ربي، و يجوز أن تعود على معنى البَينةِ، أي : البُرهان ·

ما عندي ما تستعجلون به : ما الأولى نافية لا عَمَل لها، و الثانيةُ مَوصولة، و الموصولة في مَحَل رفع مُبتدأ مؤَخر، و عندى ظرف متعلق بخبر مقدَّم ·

لو أن عندي : لو شرطية، و المصدر المؤول في مَحَل رفع فاعِلٌ لفعل محذوف، عندي ظرف متعلق بخبر أنَّ المقدَّم ·

و المعنى : لو ثَبتَ وجودُ ما تستعجلون به عندي ·

لقضي : اللام واقعة في جواب لو ·

الترجمة

আপনি বলুন, আমাকে তো নিষেধ করা হয়েছে ঐ উপাস্যদের উপাসনা করতে যাদেরকে ডাকো তোমরা আল্লাহকে ছাড়া। আপনি বলে দিন, অনুসরণ করবো না আমি তোমাদের প্রবৃত্তিসমূহের, তাহলে তো অবশ্যই পথভ্রষ্ট হবো আমি এবং থাকবো না পথপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

আপনি বলে দিন, নিঃসন্দেহে আমি (অবিচল) রয়েছি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে আগত প্রমাণের উপর, অথচ তোমরা মিথ্যা আরোপ করেছো তার প্রতি।

কর্তৃত্ব তো আল্লাহ ছাড়া কারো জন্য নয়। তিনি বর্ণনা করেন সত্য বিষয়, আর তিনি ফায়সালাকারীদের সর্বোত্তম।

আপনি বলে দিন, যদি আমার কাছে হতো ঐ আযাব যা তোমরা শীঘ্র দাবী করছো তাহলে তো (কবেই) ফায়সালা হয়ে যেতো আমার মাঝে এবং তোমাদের মাঝে (বিদ্যমান) বিষয়টি। আর আল্লাহ পূর্ণ অবহিত জালিমদের সম্পর্কে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إني نهيت – থানবী (রহ) এর তরজমা– আমাকে নিষেধ করা হয়েছে যে, আমি তাদের ইবাদত করবো যাদের তোমরা ইবাদত করছো ...... অর্থাৎ তিনি أعبد এবং تدعون উভয়ের অভিন্ন তরজমা করেছেন।

মূলানুগতার কারণে কিতাবের তরজমায় শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে।

(খ) لا اتبع أهواءكم (অনুসরণ করবো না আমি তোমাদের প্রবৃত্তিসমূহের।)– আমি তোমাদের খুশীমত চলবো না – এ তরজমা সঠিক নয়, কারণ আয়াতে أهواء শব্দটি বহুবচনরূপে এসেছে।

আমি তোমাদের খেয়ালখুশির অনুসরণ করবো না – এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, যেমন কেউ কেউ করেছেন।

থানবী (রহ)-এর তরজমা এই–

(আকীদার ক্ষেত্রে) আমি তোমাদের (বাতিল) ধ্যান-ধারণার অনুসরণ করবো না।

বিষয়বস্তুর দিক থেকে এ তরজমাই অধিকতর সঙ্গত। কারণ এখানে আকীদা সংক্রান্ত আলোচনাই চলছে।

তবে أهواء এর প্রকৃত প্রতিশব্দ হচ্ছে 'প্রবৃত্তিসমূহ'।

(গ) إني على بينة من ربي (নিঃসন্দেহে আমি [অবিচল] রয়েছি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে আগত প্রমাণের উপর) 'আমার কাছে একটি প্রমাণ রয়েছে আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে'।

থানবী (রহ) উপরোক্ত তরজমা করে লিখেছেন, এটি ভাবতরজমা, আমার পূর্বে শাহ আব্দুল কাদির (রহ)ও ভাবতরজমা করেছেন।

তারকীব-অনুগামী তরজমায় যেহেতু কোন সমস্যা নেই সেহেতু কিতাবে তা গ্রহণ করা হয়েছে।

(ঘ) ما عندي ما تستعجلون به (আমার কাছে তো নেই ঐ আযাব যা তোমরা শীঘ্র দাবী করছো) কিতাবে ما الموصولة এর স্থানীয় অর্থটি উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে; অন্যরা ما এর সাধারণ তরজমা করেছেন, আর থানবী (রহ) ما এর

স্থানীয় অর্থটি বন্ধনীতে এনেছেন।

عندي এর উদ্দেশ্যকে বিবেচনায় এনে 'আমার নিয়ন্ত্রণে' তরজমা করা যায়।

(ঙ) لقضي الأمر بيني و بينكم (তাহলে তো [কবেই] ফায়ছালা হয়ে যেতো আমার মাঝে এবং তোমাদের মাঝে [বিদ্যমান] বিষয়টি) 'আমার ও তোমাদের পারস্পরিক বিবাদের'/ বিরোধের তো মীমাংশাই হয়ে যেতো – এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে মূলানুগ নয়।

শায়খুলহিন্দ (রহ) بيني و بينكم এর মূলানুগ তরজমা করেছেন, তবে তিনি الأمر এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন 'ঝগড়া'।

(চ) و الله أعلم بالظلمين এর তরজমায় থানবী (রহ) এভাবে বন্ধনী যুক্ত করেছেন– আর আল্লাহ (তোমাদের) যালিমদের সম্পর্কে খুব জানেন।

তিনি বলেন, এ দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, এটি مقول এর অন্তর্ভুক্ত। এবং এখানে ضمير এর পরিবর্তে اسم ظاهر ব্যবহার করা হয়েছে, তাদের যুলুম ও অনাচারের প্রতি ইঙ্গিত করার জন্য। মূলরূপ হবে– و الله أعلم بكم

শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা মতে এটি স্বতন্ত্র বাক্য এবং সকল যালিম সম্পর্কে একটি মৌলিক সতর্কবাণী।

শায়খায়ন أعلم কে তুলনামূলক অর্থে নয়, বরং অতিশয়তার অর্থে গ্রহণ করেছেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة هَوًى .

٢ – اشرح مرجع الضمير في قوله : كذبتم به .

٣ – اشرح إعراب قوله : لو أن عندي ما تستعجلون به .

٤ – أعرب قوله : بيني و بينكم .

٥ – لا أتبع أهواءكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – عندي এর উদ্দেশ্য বিবেচনা করে কী তরজমা করা যায়?

(١٠) وَ من اظلَم مِمَّنِ افْتَرى على الله كَذِباً او قال أُوحِيَ اِلَيَّ و لم يُوحَ اليه شَيْءٌ و من قال سَأُنزِلُ مثلَ ما انزل الله، و لو ترى اذ

الظّٰلمون في غمرٰت الموتِ وَ الملئِكةُ باسِطوا اَيديهم، اَخرِجُوا انفسَكم، اليومَ تُجزَون عذابَ الهُون بما كنتم تقولون على الله غيرَ الحق و كنتم عن اٰيٰته تَستكبِرون * و لَقَدْ جِئتُمونا فُرادٰى كما خلقنٰكم اَوَّلَ مرَّةٍ و تركتم ما خَوَّلْنٰكم وراءَ ظُهوركم، و ما نَرٰى معكم شُفعاءَكم الذين زعَمْتُم انهم فيكم شُرَكٰؤا، لقد تَقطَّعَ بينكم و ضل عنكم ما كنتم تزعمون *

بيان اللغة

غَمَراتِ الموت : شَدائده، و الغَمَراتُ جمعُ غَمْرَةٍ و الغُمَر أيضا جمعُ غمرةٍ : الشدَّةُ .

غَمَرَه الماء (ن، غَمْرًا) : عَلاه و غَطَّاه পানি তাকে ডুবিয়ে দিলো

غَمَر فلانًا بِفَضْلِه : بالغَ في الإحسان إليه

الهُون : الذل . هانَ عليه الأمرُ (ن، هَوْنًا) : لان و سَهُل

هانَ الرجل (هُوْنًا، و هَوَانًا، و مَهانَة) : ذَلَّ و حَقُر، ضَعُف

فرادى : الفَرْد (جمعه أفراد و فُرادٰى) واحد من جماعة

ব্যক্তিসমূহের বা বস্তুসমূহের একটি ।

خَوَّلَه شيئًا : أعطاه إيَّاه، مَلَّكَه إيَّاه .

بيان الإعراب

من أظلم : مَنْ اسم استفهام، يُفيد هنا معنٰى النفي، أي : لا أحدٌ أظلَمَ مِنَ المفترٰي على الله .

وَ كَذِبًا مفعول به لـ : افترٰى، أو مفعول مطلَق، لأنه في معنَى افتراءٍ، أو هو مصدر في موضع الحال

من قبال سَأنزِلُ مثلَ ما أنزَل الله : هذا معطوف علي مَنِ افترى .

و مثلَ مفعول به، و ما اسم موصول في محل جر بالإضافة، و يجوز أن يكون نعتًا لمصدر محذوفٍ، و ما مصدرية، أي : سأنزل إنزالاً مثلَ إنزال الله .

و لو ترى : مفعولُ ترى محذوف، أي : الظالمين، و إذ ظرف لـ : ترى، و
الجملة الإسمية في محل جر بالإضافة
و أصل العبارة : و لو ترى الظالمين حينَ وجودِهم في غمَرات الموت
و جواب لو محذوف، أي لَرأيتَ أمرا عظيما
و الملئكة : الواو حالية، و أيديهم مضاف إليه لفظًا، مفعول به معنًى ·
أخرجوا أنفسَكم : أي : يقولون أخرجوا أنفسَكم، و المحذوف حال من
الضمير في باسِطوا ·
اليوم ظرف لـ : أخرجوا، فَيَتِمُّ الوقفُ عليه، و يجوز أن يكونَ
ظرفًا لـ : تُجزون، فيتم الوقف على : أنفسِكم ·
عذابَ الهون : مفعول به ثان لتجزون ·
بما كنتم تقولون على الله غيرَ الحق : ما مصدرية، و الباء للسببية ·
غيرَ الحق مفعولُ تقولون، و يجوز أن يكون نعتًا لمصدر
محذوف، أي : تقولون قولا غيرَ الحق ·
فُرادى : حال من ضمير الفاعل ·
كما خلقناكم : الكاف بمعنى مثلٍ، و هو مضاف، و المصدر المؤول مضاف
إليه، و هو صفة لمصدر محذوف، أي : جِئتُمونا مجيئًا مثلَ
مَجيئِكم يومَ خلقناكم ·
أولَّ مرةٍ : ظرف زمان متعلق بـ : خلقناكم
و تركتم ما خَوَّلناكم : الواو استئنافية أو حالية، فالجملة في مَحَل نصب
حال من فاعلِ جاءَ بِتَقدير قَدْ
و ما الموصولة مفعول به لـ : تركتم، و وراءَ ظرف لـ : تركتم ·
لقد تقطَّع : فاعله ضمير يعود علي الاتصال الذي يُفهَم من شركاءُ، أي
لقد تقطَّع الاتصالُ بينَكم ·
ما كنتم تزعُمون : أي ما كنتم تزعُمونهم شفعاءَ، و هو فاعلُ ضل ·

الترجمة

আর কে তার চেয়ে বড় যলিম যে রটনা করে, আল্লাহ্ সম্পর্কে
মিথ্যা কিংবা বলে, অহী পাঠানো হয়েছে আমার কাছে, অথচ অহী

পাঠানো হয় নি তার কাছে কোন কিছু। আর (কে তার চেয়ে বড় যালিম) যে বলে, অবশ্যই নাযিল করবো আমি, আল্লাহ যা নাযিল করেছেন তার অনুরূপ। আর আপনি যদি দেখতেন, যখন যালিমরা মৃত্যুযন্ত্রণায় (লিপ্ত) থাকবে, আর ফিরেশতারা তাদের হাত বাড়িয়ে দেবে, (এবং বলবে) বের করো তোমরা তোমাদের প্রাণ, আজ প্রতিদান দেয়া হবে তোমাদেরকে লাঞ্ছনার আযাব আল্লাহ সম্পর্কে তোমাদের অন্যায় কথা বলতে থাকার কারণে এবং তাঁর আয়াত সম্পর্কে অহংকার করতে থাকার কারণে।

আর (কেয়ামতের দিন তাদেরকে আল্লাহ বলবেন) তোমরা তো এসেপড়েছো আমার কাছে একা একা যেমন সৃষ্টি করেছিলাম আমি তোমাদেরকে প্রথমবার।

আর তোমাদেরকে যা দান করেছিলাম ফেলে এসেছো তোমরা তা তোমাদের পিছনে। আর আমি তো দেখছি না তোমাদের সাথে তোমাদের সুফারিশকারীদেরকে, যাদের সম্পর্কে তোমরা দাবী করতে যে, তারা তোমাদের বিষয়ে (আমার সাথে) শরীকদার। তোমাদের মাঝে সম্পর্ক তো অবশ্যই ছিন্ন হয়ে গেছে, আর উধাও হয়ে গেছে তোমাদের থেকে তোমাদের বারবার কৃত দাবী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و من أظلم ممن افترى على الله كذبا (আর কে তার চেয়ে বড় যালিম যে রটনা করে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা) বিকল্প তরজমা– যে আল্লাহর নামে মিথ্যা অপবাদ আরোপ করে।

(খ) أوحي إلي (অহী পাঠানো হয়েছে আমার কাছে) আমার নিকট অহী হয়/ আমার নিকট অহী আসে।

এ সকল তরজমা সঠিক নয়, কারণ মাজহূল ফেয়েলের মাঝে অহী প্রেরণকারী সত্তার প্রতি যে প্রচ্ছন্ন ইঙ্গিত রয়েছে তা এখানে অনুপস্থিত।

(গ) و لم يوح إليه شيء (অথচ অহী পাঠানো হয়নি তার কাছে কোন কিছু) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন– যদিও তার প্রতি অহী নাযিল হয় না/যদিও তার প্রতি প্রত্যাদেশ হয় না।

و لم يوح إليه شيء এ বাক্যটি হাল হয়েছে, সুতরাং واو এর তরজমা 'যদিও' এর পরিবর্তে 'অথচ' হওয়া দরকার, যেমন থানবী (রহ) করেছেন।

তাছাড়া উপরোক্ত তরজমায় شيء অংশটি বাদ পড়েছে এবং বিনা প্রয়োজনে ماضي কে مضارع করা হয়েছে।

(ঘ) ومن قال এবং (কে তার চেয়ে বড় যালিম) যে বলে– যেহেতু و হচ্ছে من قال হচ্ছে من افترى এর উপর মা'তূফ সেহেতু স্পষ্টায়নের জন্য এখানে বন্ধনীতে و من أظلم অংশটিকে পুনরুক্ত করা হয়েছে।

(ঙ) عذاب الهون (লাঞ্ছনার আযাব) এর তরজমা 'অবমাননাকর শাস্তি' করা হলে দু'দিক থেকে ভুল হয়, প্রথমতঃ هون হচ্ছে লাযিম, আর অবমাননাকর হচ্ছে মুতাআদ্দী, যার প্রতিশব্দ হচ্ছে مهين দ্বিতীয়তঃ মূলের তারকীবে ইযাফীকে অপ্রয়োজনে তারকীবে তাওছীফীতে পরিবর্তন করা হয়েছে।

(চ) فرادى (একা একা) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, 'নিঃসঙ্গ অবস্থায়' এটা গ্রহণযোগ্য।

أسئلة :

١ – اشرح غَمَرَ و غَمْرَةٌ .

٢ – أعرب قوله : كَذِبًا .

٣ – بم يتعلق اليومَ في قوله تعالى : اليوم تُجزون عذاب الهون ؟

٤ – ما إعراب قوله : غير الحق ؟

٥ – أوحي إلى এর তরজমা যদি করা হয়, 'আমার নিকট অহী আসে' তাহলে কী ত্রুটি দেখা দেয়?

٦ – عذاب الهون এর তরজমা 'অবমাননাকর শাস্তি' এর সম্পর্কে পর্যালোচনা করো।

(١) وَ لو اَنَّنا نَزَّلنا اليهم المَلٰئِكَةَ و كَلَّمهم الموتٰي و حَشَرنا عليهم كلَّ شيءٍ قُبُلا ما كانوا لِيُؤمنوا اِلا اَنْ يشاءَ الله و لٰكنَّ اكثرَهم يجهَلون * و كذلك جَعلنا لِكُلِّ نبيٍّ عدوًّا شيٰطينَ الاِنْسِ وَ الجِنِّ يوحي بعضُهم الى بَعضٍ زُخرفَ القول غرورًا ، و لو شاءَ ربك ما فَعلوه فَذَرْهم وَ ما يفتَرون * و لِتَصْغٰى اليه اَفئِدَةُ الذين لا يؤمنون بالاٰخرَة و لِيَرْضَوه و لِيَقْتَرِفوا ما هم مقتَرفون * اَ فَغيرَ الله اَبْتَغِي حَكَما و هو الذي اَنْزَلَ اليكم الكتٰب مفصَّلا ، و الذين اٰتينٰهم الكتٰب يعلَمون انه منَزَّل من ربك بِالحقِّ فلا تَكونَنَّ من الممتَرين * و تَمَّت كَلِمَتُ ربك صِدقًا و عَدْلا ، لا مبدِّل لِكَلِمٰته ، و هو السميع العليم * وَ اِنْ تُطع اكثرَ مَنْ في الاَرضِ يُضِلوك عن سبيل الله ، اِن يتَّبِعون اِلا الظَّنَّ وَ اِن هم اِلَّا يخرُصون * اِنَّ ربك هو اَعلمُ مَنْ يَضِل عن سَبيله ، و هو اَعلم بالمهتَدين *

بيان اللغة

قُبُلا : جمع قَبيلٍ ، جماعَة ، أَتباع

و القُبُل : مقدَّم شيءٍ (وهو في هذا المعنى مُفرد لا جَمعٌ)

কোন কিছুর সম্মুখ ভাগ

قُبلًا أو مِن قُبلٍ : من جِهَةِ الأمام

و في قُبل الصيفِ أو الشتاءِ : في أوَّله

رأيته قُبلا : أي عِيانًا

তাকে প্রকাশ্যে দেখেছি

يجهَلون : قال الإمام الراغب : الجَهْلُ على ثَلاثة أضرُبٍ ، الأول : خُلُوُّ

النفسِ منَ العلمِ، الثاني : اعتقادُ الشيءِ بخلاف أصلِه، الثالث : فعلُ ما لا يَحسُن أو تركُ ما يحسُن .

و الجَهل مذموم، كما قال تعالى : اعوذ بالله أن أكون من الجاهلين، و غيرُ مذمومٍ، كما قال : يحسَبهم الجاهِلُ اغنياءَ من التعفُّف، أي : مَنْ لا يعرِفُ حالَهم .

جَهِل (س، جَهْلًا و جَهالَةً) حَمُق و جَفا و غَلُظ

جَهِل عليه : جفا عليه

جَهِل شيئًا / بِشَيْءٍ ضِدُّ عَلِم، لم يَعرِفه

الجاهِلِيَّة : حالة العرَبِ قبلَ الإسلام مِنَ الجهالَة و الضلالَة .

زُخرفٌ : الزينَة، و الجمع زَخارِفُ .

قال أبو عبيدةَ : كلُّ ما حَسَّنْتَه و زينتَه و هو باطل فهو زُخرفٌ .

زُخرُفُ القولِ : الكلام المزيَّن بالكَذِب، أو حُسن الكلامِ الباطل الكذِب و زينتُه .

زَخرفَ القولَ : حسَّنه و زينه بالكَذِب .

غَر فلانا (ن، غَرًّا، و غُرورًا) : خدَعه و أطمَعه بالباطِل

غَره الشيطانُ فهو غَرور، و غرته الدنيا فهي غَرور، و الرجل مَغرور - قال تعالى : يا أيها الإنسان ما غَرَّك بربك الكريم، أي : ما جَرَّأَك عليه، و كيف اجترَأْتَ عليه، اِغتَرَّ بكذا : خدَع به

تَصْغى : صَغِيَ (س، صَغًى) وصَغا (ن، صَغْوًا) مال .

أصغى إلى فلانٍ : أحسنَ الاستماع إليه .

তার কথা উত্তম মনোযোগের সাথে শুনলো।

لِيقتَرفوا : اقترَفَ لِعِيالِه : اكتسَبَ لهم .

اقترَفَ ذَنْبًا : ارتكَبَه، فَعَلَه (و أكثرُ استعماله في الشرِّ)

مُمترين : امتَرٰى في ... (امتراءً) : شَكَّ [مري]

يخرُصون : خَرَصَ (ن، خَرْصًا) : كذب أو قال عن ظن

خَرَصَ شيئًا : قَدَّره بالظن

ধারণা ও অনুমান দ্বারা কোন কিছুর পরিমাণ নির্ধারণ করলো।

بيان الإعراب

وَ لو أَنَّنا نَزلنا إليهم المَلٰئِكَةَ : المصدر المؤول فاعل لفعل محذوف، أي : لو ثَبت تنزيلُنا إليهم المَلٰئِكَةَ و ....، و يجري هذا الإعراب في كلِّ لو بعدَها مصدر مؤول .

كلمهم الموتٰى عطفٌ على نزلنا ، و حَشَرنا عطفٌ على : كلَّم، أو على نزلنا ، كما يقول بعضُ المعربين .

قُبلا : حال، أي : فَوْجًا فَوْجًا ، أو ظرفُ مكانٍ، أي : من أمامهم .

ما كانوا ليؤمنوا إلا أن يشاء الله : اللام لام الجحود ، و المصدر المؤول في مَحَل جر بحَرف الجر ، و هو متعلق بخبَر الناقص المحذوف، أي : ما كانوا أَهْلاً للإيمان، و الجملة جواب لو .

إلا : أداة استثناء، و المعنى : ما كانوا لِيؤمنوا في حالٍ إلا في حالِ مَشيئَةِ الله، فالمصدر المؤول في مَحل نصبٍ على الحال، و الاستثناء مِنْ عُمومِ الأَحوالِ .

أو معناه : ما كانوا لِيؤمنوا في زَمنٍ إلا في زَمنِ مشيئَةِ الله، فالمصدر المؤول في مَحل نصب على الظرفية الزمانية، و الاستثناء مِن عموم الزَّمان .

و كذلك : الإشارة إلى جَعْلِ مشركي مكةَ أعداءً لرسول الله، و الكاف بمعنٰى مثلٍ، نائبٌ مفعولٍ مطلق، صفةٌ له، أي : جعلنا لِكلِّ نبيٍّ عَدوًّا جعلاً مِثلَ ذلك (أي : مثلَ جعلِ أهلِ مكةَ أعداءً لك)

أو الكاف حرف جر و تشبيهٍ، فيتعلق بالمصدر المحذوف .

لكل نبيٍّ : متعلق بـ : جعلنا ، أو صفة لـ : عَدوًّا ، قُدِّمت فصارَتْ حالاً ، و عَدوًّا مفعول به ثانٍ مقدَّمٌ لـ : جعلنا ، و شَياطينَ مفعول به أوَّلُ، (و جَعَل يَتَعَدّٰى إلى مفعولَين)

يوحي بعضُهم إلى بعض زخرفَ القول غرورًا : الجملة مستأنفة لِبَيانِ حالِ العَدُوِّ، أو هي حال من عدوًّا .

و غرورًا مفعول لأَجْلِه، أي لِغرورهم، أو مصدر في موضِع نصبٍ

على الحـال، أي غَـارِّيـن، و يجـوز أن يكـون مـفعـولا مطـلَقـا لـفعلٍ مَحذوف، أي : يَغُرونَهم غُـرورًا ·

ما فعَلوه : الهاء يعـود على العِداءِ المفـهـوم من السـابِق ·

فذَرْهم و ما يفتَرون : الفـاء هي الفصيحـة، أي : إذا عرفتَ هذا فذَرهم · و ما موصولة أو مصدرية، في موضِع نصبٍ عطفٌ على مفعولِ ذر، و يجـوز أن يكـون الواو بمعنًى مع ·

لِتصغٰى إليه .. : هـذا مَعطوف على معنٰى غُـرورًا، إن كان مفعولًا لأجلِه، أي لِيَـغُـرُّوا و لِتـصـغٰى، و كـذلك لِيَـرْضَـوه و لِيَـقـتـرفـوا، و إلا فـهـو متعلق بـفـعل محـذوف ·

ما هم مقترفون : ما اسم موصول قُـصِـد منه الإثمُ، مفعول به لـ : يقتَـرفون، و الجملة صلة الموصول، و العائد محذوف ·

أ فغـيرَ الله أبتغِي حَـكَمًا : الهمزة للإنكار، أي : لن أبتغيَ، و الفـاء زائدة للتزيين، و غيـرَ الله مفعول به مـقدم لـ : ابتـغي، و حكَمًـا حـال أو تمييز ·

مفـصـلا : حـال من الكتاب ·

من ربك : يتـعلق بـ : منزل، و بالحق يتـعلق بحَال محـذوفـة من الضـمـيـر المرفوع في منزل ·

صِدْقًا و عَدْلاً : مصدَران في موضِع الحال، و هما حالَين مِنْ : كَلِمَـةِ ربك، أو من : ربك · و يجوز أن يكونا تمييزَين من النسبَةِ ·

أعـلَمُ مَن يضِـلُّ : الموصـول في مَـحَل نـصب بنزع الخـافـض، أي : أعـلَم بمـن يَضِـل

التـرجـمة

আর যদি আমি অবতারণ করতাম তাদের প্রতি ফিরেশতাদেরকে, এবং কথা বলতো তাদের সাথে মৃতরা এবং আমি একত্র করতাম তাদের সামনে সকল (সৃষ্টি) বস্তুকে দলে দলে তবু তারা ঈমান আনবার নয়, তবে যদি আল্লাহ চান। কিন্তু তাদের অধিকাংশ মূর্খসুলভ কথা বলে।

আর এভাবেই আমি প্রত্যেক নবীর জন্য শত্রু বানিয়েছি মানবের ও

জিনের শয়তানদেরকে। তাদের কতিপয় [১] অন্য কতিপয়ের প্রতি [২] চাকচিক্যপূর্ণ কথা প্রক্ষেপণ করে, তাদেরকে ধোঁকা দেয়ার জন্য। আর যদি ইচ্ছা করতেন আপনার প্রতিপালক তাহলে তারা শত্রুতা করতে পারতো না। সুতরাং ছাড়ুন আপনি তাদেরকে এবং তাদের মিথ্যা রটনাকে।

(শয়তানেরা কাফিরদের অন্তরে চাকচিক্যপূর্ণ কথা প্রক্ষেপণ করে যেন তাদেরকে ধোকা দিতে পারে) এবং যেন আকৃষ্ট হয় ঐ চাকচিক্যপূর্ণ কথার প্রতি তাদের অন্তর যারা ঈমান আনে না আখেরাতের প্রতি এবং যেন পছন্দ করে নেয় তারা তা এবং যেন তারা ঐ সকল পাপ করতে থাকে যা তারা করছে।

(আপনি তাদেরকে বলুন) তবে কি গায়রুল্লাহকে সন্ধান করবো আমি ফায়সালাকারীরূপে, অথচ তিনিই ঐ সত্তা যিনি নাযিল করেছেন তোমাদের প্রতি, কিতাব বিশদবর্ণিত অবস্থায়।

আর যাদেরকে দান করেছি আমি কিতাব তারা নিশ্চিতই জানে যে, তা অবতারিত আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্যসহ। সুতরাং আপনি যেন সংশয়গ্রস্তদের থেকে না হন।

আর পূর্ণতা লাভ করেছে আপনার প্রতিপালকের বাণী সত্য ও ন্যায়ানুগ হওয়ার দিক থেকে। আপনার প্রতিপালকের বাণীসমূহের কোন পরিবর্তনকারী নেই। আর তিনিই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞানী।

আর যদি আপনি আনুগত্য করেন, পৃথিবীতে যারা আছে তাদের অধিকাংশের, তাহলে বিচ্যুত করে ছাড়বে তারা আপনাকে আল্লাহর পথ থেকে। তারা তো অনুসরণ করে শুধু ধারণার এবং তারা তো শুধু অনুমাননির্ভর কথা বলে।

নিঃসন্দেহে আপনার প্রতিপালক তাদের বিষয়ে অধিক অবহিত যারা বিপথগামী হয়ে থাকে এবং তিনিই সুপথপ্রাপ্তদের বিষয়ে অধিক অবহিত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و لوأننا نزلنا إليهم الملئكة (আর যদি আমি অবতারণ করতাম তাদের প্রতি ফিরেশতাদেরকে) এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, 'যদি আমি তাদের কাছে ফিরেশতাদেরকে

১. অর্থাৎ জিনশয়তানেরা
২. অর্থাৎ মানবশয়তান তথা কফিরদের প্রতি

পাঠিয়ে দিতাম'।

তিনি এখানে তাযমীনের ভিত্তিতে نزلنا কে إلى এর উপযোগী أرسلنا এর অর্থে গ্রহণ করেছেন। পক্ষান্তরে শায়খুলহিন্দ (রহ) إلى কে أنزلنا এর উপযোগী على এর অর্থে গ্রহণ করে লিখেছেন– 'তাদের উপর নাযিল করতাম।

(খ) وحشرنا عليهم كل شيء قبلا (এবং একত্র করতাম তাদের সামনে সকল বস্তুকে দলে দলে) থানবী (রহ) عليهم এর তরজমা করেছেন, 'তাদের নিকটে' এবং قبلا এর তরজমা করেছেন, 'তাদের চোখের সামনে'।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, যদি আমি প্রতিটি বস্তুকে তাদের সামনে জীবিত করে দেই।

এখানে একটি শব্দের তরজমা রয়ে গেছে। আর তিনি حشرنا এর ভাবতরজমা করেছেন। তাছাড়া لو কে তিনি مستقبل এর অর্থে গ্রহণ করেছেন।

'তাদের চোখের সামনে' এটাও قبلا এর শাব্দিক তরজমা নয়।

কিতাবে قبلاকে قبيل এর বহুবচন ধরে حال রূপে তরজমা করা হয়েছে।

কিন্তু তাদের অধিকাংশ মূর্খসুলভ কথা বলে– এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা। 'মূর্খতা প্রকাশ করে' এ তরজমাও হতে পারে। একটি তরজমায় রয়েছে, তাদের অধিকাংশই অজ্ঞ। এখানে يجهلون ফেয়েল ব্যবহারের সার্থকতা প্রকাশ পায়নি, তা ছাড়া অজ্ঞতা ও মূর্খতা এক নয়। নিন্দার ক্ষেত্রে 'মূর্খতা' অধিকতর উপযুক্ত শব্দ।

(গ) جعلنا لكل نبي عدوا شيطين الإنس و الجن (আমি প্রত্যেক নবীর জন্য শত্রু বানিয়েছি মানবের ও জিনের শয়তানদেরকে) এখানে جعلنا কে দুই মাফঊলবিশিষ্ট ফেয়েল ধরে তরজমা করা হয়েছে, এবং মাফঊল দ্বয়ের কোরআনী তারতীবও রক্ষা করা হয়েছে।

এমন তরজমাও হতে পারে– প্রত্যেক নবীর জন্য মানবের ও জিনের শয়তানদেরকে আমি শত্রু বানিয়েছি (এখানে لكل نبي হচ্ছে جعلنا এর সাথে متعلق)

কিংবা– মানবের ও জিনের শয়তানদেরকে প্রত্যেক নবীর জন্য

শত্রু বানিয়েছি (এখানে لكل نبي হচ্ছে। عدوا থেকে অগ্রবর্তী হাল)

থানবী (রহ) جعلنا কে خلقنا এর অর্থে এক মফঊলবিশিষ্ট ফেয়েল ধরেছেন। আর شيطين কে। عدوا থেকে বদল ধরেছেন। তাঁর তরজমা হলো– 'আমি প্রত্যেক নবীর জন্য শত্রু, বহু শয়তান সৃষ্টি করেছিলাম; কিছু মানুষ, আর কিছু জ্বিন।

অর্থাৎ তিনি مضاف إليه কে مضاف এর বয়ান বা ব্যাখ্যা ধরেছেন।

একটি তরজমায় আছে– আমি প্রত্যেক নবীর জন্য শত্রু করেছি শয়তান, মানব ও জিনকে।

এতে তিন শ্রেণীর শত্রু বোঝা যায়। অথচ প্রকৃত বিষয় এই যে, মানুষের মাঝে এবং জ্বিনদের মাঝে যারা দুষ্ট পৃকৃতির তাদেরকেই شياطين الإنس و الجن বলা হয়েছে।

(ঘ) زخرف القول (চাকচিক্যপূর্ণ কথা) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, 'কারুকার্যখচিত কথা'। কথার সঙ্গে 'কারুকার্যখতি' শব্দের ব্যবহার ঠিক নয়।

(ঙ) وهو الذي أنزل إليكم الكتب مفصلا (অথচ তিনিই ঐ সত্তা যিনি নাযিল করেছেন তোমাদের প্রতি কিতাব)– ইসমে মাওছূলের জন্য এরূপ তরজমা করা হয়েছে।

এমন তরজমাও হতে পারে– অথচ তিনিই তোমাদের প্রতি কিতাব নাযিল করেছেন।

(চ) مفصلا এর তারকীবগত দিক লক্ষ্য করে তরজমা করা হয়েছে 'বিশদবর্ণিত অবস্থায়'। 'বিশদরূপে'– এ তরজমাও হতে পারে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন 'সুস্পষ্ট কিতাব' এবং 'বিস্তারিত গ্রন্থ'।

থানবী (রহ) সম্প্রসারিত তরজমা করেছেন এভাবে– তার অবস্থা এই যে, তার বিষয়বস্তুগুলো অত্যন্ত স্পষ্টরূপে বর্ণনা করা হয়েছে।

(ছ) منزل من ربك بالحق (আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্যসহ অবতারিত) منزل এর তরজমা 'অবতীর্ণ' বা 'অবতীর্ণ হয়েছে' করা সঙ্গত নয়।

(জ) كلمة ربك এবং كلماته দু'টোরই অভিন্ন তরজমা করা সঙ্গত নয়, যেমন কেউ কেউ করেছেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ زُخرفٍ ·
٢ – إعرب قوله : قُبلًا ·
٣ – أعرب قوله : غُرورًا ·
٤ – أعرب قوله : صدقا و عدلا ·
٥ – حشرنا عليهم قبلا এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – منزل এর তরজমা 'অবতীর্ণ' করা ঠিক নয় কেন ?

(٢) سَيقول الذين اَشركوا لو شاءَ اللّٰهُ ما اَشْركنا وَ لا اٰباؤُنا و لا حَرَّمنا مِنْ شيءٍ، كَذلك كذَّب الذين مِن قَبلِهم حتّٰى ذاقُوا بَأْسَنا ، قل هل عندكم مِنْ علمٍ فتُخرجوه لَنا ، اِنْ تَتَّبِعون اِلَّا الظَّنَّ وَ اِن اَنتُم اِلا تخرُصون * قل فَلِلّٰهِ الحجَّة البالِغَة، فلَوْ شاءَ لَهَدٰكم اَجمعين * قل هَلُمَّ شُهداءَكم الذين يشهَدون اَنَّ اللّٰه حرَّم هذا ، فَاِنْ شَهِدوا فلا تَشْهَد معَهم، و لا تَتَّبِع اَهواءَ الذين كذَّبوا بِاٰيٰتِنا وَ الذين لا يُؤمنون بالاٰخرة و هم بِربهم يَعْدِلون * قل تَعالَوا اَتْلُ ما حَرَّم ربكم عليكم اَلَّا تُشركوا به شيئًا و بالوالدَين اِحسانًا ، و لا تقتلوا اولادَكم مِنْ اِملاقٍ، نحن نرزُقكم و اِيَّاهم، و لا تقرَبوا الفَواحِش ما ظَهَر منها و ما بَطَن، و لا تقتُلوا النفسَ التي حرَّم الله اِلَّا بالحقِّ، ذٰلِكم وصّٰكم به لعلكم تعقلون *

بيان اللغة

هلم : اسم فعلِ أمرٍ بمعنى تعال، (للواحد و الاثنين و الجماعة و الذكر و الأُنثٰى) و هو لازم، و يستعمَل متعديا بمعنى أَحْضِر كما في الأيةِ ·

و يقولون أيضا : هَلُمَّ، هلُمَّا، هلُمِّي، هَلُمُّوا، هَلْمُمْنَ .

يَعدِلون : (يُشركون) عَدَل بِربه (عَدْلاً، عُدولاً، ض) : أشرَك بربه و سَوّى به غيرَه

عَدَل عَنِ الطريق : حادَ و مال . عَدَل إليه : رجَع

عَدَله عن/إلى (عَدْلاً، ض) : صرَفه

عَدَل في أمرِه (عَدْلاً، عَدالَةً) : استقامَ

عَدَل في حُكمِه : حَكَمَ بالعَدْلِ، أنصف

بَطَن شيءٌ (بُطونًا، ن) : خَفِيَ

بَطنَ الأمرَ (ن، بَطْنًا) : عرف باطِنَه

وَصّاكم به (أمَرَكم به)

بيان الإعراب

ولا آباؤُنا : عطفٌ على الضمير المرفوع المتصل، بدون توكيدِه بضميرٍ مرفوع منفصل، و جاز ذلك لِوُجود لا .

و لا حَرَّمنا من شيءٍ : عطف على : ما أَشْركنا، و شيءٍ منصوب محلا.

كذلك كذب الذين مِن قَبلهم : أي : كذَّب الذين من قبلِهم تَكذيبًا كذلك التكذيبِ أو مثلَ ذلك التكذيبِ

هل عندكم من علم فتخرجوه لنا : من زائدة على مبتَدأٍ، و عند كم متعلق بخبرِ مقدم محذوفٍ، و تُخرجوه مضارع منصوب بِأَنْ مُضمَرَةً بعدَ فاءِ السببيَّة التي أتت بعدَ الاستفهامِ .

شُهداءَكم : مفعول به لـ : هلم، و الموصول نعت لـ : شهداءَ، و المصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض .

و الذين لا يؤمنون : عطف على الموصول المتقدم .

اتل : مضارع مجزوم، لأنه جواب الطلب، والموصول مع صلته في محل نصب مفعول به لـ : اتل .

ألا تشركو : أن هذه تفسيرية أَتَتْ بعدَ معنَى القولِ، و لا ناهية . و الجملة المفسِّرة لا محل لها من الإعراب .

و بالوالدين إحسانا : يتعلق بمحذوف، أي : و أَحْسِنوا بالوالدَينِ إحسانًا .

ما ظَهَرَ منها و ما بَطَن : في محل نصب بدَل مِنْ الفَواحِشَ، و هو بدلُ اشتمالٍ، لأن الظهورَ و البُطونَ من أحوال الفَواحِشِ، و ما بَطن عطف على ماظهَر ·

إلا بالحق : إلا أداة استثناء، و المستثنى منه هو مصدرٌ لا تقتلوا، و بالحق متعلق بنعت محذوف لمصدر محذوف، و هذا المصدر هو المستثنى، أي : لا تقتلوا إلا قتلاً متلبسا بالحق ·

الترجمة

অবশ্যই বলবে তারা যারা শিরক করেছে, যদি ইচ্ছা করতেন আল্লাহ্ তাহলে তো না আমরা শিরক করতাম, আর না আমাদের পূর্বপুরুষরা, আর না হারাম সাব্যস্ত করতাম আমরা কোন কিছুকে। এভাবেই মিথ্যা আরোপ করেছে (ঐ লোকেরা) যারা তাদের পূর্বে (বিগত হয়েছে)। শেষ পর্যন্ত আস্বাদন করেছে তারা আমার শাস্তি। আপনি বলুন, আছে কি তোমাদের কাছে (এর স্বপক্ষে) কোন ইলম (প্রমাণ), যাতে পেশ করতে পারো তোমরা তা আমার সামনে! তোমরা তো অনুসরণ করো, শুধু ধারণা এবং (তোমরা তো) শুধু অনুমান নির্ভর কথা বলো।

আপনি বলুন, (যেহেতু তোমাদের কাছে কোন ইলম নেই) সুতরাং চূড়ান্ত প্রমাণ আল্লাহরই জন্য (সাব্যস্ত) হলো। অনন্তর তিনি যদি ইচ্ছা করতেন তাহলে হেদায়াত দান করতেন তোমাদেরকে, সকলকে।

আপনি বলুন, হাজির করো তোমরা তোমাদের সাক্ষীদেরকে, যারা সাক্ষ্য দেবে যে, আল্লাহ্ হারাম করেছেন (উপরে তোমাদের কথিত) এগুলোকে। যদি তারা (অমূলক) সাক্ষ্য দেয়(ও) তাহলে আপনি সাক্ষ্য দেবেন না তাদের সাথে এবং অনুসরণ করবেন না তাদের খেয়ালখুশির যারা মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে আমার আয়াতসমূহকে এবং যারা ঈমান রাখে না আখেরাতের প্রতি, বরং তারা আপন প্রতিপালকেরই সমকক্ষ সাব্যস্ত করে।

আপনি বলুন, এসো তোমরা, আমি শোনাই (তোমাদেরকে) যা নিষিদ্ধ করেছেন তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের উপর, (অর্থাৎ এই) যে, শরীক করো না তোমরা তাঁর সাথে কোন কিছুকে এবং মা-বাবার সাথে অবশ্যই সদাচার করো।

আর হত্যা করো না তোমরা তোমাদের সন্তানদেরকে দারিদ্র্যের কারণে। আমরাই রিযিক দান করি তোমাদেরকে এবং তাদেরকে। আর কাছেও ঘেঁষো না তোমরা যাবতীয় অশ্লীল বিষয়ের; তা থেকে যা প্রকাশ পেয়েছে তারও, এবং যা লুকায়িত আছে তারও। আর যে প্রাণকে (হত্যা করা) আল্লাহ নিষিদ্ধ করেছেন তাকে তোমরা হত্যা করো না, তবে ন্যায়ভাবে (হত্যা করা যাবে)। আল্লাহ জোর আদেশ করেছেন তোমাদেরকে এ বিষয়ে যাতে তোমরা (তা) বোঝো (এবং আমল করো)।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما أشْرَكْنا و لا آباؤُنا (না শিরক করতাম আমরা, আর না আমাদের পূর্বপুরুষরা) অতিরিক্ত لا দ্বারা তাকীদ করা হয়েছে। তাই তরজমায়ও তাকীদের শৈলী গ্রহণ করা হয়েছে।
কোন কোন তরজমায় আছে– তবে আমরা ও আমাদের পূর্বপুরুষরা শিরক করতাম না। এখানে তাকীদের মর্ম রক্ষিত হয়নি।

(খ) حتى ذاقوا بأسَنا (শেষ পর্যন্ত আস্বাদন করেছে তারা আমার শাস্তি) শেষ পর্যন্ত– এটি حتى الابتدائية এর তরজমা। 'অবশেষে/ এমন কি' -এ দুটি তরজমাও হতে পারে।
ذاقوا এর মাঝে কটাক্ষ রয়েছে, তাই 'শাস্তি ভোগ করা' –এর পরিবর্তে 'শাস্তি আস্বাদন করা' তরজমা করা হয়েছে।

(গ) فتُخرجوه لنا (যাতে পেশ করতে পারো তোমরা তা আমাদের সামনে)
আরো শাব্দিকতা রক্ষা করে বলা যায়, যাতে বের করতে পারো তোমরা তা আমাদের সামনে। (তবে তা সুপ্রচলিত নয়)
'যাতে' শব্দটি فاء السبَب এর তরজমা।
কেউ কেউ তরজমা করেছেন, থাকলে আমার নিকট তা পেশ করো– এ তরজমা মূলানুগ নয়।
'যা আমাদেরকে দেখাতে পারো'– এখানেও فاء السبب এর তরজমা আসেনি।

(ঘ) هل عندكم من علمٍ (আছে কি তোমাদের কাছে কোন প্রমাণ) এখানে নিছক প্রশ্ন উদ্দেশ্য নয়, চ্যালেঞ্জ উদ্দেশ্য, সুতরাং

'তোমাদের কাছে কি কোন যুক্তি/প্রমাণ আছে'- এর পরিবর্তে উপরোক্ত তরজমা করা হয়েছে।

(ঙ) لا تشهد معهم (আপনি সাক্ষ্য দেবেন না তাদের সাথে) এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন, 'আপনি তাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করবেন না। আয়াতের ভাব ও উদ্দেশ্যের দিকে লক্ষ্য করে এ তরজমা করা হয়েছে, কেননা এর উদ্দেশ্য হলো فلا تَقْبَلْ شهادته

থানবী (রহ) বলেছেন, إن شهدوا এর সঙ্গে সদৃশতা রক্ষা করার জন্য فلا تشهد বলা হয়েছে।

কিতাবের তরজমায় সদৃশতার দিকটি রক্ষা করা হয়েছে।

(চ) الذين كذّبوا بآيتنا (যারা মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে আমার আয়াত সমূহকে) যারা আমার আয়াতসমূহকে প্রত্যাখ্যান করেছে/যারা আমার আয়াতসমূহের প্রতি মিথ্যা আরোপ করেছে- এ তরজমাও করা যায়।

(ছ) لا تقربوا الفواحش ما ظهر منها و ما بطن (কাছেও ঘেঁষো না তোমরা যাবতীয় অশ্লীল বিষয়ের; তা থেকে যা প্রকাশ পেয়েছে তারও এবং যা লুকায়িত আছে তারও) এখানে মূল তারকীবের অনুগামী তরজমা করা হয়েছে। 'যাবতীয়' শব্দটি হচ্ছে ال এর বিপরীতে।

الفواحش এর শাব্দিক অর্থ হচ্ছে অশ্লীল কথা ও কাজ - এর প্রতিশব্দরূপে অশ্লীলতা শব্দটি অবশ্য ব্যবহার করা যায়।

বিকল্প তরজমা- তোমরা যাবতীয় প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অশ্লীলতার কাছেও যেয়ো না।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة هَلُمَّ.

٢ - اشرح عطف قوله : ولا أباؤنا على الضمير المرفوع المتصل .

٣ - بم يتعلق قوله : بربهم ؟

٤ - أعرب قوله : و بالوالدين إحسانا .

٥ - ذاقوا بأسنا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - هل عندكم من علم (তোমাদের নিকট কি কোন প্রমাণ আছে?) এ তরজমায় ত্রুটি কী?

(٣) هل ينظُرون إلاَّ أنْ تاتِيَهم الملٰئِكةُ او ياتيَ ربُّك أو ياتيَ بعض
اٰيٰت ربك، يومَ ياتي بعضُ اٰيٰت ربك لا ينفَع نفسًا ايمانُها لم
تكن اٰمَنَتْ مِن قبلُ او كسَبَتْ في إيمانها خَيرًا، قُلِ انتَظِروا
إنَّا منتَظِرون * إنَّ الذين فرَّقوا دينَهم وكانوا شِيَعًا لستَ منهم
في شيءٍ، إنَّما أمرُهم الى اللّٰه ثم يُنَبِّئُهم بما كانوا يَفعَلون *
مَنْ جاءَ بالحَسَنَةِ فَله عَشْرُ أمْثالِها، و مَن جاء بالسَّيئَةِ فلا
يُجزٰى إلا مِثْلَها و هم لا يُظلمون * قل إنَّني هَدٰني ربي إلى
صراطٍ مستقيمٍ * دينًا قِيَما ملَّةَ ابرهيم حنيفًا، و ما كان مِنَ
المشركين *

بيان اللغة

شِيْعَةٌ (و الجمع شِيَعٌ و أَشْياعٌ) فِرقَةٌ، جماعَة، شِيعَةُ فلانٍ : أتباعُه و أنصارُه . وَ الشيعَة : فِرقة كبيرة من المسلمين ضَالَّة، اجتمَعُوا على حُبِّ عليٍّ و آلِه، و بُغضِ أبي بكرٍ و عمرَ و عثمانَ و عامَّةِ الصحابة، رضوان الله عليهم، و الواحد شِيعِيٌّ .

أَمثال : جمعُ مثلٍ و مَثَلٍ، و المِثْلُ : الشَّبهُ و النظير و المماثِلُ
সদৃশ, অনুরূপ, তুল্য

ليس كَمِثْلِه شيءٌ (الكاف زائدة)

و المَثَل : المِثْلُ . المِثالُ — مِثْل এর সমার্থক। উদাহরণ

و المثَل : قولٌ سائرٌ، وَرَد في موضِعٍ فيُنْقَل إلى موضِعٍ آخرَ لِشَبَهٍ بينَهما، و المطلوب منه العِظَةُ و العِبْرَةُ .

بيان الإعراب

هل ينظرون إلا أن تأتيَهم : إلا أداة حصر، و المصدر المؤول في محل نصبٍ مفعول به، و ينظرون بمعنى ينتَظرون .

يومَ : ظرف متعلق بـ : لا ينفَع، و هو مضاف إلى الجملة التي بعدَها .

لم تَكن آمنَتْ : الجملة صفة لـ : نَفْسًا ، و جاز الفصلُ بين الموصوف و صفتِه ، لأن الفاعل ليس بِأَجنبِيٍّ ، و جملة كسبَت عطف على : آمنت بـ : أو ·

و كانوا شِيَعًا : عطف على صلة الموصول ·

لستَ منهم في شيءٍ : الجملة خبر إن ·

و في شيءٍ متعلق بخبر ليس المحذوف ، و منهم متعلق بمحذوف ، و هو حال ، لأنه كان في الأصل نعتًا لـ: شيءٍ فلما تقدَّم عليه صار حالا ، و أصل العبارة : لستَ مستقِرًّا في شيءٍ كائِنٍ منهم ·

عَشْرُ أمثالِها : ذُكِّرَ العدَد ، لأن المعدودَ مضاف إلى مؤنث ، فاكتسَب المذكَّرُ التأنيثَ ·

و يجوز أن تقول : كان في الأصل : فَلَه عَشْرُ حَسَنَاتٍ أمثالها ، ثم حُذف الموصوف ، و أقيم صفتُه مقامَه ، و تُرك العددُ على حاله ·

دِينًا : نَصبٌ على البَدَلِ من مَحَلٍّ إلى صراطٍ ، لأن معناه هداني صراطًا ، و هَدٰى يتعدَّى تارةً بـ : إلى ، و تارة بِنَفسِه ، كما في قوله تعالى : ويَهدِيَكم صراطاً مستقيمًا ·

ملةَ إبراهيم : هذا بدل من دينًا ، أو منصوب على أضمار أعني ·

الترجمة

(মনে হয়) তারা শুধু অপেক্ষা করছে যে, আসবে তাদের কাছে ফিরেশতা, কিংবা আসবেন আপনার প্রতিপালক কিংবা আসবে আপনার প্রতিপালকের বড় কোন নিদর্শন।

যে দিন এসে যাবে আপনার প্রতিপালকের (এই) বড় নিদর্শন সেদিন এমন কোন ব্যক্তির ঈমান আনয়ন তাকে কোন ফল দেবে না, যে পূর্ব থেকে ঈমান এনেছিলো না, কিংবা (ঈমান তো এনেছিলো, কিন্তু) সে অর্জন করেনি তার ঈমানের অবস্থায় কোন নেক আমল।

আপনি বলে দিন, তোমরা (এগুলোর) অপেক্ষায় থাকো, আমরাও অপেক্ষায় থাকছি। যারা (বিভিন্ন মতে) বিভক্ত করেছে তাদের দ্বীনকে এবং বিভিন্ন দলে বিভক্ত হয়েছে, নিঃসন্দেহে নেই আপনি তাদের কোন কিছুতে। তাদের বিষয় আল্লাহর নিকট (সোপর্দ),

তারপর তিনি খবর দিয়ে দেবেন তাদেরকে তাদের অব্যাহত কৃতকর্ম সম্পর্কে।
(কেয়ামতের দিন) যে ব্যক্তি নিয়ে আসবে একটি নেক তার জন্য সাব্যস্ত হবে ঐ নেক আমলের দশগুণ (প্রতিদান), আর যে ব্যক্তি নিয়ে আসবে একটি বদআমল তাকে শুধু ঐ বদআমলের অনুরূপ প্রতিদান দেয়া হবে, আর তাদের প্রতি অবিচার করা হবে না। আপনি বলুন, নিঃসন্দেহে আমি, আমার প্রতিপালক আমাকে পরিচালিত করেছেন সরল পথের দিকে; এক বিশুদ্ধ দ্বীনের দিকে, অর্থাৎ একনিষ্ঠ ইবরাহীমের তরীকা। আর ছিলেন না তিনি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) هل ينظرون (মনে হয়) তারা শুধু অপেক্ষা করছে– প্রকৃতপক্ষে তারা এ ধরনের কোন অপেক্ষায় ছিলো না, তবে সুপ্রমাণিত সত্যকে গ্রহণ না করার কারণে তাদেরকে অনুরূপ অপেক্ষাকারীর অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে; এ বিষয়টির প্রতি ইঙ্গিত করার জন্য থানবী (রহ) তাঁর তরজমায় এই বন্ধনী যোগ করেছেন এবং কিতাবের তরজমায় তা অনুসরণ করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা– লোকেরা এ ছাড়া আর কিসের পথ দেখছে যে, তাদের কাছে ...

(খ) بعض آيات ربك (আপনার প্রতিপালকের বড় কোন নিদর্শন) থানবী (রহ) 'বড়' শব্দটি যোগ করেছেন তাফসীরে রূহুল মাআনীর হাওয়ালা দিয়ে। তাতে আছে যে, بعض দ্বারা নিদর্শনটির বড়ত্ব ও ভয়াবহতা বোঝানো হয়েছে।
অন্যদের তরজমা, 'তোমার প্রতিপালকের কোন নিদর্শন'।

(গ) في إيمانها (তার ঈমানের অবস্থায়) এর তরজমা কেউ করেছেন 'আপন বিশ্বাস অনুযায়ী', কেউ করেছেন, 'ঈমানের মাধ্যমে' এ তরজমা মূলানুগ নয়।
শায়খায়ন তরজমা করেছেন, اپنے ایمان میں (নিজের ঈমানের মধ্যে) মোটামুটি এই আলোকে কিতাবের তরজমাটি লেখা হয়েছে।
لم تكن آمنت من قبل (পূর্ব থেকে ঈমান এনেছিলো না) এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন– پہلے سے ایمان نہ لایا تھا

কিতাবের তরজমায় তাঁর অনুসরণ করা হয়েছে।
'ঈমান আনেনি' এর চেয়ে এটি অধিকতর মূলানুগ।

(ঘ) انتظروا। (তোমরা [এগুলোর] অপেক্ষায় থাকো) একটি বাংলা তরজমায় আছে, তোমরা পথের দিকে চেয়ে থাকো। শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমায় আছে, تم راہ دیکھو উর্দু বাগধারায় এর অর্থ হলো, 'তোমরা অপেক্ষায় থাকো'।
সম্ভবত এটা দেখেই উপরের তরজমা করা হয়েছে, কিন্তু এ তরজমা ঠিক নয়।
থানবী (রহ) একটি বন্ধনী যোগ করে অপেক্ষার বিষয়বস্তুটি পরিষ্কার করে দিয়েছেন।

(ঙ) لستَ منهم في شيءٍ (নিঃসন্দেহে নেই আপনি তাদের কোন কিছুতে) এর অন্য তরজমা হতে পারে-
(ক) তাদের সাথে আপনার কোন সম্পর্ক নেই।
(খ) তাদের কোন দায়িত্ব আপনার নয়।
তবে কিতাবের তরজমাটি অধিকতর মূলানুগ।

(চ) من جاء بالحسنة فله عَشْرُ أمثالها (যে ব্যক্তি নিয়ে আসবে একটি নেক তার জন্য সাব্যস্ত হবে ঐ নেক আমলের দশগুণ) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা।
থানবী (রহ) লিখেছেন, যে ব্যক্তি একটি নেক আমল করবে। সে তার দশগুণ পাবে।
جاء শব্দটি দ্বারা বোঝা যায় যে, কেয়ামতের দিন নেক আমল নিয়ে হাজির হওয়ার কথাই এখানে বলা হয়েছে। কিন্তু থানবী (রহ) এটিকে عمل এর অর্থে গ্রহণ করেছেন।

(ছ) ملّة ابراهيم حنيفا (একনিষ্ঠ ইবরাহীমের তরীকা) এখানে মূল তারকীব থেকে সরে গিয়ে حنيفا কে ইবরাহীমের ছিফাতরূপে তরজমা করা হয়েছে। থানবী (রহ) حنيفا শব্দটিকে ملّة থেকে হাল ধরে তরজমা করেছেন, 'ইবরাহীমের তরীকা যাতে সামান্য বক্রতাও নেই'।
এ তরজমাটি এমনও হতে পারে, 'যা পূর্ণ বক্রতামুক্ত / সরলসোজা'

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ شيعةٍ
٢ - أعرب قوله : لستَ منهم في شيءٍ

٣ – كيف ذُكِّر العددُ مع تذكير المعدود في قوله : عَشْرُ أمثالِها ؟

٤ – أعرب قوله : حنيفا

٥ – هل ينظرون এর তরজমার শুরুতে (মনে হয়) যোগ করার উদ্দেশ্য ব্যাখ্যা করো।

٦ – في إيمانها এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) المص * كِتٰبٌ اُنزِل اليك فلا يَكُنْ في صَدرك حَرَجٌ منه لِتُنذرَ به و ذِكْرٰى للمؤمنين * اِتَّبِعوا ما اُنزِل اليكم مِن ربكم وَ لا تَتَّبِعوا مِن دُونه اَولياءَ، قليلا ما تَذَكَّرون * وَ كم من قَرْيةٍ اَهْلكنٰها فَجاءها بَاسُنا بَياتًا او هم قائِلون * فَما كان دَعْوٰهم اِذ جاءَهم باسُنا اِلَّا اَنْ قالوا اِنَّا كنا ظٰلمين * فَلَنَسْئَلَنَّ الذين اُرسِل اليهم وَ لنسئَلَنَّ المرسَلين * فَلَنَقُصَّن عليهم بعلمٍ و ما كنا غائبين * .

بيان اللغة

حَرَج : إثم، ذَنب، ضِيق، عَدَمُ ارتياحٍ . حَرج الرجلُ (س، حَرَجًا) أذنَبَ .
حَرِج الصدرُ : ضاقَ، فَقَدَ ارتياحَه و رِضاه
أحرَجه : أوقَعه في حَرَجٍ، أي : إثمٍ
أحرَجه : أوقَعه في حَرَجٍ، أي : ضِيقٍ
أحرَج فُلانًا إلى ... ألجَأه إلى ...

بَياتًا (ليلا) بَاتَ فلان (بَيْتًا و بَياتًا و مَبيتا و بَيْتوتَةً، ض) أدركَه الليلُ، نامَ أو لم يَنَمْ . بات في مكانٍ كذا : أقامَ به الليلَ

قائِلون (نائمون في الظَّهيرة)
قال (قَيْلاً و قَيلولة، ض) نام في القائِلة، أي : الظَهيرَة، و القَيلولة هي استراحَةٌ نصفِ النهار مَع النوم أو بلا نومٍ .

بيان الإعراب

كتاب أنزل إليك : أي : هذا كتاب، و الجملة صفة لـ : كتاب .

فلا يَكُنْ : الفاء تَعليلية، و النهي لِلْحَرَجِ لفظًا و للمخاطَب معنًى ، أي : لا تَحْرَجْ به ·

و في صدرك متعلق بمحذوف، خبر الناقص المقدم، و حرج اسم الناقص المؤخر، و من سببية، تتعلق بمحذوف صفة لـ : حرج

و أصل العبارة : لا يكن حرَج كائن من الكتاب موجودًا في صدرك

و يجوز أن يتعلق مِنْ بِـ : حَرَجٌ، أي : لا يكن حَرَجٌ من إنكارِ الكُفار الكتابَ :

لِتُنذِرَ : متعلق بـ : أنزل

ذِكْرٰى : خبر مبتدأٍ محذوف، و للمؤمنين متعلق بنعتٍ محذوف لـ : ذكرٰى، أي : هو ذِكرٰى نافعةٌ للمؤمنين ·

من دونه أولياءَ : من دونه متعلق بمحذوف، هو حال من مفعولِ لا تتبعوا، و هو في الأصل نعت تقدَّم على منعوته ·

قليلا ما تذكرون : قليلًا نعتٌ نائب عن المفعول المطلق، أي : تَذَكَّرون تذكُّراً قليلا، أو هو نعت لظرف محذوفٍ، أي : تذكرون زمانًا قليلا · و ما زائدة لِتوكيد القِلَّة ·

و تذكرون أصله تتذكرون، حذفت إحدٰى التاءين تَخفيفًا

و كم من قريةٍ أهلكنها : الواو استئنافية، و كم خبرية تدل على كَثرةٍ، في محَل رفع مبتدأ، و من زائدة، و قريةٍ مجرور لفظًا منصوب محلا، لأنه تمييز كم، و جملة أهلكنها خبر كم ·

فجاءها بأسنا : الفاء للترتيب، و هو يقتضي مجيءَ البأسِ بعدَ الإهلاك، و هو خلاف الواقِع، فمعنٰى أهلكنها أردنا إهلاكَها؛ و لا شك أن إرادةَ الإهلاك قبلَ مجيءِ البأس، فَيَصِحُّ الترتيب ·

و قال قوم هو على القَلْبِ، أي : جاءها بأسُنا فأهلَكْناها ·

بَياتا : هذا مصدر يجوز أن يكون ظرفًا باعتبار المعنى، و أن يكون في موضع الحال بمعنى بائتين ·

هم قائلون : عَطفٌ بـ : أو على : بياتًا، فالجملة حالية، أو هو ظرف بمعنى وقتَ قيلولتِهم ·

فما كان دعواهم إذ جاءهم بأسُنا إلا أَنْ قالوا : إذ ظرف متعلق بـ : دَعْوٰى،
و هو اسم كان، و إلا أداة حصر، و المصدر المؤول خبر كان .

بِعلْمٍ : هذا في موضِع الحال بمعنٰى عالمين، أو هو متعلق بمحذوف هو حال من فاعل نَقُصَّ، أي : متلبسين بعلِم (بِأَحوالِهم) .

غائبين : أي : عنهم، و الجملة حالية .

الترجمة

আলিফ, লাম, মীম, ছোয়াদ। (এ) সেই কিতাব যা নাযিল করা হয়েছে, আপনার প্রতি যাতে সতর্ক করেন আপনি (মানুষকে) তা দ্বারা, সুতরাং যেন না থাকে আপনার অন্তরে কোন অপ্রসন্নতা, (কাফিরদের) তা (না মানা)র কারণে। আর (এটি বিশেষভাবে) মুমিনদের জন্য উপদেশ।

(হে মুমিনগণ) অনুসরণ করো তোমরা ঐ কিতাব যা (রাসূলের মাধ্যমে) নাযিল করা হয়েছে তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে। আর অনুসরণ করো না তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে অন্য বন্ধুদেরকে। (কিন্তু) অতি অল্পই উপদেশ গ্রহণ করে থাকো তোমরা।

আর কত জনপদ, ধ্বংস করেছি আমি সেগুলোকে এবং এসেছে সেখানে আমার আযাব, (তাদের) রাত্রিযাপনের অবস্থায়, কিংবা এমন অবস্থায় যে তারা মধ্যাহ্নবিশ্রাম করছিলো। তো যখন এলো তাদের কাছে আমার আযাব তখন তাদের চিৎকার ছিলো শুধু এ কথা বলা যে, অবশ্যই আমরা ছিলাম যালিম।

যাক, অতি অবশ্যই জিজ্ঞাসা করবো আমি তাদেরকে যাদের নিকট প্রেরণ করা হয়েছে এবং অতি অবশ্যই জিজ্ঞাসা করবো প্রেরিতদেরকে। অনন্তর অতি অবশ্যই শোনাবো আমি তাদেরকে (তাদের অবস্থা) পূর্ণ জ্ঞানের সাথে। আর আমি তো ছিলাম না অনুপস্থিত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) كتاب أنزل إليك (পুরো আয়াতের তরজমাটি পড়ো তারপর সামনের তরজমাটি দেখো) তোমার নিকট কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে– তোমার মনে যেন এর সম্পর্কে কোন সংকোচ না থাকে এর দ্বারা সতর্কীকরণের ব্যাপারে।

এ তরজমার বড় ত্রুটি এই যে, তা মূল থেকে বেশ বিচ্যুত। যেমন–

(ক) তোমার নিকট কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে– এটি মূলত نزل إليك الكتب এর তরজমা।

(খ) ف অব্যয়টির অর্থ এই যে, যেহেতু এটি আল্লাহর পক্ষ হতে অবতীর্ণ কিতাব সেহেতু মানুষের কাছে তা পৌঁছানোর ক্ষেত্রে (কিংবা কাফিরদের তা না মানার কারণে) আপনার মনে কোন সংকোচ না থাকা উচিত। ف এর তরজমা বাদ যাওয়ার কারণে এই ভাব ও মর্মটি ক্ষুণ্ন হয়েছে।

(গ) এ তরজমা দ্বারা বোঝা যায়, সতর্কীকরণের বিষয়ে সংকোচ করতে নিষেধ করা হয়েছে। অথচ لتنذر এর لام হচ্ছে হেতুবাচক এবং তার সম্পর্ক হচ্ছে أنزل এর সাথে।

حرج এর তরজমা সংকোচ হতে পারে, কিন্তু এর চেয়ে উত্তম তরজমা হলো 'অপ্রসন্নতা'– অর্থাৎ তারা যদি কিতাবের তাবলীগকে প্রত্যাখ্যান করে তাহলে আপনার মনক্ষুণ্ন হওয়ার কিছু নেই।

একটি তরজমায় حرج এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করা হয়েছে 'সংকীর্ণতা'– বাংলায় এটি উদারতার বিপরীত শব্দ। সুতরাং এটি এখানে সঙ্গত নয়।

(খ) فجاءها بأسنا কিতাবে ف কে এখানে و এর সমার্থক ধরে তরজমা করা হয়েছে, যাতে শুধু এ কথা বোঝা যায় যে, ধ্বংস করা এবং আযাব আসা দুটোই ঘটেছিলো। ف কে তারতীবের অর্থে গ্রহণে বাস্তব সমস্যা রয়েছে।

ف কে তারতীবের অর্থে গ্রহণ করলে أهلكنا এর তরজমা হবে, ধ্বংসের ইচ্ছা করেছি (তারপর আযাব এসেছে)।

(গ) بياتا হচ্ছে মুফরাদ হাল, আর هم قائلون হচ্ছে জুমলা হাল, তরজমায় সে পার্থক্য বিবেচনায় আনা হয়েছে।

(ঘ) فما كان دعوهم إذ جاءهم بأسنا إلا أن قالوا (তো যখন এলো তাদের কাছে আমার আযাব তখন তাদের চিৎকার ছিলো শুধু এ কথা বলা যে, অবশ্যই আমরা ছিলাম যালিম।

বিকল্প তরজমা– তো যখন তাদের কাছে আমার আযাব এলো, তখন তারা শুধু চিৎকার করে বলছিলো, আমরা তো জালিম ছিলাম।

'তখন তাদের মুখ থেকে এ ছাড়া আর কোন কথা বের হচ্ছিল না যে, ...' এখানে বিনা প্রয়োজনে মূল থেকে সরে যাওয়া হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ قائِلونَ شَرْحاً بسيطًا .

٢ – أعرب قولَه : ذِكْرٰى للمؤمنين .

٣ – أعرب قوله : قليلا .

٤ – بم يتعلق إذ في قوله : إذ جاءهم بأسنا ؟

٥ – তাদের কাছে আমার আযাব এসেছে রাত্রে/রাত্রিবেলায়, অথবা মধ্যাহ্ন বিশ্রামের অবস্থায়। – এ তরজমায় মূলের সাথে অসঙ্গতি আলোচনা করো।

٦ – (ক) যখন তাদের কাছে আমার আযাব উপস্থিত হয় তখন তাদের কথা এই ছিলো যে, তারা বললো ....

(খ) যখন আমার শাস্তি তাদের উপর আপতিত হয়েছিলো তখন তাদের কথা শুধু এই ছিলো যে, নিশ্চয় আমরা যালিম ছিলাম।

উপরের দু'টি তরজমা পর্যালোচনা করো।

(٥) قل اَمَر ربي بِالقِسْطِ، و اَقِيموا وُجوهَكم عِندَ كلِّ مسجدٍ و
ادعُوه مخلِصين له الدينَ، كما بَدَاَكم تعودون * فَريقًا هَدٰى
وَ فريقًا حَقَّ عليهم الضَّلٰلَةُ، اِنهم اتخذوا الشَّيٰطِينَ اولياءَ
مِن دون اللّٰه و يحسَبون اَنَّهم مهتَدون * يٰبَني اٰدمَ خذوا
زينَتَكم عندَ كلِّ مسجِدٍ و كُلوا و اشرَبوا و لا تُسرِفوا، اِنه
لا يُحب المسرِفين * قل مَنْ حَرَّمَ زينةَ الله التي اَخْرَجَ لِعباده و
الطيِّبٰت منَ الرزقِ، قل هي لِلذين اٰمَنوا في الحيٰوة الدنيا
خالِصةً يومَ القيٰمةِ، كذلك نُفصِّل الآيٰت لِقوم يعلَمون * قل
اِنما حرَّم ربي الفَواحِشَ ما ظَهَر منها و ما بَطن و الاِثمَ و

البَغْيَ بغَيرِ الحق وَ أن تُشركوا بالله ما لم يُنزِّل به سُلطٰنا و أَنْ تقولوا على الله ما لا تَعلمون * وَ لِكلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ، فَاذا جاءَ اَجَلُهم لا يَستاخِرون ساعَةً و لا يستقدِمون *

بيان اللغة

القِسط : انظر ٣/٦/٣ حَقَّ عليه : وَجَبَ عليه و لَزِمه (ض، حَقًّا)

زينة : الزينة ما يُزَيِّن الإنسانَ، و الزينة ثلاث : زينة نفسيَّة كالعلم و الإيمان و مَكارمِ الآخلاق، و زينة بَدنِيَّةٌ، كالقوَّة و اعتدالِ الخَلْقِ و جمال الوَجه، و زينة خارجيَّة كالمال و الجاه و جَمالِ اللباس ·

عندَ كل مسجد : عند كل سُجود، هو مصدر ميمي على غير قياس · أو هو اسم مكانٍ على غير قياسٍ أيضا، فالقياسُ أن تكون العينُ مفتوحةً، لأن عين المضارع مضمومة ·

أقيموا وجوهَكم : تَوَجَّهوا إلى العبادة مستقيمين ·

بَدَأَ : أنشَأ و أوجَدَ (ف، بَدْأً) بَدَأ العمَلَ : شرع، و بَدأ به : شرع به، فَعَله قبل غيره، و بَدأ بفلان : قَدَّمه على غيره ·

بَدأَ شيءٌ : حَدَث و نَشَأ

بَدأ يفعل : أخذ و شرع يفعل ·

أبدأ الله الخلقَ : أوجدَه من العدَم، فهو المُبْدِئُ

بيان الإعراب

أقيموا ... : معطوفة على جملة أمر ربي بالقسط، و هي خَبرية لفظًا إنشائية معنًى، فالمعنى : أقسِطوا و أقيموا، فَصَحَّ عطفُ الإنشاء على الإنشاء، و عطف الإنشاء علي الخبر ضعيف ·

كما بَدأكم تعودون : الكاف متعلق بمصدر محذوف، أو نعتٌ له، و ما حرف مصدر · أي : تعودون عودًا كبدئِكم/أو مثلَ بدئِكم ·

فريقا : مفعول به مقدم لـ : هَدٰى، و فريقا الثاني مفعول به لفعل محذوف، أي أَضَلَّ، و قد دل عليه الفعل الآتي ·

و جملة حق عليهم الضلالةُ صفة لـ : فريقا

من حرم زينة الله : من اسم استفهامٍ للإنكار، في مَحَل رفع مبتدأ، و جملة حرم خبرُ مَنْ . و الطيباتِ عطف على زينةَ، و من الرزق متعلق بمحذوف حال، أي : معدودةً من الرزق .

هي للذين امنوا في الحيوة الدنيا : أي : هي مخلوقةٌ في الحيوة الدنيا للذين امَنوا، أو هي مخلوقة للذين آمنوا في الحيواة الدينا .

خالصةً : حال من الضمير المستتر في الخبر المحذوف، و يومَ القيمة ظرف لـ : خالصةً

أي : هي مخلوقة في الحيوة الدنيا للمؤمنين (و إن شاركهم الكفارُ فيها) حالةَ كونِها خالصةً يومَ القيمة (للمؤمنين لا يشاركهم الكفارُ فيها)

كذلك نفصل الآيت : أي نُفصلها تفصيلًا كذلك أو مثلَ ذلك التفصيلِ

بغير الحق : يتعلق بـ : البغيَ، لأنه مصدر، أو متعلق بحال محذوفة، أي : البغيَ متلبسًا بغير الحق .

و أن تُشركوا : المصدر المؤول معطوف على : البغيَ، أو هو مفعول به لفعل محذوف، أي : و حَرَّم ربي أن تشركوا ... فيكون عطفُ الجملة على الجملة .

و أن تقولوا : معطوف على المصدر المؤول السابق .

الترجمة

আপনি বলুন, আদেশ করেছেন আমার প্রতিপালক ন্যায় বিচারের। (সুতরাং তোমরা ন্যায় বিচার করো) এবং (আল্লাহর অভিমুখে) সোজা রাখো তোমরা নিজেদেরকে প্রত্যেক সিজদার সময় এবং ডাকো আল্লাহকে আনুগত্যকে তাঁরই প্রতি একনিষ্ঠ রেখে। ফিরে আসবে তোমরা, যেমন তিনি প্রথমে সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে।

এক দলকে তিনি হিদায়াত দান করেছেন, আর (গোমরাহ করেছেন) এমন একটি দলকে, যাদের উপর অবধারিত হয়ে গেছে গোমরাহি। নিঃসন্দেহে এরা (জ্বিন ও মানব) শয়তানদেরকে অভিভাবক বানিয়েছে, আল্লাহকে ছেড়ে; আর তারা মনে করে যে, তারা হিদায়াতপ্রাপ্ত।

হে বানী আদম, পোশাক গ্রহণ তোমরা তোমাদের সুন্দর করো

প্রত্যেক নামাযের সময় এবং আহার করো ও পান করো, তবে অপচয় করো না। (কারণ) মোটেই তিনি পছন্দ করেন না অপচয়কারী- দেরকে।

আপনি বলুন, কে হারাম করেছে আল্লাহর (দেয়া পোশাক) সজ্জাকে যা সৃষ্টি করেছেন তিনি আপন বান্দাদের জন্য এবং উত্তম খাদ্য সমূহকে (কে হারাম করেছে)।

আপনি বলুন, এসব নেয়ামত পার্থিব জীবনে তাদের জন্য, যারা ঈমান এনেছে, আর কিয়ামতের দিন তা (মুমিনদের জন্য) বিশিষ্ট। এভাবে বিশদভাবে বর্ণনা করি আমি সমস্ত আয়াতকে এমন সম্প্রদায়ের জন্য যারা বোধ রাখে।

আপনি বলুন, আমার প্রতিপালক তো হারাম করেছেন শুধু অশ্লীল বিষয়সমূহকে, তা থেকে যা প্রকাশ পেয়েছে এবং যা গোপন রয়েছে (সবগুলোকে) এবং যাবতীয় পাপ এবং (কারো উপর) অন্যায়ভাবে বাড়াবাড়ি করা এবং (হারাম করেছেন এ বিষয় যে,) তোমরা আল্লাহর সাথে শরীক করবে এমন কিছুকে যার স্বপক্ষে অবতীর্ণ করেন নি তিনি কোন প্রমাণ এবং তোমরা বলবে আল্লাহ্ সম্পর্কে এমন কিছু যা তোমরা জানো না।

আর প্রত্যেক সম্প্রদায়ের (প্রত্যেক ব্যক্তির) জন্য রয়েছে নির্ধারিত সময়। সুতরাং যখন এসে যাবে তাদের নির্ধারিত সময় তখন তারা মুহূর্তকাল পিছোতেও পারবে না, (এবং) এগুতেও পারবে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اقيموا وجوهكم এর পূর্বে (তোমরা ন্যায় বিচার করো) এ বন্ধনী সংযোজন করা হয়েছে ব্যাকরণগত প্রয়োজনে।

(খ) و ادعوه مخلصين له الدين (এবং ডাকো আল্লাহকে আনুগত্যকে তাঁরই প্রতি একনিষ্ঠ রেখে) এখানে যামীরের পরিবর্তে তার مرجع উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে। 'ডাকো'- এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর শব্দানুগ তরজমা। আর থানবী (রহ) এর ভাবতরজমা হলো, 'ইবাদত করো'।

অন্য দুটি তরজমা দেখো-

(ক) তাঁরই আনুগত্যে বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে একনিষ্ঠভাবে তাঁকে ডাকবে।

(খ) তাঁকে খাঁটি আনুগত্যশীল হয়ে ডাকো।

তরজমা দুটো অতিমাত্রায় মূলবিমুখ। কিতাবে মূল তারকীবের অনুগামী তরজমা করার চেষ্টা করা হয়েছে।
সরল তরজমা এমন হতে পারে–
আর তোমরা তাঁকে ডাকো, তাঁরই প্রতি অনুগত ও একনিষ্ঠ থেকে।

(গ) و فريقا حق عليهم الضلالة (এবং [গোমরাহ্ করেছেন] এমন একটি দলকে যাদের উপর অবধারিত হয়ে গেছে) এটি ব্যাকরণভিত্তিক তরজমা। সরল তরজমা এই–
আর একদলের উপর গোমরাহি অবধারিত হয়ে গেছে।
حق এর তরজমা 'নির্ধারিত হয়ে গেছে' করা পূর্ণ সঠিক নয়।

(ঘ) خذو زينتكم عند كل مسجد (গ্রহণ করো তোমরা তোমাদের সুন্দর পোশাক প্রত্যেক নামাযের সময়) এ আয়াত নাযিল হয়েছে মুশরিকদের নগ্ন অবস্থায় তাওয়াফ করা প্রসঙ্গে; তাই কেউ কেউ তরজমা করেছেন, প্রত্যেক তাওয়াফের সময়।
থানবী (রহ) مسجد কে মসজিদ অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন, 'মসজিদে প্রত্যেক উপস্থিতির সময়'; যাতে নামায ও তাওয়াফ দুটোই আয়াতের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যায়।
زينتكم এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, اپنی آرائش (নিজেদের 'সজ্জা') থানবী (রহ) লিখেছেন, اپنا لباس (নিজেদের পোশাক) কিতাবের তরজমায় উভয় দিক রক্ষা করা হয়েছে।

(ঙ) كلوا و اشربوا আহার করো এবং পান করো।
বিকল্প তরজমা– পানাহার করো/খানাপিনা করো।
আয়াতের সাথে তারতীবের অভিন্নতার কারণে দুটি বিকল্প তরজমার দ্বিতীয়টি অধিক উত্তম। আর মূল তারকীবের অনুগামী হিসাবে কিতাবের তরজমাটি সর্বোত্তম।

(চ) من حرم زينة الله (কে হারাম করেছে আল্লাহর [দেয়া পোশাক] সজ্জাকে যা সৃষ্টি করেছেন তিনি আপন বান্দাদের জন্য, এবং উত্তম খাদ্য সমূহকে [কে হারাম করেছে]) এ তরজমাটি মূল তারকীবের যথাসম্ভব অনুগামী। সরল তরজমা এই–
আপনি বলুন, আল্লাহ্ তাঁর বান্দাদের জন্য যে সাজ সৃষ্টি করেছেন এবং উত্তম খাদ্যসমূহ, এগুলোকে কে হারাম করেছে?

কিতাবের তরজমায় প্রয়োজনে أخرج এর ভিন্ন প্রতিশব্দ গ্রহণ করা হয়েছে, এবং الطيبت من الرزق এর তরজমা ভিন্ন তারকীবে করা হয়েছে।

(ছ) إنما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها و ما بطن (আমার প্রতিপালক তো হারাম করেছেন শুধু অশ্লীল বিষয়সমূহকে, তা থেকে যা প্রকাশ পেয়েছে এবং যা গোপন রয়েছে (সব গুলোকে)। এর সরল তরজমা-
আমার প্রতিপালক তো হারাম করেছেন শুধু প্রকাশিত ও অপ্রকাশিত যাবতীয় অশ্লীলতাকে।

(জ) و لكل امة أجل আর প্রত্যেক সম্প্রদায়ের (প্রত্যেক ব্যক্তির) জন্য ....
এটি থানবী (রহ) এর তরজমা, তিনি বলেছেন, এ তরজমার কারণ এই যে, তাফসীরে রূহুল মাআনীমতে এখানে উহ্যরূপটি এই- ولكل واحد من كل أمة কেননা মৃত্যুর সময় জাতিগতভাবে নয়, বরং ব্যক্তিগতভাবে নির্ধারিত।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ مسجدٍ .
٢ - اشرح عطف أقيموا على : أمر ربي بالقسط .
٣ - أعرب قوله : كذلك نفصل الايت إعرابا مفصلا .
٤ - بِمَ يتعلق قوله : بغير الحق .
٥ - ادعوه مخلصين له الدين و এর তরজমা সম্পর্কে বিশদ পর্যালোচনা করো
٦ - كلوا و اشربوا এর তিনটি তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) يٰبَنِي اٰدمَ اِمَّا ياتِيَنَّكم رسُل منكم يقصُّون عليكم اٰيتي فَمَنِ
اتَّقٰى و اصلَح فلا خوف عليهم و لا هم يحزَنون * و الذين
كذَّبوا بِاٰيٰتنا و استكبَروا عنها اولئك اَصْحٰب النار، هم فيها
خٰلدون * فَمَن اظلَمُ ممن افتَرٰى على الله كذِبًا او كذَّب
بِاٰيٰته، اولئك يَنالُهم نَصيبُهم مِنَ الكتٰب، حتى اِذا جاءتهم

হিসাবে এটি গ্রহণযোগ্য এবং অধিকতর [illegible]। কিন্তু এর প্রয়োজন নেই।

(ঙ) له خوار (যার রয়েছে হাম্বা রব) যা হাম্বা রব করতো/যার মধ্য থেকে গরুর শব্দ বের হতো/ তাতে গরুর আওয়ায ছিলো/ তাতে একটি আওয়ায ছিলো– এগুলো মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা। এগুলোর মাঝে প্রথম তরজমাটি শুধু গ্রহণযোগ্য।

(চ) لا يكلمهم (কথা [পর্যন্ত] বলছে না তাদের সাথে) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'তাদের সাথে কথা পর্যন্ত বলতো না'
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা হলো, তাদের সাথে কথাও বলে না।
অতীতের ঘটনা হিসাবে 'কথা বলতো না' এ তরজমা হতে পারে। কিন্তু আয়াতের উদ্দেশ্য হচ্ছে ঘটনাটিকে শ্রোতার সামনে বর্তমানরূপে তুলে ধরা। সেদিক থেকে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা অধিকতর নিকটবর্তী।
কথা (পর্যন্ত) বলছেনা – এটিকে 'উপাস্য'-এর অযোগ্যতার ন্যূনতম উদাহরণরূপে বলা হয়েছে, অর্থাৎ উপাস্য হওয়ার অন্যান্য যোগ্যতা দূরে থাক, তা তো কথাই বলতে পারবে না। আয়াতের এই ভাবটুকু তুলে আনার জন্য দুই শায়খ দু'টি শব্দ যোগ করেছেন। কিতাবে থানবী (রহ) এর অনুসরণে 'পর্যন্ত' শব্দটি যোগ করা হয়েছে, তবে শব্দটি যেহেতু আয়াতে উচ্চারিত নয়, সেহেতু সেটাকে বন্ধনীতে ব্যবহার করা হয়েছে।

(ছ) و كانوا ظالمين (আসলে ছিলো তারা যালিম)– এই جملة حالية এসেছে তাদের হাকীকত তুলে ধরার জন্য, তাই কিতাবে و এর তরজমা করা হয়েছে, 'আসলে'। কেউ কেউ তরজমা করেছেন 'বস্তুত'; সেটাও গ্রহণযোগ্য।

(জ) قالوا لئن لم يرحمنا (তারা বললো) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন, তারা বলতে লাগলো– কারণ কথাটি তারা বারবার বলবে এটাই স্বাভাবিক।
কিতাবের তরজমায় মূলশব্দকে অনুসরণ করা হয়েছে।
যদি আমাদেরকে দয়া না করেন এবং আমাদের প্রতি দয়া না করেন, দুটোরই প্রচলন বাংলায় রয়েছে। প্রথমটি কোরআনী তারকীবের অনুকূল।

(ঝ) غضبان أسفا 'ক্রুদ্ধ ও ক্ষুব্ধ অবস্থায়' – সমশ্রেণিতা বিবেচনা করে শব্দদুটিকে পছন্দ করা হয়েছে। থানবী (রহ) أسفا এর তরজমা লিখেছেন, 'দুঃখভারাক্রান্ত অবস্থায়'– তিনি সম্প্রসারিত তরজমা করেছেন।

(ঞ) بئسما خلفتموني من بعدي (তোমরা আমার কত না নিকৃষ্ট প্রতিনিধিত্ব করেছো, আমার যাওয়ার পরে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা।

থানবী (রহ) এভাবে ভাবতরজমা করেছেন, আমার পরে তোমরা এ বড় অন্যায় আচরণ করেছো।

(ট) ألقى الألواح – ফেলে দিলেন/ছুঁড়ে ফেললেন, এ তরজমা নবীর শান উপযোগী নয়। থানবী (রহ) বলেছেন, মূসা (আঃ) ফলকগুলো এত দ্রুত রেখেছিলেন, যে সাধারণ চোখে ফেলে দেয়ার মত মনে হতে পারে। রূহুল মাআনীতে এ ব্যাখ্যা রয়েছে। এ ব্যাখ্যার আলোকে কিতাবের তরজমায় (যেন) এই বন্ধনী যোগ করা হয়েছে।

থানবী (রহ) ভাবতরজমা করেছেন এভাবে– এবং ফলকগুলো খুব দ্রুত একদিকে রেখে দিলেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ عِجْلٍ
٢ – بم يتعلق قوله : من حُلِيِّهم ؟
٣ – أعرب جسدًا و اذكر محلَّ إعرابِ الجملة : له خوار .
٤ – اشرح أصل ا بنَ أمِّ
٥ – 'নিজেদের অলংকার দ্বারা' এ তরজমাটি পর্যালোচনা করো
٦ – ألقى الألواح এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ سْئَلهم عن القريَةِ التي كانت حاضِرةَ البحرِ ، اِذ يعدُون في السَّبْتِ اِذ تَاتِيهم حِيتانُهم يومَ سبتِهم شُرَّعًا و يومَ لا يَسبِتون لا تَاتيهم، كذلك نَبلوهم بما كانوا يفسُقون * وإذ قالَت اُمَّة منهم لم تَعِظون قومًا اللهُ مُهْلِكُهم أو معذِّبهم عذابًا شديدًا، قالوا مَعذِرةً الى ربكم و لعلهم يتقون * فلما

نَسوا ما ذُكِّروا به أَنجينا الذين يَنْهَون عن السوءِ و اخَذنا
الذين ظَلَموا بِعذاب بَئيسٍ بما كانوا يفسُقون * فَلما عتَوا
عَن ما نُهوا عنه قُلنا لهم كونوا قِرَدةً خاسِئِين * وَ اِذ تَاَذَّن
ربك لَيَبْعَثَنَّ عليهم اِلى يَومِ القِيٰمَة مَن يَسومُهم سوءَ
العَذابِ، اِنَّ ربك لَسَريعُ العِقاب، وَ اِنَّه لَغفور رحيم *

بيان اللغة

حاضِرَةَ البحرِ : قُرْبَ البحرِ، أو قريبةً مِنَ البحرِ
يعدُون : يَتجاوَزون الحدَّ (ن، عَدْواً و عُدْوانًا)
سَبَتَ فلان (ض، سَبْتًا) : دخَل في يوم السبتِ
سَبَتَ اليهودُ : قامَت بِأمرِ سَبْتِها و عَظَّمَتْ سَبْتَها بِتَركِ الصيد
وَ الاشتغال بالعِبادَة তাদের শনিবারের করণীয় করলো
شُرَّعًا : جمعُ شارعٍ، مِن شَرَع عليه (شَرْعًا و شُروعًا، ف) : دَنا منه و
قَرُب
مَعذِرةً : هذا مصدر، من باب ضَرَب
عَذَر فلانًا في صَنْعِه (ض، عُذْرًا و مَعذِرَةً) قبل عذرَه، رفعَ عنه
اللومَ أو الذنبَ فيه তার কাজের বিষয়ে তার থেকে তিরস্কার বা
অপরাধ প্রত্যাহার করলো।
اعتذَر عن فعلِه/من فعلِه : احتَجَّ لِنفَسِه و أبدٰى عذرَه فيما
فعَل . তার কর্মের স্বপক্ষে অজুহাত বা কৈফিয়ত পেশ করলো
اعتذَر إليه : طلَب منه قُبولَ معذرَته
عُذرٌ (ج) أعذار، الحجَّة التي يَعتذِر بها
مَعذِرَة (ج) مَعاذِرُ : عُذر
بَئيس : شديد
عَتَوا : تكبَّروا، و جاوَزوا الحدَّ (عُتوًّا و عِتِيًّا، ن)
يَسومُهم : يُذيقهم، و تَأذَّن : أعلَن

بيان الإعراب

عن القريَة، أي : عَن حالِ القريَة أو عن قِصَّةِ القريَةِ، و هذا المحذوف هو الناصب للظرف الآتي، و حاضرةَ البحرِ خبر كانت

إذ يعدون في السبتِ إذ تَأتيهم حيتانُهم : الظرف الأول متعلق بالمضاف المحذوف، أي : و اسئَلهم عن قصة القريَة حينَ عُدوانِهم في أمرِ السبتِ، وَ إذِ الثانيَةُ متعلقة بـ : يَعدون، أي : كان عُدوانهم في السبت حينَ اتيانِ الحُوت إليهم

يومَ سبتهم : ظرف متعلق بـ : تأتيهم، و شُرَّعاً حال من فاعلِ تأتي .

و يومَ لا يسبِتون ظرف لقوله : لا تَأتيهم

كذلك نَبلوهم بما كانوا يفسُقون : أي : كنا نَبلوهم بلاءً كذلك البَلاءِ أو مثلَ ذلك البَلاءِ لِفِسْقِهم المستَمِرِّ

الله مُهلكهم : الجملة الإسمية نعت لـ : قوما

معذرةً : مفعول لأجله، أي : وَعَظناهم لِلمعذَرة، أو مفعول مطلق لفعل مقدر، أي : نَعتذِر معذرةً، و المعذرة بمعنى الاعتذار .

مَن : اسم موصول مفعول لَيَبعثَن، و الجملة صلة الموصول، أو هي نكرة موصوفة، أي شخصاما، و الجملة نعت .

سوءَ العذاب : مفعول به ثان لـ : يسومهم

سريعُ العقاب : أضيفت الصفة إلى فاعلها أي : سريعٌ عِقابُه .

الترجمة

আর জিজ্ঞাসা করুন আপনি তাদেরকে ঐ জনপদের অবস্থা সম্পর্কে যা ছিলো সমুদ্রের নিকটে, যখন সীমালঙ্ঘন করতো তারা শনিবারের বিষয়ে, যখন আসতো তাদের কাছে তাদের মাছগুলো তাদের শনিবার উদ্‌যাপনের দিন খুব নিকটবর্তী হয়ে। আর যে দিন তারা শনিবার উদ্‌যাপন করতো না, মাছেরা তাদের কাছে আসতো না। এভাবেই আমরা পরীক্ষা করতাম তাদেরকে তাদের পাপাচার করতে থাকার কারণে।

এবং (ঐ সময়ের অবস্থা জিজ্ঞাসা করুন) যখন বলেছিলো তাদের মধ্য হতে একটি দল (অন্য একটি দলকে), কেন সদুপদেশ দাও

তোমরা এমন সম্প্রদায়কে যাদেরকে আল্লাহ হালাক করবেন, কিংবা (যাদেরকে) আযাব দেবেন কঠিন আযাব! তারা বলেছিলো (আমরা তা করি) ওযর পেশ করার জন্য তোমাদের প্রতিপালকের নিকট; আর যেন তারা ভয় করে (আল্লাহকে)।

তো যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বিষয় যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো তখন নাজাত দিলাম আমি তাদেরকে যারা এই মন্দকর্ম থেকে নিষেধ করতো, আর যারা অন্যায় করেছিলো তাদেরকে আমি পাকড়াও করলাম কঠিন আযাব দ্বারা; তাদের নাফরমানি করতে থাকার কারণে। অর্থাৎ যখন সীমালঙ্ঘন করলো তারা ঐ কাজের ক্ষেত্রে যা থেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিলো তখন বলে দিলাম আমি তাদেরকে, হয়ে যাও তোমরা লাঞ্ছিত বানর।

আর (ঐ সময়ের কথা স্মরণ করুন) যখন ঘোষণা করলেন আপনার প্রতিপালক যে, অতি অবশ্যই পাঠাতে থাকবেন তিনি তাদের উপর কেয়ামত পর্যন্ত কোন না কোন ব্যক্তিকে যে ভোগ করাতে থাকবে তাদেরকে নিকৃষ্ট সাজা। আপনার প্রতিপালক অতি অবশ্যই ত্বরিৎ শাস্তিদানকারী এবং অতি অবশ্যই তিনি পরম ক্ষমাশীল চিরদয়ালু।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اسئلهم عن القرية (আর জিজ্ঞাসা করুন আপনি তাদেরকে ঐ জনপদের অবস্থা সম্পর্কে)- এখানে উহ্য مضاف কে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

(খ) التي كانت حاضرة البحر যা সমুদ্রের নিকটে ছিলো- এ তরজমার সূত্র এই যে, حاضرة শব্দটি قرب এর সমার্থক ظرف রূপে এসেছে। আর তা উহ্য খবর واقعة এর যারফ। এই উহ্য খবরকে উল্লেখ করে এভাবে তরজমা করা যায়- সমুদ্রের নিকটে অবস্থিত ছিলো।

'নিকটে'-এর পরিবর্তে 'তীরে বা উপকূলে' তরজমা করা যায়।

(গ) إذ يعدون في السبت (যখন তারা সীমালঙ্ঘন করতো শনিবারের বিষয়ে) কেউ কেউ তরজমা করেছেন- 'তারা শনিবারে সীমালঙ্ঘন করতো।' - এখানে দু'টি ত্রুটি।

প্রথমতঃ এটিকে স্বতন্ত্র বাক্যরূপে তরজমা করা হয়েছে, অথচ

و اسألهم عن حال القرية হচ্ছে إذ আর إذ হচ্ছে مضاف إليه এর إذ তা এই উহ্য মুযাফের ظرف

দ্বিতীয়তঃ এখানে في السبت কে সীমালঙ্ঘনের কাল ধরা হয়েছে, অথচ এটি হচ্ছে সীমা লঙ্ঘনের বিষয়। মূলরূপটি এই

إذ يعدون في أمر السبت

শায়খায়ন তাদের তরজমায় বিষয়টি বিবেচনায় রেখেছেন।

(ঘ) شرعا (খুব নিকটবর্তী হয়ে) এটি শব্দানুগ তরজমা।
থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'প্রকাশিত হয়ে হয়ে'
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা হলো, 'পানির উপর'।
কেউ কেউ লিখেছেন, পানিতে ভেসে/পানির উপর ভেসে- এগুলো ভাবতরজমা।

(ঙ) و يوم لا يسبتون (আর যখন তারা শনিবার উদগাপন করতো না) এটি মূলানুগ তরজমা, তবে সহজবোধ্য নয়। সরল তরজমা করেছেন শায়খায়ন এভাবে- আর যখন শনিবার হতো না তখন তাদের কাছে আসতো না।

(চ) قالوا معذرة إلى ربكم তারা বললো, (আমরা তা করি) তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ওযর পেশ করার জন্য- এখানে معذرة এই مفعول لأجله এর উহ্য ফেয়েলকে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) معذرة এর তরজমা করেছেন, 'দায় থেকে মুক্ত হওয়ার উদ্দেশ্যে'।

(ছ) فلما نسوا ما ذكروا به তো যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বিষয় যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো- এখানে 'তো' হচ্ছে فاء الاستيناف এর তরজমা।
আয়াতটির তরজমা থানবী (রহ) করেছেন এভাবে, যখন তারা ঐ আদেশ বর্জনই করে চললো, যা তাদেরকে বোঝানো হচ্ছিলো- এটি হলো ভাবতরজমা।
'ভুলে গেলো' এর পরিবর্তে 'বিস্মৃত হলো' বলা যায়, তদ্রূপ 'বর্জন করে চললো'- এর পরিবর্তে 'উপেক্ষা করে চললো' বলা যায়।

(জ) فلما عتوا থানবী (রহ) ف এর তরজমা 'অর্থাৎ' করেছেন এই সূত্রে যে, এখানে ف দ্বারা عذاب এর বিশদ বিবরণ দেয়া হয়েছে।

(ঝ) قلنا لهم كونوا قردة خاسئين (বলে দিলাম তাদেরকে, হয়ে যাও তোমরা লাঞ্ছিত বানর) আয়াতে যে ক্রোধের ভাব রয়েছে সেটা প্রকাশ করার জন্য এ তরজমা করা হয়েছে।
'তখন তাদেরকে বললাম, ঘৃণিত বানর হও' এ তরজমায় ক্রোধের প্রকাশ প্রকট হয়নি।

(ঞ) من (কোন না কোন ব্যক্তিকে) থানবী (রহ) من কে نكرة موصوفة ধরে এ তরজমা করেছেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ سبتٍ
٢ – أعرب قوله : أو مُعَذبهم عذابا شديدا
٣ – أعرب قوله : معذرةٌ
٤ – بم يتعلق قوله : إذ تأتيهم حيتانهم ؟
٥ – সমুদ্রের নিকটে ছিলো– এ তরজমার সূত্র কী ? 'নিকটে'-এর পরিবর্তে আর কী শব্দ হতে পারে ?
٦ – إذ يعدون في السبت তারা শনিবারে সীমালঙ্ঘন করতো– এ তরজমাটি পর্যালোচনা করো।

(٦) وَ إذ يَعِدكم الله إحدَى الطائِفَتين أنها لكم و تَوَدُّون أنَّ غيرَ ذات الشوكَةِ تكون لكم و يُريد الله أن يُحِقَّ الحقَّ بِكلمٰته و يقطَعَ دابِر الكٰفرين * لِيُحِقَّ الحقَّ و يُبطل الباطِلَ و لو كَرِه المجرمون * إذ تَستغيثون ربَّكم فاستجاب لكم أني مُمِدُّكم بِألفٍ مِنَ المٰلئِكَةِ مردفين * و ما جَعَله الله إلاَّ بُشرى و لِتَطمئِنَّ به قلوبُكم، و ما النصر إلاَّ من عند الله، إنَّ الله عزيز حكيم * إذ يُغَشِّيكم النعاسَ أمَنَةً منه و يُنزِّلُ عليكم من السماء ماءً ليُطهرَكم به و يُذهِبَ عنكم رجزَ الشيطٰن و لِيَربِط على قلوبكم و يُثَبِّتَ به الاقدامَ * اذ يُوحي ربك الى المٰلئكة أني معكم فَثَبِّتوا الذين اٰمنوا، سَأُلقي في قلوب الذين

كفروا الرعبَ فاضربوا فوق الاعناق و اضربوا منهم كلَّ بنانٍ * ذلك بِأنهم شاقُّوا اللّٰه و رسولَه، و من يُشاقِق اللّٰهَ و رسولَه فان اللّٰهَ شديدُ العِقاب *

بيان اللغة

شَوكة : واحدة الشَّوْكِ، و هو جنس، جمعه أَشواك : ما يخرج من الشجر أو النبات مِثلَ الإبَرِ .

و الشوكة : القوة و البأس، وهو المراد هنا .

أَحقَّ الحقَّ : أثبَتَ الحق .

استغاث فلانا و بفلان (استغاثة) استنصره و استعان به .

أغاثه : نصره و أعانه

الغَوْثُ : الإعانة و النُّصرة

مُردفين (متتابِعين، أي : نازلين واحدًا بعدَ واحدٍ)

أردَفَ : تَتابَعَ، أردف فلانًا : جاءَ بعده .

أردفَه : ركِبَ خلفَه، أركبَه خلفَه .

يُغَشيكم النعاسَ (يُلقي عليكم النومَ)

غَشَّى الشيءَ : جعل عليه غِشاءً، يقال : غَشَّى اللّٰهُ على بَصره

غَشَّى فلانًا الأمرَ : غَطَّاه به و أحاطَه به .

غَشِيَ الأمرُ فلانًا (غَشْيًا، س) : غَطَّاه .

الرجز : الذنب، العذاب، الشرك و عبادة الأوثان .

و رجز الشيطان : وسوسته

رَبَط الله على قلبه بالصبر : قَوَّى قلبَه بالصبر .

رَبَط نفسَه عن ... منعه عن .

رَبط شَيئًا بـ .. (ن، رَبْطًا) شَدَّه بـ ... দ্বারা বাঁধলো ...

بَنان : أصابع، أو أطراف الأصابع . المفاصل، و الواحدة : بَنانَةٌ

شَاقَّه (خالَفَه و عاداه، شِقاقًا)

شَقَّ الأمرُ (ن، شَقًّا) : صعُب

شَقَّ على فلانٍ : أوقَعَه في المشَقَّةِ

بيان الإعراب

وَ إذ يَعِدكم الله :أي : و اذكر حينَ وعدِ الله إيّاكم، و إحدٰى الطائِفَتين مفعول به ثان لـ : يعدكم، أَنها لكم : مصدر مؤول و بَدَلُ اشتمالٍ من إحدَى الطائِفَتين . و كان هذا الوعدُ قبلَ غزوةِ بَدرٍ .

و تَوَدُّون : الجملة في مَحَل نصب حال من الضمير المنصوب في يَعِدكم، بِتَقدير و أنتم، لأن واو الحال لا تدخل على المضارع المثبت .

إذ تستغيثون ربكم : بَدَل من إذ يعدكم .

فاستجاب لكم أني ممدكم : الفاء عاطفة عُطِفت بها الجملة على تستغيثون، و المصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض

و ما جعله الله إلا بشرى لكم : الواو استئنافية، و الضمير المنصوب يعود إلى : أني ممدكم، لأن المعنى : فاستجابَ لكم بِإمْدادِكم، و ما جعل هذا الإمدادَ إلا بُشْرٰى لكم .

و لتطمئن : متعلق بفعل محذوف، أي : و بَشَّر به لِتطمئنَّ قلوبُكم .

إذ يغشيكم النعاسَ أمنة منه : بدل ثان من إذ يعدكم، و النعاسَ مفعول به ثان، و أمنةً مفعول لأجله، و منه متعلق بمحذوف نعت لـ : أمنةً .

إذ يوحي : بدل ثالث من إذ يعدكم، و أني معكم : مفعول يوحي .

فثبتوا : الفاء الفصيحة، أي : إذا ثبت هذا فثبتوا المؤمنين بتبشيرهم بالنَّصر .

فوق الأعناق : ظرف متعلق بـ : اضربوا، و المفعول به محذوف، أي فاضربوهم فوقَ الأعناق .

كل بنان : مفعول به لـ : اضربوا، و منهم حال من المفعول .

ذلك : مبتدأ، و الإشارة إلي الضرب، و بِأنهم .. متعلق بخبر محذوف، و المصدر المؤول في محل جر بالباء . أي : ذلك الضربُ واقعٌ بِسبَبِ شِقاقِهِم اللّٰهَ و رسولَه .

الترجمة

আর (হে মুমিনগণ, তোমরা ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন প্রতিশ্রুতি দিচ্ছিলেন তোমাদেরকে আল্লাহ দু'টি দলের একটি

সম্পর্কে যে, তা হবে তোমাদের জন্য; অথচ কামনা করছিলে তোমরা যে, অপরাক্রমশালী দলটি হোক তোমাদের জন্য; আর আল্লাহ্ চাচ্ছিলেন যে, তিনি সুসাব্যস্ত করবেন সত্যকে তার বাণীসমূহ দ্বারা এবং কেটে দেবেন কাফিরদের গোড়া, যাতে করে সাব্যস্ত করে দেন তিনি হককে হক এবং সাব্যস্ত করে দেন বাতিলকে বাতিল, যদিও (তা) অপছন্দ করে অপরাধীগণ।

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন সাহায্যের জন্য ডাকছিলে তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে, অনন্তর সাড়া দিলেন তিনি তোমাদের ডাকে যে, সাহায্য করবো আমি তোমাদেরকে লাগাতার নেমে আসা এক হাজার ফিরেশতা দ্বারা।

এ সাহায্যকে আল্লাহ্ শুধু সুসংবাদ বানিয়েছিলেন তোমাদের জন্য, আর (তিনি তা করেছিলেন) যাতে আশ্বস্ত হয় তা দ্বারা তোমাদের হৃদয়। আর সাহায্য তো শুধু আল্লাহর নিকট থেকে আসে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন আচ্ছন্ন করছিলেন তিনি তোমাদেরকে তন্দ্রায়, তার পক্ষ হতে স্বস্তি দান করার জন্য এবং বারি বর্ষণ করছিলেন তোমাদের উপর আসমান থেকে, যাতে পবিত্র করেন তিনি তোমাদেরকে তা দ্বারা এবং দূর করেন তোমাদের থেকে শয়তানের ওয়াসওয়াসা এবং যেন সুদৃঢ় করেন তোমাদের হৃদয়কে এবং স্থির করেন তা দ্বারা (তোমাদের) পা।

(স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন প্রত্যাদেশ করছিলেন তোমাদের প্রতিপালক ফিরেশতাদের প্রতি যে, আমি তোমাদের সঙ্গে রয়েছি, সুতরাং অবিচল রাখো তোমরা তাদেরকে যারা ঈমান এনেছে। অবশ্যই ভয় ঢেলে দেবো আমি তাদের অন্তরে যারা কুফুরি করেছে, সুতরাং আঘাত করো তোমরা ঘাড়ের উপরে এবং আঘাত করো তাদের প্রত্যেক জোড়ায়।

তা এ কারণে যে, তারা বিরুদ্ধাচরণ করেছে আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলের। আর যারা বিরুদ্ধাচরণ করে আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলের (তাদের জন্য) আল্লাহ কঠিন আযাব দানকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أنها لكم (যে তা হবে তোমাদের জন্য) এটা হলো পূর্ণ শব্দানুগ তরজমা, এবং তা গ্রহণযোগ্যও।

তোমাদের আয়ত্ত্বাধীন হবে /আয়াত্তে আসবে/বশীভূত হবে– এটা শব্দানুগ না হলেও মূলানুগ তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন وہ تمہارے ہاتھ لگے گی (তা তোমাদের হাতে লাগবে)।

থানবী (রহ)-এর তরজমা– وہ تمہارے ہاتھ آجاویگی (তা তোমাদের হাতে এসে যাবে)।

এটা মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা। এ দুই তরজমা অনুসরণ করে কেউ কেউ লিখেছেন, তা তোমাদের হস্তগত হবে। শত্রু হস্তগত হয় না, করতলগত হয়। সুতরাং লিখতে হবে, তা তোমাদের করতলগত হবে।

(খ) وتَوَدُّون أن غيرَ ذاتِ الشوكة تكون لكم (অথচ কামনা করছিলে তোমরা যে, অপরাক্রমশালী দলটি হোক তোমাদের জন্য)

الشوكة মানে পরাক্রম, ذاتُ الشوكةِ মানে পরাক্রমের অধিকারী বা পরাক্রমশালী। সুতরাং এটি হচ্ছে পূর্ণ শব্দানুগ তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

'নিরস্ত্র' এটি غيرُ ذاتِ الشوكة এর যথার্থ প্রতিশব্দ নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

شوكة এর একটি অর্থ কাঁটা। সে হিসাবে শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর তোমরা চাচ্ছিলে যে, যাতে কাঁটা নেই সেটি যেন তোমাদের হাতে আসে। কোন কোন বাংলা মুতারজিম তা অনুসরণ করেছেন। এ তরজমা সুস্পষ্ট নয়।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– غیر مسلح جماعت (নিরস্ত্র দল)

(গ) تكون لكم (তোমাদের জন্য হোক) একটি তরজমায় আছে– 'তোমাদের ভাগে আসুক' এটা সাধারণত ঐ ক্ষেত্রে হয়, যখন অন্যটি অন্যদের ভাগে যায়।

(ঘ) يقطَعَ دابرَ الكٰفرين (কেটে দেবেন কাফিরদের গোড়া) শায়খায়ন শব্দানুগ তরজমা করেছেন। যথা–

(ক) اور کاٹ ڈالے جڑ کافروں کی (এবং কেটে ফেলবেন জড়/শিকড় কাফিরদের)

(খ) اور کافروں کی بنیاد کو قطع کردے (এবং কাফিরদের বুনিয়াদ/গোড়া কর্তন করে ফেলবেন)

'মূলোচ্ছেদ/নির্মূল করবেন' এ তরজমা হতে পারে।

(ঙ) و لو كره المجرمون 'যদিও অপরাধীরা তা পছন্দ করে না/অপছন্দ করে/অসন্তুষ্ট হয়।

এই তিনটি তরজমার মধ্যে মাঝেরটি শব্দানুগ।

المجرمون। এর প্রতিশব্দরূপে 'পাপীরা' সঠিক নয়।

(চ) إذ تستغيثون ربكم এর দু'টি তরজমা লক্ষ্য করো–

(ক) যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করছিলে/ ফরিয়াদ করছিলে।

এ তরজমায় ربكم এর ব্যাকরণগত রূপটি প্রকাশ পায় না।

(খ) যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে সাহায্যের জন্য ডাকছিলে– এখানে ربكم এর ব্যাকরণগত রূপটি প্রকাশ পায়। কিন্তু 'ফরিয়াদ করা' যতটা শব্দানুগ, 'সাহায্যের জন্য ডাকা' ততটা শব্দানুগ নয়।

তাই দুটো তরজমাই দুদিক থেকে অগ্রাধিকার পেতে পারে।

(ছ) يُغَشِّيكم النعاسَ তোমাদেরকে তন্দ্রায় আচ্ছন্ন করেন/তোমাদের উপর তন্দ্রাচ্ছন্নতা আরোপ করেন– এখানে প্রথমটি অধিকতর শব্দানুগ।

তোমাদেরকে তন্দ্রা দ্বারা ঢেকে ফেলেন– এ তরজমা সুন্দর নয়, কারণ 'ঢাকা' শব্দটি তন্দ্রার সঙ্গে প্রচলিত নয়।

(জ) يُنَزِّلُ عليكم من السماء ماء তোমাদের জন্য আকাশ থেকে পানি অবতারণ করেন/ বৃষ্টি ঝরান/ বারি বর্ষণ করেন/ পানি অবতীর্ণ করেন।

এগুলোর মাঝে 'বৃষ্টি ঝরান' তরজমাটি সুন্দর নয়।

প্রথমটি শব্দানুগ, তবে 'বারি বর্ষণ করেন' অধিকতর সুন্দর।

(ঝ) رجزَ الشيطان এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন شيطان كى نجاست (শয়তানের নাপাকি/ অপবিত্রতা।

থানবী (রহ) করেছেন, شيطانى وسوسه (শয়তানি ওয়াসওয়াসা) বাংলায় শয়তানের কুমন্ত্রণা বলা যায়।

অভিধানে رجس এর অর্থ রয়েছে অপবিত্রতা, رجز এর ঐ অর্থ নেই। ইমাম রাগিবও তা আনেন নি।

(ঞ) ذلك এর مشار إليه উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে 'এ আঘাত এ জন্য যে,'।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ شوكةٍ ·
٢ - أعرب قوله : أنّها لكم ·
٣ - اشرح إعراب قوله : و تودون ·
٤ - ما إعراب منهم في قوله تعالى : و اضربوا منهم كل بنان ؟
٥ - إذ تستغيثون ربكم এর দুটি তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - غير ذات الشوكة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) يٰاَيها الذين اٰمَنوا استَجِيبوا للّٰهِ و لِلرسولِ اذا دَعاكم لما يُحيِيكم، وَ اعلَموا اَنَّ اللّٰهَ يحول بينَ المرءِ و قَلبِه و اَنه اليه تُحشَرون * و اتقوا فِتنةً لا تُصيبَن الذين ظلَموا منكم خاصَّةً، و اعلَموا اَن الله شديد العِقاب * وَ اذكُروا اِذ اَنتم قليل مستَضعَفون في الارض تَخافون اَنْ يتَخَطَّفَكم الناسُ فَاٰوٰكم و اَيَّدكم بِنَصره و رزقَكم من الطيِّبٰت لعلكم تَشكرون * يٰاَيها الذين اٰمَنوا لا تَخونوا اللّٰهَ و الرسولَ و تخونوا اَمٰنٰتكم و اَنتم تعلمون * و اعلموا اَنَّما اموالُكم و اولادكم فِتنة و اَنَّ الله عندَه اجر عظيم * يايها الذين اٰمَنوا اِن تتقوا اللّٰه يجعلْ لكم فُرقانًا و يكَفرْ عنكم سَياتكم و يغفِرْلكم، و الله ذو الفضل العظيم *

بيان اللغة

تَخَطَّفه : استَلَبه و انتزَعه بِسُرعةٍ — ছোঁ মেরে নিয়ে নিলো
خَطَفَ شيئًا (ض، خَطْفًا) و خَطِف (س، خَطْفًا) : استلَبه و انتزَعَه بِسُرعَةٍ ·
فُرقان : ما يُفَرَّق به بين الحق و الباطل، الحجة و البرهان ·
و الفرقان كلام الله، لأنه يفرِّق بين الحق و الباطل، و لهذا سمي القرآن و التوراة و الإنجيل فرقانا ·

يوم الفرقان : اليوم الذي يفرّق فيه بين الحق و الباطل .
فَرَقَ بين شيئَين (ن، فَرْقًا و فُرقانًا) فَصَل و مَيَّزَ أحدَهما من الآخَر
فَرَقَ بين الخصمين : حَكم و فَصل
فَرَقَ البحرَ (وأيَّ شيءٍ) قسَمه
فَرَق اللهُ الكِتابَ : فَصَّلَه وبيَّنَه

بيان الإعراب

لا تُصيبن الذين ظلَموا منكم خاصَّةً : الجملة في محل نصب نعت لـ : فتنةً .
ويجوز أن تكون الجملة جوابا لشرط مقدر، أي إنْ أصابَتْكم لا تُصيبُ الظالمين منكم خاصة، بل يَعُمُّكم جميعًا .
منكم حال من : الذين، أي : معدودين منكم، و خاصة حال من فاعلِ تُصيبَنَّ العائدِ على فتنةً، أي : مُختَصَّةً بهم .
و يجوز أن يكون مفعولا مطلقا نائبا عن المصدر بِكَونه صفةً له، أي إصابَةً خاصَّةً .
و اذكروا إذ أنتم قليل : إذ اسم ظرف، في محل نصب على أنه مفعول به لـ : اذكروا، أي : اذكروا وقتَ كونِكم قليلا (أي : وقتَ قِلَّتكم) .
و جملة أنتم قليل في محل جر مضاف إليه .
و في الأرض متعلق بـ : مستضعَفون، و هو خبر ثان .
تخافون : الجملة في محل رفع خبر ثالث للمبتدأ أنتم، أو في محل نصب حال من الضمير في : مستضعَفون .
و المصدر المؤول مفعول به لـ : تخافون .
و تَخونوا أماناتِكم : الواو عاطفة، و تخونوا مجزوم معطوف على تخونوا الأول، فهو داخل في حكم النهي، أي : و لا تخونوا أَمانتِكم .
و يجوز أن تكون الواو للمعية، و الفعل بعدَها منصوب بـ : أَنْ مضمَرةً بعدَ واو المعية، و المصدر المؤول معطوف على مصدر مؤول مفهوم من الكلام السَابق، أي : لا تكُنْ منكم خيانَةٌ لله و الرسول و خيانَةٌ لِأماناتكم .

الترجمة

হে (ঐ লোকেরা) যারা ঈমান এনেছো, সাড়া দাও তোমরা আল্লাহর এবং রাসূলের ডাকে, যখন ডাকেন তিনি তোমাদেরকে এমন কিছুর দিকে যা জীবন্ত করবে তোমাদেরকে, আর জেনে রাখো তোমরা যে, আল্লাহ আড়াল হয়ে যান মানুষের ও তার কলবের মাঝে, আর (জেনে রাখো যে,) তাঁরই কাছে একত্র করা হবে তোমাদেরকে। আর ভয় করো তোমরা এমন পরিণামকে, যা তোমাদের মধ্য হতে যারা যুলুম করেছে, বিশেষভাবে শুধু তাদেরকেই আক্রান্ত করবে না। (বরং সকলকেই আক্রান্ত করবে) আর জেনে রাখো যে, আল্লাহ কঠিন শাস্তিদানকারী।

আর স্মরণ করো তোমরা (ঐ সময়কে) যখন তোমরা (ছিলে) অল্প (এবং) পৃথিবীতে দুর্বল, (আর) তোমরা আশংকা করতে যে, তোমাদেরকে ছোঁ মেরে নিয়ে যাবে লোকেরা, অনন্তর আশ্রয় দান তিনি তোমাদেরকে করেছেন এবং শক্তি যুগিয়েছেন তোমাদেরকে আপন সাহায্য দ্বারা এবং রিযিক দান করেছেন তোমাদেরকে উত্তম উত্তম বস্তু হতে; যাতে তোমরা শোকর আদায় করো।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, খেয়ানত করো না তোমরা আল্লাহ ও রাসূলের সাথে এবং খেয়ানত করো না নিজেদের আমানতগুলো সম্পর্কেও, এমন অবস্থায় যে, তোমরা জানো (এর মন্দ পরিণতি সম্পর্কে)।

আর জেনে রাখো যে, তোমাদের ধনসম্পদ এবং তোমাদের সন্তান-সন্ততি শুধু পরীক্ষার বিষয়। আর (জেনে রাখো যে;) আল্লাহ, তাঁরই নিকট রয়েছে মহাপুরস্কার।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, যদি ভয় করো তোমরা আল্লাহকে তাহলে দান করবেন তিনি তোমাদেরকে 'ফোরকান' [১], আর মোচন করবেন তোমাদের থেকে তোমাদের পাপসমূহ, আর মাফ করবেন তোমাদেরকে, আর আল্লাহ মহাঅনুগ্রহের অধিকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) استجيبوا لله و للرسول (সাড়া দাও তোমরা আল্লাহর এবং

১. হক ও বাতিলের মাঝে পার্থক্যকারী একটি নূর যা মুমিনের কলবে আল্লাহ দান করেন।

রাসূলের ডাকে) আয়াতে ل অব্যয়টি দু'বার এসেছে, সুতরাং 'আল্লাহ ও রাসূলের' এ তরজমার চেয়ে উপরের তরজমাই মূলানুগ।

শায়খায়নের তরজমা, আল্লাহ ও রাসূলের হুকুম মান্য করো। 'হুকুম মান্য করা' হচ্ছে ভাবতরজমা, আর 'ডাকে সাড়া দেয়া' হচ্ছে মূলানুগ

(খ) لما يحييكم (এমন কিছুর দিকে যা জীবন দান করবে/জীবন্ত করবে তোমাদেরকে) এখানে ما কে نكرة موصوفة ধরে তরজমা করা হয়েছে।

ما কে মাওছূল ধরে এবং তার স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করা যায়, 'ঐ দ্বীনের দিকে'

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, এমন কিছুর দিকে যাতে রয়েছে তোমাদের জীবন।

এটি ভাবতরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন– তোমাদের জীবনদায়ক জিনিসের দিকে– তিনি جملة موصوفة কে مفرد موصوف এ পরিবর্তন করেছেন।

'জীবন্ত করবে' অর্থ– এই দ্বীন তোমাদেরকে অন্যান্য জাতির মাঝে জীবন্ত জাতিরূপে মর্যাদা দান করবে।

(গ) و أنتم تعلمون এমন অবস্থায় যে, তোমরা জানো (এর মন্দ পরিণতি সম্পর্কে) শায়খুলহিন্দ (রহ) مفرد রূপে তরজমা করেছেন– جان کر (জেনে)

বাংলায় যেহেতু 'জেনেশুনে' এই 'শব্দজুটি' ব্যবহৃত হয়, তাই কেউ কেউ তরজমা করেছেন, জেনেশুনে খেয়ানত করো না।

উর্দূতে এ ক্ষেত্রে جان بوجھ کر (জেনে-বুঝে) ব্যবহৃত হয়। কিন্তু শায়খুলহিন্দ (রহ) অতিরিক্ত শব্দ যোগ করা পছন্দ করেন নি।

থানবী (রহ) মূলানুগ তরজমা করেছেন, اور تم تو جانتے ہو (আর তোমরা তো জানো) এরপর তিনি বন্ধনীতে تعلمون এর مفعول به নির্দেশ করেছেন।

(ঘ) من الطيبت উত্তম উত্তম বস্তু হতে– এখানে ছিফাত-এর তাকরার দ্বারা বহুবচনের অর্থ আদায় করা হয়েছে। থানবী (রহ) এটা করেছেন।

'উত্তম বস্তুসমুদয় হতে' – এ তরজমা যারা করেছেন তারা ال।

(١) قالَ المَلأُ الذين استكبروا مِن قومِه لنُخرجَنَّك يٰشعيب و الذين امَنوا معَك مِن قريتنا اَوْ لَتعودُنَّ في مِلّتنا ، قال اَوَ لو كُنا كارهين * قَدِ افترَينا على اللّٰه كَذِبًا اِن عُدنا في مِلتكم بعدَ اِذ نجّٰنا الله منها ، و ما يكون لنا اَن نعودَ فيها اِلاَّ اَن يشاء اللّٰهُ ربُّنا ، وَسِعَ ربُّنا كل شيءٍ علما ، على الله تَوكلنا ، ربَّنا افتَح بينَنا و بينَ قومِنا بالحق و انتَ خيرُ الفٰتِحين * و قال الملأُ الذين كفَروا مِن قومه لَئِنِ اتَّبعتم شعيبًا اِنكم اِذًا لخٰسرون * فَاخذَتهم الرَّجْفَة فَاَصْبَحوا في دارهِم جٰثمين * الذين كذبوا شعيبا كَاَنْ لَّم يغنَوا فيها ، الذين كذبوا شعيبا كانوا هم الخٰسرين *

بيان اللغة

وَسِع الشيءُ (س، سَعَةً) : لم يَضِقْ

وسع الشيءَ : لم يَضِقْ عنه، أحاطَ به

وَسع رحمةُ الله كلَّ شيءٍ/ لِكل شيء/ على كل شيءٍ : أحاطت به

وُسْعٌ : طاقَة و قوة

فتَحَ بين الخصمَين : قضى بينَهما (ف، فَتْحًا)

فتَحَ الله عليه : عَلَّمه و عَرَّفه

فتح البِلادَ : غلَب عليها و تملَّكها قَهْرًا

رجفة : زلزلة

رَجَفه (ن، رَجْفًا و رَجَفانًا) حَرَّكه شَديدًا

رَجَف الرجلُ : اضطَرَبَ شديدًا مِنَ الفزَع .

رَجَفَ القلبُ : اضطَرَبَ من الفزَع
رَجَفَت الأرضُ : زُلزِلَت
ارتَجَفَ : اضطَرَب شديدًا و ارتَعَد
لم يغنَوا فيها : (لم يُقيموا فيها)
غَنِيَ (غِنًى، غِناءً، س) كثُر ماله و صار غَنيا
غَنِيَ بالمكانِ (غِنًى و مَغْنًى، س) أقامَ فيه
غَنِي القومُ في ديارهم : طالَ مُقامهم فيها
جاثِمٌ (لاصِق بالأرض ভূতলে লেগে পড়ে থাকা মানুষ / প্রাণী)
جَثَم الحيَوانُ أو الإنسان (ض، ن، جُثومًا) لَصِقَ بالأرض، فهو جاثِمٌ
يقال : جَثَم صدرُه بالأرضِ .

بيان الإعراب

لنُخرجنك : اللام لام القسَم، و الجملة جواب القسَم المحذوف .
يا شعيب : جملة النداء معترضَة بين المعطوف و المعطوف عليه .
و الذين : معطوف على الكاف، و معك : ظرف متعلق بـ : اٰمَنوا .
من قريتنا : متعلق بـ : نُخرجنك .
أو : حرف عطفٍ عُطف به الجملة التالية على : لَنُخرجَنَّك
في ملتنا : متعلق بـ : تَعودُنَّ
أو لو كنا كارهين : الهمزة للاستفهام الانكاري، و الواو حالية، و لو ليست شرطيةً، بل هو مصدرية، و الجملة في محل نصبٍ حال من محذوف، أي : أ تُعيدوننا و لو كرهنا، أي : حال كراهيتنا للعود .
إن عدنا في ملتكم : جواب الشرط محذوف دل عليه الكلام السابق، أي : إن عُدنا في ملتكم فقَدِ افترَينا على الله كذبا .
بعد إذ نجنا الله منها : الظرف مضاف إلى ظرف آخر، متعلق بـ : عدنا . و جملة نجانا الله في محل جر مضاف إليه
ما يكون لنا أن نعود ... : يكون مضارع تام بمعنى ينبغي، و لنا متعلق به، و المصدر المؤول فاعله .
إلا أن يشاء الله : المصدر المؤول في محل نصب على الاستثناء، و هو

مستثنًى مِن عُموم الأحوال أو مِن عُموم الأوقات، أي : في حالٍ من الأحوال إلا حالَ مشيئةِ الله، أو في وقت من الأوقات إلا وقتَ مشيئة الله ·

وسع ربُّنا كلَّ شيء : فعل و فاعل و مفعول به، و علما تمييز مُحوَّل عن الفاعل، أي : وسع عِلمُه كلَّ شيءٍ ·

لئن : اللام مُوَطئة للقسَم، و جملة إنكم إذا لخسرون جواب القسَم، و جواب الشرط محذوف، أو إنَّ جوابَ القسَمِ يَسُدُّ مَسَدَّ جوابِ الشرط، و هذه هي القاعدة في اجتماع الشرط و القسَم ·

في دارهم : يتعلق بخبرِ أصبحوا ·

الذين : مبتدأ، و كذبوا شعيبا صلة الموصول، و كَأَنْ مخففة من الثقيلة، و اسمها محذوف، أي : كأنهم، و لم يغنَوا خبر كأن، و الجملة خبر المبتدأ ·

الترجمة

তার সম্প্রদায়ের প্রধানরা, যারা অহংকার করেছিলো, বললো, অতি অবশ্যই আমরা বের করে দেবো হে শোয়ায়ব, তোমাকে এবং যারা তোমার সাথে ঈমান এনেছে তাদেরকে আমাদের জনপদ থেকে, কিংবা অতি অবশ্যই ফিরে আসবে তোমরা আমাদের ধর্মে। তিনি বললেন, যদিও আমরা (তা) অপছন্দ করি, তবু কি (তোমরা আমাদেরকে ফিরিয়ে আনবে?)

আমরা তো আল্লাহর উপর মিথ্যা অপবাদ আরোপকারী হয়ে যাবো, যদি আমরা ফিরে আসি তোমাদের ধর্মে, আল্লাহ্ আমাদেরকে তা থেকে মুক্তি দেয়ার পর।

আমাদের জন্য তো সঙ্গতই হবে না তোমাদের ধর্মে ফিরে যাওয়া, তবে আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ্ যখন ইচ্ছা করবেন। আমাদের প্রতিপালক তো সকল বস্তুকে বেষ্টন করেছেন জ্ঞানের দিক থেকে। আল্লাহরই উপর ভরসা করেছি আমরা। (হে) আমাদের প্রতিপালক, আপনি ফায়ছালা করে দিন আমাদের মাঝে এবং আমাদের সম্প্রদায়ের মাঝে হকভাবে; আর আপনি তো ফায়ছালাকারীদের শ্রেষ্ঠ।

আর তার সম্প্রদায়ের প্রধানরা, যারা কুফুরি করেছিলো, বললো, যদি

তোমরা শোয়ায়বের অনুসরণ করই তাহলে অতিবশ্যই তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত হবে। তখন পাকড়াও করলো তাদেরকে ভূমিকম্প, ফলে তারা তাদের বাড়ীঘরে উপুড় হয়ে পড়ে থাকলো।
যারা মিথ্যাবাদী বলেছিলো শোয়ায়বকে, যেন তারা বসবাসই করেনি সেখানে। যারা মিথ্যাবাদী বলেছিলো শোয়ায়বকে তারাই ছিলো ক্ষতিগ্রস্ত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قال الملأ الذين استكبروا من قومه (তার সম্প্রদায়ের প্রধানরা, যারা অহংকার করেছিলো, বললো,) এটা হলো মূলতারকীবের অনুগামী তরজমা।
থানবী (রহ) এভাবে সরল তরজমা করেছেন, তার সম্প্রদায়ের দাম্ভিক প্রধানরা বললো।

(খ) أو لتعودن في ملتنا (কিংবা অতি অবশ্যই ফিরে আসবে তোমরা আমাদের ধর্মে) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, কিংবা তোমাদেরকে আমাদের ধর্মে ফিরে আসতে হবে।
এ তরজমাটি শব্দানুগ না হলেও এদিক থেকে ভালো যে, আয়াতে চাপ প্রয়োগের যে ভাব রয়েছে তরজমায় তা ফুটে উঠেছে।

(গ) لنخرجنك يا شعيب و الذين امنوا معك (অতি অবশ্যই আমরা বের করে দেবো হে শোয়ায়ইব, তোমাকে এবং যারা তোমার সাথে ঈমান এনেছে তাদেরকে) তরজমায় يا شعيب শুরুতে আনা যায়, যেমন থানবী (রহ) এনেছেন।
তবে শায়খুলহিন্দ (রহ) কোরআনী উসলূবকে যথাসম্ভব রক্ষা করে তরজমা করেছেন।
ل এর তরজমা يا شعيب এর আগে হলে أسلوب القرآن এর পূর্ণ অনুগমন হতো, কিন্তু عطف এর তরজমা সুন্দর হতো না, তাই এতটুকু ব্যতিক্রম করা হয়েছে।

(ঘ) إلا أن يشاء الله যেহেতু এখানে حال বা وقت এর অর্থ নেয়া হয়েছে, সেহেতু, 'তবে আল্লাহ যখন ইচ্ছা করবেন,' এ তরজমাই উত্তম।
'তবে যদি আল্লাহ ইচ্ছা করেন', এ তরজমা সঠিক নয়।

(ঙ) وسع ربنا كل شيء علما (আমাদের প্রতিপালক তো সকল

বস্তুকে বেষ্টন করেছেন জ্ঞানের দিক থেকে) এটি মূলানুগ তরজমা।

তবে এই তামীয যেহেতু محول عن الفاعل সেহেতু মূল তারকীব অনুসরণ করে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, আমাদের প্রতিপালকের ইলম সকল বস্তুকে বেষ্টন করেছে।

(ক) আমাদের প্রতিপালক প্রত্যেক বস্তুকে স্বীয় জ্ঞান দ্বারা বেষ্টন করে আছেন। (খ) সব কিছুই আমাদের প্রতিপালকের জ্ঞানায়ত্ব।

এ দুটি তরজমার ব্যাকরণগত সূত্র নেই। তবে আয়াতের বক্তব্য তাতে এসে গেছে।

(চ) على الله توكلنا শায়খুলহিন্দ তরজমা করেছেন, আল্লাহরই উপর আমরা ভরসা করেছি। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, আমরা আল্লাহরই উপর ভরসা রাখি।

'আমাদের ভরসা তো আল্লাহরই উপর' এ তরজমা গ্রহণযোগ্য হলেও তারকীবানুগ নয়।

'নির্ভর করি / করেছি' এ তরজমাও হতে পারে।

(ছ) بالحق (হকভাবে) এর তরজমা, 'ন্যায়ভাবে', করা যায়, কিন্তু 'ফায়ছালা করে দিন যথার্থ ফায়ছালা', এ তরজমা সঠিক নয়, কারণ এখানে ফায়ছালা শব্দটি অপ্রয়োজনে দুবার আসেছে।

'আপনি তো ফায়ছালাকারীদের শ্রেষ্ঠ', এর সরল তরজমা– আপনি তো শ্রেষ্ঠ/সর্বোত্তম ফায়ছালাকারী।

(জ) أصبحوا في دارهم جثمين (তারা তাদের বাড়ীঘরে উপুর হয়ে পড়ে থাকলো) أصبحوا কে থানবী (রহ) صاروا এর অর্থে গ্রহণ করেছেন, আর শায়খুলহিন্দ (রহ) সকালের সময়ের সাথে সম্পৃক্ত فعل ناقص ধরে তরজমা করেছেন– তারা ভোরে তাদের বাড়ীঘরে উপুড় হয়ে পড়ে থাকলো।

একটি বাংলা তরজমায় আছে–

তাদের প্রভাত হলো নিজগৃহে অধঃমুখে পতিত অবস্থায়।

অর্থাৎ এ রতজমায় أصبح কে تام এবং جاثمين কে হাল ধরা হয়েছে।

'তারা তাদের ঘরে নাস্তানাবুদ হয়ে পড়ে থাকলো' ভাব তরজমা হিসাবে এটা গ্রহণযোগ্য।

(ঝ) فأخذتهم الرجفة (তখন পাকড়াও করলো তাদেরকে

ভূমিকম্প) 'তারা ভূমিকম্প দ্বারা আক্রান্ত হলো' এই তারকীববিমুখ তরজমার কোন প্রয়োজন নেই। শায়খায়ন তা করেননি, আমাদেরও করা উচিত নয়।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة غَنِيَ .

٢ – " و لو كنا كارهين " لِمَ وقعت هذه الجملة حالاً ؟

٣ – ما إعراب قوله : أن نعود فيها ؟

٤ – اشرح إعراب كلمةِ علمًا

٥ – وسع ربنا كلَّ شيءٍ علما এর তরজমা পর্যালোচনা করো।

٦ – افتح بالحق (ফায়ছালা করে দিন যথার্থ ফায়ছালা) এ তরজমার ত্রুটি আলোচনা করো।

(٢) وَ وٰعَدنا موسٰى ثَلٰثين ليلةً و اَتممنٰها بِعَشْرٍ فتم مِيقٰت ربه اَربعين ليلةً، و قال موسى لاخيه هرونَ اخْلُفني في قومي و اَصلِح و لا تتبع سَبيل المفسِدين * وَ لما جاء موسٰى لميقٰتِنا و كلَّمه ربه قال ربِّ اَرني انظُرْ اليك، قال لن ترٰني و لٰكِنِ انْظُر الى الجَبَل فَاِنِ استَقرَّ مكانَه فسوف ترٰني، فلما تجلى ربُّه للجَبَلِ جعلَه دكا و خَرَّ موسى صَعِقا، فلما اَفاقَ قال سُبحٰنك تبتُ اليك و اَنا اَول المؤمنين *

بيان اللغة

واعَدَه : وَعَدَ كلٌّ منهما الآخرَ উভয়ের প্রত্যেকে অপরকে প্রতিশ্রুতি দিলো

واعَدَ فلانًا الوقتَ أو الموضِعَ তাকে সময় বা স্থানের প্রতিশ্রুতি দিলো

اخلُفني (كن خليفتي)

خَلَفَ فلانًا (ن، خِلافَةً) : جاء بعدَه فصار مكانَه، كان خليفتَه،

خَلَف فلانًا في قومه : تَولّٰى أمرَ قومِه عندَ غيبُوبَته

تجلى (ظهَرَ بعضُ نورِه)

دكا : الدَّكُّ الأرضُ المستوِيةُ
دَكَّ البناءَ (ن، دَكًّا) : هدَمَه حتى سَوَّاه بالأرضِ
و دُكَّتِ الجبالُ دَكًّا : جُعِلت أرضًا مستويَةً
خر (وقَع و سقَط) (ن، خَرًّا) خَرَّ ساجِدًا : وقَع في سُجودٍ
صَعِقٌ : مُغمًى عليه বেহুঁশ صَعِقَ الرجلُ (س، صَعَقًا) : أصابته صاعِقَةٌ أغمِيَ عليه، هلَك
أفاق : (عاد إلى الصحة من الإغماء) (إفاقةً)
يقال : أفاقَ مِن مرَضِه / سَكَرِه / جُنونه / نَومه / غفلَتِه ·

بيان الإعراب

ثلثين ليلةً : مفعول به ثان لـ : واعَدنا
تم ميقات ربه : فعل و فاعل، و أربعين حال من الفاعل، أي : تم الميقاتُ بالغًا هذا العدَدَ
و قيل هو مفعولٌ تَمَّ، لأن معناه بَلَغَ، أي بلغ الميقاتُ هذا العدَدَ·
أرني : مفعول هذا الفعل الثاني محذوف، أي : أرني نفسَك ·
دكا : مفعول ثان لـ : جعله، وهو مصدر بمعنى مفعول، أي : مَدكوكًا
صَعِقا : حال من الفاعل ·

الترجمة

আর প্রতিশ্রুতি দিলাম আমি মূসাকে ত্রিশ রাত্রের, এবং তা পূর্ণ করলাম দশ (রাত্র) দ্বারা। এভাবে পূর্ণ হলো তার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুত সময় চল্লিশ রাত্র। আর বললেন মূসা তার ভাই হারুনকে, প্রতিনিধিত্ব করো তুমি আমার, আমার সম্প্রদায়ের মাঝে এবং (তাদের অবস্থার) সংশোধন করো, আর অনুসরণ করো না ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের পথ।
আর যখন এলেন মূসা আমার প্রতিশ্রুত সময়ে এবং কালাম করলেন তার প্রতিপালক তার সাথে, তখন তিনি বললেন, (হে) আমার প্রতিপালক, অবলোকন করান আমাকে (আপনার সত্তা), যেন আমি (এক ঝলক) তাকাতে পারি আপনার প্রতি।
আল্লাহ বললেন, কিছুতেই দেখতে পাবে না তুমি আমাকে, তবে

তাকাও তুমি পর্বতের দিকে, যদি স্থির থাকে তা নিজের স্থানে তাহলে দেখতে পারো তুমি আমাকে।
অনন্তর যখন 'জ্যোতির্ময়' হলেন তার প্রতিপালক পর্বতের প্রতি, তখন জ্যোতির্ময়তা পর্বতকে করে ফেললো বিধ্বস্ত, আর পড়ে গেলেন মূসা অজ্ঞান হয়ে। অনন্তর যখন তিনি (জ্ঞান ফিরে পেয়ে) সুস্থ হলেন তখন বললেন, আমি আপনার পবিত্রতা বর্ণনা করছি। তাওবা করছি আপনার কাছে এবং আমিই (আপনার কথায়) বিশ্বাস স্থাপনকারীদের প্রথম।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و واعدنا موسى ثلثين ليلة (আর আমি প্রতিশ্রুতি দিলাম মূসাকে ত্রিশ রাত্রের) যেহেতু واعدة এর মূল অর্থ একে অপরকে প্রতিশ্রুতি দিলো, সেহেতু কোন কোন আলিম এমন তরজমাও করেছেন, আমি ও মুসা একে অপরকে প্রতিশ্রুতি দিলাম। (মূসা আঃ এর প্রতিশ্রুতি ছিলো চল্লিশ রাত অবস্থান করার, আর আল্লাহর প্রতিশ্রুতি ছিলো তাওরাত দান করার।)

(খ) فتم ميقات ربه أربعين ليلة (এভাবে পূর্ণ হলো তার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুত সময় চল্লিশ রাত্র) এখানে মূল তারকীব থেকে সরে এসে أربعين ليلة কে ميقات থেকে বদল রূপে তরজমা করা হয়েছে, বাংলা তরজমার জন্য এ তারকীবই উপযুক্ত।
চল্লিশ রাত্র পূর্ণ হলো- এটিও أربعين ليلة এর তারকীবানুগ তরজমা নয়। তারকীবানুগ তরজমা হলো, তার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুত সময় পূর্ণ হলো এমন অবস্থায় যে, তা চল্লিশ রাত্র।

(গ) و لا تتبع سبيل المفسدين (আর অনুসরণ করো না ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের পথ) المفسدين এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, বিশৃঙ্খল লোকদের; কেউ কেউ তরজমা করেছেন বিপর্যয়/গোলযোগ সৃষ্টিকারীদের- এগুলো গ্রহণযোগ্য তরজমা। 'হাঙ্গামা সৃষ্টিকারীদের', এ তরজমা সুন্দর নয়।

(ঘ) و لما جاء لميقاتنا (আর যখন এলেন মূসা আমার প্রতিশ্রুত সময়ে) جاء এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, উপস্থিত হলেন/ পৌঁছলেন। এ হচ্ছে جاء এর ভাবতরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'এলেন', এটি শাব্দিক তরজমা।

'এসে হাজির হলেন,' এ তরজমা সুন্দর নয়।

(ঙ) أرني অবলোকন করান আমাকে (আপনার সত্তা)- এটি ব্যাকরণভিত্তিক তরজমা।
থানবী (রহ) লিখেছেন, আমাকে আপনার দীদার দান করুন, এটি সুন্দর ভাবতরজমা।

(চ) أنظر إليك যেন আমি (এক ঝলক) তাকাতে পারি আপনার প্রতি- (এক ঝলক)- এটি থানবী (রহ)-এর শব্দ, তিনি এটিকে মূল তরজমায় এনেছেন, কিতাবের তরজমায় তা বন্ধনীতে আনা হয়েছে।

(ছ) جعله دكا ('জ্যোতির্ময়তা' করে ফেললো পর্বতকে বিধ্বস্ত) থানবী (রহ) جعل এর فاعل নির্দেশ করার জন্য 'জ্যোতির্ময়তা' শব্দটি এনেছেন। আর কারো তরজমায় جعل এর فاعل স্পষ্ট হয়নি।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة : خَرَّ
٢ - أعرب قوله : أربعين ليلةً
٣ - أعرب قوله : استقر مكانَه
٤ - اشرح إعراب قوله : دكا
٥ - واعدنا موسى এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - جعله دكا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٣) قال يُموسى إني اصطفيتُك على الناس بِرِسٰلتي و بِكَلامي، فخذ ما اٰتيتُك و كن مِنَ الشّٰكِرين * و كتبنا له في الألْواحِ مِن كلِّ شيءٍ موعظةً و تفصيلا لكل شيءٍ، فخذها بِقوة وَ أْمُرْ قومَك ياخذوا بِأحسَنِها، سَاُوريكم دارَ الفٰسقين * سَاصرِف عن اٰيٰتي الذين يَتكبَّرون في الأرضِ بغَير الحقِّ، وَ إن يرَوا كلَّ اٰية لا يُؤمنوا بِها، وَ إن يَرَوا سبيلَ الرُّشدِ لا يتخِذوه سَبيلا، و إن يَرَوا سبيلَ الغَيِّ يتخذوه سَبيلا، ذلك بِأنَّهم كذبوا بِاٰيٰتنا و كانوا عَنها غٰفلين *

بيان اللغة

ألواح : جَمْعُ لَوحٍ، شيءٌ عريض من الخشَب أو غيره

কাঠের বা অন্য কিছুর প্রসারিত ফলক।

ما يكتَب فيه من الخشَب أو غيره কাঠের বা অন্য কিছুর ফলক, যাতে লেখা হয়।

الرُّشْدُ و الرَّشَد : خلاف الغَيِّ (و الغيُّ الفَساد في الاعتقاد)، و يستعمَل استعمالَ الهِدايَة، و الرشَد صَلاح العَقلِ

رَشَد (ن، رُشْدًا، و رَشادًا) اهتدى و استقامَ .

بيان الإعراب

مِن كل شيءٍ : مِن حرفُ جر زائِدٌ، و كلٌّ مسجرور لفظًا، منصوب محلا على المفعولية، و شيءٍ مضاف إليه .

موعِظةً : بدَل من مَحَلِّ كلِّ شيءٍ، و مَحَلُّه النصبُ على المفعولية، و تفصيلا معطوف على : موعظةً، و لكل شيء متعلق بـ : تفصيلا.

و قال بعضهم : موعظةٌ مفعول به، و مِن كل شيءٍ متعلق بمحذوف حال مقدمة من المفعول به .

فخذها : الجملة معطوف على كتبنا، و المعنى : فقلنا له : خذها

بقوة : متعلق بمحذوف، و هو حال من فاعل خذ، أي : خذها متلبسا بقوة .

و يَجري هذا الإعراب في بقية المواضِع، لأن الباءَ تكون زائدةً قبلَ مفعول الأخذِ، فتقول : خذ بِيَده، و تكون للاستعانة قبلَ آلة الأخذ، فتقول : خذ الإناء بِيَدك .

أمَّا القوة فهي حالَةُ الآخِذ، لا الأَخْذِ، فالباء هنا متعلق بحالٍ من فاعل الأَخْذِ

الذين يتكبرون : الموصول مفعول به لـ : أَصْرِف، و بغير الحق يتعلق بمحذوف، أي متلبسين .

سبيلا : مفعول به ثان لـ : يَتَّخِذْ

ذلك : إشارة إلى الصرف عن الآيات، و هو في محل رفع مبتدأ، و خبره محذوف يتعلق به الجار، و المصدر المؤول في محل جر بالباء،

أي : ذلك الصرفُ ثابت بِسَبَبِ تكذيبهم و كونِهم غافلين عنها

و كانوا : عطف على كذبوا .

الترجمة

বললেন আল্লাহ, হে মূসা, অবশ্যই নির্বাচিত করেছি আমি তোমাকে (তোমার সমকালের) সমস্ত মানুষের মোকাবেলায়। সুতরাং গ্রহণ করো তুমি ঐ কিতাব যা দান করেছি আমি তোমাকে, আর হও শোকরকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

আর আমি লিখে দিয়েছিলাম তাকে কাষ্ঠফলকসমূহে, সর্বপ্রকার (প্রয়োজনীয়) উপদেশ এবং (বিধান সম্পর্কে) সবকিছুর বিশদ বিবরণ। অনন্তর (আমি তাকে বলেছিলাম) দৃঢ়ভাবে গ্রহণ করো তুমি এগুলোকে। আর আদেশ করো তোমার সম্প্রদায়কে যেন তারা গ্রহণ করে সেগুলোর সর্বোত্তমকে। অতিসত্বর দেখাবো আমি তোমাদেরকে পাপাচারীদের বাসস্থান।

অবশ্যই আমি ফিরিয়ে রাখবো আমার নিদর্শনাবলী থেকে তাদেরকে যারা দম্ভ করে বেড়ায় পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে।

যদি অবলোকন করে তারা আমার প্রতিটি নিদর্শনও তবু ঈমান আনবে না তারা সেগুলোর প্রতি। আর যদি দেখে তারা হেদায়াতের পথ তবে সেটাকে পথ বলে গ্রহণ করে না, আর যদি দেখে গোমরাহির পথ তবে সেটাকে পথ বলে গ্রহণ করে নেয়। তা এই কারণে যে, তারা মিথ্যা বলেছে আমার নিদর্শনাবলীকে, আর ছিলো তারা সেগুলো থেকে উদাসীন।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إني اصطفيتك (অবশ্যই আমি নির্বাচন করেছি তোমাকে) এখানে إن এর তরজমা সকলেই বাদ দিয়েছেন, এটা থাকা উচিত বলেই মনে হয়।

على এর কারণে তাযমীনের ভিত্তিতে অনেকে اصطفيتك এর তরজমা করেছেন, বিশিষ্টতা/শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি তোমাকে।

অবশ্য متضمِّن ও متضمَّن উভয়কে সমন্বিত করে এ তরজমা হতে পারে, অবশ্যই তোমাকে আমি মানুষের মোকাবেলায় শ্রেষ্ঠ বলে নির্বাচন করেছি।

(খ) و كتبنا له في الألواح (আর লিখে দিয়েছিলাম তাকে কাষ্ঠ ফলকে) এর তরজমা কেউ করেছেন 'ফলকে', কেউ করেছেন, 'পটে'। এতে বহুবচনের অর্থ প্রকাশ পায় না।

আর বাংলা অভিধান মতে 'পট' শব্দটি এখানে উপযুক্ত নয়, কারণ এটি চিত্রশিল্পের শব্দ, যার অর্থ ছবি আঁকার স্থূল বস্ত্রখণ্ড থানবী (রহ) তরজমা করেছেন چند تختیوں پر (কতিপয় কাষ্ঠফলকে) অর্থাৎ তিনি 'নাকিরাহ্' ধরে তরজমা করেছেন। কিতাবের তরজমায় মা'রিফা ধরা হয়েছে এবং সেটাই স্বাভাবিক।

(গ) فخذها بقوة অনন্তর (আমি তাকে বলেছিলাম) গ্রহণ করো তুমি এগুলোকে দৃঢ়ভাবে– এ তরজমার ভিত্তি এই যে, ف অব্যয়টি عطف এর জন্য এবং পরবর্তী উহ্য বাক্যটি পূর্ববর্তী বাক্যের উপর معطوف হয়েছে।

যারা তরজমা করেছেন, 'সুতরাং তুমি তা গ্রহণ করো' তারা ف অব্যয়টিকে رابطة, ধরেছেন।

فخذها بقوة এর তরজমা যদি করা হয়, 'সুতরাং ঐগুলি শক্তভাবে ধরো' তাহলে মনে হতে পারে যে, কাষ্ঠফলকগুলোকে শক্তভাবে ধরতে বলা হয়েছে, যেন তা মাটিতে পড়ে না যায়। অথচ উদ্দেশ্য হচ্ছে তাতে লেখা বিধানগুলোকে দৃঢ়ভাবে গ্রহণ করার আদেশ দেয়া। সুতরাং এ তরজমা উত্তম নয়।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন, 'এগুলোকে দৃঢ়ভাবে ধারণ করো।

থানবী (রহ) লিখেছেন, এগুলোকে সচেষ্টভাবে আমলে আনো।

কিতাবের তরজমা মূলের আরো কাছে থেকে এ ভাবটুকুই ধারণ করছে।

(ঘ) يتكبرون في الأرض بغير الحق (দম্ভ করে বেড়ায় পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে) থানবী (রহ) بغير الحق এর তরজমা করেছেন, (দম্ভ করে) যার কোন অধিকার তাদের নেই – এটা

সম্প্রসারিত তরজমা। কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ) এর অনুসরণে তরজমা করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ الرُّشْدِ

٢ - أعرب قوله : مِن كلِّ شيءٍ

٣ - لم لا يجوز أن يتعلق " بقوة " بـ : خُذ ؟

٤ - عَيِّن الشرط و جوابه في إنِ الثانيةِ

٥ - فخذها بقوة (সুতরাং ঐগুলোকে শক্তভাবে ধরো) এ তরজমার ত্রুটি আলোচনা করো

٦ - بغير الحق এর কী তরজমা করেছেন থানবী (রহ) এবং তা কী ধরনের তরজমা ?

(٤) وَ اتَّخَذ قومُ موسٰى مِن بَعدِه مِنْ حُلِيِّهم عِجْلًا جَسَدًا له خُوار، اَلَم يَروا اَنه لا يُكلمهم و لا يَهديهم سَبيلا، اِتخَذوه و كانوا ظٰلِمين * وَ لما سُقِط في اَيديهم و رَاوا اَنهم قد ضَلُّوا قالوا لَئِن لَّم يرحَمنا رَبُّنا و يَغفِر لنا لَنكونَنَّ من الخٰسرين * و لما رَجع موسٰى الى قومِه غَضْبانَ اَسِفا، قال بِئسَما خلَفتُموني مِن بَعدي، اَعَجِلتُم امرَ ربكم، و اَلْقَى الالواحَ و اَخذ بِرأس اَخيه يَجُرُّه اليه، قال ابنَ اُمَّ اِنَّ القومَ استضعَفوني و كادوا يقتُلونَني، فلا تُشمِت بي الاَعداءَ و لا تجعلني مع القوم الظّٰلمين *

بيان اللغة

حُلِيٌّ : جَمعُ حَلْي، (و الجمع الآخر حِلِيٌّ) و حِلْيَة : جمعُها حِلًى و حُلًى : ما تتزين به المرأة من ذهَبٍ و فِضة و غيرها .

عِجْلٌ (و الجمع عُجول و عِجال) ولد البقَرة و عِجْلَةٌ : أنثى العِجْلِ (و الجمع عِجَل و عِجال)

خُوار : صوت البقر (و يطلَق أيضا على صوت الغنَم و الظِّباء و

السِّهام) ٠ خارَ البقرُ (ن، خُوارًا) : صاح
سُقِطَ في يَده : نَدم على ما فعل، تَحَيَّر، و الجمع سُقِطَ في أيديهم .
أَسَفًا (حزينا) أَسِف على شيءٍ/فلانٍ (س، أَسَفًا) : حزن، فهو آسِفٌ، أَسِفٌ
আফসোস করলো, দুঃখিত/ক্ষুদ্ধ হলো

قال الإمام الراغبُ : الأَسَف الحُزن و الغضَب معًا، و حقيقَتُه ثَوَرانُ دَمِ القلبِ شهوةَ الانتقامِ، فمتى كان ذلك على الضعيفِ صار غضَبًا، و متى كان على القوي صار حُزْنًا

آسَفه : جعلَه يَأسَف، و يحزَن و يغضَب

يا أسفى على ... : يا حَسْرَتا على ... هذا نِداءٌ مَجازِيٌّ لإظهار الأَسَفِ و الحَسْرَةِ على شَيءٍ

عَجِلَ (س، عَجَلاً و عَجَلَةً) : أسرع

عَجِل الأمرَ : عَدَّ الأمرَ بطيئًا فانصَرف دونَ أن ينتظِرَه، قال الإمام الراغب : العَجَلَة طلَبُ الشيءِ قبلَ أوانِه، و يَحمِلُ الإنسانَ على العجَلة شهوتُه، و لذلك صارت العَجَلة مذمومةً، حتى قيل : العَجَلة من الشيطان، و في قصة موسى عليه السلام : و عَجِلتُ إليك رب لِترْضى، فالعَجَلة و إن كانت مذمومةً، لكِنْ دَعاه إليها أمرٌ محمود، و هو طلَبُ رضَى الله تعالى .

جَرَّه (ن، جَرًّا) جَذَبه و مَدَّه টানলো, হেঁচড়ালো

لا تُشمِت بي الأعداءَ (لا تجعلهم يفرَحون بحالَتي)، شَمِتَ بِفلانٍ (س، شَماتًا و شَماتَةً) فرح ببَلِيَّتِه
তার বিপদের কারণে খুশী হলো।

أَشْمَتَ بِفلانٍ العدوَّ : أنزَل به ما يفرَح عدوُّه
অমুকের শত্রুকে খুশী করলো, (তাকে বিপদে ফেলে)

أَشمَته الله بِعَدُوِّه : أنزَلَ على عدوِّه ما يُفرِحه আল্লাহ তার শত্রুর বিষয়ে তাকে খুশী করলেন

بيان الإعراب

من بعده : (أي مِن بعدِ ذهابه إلى الطور لِلِقاء ربه) متعلق بـ : اتخذ، و

مِن حُلِيِّهِم متعلق بـ : اتخذ أيضا، أو بمحذوف، و هو حال من : عِجْلا، لأنه لو تأخَّر لكان صفة لـ : عِجْلًا، فلَما تقدَّم صار حالا منه، و هذه هي القاعدة في هذا المقام .

عجلا جَسَدًا : عجلا مفعول به لـ : اتخذ، و جسدًا بَدَلٌ منه،

وجملة " له خوار " في محل نصب صفة لـ : عجلا

و لا يهديهم سبيلا : سبيلا مفعول به ثان، أو منصوب بنزع الخافض

اتخذوه : فعل و فاعل و مفعول به أول، و المفعول الثاني محذوف، أي : اتخذوه إلهًا، و جملة كانوا ظالمين حال .

سقط في أيديهم : جملةٌ تستعمَل للندَم و التحيُّر، فَمَعناها : و لما نَدِموا و تحيَّروا .

بئسما خلفتموني من بعدي : فاعلُ بئسَ الجامدِ هي، و ما نكِرة موصوفَة بمعنى شيءٍ، في محَل نصب تمييزٌ للفاعل، و جملة خلفتُموني صفة لـ : ما، و العائد محذوف، و من بعدي متعلق بـ : خلفتموني، و المخصوص بالذم محذوف، أي : خلافتُكم، و أصل العبارة : بئس (هي) شيئًا خلفتمونيه من بعدي، خلافتُكم .

أمرَ ربكم : مفعول عجلتم، أو منصوب بنزع الخافض، أي : عن أمر ربكم

ابنَ أم : أصله يا ابنَ أمي، قُلِبَتِ الياءُ ألفًا، ثم حُذفت الألف، و أبقِيَتِ الفتحةُ بدَلا عنها، كما تُبقى الكسرَة بدلًا عن ياءِ المتكلم .

فلا تُشمت : الفاء الفصيحة، أي : إذا علمتَ عذري فلا تُشمت بي الأعداءَ و بي يتعلق بـ : تشمت، و الأعداء مفعول به .

الترجمة

আর গড়ে নিলো মূসার কাউম, তার (যাওয়ার) পর তাদের (কাছে থাকা) অলংকারাদি দ্বারা একটি বাছুর, একটি অবয়ব, যার রয়েছে 'হাম্বা' রব।

আচ্ছা, তারা কি দেখলো না যে, তা কথা (পর্যন্ত) বলছে না তাদের সাথে এবং দেখাচ্ছে না তাদেরকে কোন পথ। তারা সেটাকে (উপাস্য) বানিয়ে নিলো; আসলে তারা ছিলো যালিম।

আর তারা যখন অনুতপ্ত ও হতবুদ্ধি হলো এবং দেখলো যে, তারা

বিপথগামী হয়ে পড়েছে তখন তারা বললো, যদি দয়া না করেন আমাদের প্রতিপালক আমাদেরকে এবং ক্ষমা না করেন আমাদেরকে তাহলে তো অবশ্যই আমরা হবো ক্ষতিগ্রস্তদের দলভুক্ত। আর যখন ফিরে এলেন মূসা আপন সম্প্রদায়ে ক্রুদ্ধ ও ক্ষুব্ধ অবস্থায় তখন তিনি (কাউমকে সম্বোধন করে) বললেন, তোমরা আমার কত না নিকৃষ্ট প্রতিনিধিত্ব করেছো আমার (যাওয়ার) পরে। তোমরা কি তাড়াহুড়া করলে তোমাদের প্রতিপালকের আদেশ সম্পর্কে!

আর তিনি (যেন) ফেলে দিলেন ফলকগুলো এবং আপন ভাইয়ের মাথা ধরে টানতে লাগলেন নিজের দিকে।

হারুন বললেন; হে (আমার) সহোদর! লোকেরা তো দুর্বল ভেবেছিলো আমাকে এবং উপক্রম করেছিলো আমাকে হত্যার, সুতরাং হাসিও না তুমি আমার বিষয়ে শত্রুদেরকে, আর অন্তর্ভুক্ত করো না আমাকে এই যালিম সম্প্রদায়ের।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) اتخذ এর তরজমা কেউ করেছেন, 'বানালো', কেউ করেছেন, 'গড়লো', দ্বিতীয়টি অধিকতর উপযক্ত মনে হয়, 'তৈরী করলো'ও হতে পারে।

(খ) من حليهم 'নিজেদের অলংকার দ্বারা' বললে, মালিকানাধীন অলংকার বোঝা যায়। অথচ এই إضافة মালিকানার সূত্রে নয়, বরং ন্যূনতম সম্পর্কের সূত্রে। কারণ এগুলো ছিলো ফেরআউনের সম্প্রদায়ের; ইসরাঈলীরা উৎসবের কথা বলে তাদের কাছ থেকে ধার এনেছিলো মাত্র। থানবী (রহ) من حليهم এর তরজমা লিখেছেন, তাদের (নিয়ন্ত্রণাধীন) অলংকারাদি দ্বারা– তিনি (নিয়ন্ত্রণাধীন) বন্ধনীটি যোগ করে বিষয়টি পরিষ্কার করেছেন।

(গ) من بعده (তার [যাওয়ার] পরে) 'তার অনুপস্থিতিতে'– এটি শব্দানুগ তরজমা নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

কিতাবে থানবী (রহ) এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঘ) عجلا جسدا (একটি বাছুর, একটি অবয়ব) এটি বাদালের তারকীবানুগ তরজমা। 'দেহ'-এর চেয়ে অবয়ব শব্দটি অধিকরত উপযুক্ত।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন 'গোবৎসের মূর্তি'। ভাবতরজমা

হিসাবে এটি গ্রহণযোগ্য এবং অধিকতর [illegible]। কিন্তু এর প্রয়োজন নেই।

(ঙ) له خوار (যার রয়েছে হাম্বা রব) যা হাম্বা রব করতো/যার মধ্য থেকে গরুর শব্দ বের হতো/ তাতে গরুর আওয়ায ছিলো/ তাতে একটি আওয়ায ছিলো- এগুলো মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা। এগুলোর মাঝে প্রথম তরজমাটি শুধু গ্রহণযোগ্য।

(চ) لا يكلمهم (কথা [পর্যন্ত] বলছে না তাদের সাথে) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'তাদের সাথে কথা পর্যন্ত বলতো না'
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা হলো, তাদের সাথে কথাও বলে না।
অতীতের ঘটনা হিসাবে 'কথা বলতো না' এ তরজমা হতে পারে। কিন্তু আয়াতের উদ্দেশ্য হচ্ছে ঘটনাটিকে শ্রোতার সামনে বর্তমানরূপে তুলে ধরা। সেদিক থেকে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা অধিকতর নিকটবর্তী।
কথা (পর্যন্ত) বলছেনা - এটিকে 'উপাস্য'-এর অযোগ্যতার ন্যূনতম উদাহরণরূপে বলা হয়েছে, অর্থাৎ উপাস্য হওয়ার অন্যান্য যোগ্যতা দূরে থাক, তা তো কথাই বলতে পারবে না। আয়াতের এই ভাবটুকু তুলে আনার জন্য দুই শায়খ দু'টি শব্দ যোগ করেছেন। কিতাবে থানবী (রহ) এর অনুসরণে 'পর্যন্ত' শব্দটি যোগ করা হয়েছে, তবে শব্দটি যেহেতু আয়াতে উচ্চারিত নয়, সেহেতু সেটাকে বন্ধনীতে ব্যবহার করা হয়েছে।

(ছ) و كانوا ظالمين (আসলে ছিলো তারা যালিম)- এই جملة حالية এসেছে তাদের হাকীকত তুলে ধরার জন্য, তাই কিতাবে و এর তরজমা করা হয়েছে, 'আসলে'। কেউ কেউ তরজমা করেছেন 'বস্তুত'; সেটাও গ্রহণযোগ্য।

(জ) قالوا لئن لم يرحمنا (তারা বললো) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন, তারা বলতে লাগলো- কারণ কথাটি তারা বারবার বলবে এটাই স্বাভাবিক।
কিতাবের তরজমায় মূলশব্দকে অনুসরণ করা হয়েছে।
যদি আমাদেরকে দয়া না করেন এবং আমাদের প্রতি দয়া না করেন, দুটোরই প্রচলন বাংলায় রয়েছে। প্রথমটি কোরআনী তারকীবের অনুকূল।

(ঝ) غضبان أسفا 'ক্রুদ্ধ ও ক্ষুব্ধ অবস্থায়' – সমশ্রেণিতা বিবেচনা করে শব্দদুটিকে পছন্দ করা হয়েছে। থানবী (রহ) أسفا এর তরজমা লিখেছেন, 'দুঃখভারাক্রান্ত অবস্থায়'– তিনি সম্প্রসারিত তরজমা করেছেন।

(ঞ) بئسما خلفتموني من بعدي (তোমরা আমার কত না নিকৃষ্ট প্রতিনিধিত্ব করেছো, আমার যাওয়ার পরে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা।

থানবী (রহ) এভাবে ভাবতরজমা করেছেন, আমার পরে তোমরা এ বড় অন্যায় আচরণ করেছো।

(ট) ألقى الألواح – ফেলে দিলেন/ছুঁড়ে ফেললেন, এ তরজমা নবীর শান উপযোগী নয়। থানবী (রহ) বলেছেন, মূসা (আঃ) ফলকগুলো এত দ্রুত রেখেছিলেন, যে সাধারণ চোখে ফেলে দেয়ার মত মনে হতে পারে। রূহুল মাআনীতে এ ব্যাখ্যা রয়েছে। এ ব্যাখ্যার আলোকে কিতাবের তরজমায় (যেন) এই বন্ধনী যোগ করা হয়েছে।

থানবী (রহ) ভাবতরজমা করেছেন এভাবে– এবং ফলকগুলো খুব দ্রুত একদিকে রেখে দিলেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ عِجْلٍ
٢ – بم يتعلق قوله : من حُلِيِّهم ؟
٣ – أعرب جسدًا و اذكر محلَّ إعرابِ الجملة : له خوار .
٤ – اشرح أصل ا بنَ أمِّ
٥ – 'নিজেদের অলংকার দ্বারা' এ তরজমাটি পর্যালোচনা করো
٦ – ألقى الألواح এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ سْئَلهم عن القريَةِ التي كانت حاضِرةَ البحرِ ، إذ يعدُون في السَّبْتِ إذ تَاتِيهم حِيتانُهم يومَ سبتِهم شُرَّعًا و يومَ لا يَسبِتون لا تَاتيهم، كذلك نَبلوهم بما كانوا يفسُقون * وإذ قالَت أُمَّة منهم لم تَعِظون قومًا اللهُ مُهْلِكُهم أو معذِّبُهم عذابًا شديدًا ، قالوا مَعذِرةً الى ربكم و لعلهم يتقون * فلما

نَسوا ما ذُكِّروا به أنجينا الذين يَنْهَون عن السوءِ و أخذنا
الذين ظَلَموا بِعذاب بَئيسٍ بما كانوا يفسُقون * فَلما عتَوا
عَن ما نُهوا عنه قُلنا لهم كونوا قِرَدةً خاسِئِين * وَ إذ تَأذَّن
ربك لَيَبْعَثَنَّ عليهم إلى يَوم القِيٰمَة مَن يَسومُهم سوءَ
العَذابِ، إنَّ ربك لَسَريعُ العِقاب، وَ إنَّه لَغفور رحيم *

بيان اللغة

حاضِرَةَ البحرِ : قُرْبَ البحرِ، أو قريبةً مِنَ البحرِ
يعدُون : يَتجاوَزون الحدَّ (ن، عَدْواً و عُدْوانًا)
سَبَتَ فلان (ض، سَبْتًا) : دخَل في يوم السبتِ
سَبَتَ اليهودُ : قامَت بِأمرِ سَبْتِها و عَظَّمَتْ سَبْتَها بِتَركِ الصيد وَ الاشتغال بالعِبادَة তাদের শনিবারের করণীয় করলো
شُرَّعًا : جمعُ شارِعٍ، مِن شَرَع عليه (شَرْعًا و شُروعًا، ف) : دَنا منه و قرُب
مَعذِرةً : هذا مصدر، من باب ضَرَب
عَذَر فلانًا في صَنْعِه (ض، عُذْرًا و مَعذِرَةً) قبل عذرَه، رفعَ عنه اللومَ أو الذنبَ فيه তার কাজের বিষয়ে তার থেকে তিরস্কার বা অপরাধ প্রত্যাহার করলো।
اعتذَر عن فعلِه/من فعلِه : احتَجَّ لِنَفسِه و أبدى عذرَه فيما فعَل ٠ তার কর্মের স্বপক্ষে অজুহাত বা কৈফিয়ত পেশ করলো
اعتذَر إليه : طلَب منه قُبولَ معذرَته
عُذرٌ (ج) أعذار، الحجَّة التي يَعتذِر بها
مَعذِرَة (ج) مَعاذِرٌ : عُذر
بَئيس : شديد
عَتَوا : تكبَّروا، و جاوَزوا الحدَّ (عُتوًّا وَ عِتِيًّا، ن)
يَسومُهم : يُذيقهم، و تَأذَّن : أعلَن

بيان الإعراب

عن القريَة، أي : عَن حالِ القريَة أو عن قِصَّةِ القريَةِ، و هذا المحذوف هو الناصب للظرف الآتي، و حاضرةَ البحرِ خبر كانت

إذ يعدون في السبتِ إذ تَأتيهم حيتانُهم : الظرف الأول متعلق بالمضاف المحذوف، أي : و اسئلهم عن قصة القريَة حينَ عُدوانِهم في أمرِ السبتِ، وَ إذِ الثانيَةُ متعلقة بـ : يَعدون، أي : كان عُدوانهم في السبت حينَ اتيانِ الحُوتِ إليهم

يومَ سبتهم : ظرف متعلق بـ : تأتيهم، و شُرَّعاً حال من فاعلِ تأتي ·

و يومَ لا يسبِتون ظرف لقوله : لا تَأتيهم

كذلك نَبلوهم بما كانوا يفسُقون : أي : كنا نَبلوهم بلاءً كذلك البَلاءِ أو مثلَ ذلك البَلاءِ لِفِسْقِهم المستَمِرِّ

الله مُهلكهم : الجملة الإسمية نعت لـ : قوما

معذرةً : مفعول لأجله، أي : وَعَظناهم لِلمعذَرَة، أو مفعول مطلق لفعل مقدر، أي : نَعتذِر معذرةً، و المعذرة بمعنى الاعتذار ·

مَن : اسم موصول مفعول لَيَبعثَن، و الجملة صلة الموصول، أو هي نكرة موصوفة، أي شخصاما، و الجملة نعت ·

سوءَ العذاب : مفعول به ثان لـ : يسومهم

سريعُ العقاب : أضيفت الصفة إلى فاعلها أي : سريعٌ عِقابُه ·

الترجمة

আর জিজ্ঞাসা করুন আপনি তাদেরকে ঐ জনপদের অবস্থা সম্পর্কে যা ছিলো সমুদ্রের নিকটে, যখন সীমালঙ্ঘন করতো তারা শনিবারের বিষয়ে, যখন আসতো তাদের কাছে তাদের মাছগুলো তাদের শনিবার উদ্‌যাপনের দিন খুব নিকটবর্তী হয়ে। আর যে দিন তারা শনিবার উদ্‌যাপন করতো না, মাছেরা তাদের কাছে আসতো না। এভাবেই আমরা পরীক্ষা করতাম তাদেরকে তাদের পাপাচার করতে থাকার কারণে।

এবং (ঐ সময়ের অবস্থা জিজ্ঞাসা করুন) যখন বলেছিলো তাদের মধ্য হতে একটি দল (অন্য একটি দলকে), কেন সদুপদেশ দাও

তোমরা এমন সম্প্রদায়কে যাদেরকে আল্লাহ্ হালাক করবেন, কিংবা (যাদেরকে) আযাব দেবেন কঠিন আযাব! তারা বলেছিলো (আমরা তা করি) ওযর পেশ করার জন্য তোমাদের প্রতিপালকের নিকট; আর যেন তারা ভয় করে (আল্লাহকে)।

তো যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বিষয় যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো তখন নাজাত দিলাম আমি তাদেরকে যারা এই মন্দকর্ম থেকে নিষেধ করতো, আর যারা অন্যায় করেছিলো তাদেরকে আমি পাকড়াও করলাম কঠিন আযাব দ্বারা, তাদের নাফরমানি করতে থাকার কারণে। অর্থাৎ যখন সীমালঙ্ঘন করলো তারা ঐ কাজের ক্ষেত্রে যা থেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিলো তখন বলে দিলাম আমি তাদেরকে, হয়ে যাও তোমরা লাঞ্ছিত বানর।

আর (ঐ সময়ের কথা স্মরণ করুন) যখন ঘোষণা করলেন আপনার প্রতিপালক যে, অতি অবশ্যই পাঠাতে থাকবেন তিনি তাদের উপর কেয়ামত পর্যন্ত কোন না কোন ব্যক্তিকে যে ভোগ করাতে থাকবে তাদেরকে নিকৃষ্ট সাজা। আপনার প্রতিপালক অতি অবশ্যই ত্বরিৎ শাস্তিদানকারী এবং অতি অবশ্যই তিনি পরম ক্ষমাশীল চিরদয়ালু।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اسئلهم عن القرية (আর জিজ্ঞাসা করুন আপনি তাদেরকে ঐ জনপদের অবস্থা সম্পর্কে)– এখানে উহ্য مضاف কে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

(খ) التي كانت حاضرة البحر যা সমুদ্রের নিকটে ছিলো– এ তরজমার সূত্র এই যে, حاضرة শব্দটি قرب এর সমার্থক ظرف রূপে এসেছে। আর তা উহ্য খবর واقعة এর যারফ। এই উহ্য খবরকে উল্লেখ করে এভাবে তরজমা করা যায়– সমুদ্রের নিকটে অবস্থিত ছিলো।

'নিকটে'-এর পরিবর্তে 'তীরে বা উপকূলে' তরজমা করা যায়।

(গ) إذ يعدون في السبت (যখন তারা সীমালঙ্ঘন করতো শনিবারের বিষয়ে) কেউ কেউ তরজমা করেছেন– 'তারা শনিবারে সীমালঙ্ঘন করতো।' – এখানে দু'টি ক্রুটি।

প্রথমতঃ এটিকে স্বতন্ত্র বাক্যরূপে তরজমা করা হয়েছে, অথচ

و اسألهم عن حال القرية হচ্ছে إذ আর مضاف إليه এর إذ তা এই উহ্য মুযাফের ظرف
দ্বিতীয়তঃ এখানে في السبت কে সীমালঙ্ঘনের কাল ধরা হয়েছে, অথচ এটি হচ্ছে সীমা লঙ্ঘনের বিষয়। মূলরূপটি এই إذ يعدون في أمر السبت
শায়খায়ন তাদের তরজমায় বিষয়টি বিবেচনায় রেখেছেন।

(ঘ) شرعا (খুব নিকটবর্তী হয়ে) এটি শব্দানুগ তরজমা।
থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'প্রকাশিত হয়ে হয়ে'
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা হলো, 'পানির উপর'।
কেউ কেউ লিখেছেন, পানিতে ভেসে/পানির উপর ভেসে- এগুলো ভাবতরজমা।

(ঙ) و يوم لا يسبتون (আর যখন তারা শনিবার উদযাপন করতো না) এটি মূলানুগ তরজমা, তবে সহজবোধ্য নয়। সরল তরজমা করেছেন শায়খায়ন এভাবে- আর যখন শনিবার হতো না তখন তাদের কাছে আসতো না।

(চ) قالوا معذرة إلى ربكم তারা বললো, (আমরা তা করি) তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ওযর পেশ করার জন্য- এখানে معذرة এই مفعول لأجله এর উহ্য ফেয়েলকে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) معذرة এর তরজমা করেছেন, 'দায় থেকে মুক্ত হওয়ার উদ্দেশ্যে'।

(ছ) فلما نسوا ما ذكروا به তো যখন ভুলে গেলো তারা ঐ বিষয় যা দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয়েছিলো- এখানে 'তো' হচ্ছে فاء الاستيناف এর তরজমা।
আয়াতটির তরজমা থানবী (রহ) করেছেন এভাবে, যখন তারা ঐ আদেশ বর্জনই করে চললো, যা তাদেরকে বোঝানো হচ্ছিলো- এটি হলো ভাবতরজমা।
'ভুলে গেলো' এর পরিবর্তে 'বিস্মৃত হলো' বলা যায়, তদ্রূপ 'বর্জন করে চললো'- এর পরিবর্তে 'উপেক্ষা করে চললো' বলা যায়।

(জ) فلما عتوا থানবী (রহ) ف এর তরজমা 'অর্থাৎ' করেছেন এই সূত্রে যে, এখানে ف দ্বারা عذاب এর বিশদ বিবরণ দেয়া হয়েছে।

(ঝ) قلنا لهم كونوا قردة خاسئين (বলে দিলাম তাদেরকে, হয়ে যাও তোমরা লাঞ্ছিত বানর) আয়াতে যে ক্রোধের ভাব রয়েছে সেটা প্রকাশ করার জন্য এ তরজমা করা হয়েছে।
'তখন তাদেরকে বললাম, ঘৃণিত বানর হও' এ তরজমায় ক্রোধের প্রকাশ প্রকট হয়নি।

(ঞ) من (কোন না কোন ব্যক্তিকে) থানবী (রহ) من কে نكرة موصوفة ধরে এ তরজমা করেছেন।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ سبتٍ

٢ - أعرب قوله : أو مُعَذبهم عذابا شديدا

٣ - أعرب قوله : معذرةً

٤ - بم يتعلق قوله : إذ تأتيهم حيتانهم ؟

٥ - সমুদ্রের নিকটে ছিলো- এ তরজমার সূত্র কী ? 'নিকটে'-এর পরিবর্তে আর কী শব্দ হতে পারে ?

٦ - إذ يعدون في السبت তারা শনিবারে সীমালঙ্ঘন করতো- এ তরজমাটি পর্যালোচনা করো।

(٦) وَ إذ يَعِدكم الله إحدَى الطائِفَتين أنها لكم و تَوَدُّون أنَّ غيرَ ذات الشوكَةِ تكون لكم و يُريد الله أن يُحِقَّ الحقَّ بِكلمٰتِه و يقطَعَ دابِر الكٰفرين * لِيُحِقَّ الحقَّ و يُبطل الباطِلَ و لو كَرِه المجرمون * إذ تَستغيثون ربَّكم فاستجاب لكم أني مُمِدُّكم بِألفٍ مِنَ الملٰئِكَةِ مردفين * و ما جَعَله الله إلاَّ بُشرى و لِتَطمئِنَّ به قلوبُكم، و ما النصر إلاَّ من عند الله، إنَّ الله عزيز حكيم * إذ يُغَشِّيكم النعاسَ اَمَنَةً منه و يُنزِّلُ عليكم من السماء ماءً ليُطهرَكم به و يُذهِبَ عنكم رجزَ الشيطٰن و لِيَربِط على قلوبكم و يُثَبِّتَ به الاقدامَ * اذ يُوحي ربك الى الملٰئكة أني معكم فَثَبِّتوا الذين اٰمَنوا، سَأُلقي في قلوب الذين

كفروا الرعبَ فاضربوا فوق الاعناق و اضربوا منهم كلَّ بنانٍ *
ذلك بِأنهم شاقُّوا اللّٰه و رسولَه، و من يُشاقِقِ اللّٰهَ و رسولَه فان
اللّٰهَ شديدُ العِقاب *

بيان اللغة

شَوكة : واحدة الشَّوْكِ، و هو جنس، جمعه أَشواك : ما يخرج من
الشجر أو النبات مِثلَ الإبَرِ ·
و الشوكة : القوة و البأس، وهو المراد هنا ·
أَحقَّ الحقَّ : أثبتَ الحق ·
استغاث فلانا و بفلان (استغاثة) استنصره و استعان به ·
أغاثه : نصره و أعانه
الغَوْثُ : الإعانة و النُّصرة
مُردفين (متتابِعين، أي : نازلين واحدًا بعدَ واحدٍ)
أردَفَ : تَتابَعَ، أردف فلانًا : جاءَ بعده ·
أردفَه : ركِبَ خلفَه، أركبَه خلفَه ·
يُغَشيكم النعاسَ (يُلقي عليكم النومَ)
غَشَّى الشيءَ : جعل عليه غِشاءً، يقال : غَشَّى اللّٰهُ على بَصره
غَشَّى فلانًا الأمرَ : غَطَّاه به و أحاطَه به ·
غَشِيَ الأمرُ فلانًا (غَشْيًا، س) : غَطَّاه ·
الرجز : الذنب، العذاب، الشرك و عبادة الأوثان ·
و رجز الشيطان : وسوسته
رَبَطَ الله على قلبه بالصبر : قَوَّى قلبَه بالصبر ·
رَبَط نفسَه عن ... منعه عن ·
رَبط شَيئًا بـ .. (ن، رَبْطًا) شَدَّه بـ ... দ্বারা বাঁধলো ...
بَنان : أصابع، أو أطراف الأصابع · المفاصل، و الواحدة : بَنانَةٌ
شَاقَّه (خالَفَه و عاداه، شِقاقًا)
شَقَّ الأمرَ (ن، شَقًّا) : صعُب
شَقَّ على فلانٍ : أوقعَه في المشَقَّةِ

بيـان الإعراب

وَ إذ يَعِدكم الله :أي : و اذكر حينَ وعدِ الله إيَّاكم، و إحدٰى الطائِفَتين مفعول به ثان لـ : يعدكم، أَنها لكم : مصدر مؤول و بَدَلُ اشتمالٍ من إحدَى الطائِفَتين . و كان هذا الوعدُ قبلَ غزوةِ بَدرٍ .

و تَوَدُّون : الجملة في مَحَل نصب حال من الضمير المنصوب في يَعِدكم، بِتَقدير و أنتم، لأن واو الحال لا تدخل على المضارع المثبت .

إذ تستغيثون ربكم : بَدَل من إذ يعدكم .

فاستجاب لكم أني ممدكم : الفاء عاطفة عُطِفت بها الجملة على تستغيثون، و المصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض

و ما جعله الله إلا بشرى لكم : الواو استئنافية، و الضمير المنصوب يعود إلى : أني ممدكم، لأن المعنى : فاستجابَ لكم بِإِمْدادِكم، و ما جعل هذا الإمدادَ إلا بُشرٰى لكم .

و لتطمئن : متعلق بفعل محذوف، أي : و بَشَّر به لِتطمئنَّ قلوبُكم .

إذ يغشيكم النعاسَ أمنة منه : بدل ثان من إذ يعدكم، و النعاسَ مفعول به ثان، و أمنةً مفعول لأجله، و منه متعلق بمحذوف نعت لـ : أمنةً .

إذ يوحي : بدل ثالث من إذ يعدكم، و أني معكم : مفعول يوحي .

فثبتوا : الفاء الفصيحة، أي : إذا ثبت هذا فثبتوا المؤمنين بتبشيرهم بالنَّصر .

فوق الأعناق : ظرف متعلق بـ : اضربوا، و المفعول به محذوف، أي فاضربوهم فوقَ الأعناق .

كل بنان : مفعول به لـ : اضربوا، و منهم حال من المفعول .

ذلك : مبتدأ، و الإشارة إلي الضرب، و بِأنهم .. متعلق بخبر محذوف، و المصدر المؤول في محل جر بالباء . أي : ذلك الضربُ واقعٌ بِسبَبِ شِقاقِهِم اللّٰهَ و رسولَه .

الترجمة

আর (হে মুমিনগণ, তোমরা ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন প্রতিশ্রুতি দিচ্ছিলেন তোমাদেরকে আল্লাহ্ দু'টি দলের একটি

সম্পর্কে যে, তা হবে তোমাদের জন্য; অথচ কামনা করছিলে তোমরা যে, অপরাক্রমশালী দলটি হোক তোমাদের জন্য; আর আল্লাহ চাচ্ছিলেন যে, তিনি সুসাব্যস্ত করবেন সত্যকে তার বাণীসমূহ দ্বারা এবং কেটে দেবেন কাফিরদের গোড়া, যাতে করে সাব্যস্ত করে দেন তিনি হককে হক এবং সাব্যস্ত করে দেন বাতিলকে বাতিল, যদিও (তা) অপছন্দ করে অপরাধীগণ।

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন সাহায্যের জন্য ডাকছিলে তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে, অনন্তর সাড়া দিলেন তিনি তোমাদের ডাকে যে, সাহায্য করবো আমি তোমাদেরকে লাগাতার নেমে আসা এক হাজার ফিরেশতা দ্বারা।

এ সাহায্যকে আল্লাহ শুধু সুসংবাদ বানিয়েছিলেন তোমাদের জন্য, আর (তিনি তা করেছিলেন) যাতে আশ্বস্ত হয় তা দ্বারা তোমাদের হৃদয়। আর সাহায্য তো শুধু আল্লাহর নিকট থেকে আসে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

(ঐ সময়কে স্মরণ করো) যখন আচ্ছন্ন করছিলেন তিনি তোমাদেরকে তন্দ্রায়, তার পক্ষ হতে স্বস্তি দান করার জন্য এবং বারি বর্ষণ করছিলেন তোমাদের উপর আসমান থেকে, যাতে পবিত্র করেন তিনি তোমাদেরকে তা দ্বারা এবং দূর করেন তোমাদের থেকে শয়তানের ওয়াসওয়াসা এবং যেন সুদৃঢ় করেন তোমাদের হৃদয়কে এবং স্থির করেন তা দ্বারা (তোমাদের) পা।

(স্মরণ করো ঐ সময়কে) যখন প্রত্যাদেশ করছিলেন তোমাদের প্রতিপালক ফিরেশতাদের প্রতি যে, আমি তোমাদের সঙ্গে রয়েছি, সুতরাং অবিচল রাখো তোমরা তাদেরকে যারা ঈমান এনেছে। অবশ্যই ভয় ঢেলে দেবো আমি তাদের অন্তরে যারা কুফুরি করেছে, সুতরাং আঘাত করো তোমরা ঘাড়ের উপরে এবং আঘাত করো তাদের প্রত্যেক জোড়ায়।

তা এ কারণে যে, তারা বিরুদ্ধাচরণ করেছে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের। আর যারা বিরুদ্ধাচরণ করে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের (তাদের জন্য) আল্লাহ কঠিন আযাব দানকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أنها لكم (যে তা হবে তোমাদের জন্য) এটা হলো পূর্ণ শব্দানুগ তরজমা, এবং তা গ্রহণযোগ্যও।

তোমাদের আয়ত্ত্বাধীন হবে /আয়াত্তে আসবে/বশীভূত হবে– এটা শব্দানুগ না হলেও মূলানুগ তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন وہ تمہارے ہاتھ لگے گی (তা তোমাদের হাতে লাগবে)।

থানবী (রহ)-এর তরজমা– وہ تمہارے ہاتھ آجاویگی (তা তোমাদের হাতে এসে যাবে)।

এটা মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা। এ দুই তরজমা অনুসরণ করে কেউ কেউ লিখেছেন, তা তোমাদের হস্তগত হবে।

শত্রু হস্তগত হয় না, করতলগত হয়। সুতরাং লিখতে হবে, তা তোমাদের করতলগত হবে।

(খ) وتَوَدُّون أن غيرَ ذاتِ الشوكة تكون لكم (অথচ কামনা করছিলে তোমরা যে, অপরাক্রমশালী দলটি হোক তোমাদের জন্য)

الشوكة মানে পরাক্রম, ذاتُ الشوكةِ মানে পরাক্রমের অধিকারী বা পরাক্রমশালী। সুতরাং এটি হচ্ছে পূর্ণ শব্দানুগ তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

'নিরস্ত্র' এটি غيرٌ ذاتِ الشوكة এর যথার্থ প্রতিশব্দ নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

شوكة এর একটি অর্থ কাঁটা। সে হিসাবে শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর তোমরা চাচ্ছিলে যে, যাতে কাঁটা নেই সেটি যেন তোমাদের হাতে আসে। কোন কোন বাংলা মুতারজিম তা অনুসরণ করেছেন। এ তরজমা সুস্পষ্ট নয়।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– غیر مسلح جماعت (নিরস্ত্র দল)

(গ) تكون لكم (তোমাদের জন্য হোক) একটি তরজমায় আছে– 'তোমাদের ভাগে আসুক' এটা সাধারণত ঐ ক্ষেত্রে হয়, যখন অন্যটি অন্যদের ভাগে যায়।

(ঘ) يقطَعَ دابرَ الكٰفرين (কেটে দেবেন কাফিরদের গোড়া) শায়খায়ন শব্দানুগ তরজমা করেছেন। যথা–

(ক) اور کاٹ ڈالے جڑ کافروں کی (এবং কেটে ফেলবেন জড়/শিকড় কাফিরদের)

(খ) اور کافروں کی بنیاد کو قطع کردے (এবং কাফিরদের বুনিয়াদ/গোড়া কর্তন করে ফেলবেন)

'মূলোচ্ছেদ/নির্মূল করবেন' এ তরজমা হতে পারে।

(ঙ) و لو كره المجرمون 'যদিও অপরাধীরা তা পছন্দ করে না/অপছন্দ করে/অসন্তুষ্ট হয়।

এই তিনটি তরজমার মধ্যে মাঝেরটি শব্দানুগ।

المجرمون। এর প্রতিশব্দরূপে 'পাপীরা' সঠিক নয়।

(চ) إذ تستغيثون ربكم এর দু'টি তরজমা লক্ষ্য করো–

(ক) যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করছিলে/ ফরিয়াদ করছিলে।

এ তরজমায় ربكم এর ব্যাকরণগত রূপটি প্রকাশ পায় না।

(খ) যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে সাহায্যের জন্য ডাকছিলে– এখানে ربكم এর ব্যাকরণগত রূপটি প্রকাশ পায়। কিন্তু 'ফরিয়াদ করা' যতটা শব্দানুগ, 'সাহায্যের জন্য ডাকা' ততটা শব্দানুগ নয়।

তাই দুটো তরজমাই দুদিক থেকে অগ্রাধিকার পেতে পারে।

(ছ) يُغَشِّيكم النعاسَ তোমাদেরকে তন্দ্রায় আচ্ছন্ন করেন/তোমাদের উপর তন্দ্রাচ্ছন্নতা আরোপ করেন– এখানে প্রথমটি অধিকতর শব্দানুগ।

তোমাদেরকে তন্দ্রা দ্বারা ঢেকে ফেলেন– এ তরজমা সুন্দর নয়, কারণ 'ঢাকা' শব্দটি তন্দ্রার সঙ্গে প্রচলিত নয়।

(জ) يُنَزِّلُ عليكم من السماء ماء তোমাদের জন্য আকাশ থেকে পানি অবতারণ করেন/ বৃষ্টি ঝরান/ বারি বর্ষণ করেন/ পানি অবতীর্ণ করেন।

এগুলোর মাঝে 'বৃষ্টি ঝরান' তরজমাটি সুন্দর নয়।

প্রথমটি শব্দানুগ, তবে 'বারি বর্ষণ করেন' অধিকতর সুন্দর।

(ঝ) رجزَ الشيطان এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন شیطان کی نجاست (শয়তানের নাপাকি/ অপবিত্রতা।

থানবী (রহ) করেছেন, شیطانی وسوسه (শয়তানি ওয়াসওয়াসা) বাংলায় শয়তানের কুমন্ত্রণা বলা যায়।

অভিধানে رجس এর অর্থ রয়েছে অপবিত্রতা, رجز এর ঐ অর্থ নেই। ইমাম রাগিবও তা আনেন নি।

(ঞ) ذلك এর مشار إليه উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে 'এ আঘাত এ জন্য যে,'।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ شوكةٍ ٠

٢ - أعرب قوله : أَنَّها لكم ٠

٣ - اشرح إعراب قوله : و تودون ٠

٤ - ما إعراب منهم في قوله تعالى : و اضربوا منهم كل بنان ؟

٥ - إذ تستغيثون ربكم এর দুটি তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - غير ذات الشوكة এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) يٰاَيها الذين اٰمَنوا استَجيبوا للّٰهِ و لِلرسولِ اذا دَعاكم لما يُحيِيكم، وَ اعلَموا اَنَّ اللّٰهَ يحول بينَ المرءِ و قَلبِه و اَنه اليه تُحشَرون * و اتقوا فِتنةً لا تُصيبَنّ الذين ظلَموا منكم خاصَّةً، و اعلَموا اَن الله شديد العِقاب * وَ اذكُروا اِذ اَنتم قليل مستَضعَفون في الارض تَخافون اَنْ يتَخَطَّفَكم الناسُ فَاٰوٰكم و اَيَّدَكم بِنَصره و رزَقَكم من الطيِّبٰت لعلكم تَشكرون * يٰاَيها الذين اٰمَنوا لا تَخونوا اللّٰهَ و الرسولَ و تخونوا اَمٰنٰتكم و اَنتم تعلمون * و اعلموا اَنَّما اموالُكم و اولادكم فِتنة و اَنَّ الله عندَه اجر عظيم * يايها الذين اٰمَنوا اِن تتقوا اللّٰه يجعلْ لكم فُرقانًا و يكَفرْ عنكم سَياتكم و يغفِرْلكم، و الله ذو الفضل العظيم *

بيان اللغة

تَخَطَّفه : استَلَبه و انتَزَعه بِسُرعةٍ — ছোঁ মেরে নিয়ে নিলো

خَطَفَ شيئًا (ض، خَطْفًا) و خَطِف (س، خَطْفًا) : استلَبه و انتزَعَه بِسُرعَةٍ ٠

فرقان : ما يُفَرَّق به بين الحق و الباطل، الحجة و البرهان ٠

و الفرقان كلام الله، لأنه يفرِّق بين الحق و الباطل، و لهذا سمي القرآن و التوراة و الإنجيل فرقانا ٠

يوم الفرقان : اليوم الذي يفرِّق فيه بين الحق و الباطل ٠

فَرَقَ بين شيئَين (ن، فَرْقًا و فُرقانًا) فَصَل و مَيَّزَ أحدَهما من الآخَر

فَرَق بين الخصمين : حَكم و فَصل

فَرَقَ البحرَ (وأيَّ شيءٍ) قسَمه

فَرَق اللهُ الكِتابَ : فَصَّلَه وبيَّنَه

بيان الإعراب

لا تُصيبن الذين ظلَموا منكم خاصَّةً : الجملة في محل نصب نعت لـ : فتنةً ٠

ويجوز أن تكون الجملة جوابا لشرط مقدر، أي إنْ أصابَتْكم لا تُصيبُ الظالمين منكم خاصة، بل يَعُمُّكم جميعًا ٠

منكم حال من : الذين، أي : معدودين منكم، و خاصة حال من فاعلِ تُصيبَنَّ العائدِ على فتنةً، أي : مُختَصَّةً بهم ٠

و يجوز أن يكون مفعولا مطلقا نائبا عن المصدر بِكَونه صفةً له، أي إصابَةً خاصَّةً ٠

و اذكروا إذ أنتم قليل : إذ اسم ظرف، في محل نصب على أنه مفعول به لـ : اذكروا ، أي : اذكروا وقتَ كونِكم قليلا (أي : وقتَ قِلَّتكم) ٠

و جملة أنتم قليل في محل جر مضاف إليه ٠

و في الأرض متعلق بـ : مستضعَفون، و هو خبر ثان ٠

تخافون : الجملة في محل رفع خبر ثالث للمبتدأ أنتم، أو في محل نصب حال من الضمير في : مستضعَفون ٠

و المصدر المؤول مفعول به لـ : تخافون ٠

و تَخونوا أماناتِكم : الواو عاطفة، و تخونوا مجزوم معطوف على تخونوا الأول، فهو داخل في حكم النهي، أي : و لا تخونوا أمانتِكم ٠

و يجوز أن تكون الواو للمعية، و الفعل بعدَها منصوب بـ : أَنْ مضمَرةً بعدَ واو المعية، و المصدر المؤول معطوف على مصدر مؤول مفهوم من الكلام السابق، أي : لا تكُنْ منكم خيانَةٌ لله و الرسول و خيانَةٌ لأماناتكم ٠

الترجمة

হে (ঐ লোকেরা) যারা ঈমান এনেছো, সাড়া দাও তোমরা আল্লাহর এবং রাসূলের ডাকে, যখন ডাকেন তিনি তোমাদেরকে এমন কিছুর দিকে যা জীবন্ত করবে তোমাদেরকে, আর জেনে রাখো তোমরা যে, আল্লাহ আড়াল হয়ে যান মানুষের ও তার কলবের মাঝে, আর (জেনে রাখো যে,) তাঁরই কাছে একত্র করা হবে তোমাদেরকে। আর ভয় করো তোমরা এমন পরিণামকে, যা তোমাদের মধ্য হতে যারা যুলুম করেছে, বিশেষভাবে শুধু তাদেরকেই আক্রান্ত করবে না। (বরং সকলকেই আক্রান্ত করবে) আর জেনে রাখো যে, আল্লাহ কঠিন শাস্তিদানকারী।

আর স্মরণ করো তোমরা (ঐ সময়কে) যখন তোমরা (ছিলে) অল্প (এবং) পৃথিবীতে দুর্বল, (আর) তোমরা আশংকা করতে যে, তোমাদেরকে ছোঁ মেরে নিয়ে যাবে লোকেরা, অনন্তর আশ্রয় দান তিনি তোমাদেরকে করেছেন এবং শক্তি যুগিয়েছেন তোমাদেরকে আপন সাহায্য দ্বারা এবং রিযিক দান করেছেন তোমাদেরকে উত্তম উত্তম বস্তু হতে; যাতে তোমরা শোকর আদায় করো।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, খেয়ানত করো না তোমরা আল্লাহ ও রাসূলের সাথে এবং খেয়ানত করো না নিজেদের আমানতগুলো সম্পর্কেও, এমন অবস্থায় যে, তোমরা জানো (এর মন্দ পরিণতি সম্পর্কে)।

আর জেনে রাখো যে, তোমাদের ধনসম্পদ এবং তোমাদের সন্তান-সন্ততি শুধু পরীক্ষার বিষয়। আর (জেনে রাখো যে,) আল্লাহ, তাঁরই নিকট রয়েছে মহাপুরস্কার।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, যদি ভয় করো তোমরা আল্লাহকে তাহলে দান করবেন তিনি তোমাদেরকে 'ফোরকান' [১], আর মোচন করবেন তোমাদের থেকে তোমাদের পাপসমূহ, আর মাফ করবেন তোমাদেরকে, আর আল্লাহ মহাঅনুগ্রহের অধিকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) استجيبوا لله و للرسول (সাড়া দাও তোমরা আল্লাহর এবং

১. হক ও বাতিলের মাঝে পার্থক্যকারী একটি নূর যা মুমিনের কলবে আল্লাহ দান করেন।

রাসূলের ডাকে) আয়াতে ل অব্যয়টি দু'বার এসেছে, সুতরাং 'আল্লাহ ও রাসূলের' এ তরজমার চেয়ে উপরের তরজমাই মূলানুগ।

শায়খায়নের তরজমা, আল্লাহ্ ও রাসূলের হুকুম মান্য করো। 'হুকুম মান্য করা' হচ্ছে ভাবতরজমা, আর 'ডাকে সাড়া দেয়া' হচ্ছে মূলানুগ

(খ) لما يحييكم (এমন কিছুর দিকে যা জীবন দান করবে/জীবন্ত করবে তোমাদেরকে) এখানে ما কে نكرة موصوفة ধরে তরজমা করা হয়েছে।

ما কে মাওছূল ধরে এবং তার স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করা যায়, 'ঐ দ্বীনের দিকে'

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, এমন কিছুর দিকে যাতে রয়েছে তোমাদের জীবন।

এটি ভাবতরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন- তোমাদের জীবনদায়ক জিনিসের দিকে- তিনি مفرد কে جملة موصوفة এ موصوف পরিবর্তন করেছেন।

'জীবন্ত করবে' অর্থ- এই দ্বীন তোমাদেরকে অন্যান্য জাতির মাঝে জীবন্ত জাতিরূপে মর্যাদা দান করবে।

(গ) و أنتم تعلمون এমন অবস্থায় যে, তোমরা জানো (এর মন্দ পরিণতি সম্পর্কে) শায়খুলহিন্দ (রহ) مفرد রূপে তরজমা করেছেন- جان کر (জেনে)

বাংলায় যেহেতু 'জেনেশুনে' এই 'শব্দজুটি' ব্যবহৃত হয়, তাই কেউ কেউ তরজমা করেছেন, জেনেশুনে খেয়ানত করো না।

উর্দূতে এ ক্ষেত্রে جان بوجھ کر (জেনে বুঝে) ব্যবহৃত হয়। কিন্তু শায়খুলহিন্দ (রহ) অতিরিক্ত শব্দ যোগ করা পছন্দ করেন নি।

থানবী (রহ) মূলানুগ তরজমা করেছেন, اور تم تو جانتے ہو (আর তোমরা তো জানো) এরপর তিনি বন্ধনীতে تعلمون এর مفعول به নির্দেশ করেছেন।

(ঘ) من الطيبت উত্তম উত্তম বস্তু হতে- এখানে ছিফাত-এর তাকরার দ্বারা বহুবচনের অর্থ আদায় করা হয়েছে। থানবী (রহ) এটা করেছেন।

'উত্তম বস্তুসমুদয় হতে' - এ তরজমা যারা করেছেন তারা ال

কে সামগ্রিকতার অর্থে গ্রহণ করেছেন।

(৬) فرقان শব্দটির আলাদা আবেদন ও তাৎপর্য রয়েছে। তাই মূল শব্দটি রেখে দিয়ে টীকায় তার ব্যাখ্যা দেয়া হয়েছে। তাছাড়া বাংলায় এর তুল্য প্রতিশব্দ নেই।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ الفرقانِ .
٢ – أعرب قوله : خاصة ؛
٣ – أعرب قوله : و تخونوا أمانٰتِكم .
٤ – كيف وُحِّدَ قليل و هو خبرٌ لجمعٍ ؟
٥ – استجيبوا لله و للرسول তোমরা আল্লাহর ও রাসূলের ডাকে সাড়া দাও – এ তরজমা পর্যালোচনা করো।
٦ – و أنتم تعلمون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) وَ اِذ يمكُر بك الذين كفَروا لِيُثبِتوك او يقتُلوك او يُخرِجوك، و يمكُرون و يمكُر اللّٰهُ، و الله خيرُ الماكِرين * وَ اِذا تُتلى عليهم اٰيٰتنا قالوا قَد سمعنا لو نَشاء لَقُلنا مِثْلَ هذا اِن هذا اِلاَّ اَساطيرُ الاَوَّلين * وَ اِذ قالوا اللهم اِن كان هذا هو الحقَّ من عندك فَاَمْطِر علينا حجارةً من السماء اَوِ ائتنا بعذاب اليم * و ما كان الله لِيُعذِّبَهم و انت فيهم، و ما كان الله مُعذِّبَهم و هم يستَغفِرون * و ما لهم الا يُعَذبهم الله و هم يصُدون عن المسجد الحرام و ما كانوا اولياءَه، ان اولياءُه اِلاَّ المتقون و الٰكِنَّ اكثرَهم لا يعلمون *

بيان اللغة

لِيُثبِتوك (لِيَحبِسوك)
أثبَتَ فلانًا : حَبَسه، و في حديثِ مشوَرَةِ قريشٍ : إذا أَصبح فَأَثبِتوه بالوَثاق (الوَثاق : ما يُوثَق به و يُقَيَّد).

أثبَت الحقَّ : أكَّده بالبيِّنات، فلا يمكن إنكاره
أثبت اسمَه في الدِّيوان : كتَبه فيه
مكره / به (ن، مَكْرًا) : خَدَعه
مكر الله العاصِيَ / بالعاصي : جازاه على المكر، أبطَل مكرَه ·

بيان الإعراب

و إذ يمكر : أي : و اذكر وقتَ مكرِهم بك، و قصةُ هذا المكرِ في كتب السيرة ·

نَشآء : مضارع في معنى الماضي، شرطُ لو ·

مثلَ هذا : نائب عن المفعول المطلق بِكَونه صفةً له، أي : لو شئنا لقلنا قولًا مثلَ هذا القول ·

اللهم : منادًى مفرَدٌ علَمٌ، حذفت منه أداةُ النداء و جِيء في آخر المنادى بالميم المشددة عِوَضًا عن أداة النداء ·

هو : ضميرُ فصلٍ، و الحقَّ خبر كان، و من عندك متعلق بحال محذوفة، أي : نازلا من عندك ·

من السماء : متعلق بـ : أمطر، أو بنعت لـ : حجارةً ·

و ما لهم : ما اسم استفهام للنفي و الإنكار، مبتدأ، و لهم يتعلق بالخبر المحذوف، أي : أيُّ شيءٍ ثَبَت لهم، و المصدر المؤول في محل نصبٍ بنزع الخافض، أي : في أن لا يعذبهم، يتعلق بالخبر أيضا ·

الترجمة

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করুন) যখন চক্রান্ত করছিলো আপনার বিষয়ে তারা যারা কুফুরি করেছে, আপনাকে আটক করার জন্য, কিংবা আপনাকে হত্যা করার জন্য, কিংবা আপনাকে (মক্কা থেকে) বহিষ্কার করার জন্য। বস্তুত তারা কৌশল করে, আর আল্লাহ(ও) কৌশল করেন, আর আল্লাহ কৌশলকারীদের শ্রেষ্ঠ।

আর যখন তেলাওয়াত করা হয় তাদের জন্য আমার আয়াতসমূহ তখন তারা বলে, আচ্ছা, শুনলাম, যদি ইচ্ছা করতাম তাহলে আমরাও বলতে পারতাম এর অনুরূপ। এ তো আদী লোকদের কল্পকথা ছাড়া কিছু নয়।

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করুন) যখন তারা বললো, হে আল্লাহ্, এটাই যদি সত্য হয়ে থাকে আপনার পক্ষ হতে, তাহলে বর্ষণ করুন আপনি আমাদের উপর প্রস্তর আসমান থেকে, কিংবা দিন আমাদেরকে কোন যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

আর আল্লাহ্ তো তাদেরকে (এ ধরনের) শাস্তি দেয়ার নন, এমন অবস্থায় যে, আপনি তাদের মাঝে রয়েছেন।

তদ্রূপ আল্লাহ্ তাদেরকে (এ ধরনের) শাস্তি দান করার নন, এমন অবস্থায় যে, তারা মাগফেরাত প্রার্থনা করছে।

আর তাদের কী হয়েছে যে, আল্লাহ্ তাদেরকে (সাধারণ) শাস্তিও দেবেন না, অথচ বাধা দান করে তারা মসজিদুল হারাম থেকে, অথচ তারা এই মসজিদের (বৈধ) তত্ত্বাবধায়ক নয়। এর (বৈধ) তত্ত্বাবধায়ক তো শুধু মুত্তাকীরা। কিন্তু তাদের অধিকাংশ (নিজেদের অযোগ্যতার কথা) জানে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و مكروا বস্তুত তারা কৌশল করে– 'বস্তুত' হচ্ছে واو الاستئناف এর তরজমা। আর কৌশল শব্দটি গ্রহণ করা হয়েছে যাতে তা উভয় ক্ষেত্রে ব্যবহার করা যায়।

চক্রান্ত শব্দ ব্যবহার করলে তরজমা করতে হবে এভাবে– তারা চক্রান্ত করে, আর আল্লাহ্ চক্রান্তের জবাব দেন। কারণ চক্রান্ত শব্দটি আল্লাহ্র শান উপযোগী নয়।

(খ) وإذا تتلى عليهم آيتنا (আর যখন তেলাওয়াত করা হয় তাদের জন্য আমার আয়াতসমূহ) শয়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা করেছেন– আর যখন কেউ তাদের উপর আমার আয়াতসমূহ পাঠ করে– এখানে মাজহূল ফেয়েলের তরজমায় ফায়েল উল্লেখপূর্বক মারূফ ফেয়েল ব্যবহার করার প্রয়োজন আছে বলে মনে হয় না।

অবশ্য এভাবে ব্যাখ্যা করা যায় যে, ফেয়েলটি মাজহূল হলেও কেউ না কেউ তো ফায়েল হবে, সুতরাং নাকিরাহ ফায়েল ব্যবহার করলে তা মাজহূলের কাছাকাছিই থাকে।

(গ) أو ائتنا بعذاب أليم এখানে ফেয়েলটির তরজমা যদি করি, 'নাযিল করো' তাহলে বলতে হবে, 'আমাদের উপর'।

আর যদি তরজমা করি, 'আনো' তাহলে বলতে হবে,

আমাদের কাছে। উভয় ক্ষেত্রে مفعول به এর রূপটি ক্ষুণ্ন হয়। আর যদি ফেয়েলটির তরজমা করি, 'দাও' তাহলে مفعول به এর রূপটি অক্ষুণ্ন থাকে।

(ঘ) قد سمعنا আচ্ছা, শুনলাম- আয়াতে যে তাচ্ছিল্যের ভাব রয়েছে তা তুলে আনার জন্য قد এর প্রতিশব্দরূপে 'আচ্ছা' ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঙ) لو نشاء আমরা مضارع কে মাযীতে পরিবর্তন করে তরজমা করেছি। এ ক্ষেত্রে لو তার নিজস্ব ক্ষেত্রে ব্যবহৃত হয়। لو কে إن এর অর্থে গ্রহণ করে এমন তরজমা করা যায়- 'যদি চাই তাহলে আমরা এমন কথা বলতে পারি।'

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ مكرٍ ·

٢ - أعرب قوله : مثلَ هذا ·

٣ - أعرب قوله : من عندك ·

٤ - بم يتعلق قوله : من السماء ·

٥ - ائتنا بعذاب أليم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - আচ্ছা, শুনলাম- এখানে 'আচ্ছা' শব্দটির প্রয়োগ সম্পর্কে আলোচনা করো।

(١٠) وَ لو تَرَىٰ اذ يتَوَفَّى الذين كفَروا الملٰئِكةُ يضرِبون وجوهَهم و
اَدبارَهم، و ذوقوا عذابَ الحريق * ذلك بما قدمت اَيديكم و
اَنَّ الله ليس بظلام للعَبيد * كَدَأْبِ اٰل فرعونَ و الذين من
قَبلِهم، كفَروا بِاٰيٰت اللّٰهِ فَاَخَذَهم اللّٰه بِذُنوبهم، اِنَّ الله قوي
شديدُ العِقاب * ذلك بِاَنَّ الله لم يَكُ مغيِّراً نعمةً انعمَها على
قومٍ حتى يُغَيِّروا ما بِاَنفُسِهم، و اَنَّ الله سَميع عليم * كَدَأْبِ
اٰل فرعونَ و الذين مِن قبلِهم، كذَّبوا بِاٰيٰت ربهم فاَهْلَكنٰهم
بِذنوبهم و اَغرقنا اٰلَ فرعون، و كلٌّ كانوا ظٰلمين *

بيان اللغة

دَأْبٌ : شَأن و عَادة . دَأَبَ في العَمَل (ف، دَأْباً) جَدَّ فيه و اجتَهَد
কঠোর পরিশ্রম করলো এবং একনিষ্ঠ হলো
دَأَبَ في العَمَل : اُستَمَرَّ عليه و لازَمه — কাজটিতে লেগে থাকলো
فهو دَائِبٌ، وَ هو و هي دَؤوب

بيان الإعراب

و لو تَرى : الواو استئنافية، و المفعول به محذوف، أي : الكَفَرَةَ أو حالَهم،
و إذ ظرف لـ : ترى، أضيفت إلى الجملة التى بعدها .
وَ لَو الامتناعيَّةُ تَرُدُّ المضارعَ ماضيا ، و جواب لو محذوف، أي : لو
رأيتَ الكفَرة أو حالَ الكفَرة حينَ تتوفَّاهم الملائكةُ و تقبَضُ
أرواحَهم لرأيتَ شيئًا عظيمًا .
يضربون وجوهَهم و أدبارَهم : حال من الملائكة .
و يجوز أن يكون فاعل يتوفى الضمير المستَتِرُ، و هو يعود على

لفظ الجلالَة في الآية السابقَةِ : و من يتوكّلْ على اللّٰهِ فان اللّٰهَ عزيز حكيم . فالملائكة حِينَئذٍ مبتَدأ، و جملة يضربون خبره، و الجملة الاسمية حال من الذين كفَروا، و لم يُحتَجْ إلى الواو لأجل الضمير العائد على صاحب الحال، أي : يَتَوفّاهم الله و الملائِكةُ يَضربون وجوهَهم .

ذلك بما قدمت أيديكم : أي : ذلك العذاب، و هو مبتدأ، خبره محذوف، يتعلق به الباء، و الموصول في محل جر بالباء، و هي سببية .

و أَنَّ الله معطوف على : ما قدمت أيديكم، أي : ذلك العذاب ثابت بسببين، بسببِ كفركم و مَعاصيكم، و بسبَبِ كون الله غيرَ ظلام

كدأب آل فرعون : الكاف بمعنى مثلٍ في محل رفع خبر مبتدأ محذوف، أي : دأبُ هؤلاءِ مثلُ دأبِ آل فرعونَ، و المراد بهؤلاء كفارُ قريشٍ .

و الذين معطوف على : آل فرعونَ .

ذلك بأن الله : مبتدأ و خبر، و مغيِّراً خبر كان، و نعمةً مفعول به لـ : مُغيِّراً، لأنه اسمُ فاعلٍ، و جملة أنعَمَها على قوم صفة لـ : نعمةً .

حتى : حرف غاية و جر، و المضارع منصوب بـ : أن مضمرةً بعد حتى، و هو متعلق بـ : مغيرا

و الموصول معفول به لـ : يغيروا، و بأنفسهم صلة ما .

و أن الله سميع عليم : عطف على أن الأولى .

و منعى الآية : ذلك العذاب نازل عليه بسببِ أن الله عادل في حكمه لا يغير نعمة أنعمها على أحد إلا بسببِ ذنبٍ ارتكبَه، و لا يبدِّل النعمةَ بالعذاب حتى يُبَدلوا نعمةَ الله بالكفر، كما بَدَّل كفار قريشٍ نعمةَ الله بالكفر و قتال المؤمنين .

الترجمة

আর যদি আপনি দেখতেন (কাফিরদের অবস্থা) যখন পূর্ণরূপে 'কবযা' করছিলো কাফিরদেরকে ফিরেশতারা এবং আঘাত করছিলো তাদের মুখমণ্ডলে এবং তাদের পশ্চাদ্দেশে, আর (বলছিলো) চেখে দেখো তোমরা আগুনের আযাব।

এ আযাব হচ্ছে ঐ কর্মের কারণে যা তোমরা অগ্রবর্তী করেছো এবং

এ কারণে যে, আল্লাহ্ মোটেই অবিচারকারী নন বান্দাদের প্রতি।
(তাদের অবস্থা হলো) ফেরআউনের গোষ্ঠীর এবং তাদের পূর্ববর্তীদের অবস্থার অনুরূপ; তারা অস্বীকার করেছিলো আল্লাহর আয়াতসমূহ, ফলে আল্লাহ্ তাদেরকে পাকড়াও করেছিলেন তাদের পাপের কারণে। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ মহাশক্তিশালী, কঠিন শাস্তিদানকারী।
ঐ আযাব এই কারণে যে, আল্লাহ্ পরিবর্তনকারী নন কোন নেয়ামতকে, যা তিনি কোন কাওমকে দান করেছেন, যতক্ষণ না তারাই পরিবর্তন করে ফেলে নিজেদের কর্ম, এবং (তা) এই কারণে যে, আল্লাহ্ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞানী।
(তাদের অবস্থা) ফেরআউনের গোষ্ঠীর এবং তাদের পূর্ববর্তীদের অবস্থার অনুরূপ। তারা মিথ্যা বলেছে তাদের প্রতিপালকের আয়াতসমূহকে, ফলে আমি ধ্বংস করেছি তাদেরকে তাদের পাপের কারণে, আর আমি ডুবিয়ে দিয়েছি ফেরআউনের গোষ্ঠীকে। আর সকলেই ছিলো যালিম।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) يضربون وجوههم و أدبارهم (এবং আঘাত করছিলো তাদের মুখমণ্ডলে এবং তাদের পশ্চাদ্দেশে)
'মুখমণ্ডলের' পরিবর্তে 'চেহারায়' বলা হলে أدبارهم এর ক্ষেত্রে বলতে হবে, 'তাদের পাছায়', কিন্তু তা শ্রুতিকটু। অবশ্য 'তাদের পিঠে' বলা যায়।
বাক্যটি আরবী তারকীবে হাল হলেও সাবলীলতা রক্ষার জন্য আতফের তরজমা করা হয়েছে।
উর্দূর সুবিধা অনুযায়ী শায়খায়ন তরজমা করেছেন স্বতন্ত্র বাক্যরূপে, অর্থাৎ 'এবং' বাদ দিয়ে।

(খ) ذوقوا عذاب الحريق (চেখে দেখো তোমরা আগুনের আযাব)
কেউ কেউ 'দহনযন্ত্রণা' ভোগ করো তরজমা করেছেন, কিন্তু 'আগুনের আযাব' যে ভয়াবহতা প্রকাশ করে, 'দহনযন্ত্রণা' তা করে না।
কেউ কেউ 'জ্বলন্ত আযাব' লিখেছেন, কিন্তু তা মূলানুগ তরজমা নয়।
'তোমরা চেখে দেখো আযাব, আগুনের'– এ তরজমা আরো

গম্ভীর হয়।

(গ) بما قدمت أيديكم (ঐ কর্মের কারণে) যা তোমরা অগ্রবর্তী করেছো)– এখানে অংশকে সমগ্রের অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করা হয়েছে।

(ক) যা তোমরা তোমাদের পূর্বে পাঠিয়েছো নিজেদের হাতে।

(খ) ইহা তাহা, তোমাদের হস্ত যাহা পূর্বে প্রেরণ করেছিলো।

উপরের তরজমাদু'টি সঠিক নয়, কারণ প্রথম তরজমায় أيديكم কে সমগ্রের অর্থে গ্রহণ করে 'তোমরা' বলা হয়েছে, পরে আবার أيديكم এর আলাদা তরজমা করা হয়েছে, সেটাও ب অব্যয়যোগে।

দ্বিতীয় তরজমায় بما এর ب অব্যয় বাদ দিয়ে পূর্বে প্রেরিত আমল এবং পরে নেমে আসা আযাবকে অভিন্ন সাব্যস্ত করা হয়েছে। এটি মূলত ذلك ما قدمت أيديكم এর তরজমা।

(ঘ) كدأب ال فرعون (তাদের অবস্থা) ফেরআউনের গোষ্ঠীর অনুরূপ, তারা কুফুরি করেছে– কিতাবের তরজমাটি হচ্ছে মূল তারকীবের অনুগামী। থানবী (রহ) এ তরজমা করেছেন। আর বন্ধনীতে 'তাদের অবস্থা' যুক্ত করা হয়েছে ব্যাকরণের প্রয়োজনে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন– ফিরআউনের স্বজন এবং তাদের পূর্ববর্তীদের অভ্যাসের ন্যায় এরা আল্লাহর নির্দেশকে প্রত্যাখ্যান করেছে।

সম্ভবত এখানে كاف কে حرف الجر রূপে كفروا এর সাথে متعلق ধরা হয়েছে। তখন كفار قريش হবে كفروا এর ফায়েল। এটা ঠিক নয়, কারণ সে ক্ষেত্রে كال فرعون كفروا হওয়ার কথা।

دأب শব্দটি প্রমাণ করে যে, এদের (কোরায়শের) অবস্থাকে ওদের (ফেরাউনের গোষ্ঠীর) অবস্থার সাথে তুলনা করা হয়েছে, আর ওদের অবস্থা ছিলো কুফুরি করা।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ دأبٍ ·

٢ - عَيِّنْ فاعلَ يتوفّى ·

٣ - أعرب قوله تعالى : كدأب ال فرعون ·

٤ - ما إعراب مغيِّراً و نعمةً ؟

৫ - 'আগুনের আযাব'-এর পরিবর্তে 'আগুনের শাস্তি' হলে তার পরে 'চেখে দেখো' এর পরিবর্তে কী হবে এবং কেন ?

৬ - كذأب ال فرعون এর যে তরজমা অন্যরা করেছেন তার ত্রুটি আলোচনা করো

(٢) إن شَرَّ الدوابِّ عندَ الله الذين كفَروا فهم لا يؤمنون * الذين عاهَدتَ منهم ثم ينقُضون عهدَهم في كلِّ مرَّةٍ و هم لا يتَّقون * فَإمَّا تَثْقَفَنَّهم في الحرب فَشَرِّد بهم مَنْ خلفَهم لعلهم يَذَّكَّرون * و إما تَخافن من قومٍ خيانةً فانبِذ اليهم على سَواء، إن الله لا يحب الخائنين * و لا يحسَبن الذين كفَروا سَبَقوا، إنهم لا يُعجِزون * و أَعِدُّوا لهم ما استطعتم من قوةٍ و من رباطِ الخَيلِ تُرهِبون به عدوَّ اللّٰهِ و عدوَّكم و آخَرين من دُونِهم، لا تعلمونَهم، الله يعلَمهم، و ما تُنفِقوا من شيءٍ في سَبيل الله يُوَفَّ اليكم و أنتم لا تُظلَمون *

بيان اللغة

عاهَدَه : أعطاه عَهْدًا .

عَهْدٌ (و الجمع عُهود) ميثاق . وَصِيَّةٌ ضمانٌ و أَمانٌ . زمان

قال تعالى : و بِعَهد الله أوفُوا، أي : بِوَصاياه وَ أوامِرِه .

كان ذلك في عَهدِ فلان، أي في زمانه .

يقال : عهدي به أنه كريم، أي : عرفته كريما .

و يقال : أنا قريب العهد به، أي : علمي به و معرفتي عنه قريب، لا يطول إلى زمن بعيد

عَهِدَ الأمرَ (س، عَهْدًا) عرَفَه .

عَهِدَ إليه بالأمر : أوصاه به و طلَب منه حِفْظَه

ثَقِفَ الرجلَ في الحرب : أدركَه (س، ثَقَفًا)

شَرَّدَه : طَرَدَه و تركه بِلا مَأوًى

شَرد القومَ : فرَّقهم . تَشرَّدوا : تفرقوا

رباط (والجمع رُبُط) ما يُربَط به الخيلُ، يقال : له رباط من الخيل .

و الرباط : الحصن أو المكان الذي يرابَط فيه الجيشُ .

رابَط الجيشُ (رباطًا و مُرابطة) : قام بالحِراسة في مواضِع الخوف و في حُدود البلاد .

رباط الخيل : الخيلُ التي تُربَط في سبيل الله، و يجوز أن يكون هذا مصدرًا أضيف إلى المفعول، أي حَبْسِ الخَيلِ .

بيان الإعراب

عندَ الله : ظرف منصوب متعلق باسم التفضيل . و الذين كفروا خبر إن، و فاء فهم لا يؤمنون تعليلية .

الذين عاهدت منهم : بَدَل من : الذين كفَروا، داخل في حكم خبرِ إن، أو هو خبر لمبتدأ محذوف، فهو في محل الرفع على الإعرابَين . و منهم حال من العائد، أي : عاهدتَهم معدودين من الكافرين، أو هو متعلق بـ : عاهدتَ، بِتَضمينِه معنىٰ أخذتَ العهدَ .

فإما تثقَفنهم : الفاء استئنافية، و إما مكوَّنة من إنِ الشرطيَّةِ و ما الزائدةِ .

فشرد بهم مَن خلفهم : الفاء رابطة بين الشرط و جوابه .

بهم : أي بقتلهم، و مَن خلفهم مفعولٌ شَرِّد . و المعنى : فإن أدركتَهم في الحرب فاقتلهم قتلا شديدا يَبعَث الخوف في الكَفَرة الذين وراءهم، فيتشردوا و يتفرقوا .

على سواء : حال من الفاعل و المفعول معا، بمعنى مُستَوِينَ، أي : فانبِذ إليهم العهدَ و أنت و هم مستوُون في العلم بِنَقضِ العهد .

و المعنى : قل لهم : قد نبَذتُ إليكم عهدَكم و أنا مقاتلكم، ليَعلموا ذلك فَيكونوا مَعك في العلِم سواءً، و لا تقاتِلْهم قبل ذلك، كي لا تكونَ خيانةٌ .

لا يحسبن الذين كفروا سبقوا : الموصول فاعل، و سبقوا مفعول ثان بمعنى

سابقين، و المفعول الأول محذوف، أي : لا يحسَبنَّ الكُفَّارُ أنفسَهم سابقين ·

لا يُعجزون : أي ربَّهم، فهو قادر على الانتقام منهم ·

و أعِدُّوا لهم ما استطعتم من قوَّةٍ و من رباط الخَيل : الموصول مفعول به ل : أعِدُّوا، و العائد محذوف ·

و حرفا الجر متعلقان بمحذوف، و هو حال من العائد المحذوف ·

تُرهِبون به عدوَّكم : الضمير يعود إلى ما استطعتم، و الجملة مستأنفة أو حالية

و آخَرين : معطوف على : عدوكم، و من دونهم متعلق بنعت ل : اخرين، أي : معدودين من دون الكفار، و هم المنافقون ·

الترجمة

নিঃসন্দেহে আল্লাহর নিকট নিকৃষ্টতম প্রাণী হলো (এই লোকেরা) যারা কুফুরি করেছে, সুতরাং তারা তো ঈমান আনবে না। (তারা সেই লোক) যাদের সাথে আপনি চুক্তি করেছেন, তারপর তারা ভঙ্গ করেছে তাদের চুক্তি প্রত্যেকবার, আর তারা ভয় করে না।

সুতরাং যদি আপনি নাগালে পান তাদেরকে যুদ্ধে তাহলে তাদেরকে শায়েস্তা করার মাধ্যমে তাদের পিছনে যারা আছে তাদেরকে ছত্রভঙ্গ করে ফেলুন, যাতে তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।[১]

আর যদি আপনি আশংকা করেন কোন সম্প্রদায় থেকে বিশ্বাসভঙ্গের তাহলে ছুঁড়ে ফেলুন (তাদের চুক্তি) তাদের দিকে এবং (অবহিতির ক্ষেত্রে উভয় পক্ষ) সমান হয়ে যান। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ ভালোবাসেন না বিশ্বাসভঙ্গকারীদের।

আর যারা কুফুরি করেছে তারা যেন কিছুতেই ধারণা না করে যে, তারা পার পেয়ে গেছে; (কারণ) তারা তো অক্ষম করতে পারবে না (তাদের প্রতিপালককে)।

আর প্রস্তুত করো তোমরা তাদের মোকাবেলায় যতটা পারো (অস্ত্র) শক্তি ও অশ্বদল, তোমরা সন্ত্রস্ত করবে তা দ্বারা আল্লাহর শত্রুকে এবং তোমাদের শত্রুকে এবং তাদেরকে ছাড়া আরো কতিপয়কে,

১. যে, চুক্তিভঙ্গের পরিণতি কী, ফলে পিছনের লোকেরা আর চুক্তি ভঙ্গ করতে সাহস পাবে না।

যাদেরকে তোমরা জানো না, আল্লাহ্ জানেন তাদেরকে।
আর তোমরা যা কিছু খরচ করবে আল্লাহ্র রাস্তায় তা পরিপূর্ণরূপে প্রদান করা হবে তোমাদেরকে, আর তোমাদের প্রতি কোন অবিচার করা হবে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) فهم لا يؤمنون এখানে তাদের নিকৃষ্টতম জীব হওয়ার কারণ বলা হয়েছে, ف অব্যটি হচ্ছে কারণবাচক।

(খ) الذين عاهدت منهم (তারা ঐ লোক যাদের সাথে আপনি চুক্তি করেছেন) স্বতন্ত্র বাক্যের তারকীব অনুসারে তরজমা করা হয়েছে।
বদল-এর তারকীব অনুসারে তরজমা হবে, – যারা কুফুরি করেছে ..., যাদের সাথে আপনি চুক্তি করেছেন।

(গ) فاما تثقفنهم في الحرب (সুতরাং যদি আপনি তাদেরকে নাগালে/আয়ত্তে/ কবযায় পেয়ে যান যুদ্ধে)– তিনটিই হতে পারে। কিংবা হতে পারে– (ক) যদি আপনি তাদেরকে যুদ্ধে পেয়ে যান (খ) যদি আপনি তাদেরকে যুদ্ধে কাবু করতে পারেন।

(ঘ) شرد بهم من خلفهم (তাদেরকে শায়েস্তা করার মাধ্যমে, তাদের পিছনে যারা আছে তাদেরকে ছত্রভঙ্গ করে ফেলুন) এর তরজমা কেউ করেছেন, – তবে তাদেরকে এমন শাস্তি দাও যেন তাদের উত্তরসূরীরা তাই দেখে পালিয়ে যায়। – এটা মূল থেকে অত্যন্ত বিচ্যুত তরজমা।
উত্তরসূরী মানে তো পরবর্তী প্রজন্ম। অথচ এখানে من خلفهم অর্থ সে যুগেরই কাফের যারা এখনো চুক্তি ভঙ্গ করেনি, তবে চুক্তি ভঙ্গ করার পাঁয়তারা করছে। তাই চুক্তিভঙ্গকারীদেরকে এমন শায়েস্তা করতে বলা হয়েছে যাতে অন্যরা সতর্ক হয়ে যায়।
একটি তরজমায় আছে– যদি তোমরা তাদেরকে আয়ত্তে পাও তবে তাদেরকে তাদের পশ্চাতে যারা আছে তাদের থেকে বিচ্ছিন্ন করে এমন ভাবে বিধ্বস্ত করো যাতে তারা শিক্ষা লাভ করে।
মূলের সাথে এ তরজমার দূরতম সম্পর্কও নেই। ভ্রান্তির

কারণ হচ্ছে যামীরের مرجع চিহ্নিত করতে না পারা।

تثقفهم এবং بهم এবং خلفهم এই যামীরগুলোর مرجع হচ্ছে চুক্তি ভঙ্গকারীরা।

আর لعلهم এর مرجع হচ্ছে من আর من হচ্ছে شرد এর مفعول

(৬) فانبذ إليهم على سَواءٍ (তাহলে [তাদের চুক্তি] তাদের দিকে ছুঁড়ে ফেলুন এবং উভয় পক্ষ সমান হয়ে যান) সরলায়নের জন্য على سواء মূল থেকে দূরবর্তী এ তরজমা করা হয়েছে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন, তবে তোমার চুক্তি তুমি যথাযথ বাতিল করবে।

'বাতিল করবে'– অপ্রয়োজনে انبذ এর এ ভাবতরজমা করার কারণে إليهم অংশটি বাদ পড়েছে।

على سواء (যথাযথ) এটি على سواء এর 'যথাযথ' তরজমা নয়; তাতে আয়াতের মূল বক্তব্য অস্পষ্ট রয়ে গেছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ رباطٍ

٢ – أعربِ الموصولَ في قوله : الذين عاهدتَ منهم

٣ – أعرب قوله : على سَواءٍ

٤ – في أيِّ محل من الأعراب وقَعت جملةُ سبَقوا ؟

٥ – تثقَفَنهم في الحرب এর কী কী তরজমা হতে পারে?

٦ – شرد بهم من خلفهم এর প্রথম তরজমাটির ত্রুটি আলোচনা করো

(٣) وَ إن اَحَدٌ من المشركين استجارَك فَاَجِره حتى يسمَع كلٰم اللّٰهِ ثم اَبْلِغه مَاْمَنَه، ذٰلك بِاَنَّهم قومٌ لا يعلَمون * كيفَ يكون لِلمشركين عَهد عندَ الله و عندَ رسولِه اِلَّا الذين عاهدتم عندَ المسجد الحرام، فَما استَقاموا لكم فاستقِيموا لهم، اِنَّ الله يُحب المتقين * كيفَ و اِن يَظْهَروا عليكم لا يرقُبوا فيكم اِلاًّ و لاذِمَّةً، يُرضونكم بِاَفْواهِهم و تَابٰى قلوبُهم، وَ اَكْثَرُهم فٰسقون * اِشتَرَوا بِاٰيٰت الله ثَمَنًا قليلا فَصَدُّوا عَن سبيلِه،

إِنَّهم ساءَ ما كانوا يعمَلون * لا يرقُبون في مؤمنٍ إلّاً و لا ذمَّةً، و اولئك هم المعتدون *

بيان اللغة

استجار فلانًا : سأله أن يُجيرَه و يَحمِيَه .
استجارَ بفلان : استَغاثَ به و التَجأَ إليه .
أجارَه : حَماه و أعطاه الأمانَ
مَأْمَنٌ : مكانُ الأمنِ .
لا يرقُبون (لا يرعَوْنَ) رقَبه : انتظَرَه، حفظه (ن، رَقابَةً)
إلّاً و لا ذمةً : عهدًا و لا أمانًا، أو قَرابَةً و لا وعدًا .

بيان الإعراب

إن أحد : هذا مرفوع بفعل شرط مضمَر يفسِّره الظاهر، أي : و إن استجارَك أحَدٌ من المشركين استجارَك، و لا بُدَّ من هذا الإضمار، لأَنَّ إنْ لا تدخل إلا على الفعل .
ذلك : أي : ذلك الأمرُ بالإجارَةِ و إبلاغِ المأمَن بسبَبِ كونهم لا يعلَمون.
كيف يكون للمشركين عَهد عند الله : يكون تام بمعنى يثبُت، و عهد فاعلٌ يكون، و للمشركين يتعلق بـ : يكون، و عند الله ظرف متعلق بـ : يكون و الاستفهام للإنكاري، أي : لن يكونَ لهم عند الله عهد .
و لك أن تُعربَ الفعل ناقصًا، ولكنَّه إعرابٌ غيرُ واضحٍ .
إلا الذين عاهدتم عن المسجد الحرام : إلا أداة استثناء، و الذين في محل نصب مستثنًى بـ : إلا
و عند ظرف متعلق بـ : عاهدتم
اُستُثْنِيَ هولاء بـ : إلا من المشركين الذين لا عهد لهم عند الله
فما استقاموا : ما مصدرية، و ظرفية تتعلق متعلق بالجملة الثانية، أي : فاستَقيموا لهم مدةَ استقامَتِهم لكم .
كيف : أي كيف يكون لهم عهد، فهو خبر الناقص المحذوف، و هذا

الحذف معروف في كلام العرب، و الجملة الشرطية وقعت حالا .

ساء : فعل ماضٍ جامدٌ لإنشاء الذم، و ما اسم موصول في مَحل رفع فاعلٌ ساء، و المخصوص بالذم محذوف، أي : عَمَلُهم

و إن كان ما نكرةً موصوفة بمعنى شيء فهو في محل نصب على أنه تميز لفاعل ساءَ

و يجوز أن يكون الفعل مُتصَرِّفا من ساءَ يَسُوء (سَوْءًا) و فاعله المصدر المؤول أو الموصول، و مفعوله محذوف، أي : ساءَهم عمَلُهم، أو ساءَهم العمَل الذي كانوا يعمَلونه .

الترجمة

আর যদি মুশরিকদের কেউ নিরাপত্তা চায় আপনার কাছে তাহলে আপনি নিরাপত্তা দান করুন তাকে, যাতে সে শুনতে পায় আল্লাহর কালাম, তারপর পৌঁছতে দিন তাকে তার নিরাপদ স্থানে। এ আদেশ এ কারণে যে, তারা এমন সম্প্রদায় যারা (দ্বীন সম্পর্কে পূর্ণ) জানে না। (সুতরাং সুযোগ তাদের প্রাপ্য।)

আল্লাহর নিকট এবং তাঁর রাসূলের নিকট এই মুশরিকদের জন্য কোন চুক্তি কীভাবে বলবৎ থাকবে! তবে যাদের সঙ্গে তোমরা মসজিদুল হারামের নিকটে চুক্তি করেছো; তারা যতক্ষণ সোজা থাকে তোমাদের জন্য (ততক্ষণ) তোমরাও সোজা থাকো তাদের জন্য। নিঃসন্দেহে আল্লাহ ভালোবাসেন (চুক্তি লঙ্ঘনের বিষয়ে) সংযতদেরকে।

কীভাবে (তাদের জন্য চুক্তি বহাল থাকবে) অথচ যদি তারা জয়ী হয় তোমাদের উপর তাহলে তারা তোমাদের ক্ষেত্রে না রক্ষা করবে কোন আত্মীয়তা, আর না কোন প্রতিশ্রুতি। তারা খুশী রাখে তোমাদেরকে শুধু মুখে, অথচ তাদের অন্তর (ঐ সকল প্রতিশ্রুতি) অস্বীকার করে; আর তাদের অধিকাংশ হলো দুষ্কর্মা।

তারা তো খরিদ করেছে আল্লাহর বিধানসমূহের বিনিময়ে তুচ্ছ মূল্য, অনন্তর তারা ফিরিয়ে রেখেছে (লোকদেরকে) আল্লাহর রাস্তা থেকে। নিসন্দেহে কত না মন্দ, যা তারা করে।

কোন মুমিনের ক্ষেত্রে তারা না রক্ষা করে আত্মীয়তা, আর না প্রতিশ্রুতি। আর ওরাই হলো সীমালঙ্ঘনকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) استجارك (ভালোবাসেন আপনার কাছে) অন্য তরজমা- আপনার কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করে।

(পৌছতে দিন-) সাধারণত তরজমা করা হয়- পৌছে দিন। শায়খুলহিন্দ (রহ) এটাই করেছেন। কিন্তু থানবী (রহ) একটি সূক্ষ্ম বিষয় বিবেচনা করে 'পৌছতে দিন' তরজমা করেছেন। অর্থাৎ পৌছে দেয়া দায়িত্ব নয়, পৌছার সুযোগ দেয়া হলো দায়িত্ব।

প্রথম তরজমার উদ্দেশ্যও এটাই, তবে তাতে ভুল ধারণার অবকাশ রয়েছে।

و إن أحد من المشركين (যদি মুশরিকদের কেউ) এ তরজমা থানবী (রহ) এর। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, কোন মুশরিক,- এটি শব্দানুগ তরজমায় নয়।

(খ) ذلك بأنهم قوم لا يعلمون (এ আদেশ এ কারণে যে, তারা এমন সম্প্রদায় যারা জানে না) কোন কোন বাংলা তরজমায় قوم শব্দটিকে বিবেচনায় না এনে তরজমা করা হয়েছে, তা এই কারণে যে তারা জানে না, এটা সঙ্গত নয়।

(গ) يحب المتقين (ভালোবাসেন সংযতদেরকে) এ তরজমা করা হয়েছে শায়খায়নের অনুসরণে। তারা লিখেছেন, আল্লাহ সতর্কতা অবলম্বনকারীদের ভালোবাসেন। اتقى এর সাধারণ অর্থ হলো তাকওয়া অবলম্বন করা, তবে বিশেষ কোন ক্ষেত্রে শব্দটি ব্যবহৃত হলে সেই ক্ষেত্রের উপযোগী অর্থ করা হয়, যেমন এখানে চুক্তি প্রসঙ্গের কারণে এই বিশেষ তরজমা করা হয়েছে।

এখানে এ ধরনের তরজমা সঙ্গত নয়- আল্লাহ সাবধানীদের/ মুত্তাকীদের ভালোবাসেন, যেমন কেউ কেউ করেছেন।

(ঘ) للمشركين (এই মুশরিকদের) যেহেতু আয়াতটি হোদায়বিয়ার সন্ধিচুক্তি স্বাক্ষরকারী কোরায়শ সম্পর্কে অবতীর্ণ হয়েছে সেহেতু থানবী (রহ) ال এর এই বিশেষ অর্থ করেছেন। ال দ্বারা সম্প্রদায়গত অর্থ গ্রহণ করেন নি।

(ঙ) بأفواههم (শুধু মুখে) এখানে إضافة এর উদ্দেশ্য হলো মৌখিকতার বিষয়টিকে জোরালো করা, বাংলায় 'শুধু' শব্দটি দ্বারা তা করা হয়েছে।

শায়খায়ন তরজমা করেছেন– নিজেদের মুখের কথা দ্বারা– এ শব্দবৃদ্ধির অনিবার্য প্রয়োজন নেই।

(চ) فسقون (দুষ্কর্মা) এটি শাব্দিক তরজমা। তবে যেহেতু এখানে চুক্তিভঙ্গের পাপাচার সম্পর্কে বলাই উদ্দেশ্য সেহেতু শায়খুলহিন্দ (রহ) 'প্রতিশ্রুতি ভঙ্গকারী/ চুক্তিভঙ্গকারী' তরজমা করেছেন।

(ছ) اشتروا بآيات الله ثمنا قليلا সাধারণ রীতি অনুযায়ী বলা হয়, মূল্য দ্বারা বস্তু ক্রয় করেছে; বস্তু দ্বারা মূল্য ক্রয় করেছে, বলা হয় না। কারণ ক্রয়বিক্রয়ে বস্তু হলো লক্ষ্য, মূল্য হলো উপলক্ষ। এখানে বিন্যাস পরিবর্তন দ্বারা মূল্যের প্রতি তাদের আগ্রহ এবং আয়াতের প্রতি অনাগ্রহ বোঝানো উদ্দেশ্য।

সুতরাং আয়াতের বিন্যাস পরিবর্তন করে এ তরজমা করার প্রয়োজন নেই– আল্লাহর আয়াতকে তুচ্ছ মূল্যে বিক্রয় করে। থানবী (রহ) এভাবে ভাবতরজমা করে বিন্যাসপ্রশ্নের সমাধান করেছেন– তারা আল্লাহর আহকামের বিনিময়ে (দুনিয়ার) তুচ্ছ সামগ্রী গ্রহণ করে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ استَجارَ .

٢ – اشرح إعرابَ أحَدٌ

٣ – عرف كلمة ما في قوله : فما استقاموا .

٤ – أعرب جملة الذم بتمامها .

٥ – بأفواههم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – اشتَرَوا بآياتِ الله ثَمَنًا قليلا এর তরজমা থানবী (রহ) কী করেছেন ? এবং কেন করেছেন ?

(٤) فَإن تابوا و أقاموا الصَّلوةَ و اٰتَوُا الزكٰوةَ فَإخوانُكم في الدين، و نُفَصِّلُ الاٰيٰتِ لقومٍ يعلَمون * وَ إنْ نَكَثوا أيْمانَهم من بَعدِ عَهدِهم و طَعَنوا في دينكم فَقاتِلوا أئِمَّةَ الكُفرِ، انهم لا أيمان لهم لعَلهم ينتَهون * ألا تُقاتِلون قَومًا نَكَثوا أيمانَهم و هموا بإخراج الرَّسُولِ و هم بَدءُوكم أوَّل مرَّةٍ، أ تخشَونهم، فاللّٰه أحَقُّ

أَن تخشَوه إِن كنتم مؤمنين * قاتِلُوهم يعَذِّبهم اللّٰه بِأَيديكم
و يُخزِهم و ينصُركم عليهم و يَشفِ صُدور قومٍ مؤمنين * و
يُذهِبْ غَيْظَ قُلوبِهم، و يتوبُ الله على مَن يشاء، و الله
عليم حكيم * أَمْ حسِبتم أَن تترُكوا وَ لما يعلَمِ اللّٰه الذين
جاهَدوا مِنكم و لم يَتَّخِذوا من دُون اللّٰه و لا رسولِه و لا
المؤمنين وَليجَةً، و الله خبير بما تعملون *

بيان اللغة

نَكَثُوا : (نَقَضُوا) نكَثَ العهدَ أو اليمينَ (ن، نَكْثًا) نَقَضَ و نَبَذ
أَيمان (جمعُ يمينٍ) القسَم ، ضِدُّ اليَسار لِلجهَة و الجارِحَةِ، فيقال : جهة
اليَمين، و يقال :اِشرَبْ بِيمينك (مؤنثة)
طعَنوا (عابُوا) طَعَن فيه (ف، طَعْنًا) : عابَه و اعترَض عليه
يقال : طعَن في عِرْضِه/في دينه
طعَنَ بالرُّمح/بالخنجَر : ضربه به
أئمة : جمع إمام، و أصله أَأْمِمَة، على وزن أفعلة، فنُقِلت حرَكة الميم
الأولى إلى الهمزة الساكنة، و أُدغِمت في الميم الأخرى، فبعضُهم
أثبَت الهمزتَين نَظَرًا إلى الأصل ، و بعضهم قَلَبَ الهمزة الثانية
ياءًا لكسرَتها المنقولَةِ إليها .
وليجة : بطانة

بيان الإعراب

فإخوانكم : أي : فهم أخوانكم، و في الدين متعلق بمحذوف حال من
إخوانكم، أي : مُشارِكين في الدين، أو هو متعلق بـ : إخوانُكم،
لأن فيه معنَى المشارَكة في السَّرَّاء و الضَّرَّاء .
إنهم لا أيمانَ لهم : هذه جملة تعليلية .
أولَ مرةٍ : منصوب على الظرفية الزمانية ، متعلق بـ : بَدَأَ
أ تخشونَهم فالله أحقُّ أن تخشَوه : الهمزة للاستفهام، و معناه النهي، أي

: لا تخشوهم، و الفاء تعليلية، و لفظ الجلالة مبتدأ و أحق خبر، و المصدر المؤول في محل جر بحرف جرٍّ محذوف، أي بِأَنْ تخشوه .

و في الكلام حذف، أي أحقُّ من غيرِه بأن تخشوه .

الترجمة

অনন্তর যদি তারা তাওবা করে এবং ছালাত কায়েম করে এবং যাকাত আদায় করে তাহলে তারা হবে দ্বীনের ক্ষেত্রে তোমাদের ভাই। আর আমি বিশদরূপে বর্ণনা করি বিধানসমূহ এমন কাওমের জন্য যারা জ্ঞান রাখে। আর যদি তারা ভঙ্গ করে তাদের শপথসমূহ তাদের প্রতিশ্রুতি দানের পর এবং দোষ আরোপ করে তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে তাহলে লড়াই করো কুফুরের হোতাদের বিরুদ্ধে তোমরা; (কারণ) নিঃসন্দেহে তারা, তাদের কোন শপথ অক্ষুণ্ণ নেই। (লড়াই করো) যাতে তারা বিরত থাকে (কুফুর থেকে)।

কেন তোমরা লড়াই করো না এমন কাওমের বিরুদ্ধে যারা ভঙ্গ করেছে তাদের শপথসমূহ এবং সংকল্প করেছে রাসূলকে বহিষ্কার করার এবং তারাই (বিবাদের) সূচনা করেছে তোমাদের সাথে প্রথমে। তোমরা কি ভয় করো তাদেরকে? (করো না) কারণ আল্লাহই অধিক হকদার যে, তোমরা তাঁকে ভয় করবে, যদি তোমরা মুমিন হয়ে থাকো।

লড়াই করো তোমরা তাদের বিরুদ্ধে, তাহলে আল্লাহ সাজা দেবেন তাদেরকে তোমাদের হাতে এবং লাঞ্ছিত করবেন তাদেরকে এবং বিজয়ী করবেন তোমাদেরকে তাদের উপর এবং একদল (অসহায়) মুমিনের চিত্ত প্রশান্ত করবেন এবং দূর করবেন তাদের অন্তরের ক্রোধ। আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছা করবেন তার প্রতি ক্ষমাসুন্দর হবেন। আর আল্লাহ সর্বজ্ঞ, মহাপ্রজ্ঞাময়।

নাকি তোমরা ধারণা করেছো যে, তোমাদেরকে ছেড়ে দেয়া হবে, অথচ এখনো আল্লাহ (ঘটনার মাধ্যমে) জেনে নেননি তোমাদের মধ্য হতে তাদেরকে যারা জিহাদ করেছে এবং আল্লাহকে ছাড়া এবং তাঁর রাসূলকে ছাড়া এবং মুমিনদেরকে ছাড়া গ্রহণ করেনি কোন বিশেষ বন্ধু। আর তোমরা যা করো সে সম্পর্কে আল্লাহ পূর্ণ অবহিত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إخوانكم في الدين (তারা হবে দ্বীনের ক্ষেত্রে তোমাদের ভাই) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– তারা হয়ে যাবে তোমাদের দ্বীনী ভাই। অর্থাৎ তিনি মূল তারকীবের পরিবর্তে ছিফাতের তারকীব অনুসরণ করেছেন।
একটি বাংলা তরজমায় আছে– তবে তারা তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে ভাই। – এটিও গ্রহণযোগ্য তরজমা।

(খ) لقوم يعلمون (এমন কাওমের জন্য যারা জ্ঞান রাখে)– থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, সমঝদার লোকদের জন্য।
জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য– এ তরজমাও হতে পারে।

(গ) طعنوا في دينكم (দোষ আরোপ করে তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে) 'বিদ্রূপ করে' – এ তরজমাও হতে পারে।
তোমাদের ধার্মিকতাকে কটাক্ষ করে– এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য, তবে তা মূল থেকে কিঞ্চিত দূরবর্তী।

(ঘ) قاتلوا أئمة الكفر (লড়াই করো তোমরা কুফুরের হোতাদের বিরুদ্ধে) তরজমায় রয়েছে– কাফিরদের প্রধানদের বিরুদ্ধে লড়াই করো– এখানে মাছদারকে اسم الفاعل এর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করা হয়েছে। এর প্রয়োজন ছিলো না।
আয়াতে أئمة শব্দটি কটাক্ষস্বরূপ বলা হয়েছে। সুতরাং 'প্রধান'-এর পরিবর্তে হোতা শব্দটি অধিকতর উপযুক্ত হবে।

(ঙ) (লড়াই করো) যাতে তারা (কুফুর থেকে) বিরত থাকে– لعلهم ينتهون হচ্ছে قاتلوا এর উদ্দেশ্য। মাঝখানে হেতুবাচক একটি মধ্যবর্তী বাক্য (جملة معترضة) আসার কারণে বন্ধনীতে ফেয়েলটিকে পুনরুক্ত করা হয়েছে।

(চ) ألا تقاتلون শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন – তোমরা কী লড়াই করবে না।
অর্থাৎ ألا কে তিনি همزة الاستفهام ও لا النافية ধরে তরজমা করেছেন।
এটি মূলত حرف تحضيض (উবদ্বুদ্ধকারী অব্যয়) সে হিসাবে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– কেন লড়াই করো না!

(ছ) فالله أحق أن تخشوه (আল্লাহই অধিক হকদার যে, তোমরা তাঁকে ভয় করবে)

('আল্লাহকে ভয় করাই তোমাদের পক্ষে অধিক সমীচীন') – এটি মূলানুগ তরজমা নয়।
শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন– আল্লাহর ভয় তোমাদের থাকা উচিত বেশী। – এটিও মূল থেকে দূরবর্তী।
থানবী (রহ) এর তরজমা অধিকতর মূলানুগ, তাই কিতাবে সেটাকেই গ্রহণ করা হয়েছে।
'তোমাদের ভয়ের অধিকতর যোগ্য হলেন আল্লাহ' এ তরজমা হতে পারে।

(জ) ينصركم عليهم (বিজয়ী করবেন তোমাদেরকে তাদের উপর) এটি শায়খায়নের তরজমা। (তাদের বিরুদ্ধে তোমাদেরকে সাহায্য করবেন) এ তরজমা হতে পারে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ أَئِمَّةٍ .
٢ – أعرب قوله : فإخوانكم في الدين
٣ – ما إعراب قوله : أولَ مرة ؟
٤ – علام عطف قوله : و لم يتخذوا ؟
٥ – طعنوا في دينكم এর কী কী তরজমা হতে পারে ?
٦ – এখানে أئمة এর প্রতিশব্দ 'প্রধান'-এর চেয়ে 'হোতা' শব্দটি কেন অগ্রাধিকারযোগ্য ?

(٥) يٰاَيُّهَا الذين اٰمَنوا لا تتخذوا اٰبآءكم و اخوانكم اولياء اِنِ استحبُّوا الكفرَ على الايمان، و مَن يتولّهم منكم فاولئك هم الظّٰلمون * قل اِن كان اباؤكم و ابناؤكم و اخوانُكم و اَزواجكم و عَشيرتكم و اَموال اقترفتُموها و تِجارَةٌ تخشَون كسادَها و مَسٰكِنُ ترضَونها اَحبَّ اليكم مِن الله و رسوله و جهادٍ في سبيله فتربَّصوا حتى ياتيَ الله بامره، و الله لا يَهدى القومَ الفٰسقين *

بيـان اللغـة

استحَبَّه : أحَبَّه، استحسنه . استحَبَّه عليه : فَضَّله عليه، آثره عليه .
عَشيرة (و الجمع عَشائِرُ) قبيلة . عشيرة الرجل : بَنُو أبيه الأقربُون .
اقترَفَ المال : اقتناه و جمَعه . اقترَفَ الذنبَ : فعله .
كَساد : عدمُ الرَّواجِ মন্দা كَسَدَ الشيءُ (ن، كَسادًا) لم يَرُجْ لِقلَّة الرغبَةِ فيه
চাহিদার সল্পতার কারণে চালু হলো না

راج الشيءُ (رَواجا، ن) كثُرت الرغبة فيه
تربص به : انتظر به خيرًا أو شرًّا
তার জন্য ভালোর বা মন্দের অপেক্ষা করলো।

بيـان الإعراب

على الإيمان : يتعلق بـ : استحبوا المتضمِّن معنى اختارُوا و آثرُوا .
يتول : شرط مجزوم بحذف اللام، لأنه ناقص، و أُفرد الفعل رعاية لجانب
لفظ الموصول، و منكم متعلق بمحذوف، حال من فاعل يتولى .
و جملة أولئك جواب شرط، و يجري في (هم) إعرابان
و رُوعِيَ في جملة جواب الشرط جانبُ معنَى الموصولِ .
و جهادٍ : معطوف على لفظ الجلالة أو على : رسوله، كما يقول المعربون.
تربصوا : مفعول هذا الفعل محذوف، أي تربصوا عقوبةً عاجلةً أو آجلةً .

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, তোমরা তোমাদের পিতাদেরকে এবং তোমাদের ভাইদেরকে বানিয়ো না অন্তরঙ্গ, যদি তারা কুফুরকে প্রিয় মনে করে ঈমানের মোকাবেলায়, আর তোমাদের মধ্য হতে যারা তাদেরকে অন্তরঙ্গ বানাবে ওরাই হবে অন্যায়কারী।
আপনি বলুন, যদি তোমাদের পিতারা এবং তোমাদের পুত্ররা এবং তোমাদের ভাইয়েরা এবং তোমাদের স্ত্রীরা এবং তোমাদের গোষ্ঠী এবং সম্পদ, যা তোমরা সঞ্চয় করেছো এবং ব্যবসা, যার মন্দা হওয়ার তোমরা আশংকা করো এবং বাসস্থানসমূহ, যা তোমরা পছন্দ করো, (যদি এগুলো) তোমাদের কাছে অধিক প্রিয় হয়

আল্লাহ ও তাঁর রাসূল থেকে এবং আল্লাহর রাস্তায় জিহাদ করা থেকে তাহলে তোমরা অপেক্ষা করো আল্লাহ তাঁর ফায়ছালা কার্যকর করা পর্যন্ত। আর আল্লাহ পথ প্রদর্শন করেন না পাপাচারী সম্প্রদায়কে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) তোমাদের পুত্ররা – 'তোমাদের সন্তানেরা' তরজমা করা ঠিক নয়, যেমন কেউ কেউ করেছেন।

(খ) و أموالٌ اقترفتموها (এবং সম্পদ, যা তোমরা সঞ্চয় করেছো) সংক্ষিপ্ত তরজমা– তোমাদের অর্জিত/সঞ্চিত সম্পদ।

و تجارةٌ تخشون كسادَها (এবং ব্যবসা, যা মন্দা হওয়ার আশংকা করো) সংক্ষিপ্ত তরজমা– এবং মন্দার আশংকা কবলিত তোমাদের ব্যবসা।

تجارة এর প্রতিশব্দরূপে ব্যবসা-বাণিজ্য উভয় শব্দ ব্যবহার করার প্রয়োজন নেই।

مَسٰكِنُ ترضَونها (এবং বাসস্থান সমূহ, যা তোমরা পছন্দ করো) এর সংক্ষিপ্ত তরজমা, তোমাদের পছন্দের বাসস্থানসমূহ।

(গ) حتى يأتيَ الله بأمره (আল্লাহ তাঁর ফায়ছালা কার্যকর করা পর্যন্ত) 'আল্লাহর বিধান আসা পর্যন্ত' – এ তরজমা সহজতর হলেও মূলানুগ নয়।

'আল্লাহ তার ফায়ছালা আনা পর্যন্ত' – এ তরজমা শব্দানুগ হলেও এক্ষেত্রে যেহেতু 'কার্যকর করা' শব্দটি অধিকতর উপযোগী সেহেতু তা ব্যবহার করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ عشيرةٍ ٠

٢ – اذكر الإعرابين في قوله : اولئك هم الظّٰلمون ٠

٣ – فَصِّل جوابَ الشرط في قوله : إن استحَبُّوا الكفرَ على الإيمان ٠

٤ – ما مفعول تربَّصوا ؟

٥ – مَسٰكِنُ ترضونها এর সংক্ষিপ্ত তরজমা করো

٦ – حتى يأتيَ الله بأمره এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) يٰايها الذين اٰمنوا ما لكم إذا قيل لكم انفِروا في سبيل الله اثّاقَلتم الى الاَرضِ، اَرضيتم بالحيٰوة الدنيا مِنَ الاٰخِرة، فَما مَتاع الحيٰوة الدنيا في الاٰخرة إلّا قليل * إلّا تنفِروا يُعذبكم عذابًا اليمًا، و يستبدِل قومًا غيرَكم و لا تضرُّوه شيئًا، و الله علىٰ كلِّ شيءٍ قدير * إلّا تنصُروه فقد نَصَره الله إذ اخرَجه الذين كفروا ثانِيَ اثنَينِ إذهما في الغار إذ يقول لِصَاحِبه لا تحزَنْ إن اللّٰهَ معنا، فَانزَل الله سَكينَتَه عليه و اَيَّده بِجُنودٍ لم تَروها و جَعَل كلمَةَ الذين كفَروا السُّفلىٰ، و كلمَةُ الله هي العُليا، و الله عزيز حكيم * إنفِروا خِفافا وَ ثِقالا و جاهِدوا بِاَموالكم و انفُسِكم في سَبيل الله، ذلكم خير لكم إن كنتُم تعلَمون *

بيان اللغة

انفِروا : (اُخرُجوا و اَسرِعوا) ۔ نَفَر القوم لِلقتال/إلى القتال (ض، نَفْرًا، نُفورا و نَفيرًا) أسرَعوا في الخروج ۔

نَفَر من شيءٍ (نُفورا، ض) : كرِهَه، يقال : نَفَرتُ من صحبةِ فلانٍ : كرِهتُها

نَفر الحاج من مِنًى : خرجوا و اندَفعوا إلى مكةَ ۔

إثّاقلتم : أصله تَثَاقلتم، فَأُبدِلت التاءُ ثاءً، ثم أدغِمت في الثاء، ثم جيءَ بهمزة الوصل لِلنُّطق بالساكِنِ ۔

تَثاقَلَ و اثّاقَلَ إلى مكانٍ : اِطمَأنَّ و مال إليه و أخلَد إليه ۔ (كَأنَّه لَزم المكانَ لِثِقَل جسمِه) و الثِّقَل : ضد الخِفَّة ভারিত্ব

ثقل (ك، ثِقَلًا، ثَقالَةً) : ضد خف ভারী হলো

فهو ثَقيل و الجمع ثِقال

ثَقُلَ الأمرُ : شق কঠিন/কষ্টকর হলো

ثِقْل : وَزن . الحِملُ الثقيل (و الجمع) أثقال

ثَقَلٌ (و الجمع : أثقال) متاع المسافر

أثقال الأرض : ما في جوف الأرض من كنوز و أمواتٍ

خِفاف : جمع/خفيف : ضدُّ ثقيلٍ হালকা

خَفَّ شيءٌ : قَل ثِقْلُه، قَلَّ مقدارُه

خَفَّ عقلُه : حَمُق বুদ্ধি তরল হলো

السفلى : مؤنث الأسفل

أسفَلُ الشيءِ : ضد الأعلى، و مؤنث الأعلى : عُليا

و معنى انفروا خفافا و ثقالا : اخرجوا شُبّانًا و شَيْبًا، أو مُشاةً و رُكبانًا، و قيل معناه : اخرجوا في جميع الظروف و الأحوال في اليُسْرِ و العُسْر .

بيان الإعراب

ما لكم :أي : أيُّ شيءٍ، أو أيُّ عذرٍ (ثابتٌ) لكم .

إذا : اسم ظرف مجرد من معنى الشرط، في محل نصب متعلق بـ : اثاقلتم . و جملة اثاقلتم في محل نصب حال من ضمير الخطاب في لكم .

و أصل العبارة : أي عذر ثابت لكم حالةَ كونكم متثاقِلين حينَ قولِ الرسول لكم : انفروا . و كان هذا عندَ غزوةِ تَبوكٍ .

و ليس الظرف متضمِّنا معنى الشرط، لأن الفعلَ ماض لفظًا و معنىً . و قال البعض : بل الظرف متضمِّن معنى الشرط لأن الماضيَ أريد به المضارع .

من الاخرة : متعلق بمحذوف حال من : الحياة الدنيا، أي : بديلا من الآخرة .

في الآخرة : متعلق بـ : قليل . و يجوز أن يكون متعلقا بمحذوف حال من متاع، أي : محسوبا في جَنْبِ الآخرة .

غيرَكم : صفة لـ : قوما .

إلا تنصروه فقد نصره الله : إلا مكونة من إن الشرطية و لا النافيةِ، و تنصروه شرط . و جواب الشرط محذوف، أي : لا يضره عدَمُ

نصرِكم، و الفاء تعليلية ·

إذ أخرجه الذين كفروا ثانيَ اثنين : إذ ظرف يتعلق بـ : نَصَرَ، و ثانيَ اثنين حال من مفعول أخرج ·

إذ هما في الغار إذ يقول لصاحبه لا تحزن : إذ الثانية و الثالثة بدَل من إذ الأولى · و هو بدَلُ بعضٍ من كلٍّ، فإن زمَنَ الإخراج يمتدُّ أثرًا إلي زمَنِ استقرارهما في الغار و إلى زمَنِ القول المذكور · فهذان الزمَنان بعضٌ من ذلك الزمَن الممتدِّ ·

السفلى : مفعول به ثان لـ : جعل ·

الترجمة

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, তোমাদের হলো কী যে, যখন বলা হয় তোমাদেরকে, অভিযান করো আল্লাহর পথে তখন তোমরা একেবারে লেগে যাও মাটিতে! তোমরা কি তুষ্ট হয়ে গেছো আখেরাতের পরিবর্তে পার্থিব জীবন নিয়েই? কিন্তু পার্থিব জীবনের ভোগ-উপকরণ তো আখেরাতের হিসাবে অতি সামান্য।

যদি তোমরা অভিযান না করো তাহলে আযাব দেবেন তিনি তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক আযাব এবং বদলরূপে আনবেন তোমাদের ভিন্ন কাওমকে। আর তোমরা কোনই ক্ষতি করতে পারবে না আল্লাহর। আর আল্লাহ্ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

যদি সাহায্য না করো তোমরা তাঁকে (তাহলে কোন ক্ষতি নেই) কারণ অবশ্যই তাঁকে সাহায্য করেছেন আল্লাহ্ যখন কাফিররা বের করে দিয়েছিলো তাকে দু'জনের একজন অবস্থায়, যখন তারা দু'জন গুহায় ছিলেন, যখন তিনি বলছিলেন তাঁর সঙ্গীকে, বিষণ্ন হয়ো না, আল্লাহ্ তো রয়েছেন আমাদের সঙ্গে। তখন নাযিল করলেন আল্লাহ্ আপন সাকীনা তাঁর উপর এবং শক্তি যোগালেন তাঁকে এমন সকল বাহিনী দ্বারা যা তোমরা দেখোনি, আর যারা কুফুরি করেছে করে দিলেন তাদের কথাকে 'সর্বনীচু', আর আল্লাহর কথাই সর্বদা সর্বোচ্চ। আর আল্লাহ্ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

অভিযান তোমরা করো হালকা অবস্থায় এবং ভারী অবস্থায়, আর জিহাদ করো তোমাদের জান দ্বারা এবং তোমাদের মাল দ্বারা আল্লাহর রাস্তায়, সেটাই তোমাদের জন্য উত্তম, যদি তোমরা বিশ্বাস করো (তাহলে তা করো।)

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما لكم (তোমাদের হলো কী) তিরস্কারের ভাবটুকু প্রকাশ করার জন্য, 'কী হলো' এর পরিবর্তে 'হলো কী' বলা হয়েছে।
اثاقلتم إلى الأرض (একেবারে মাটিতে লেগে যাও) শব্দের মূল ধাতু বিবেচনা করে তরজমা করা যায়- তোমরা ভারী হয়ে মাটিতে পড়ে যাও।
কেউ কেউ তরজমা করেছেন, তোমরা মাটি জড়িয়ে ধরো- এটা গ্রহণযোগ্য নয়, কারণ মাটি জড়িয়ে ধরার যোগ্য নয়।
কেউ কেউ তরজমা করেছেন- তোমরা ভারাক্রান্ত হয়ে ভূতলে ঝুঁকে পড়ো। ('লুটিয়ে পড়ো', হলে ভালো হয়)
এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে প্রথমটি সুসংক্ষিপ্ত এবং সুস্পষ্ট।
আয়াতের বর্ণনায় অতিশয়তার ভাব রয়েছে। তাই 'একেবারে' শব্দটি যোগ করা হয়েছে।

(খ) متاع الحياة (পার্থিব জীবনের ভোগ-উপকরণ) শায়খায়ন متاع কে মাছদার ধরে তরজমা করেছেন- পার্থিব জীবনের ভোগ।
কিতাবের তরজমায় متاع কে ما يُتَمَتَّع به অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে।
في الآخرة (আখেরাতের হিসাবে) এখানে উহ্য شبه الفعل উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে। অর্থাৎ محسوبا في الآخرة 'আখেরাতের তুলনায়' হতে পারে।

(গ) قوما غيرَكم (অপর জাতিকে/তোমাদের ভিন্ন জাতিকে) দ্বিতীয় তরজমাটি শব্দানুগ।

(ঘ) ثاني اثنَيْنِ বা ثالثُ ثلاثَةٍ এ ধরনের বাগ্‌ধারায় দু'জনের দ্বিতীয় বা তিনজনের তৃতীয় বোঝানো উদ্দেশ্য হয় না। বরং দুজনের বা তিনজনের একজন বোঝানো উদ্দেশ্য হয়। থানবী (রহ) সে হিসাবেই তরজমা করেছেন। আর শায়খুলহিন্দ (রহ) শব্দানুগ তরজমা করছেন - এমন অবস্থায় যে, তিনি ছিলেন দু'জনের দ্বিতীয়জন।
'এবং তিনি ছিলেন দুজনের দ্বিতীয়জন'- এ তরজমা মূল তারকীব অনুগামী নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

(ঙ) و أيده بجنود لم تروها (এবং শক্তি যোগালেন তাঁকে এমন সকল বাহিনী দ্বারা যা তোমরা দেখো নি) এমন এক

সৈন্যবাহিনী দ্বারা – جند মানে সৈন্যবাহিনী جنود হলো তার বহুবচন। এ তরজমায় বহুবচনত্ব প্রকাশ পায়নি।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– তাঁর সাহায্যে এমন সকল ফউজ পাঠিয়েছেন।

এ তরজমা মূলানুগ নয়, কারণ মূল ফেয়েলটি أرسل নয়, বরং أيد এবং جنود শব্দটি مفعول به নয়, বরং ب এর مجرور.

(চ) 'সাকীনা' শব্দের নিজস্ব আবেদন ও শ্রুতিমধুরতা রয়েছে তাই তরজমায় মূল শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে, এর অর্থ প্রশান্তি।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ اِثَّاقلتم ·

٢ – أعرب قوله : من الآخرة و في الآخرة ·

٣ – أعرب قوله : ثانِيَ اثنين ·

٤ – اذكر أصل العبارة في قوله : إذ هما في الغار ·

٥ – متاع الحياة الدنيا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – ثاني اثنين এর দুটি তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) لَقَدِ ابتغَوُا الفتنةَ من قبلُ و قلَّبوا لك الامورَ حتى جاء الحقُّ و ظهر امرُ الله و هم كٰرِهون * و منهم من يقول ائذَن لِّي و لا تَفتِنِي، الا في الفتنَةِ سقطُوا، و اِن جهنَّمَ لمحيطة بالكٰفرين * اِن تُصبك حسَنة تسؤهم، و اِن تُصبك مصيبَةٌ يقولوا قَدْ اخَذنا امرَنا مِن قبل و يتولَّوا و هم فَرِحون * قل لن يُّصيبَنا اِلَّا ما كتَبَ الله لَنا، هو مولٰنا، و على الله فَلْيتوكَّلِ المؤمنون * قل هل تَربَّصون بِنا اِلا اِحدٰى الحسنَيين، و نحن نتربَّص بكم اَن يُّصيبَكم اللّٰه بِعَذابٍ من عندِه او بِاَيدينا، فتربَّصوا اِنَّا معكم مُّتربصون * قل اَنفِقوا طوعًا او كَرْهًا لن يُّتقَبَّلَ منكم، اِنَّكم كنتم قومًا فٰسقين * و ما منَعهم

اَنْ تُقبَلَ منهم نفقتُهم اِلَّا اَنَّهم كفَروا بالله و برسوله و لا
ياتون الصلوٰةَ اِلا وهم كُسالي و لا يُنفِقون اِلا وهم كرهون *

بيان اللغة

قَلَبَ شيئًا (ض، قَلْبًا) صرَفه من وجهٍ إلى وجهٍ (من الأعلىٰ إلى الأسفَلِ
أو من اليَمين إلى الشِّمال أو من الباطن إلى الظاهر) .
قَلَّبه : قَلَبه (و شُدِّد للمبالغة أو للتكثير)
قَلَّبَ الأمور : دَبَّرها و أدارَها
قَلَّب له الأمرَ : كادَ له كيدًا .
أصبح يُقَلِّب كفَّيْهِ : أي أصبَح يتَنَدَّم .
الحسنٰى : مؤنث الأحسَن . و أيضًا : العاقِبَة الحَسَنة، و المراد هنا
بالحُسْنَيين الظفَر و الشهادَة .

بيان الإعراب

من قبل : متعلق بـ : ابتغَوا، بُنيت علىٰ الضم لقَطْعِها عن الإضافَة
لفظًا لا معنًى، أي : مِن قَبلِ غزوَةِ تبوكٍ .
حتى جاء الحق : حتى حرف جر و غايةٍ يتعلق بـ : قَلَّبوا، أو هي
ابتدائية .
منهم من يقول : منهم متعلق بخبر مقدم، و الموصول مبتدأ مؤخر، أي :
من يقول ائذن لي معدود منهم، أي : من المنافقين .
سقطوا : فعل و فاعل، و جمع الضمير و القائل واحد مراعاةً للمعنى
و هم فرحون : حال من الضمير في يقولوا و يتولوا، لا من الأخير فقط، لأن
فَرَحَهم كان حالَ القول و التولي معا .
هل : حرف استفهام في معنى النفي، و تربصون مضارع حذف منه
إحدى تاءَيْهِ .
أن يصيبكم الله : المصدر المؤول مفعول به لـ : نتربص . و من عنده :
متعلق بنعت محذوف لـ : عذاب .
أو بأيدينا عطف على : من عنده، متعلق بنعت العذاب .

الترجمة

তারা তো চেয়েই আসছে ফেতনা পূর্ব থেকে এবং আপনার জন্য বিভিন্ন চক্রান্ত নাড়াচাড়া করেই আসছে। অবশেষে এসে গেলো সত্য এবং জয়ী হলো আল্লাহর ফায়ছালা, এমন অবস্থায় যে তারা (ছিলো) নাখোশ।

আর তাদের মাঝে রয়েছে এমন ব্যক্তি যে বলে, অনুমতি দিন আমাকে (যুদ্ধে না যাওয়ার), আর পরীক্ষায় ফেলবেন না আমাকে। শোনো, পরীক্ষায় তারা তো পড়েই গেছে। আর নিঃসন্দেহে জাহান্নাম ঘিরে ফেলবে কাফিরদেরকে।

যদি স্পর্শ করে আপনাকে কোন কল্যাণ তবে তা তাদেরকে পীড়া দেয়, আর যদি আক্রান্ত করে আপনাকে কোন বিপদ, তবে তারা বলে ওঠে, আমরা তো সামলে নিয়েছিলাম আমাদের বিষয় আগেই। আর তারা ফিরে যায় উল্লসিত হয়ে।

আপনি বলুন, কিছুতেই আক্রান্ত করতে পারে না (কোন কিছু) আমাদেরকে, কিন্তু যা আল্লাহ লিখে রেখেছেন আমাদের জন্য। তিনি আমাদের অভিভাবক। আর আল্লাহরই উপর যেন ভরসা করে মুমিনরা।

আপনি বলুন, তোমরা তো আমাদের বিষয়ে দু'টি কল্যাণের একটিরই অপেক্ষা করছো, আর আমরা তোমাদের বিষয়ে অপেক্ষা করছি যে, আল্লাহ তোমাদেরকে পাকড়াও করবেন আযাব দ্বারা, তাঁর নিজের পক্ষ হতে, কিংবা আমাদের হাতে। তো অপেক্ষা করো তোমরা, আমরাও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করছি।

আপনি বলুন, খরচ করো তোমরা খুশিতে কিংবা নাখুশিতে, কিছুতেই কবুল করা হবে না তোমাদের পক্ষ হতে। নিঃসন্দেহে তোমরা তো পাপাচারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قلبوا لك الأمور (আপনার জন্য বিভিন্ন চক্রান্ত নাড়াচাড়া করেই আসছে)

الأمور। এর শাব্দিক অর্থ বিভিন্ন বিষয়। এখানে উদ্দেশ্য বিভিন্ন চক্রান্ত। উদ্দেশ্যের দিক থেকে তরজমা করা হয়েছে।

আপনার বিরুদ্ধে বিভিন্ন চক্রান্ত করেই আসছে- এরকম তরজমা হতে পারে।

তারা আপনার বহু কর্ম উলটপালট করে আসছিলো- এ তরজমা قلب له الأمور বাক্যের ব্যবহারিক অর্থের সাথে সংগতিপূর্ণ নয়।

(খ) جاء الحق و ظهر أمر الله و هم كرهون (এসে গেলো সত্য এবং জয়ী হলো, আল্লাহর ফায়ছালা, এমন অবস্থায় যে তারা নাখোশ ছিলো) তাদের ইচ্ছার বিরুদ্ধে সত্য এসে গেলো এবং .... এ তরজমা তারকীবানুগ নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

এমন অবস্থায় যে, তারা নাখোশ ছিলো- এর পরিবর্তে বলা যায়- অথচ তারা (তা) অপছন্দ করছিলো।

(গ) لا تفتني (আমাকে পরীক্ষায় ফেলবেন না/ লিপ্ত করবেন না/ নিক্ষেপ করবেন না) থানবী (রহ) এর তরজমা- আমাকে অনিষ্টে লিপ্ত করবেন না।

শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা- আমাকে ভ্রষ্টতায় লিপ্ত করবেন না। (ফিতনা শব্দটি অনিষ্ট, ভ্রষ্টতা ও পরীক্ষা- তিনটি অর্থকেই অন্তর্ভুক্ত করে)

(ঘ) لمحيطة ঘিরে ফেলবে/ঘিরেই রয়েছে/ঘিরে ধরেছে।

ঘিরে ধরা বা ঘিরে ফেলা শব্দটিতে যে ভীতিকর পরিস্থিতির প্রতি ইঙ্গিত রয়েছে 'বেষ্টন করা' শব্দটিতে তা নেই। সুতরাং জাহান্নাম তাদেরকে বেষ্টন করেই রয়েছে- এ তরজমা সুন্দর নয়।

(ঙ) أخذنا أمرنا من قبل (আমরা তো সামলে নিয়েছিলাম আমাদের বিষয় আগেই) এমন তরজমা হতে পারে- আমরা তো আগেই আমাদের সর্তকতা অবলম্বন করেছিলাম।

আমরা তো আমাদের ব্যাপারে সতর্কতা গ্রহণ করেছিলাম- এ তরজমা সুন্দর নয়।

আমরা তো আগেই আমাদের প্রস্তুতি নিয়ে রেখেছিলাম- এ তরজমা গ্রহণযোগ্য।

(চ) يُعَذبكم الله এবং يُصيبكم الله بعذاب বাক্যদু'টি একই মর্ম বহন করে না। দ্বিতীয়টিতে অর্থের ভিন্ন একটি মাত্রা রয়েছে। তরজমায় সেটার প্রকাশ ঘটা উচিত। আল্লাহ তোমাদেরকে আযাব দ্বারা পাকড়াও করবেন- এ তরজমায় সেই ভিন্ন মাত্রাটুকু রক্ষিত হয়েছে। সুতরাং 'আল্লাহ তোমাদেরকে আযাব দেবেন' এ তরজমা বিশুদ্ধ নয়।

أسئلة :

١ - اشرح معاني قَلَّبَ .

٢ - ما إعراب قوله : من عنده ؟

٣ - أعرب قوله : طوعًا أو كرهًا .

٤ - علام يعود الضمير المستتر في : لن يتقبل ؟

٥ - تسؤهم তারা পীড়িত হয়- এ তরজমা সম্পর্কে মন্তব্য করো

٦ - يصيبكم الله بعذاب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) وَ منهم الذين يُؤذونَ النبيَّ و يقولون هو أُذُنٌ، (١) قل أُذُنُ خيرٍ لكم يؤمِن بالله و يؤمِنُ للمؤمنين و رَحْمَةٌ للذين آمَنوا مِنكم، و الذين يُؤذون رَسولَ الله لهم عَذابٌ اليم * يَحلِفُون بالله لكم لِيُرضوكم، وَ الله و رَسوله اَحقُّ ان يُرضوه اِن كانوا مؤمنين * اَلَمْ يعلَموا اَنَّه مَن يُحادِدِ اللهُ و رَسُولَه فَاَنَّ له نارَ جهنم خالدًا فيها ، ذلك الخِزْيُ العظيم * يحذَر المٰنِفقون اَنْ تنزَّلَ عليهم سُورة تنبِّئُهم بما في قلوبهم، قَلِ استهزِءوا ،اِن الله مُخرج ما تحذَرون * و لَئِنْ سَألتَهم لَيقولُنَّ إنما كنا نَخوض و نلعَبُ، قَلْ اَ بِالله و آياتِه و رَسوله كنتم تَستهزِءون * لا تَعتذروا قَد كفرتُم بعدَ اِيمانكم، اِن نعفُ عَنْ طائفَةٍ منكم نُعذِّبْ طائفةً بانهم كانوا مجرمين *

بيان اللغة

أذن : عُضْوُ السَّماع، مونثة، و الجمع : آذان .

و رَجلٌ أذنٌ : مَن يسمَع مَقالَ كلِّ أحدٍ، أو مَن يُصدِّق كلَّ ما

---

١ - و المعنى : يقول المنافقون : هو يُصَدق بكل خبرٍ يسمَعه، و رَدَّ الله عليهم : هو أذنُ خيرٍ لكم، لا أذنُ شرٍّ، يسمَع الخيرَ فيعمَل به، و لا يعمَل بالشرِّ حينما يسمَعه .

يسمَع و يقبَل قولَ كل أحدٍ . يستَوي فيه الواحد و الجمع .

خِزيٌ : الهَوان و الذُّل লাঞ্ছনা, অপদস্থতা

خَزِيَ (س، خَزًى، و خِزْيَةً) ذل و هان .

خَزى فلانًا (ض، خِزْياً) أوقَعه في الخِزْيِ .

أخزاه : أوقَعه في الخزي

حَادَّه : عادَاه و غاضَبه

نخوض (نَهْزِل কৌতুক করছিলাম)

و أصل الخوض النزول في الماء، ثم استعمل في الأمور و الكلام .

خاضَ في أمرٍ : اشتغَل به لَهْوًا و بِلاغَرضٍ طيِّبٍ

بيان الإعراب

و منهم الذين يؤذون النبي : الموصول مبتدأ مؤخر، و منهم متعلق بمحذوف، و هو خبر مقدم . و يقولون معطوف على يؤذون .

أذنٌ خيرٍ لكم : (أي هو أذنٌ خيرٍ نافِعٌ لكم) المبتدأ محذوف، و أذن منعوت و (نافع) لكم نعت مرفوع . (١)

يؤمن للمؤمنين : تَعدَّى الفعل باللام لتضَمُّنه معنى الانقياد .

و قال أهل اللغة : الإيمان المقابِل للكُفرِ يُعدَّى بالباء، و الإيمان بمعنى التصديق يُعدَّى باللام لِلتفرِقَة بينَهما، و إن كان حقُّه أن يُعدَّى بِنَفسِه كالتصديقِ .

وقد جاء في القرآن : و ما أنت بمؤمن لنا .

و جاء أيضا : أ فتطمَعون أن يؤمنوا لكم .

و رحمة : معطوفة على أذنٌ، و للذين متعلق بـ : رحمة .

و الله و رسوله أحق : الواو للحال . و لفظ الجلالة مبتدأ و رسوله معطوف على المبتدأ . و أحق خبر، و المصدر المؤول في محل جر بالباء المقدرة، أي : أحق بأن يرضوه .

و وحّد الضمير، لأنه لا فرق بين إرضاء الله و إضاء رسوله، فإرضاء الله إرضاء لرسوله .

ألم يعلموا أنـه من يحـادد الله و رسـوله : الهاء ضمير الشـأن، اسم أن و من اسم شـرط جازم، و يحـادد شـرط مجزوم، و الجملة الشـرطية خـبر أن و هذا المصدر المؤول مفعول لم يعلموا ٠

فأن له نار جهـنم : الفـاء رابطـة لجواب الشـرط، و المصـدر المؤول في محل رفـع خبر لمبتـدأ محذوف، أو هو مبتـدأ و الخبر محذوف ٠

و أصـل العـبارة في الوجه الأول : فأمره كون نار جهـنم له ٠

و في الوجه الثاني : فكـون نار جهنم له أمر حق ٠

ذلك الخزي العظيم : ذلك مبتدأ، و الإشـارة إلى العـذاب، و الخزي خبر ٠

يحـذر المنـفـقون أن تـنزل عليهم ... : المصدر المؤول مفعول به لـ : يحذر، و الفـعل يحـذَر لازم عـند المُبَرَّد ، فـالمصـدر المـؤول مـجـرور بـ : مِنِ المقـدَّرةِ، أي : يحـذر المنافـقون مِنْ أن تنزَّلَ عليـهم ٠

و ضـمـيـر الجمع الأول و الثـاني يعـود إلى المؤمنين، و الثـالث إلى المنافقـين ٠

الترجـمة

তাদের মাঝে রয়েছে তারা যারা কষ্ট দেয় নবীকে এবং বলে, তিনি তো 'কান-পড়া' (যা কানে পড়ে তাই বিশ্বাস করেন)। আপনি বলুন, (কিন্তু তিনি) তোমাদের জন্য 'কল্যাণ-কর্ণ'।[১] তিনি ঈমান রাখেন আল্লাহর প্রতি এবং বিশ্বাস রাখেন মুমিনদের প্রতি। আর (তিনি) রহমত তোমাদের মধ্য হতে তাদের জন্য যারা ঈমান এনেছে। আর যারা কষ্ট দেয় আল্লাহর রাসূলকে তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

তারা শপথ করে আল্লাহর নামে তোমাদের কাছে, তোমাদেরকে খুশী করার জন্য, অথচ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল অধিক হকদার (এ বিষয়ে) যে, তারা তাঁকে সন্তুষ্ট করবে, যদি তারা হয়ে থাকে মুমিন। তারা কি জানে না যে, যে ব্যক্তি বিরুদ্ধাচরণ করবে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের তার জন্য চিরকালের জাহান্নামী হওয়া অবধারিত। সেটাই চরম লাঞ্ছনা।

মুনাফিকরা আশংকা করে যে, মুমিনদের উপর না আবার নাযিল

১. তোমাদের কল্যাণের কথাই শুধু শোনেন।

করা হয় কোন সূরা, যা জানিয়ে দেবে তাদেরকে মুনাফিকদের মনের কথা।

আপনি বলুন, করতে থাকো তোমরা উপহাস, আল্লাহ অবশ্যই প্রকাশ করে ছাড়বেন যা তোমরা আশংকা করো।

আর যদি আপনি জিজ্ঞাসা করেন তাদেরকে (উপহাসের কারণ) তাহলে অতি অবশ্যই তারা বলবে, আমরা তো শুধু 'কথারকথা' বলছিলাম এবং খেলা করছিলাম।

আপনি বলুন, তোমরা কি উপহাস করছিলে আল্লাহর (সাথে) এবং তাঁর আয়াতের (সাথে) এবং তাঁর রাসূলের সাথে! (এখন আর) তোমরা ওযর পেশ করো না। তোমরা তো তোমাদের ঈমান আনার (দাবী করার) পরে কুফুরি করেছো।

যদি মাফ করেও দেই তোমাদের একদলকে (তাওবা করার কারণে) তবু অবশ্যই আযাব দেবো একটি দলকে, এ কারণে যে তারা অপরাধী ছিলো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) يؤذون النبي (কষ্ট দেয় নবীকে) এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, নবীকে খারাপ কথা বলে।

থানবী (রহ) শাব্দিক তরজমা করেছেন। আর শায়খুলহিন্দ (রহ) ঘটনাভিত্তিক তরজমা করেছেন। অর্থাৎ আলোচ্য ঘটনায় যেহেতু মুনাফিকদের কষ্ট দেয়ার ছুরত ছিলো অশোভন কথা বলা, তাই তিনি কষ্টদানের স্বরূপ উল্লেখপূর্বক তরজমা করেছেন।

উভয় তরজমার সমন্বয় হতে পারে এভাবে- তাদের মাঝে রয়েছে তারা যারা কষ্ট দেয় নবীকে (খারাপ কথা বলে)।

(খ) هو أذن (তিনি তো কানপড়া) শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, 'তিনি তো কান'। এটি শাব্দিক তরজমা, যা দ্বারা এখানে মর্ম উদ্ধার হচ্ছে না।

থানবী (রহ) লিখেছেন, তিনি তো সব কথাই কান পেতে শোনেন- এটি ব্যাখ্যামূলক বা সম্প্রসারিত তরজমা।

কিতাবে ভাবতরজমা করা হয়েছে, আর ব্যাখ্যা বন্ধনীতে আনা হয়েছে।

(গ) أذن خير لكم (তিনি তো তোমাদের জন্য কল্যাণ-কর্ণ) থানবী (রহ) লিখেছেন, তিনি তো কান পেতে ঐ কথাই শোনেন, যা তোমাদের জন্য কল্যাণকর।

এটি ব্যাখ্যামূলক তরজমা। কিতাবে শাব্দিক তরজমা করে ব্যাখ্যা আনা হয়েছে বন্ধনীতে।

(ঘ) ঈমান রাখেন- বিশ্বাস রাখেন। (উভয় স্থানে يؤمن এর অর্থ-পার্থক্য নির্দেশ করার জন্য এভাবে তরজমা করা হয়েছে। অর্থাৎ পারিভাষিক অর্থের ক্ষেত্রে ঈমান, আর আভিধানিক অর্থের ক্ষেত্রে বিশ্বাস ব্যবহার করা হয়েছে। এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, يقين ركهتا هے الله پر (আল্লাহর উপর বিশ্বাস রাখেন।

يقين كرتا هے مسلمانوں كى بات (মুসলমানদের কথা বিশ্বাস করেন) তিনি উভয় স্থানে يقين (বিশ্বাস) ব্যবহার করেছেন। আর অর্থ-পার্থক্য নির্দেশ করেছেন ركهتا هے (রাখেন) এবং كرتا هے (করেন) দ্বারা। 'কথা' শব্দটি তিনি যোগ করেছেন শুধু মর্ম স্পষ্ট করার জন্য।

(ঙ) أن له نار جهنم (তার জন্য জাহান্নামী হওয়া অবধারিত) এটি ব্যাকরণভিত্তিক তরজমা। (প্রথমে বর্ণিত তারকীব অনুযায়ী) خالدا فيها এর তরজমাটি অবশ্য ব্যাকরণভিত্তিক নয়। ব্যাকরণভিত্তিক তরজমা এমন হবে- এমন অবস্থায় যে, সে তাতে চিরস্থায়ী (হবে)।

এ ক্ষেত্রে সরলায়নের জন্য মূল তারকীব থেকে সরে আসা হয়েছে।

(চ) أن تنزل عليهم থানবী (রহ) যামীরের পরিবর্তে প্রত্যক্ষ শব্দ ব্যবহার করেছেন, ফলে বক্তব্য স্পষ্ট হয়েছে। অন্যথায় বক্তব্য অস্পষ্ট থেকে যাবে।

'না আবার নাযিল করা হয় কোন সুরা' এ তরজমা করা হয়েছে শংকার ভাব প্রকাশ করার জন্য।

সাধারণ তরজমা হচ্ছে, মুনাফিকরা আশংকা করে যে, মুমিনদের উপর কোন সূরা নাযিল করা হবে ......

(ছ) استهزؤوا - এতে ধমকের ভাব রয়েছে, আর তা পরিস্ফুট হয় নীচের দ্বিতীয় তরজমায়।

(ক) তোমরা উপহাস করতে থাকো।
(খ) করতে থাকো তোমরা উপহাস।

(জ) أن تنزل عليهم سورة শায়খায়ন তরজমা করেছেন– 'তাদের উপর কোন সূরা না নাযেল হয়ে যায়'
মূল থেকে এই ভিন্নতা অনিবার্য নয়, বরং এখানে মূলানুগতাই উত্তম।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ أذنٍ.
٢ – أعرب قوله : أذنُ خيرٍ لكم
٣ – علام عطف قوله رحمةٌ ؟
٤ – أعرب قوله : ما تحذَرون .
٥ – يؤذون النبي এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – هو أذن এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٩) يٰاَيها النبيُّ جاهِد الكفار و المنٰفقين و اغلُظ عليهم، و مَأْوٰهم جهنم، و بِئسَ المصير * يحلِفون بالله ما قالوا، و لَقد قالوا كلِمةَ الكُفر و كفَروا بعدَ اِسلامهم و هَمُّوا بما لم يَنالوا، و ما نقَموا اِلَّآ ان اَغْنٰهم اللّٰه و رسوله من فَضلِه، فان يتوبوا يَكُ خيرًا لهم، و اِن يتولَّوا يُعذِّبْهم الله عذابًا اليما في الدنيا و الاٰخِرة، و ما لهم في الارض مِن وَليٍّ و لا نَصير * و مِنهم مَن عٰهَدَ الله لَئِن اٰتنا من فضلِه لَنصَّدَّقَنَّ و لَنكونَنَّ مِنَ الصّٰلحين * فَلمَّا اٰتٰهم من فَضلِه بَخِلوا به و تَولَّوا و هم مُعرِضون *

بيان اللغة

غَلُظَ (ك، غِلَظًا و غِلْظَةً) خلافُ رَقَّ أو لانَ মোটা হলো, কঠিন, গাঢ় হলো।

غَلُظَ الخُلُقُ/الطَّبْعُ : خَشُنَ	চরিত্র বা স্বভাব রুক্ষ হলো
غَلُظَ عليه : اِشتدَّ عليه	তার প্রতি কঠোর হলো

أغلَظَ له في القَولِ : اشتد عليه فيه

ما نَقَموا (ما أنكروا و ما كرِهوا)

نَقِم منه (ض، نَقْمًا) انتَقَم منه، عاقَبَه

نَقَمَ شيئًا : أنكَره و عابَه و كرِهه

بيان الإعراب

ما قالوا : ما نافية، و الجملة جواب القسَم الذي يدل عليه الكلام السابق .

هموا بما لم ينالوا : ما نكرة موصوفة، أي أرادوا شيئا لم ينجحوا فيه، و هو قتل النبي صلى الله عليه وسلم .

أن أغناهم الله : المصدر المؤول مفعول به لـ : نقموا، من فضله : يتعلق بـ : أغنى، و مِن سببية

يَكُ : اسم هذا الناقص يعود إلى مصدرِ يتوبوا، أي : المتَابُ .

من فضله : يتعلق بـ : آتا . و مِن تبعيضية .

الترجمة

হে নবী, আপনি জিহাদ করুন কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে এবং কঠোর হোন তাদের প্রতি। আর তাদের ঠিকানা হলো জাহান্নাম, আর তা কত না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল।

তারা কসম করে আল্লাহর নামে (যে,) তারা (অমুক কথা) বলেনি, অথচ অতিঅবশ্যই তারা বলেছে কুফুরের কথা। আর তারা কুফুরি গ্রহণ করেছে তাদের (বাহ্যিক) ইসলাম গ্রহণের পরও। আর তারা ইচ্ছা করেছিলো এমন কিছুর যা তারা লাভ করতে পারেনি। আসলে তারা শুধু এরই বদলা নিয়েছে যে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল তাদেরকে প্রাচুর্য দান করেছিলেন আপন অনুগ্রহবশত।

তো যদি তারা তাওবা করে তাহলে তা কল্যাণকর হবে তাদের জন্য, আর যদি তারা ফিরে যায় তাহলে আযাব দেবেন তাদেরকে আল্লাহ যন্ত্রণাদায়ক আযাব, দুনিয়াতে এবং আখেরাতে। আর পৃথিবীতে তাদের না আছে কোন বন্ধু, না আছে সাহায্যকারী।

আর তাদের মাঝে রয়েছে (ঐ ব্যক্তি) যে প্রতিজ্ঞা করেছিলো

আল্লাহর নামে যে, যদি আমাকে দান করেন আল্লাহ্ তাঁর কিঞ্চিৎ অনুগ্রহ তাহলে অতিঅবশ্যই আমি ছাদাকা করবো এবং অতিঅবশ্যই সৎলোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো। অনন্তর যখন আল্লাহ দান করলেন তাকে আপন অনুগ্রহ হতে, তখন সে কৃপণতা করলো সেই দান নিয়ে এবং একেবারেই ফিরে গেলো (আনুগত্য থেকে)।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) مأوى এবং مصير উভয়টির অর্থ শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, ঠিকানা। মূলের শব্দভিন্নতা তরজমায় রক্ষিত হয়নি। থানবী (রহ) مأوى এর অর্থ করেছেন, ঠিকানা, আর مصير এর অর্থ করেছেন, স্থান।

উভয়ের শাব্দিক অর্থ যথাক্রমে আশ্রয়স্থল এবং প্রত্যাবর্তনস্থান

(খ) و ما نقموا إلا (আর তারা শুধু এরই বদলা নিয়েছে যে,) 'বদলা' – এর পরিবর্তে 'শোধ' ব্যবহার করা যায়। আর এ তরজমাও হতে পারে, আর তারা শুধু এটাই অপছন্দ করেছে যে,

(গ) و منهم من عاهد الله আয়াতটি নাযিল হয়েছে ثعلبة নামক এক মুনাফিককে কেন্দ্র করে। তো শানে নুযূলের দিক থেকে একবচনে তরজমা করা যায়; বিশেষত ছিলাহ্-বাক্য যখন মুফরাদ আনা হয়েছে। তবে বিষয়বস্তু যেহেতু অনেকের ক্ষেত্রে প্রযোজ্য সেহেতু বক্তব্যটি আয়াতে বহুবচনযোগে এসেছে। এ হিসাবে তরজমায়ও বহুবচন ব্যবহার করা যায়। তখন عاهد এর তরজমায় পরিবর্তন আনতে হবে। অর্থাৎ উভয় ছুরতেই তরজমার ক্ষেত্রে দু' জায়গার এক জায়গায় পরিবর্তন আনতে হবে–

অবশ্য পূর্ণ শাব্দিকতা অনুসরণ করে একবচন ও বহুবচন যোগেও তরজমা করা যাবে।

(ঘ) لئن اتانا من فضله (যদি আল্লাহ আমাকে দান করেন তার করুণা হতে) অর্থাৎ তাঁর কিছু করুণা।

এ ক্ষেত্রে من অব্যয়টি হবে আংশিকতাজ্ঞাপক। এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা। থানবী (রহ) বলেন, من অব্যয়টি হেতুবাচক, আর آتانا এর مفعول به উহ্য রয়েছে এবং

পূর্বাপর থেকে বোঝা যায় যে, সেটা হবে مالا كثيرا – সুতরাং তরজমা হবে, 'যদি তিনি আপন অনুগ্রহবশত আমাদেরকে প্রচুর সম্পদ দান করেন।

কিংবা من অব্যয়টি অতিরিক্ত, আর فضل হচ্ছে অর্থগতভাবে مفعول به যার অর্থ প্রচুর সম্পদ, বা প্রাচুর্য। সুতরাং তরজমা হবে, যদি তিনি আমাদেরকে প্রাচুর্য দান করেন।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة غَلُظَ .

٢ – أعرب قوله : بما لم ينالوا .

٣ – يك : اشرح الكلمة صرفًا و نحوًا

٤ – أعرب قوله : عذابا أليما .

٥ – مأوى ও مصير উভয়ের প্রতিশব্দ ঠিকানা ব্যবহার করার ক্ষেত্রে তরজমার ত্রুটি কী তা আলোচনা করো।

٦ – و ما نقموا إلا এর তরজমা আলোচনা করো

(١) وَ السّٰبِقون الأوَّلون مِنَ المهٰجِرين وَ الانصار وَ الذين اتَّبَعوهم بِاحسانٍ، رَضِيَ الله عَنهم و رَضُوا عنه و اَعَدَّ لهم جنّٰتٍ تجري تحتَها الانهٰر خٰلدين فيها اَبَدًا، ذلك الفوز العظيم * و ممن حولَكم مِنَ الأعراب منٰفِقون، وَ مِن أهلِ المدينَة، مَرَدوا على النِّفاق، لا تعلَمهم، نحن نعلَمهم، سَنُعذبهم مرَّتين ثم يُرَدون الى عَذاب عظيم * و اٰخَرون اعترَفوا بِذُنوبِهم خلَطوا عَمَلًا صٰلحا و اٰخَرَ سَيِّئا، عَسى الله ان يتوبَ عليهم، ان الله غفور رحيم *

بيان اللغة

السّٰبقون : (المتقدمون) سَبَقه إلى شيءٍ : تقدَّمه إليه (ض، سَبْقًا)
কোন কিছুর দিকে তাকে ছাড়িয়ে গেলো, তার চেয়ে অগ্রবর্তী হলো
سابَق إلى شَيءٍ (مسابقة و سِباقًا) : أسرَع إليه
قال تعالى : سابِقوا إلي مَغفرةٍ من ربكم .
سابَق فلانًا : باراه (مُباراةً) তার সাথে প্রতিযোগিতা করলো
تسابَقَ القومُ : سابَق بعضُهم بعضًا পরস্পর প্রতিযোগিতা করলো
استَبَقَ القومُ : تَسابقوا . استَبقَ الرجلان البابَ/إلى البابِ : تَبادَرا إليه একে অপরের আগে দরজায় পৌঁছতে চেষ্টা করলো
مَرَدَ على شيءٍ : استمر عليه কোন কিছু অব্যাহতভাবে করলো
مَرَد (ن، مُرودًا) عتا و عصٰى স্বেচ্ছাচারী হলো
خَلَط شيئًا بشيءٍ (ض، خَلْطًا) ضَمَّه إليه (وقد يُمكن التميز بعدَ ذلك، كما في الحيوانات، أو لا يمكن، كما في المائعات)
خالَطه : مازجه و جالسه তার সাথে মিশলো, মেলামেশা করলো

اختلط شيء بشيء : انضم إليه মিশ্রিত হলো
اختلط عقلُه : فسد ·
خَليط : مُخالِط (للواحد و الجمع) و يطلَق على الشريك و الصاحب و الجار (ج) خُلَطاءُ

بيان الإعراب

السّٰبِقون : مبتدأ، و من المهاجرين و الأنصار متعلق بمحذوف حال من المبتدأ، و الذين معطوف على : السابقون، و جملة رضي الله عنهم خبر ·
و يجوز أن يكونَ الأولون خبرًا، و من المهاجرين حال من الخبر، أي : السابقون إلى الجنة هم الأولون كائنين من المهاجرين و الأنصار ·
و الموصول في هذا الوجه مبتدأ، و جملة رضي الله عنهم خبر ·
بإحسانٍ : حال من فاعلِ اتبعوا، بمعنى مُحسنين، أو هو متعلق بحال محذوفة، أي : متلبسين بإحسانٍ ·
و ممن حولَكم من الإعراب منافقون : منافقون مبتدأ مؤخر، و ممن حولكم متعلق بمحذوف خبر مقدم، كأنه قيل : المنافقون معدودون ممن حولَكم، و من الأعراب متعلق بمحذوف حال من الموصول، أي : المنافقون معدودون ممن اجتمَع حولكم كائِنين من الأعراب ·
و من أهل المدينة : معطوف على : ممن حولكم، فهو داخل في حكم الخبر، كأنه قيل : المنافقون من قومٍ اجتمَعوا حولَكم و من أهل المدينة ·
و على هذا الوجهِ تكون جملة مَردوا مستأنفَة · و يجوز أن يكونَ الكلام تامًّا عندَ قوله : منافقون، فيكون قوله من أهل المدينة خبرًا مقدَّما، و المبتدأ بعدَه محذوف، و جملة مَرَدوا صفة للمبتدأ المحذوف، و قامت صفتُه مقامَه، أي : و من أهل المدينة قوم مَرَدوا على النفاق ·
مرتين : نائب عن المفعول المطلق، أي : نُعَذبهم عَذابين، و قال البعض :

هو ظرف، أي: نُعذبهم وقتَين، أي: قبلَ الموت في الدنيا، و عندَ الموت ·

و اٰخَرون: مبتدأ، و جملة اعترَفوا بِذنوبهم صفته، و جملة خلَطوا خبره، وعملًا صالحا مفعول به لـ: خلَطوا، و اٰخَرَ سيئًا معطوف على: عملا صالحا ·

و جاز أن تقول: خلطتُ الحنطةَ الشعيرَ، و بالشعيرِ ·

و المعنى على الوجه الأول: خلطتُ كلَّ واحدٍ منهما بالآخَر، كما تقول: خلطتُ الماءَ اللبنَ، فمعناه: خلطت الماءَ باللبنِ و اللبنَ بالماءِ · و إذا قلتَ بالباء: خلطت الماء باللبن، فقد جعلت الماء مخلوطا و اللبن مخلوطا به، ففي الكلام الأول معنى زائد ·

الترجمة

আর মুহাজির ও আনছারদের মধ্য হতে যারা প্রথম (ও) অগ্রগামী এবং যারা অনুসরণ করেছে তাদের নিষ্ঠার সাথে, আল্লাহ সন্তুষ্ট হয়েছেন তাদের প্রতি এবং তারা সন্তুষ্ট হয়েছে আল্লাহর প্রতি। আর আল্লাহ তাদের জন্য এমন বাগবাগিচা প্রস্তুত করে রেখেছেন যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় নহরসমূহ। তারা থাকবে সেখানে হামেশা, হামেশা কাল। সেটাই মহাসফলতা।·

আর তোমাদের চারপাশে গ্রাম্যদের মধ্য হতে কিছু মুনাফিক রয়েছে, এবং মদীনাবাসীদের মধ্য হতে। তারা অবিচল রয়েছে নিফাকের উপর। আপনি জানেন না তাদেরকে; আমি জানি তাদেরকে। অবশ্যই আযাব দেবো আমি তাদেরকে দু'বার। তারপর ফেরানো হবে তাদেরকে বিরাট আযাবের দিকে।

এবং (তাদের মধ্য হতে রয়েছে) আরো কিছু লোক, যারা স্বীকার করে নিয়েছে তাদের পাপসমূহ, যারা মিশিয়ে ফেলেছে কিছু নেক আমল এবং মন্দ আমল। আশা হয়, আল্লাহ অনুগ্রহ করবেন তাদেরকে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহাক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) السابقون الأولون من المهاجرين و الأنصار (আর মুহাজির ও আনছারদের মধ্য হতে যারা প্রথম [ও] অগ্রগামী) থানবী

(রহ) লিখেছেন, 'যে সকল মুহাজির ও আনছার পূর্ববর্তী ও অগ্রগামী।'

এখানে তিনি نعت ও منعوت কে معطوف ও معطوف عليه এর তারকীবে তরজমা করেছেন, আর من البيانية কে এড়িয়ে গেছেন। মূলের তারকীবকে অক্ষুণ্ন রাখার জন্য, সেই সঙ্গে তরজমাকে সহজ ও সাবলীল করার জন্য কিতাবের তরজমায় 'ও'-কে বন্ধনীতে আনা হয়েছে। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন–

جو لوگ قديم هيں سب سے پهلے هجرت كرنے والے اور ...

যারা প্রাচীন, সর্বপ্রথম হিজরতকারী এবং .....

এ তরজমায় মনে হতে পারে যে, 'সর্বপ্রথম' হচ্ছে হিজরত করার ظرف সুতরাং এ তরজমা মূলতারকীবানুগও নয় এবং যথাযোগ্যও নয়।

(খ) و ممن حولكم من الأعراب منافقون (আর তোমাদের চারপাশে গ্রাম্যদের মধ্য হতে কিছু মুনাফিক রয়েছে এবং মদীনাবাসীদের মধ্য হতে)– থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– 'আর কিছু তোমাদের আশপাশের লোকদের মাঝে এবং কিছু মদীনাবাসীদের মাঝে এমন মুনাফিক রয়েছে যারা নিফাকের চূড়ান্ত সীমায় পৌঁছে আছে'।

এখানে হয়ত من الأعراب এর তরজমা ছুটে গিয়েছে, অথবা حولكم (তোমাদের আশপাশের) এর তরজমা দ্বারাই তিনি একই সঙ্গে من الأعرابও বুঝিয়েছেন।

و من أهل المدينة অংশটি যেহেতু و ممن حولكم এর উপর معطوف সেহেতু এটিকে তিনি অগ্রবর্তী করে তরজমা করেছেন। আর ... مردوا কে منافقون এর صفة ধরেছেন।

এই তারকীবের স্বপক্ষে তিনি বায়যাবীর হাওয়ালা দিয়েছেন।

'কিছু' শব্দটি যেহেতু 'মুনাফিক'-এর বহুবচনজ্ঞাপক সেহেতু এটিকে মুনাফিক এর সংলগ্ন পূর্বে আনা ভালো। তখন 'কিছু' শব্দটিকে একবার ব্যবহার করাই যথেষ্ট হবে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, আর কিছু তোমার আশ-পাশের মুনাফিক .....

সম্ভবত উর্দূকে অনুসরণ করে 'তোমার' তরজমা করা হয়েছে। এবং تمهارے কে একবচনের যমীর মনে করে ধরে নেয়া হয়েছে

যে, এটি নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের প্রতি সম্বোধন।

(গ) مردوا على النفاق এর তরজমায় থানবী (রহ) চূড়ান্ততার দিকটি সামনে এনেছেন, আর শায়খুলহিন্দ (রহ) অব্যাহততার দিকটি সামনে এনেছেন। مردوا এর অর্থে অবশ্য দু'টো দিকই রয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে- 'তারা কপটতায় সিদ্ধ', এ তরজমা ঠিক হলেও সঠিক নয়।

(ঘ) يردون إلى عذاب عظيم (ফেরানো হবে তাদেরকে বিরাট আযাবের দিকে) এটি শব্দানুগ তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন 'পাঠানো হবে'। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, 'প্রত্যাবর্তন করানো হবে'।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'নিয়ে যাওয়া হবে'।

এগুলো গ্রহণযোগ্য হলেও শব্দানুগ তরজমা নয়।

(ঙ) عسى الله أن يتوب عليهم (আশা হয়, আল্লাহ অনুগ্রহ করবেন তাদের প্রতি) শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা- অচীরেই আল্লাহ মাফ করে দেবেন তাদেরকে।

থানবী (রহ) এর তরজমা- আল্লাহর কাছে আশা আছে, তিনি তাদের প্রতি খেয়াল করবেন।

শায়খুলহিন্দ (রহ) عسى কে فعل المقاربة ধরেছেন, আর থানবী (রহ) فعل الرجاء ধরেছেন।

تاب عليه এর মূল তরজমা হলো, তিনি তার তাওবা কবুল করেছেন / তার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন। অন্যান্যগুলো হচ্ছে ভাবতরজমা।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة خَلَطَ .

٢ - ما هو خبر السابقون ؟

٣ - أعرب قوله : باحسان .

٤ - في أي محل من الإعراب وقعت جملة مردوا على النفاق ؟

٥ - السابقون الأولون من المهاجرين এখানে শায়খায়নের তরজমা দু'টি পর্যালোচনা করো।

٦ - مردوا على النفاق এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) لَقَد تاب اللّٰه على النبيِّ و المهٰجرين و الانصار الذين اتَّبعوه في ساعَةِ العُسرَة من بعدِ ما كاد يَزيغ قلوبُ فريق منهم ثم تاب عليهم، اِنه بهم رَءوف رحيم * و على الثلٰثة الذين خُلِّفوا، حتى إذا ضاقَت عليهم الارضُ بما رَحُبت وضاقت عليهم انفسُهم وظنوا اَن لّا مَلجَأ مِن الله اِلّا اليه، ثم تاب عليهم لِيتوبوا، اِن الله هو التواب الرحيم * يٰايها الذين اٰمَنوا اتقوا اللّٰهَ و كونوا مَعَ الصّٰدقِين * ما كان لِاَهلِ المدينة و مَن حَولهم مِنَ الاعراب اَن يتخلَّفوا عَن رسول الله و لا يرغَبوا بِاَنفُسِهم عن نَفسِه، ذلك بِاَنهم لا يُصيبهم ظَمَأٌ و لا نَصَبٌ و لا مَخمَصة في سبيل الله و لا يَطَئون مَوطِئًا يَغيظُ الكفار و لا ينالون مِن عَدوٍّ نيلا اِلا كُتِب لهم به عَمَلٌ صالح، اِن الله لا يُضيع اَجرَ المحسنين * و لا يُنفِقون نفَقَةً صغيرة و لا كبيرة و لا يقطَعون وَاديًا إلا كتب لهم لِيَجزِيَهم الله أحسنَ ما كانوا يعملون *

بيان اللغة

عُسرَة : شِدَّة، ضِيقُ ذاتِ اليد — কঠিনতা, অসচ্ছলতা

العُسْرٰى : الأمر الصعب الشديد

عَسِر الأمرُ و الزمان (س، عَسَرًا) صعُب و اشتد، فهو عَسِرٌ

عَسُر الأمرُ، فهو عَسير (ك، عُسْرا) = عَسِر

العُسْر : ضد اليُسْرِ

تعاسَرتم : تعاملتم بالعُسْر و الشدة حيث يَرُدُّ كل منهم طلَبَ الآخر — তোমরা পরস্পরের প্রতি অনমনীয়তা প্রদর্শন করেছো

خَلَّف فلانًا : أخَّره، جعله خلفَه، جعله خليفَته .

تَخَلَّفَ : مُطاوِعُ خَلَّفَ

تخلَّف القومَ : جازَهم و تركهم خَلْفَه

تخلف عن الحرب/عن القوم : لم يكن فيها/لم يكن معهم

ظَمَأ : عَطَش . نصب : عَناءٌ و تَعَب   ক্লান্তি শ্রান্তি, কষ্ট-ক্লেশ

مَخْمَصة : مَجاعة

وَطِئَ شيئًا (يَطَؤُه، وَطْئًا) داسَه (ن، دَوْسًا، دِياسَةً)   পায়ে মাড়ান

مَوطِئٌ : موضع القَدَم .

واديا : الوادي أرض فسيحة بينَ جبال و آكام ينحَدِر إليه مياه السَّيْل، و هو في الأصل " فاعل " من وَدِيَ، أي سال، و قد شاعَ استعمال العرَبِ بمعنى الأرضِ وهو المراد هنا و الجمع أودية .

بيان الإعراب

على النبي : متعلق بـ : تاب، و ذِكْرُ النبي المعصوم معهم لِحَثِّ المؤمنين على التوبَةِ، و تَشريفِ المهاجرين و الأنصار بِضَمِّ توبتِهم إلى توبةِ النبي صلى الله عليه وسلم .

من بعد ما كاد يَزيغ قلوب فريقٍ منهم : من بَعدِ متعلق بـ : اتَّبعوا، و قال البعضُ : إنه متعلق بـ : تاب .

ما حرف مصدر، وكاد فعل القرب، وْ اسمه ضمير الشأن .

و جملة يزيغ قلوب فريق منهم في محل نصب خبر كاد، و المصدر المؤول في محل جر مضاف إليه .

و يجوز أن يكون كاد فعلا تاما بمعنى قرب، فاعله مضمر، و هو القوم . و جملة يزيغ في محل نصب حال من فاعل كاد، و ضمير منهم عائد على الفاعل .

و على الثلاثة : معطوف على : على النبي، أو على : عليهم . أي : تاب على النبي و على الثلاثة، أو تاب عليهم و على الثلاثة .

حتى إذا ضاقت : حتى حرف جر و غاية، و إذا هنا لحكاية الحال، لا لِلمستقبَل، فهو ظرف مجرد من معنى الشرط بمعنى حينٍ، و المعنى : خُلِّفوا إلى هذا الوقتِ . و جملة تابَ عليهم معطوف

على ضاقت ·

و يجوز أن يكون حتى حرفَ ابتداءٍ، و إذا زائدةً ·

و يجوز أيضا أن يكون إذا ظرفًا يتضمَّن معنى الشرط، و جواب الشرط محذوف، أي : لَجَؤوا إلى الله ·

بما رحُبت : الباء للمصاحَبَة، و هي التي تكون بمعنى مع، (١) و ما مصدرية، أي مع رَحابَتها ·

و ظنوا أن : الظن هنا بمعنى اليَقين، و أن مخففة من المثقلة، و اسمها ضمير شأنٍ محذوف و جملة ظنوا معطوفة على : ضاقت

ما كان لأهل المدينة و من حَولهم من الأعراب أن يتخَلفوا : المصدر المؤول اسم كان، و لأهل المدينة متعلق بخبر كان المحذوف ·

و أصل العبارة : ما كان التخلُّف عن رسول الله جائزًا لأهل المدينة و لِمَنْ اجتَمَعوا حولهم كائنين من الأعراب ·

و يحوز أن يكون كان تاما، فيتعلق به حرف الجر ·

و لا يرغَبوا بأنفسهم : عطف على يتخلفوا، و الباء للتعدية، و المعنى : و لا يجعلوا أنفسَهم راغبَةً عنه ·

ذلك بأنهم : ذلك مبتدأ، و الإشارة إلي الحكم السابق، و الباء سببية، تتعلق بالخبر المحذوف · أي : ذلك الحكم ثابت بسبب الأجرِ الآتي ذكرُه، و جملة لا يُصيبهم ظَمَأ ... خبر أن، و في سبيل الله متعلق بـ : يصيب

موطئا : إن كان مصدرا ميميا فهو مفعول مطلق، و إذا كان اسم ظرف فهو مفعول به، أي : لا يدوسون مكانا، و جملة يغيظ الكفار نعت لـ : موطئا ·

عمل صالح : نائب فاعل لـ : كتب، و حذف نائب الفاعل في كتب الثاني لهذه القرينة ·

إلا كتب لهم : إلا أداة حصر، و جملة كتب في موضع نصب على الحال،

(١) أو يجوز أن يَحُلَّ مَحَلَّها الحال، كما في قوله تعالى : و قد دخلوا بالكفر، أي : كافرين ·

فالاستثناء مفرَّغ من عُموم الأحوال، أي : لا يفعَلون هذه الأفعال في حالٍ من الأحوال إلا حالَ كتابَةِ عملٍ صالح .

لِيَجزيَهم الله أحسنَ ما كانوا يعمَلون : مفعول به ثان لـ : يجزي، و الموصول أو المصدر المؤول في محل جر، مضاف إليه .

و يجوز أن يكون أحسَنَ نائِبًا عن المفعول المطلق. و ما كانوا يعملون في محل جر بحرف جر مقدر، أي : جزاءً أحسنَ مما كانوا يعملونه أو من عملهم .

الترجمة

অতি অবশ্যই আল্লাহ্‌ কবুল করেছেন নবীর তাওবা এবং মুহাজিরদের এবং আনছারদের (তাওবা) যারা অনুসরণ করেছেন তাঁকে কঠিন সময়ে, তাদের মধ্য হতে একটি দলের অন্তর (যুদ্ধযাত্রা থেকে) ফিরে যাওয়ার উপক্রম হওয়ার পর। তারপর আল্লাহ্‌ কবুল করলেন তাদের তাওবা, নিঃসন্দেহে আল্লাহ্‌ তাদের প্রতি সুকোমল, চিরদয়ালু।

আর (তিনি তাওবা কবুল করলেন) ঐ তিনজনের, যাদেরকে পিছনে রাখা হয়েছিলো, এমন কি যখন ভূমি সংকীর্ণ হলো তাদের উপর, তা প্রশস্ত হওয়া সত্ত্বেও, এবং সংকীর্ণ হয়ে গেলো তাদের উপর তাদের প্রাণ এবং তারা নিশ্চিত হলো যে, আল্লাহর মোকাবেলায় কোন আশ্রয়স্থল নেই আল্লাহর দিকে ছাড়া (তখন তারা আল্লাহর আশ্রয় নিলো) তারপর আল্লাহ্‌ কবুল করলেন তাদের তাওবা, যাতে তারা তাওবার উপর স্থির থাকে। নিঃসন্দেহে তিনিই তাওবা কবুলকারী, চিরদয়ালু।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, ভয় করো তোমরা আল্লাহকে এবং থাকো সত্যবাদীদের সঙ্গে।

মদীনাবাসীদের জন্য এবং তাদের আশপাশের গ্রাম্য লোকদের জন্য সঙ্গত নয় আল্লাহর রাসূল থেকে পিছিয়ে থাকা এবং নিজেদেরকে বিমুখ করে রাখা তাঁর সত্তা থেকে।

এ আদেশ এ কারণে যে, আল্লাহর রাস্তায় পিপাসা ও শ্রান্তি ও ক্ষুধা, যা কিছু তাদেরকে আক্রান্ত করবে এবং কাফিরদেরকে ক্রুদ্ধ করে. এমন যে কোন স্থানে তারা পা রাখবে এবং শত্রুদের উপর যে কোন আঘাত হানবে তার বিনিময়ে তাদের জন্য লেখা হবে একটি নেক

আমল। নিঃসন্দেহে আল্লাহ নষ্ট করেন না 'নিবেদিত প্রাণ'দের প্রতিদান।

আর তারা ছোট ও বড় যা কিছু খরচ করবে এবং যত ভূমি তারা অতিক্রম করবে তা অবশ্যই তাদের অনুকূলে লেখা হবে, যাতে আল্লাহ তাদেরকে প্রতিদান দেন, যে আমল তারা করছিলো তার চেয়ে উত্তম প্রতিদান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تاب على النبي (কবুল করেছেন নবীর তাওবা) تاب عليه এর এটিই হলো মূল অর্থ। তবে এ তরজমা প্রশ্নের কারণ হয়ে দাঁড়ায়, তাই শায়খায়ন এভাবে বাক্যটির ভাবতরজমা করেছেন–

অবশ্যই আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন নবীর উপর।

কিতাবে যে তরজমা করা হয়েছে তার ভিত্তি بيان الإعراب এ বয়ান করা হয়েছে।

(খ) من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم (তাদের মধ্য হতে একটি দলের অন্তর [যুদ্ধযাত্রা হতে] ফিরে যাওয়ার উপক্রম হওয়ার পর)

زاغ القلب এর মূল অর্থ হলো, কলব হক থেকে বাতিলের দিকে ফিরে যাওয়া। এখানে উদ্দেশ্য হলো যুদ্ধযাত্রা থেকে ফিরে যাওয়া। বন্ধনীতে তা পরিষ্কার করা হয়েছে। এ তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) এর।

থানবী (রহ) লিখেছেন– তাদের এক দলের অন্তর দ্বিধাগ্রস্ত হওয়ার উপক্রম করার পর।

একটি বাংলা তরজমায় 'চিত্তবৈকল্য দেখা দেয়া' ব্যবহার করা হয়েছে। এ দুটো হচ্ছে ভাবতরজমা।

বিকল্প তরজমা– এমন অবস্থার পর যে, তাদের একদলের অন্তর প্রায় ফিরে গিয়েছিলো।

(গ) و على الثلاثة আর (তিনি তাওবা কবুল করলেন) ঐ তিনজনের– ব্যাকরণের নিয়মে আতফ تكرار العامل দাবী করে। তাই বন্ধনীতে ফেয়েলকে পুনরুক্ত করা হয়েছে। معطوف ও معطوف এর মাঝে দূরত্বের কারণে এই পুনরুক্তি ছাড়া মর্ম স্পষ্ট হয় না।

(ঘ) خلفوا (যাদেরকে পিছনে রাখা হয়েছে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর শাব্দিক তরজমা।

থানবী (রহ) ভাবতরজমা করেছেন এভাবে- যাদের বিষয়টি স্থগিত রাখা হয়েছে। তিনি বলেন, মূলত ছিলো এরকম- خلف أمرهم

(ঙ) ضاقت عليهم أنفسهم (সংকীর্ণ হয়ে গেলো তাদের প্রাণ তাদের উপর) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর শাব্দিক তরজমা।

থানবী (রহ) এর তরজমা- আর তারা নিজেরাও তাদের প্রাণ থেকে অতিষ্ঠ হয়ে পড়েছিলো।

আরেকটি তরজমা- তাদের জীবন তাদের জন্য দুর্বিসহ হয়ে পড়েছিলো।

এ দুটো হলো ভাবতরজমা, তবে দ্বিতীয়টি মূলের তারকীব অনুগামী।

(চ) لا ملجأ من الله إلا إليه (আল্লাহর মোকাবেলায় কোন আশ্রয়স্থল নেই আল্লাহর দিকে ছাড়া) একটি তরজমায় আছে- আল্লাহ ছাড়া তাদের কোন আশ্রয় নেই। এখানে إلا إليه এর ভাবতরজমা করা হয়েছে, তাতে আপত্তি নেই, কিন্তু من الله এর তরজমা বাদ পড়েছে, এটা আপত্তিকর।

وظنوا (আর তারা নিশ্চিত হলো) এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন- তারা উপলব্ধি করলো/ বুঝতে পারলো/ বুঝে ফেললো।

ظن শব্দটি এখানে يقين এর অর্থে ব্যবহৃত হয়েছে, তাই কিতাবের তরজমা অগ্রাধিকারযোগ্য।

(ছ) أن يتخلفوا عن ... (আল্লাহর রাসূল থেকে পিছিয়ে থাকা) এখানে تخلف এর শাব্দিক তরজমা- তার থেকে পিছিয়ে থাকলো।

ভাবতরজমা- তার সঙ্গ দিলো না/তার সঙ্গ ত্যাগ করলো।

(জ) و لا يرغبوا بأنفسهم عن نفسه (এবং বিমুখ করে রাখা নিজেদেরকে তাঁর সত্তা থেকে) এ তরজমা হলো শব্দানুগ। শায়খায়ন ভাবতরজমা করেছেন এভাবে- নিজেদের জীবনকে তাঁর জীবন থেকে প্রিয় মনে করা।

(ঝ) لا ينالون من عدو نيلا (শত্রুর উপর যে কোন আঘাত হানবে) এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি نيلا কে مفعول

توكيد ও عموم ধরেছেন, যার উদ্দেশ্য হচ্ছে مطلق
ما يناله অর্থাৎ مفعول به কে نيلا শায়খুলহিন্দ (রহ) ধরেছেন।
الإنسان (মানুষ যা কিছু লাভ করে) তিনি লিখেছেন– শত্রু থেকে যা কিছু ছিনিয়ে নেবে।

أسئلة :

١ – اشرح عُسَرَةً على حَدِّ عِلْمِك ·
٢ – أعرب قوله : على الثلاثة ·
٣ – أعرب قوله : حتى إذا ضاقت عليهم الأرض ·
٤ – ما هو فاعل كاد إذا كان فعلا تاما ؟
٥ – خلفوا এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – لا ينالون من عدو نيلا এখানে শায়খায়নের তরজমাদুটির সূত্র বর্ণনা করো।

(٣) وَ مـا كـان المؤمنون لِيَنفِروا كـافَّة، فَلو لا نَفَر مِنْ كلِّ فرقَةٍ منهم طائِفَةٌ لِيَتفَقَّهوا في الدين و لِيُنذروا قومَهم إذا رجَعوا اِليهم لعلهم يحذَرون * يٰايها الذينَ اٰمَنوا قاتِلوا الذين يَلُونَكم مِنَ الكفار وليَجِدوا فيكم غِلْظَةً، و اعلموا اَنَّ الله مَعَ المتقين * و إذا ما اُنزِلت سُورةٌ فمنهم مَن يقول اَيُّكم زادته هذه ايمانًا ، فاما الذينَ اٰمَنوا فزادتهم ايمانًا و هم يستَبشِرون * و اَما الذين في قلوبهم مَرَض فزادتهم رجسا إلى رجسهم و ماتوا و هم كٰفرون *

بيان اللغة

لينفروا : انظر٣/ ١٠/٦
تَفَقَّه في الدين : تَعلَّم الدين و تَعمَّق فيه
تفقه الرجلُ : تعلم الفقهَ و صار فقيهًا
تفقه الأمرَ : أحسنَ إدراكَه

فَقَّهه : صَيَّره فقيهًا
فَقَّهه الأمرَ : أعلَمه إياه
اللهم فَقِّهه في الدين : ارزُقْه فهمًا عميقا في الدين
فَقِهَ الأمرَ (س، فِقْهاً) أحسن إدراكه
فقه (ك، فَقاهَةً) صار فقيها
الفِقْهُ : الفهم و الفِطْنَة . العلم بأحكام الشريعَة
يَلونكم (أي : يَقرَبون منكم) وَلِيَه (يَلِيه، ح، وَلْيًا) دنا منه و قرُب

بيان الإعراب

لِيَنفروا : اللام لام الجحود، يتعلق بخبر كان المحذوف . و كافَّةً حال من فاعلِ ليَنفِروا، و هو واو الجماعة، أي : لينفروا مجتمعين .

فلولا : الفاء استئنافية، و لولا حرف تحضيض، و من كل فرقة متعلق بمحذوف، حال من طائفةٌ، و هو في الأصل نعت تقدم على المنعوت، و لما تقدم على المنعوت صار حالا، أي : لولا نفَر طائفةٌ كائنَةٌ من كل فرقَةٍ معدودةٍ من المؤمنين .

ليتفقهوا : هذه اللام لام التعليل يتعلق بـ : نفر

إذا : ظرف مجرد من معنى الشرط، بمعنى حين، متعلق بالفعل السابق .

من الكفار : متعلق بمحذوف حال من فاعلِ يَلونكم

وَليجدوا : الواو عاطفة، عُطفت بها الجملة التالية على جواب النداء، و اللام لام الأمر .

و إذا ما أنزلت سورة : الواو استئنافية، و إذا اسم ظرف و شرط، أضيف إلى الشرط، و تعلق بجواب الشرط، و ما زائدة .

فمنهم من يقولُ : الفاء رابطة و الجملة الاسمية جواب الشرط .

أيكم : مبتدأ، و جملة زادته هذه إيمانا خبر، و "هذه" فاعلُ زادت، و إيمانًا تمييز أو مفعول به ثان .

فأما الذين آمنوا فزادتهم إيمانا : الفاء استئنافية، و أما حرف شرط و تفصيل . الذين آمَنوا مبتدأ و شرط، و زادتهم إيمانا خبر، و جوابُ أما، و الفاء رابطة .

رجسا : مـفـعـول به ثان و إلى رجـسـهم صـفـة لـ : رجـسـا ، أي : رجـسـا مضـموما إلى رجـسـهم .

التـرجـمة

মুমিনগণ সকলে তো অভিযানে বের হতে পারে না, তাহলে কেন অভিযানে বের হয় না মুমিনদের (মধ্য হতে) প্রতিটি (বড়) দল থেকে একটি (ছোট) দল, যাতে থেকে যাওয়া দলটি গভীর জ্ঞান অর্জন করতে থাকে দীনের ক্ষেত্রে এবং যাতে সতর্ক করতে পারে (অভিযান থেকে ফিরে আসা) তাদের দলকে যখন তারা ফিরে আসবে তাদের কাছে, যাতে তারা সতর্ক হতে পারে।

হে ঐ লোকেরা যারা ঈমান এনেছো, লড়াই করো তোমরা ঐ কাফিরদের বিরুদ্ধে যারা তোমাদের নিকটে থাকে আর তারা যেন পায় তোমাদের মাঝে কঠোরতা, আর জেনে রাখো যে, আল্লাহ্ রয়েছেন মুত্তাকীদের সঙ্গে।

আর যখনই নাযিল করা হয় কোন সূরা তখন মুনাফিকদের মধ্য হতে কিছু লোক (নিরীহ মুসলমানদেরকে উপহাস করে) বলে, তোমাদের কার ঈমান বৃদ্ধি করেছে এই সূরা? তবে (শোনো,) যারা ঈমান এনেছে, এই সূরা বৃদ্ধি করেছে তাদের ঈমান, আর তারা (ঈমানের বৃদ্ধিতে) আনন্দ লাভ করছে।

পক্ষান্তরে যাদের অন্তরে রয়েছে 'মরয' এই সূরা বাড়িয়ে দিয়েছে তাদের কলুষের সাথে আরো কলুষ, ফলে তারা মরেছে এমন অবস্থায় যে তারা কাফির।

مـلاحظات حـول التـرجمة

(ক) فلولا نفر من كل فرقـة منهم طائـفـة – বড় দল শহরে থেকে যাবে, আর ছোট দল জিহাদে যাবে এটাই স্বাভাবিক অবস্থা। সে জন্যই থানবী (রহ) فرقـة এর তানবীনকে বিরাটত্ব এবং طائفـة এর তানবীনকে ক্ষুদ্রত্ব-এর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন– 'কেন অভিযানে বের হয়না মুমিনদের প্রতিটি 'বড়' দল থেকে একটি 'ছোট' দল।

শায়খুলহিন্দ (রহ) একই উদ্দেশ্য প্রকাশ করেছেন এভাবে– প্রত্যেক দল থেকে একটি অংশ।

'অভিযান করেন', এর পরিবর্তে 'অভিযানে বের হয় না' বলা হয়েছে মর্মকে সুস্পষ্ট করার জন্য

(খ) منهم (মুমিনদের মধ্য হতে) ليتفقهوا (যেন থেকে যাওয়া দলটি জ্ঞান অর্জন করে) বক্তব্য স্পষ্ট করার উদ্দেশ্যে منهم এর এবং ليتفقهوا এর যামীরের مرجع উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

(গ) قاتلوا الذين يلونكم من الكفار (কাফিরদের থেকে যারা তোমাদের নিকটে থাকে তাদের বিরুদ্ধে লড়াই করো) এটি তারকীবানুগ তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, ঐ কাফিরদের বিরুদ্ধে লড়াই করো যারা তোমাদের আশপাশে রয়েছে- এটি পূর্ণ তারকীবানুগ নয়, তবে মূলানুগ তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা- লড়াই করে যাও তোমাদের নিকটের কাফিরদের সাথে।

এটি মূল তারকীব থেকে দূরবর্তী তরজমা। কারণ এখানে موصولও صلة এর প্রতিশব্দ আনা হয়নি।

(ঘ) إذا ما أنزلت سورة (যখনই নাযিল করা হয় কোন সূরা) ما অব্যয়টি অতিরিক্ত, তবে তা ظرف এর عموم বুঝিয়েছে; কিতাবের তরজমায় সেটা বিবেচনা করা হয়েছে।

(ঙ) أنزلت এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, নাযিল হয়। থানবী (রহ) করেছেন, নাযিল করা হয়।

أسئلة :

١ - اشرح مادةَ فقهٍ على حدِّ عِلْمِك ·

٢ - أعرب قوله : مِن كل فرقَةٍ ·

٣ - علامَ عُطف قوله : و ليجدوا فيكم غِلْظَةً ؟

٤ - عرف الواوَ الأولى و الثانيةَ في قوله : وَ ماتوا و هو كُفرون ·

٥ - فرقة এর সাথে 'বড়' এবং طائفة এর সাথে 'ছোট' বিশেষণ যুক্ত করার যুক্তি কী?

٦ - قاتلوا الذين يلونكم من الكفار শায়খায়ন এ আয়াতের যে তরজমা করেছেন তা পর্যালোচনা করো।

(٤) اَوَ لا يَرون اَنَّهم يُفتَنون في كلِّ عامٍ مرةً او مرتَين ثم لا يتوبون و لا هم يَذَّكَّرون * و إذا ما اُنزِلت سورةٌ نظَرَ بعضُهم الى بعضٍ، هل يَرٰكم من اَحَدٍ ثم انصَرَفوا، صرَفَ الله قلوبَهم

بِاَنَّهم قومٌ لا يفقهون * لَقَد جاءكم رَسولٌ من اَنْفُسِكم عزيز عليه ما عَنِتم حَرِيص عليكم بالمؤمنين رَءوف رحيم * فَإِنْ تَولَّوا فقل حسبي الله، لا اله اِلّا هو، عليه توكلتُ و هو رب العَرش العظيم *

بيان اللغة

يُفتَنون : قال الإمام الراغب : أصل الفَتْنِ إدخال الذهَب النار لِتظهَر جَودتُه من رَداءَته، و استُعمِل في إدخال الإنسان النارَ، قال تعالى : يومَ هم على النار يُفتنون، و يستعمل في إيقاع بَلِيَّةٍ و شدة، قال تعالى : إن خفتم أن يَفتِنَكم الذين كفَروا .

و يستعمَل في الخداع، قال تعالى : يا بني اٰدمَ لا يفتِنَنَّكم الشيطان .

و يستعمَل في التعذيب لِصَرْفِ الناس عن رَأيهم و دينهم، قال تعالى : إن الذين فَتَنوا المؤمنين و المؤمنٰت ثم لم يتوبوا .

و يستعمَل في الاختبار بالبَلايا و المصائب و الشدائد و غير ذلك، كما في هذه الآية .

و يستعمَل في التسلط علي القلب : تقول : فتنه المال

و الفتنة : الاختبار، و ما يُختَبَر به، قال تعالى : و حَسِبُوا أن لا تكونَ فِتنَةٌ، و قال : اِنما اَموالكم و اَولادكم فِتنَةٌ .

و الفتة : الفَساد و الإفساد، قال تعالى : قاتلوهم حتى لا تكون فتنة، و قال : الفتنة أشد من القتل .

و الفتنة : العذاب، قال تعالى : ذوقوا فِتنتَكم .

و الفتنة : الضلال، قال تعالى : و من يرد الله فتنَتَه فلن تملِك له من الله شيئًا .

بيان الإعراب

أولا يرون : الهمزة للتوبيخ لا للاستفهام . و مرة أو مرتين نائب عن

المفعول المطلق، بمعنى فَتنةً أو فَتْنَتَينِ (على وزن فَعْلَةٍ)، أو هو ظرف بمعنى وقتا أو وقتين ·

من أحد : حرف الجر زائد، و أحد مرفوع محلا، لأنه فاعل، وجملة هل يراكم من أحد مقول قول محذوف، أي : قائلين هل ...

ثم انصرفوا : عطف على : نظر بعضهم

صَرَفَ الله قلوبهم : جملة خبرية في مَحل نَصبٍ حال،

و يجوز أن تكون انشائية دعائية، فلا محل لها من الإعراب ·

ما عَنِتُم : ما موصولة أو مصدرية، و ما عنتم فاعلٌ عزيزٌ، و هو نعت ثان لـ: رسول ·

الترجمة

তারা কি দেখে না, যে তাদেরকে বিপর্যস্ত করা হয় প্রতি বছর একবার বা দু'বার। তারপরো তারা তাওবা করে না এবং উপদেশ গ্রহণ করে না।

আর যখনই নাযিল করা হয় কোন সূরা তখন তাকায় তাদের কতিপয় অন্য কতিপয়ের দিকে (আর বলে) কি তোমাদেরকে দেখছে কোন কেউ? তারপর তারা সরে পড়ে।

আসলে আল্লাহ তাদের হৃদয়কে (সত্য থেকে) সরিয়ে দিয়েছেন এ কারণে যে, তারা এমন এক সম্প্রদায় যারা বোধ শক্তি রাখে না।

অতি অবশ্যই এসেছেন তোমাদের কাছে এমন এক রাসূল যিনি তোমাদের সম্প্রদায়ভুক্ত, তোমাদের কষ্ট পাওয়া যার কাছে কষ্টকর, যিনি ব্যাকুল তোমাদের কল্যাণের প্রতি, যিনি মুমিনদের প্রতি সুকোমল এবং পরম দয়ালু।

অনন্তর যদি তারা (আপনার আনুগত্য থেকে) ফিরে যায় তাহলে আপনি বলে দিন, আমার জন্য যথেষ্ট আল্লাহ; তিনি ছাড়া নেই কোন ইলাহ। তাঁরই উপর ভরসা করেছি আমি, আর তিনি মহান আরশের অধিপতি।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أولا يرون أنهم يفتنون তারা কি দেখে না যে, তাদেরকে বিপর্যস্ত করা হয়)

এটি থানবী (রহ) এর অনুসরণে কৃত তরজমা, তবে তিনি

لازم معروف এর তরজমা করেছেন এভাবে, তাদের কি চোখে পড়ে না যে, তারা কোন না কোন বিপদে পড়তে থাকে – শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তারা কি দেখে না যে, তাদেরকে পরীক্ষা করা হয়।

আয়াতটি নাযিল হয়েছে মুনাফিকদের প্রসঙ্গে, সুতরাং এখানে পরীক্ষার পরিবর্তে বিপদে লিপ্ত করার অর্থটি অধিকতর সংগত। যখন সাধারণভাবে মুসলিমদেরকে সম্বোধন করা হয় তখন পরীক্ষার অর্থটি সঙ্গত হবে। এদিক থেকে থানবী (রহ) এর তরজমাটি অধিকতর উপযোগী।

পক্ষান্তরে يفتنون এর মাঝে অদৃশ্য সত্তার ক্রিয়াশীলতার যে পরোক্ষ ইঙ্গিত রয়েছে তা শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমায় পরিস্ফুট হয়েছে।

কিতাবের তরজমায় উভয় তরজমার উপযোগী দিকগুলোর সমন্বয় ঘটেছে।

(খ) قوم لا يفقهون (এমন সম্প্রদায় যারা উপলব্ধি করে না) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, এমন সম্প্রদায় যাদের বোধশক্তি নেই– এটি মূল তারকীবের অনুগামী নয়।

(গ) ما عنتم এটি لازم ফেয়েল। সুতরাং 'যা তোমাদেরকে বিপন্ন করে' এ তরজমা সঠিক নয়।

(ঘ) حريص عليكم (ব্যাকুল তোমাদের কল্যাণের প্রতি) এর তরজমা শুধু 'তোমাদের মঙ্গলকামী' করা ঠিক নয়। কারণ حريص শব্দটিতে প্রবল আগ্রহ ও ব্যাকুলতার অর্থ রয়েছে। কিতাবের তরজমায় উহ্য مضاف কে প্রকাশ করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح معاني الفتنة مع الامثلة ·

٢ – أعرب قوله : مرة أو مرتين ·

٣ – في أي محل من الإعراب وقعت كلمة أحد ؟

٤ – أعرب قوله : ما عنتم ·

٥ – يفتنون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – حريص عليكم (তোমাদের মঙ্গলকামী) এ তরজমার ক্রটি আলোচনা করো

(٥) الٓر ۚ تلك ءايٰت الكتٰبِ الحكيم * أكان للناس عَجَبًا اَنْ اوحَينا
الى رَجلٍ منهم اَنْ اَنذِر الناس وبَشِّرِ الذين ءامَنوا اَنَّ لهم قَدَمَ
صِدْقٍ عندَ ربهم، قال الكٰفرون إنَّ هذا لَسٰحر مبين * إنَّ ربكم
الله الذي خَلَقَ السمٰوٰت و الارضَ في سِتة اَيَّامٍ ثم استَوى
على العرشِ يُدبِّرُ الامرَ، ما من شَفيعٍ إلَّا من بَعد اذنه، ذلكم
الله ربكم فاعبُدوه، اَفَلا تَذكرون * اليه مَرجِعُكم جَميعًا،
وعدَ الله حَقًّا، إنه يَبْدَؤُ الخلقَ ثم يُعيده لِيَجزيَ الذين ءامَنوا
و عَملوا الصّٰلحٰت بالقِسْطِ، و الذين كفَروا لهم شراب من
حميمٍ و عذاب اليم بما كانوا يَكفُرون * هو الذي جعَل
الشمسَ ضياءً و القمرَ نُوراً و قدَّره منازلَ لِتَعلموا عدَدَ
السنين وَ الحسابَ، ما خلَق الله ذلك إلَّا بالحق، يُفَصِّل
الأيٰت لقومٍ يعلَمون * إن في اختلاف الَّيل وَ النهار و ما
خلَق الله في السمٰوٰت و الارض لأيٰت لقوم يتقون *

بيان اللغة

قَدمَ صِدقٍ : أصل القَدَمِ العضو المخصوص، و أطلِقت على السعي و السبق مجازًا، لِأنهما لا يحصُلان إلا بالقدَم، كما سُميت النعمةُ يدًا، لأنها تُعطىٰ باليَد، ثم أريد بالسعي و السَّبقِ الفضلُ و الشرفُ، لِأنهما لا يحصُلان إلا بِهما، فَجَرىٰ المجازُ في هذه الكلمَةِ مرتين .

و أصل الصدقِ في القَول، ثم استُعمل في كلِّ عمل طيبٍ، و يضاف إليه، فيقال : مَقعَدُ صِدْقٍ و مَدخلُ صِدقٍ و مخرجُ صدقٍ و قدمُ صدقٍ، و هذا إضافة الموصوف إلى الصفة، و الصِّدقُ مصدر أريد به اسمُ الفاعل، فمعنىٰ قَدَمُ صدقٍ فضلُ صادقٌ و شرف صادق، أي :

مُحَقَّق، و ترجمتها بالبنغالية - সুনিশ্চিত মর্যাদা

ضِياءً (أي : مُضيئَةً) و خُصَّت الشمسُ بالضِّياء، لأن الضياءَ يدل على شِدة اللَّمَعان . (وهو مصدرٌ ضاءَ من نصر، و هو هنا بمعنى اسم الفاعل) و الضياء النور مع شِدة اللمَعان .

نورًا : أي : مُنيرًا، (أطلِق النورُ على القمَر مبالغةً، كما يقال : زيد عدل) قال الطبَريُّ : المعنى : أضاءَ الشمسَ و أنار القمرَ .

قَدَّر : عيَّن، بَيَّن مقدارَ شيءٍ .

قَدَّر : قَسَم، قَضٰى

قدر اللّٰهُ الأمرَ عليه و له : أَلزَمَ

قَدَّرَه به : قاسَه به و جعَلَه على مِقداره .

بيان الإعراب

أ كان للناس عَجَبًا أن أوحَينا : همزة الاستفهام هنا للانكار المصدر المؤول أن أوحَينا اسم الناقص، و عجَبًا خبره، و للناس متعلق بمحذوف حال من عجَب، و هو في الأصل نعت تقدم على المنعوت، و عجبا مصدر بمعنى مُعجِب .

أن أنذر : أن حرف تفسيرٍ أو حرف مصدرٍ، و على الوجه الثاني المصدر المؤول في محل جر بحرف جر مَحذوفٍ، و هو متعلق بـ : أوحَينا، و المعنى : أ كان إيحاؤُنا إلى رجل منهم بإنذارِ الناس عجَبًا لهم ؟ لا عجَبَ في ذلك .

عند ربهم : الظرف متعلق بمحذوف نعت لـ : قدَمَ صدقٍ أي : بشر المؤمنين بِأنَّ قدَمَ صدقٍ حاصِلَةً عند ربهم ثابِتةً لهم .

إن ربكم الله الذي خلَق : لفظ الجلالة خبر إن، و الذي نعت للفظ الجلالة، و استوى معطوف على خلق

يدبر : الجملة في مَحل رفع خبر ثان لـ : إن، أو في مَحل نَصْبٍ حال من فاعلِ استَوى، أو هو مستأنفَة فلا محل لها من الإعراب .

ما من شَفيعٍ : ما حرف نفي لا عملَ لها، شَفيع مبتدأ مرفوع مَحلا، و إلَّا

أداة حصر، و مِن بَعد إذنه متعلقٌ بمحذوف، خبر، أي : إلّا شافعٌ من بَعد إذنه ·

وعدَ الله : مصدر منصوب بفعل دل عليه الكلام السابق : إليه مرجعكم · لأن هذا وعدٌ من الله بالبَعث ·

حقا : أي حَقٌ ذلك حَقًا ·

بالقسط : متعلق بـ : يجزي، أي بسبب قِسطهم و عَدلِهم · و يجوز أن يكون متعلقا بحال من فاعل يجزي أو من مفعوله، أي : يجزيهم متلبسا بالقسط، أي : عادلا، أو متلبسين بالقسط، أي :عادلين

جعل الشمس ضياء : أي : ذاتَ ضياءٍ · الشمسَ مفعول به أول، و ضياءً مفعول به ثان · إذا كان جعل بمعنى صيَّر، و إن كان بمعنى خلق، فضياءً حال، أي : مضيئةً ·

و قدره منازل : الضمير في محل نصب بنزع الخافض، أي : قدر له منازل، فالفعل متعد إلى مفعول به واحد بمعنى خلق، و يجوز أن يكون متعديا إلى مفعولين، بمعنى صيَّر، و منازل مفعول به ثان، أي : ذا منازل ·

الحساب : معطوف على عدد ·

الترجمة

আলিফ, লাম, রা। ঐগুলো প্রজ্ঞাপূর্ণ কিতাবের আয়াতসমূহ। লোকদের জন্য (এ বিষয়টি) কি আশ্চর্যজনক যে, আমি তাদের মধ্য হতে এক ব্যক্তির কাছে অহী পাঠিয়েছি এ মর্মে যে, আপনি সতর্ক করুন লোকদেরকে, এবং তাদেরকে সুসংবাদ দিন যারা ঈমান এনেছে যে, তাদের জন্য রয়েছে সুনিশ্চিত মর্যাদা তাদের প্রতিপালকের নিকট। (কিন্তু) কাফিররা বলতে লাগলো, এ তো অবশ্যই সুস্পষ্ট জাদুকর।

অবশ্যই তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহ, যিনি সৃষ্টি করেছেন আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী ছয় দিনে, তারপর তিনি সমাসীন হয়েছেন আরশের উপর। তিনি পরিচালনা করেন সকল বিষয়।

কোনই সুফারিশকারী নেই, তবে তার অনুমতির পরে। সেই আল্লাহ (হলেন) তোমাদের প্রতিপালক; সুতরাং তোমরা তাঁর ইবাবদত

করো। তবু কি তোমরা উপলব্ধি করবে না! তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন তোমাদের সকলের। (আল্লাহ ওয়াদা করেছেন) আল্লাহর ওয়াদা। অবশ্যই সুসাব্যস্ত হয়েছে আল্লাহর ওয়াদা।

নিঃসন্দেহে তিনিই সৃষ্টিকে প্রথম অস্তিত্ব দান করেন; তারপর তিনিই তার পুনরাবর্তন ঘটাবেন, যেন যারা ঈমান এনেছে এবং নেক আমল করেছে তাদেরকে তিনি প্রতিদান দেন ইনছাফের সঙ্গে।

আর যারা কুফুরি করেছে তাদের জন্য রয়েছে অত্যুষ্ণ পানি এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি, তাদের কুফুরি করতে থাকার কারণে।

তিনিই ঐ সত্তা যিনি করেছেন সূর্যকে তেজস্কর এবং চন্দ্রকে জ্যোতির্ময়। এবং নির্ধারণ করেছেন চন্দ্রের জন্য বিভিন্ন মানযিল, যাতে তোমরা জানতে পারো বর্ষ গণনা এবং (সময়ের) হিসাব। আল্লাহ্ সেগুলোকে যথার্থই সৃষ্টি করেছেন। তিনি বিশদভাবে বর্ণনা করেন এ সকল নিদর্শন এমন সম্প্রদায়ের জন্য যারা জ্ঞান রাখে।

রাত ও দিনের বিবর্তনে এবং আল্লাহ যা কিছু সৃষ্টি করেছেন আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীতে, অবশ্যই (তাতে) নিদর্শনাবলী রয়েছে এমন সম্প্রদায়ের জন্য যারা ভয় গ্রহণ করে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تلك آيت الكتب الحكيم (ঐগুলো প্রজ্ঞাপূর্ণ কিতাবের আয়াতসমূহ) حكيم এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, সুসংহত। তিনি এটিকে محكم অর্থে গ্রহণ করেছেন। আর থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, প্রজ্ঞাপূর্ণ। উভয় তরজমারই অবকাশ রয়েছে। কেউ কেউ তরজমা করেছেন 'জ্ঞানগর্ভ'।

علم ও حكمت আলাদা দু'টি শব্দ এবং দুটির অর্থগত স্বাতন্ত্র্যও রয়েছে। সুতরাং علم এর ক্ষেত্রে জ্ঞান এবং حكمة এর ক্ষেত্রে প্রজ্ঞা ব্যবহার করাই সঙ্গত।

(খ) أكان للناس عجبا (লোকদের জন্য [এ বিষয়টি] কি আশ্চর্যজনক যে,)

এ তরজমা মূলের তারকীব অনুগামী। শুধু 'এ বিষয়টি' যোগ করা হয়েছে সাবলীলতার জন্য, যোগ না করলে তেমন ক্ষতি নেই।

'মানুষের কাছে কি আশ্চর্য লাগছে'– এটি মূলানুগ তরজমা নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

সরল তরজমা এমন হতে পারে, 'মানুষের জন্য কি আশ্চর্যের বিষয় যে, ...'

(গ) أن أنذر 'এমর্মে যে আপনি সতর্ক করুন', এটি أن التفسيرية এর তরজমা। 'এ মর্মে' বাদ দিয়ে শুধু 'যে,' বলা যায়।

'যেন তিনি মানুষকে সতর্ক করেন' এ তরজমা সঠিক নয়, কারণ এখানে لام التعليل নেই। তদুপরি এখানে حاضر এর পরিবর্তে غائب এর ছীগা ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঘ) قدم صدق (সুনিশ্চিত মর্যাদা) এর তরজমা 'উচ্চ মর্যাদা/ সত্য মর্যাদা' হতে পারে।

(ঙ) استوى এর তরজমা, সমাসীন/অধিষ্ঠিত হয়েছেন, দুটোই হতে পারে। 'আসন গ্রহণ করেছেন' হতে পারে না, কারণ এটি মানুষের ক্ষেত্রে বহুল ব্যবহৃত। শায়খায়ন লিখেছেন- پھر قائم ہوا عرش پر (তারপর স্থিত হয়েছেন আরসের উপর)

(চ) يدبر الأمر (তিনি পরিচালনা করেন সকল বিষয়) থানবী (রহ) الأمر এর ال কে সামগ্রিকতার অর্থে গ্রহণ করে লিখেছেন, সকল কাজ/বিষয়।

يدبر এর তরজমা 'তদারক করেন' করা ঠিক নয়, কেননা তদারক শব্দটি পূর্ণ নিয়ন্ত্রণ বোঝায় না, অথচ تدبير শব্দে পূর্ণ নিয়ন্ত্রণের অর্থ রয়েছে।

(ছ) ما من شفيع إلا من بعد إذنه (কোন সুফারিশকারী নেই, তবে তার অনুমতির পরে) এখানে من অব্যয়টি নফী-এর عموم কে তাকীদ করেছে, তাই 'কোন' এর পরিবর্তে 'কোনও' ব্যবহার করা সঙ্গত।

থানবী (রহ) বাক্যটির মূল তরজমা করেছেন এভাবে-
কোন সুফারিশকারী নেই।
তবে তিনি বন্ধনীতে যোগ করেছেন- 'কোন সুফারিশকারী সুফারিশ করতে পারে না।'
শায়খুলহিন্দ (রহ) এই বন্ধনীকেই মূল তরজমারূপে এনেছেন।
ما من شفيع অংশটুকুতে থানবী (রহ) এর তরজমা মূলানুগ।
إلا من بعد إذنه এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, কিন্তু তার অনুমতির পরে।
থানবী (রহ) লিখেছেন, তার অনুমতি ছাড়া।

এখানে শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা মূলানুগ।
কিতাবে উভয় তরজমার মূলানুগ অংশটুকু গ্রহণ করা হয়েছে।

(জ) إليه مرجعكم جميعا (তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন তোমাদের সকলের) এটি পূর্ণ মূলানুগ তরজমা।
শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা– তাঁরই দিকে তোমাদের সকলকে ফিরে যেতে হবে।
থানবী (রহ) এর তরজমা– তোমাদের সকলকে আল্লাহরই কাছে যেতে হবে।
এখানে শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা মূলের অধিকতর নিকটবর্তী।
যেহেতু এখানে مرجع এর উল্লেখ ছাড়াই যামীর সুস্পষ্ট, সেহেতু শায়খুলহিন্দ مرجع উল্লেখ করেন নি।

(ঝ) حميم (অত্যুষ্ণ) এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন 'ফুটন্ত' – শব্দটিতে ফুটন্ততার অর্থ নেই, উষ্ণতার তীব্রতার অর্থ রয়েছে। ইমাম রাগিব বলেন, الحميم الماء الشديدُ الحرارةِ

(ঞ) وعد الله حقا ([আল্লাহ ওয়াদা করেছেন] আল্লাহর ওয়াদা। অবশ্যই সুসাব্যস্ত হয়েছে আল্লাহর ওয়াদা) এর সরল তরজমা, হলো– আল্লাহর ওয়াদা চিরসত্য।
তবে মূলত এখানে বাক্য দু'টি, কিতাবে মূল তারকীব অনুসরণ করে তরজমা করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح قوله : قَدَمَ صدقٍ .
٢ – أعرب قوله : أن أنذر .
٣ – أعرب قوله : إليه مرجعكم جميعا
٤ – بم يتعلق قوله : بالقسط، و ما معنى الباء ؟
٥ – استوى على العرش (আরশে আসন গ্রহণ করেছেন) এ তরজমার ত্রুটি আলোচনা করো।
٦ – ما من شفيع إلا من بعد إذنه এর তরজমা বিশদভাবে পর্যালোচনা করো

(٦) وَ إذا مسَّ الانسانَ الضُّرُّ دعانا لِجَنْبِه او قاعدًا أو قائمًا ، فَلَما كشَفنا عنه ضُرَّه مَرَّ كان لم يدعُنا الى ضُرٍّ مسه،

كذلك زُين لِلمسرفين ما كانوا يَعمَلون * وَ لَقد اهلَكْنا
القُرونَ من قبلِكم لَمَّا ظلَموا و جاءتهم رسُلُهم بالبيّنٰت وما
كانوا لِيؤمنوا، كذلك نَجزي القومَ المجرمين * ثم جعلنٰكم
خَلٰئِف في الأرض مِن بَعدهم لِننظُر كيف تعمَلون * و إذا
تُتلىٰ عليهم آياتُنا بينٰتٍ، قال الذين لا يرجون لقاءَنا ائتِ
بِقرآن غيرِ هذا او بَدِّلْه، قل ما يكون لي أَن أُبدله مِن تلقاىٔ
نَفسي، إِن اتبع إلاّ ما يُوحىٰ إليَّ، إني أَخاف إن عصيتُ
ربي عذابَ يومٍ عظيم * قل لو شاء الله ما تلوتُه عليكم و لا
أدرٰكم به، فَقَد لبِثتُ فيكم عمُرًا من قبله، أَفلا تعقِلون *

بيان اللغة

كشَفَ شيئا/ عن شيءٍ (ض، كَشْفًا) رفَع عنه ما يستُره و يُغطّيه
كشفَ الأمرَ/ الحقيقةَ : أظهره
كشفَ الله عنه : أزالَه
دَرىٰ شيئًا/بشيءٍ (ض، دِراية) : علِمه و عرَفه
قال الإمام الراغب : الدراية علمُ شيءٍ بضَرْبٍ من الحيلَة
أَدْراه به : أعلَمه إياه

بيان الإعراب

لجنبه : الجار و المجرور في موضع الحال، أي : دعانا مُضطَجِعا، و قاعدا معطوف على معنى الحال هذا .

كأن لم يدعنا إلى ضرٍّ : أي كأنه لم يدعنا إلى كشفِ ضُرٍّ، و الجملة حال من فاعلِ مَرَّ .

كذلك زين : نائب عن المفعول المطلق، أي : زين لهم عملهم تَزْييـنًا كذلك أو مثلَ ذلك التزيينِ، و الإشارة بـ : ذلك إلى تَزيينِ الإعراض عن الله، الذي يدُلّ عليه الكلام السابق .

لما ظلموا : و لما ظرف مجرد من معنى الشرط، متعلق بـ: أهلكنا

و جاءتهم رسلهم : معطوف على : ظلموا، أو هو حال بتقدير قَدْ .

كذلك نجزي : أي : نجزي جزاءً كذلك أو مِثلَ ذلك الجزاء، و هو الإهلاك .

في الأرض : نعت لخلائفَ، أي : حاكمين في الأرض، و من بعدهم يتعلق بـ : جعلنا .

غيرِ هذا : نعت لـ : قران

ما يكون لي أن أبدلَه : فعل تام، و فاعله و متعلقه، أي : ما ينبغي لي تبديلُه .

عذاب يوم عظيم : مفعول به لـ : أخاف، و إن عصيت معترضة لا محل لها في الإعراب، و جواب الشرط محذوف بالقرينة، أي : فإني أخاف عذاب الله .

و لاأدراكم به : (و لا أَعْلَمَكُم اللّٰهُ به) عطف على جملة جواب الشرط .

الترجمة

আর যখন স্পর্শ করে (কোন কোন) মানুষকে কোন দুর্দশা তখন সে আমাকে ডাকে কাত হয়ে, কিংবা বসে, কিংবা দাঁড়িয়ে, অনন্তর যখন আমি তুলে নেই তার থেকে তার দুর্দশা তখন সে (এমনভাবে) পার হয়ে যায় যেন সে আমাকে ডাকেই নি কোন দুর্দশা (দূর করা)-এর দিকে যা তাকে স্পর্শ করেছিলো। এভাবেই সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্য শোভিত করা হয়েছে তাদের অব্যাহত কৃত কর্ম।

আর অতি অবশ্যই আমি ধ্বংস করেছি বিভিন্ন যুগের মানুষকে তোমাদের পূর্বে যখন তারা যুলুম করেছিল, এমন অবস্থায় যে, তাদের কাছে এসেছিলো তাদের রাসূল সুস্পষ্ট প্রমাণাদিসহ, কিন্তু তারা ঈমান আনার (যোগ্য) ছিলো না, এভাবেই আমি প্রতিদান দেই অপরাধী সম্প্রদায়কে।

তারপর আমি তোমাদেরকে স্থলবর্তী করেছি পৃথিবীতে তাদের পরে, দেখার জন্য (যে,) তোমরা কেমন কর্ম করো।

আর যখন তেলাওয়াত করা হয় তাদের কাছে আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ তখন যারা আমার সাক্ষাৎ আশা করে না তারা বলে, আপনি আনুন কোন কোরআন এটি ছাড়া, অথবা পরিবর্তন করুন একে।

আপনি বলে দিন, আমার জন্য সম্ভব নয় তা পরিবর্তন করা, আমার নিজের পক্ষ হতে। আমি তো অনুসরণ করি শুধু যা অহী পাঠানো হয় আমার কাছে, আমি তো আশংকা করি এক মহাদিবসের শাস্তির, যদি আমি আমার প্রতিপালকের অবাধ্যতা করি।

আপনি বলুন, যদি ইচ্ছা করতেন আল্লাহ তাহলে আমি তা তেলাওয়াত করতাম না তোমাদের কাছে, আর তিনিও তোমাদেরকে অবহিত করতেন না এ বিষয়ে।

আর আমি তো তোমাদের মাঝে একটি 'বয়সকাল' অবস্থান করেছি এর পূর্বে; তবু কি তোমরা চিন্তা করতে পারো না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و إذا مس الإنسان الضر (আর যখন স্পর্শ করে কোন কোন মানুষকে কোন দুর্দশা) الضر এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন تكليف বা কষ্ট। কেউ কেউ লিখেছেন, দুঃখ-দৈন্য। প্রকৃতপক্ষে الضر হচ্ছে আরো ব্যাপক শব্দ। তাই কিতাবে এর প্রতিশব্দরূপে 'দুর্দশা' এই ব্যাপক শব্দটি ব্যবহার করা হয়েছে।

(কোন কোন) মানুষকে – এ বন্ধনী গ্রহণ করা হয়েছে থানবী (রহ) এর তরজমা থেকে। তিনি বলেন, সকলের মানুষের অবস্থা যেহেতু এরূপ নয়, সেহেতু ال অব্যয়টি جنس এর হলেও কতিপয় সদস্য হচ্ছে উদ্দেশ্য।

الضر এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন تكليف আর থানবী (রহ) করেছেন, كوى تكليف (কোন কষ্ট) তিনি ال অব্যয়কে সুনির্দিষ্টতার অর্থে গ্রহণ করেননি।

(খ) لجنبه এর তরজমা 'শুয়ে' করা ঠিক নয়। কারণ قاعدا ও قائما এর মত مضطجعا বলা হয়নি। ভিন্ন শৈলী গ্রহণের উদ্দেশ্য এ অবস্থাটির কাতরতা প্রকাশ করা। তাই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন پڑا هوا (পড়া অবস্থায়)

(গ) فلما كشفنا عنه ضره বাংলায় এখানে স্বাভাবিক শব্দ হলো দূর করা। কিন্তু كشفنا এর যথার্থ প্রতিশব্দ 'দূর করা' নয়। তাই শায়খায়ন دور كرنا ব্যবহার করেন নি। থানবী (রহঃ) ব্যবহার করেছেন هٹانا (সরানো) আর শায়খুলহিন্দ (রহ) ব্যবহার করেছেন كهول دينا (খুলে দেয়া) এ দুটোই كشفنا এর

নিকটবর্তী প্রতিশব্দ। কিতাবে 'তুলে নেই' ব্যবহার করা হয়েছে।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'তার সকাতর প্রার্থনার পর যখন আমি তার কষ্ট সরিয়ে দেই। তিনি বলেন, ف অব্যয়টি এ অর্থ প্রকাশ করছে।

(ঘ) مر (পার হয়ে যায়) শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা, 'চলে যায়'- এ দুটো হচ্ছে শাব্দিক তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, তখন সে পূর্বাবস্থায় ফিরে আসে- এটি ভাবতরজমা।

'তখন সে এমন পথ অবলম্বন করে'- এ তরজমা ঠিক নয়। কারণ مرور শব্দের সাথে এর কোন সম্পর্ক নেই।

(ঙ) ائت بقران غير هذا (আনো কোন কোরআন এটি ছাড়া) শায়খুলহিন্দ (রহ) এ তরজমা করেছেন।

থানবী (রহ) এর তরজমা- এটি ছাড়া অন্য কোন কোরআন আনুন।

'অন্য' শব্দটির ব্যবহার দ্বারা তরজমা সাবলীল হয় বটে, তবে আয়াতে এর কোন প্রতিশব্দ নেই।

(চ) من تلقاء نفسي নিজ হতে/নিজের পক্ষ হতে/আমার নিজের পক্ষ হতে- এই তিন তরজমাই বিভিন্নজন করেছেন, তবে এখানে তৃতীয় তরজমাটি অধিকতর শব্দানুগ।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة درايةٍ

٢ - أعرب قوله : لجنبه

٣ - ما هو جواب لما في قوله : فلما كشفنا ؟

٤ - حول جملة "و ما كانوا ليؤمنوا" إلى أصل العبارة

٥ - الضر এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - لجنبه এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) هو الذي يُسَيِّرُكم في البر و البحرِ، حتى إذا كنتم في الفُلكِ، و جرينَ بهم بريح طيبةٍ و فرحوا بِها جاءتها ريح عاصِف و جاءهم الموجُ من كل مكانٍ و ظنوا أنهم أُحيط بهم، دَعَوُا الله

مـخلصين له الدينَ، لَئِنْ انجيتَنا من هذه لَنكونَنَّ من الشّكرين * فَلما انْجٰهم اِذا هم يبغُون في الأرض بغير الحق، يٰايها الناس اِنما بغيُكم على انفسكم متاعَ الحيوة الدنيا ثم الينا مرجِعكم فننَبِّئكم بما كنتم تعملون *

بيان اللغة

يسيركم : (يُوَفِّقُكم لِلسير فيهما)

سار (سَيْرًا و مَسيرًا و مسيرةً، ض) مشى، ذهب في الليل

سَيَّره : جعلَه يسير (চালিত করেছে)

عاصِفٌ : عَصفَتِ الريحُ (ض، عَصْفًا) اشتد هبوبُ الريح، فهي عاصف و عاصِفَةٌ، و الجمع عَواصِفُ . ريح عاصف : ريح شديدة،

يوم عاصف : (ذو ريحٍ عاصفٍ) ঝড়ো দিন

بيان الإعراب

حتى إذا كنتم في الفلك و جرين بهم بريح طيبة : حتى حرف ابتداء . و نون جرين في محل رفع فاعلٌ يعود لِلفُلكِ، و الفلك مفرَدٌ على وزن قُفلٍ، و جمعٌ على وزن أُسْدٍ .

بهم متعلق بـ : جرين، و فيه التفات من الخطاب إلى الغيبة

و بريح يتعلق بـ : جرين أيضا . و الباء الأولى للتعدية و الثانية للسببية، فجاز تعليقُهما بِعامل واحدٍ .

و يجوز أن تكون الباء الثانية للمُلابَسة أو للاستعانة، فهي حال، أي : متلبسة بريح، أو مدفوعةً بريح .

كنتم و جرين و فرحوا : شروط بواوات العطف، و جاءت و جاء و ظنوا أجوبة الشرط بواوات العطف .

و جملة دعوا الله بدَلُ اشتمالٍ من ظنوا، لأن دعاءَهم بسبب ظنهم الهلاكَ .

أو هي استئنافية، كأن سائلا سأل : فماذا صنَعوا، فأُجيب :

دعوا الله مخلصين له الدين ٠

بغير الحق : أي : متلبسين بغير الحق ٠

على أنفسكم : أي : لازم على أنفسكم، خبر، و بغيكم مبتدأ ٠

متاعَ الحيوة الدنيا : مفعول مطلق لفعل محذوف، أي : تَتمتَّعون متاعَ الحيوة الدنيا، أو مفعول به لفعل محذوف، أي : اِبتَغُوا ٠

الترجمة

তিনিই ঐ সত্তা যিনি তোমাদেরকে ভ্রমণ করান স্থলে ও জলে। এমন কি যখন তোমরা থাকো জলযানসমূহে, আর সেগুলো আরোহীদেরকে নিয়ে বয়ে যায় অনুকূল বাতাসে, আর যাত্রীরা তাতে প্রফুল্ল হয়, তখন ঐ জলযানের উপর এসে পড়ে প্রবল বাতাস এবং যাত্রীদের উপর এসে পড়ে ঢেউ সকল দিক থেকে এবং তারা ভাবে যে, তারা, তাদেরকে ঘিরে ধরা হয়েছে। (তাই) তারা ডাকতে থাকে আল্লাহকে, আন্তরিক আনুগত্যের সাথে, (আর বলে) যদি আপনি আমাদেরকে এ (বিপদ) থেকে নাজাত দেন তাহলে অতি অবশ্যই আমরা শোকরকারীদের অন্তর্ভুক্ত হবো। অনন্তর যখন তিনি তাদেরকে নাজাত দান করেন, মুহূর্তে তারা স্বেচ্ছাচার শুরু করে ভূমিতে অন্যায়ভাবে।

হে লোকসকল, তোমাদের স্বেচ্ছাচার বর্তাবে তোমাদেরই উপর (সুতরাং ভোগ করে নাও) পার্থিব জীবনের সুফল। তারপর আমারই দিকে হবে তোমাদের প্রত্যাবর্তন, তখন অবহিত করবো আমি তোমাদেরকে তোমাদের অব্যাহত কৃতকর্ম সম্পর্কে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) বাংলায় 'জলেস্থলে' যুগল শব্দের মত ব্যবহৃত হয় তাই في البحر এর তরজমা জলে করা হয়েছে। আর কোরআনী তারতীব অনুসরণের জন্য জলেস্থলের পরিবর্তে স্থলে ও জলে ব্যবহার করা হয়েছে।

(খ) إذا كنتم في الفلك (যখন তোমরা থাকো জলযানসমূহে) كنتم কে ركبتم এর সমার্থক فعل تام ধরে 'যখন তোমরা নৌকায় আরোহণ করো' তরজমা করা সঠিক নয়। কারণ ركب এর পরে في অব্যয় আসে না।

এ জন্য শায়খুলহিন্দ (রহ) كنتم কে جلستم এর সমার্থক ধরে তরজমা করেছেন, যখন তোমরা নৌকায় বসো।
আর থানবী (রহ) فعل ناقص রূপে তরজমা করেছেন। কিতাবে এটাকেই অনুসরণ করা হয়েছে।
ভাবতরজমা হিসাবে অবশ্য 'যখন তোমরা নৌকায় আরোহণ করো' বলা যায়।

(গ) جرين بهم (যাত্রীদেরকে নিয়ে বয়ে যায়) বয়ে যায় মানে, ভেসে চলে। 'যাত্রীদেরকে বয়ে নিয়ে যায়' – এ তরজমাও হতে পারে। অর্থাৎ বহন করে নেয়, এটি ভাবতরজমা।

(ঘ) ريح طيبة এর শাব্দিক অর্থ উত্তম বাতাস, ভাবার্থ হচ্ছে অনুকূল বাতাস।

(ঙ) جاءتها ريح عاصف (ঐ জলযানের উপর এসে পড়ে প্রবল বাতাস) কিতাবে এ অংশের এবং পরবর্তী অংশের শাব্দিক ও তারকীবানুগ তরজমা করা হয়েছে। ভাবতরজমা এ রকম হতে পারে– প্রবল বাতাসে / বাতাসের ঝাপটায় জলযান আক্রান্ত হয় এবং চারদিক থেকে ঢেউ তাদের উপর আছড়ে পড়ে এবং তারা বুঝতে পারে যে, তারা বিপদবেষ্টিত হয়ে পড়েছে।

(চ) انما بغيكم على أنفسكم (তোমাদের স্বেচ্ছাচার তোমাদেরই উপর হবে/বর্তাবে)
বিকল্প তরজমা– তোমাদের স্বেচ্ছাচার তোমাদেরই উপর বিপর্যয় ডেকে আনবে।

أسئلة :

١ – اشرح عَصَفَ.
٢ – بم تتعلق الباءان في قوله : و جرينَ بهم بريح طيبَةٍ ؟
٣ – في أي محل من الإعراب وقعت جملة لنكونن من الشكرين ؟
٤ – أعرب قوله : متاعَ الحياة الدنيا .
٥ – في البر و البحر এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – إنما بغيكم على أنفسكم এর শব্দানুগ তরজমা এবং সাবলীল তরজমা করো

(٨) و يومَ نحشُرهم جميعًا ثم نقول لِلذين أَشْرَكوا مكانَكم انتم

و شركاؤكم، فَزَيَّلنا بينَهم و قال شركاؤهم ما كنتم إيَّانا تعبُدون * فكفى بالله شهيدًا بينَنا و بينَكم أنْ كنا عن عبادَتِكم لغٰفلين * هنالك تَبلوا كلُّ نفسٍ ما اسلَفَتْ و رُدوا إلى الله مولٰهم الحقِّ و ضَل عنهم ما كانوا يفتَرون * قل مَنْ يرزُقكم من السماء و الارض أمَّن يملِك السمعَ و الابصار و مَن يُخرج الحيَّ من الميت و يُخرج الميتَ من الحي و من يُدبر الامرَ، فسيقولون الله، فقل أفلا تتقون * فذٰلكم الله ربكم الحقُّ، فماذا بعدَ الحق إلا الضلٰلُ، فَأنّٰى تُصرَفون * كذلك حَقَّت كَلِمَتُ ربك على الذين فَسَقوا أنهم لا يؤمنون * قل هل مِنْ شُركائِكم مَن يبدَؤا الخلقَ ثم يُعيده، قل الله يَبدؤا الخلقَ ثم يُعيده فانى تؤفَكون *

بيان اللغة

فزيلنا : (أي : فَرَّقنا و ميَّزنا بينَهم و بينَ المؤمنين)
زَيَّله : فَرَّقه، تَزَيَّل القومُ و تَزايَلوا : تفرَّقوا .
بلاه (ن، بَلْوًا، بَلاءً) : اختَبَره . ابتلاه : اختبَره، جرَّبه .
البَلاء : المحنَة تنزل بالمرءِ ليُختَبَرَ بها . البلاء : الغم و الحزن
والبلاء : الجَهْدُ الشديد في الأمر .
هنالك تبلو كل نفس ما أسلفت : (أي تعلم ما قدمت من خير أو شرٍّ)
سَلف (ن، سُلوفا و سَلَفا) تقدم و سبق
مضى و انقضى، فهو سالف، و الجمع سُلَّف، و هي سالفة، و الجمع سَوالِفُ . تقول : سَلف له عمل صالح : تقدم و سبق .
أسلف : قَدَّمَ .
سَلَفَ القومَ : تقدمهم .
سلفه و أسلفه مالا : أقرضه .

بيــان الإعراب

مكانكم : اسم فعل أمر منقول عن الظرف، معناه : اُثبُتوا و لا تَتَحركوا، أو هو مفعول به لفعل محذوف، أي :اِلزَموا مكانَكم . أو ظرف لفعل محذوف، أي اُثبُتوا مكانَكم . و هذه كلمة وعيدٍ

و هنا يحسُن بنا أن نعرِض بعضَ ما يتعلق باسماء الأفعال، فنقول :

أسماء الأفعال تَدُلُّ على معنَى الفعلِ و زمَنِه، و بهذا تُشبِه الفعلَ .

و هي لا تكون على وزن الفعل و لا تقبَل النواصب و الجوازمَ، و بهذا تُشبه الاسمَ . و مِن هنا سُميت أسماءَ الأفعال .

و هي ثلاثة أقسام : مُرتَجِلة و مَنقولة، و قياسية، فالمرتجلة ما وُضعت من أول الأمر لهذا الغرَض، و هي ثلاثة أقسام : اسم فعلٍ ماضٍ . مثل : هيهات، أي : بعُد، و اسم فعلٍ مضارعٍ، مثل : أفٍّ، أي : اتضَجَّر، و اسم فعلِ أمرٍ، مثل : أمين، أي : استَجِبْ .

و المنقولة ما وُضعت لغير اسم الفعل، ثم نُقلت إليه، و النقل يكون :

عن جار و مَجرور، مثل إليك عني : أي : اُبْعُد .

و عن ظرف، مثل : دونك الكتاب، أي : خذه

و عن مصدر، مثل رويد أخاك، أي : أمهِله .

و القياسية ما تُؤخذ من الفعل الثلاثي التامِّ المتصرِّف على وزن فَعالِ، مثل : تَراك : أي اُترك، و نَزال أي : اِنزل

و إن كنا : هي مخففة من المثقلة، و هي مهملة، و اسمه محذوف، أي : إننا، و جملة كنا خبره

لغافلين : اللام هي الفارقة التي تُميز إنِ المخففةَ من غيرها .

هنالك : هنا اسم اشارة في محل نصب على الظرفية المكانية أو الزمانية، متعلق بـ : تبلو، و اللام للبعد، و الكاف للخطاب .

مولاهم : بدل من لفظ الجلالة، مجرور بالكسرة المقدرة لِتَعذُّرِ ظهورها

على الالف، و الحقُّ نعت لـ : مولاهم

فذلكم : الفاء استئنافية، و الثانية و الثالثة عاطفتان ٠

ماذا بعد الحق إلا الضلال : يجوز أن يكون ماذا اسما واحدا تركب من : ما و ذا، و هو اسم استفهام مبتدأ، و بعد الحق متعلق بخبر المبتدأ المحذوف ٠

و إلا أداة حصر، و الضلال بدل من المبتدأ، تَبِعه في الرفع ٠

و يجوز أن تكون ما اسم استفهام مبتدأ، و ذا خبر ما، و بعد الحق متعلق بمحذوف حال، أي : أيُّ شيءٍ ذا كائنًا بعدَ الحق ؟

و الضلال بدل من ذا، و الاستفهام بمعنى النفي ٠

كذلك حَقَّت كلمَةُ ربك : أي : حقت كلمة ربك حَقًّا كذلك أو مثلَ ذلك، و الإشارة إلى صرفهم عن الإيمان ٠

أنهم لا يؤمنون : المصدر المؤول بدل من : كلمةُ ربك، أي : حكم ربك

و يجوز أن يكون المصدر في محل نصب بنزع الخافض، إذا دلت كلمة ربك على عذاب الله، أي : حَقَّ عذاب الله بسبَبِ عدم إيمانهم ٠

الترجمة

আর (ঐ দিনকে স্মরণ করুন) যখন আমি একত্র করবো তাদেরকে, সকলকে, তারপর বলবো তাদেরকে যারা শিরক করেছে, স্থির থাকো তোমরা এবং তোমাদের (তথাকথিত) শরীকরা। অনন্তর বিচ্ছিন্নতা আনবো তাদের মাঝে, আর তাদের শরীকরা বলবে, তোমরা তো আমাদের উপাসনা করতেই না। এখন আল্লাহ্ যথেষ্ট আমাদের মাঝে এবং তোমাদের মাঝে সাক্ষী হিসাবে। আমরা তো তোমাদের উপাসনা সম্পর্কে বেখবরই ছিলাম।

সে সময় প্রত্যেক ব্যক্তি যাচাই করে নেবে যে আমল সে পূর্বে করেছে; আর তাদেরকে ফেরানো হবে তাদের প্রকৃত অভিভাবক আল্লাহর দিকে। আর হারিয়ে যাবে তাদের থেকে (মিথ্যা উপাস্য) যা তারা গড়ে নিয়েছিলো।

আপনি বলুন, কে রিযিক দান করেন তোমাদেরকে আসমান থেকে এবং যমীন থেকে। অথবা কে শ্রবণশক্তি ও দৃষ্টিশক্তির মালিক এবং

কে জীবিতকে মৃত থেকে বের করে এবং মৃতকে জীবিত থেকে বের করেন? এবং কে সর্ববিষয় পরিচালনা করেন? তো তারা অবশ্যই বলবে, আল্লাহ। সুতরাং আপনি বলুন, তবু কি তোমরা ভয় করবে না? তো ইনিই হলেন আল্লাহ, তোমাদের প্রকৃত প্রতিপালক। সুতরাং কী রয়েছে সত্য প্রকাশের পর ভ্রষ্টতা ছাড়া! সুতরাং কী ভাবে ফেরানো হচ্ছে তোমাদেরকে (সত্য থেকে)?

ওভাবেই আপনার প্রতিপালকের ফায়ছালা সুসাব্যস্ত হয়েছে তাদের উপর যারা অবাধ্যতা করেছে যে, তারা ঈমান আনবে না।

আপনি বলুন, তোমাদের (তথাকথিত) শরীকদের মাঝে আছে কি এমন কেউ যে সৃষ্টিকে প্রথম অস্তিত্বে আনয়ন করে, তারপর তার পুনরার্বতন ঘটায় ?

আপনি বলুন, আল্লাহই সৃষ্টিকে প্রথম অস্তিত্ব দান করেন, তারপর তার পুনরাবর্তন ঘটান। সুতরাং কীভাবে তোমাদেরকে (সত্য থেকে) সরিয়ে রাখা হচ্ছে ?

ملاحظات حول الترجمة

(ক) مكانكم (স্থির থাকো) এটি হলো ইসমুল ফেয়েলভিত্তিক তরজমা। শায়খায়ন যারফভিত্তিক তরজমা করেছেন এভাবে– তোমরা নিজ নিজ স্থানে দাঁড়িয়ে থাকো।

(খ) شركاؤكم (তোমাদের [তথাকথিত] শরীকরা) এ বন্ধনী যোগ করে, থানবী (রহ) বলেন, এ দ্বারা এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, এই ইযাফত হাকীকতের ভিত্তিতে নয়, বরং তাদের ভ্রান্ত আকীদার ভিত্তিতে।

(গ) ما كنتم إيانا تعبدون (তোমরা তো আমাদের ইবাদত করতেই না) এখানে مفعول به কে অগ্রবর্তী করার কারণে এ তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) إن كنا عن عبادتكم لغفلين (আমরা তো তোমাদের উপাসনা সম্পর্কে বেখবরই ছিলাম) এটা তারকীবানুগ ও শব্দানুগ তরজমা। প্রথম তাকীদটির জন্য 'তো' এবং দ্বিতীয় তাকীদটির জন্য 'ই' আনা হয়েছে।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, আমাদের, তোমাদের ইবাদতের খবরও ছিলো না। এটি তারকীবানুগ তরজমা নয়, ভাবতরজমা।

(ঙ) بعد الحق (সত্য প্রকাশের পর) এখানে উহ্য مضاف ও مضاف إليه কে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

(চ) و كذلك حقت كلمة ربك على الذين فسقوا أنهم لا يؤمنون (আর ও ভাবেই আপনার প্রতিপালকের ফায়ছালা সুসাব্যস্ত হয়েছে তাদের উপর যারা অবাধ্যতা করেছে যে, তারা ঈমান আনবে না।) আমাদের তরজমার সূত্র এই যে, كلمة অর্থ حكم আর أنهم হচ্ছে তা থেকে বদল।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন– ওভাবেই আপনার প্রতিপালকের আযাব অবধারিত হয়ে গেছে ফাসিকদের উপর, কারণ তারা ঈমান আনবে না।

এ তরজমার ভিত্তি এই যে, كلمة অর্থ عذاب আর سببية এর অর্থ দানকারী بِ অব্যয়টি أنهم এর পূর্বে উহ্য রয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح مادة سَلَفَ على حد علمك

٢ – ما هو فاعلُ ضل ؟

٣ – أعرب قوله : فذلك الله ربكم الحق

٤ – أعرب قوله : أنهم لا يؤمنون

٥ – مكانكم স্থির থাকো/তোমরা নিজ নিজ স্থানে স্থির থাকো – এ দু'টি তরজমার সূত্র উল্লেখ করো।

٦ – إن كنا عن عبادتكم لغفلين আয়াতের তারকীবের সাথে থানবী (রহ)-এর তরজমার পার্থক্য আলোচনা করো।

(٩) وَ اتل عليهم نَبَاَ نوح ، اِذ قال لقومه يٰقوم اِنْ كان كَبُر عليكم مَقامي و تذكيري بِاٰيٰت الله فَعلى الله توكَّلْت فَاَجمِعوا امرَكم و شركاءَكم ثم لا يكُنْ اَمْرُكم عليكم غُمَّةً ثم اقضُوا اِليَّ و لا تُنظرون * فان توليتم فما سالتُكم مِنْ اَجرٍ، اِنْ اجريَ اِلا على الله، و اُمِرت اَنْ اكونَ مِن المسلمين * فكذبوه فَنَجينٰه و مَن معه في الفلك و جعلنٰهم خَلٰئِفَ و اغرقنا الذين كذبوا بِاٰيٰتنا، فانظر كيفَ كان عاقِبة المنذَرين * ثم بعثنا من بعده

رُسلا الى قومهم فجاءوهم بالبينت فما كانوا لِيؤمنوا بما كذبوا به مِن قبل، كذلك نَطبع على قلوب المعتدين *

بيان اللغة

كَبُر الأمر (ك، كِبَرًا و كُبْرًا) عظُم و ثقُل — বড় / বিরাট হলো

كبُر عليه الأمرُ : شَقَّ عليه و ثقُل — বিষয়টি তার জন্য ভারী ও কঠিন হলো

كبِر الرجلُ أو الحيَوان (س، كِبَرًا) تقدم في السِّن — বয়স্ক হলো

أكبر شيئًا : رآه و عَدَّه كبيرا

أكبر فلانا : أعظَمه

مَقام : هذا مصدرٌ قام، و اسم مكانِ القيام و زَمانه .

و هو في هذه الآية مَصدر، و في قوله تعالى : ذلك لمن خاف مَقامي، مَكانٌ أو زَمانٌ .

اجمَعَ أمرَه / على أمره : عَزَم عليه، كأنه جَمَع نفسَه له (و أَجْمَعَ أمرَه أَفْصَحُ مِن أجمَعَ على أمرِه)

أجمعَ الأمرَ : أحكَمَه — সংহত করল

أجمع شيئًا : أعدَّه — প্রস্তুত করলো

أجمع القومُ على أمرٍ : اتفقوا عليه

غمة : (الجمع) غُمَمٌ : كل ما يستُر شيئا، يقال : أمرٌ غمة، أي مُبهَم و ملتَبِس و خَفِيٌّ، و يقال : هو في غُمَّةٍ من أمرِه، أي في حَيْرةٍ و لَبْسٍ .

و غَمَّة : (و الجمع) غُمَم : غَمٌّ (وجمعه) غُموم : حزن و كَرْبٌ

بيان الإعراب

إذ قال : الظرف متعلق بـ : نَبَأَ، و لا يصح تعليقُه بـ : اتل، لأن الوقتَ وقتُ نبأ نوح، لا وقتُ تلاوةِ النبي صلى الله عليه وسلم .

تذكيري : أضيف المصدر إلى الفاعل و مفعوله محذوف، أي تذكيري إياكم، و هو معطوف على : مقامي .

فعلى الله توكلت فأجمعوا أمرَكم : الفاء الأولى رابطة، و الفاء الثانية عاطفة، و قيل : فعلى الله توكلت جملة معترضة على رَغْمِ دخول الفاء، لأن توكُّلَ نوحٍ لا يتوقف على شرط، و جملة أجمِعوا جواب الشرط، فهذه الفاء هي الرابطة ·

و شركاءكم : أي و ادعو شركاءكم (لنصرتكم)، أو : اجمعوا أمركم مع شركائكم، أو اجمعوا أمَرَكم و أمرَ شركائكم ·

ثم لا يكن أمركم عليكم غمة : ثم حرف عطف، و الجملة معطوفة على جملة أجمعوا أمركم · و عليكم متعلق بـ : غمة ·

ثم اقضوا إلي : حرف الجر يتعلق بـ : اقضوا على تضمينه معنى وَجِّهوا ضربَتَكم ·

فانظر : أي إن علمت قصة قوم نوح فانظر ·

ليؤمنوا : اللام لام الجحود، أي ما كانوا موفقين للإيمان

الترجمة

আর আপনি পড়ে শোনান তাদেরকে নূহের ঘটনা, যখন তিনি বলেছিলেন তার কাওমকে, হে (আমার) কাওম, যদি তোমাদের উপর 'ভারী' হয় আমার অবস্থান এবং আল্লাহর আয়াতসমূহের মাধ্যমে আমার উপদেশ দান তাহলে (হোক, কারণ) আমি তো আল্লাহরই উপর ভরসা করেছি। সুতরাং তোমরা তোমাদের বিষয় জোরদার করো, তোমাদের তথাকথিত শরীকদেরসহ, তারপর যেন অস্পষ্ট না থাকে তোমাদের কর্ম তোমাদের কাছে। তারপর আঘাত হানো আমার দিকে, আর (আমাকে) সুযোগ দিও না।

অনন্তর যদি তোমরা উপক্ষো করেই যাও তাহলেও (আমার চিন্তা নেই, কারণ) আমি তো তোমাদের কাছে কোনও প্রতিদান চাইনি, আমার প্রতিদান তো শুধু আল্লাহর যিম্মায়। আর আমাকে আদেশ করা হয়েছে আনুগত্যকারীদের অন্তর্ভুক্ত থাকার।

অনন্তর তারা তাকে 'মিথ্যাবাদী' বলেই গেলো; তখন আমি নাজাত দিলাম তাকে এবং তাদেরকে যারা তার সঙ্গে ছিলো কিশতিতে। আর তাদেরকে আমি স্থলবর্তী করলাম, আর ডুবিয়ে দিলাম তাদেরকে যারা মিথ্যা বলেছিলো আমার আয়াতসমূহকে। সুতরাং তুমি দেখো, কেমনা ছিলো সতর্ককৃতদের পরিণাম।

তারপর আমি পাঠিয়েছি নূহের পরে বিভিন্ন রাসূলকে তাদের কাওমের কাছে, অনন্তর তারা এসেছেন তাদের কাছে প্রমাণাদিসহ, কিন্তু তারা তো ঐ বিষয়ের উপর ঈমান আনতে প্রস্তুত ছিলো না, যা তারা পূর্বেই প্রত্যাখ্যান করে বসেছিলো, ওভাবেই আমরা মোহর মেরে দেই সীমালঙ্ঘনকারীদের দিলের উপর।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اتل عليهم (আপনি পড়ে শোনান তাদেরকে) থানবী (রহ) 'তাদেরকে শোনান'-এর পরিবর্তে এ তরজমা করেছেন। على ও تلاوة উভয় শব্দ সেটাই দাবী করে। তাছাড়া শুধু ঘটনা শোনাতে বলা উদ্দেশ্য নয়, বরং ঘটনা সম্পর্কে যে আয়াত নাযিল হচ্ছে সেটা শোনানো উদ্দেশ্য।

نبأ এর তরজমা বৃত্তান্ত হতে পারে, কিন্তু কাহিনী নয়, অথচ কোন কোন বাংলা মুতারজিম 'কাহিনী' শব্দটি ব্যবহার করেছেন।

(খ) إن كان كبر عليكم مقامي (যদি তোমাদের উপর ভারী হয় আমার অবস্থান) একটি তরজমায় আছে, যদি তোমাদের মাঝে আমার অবস্থান ...... ভারী মনে হয়– এটা ঠিক নয়।

مَقام অর্থ দাঁড়ানো। শায়খুলহিন্দ (রহ) তাই লিখেছেন– যদি তোমাদের উপর ভারী হয় আমার দাঁড়ানো এবং আল্লাহর আয়াতসমূহ দ্বারা উপদেশ দেয়া।

থানবী (রহ) এর তরজমা হলো, 'আমার অবস্থান'; এর জন্য যথাশব্দ হলো مُقام তবে দাঁড়ানোকেও অবস্থান অর্থে ব্যবহার করা যায়।

তোমাদের উপর ভারী/ তোমাদের কাছে দুঃসহ/ অসহনীয় – এগুলো চলেতে পারে।

(গ) فاجمعوا أمركم (সুতরাং তোমরা তোমাদের বিষয় জোরদার করো) এটি শব্দানুগ তরজমা।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন, তোমরা সবাই মিলে তোমাদের কর্ম/কর্তব্য সাব্যস্ত করো, বা স্থির করো।

সাব্যস্ত করা, বা স্থির করা– এটি اجمعوا এর যথার্থ প্রতিশব্দ নয়। তদুপরি 'সবাই মিলে' কথাটা অতিরিক্ত।

(ঘ) ثم لا يكن أمركم عليكم غمة (তারপর যেন অস্পষ্ট না থাকে

তোমাদের কর্ম তোমাদের কাছে). একটি তাফসীরে আছে لا يكن أمركم مستورا عليكم সে হিসাবেই এ তরজমা করা হয়েছে। অর্থাৎ আমার বিরুদ্ধে প্রকাশ্যেই তৎপরতা চালাও। থানবী (রহ) লিখেছেন, তোমরা তোমাদের তৎপরতা জোরদার করো। তারপর তোমাদের তদবির যেন তোমাদের বিষণ্ণতার কারণ না হয়।

এটি غمة এর অপর অর্থ।

(ঙ) فان توليتم (– যদি তোমরা উপেক্ষা করেই যাও) এ তরজমা থানবী (রহ)-এর। তিনি বলেন, এখানে অব্যাহততা উদ্দেশ্য। কেননা উপেক্ষা তো আগেই হয়েছে।

فكذبوه এর তরজমা সম্পর্কে একই কথা

(চ) ثم اقضوا إلى (তারপর আঘাত হানো আমার দিকে) إلى অব্যয়টি লক্ষ্য করে এ তরজমা করা হয়েছে।

قضي عليه অর্থ তাকে খতম করে দিলো। সেটাকেই এখানে إلى অব্যয় যোগে ব্যবহার করা হয়েছে।

শায়খায়ন তরজমা করেছেন– (যা করার) করে ফেলো আমার সাথে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ غُـمَّـةٍ

٢ – أعرب قوله : و شركاءكم

٣ – أعرب قوله : غمة

٤ – بم يتعلق قوله : في الفلك ؟

٥ – و اتل عليهم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – থানবী (রহ) فإن توليتم এর যে তরজমা করেছেন তার তাৎপর্য আলোচনা করো।

(١٠) و اَوحينا الى موسٰى و اخيه ان تَبَوَّاٰ لِقومكما بمصر بُيوتا و اجعَلوا بيوتَكم قِبلة و اَقيموا الصلٰوةَ، وَ بشر المؤمنين * و قال موسي ربنا اِنك اٰتيتَ فرعونَ و مَلَاَه زينةً و اموالا في الحيٰوة الدنيا، ربنا لِيُضِلوا عَن سَبيلك، ربنا اطمِسْ على

اَمـوالـهم و اشـ   ٍ قـلوبـهم فـلا يؤمنوا حـتى يَروا العـذاب
الالـيم * قـال قـد اُجيبت دَعوتُكـما فـاستَقيـما و لا تتبعٰـنِ
سَبـيـل الذيـن لا يعـلـمون * و جـاوزنا بِبَني اسْـرَائيل البـحرَ
فَـاَتْبَعَـهم فـرعونُ و جـنوده بـغـيًـا و عَـدْوًا، حـتى اِذا ادرَكـه
الـغَرَقُ قال اٰمـنت اَنه لا اِلٰه الا الـذي اٰمنَتْ به بَنوا اسرائيل و اَنا
مِن المـسـلمين * اٰلـئـٰنَ وَ قَـدْ عَـصَـيْـتَ قـبـلُ و كـنـتَ مِـن
المـفسـدين * فاليومَ نُنَجيـك بِبَدنـك لِتـكونَ لمـن خلـفَك اٰيـة، و
اِن كـثـيـرًا مِنَ الـنـاس عَنْ اٰيٰـتـنا لـغٰفِـلون * وَ لَـقـد بَـوّأْنا بـني
اسـرا ءيلَ مُبَوَّاَ صـدقٍ و رزقـنٰهم مِنَ الـطـيـبٰت، فـمـا اخـتَـلَـفـوا
حـتى جـا ءهم العِـلم، ان ربك يَقـضي بيـنَهم يوم القـيٰـمـة فـيـمـا
كـانوا فـيه يخـتـلـفـون *

بـيـان الـلـغـة

بَوَّأَ فلانًا منزلًا (تبوِئَة) : أنزلَه فيه (مُبَوَّءٌ : مكانُ تبوئةٍ)
بَوَّأَ المنزلَ له : أعـدَّه له
تَبَوأَ المكانَ/بالمكانِ : نَزَلَه و أقامَ فيه
تَبوأ المكانَ : اتخذه مَباءَةً، أي مَنزِلًا، كقولك : تَوطَّنه : اتخذه وَطَنا .
مبوَّ صدقٍ : أي مُبَوَّءًا صادقًا، أي صالحا مَرْضِيًّا
طَمَسَ - شيئًا/على شيءٍ (ض، طَمْسًا) شَوَّهَه তাকে বিকৃত করলো
مَحاه মুছে ফেললো أزالَه বিলুপ্ত করলো
طَمَسَ عينَه/على عينِه : أعماها
طمَس الشيءُ (ن، طُموسًا) : زالَ
طمس القمرُ أو النجمُ أو البصَرُ أو نحوُه : ذهب ضوءه
شَدَّ على قلبه (ن، شَدًّا) ختَم عليه

شَدَّه : عقَده، أوثَقَه বাঁধলো

شد رحالَه : تَهَيأً للسفر

شَدَّ على يَده و شد عَضُدَه : قواه و أعانه

شَدَّ شيءٌ (ض، شِدَّةً) قَوِيَ و متُن

شَدَّ عليه في الحرب : حَمَل عليه بقوة

شَدَّد شيئًا : قواه، أحكَمه

شَدَّد عليه : ضَيَّق عليه তার প্রতি কঠোরতা করলো

تشدد : تقوى মজবুত হলো تصلب অনমনীয় হল

اشتد : قوي و زاد . اشتد عليه/به المرض : زاد

بيان الإعراب

أن تبوءا : أن هذه مفسرة، لأنه قد تقدمها ما هو بمعنى القول، دون حروفه، و هو الإيحاء، أو هي مصدرية، و المصدر المؤول مفعول به لـ : أوحينا، أي : أوحينا إليهما التبوُّءَ .

بمصر : متعلق بـ : تبوءا، و يجوز أن تكون حالا من : بيوتا . لأنه نعت تقدم على المنعوت، أي : تبوءا البيوت كائنة بمصر

في الحيوة الدنيا : متعلق بـ : آتيتَ، أو بنعت لـ : زينةً و أموالا .

ربنا : جملة النداء الثانية اعتراضية أعيدت للتوكيد .

فلا يؤمنوا : الفاء سببية عاطفة، و المضارع بعدها منصوب بأن المضمرة، إذا كانت مسبوقة بالأمر أو النهي، أو التمنى أو الاستفهام .

و هذا المصدر المؤول معطوف على مصدر مفهوم من الفعل السابق .

و أصل العبارة : لِيكُنْ منك شَدٌّ على قلوبهم فَعَدَمُ إيمانٍ منهم .

جُوزنا (أي عَبَرنا) و الباء للتعدية، أي : جعلنا هم مُجاوِزين البحرَ

بغيا و عدوا : مفعول لأجله، و يجوز أن يكونا مصدرين في موضع الحال، أي : باغين معتدين .

أنه لا إله إلا الذين آمنت .... : هذا المصدر المؤول منصوب بنزع الخافض، أي : آمنت بأنه ...

آلآن : همزة الاستفهام للتوبيخ، و الظرف متعلق بفعل محذوف، و هو تؤمن . و جملة قد عصيت حال من فاعل تؤمن .

ببدنك : أي بجسمك، متعلق بحال، أي مصاحبا ببدنك لا بروحك، أو هو في موضع الحال بمعنى : عاريا، و قيل المعنى : بِدِرْعِك، فالباء للمعية، أي : مع درعك .

لمن خلفك : يتعلق بمحذوف، هو حال من اية، لأنه نعت تقدم على المنعوت .

مبوأ صدق : أي منزلا صالحا طيبا، و هو مفعول به ثان .

الترجمة

আর আমি অহী পাঠালাম মূসা ও তার ভাইয়ের কাছে এই মর্মে যে, তোমরা দু'জন প্রস্তুত করো তোমাদের কাওমের জন্য মিশরে কতিপয় গৃহ; আর তোমরা বানাও তোমাদের গৃহগুলোকে কিবলামুখী; আর তোমরা নামায কায়েম করো; আর তুমি সুসংবাদ দান করো মুমিনদেরকে।

আর মূসা বললেন, হে আমাদের প্রতিপালক, আপনি তো দান করেছেন ফিরআউনকে এবং তার পরিষদবর্গকে পার্থিব জীবনে শোভা ও সম্পদ, হে আমাদের প্রতিপালক, যেন তারা আপনার পথ থেকে ভ্রষ্ট করে।

হে আমাদের প্রতিপালক, আপনি বিনাশ করে দিন তাদের সম্পদরাজি এবং মোহর মেরে দিন তাদের দিলের উপর, যাতে তারা ঈমান না আনে যন্ত্রণাদায়ক আযাব দেখা পর্যন্ত। আল্লাহ বললেন, কবুল করে নেয়া হলো তোমাদের দু'জনের দু'আ, সুতরাং তোমরা অবিচল থাকো, আর তোমরা কিছুতেই অনুসরণ করো না তাদের পথ যারা জানে না।

আর আমি পার করলাম বনী ইসরাঈলকে ঐ দরিয়া, অনন্তর ফিরআউন ও তার বাহিনী তাদের পশ্চাদ্ধাবন করলো অনাচার ও স্বেচ্ছাচারের কারণে। এমন কি যখন তাকে পেয়ে বসলো ডুবে যাওয়া তখন সে বললো, আমি ঈমান আনলাম যে, কোন ইলাহ নেই ঐ সত্তা ছাড়া যার প্রতি ঈমান এনেছে বনী ইসরাঈল, আর আমি আনুগত্যকারীদের অন্তর্ভুক্ত হলাম।

এখন! (ঈমান আনছো) অথচ অবাধ্যতা করেছো পূর্বে, আর তুমি

অন্তর্ভুক্ত ছিলে ফাসাদকারীদের।

সুতরাং আজ আমি মুক্তি দেবো তোমাকে (শুধু) তোমার দেহের সঙ্গে যেন তুমি নিদর্শন হও তাদের জন্য যারা তোমার পিছনে আসবে।

বস্তুত লোকদের অনেকেই আমার নিদর্শনাবলী সম্পর্কে উদাসীন।

আর অতি অবশ্যই আমি থাকার জন্য দিয়েছি বনী ইসরাঈলকে উত্তম বাসভূমি এবং দান করেছি তাদেরকে উত্তম উত্তম রিযিক।

অনন্তর তারা মতভেদ করেনি, যতক্ষণ না তাদের কাছে এসে পৌঁছলো (শরীয়তের) ইলম।

অবশ্যই আপনার প্রতিপালক ফায়ছালা করবেন তাদের মাঝে কেয়ামতের দিন ঐ বিষয়ে যে বিষয়ে তারা মতভেদ করতো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و اجعلوا بيوتكم قبلة (আর তোমরা বানাও তোমাদের গৃহগুলোকে কিবলামুখী) এখানে قبلة এর প্রকৃত অর্থ গ্রহণযোগ্য নয়, সুতরাং উপযুক্ত রূপক অর্থ গ্রহণ করা আবশ্যক। তাই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন 'কিবলামুখ', আর থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'ছালাত আদায়ের স্থান'।

প্রথমটিতে কিবলার সঙ্গে একটি মাত্র শব্দ যুক্ত করাই যথেষ্ট, তাই কিতাবে সেটি গ্রহণ করা হয়েছে।

(খ) و اشدد على قلوبهم (এবং মোহর মেরে দিন তাদের দিলের উপর) এখানে على অব্যয়টির কারণে 'মোহর মারা' তরজমা করা হয়েছে। শায়খায়ন তরজমা করেছেন, তাদের দিলকে শক্ত করে দিন।

এখানে অন্তর ও হৃদয়ের চেয়ে দিল শব্দটি অধিকতর উপযুক্ত।

(গ) البحر দ্বারা প্রকৃত সমুদ্র উদ্দেশ্য নয়, তাই শায়খায়ন 'দরিয়া' ব্যবহার করেছেন।

আর থানবী (রহ) 'ঐ দরিয়া' তরজমা করেছেন, কারণ ال হচ্ছে নির্দিষ্টতা ও বিশিষ্টতাজ্ঞাপক।

(ঘ) فاتبعهم এর তরজমারূপে পশ্চাদ্ধাবন করলো/পিছনে ধাওয়া করলো/পিছু নিলো– এগুলো হতে পারে।

(ঙ) حتى إذا ادركه الغرق (এমনকি যখন তাকে পেয়ে বসলো ডুবে

যাওয়া) এটি শাব্দিক তরজমা। শায়খায়ন তরজমা করেছেন, 'এখন যখন সে ডুবতে লাগলো'– এটি ভাবতরজমা।

(চ) قبل (পূর্বে) যেহেতু এখানে مضاف إليه কে কর্তন করা হয়েছে সেহেতু ইতিপূর্বে/এর পূর্বে তরজমা করা ঠিক নয়। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, پهلے سے (পূর্ব থেকে)
শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, اس سے پهلے (এর পূর্বে)

(ছ) ننجيك ببدنك (তোমাকে মুক্তি দেবো শুধু তোমার দেহের সঙ্গে) এটি ব্যাকরণভিত্তিক তরজমা।
শায়খায়ন তরজমা করেছেন– আজ আমি বাঁচিয়ে দেবো / নাজাত দেবো তোমার দেহকে– এটি সরল তরজমা।
একটি বাংলা তরজমায় আছে 'রক্ষা করবো'– এটি উত্তম।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ اطمِسْ
٢ – أعرب قوله : بمصر
٣ – اشرح إعراب قوله : فلا يؤمنوا
٤ – بم يتعلق قوله : ليضلوا عن سبيلك
٥ – قبلة এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – قبل এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١) و لَئِن أخَّرنا عنهم العذابَ الى أُمَّة معدودَةٍ ليَقولَنَّ ما يَحبِسه، الا يومَ ياتيهم ليسَ مَصروفًا عنهم و حاقَ بهم ما كانوا به يَستهزِءون * و لئِن اَذقنا الاِنسانَ منا رحمَةً ثم نَزعنٰها منه، اِنه لَيَئوس كَفور * و لئِن اَذقنٰه نَعْماءَ بعد ضَرَّاءَ مسته ليقولَنَّ ذهب السيآت عني، اِنه لَفَرِحٌ فخور * اِلاَّ الذين صَبروا و عمِلوا الصّٰلحٰت، اولئك لهم مَغفرة و اَجرٌ كَبير * فلعلَّك تارك بعضَ ما يُوحىٰ اليك و ضائِقٌ به صدرُك اَن يقولوا لولا اُنزِل عليه كَنزٌ او جاء معه مَلك، اِنما انت نَذير، و الله على كلِّ شيءٍ وكيل *

بيان اللغة

أمة : جماعَة من الناس، يجمَعهم أمرٌ واحد من دينٍ أو مكان أو لسانٍ، و الجمع أُمَمٌ. قال تعالى : وَ لْتَكُنْ منكم أمةٌ يدعون إلي الخير، أي : جماعة .
و قال : إنا وجدنا اٰباءَنا على أمة، أي : على دينٍ . و قال : إن إبراهيمَ كان أمَّةً، أي : قائمًا مَقامَ أمةٍ في العبادة و خصال الخير . و قال : وَ ادَّكَرَ بعدَ أمةٍ، أي : ذكر بعد مدة و حين، و بهذا المعنى وردت الكلمة في الآية التي نحن فيها .

بيان الإعراب

إلى أمة معدودة : و المراد بالأمة طائفة من الأزمنة، و هي في الأصل لطائفةٍ من الناس، و معدودة صفة لـ : أمةٍ، أي مدةٍ قليلة يمكن عدُّها .
لئن ... ليقولن : اللام الأولى موطئة لِلقسَم، و اللام الثانية جواب

القسم، و جواب القسم قائم مقامَ جواب الشرط، أو هو محذوف بقَرينةِ جواب القسَم ·

ما يحبسه : أي : أيُّ شيءٍ يحبِس العذابَ ؟ و الاستفهام للاستهزاء حَسَبَ اعتقادِهم ·

ألا يومَ يأتيهم ليس مصروفًا عنهم : ألا أداة تنبيهٍ، و يومَ يأتيهم ظرف مقدم متعلق بـ : مصروفًا عنهم، وهو خبر ليس، و اسمه يعود على العذاب أي : ليس العذاب مصروفا عنهم يومَ يأتيهم ·

منا رحمةً : تقدَّمت الصفة على الموصوف فصارت حالا، أي : رحمةً نازلة منا ·

ثم نزعنٰها منه : عطفٌ على : أذقنا، و جملة إنه ليؤوس جواب القسَم، فما رأيك في جواب الشرط ؟

نعماءَ بعد ضَرَّاءَ مسته : بعد ظرف متعلق بمحذوف، صفة لـ : نعماءَ، أي : حاصلةً بعدَ ضرَّاءَ، و مسته صفة لـ : ضراءَ

إلا الذين صبَروا : إلا أداة استثناء، و الذين مستثنىً مِن الإنسانَ، لأن اللام فيه للجنس لا لشخص معيَّنٍ ·

لعلك تاركٌ بعضَ ما يوحى إليك : لعل هنا للترجي، باعتبار المخاطَب · و قيل هو للانكار، أي : لا تترُكْ، و بعضَ مفعول به لـ : تاركٌ، و الموصول مع صلته مضاف إليه ·

ضائق به صدرُك : صدرك مبتدأ مؤخر، و ضائق به خبر مقدم، و الجملة عطف على جملة الترجي، و لا يجوز أن يكون ضائق معطوفا على تاركٌ، لأن الضيق واقِع لا متوقَّع ·

أن يقولوا : في موضع نصب مفعول لأجله، أي : مخافةَ قولِهم · و لولا حرف توبيخ ·

الترجمة

আর যদি আমি পিছিয়ে দেই তাদের থেকে আযাবকে এক নির্ধারিত মেয়াদ পর্যন্ত তাহলে তারা অবশ্যই বলে, কিসে আযাব ঠেকিয়ে রাখছে। শোনো, যেদিন এসে পড়বে তা তাদের কাছে (সেদিন) তা ফেরানো হবে না তাদের থেকে, বরং ঘিরে ফেলবে তাদেরকে ঐ

আযাব যা নিয়ে তারা পরিহাস করতো।
আর যদি আমি আস্বাদন করাই মানুষকে আমার নিকট থেকে অনুগ্রহ, তারপর তা তুলে নেই তার থেকে, তাহলে অবশ্যই সে চরম হতাশ (ও) কৃতঘ্ন হয়ে পড়ে।
আর যদি আমি তাকে সুখ আস্বাদন করাই দুর্দশার পর, যা তাকে স্পর্শ করেছিলো তাহলে অবশ্যই সে বলতে থাকে, চলে গেছে সব অমঙ্গল আমার (উপর) থেকে। আর অবশ্যই সে উল্লসিত (ও) গর্বিত হয়। কিন্তু (তারা নয়) যারা ছবর করেছে এবং করেছে নেক আমল। ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।
তো হয়ত আপনি বর্জন করবেন ঐ সকল আহকামের অংশবিশেষ যা অহী পাঠানো হয় আপনার কাছে, আর ঐ বিষয়ে অপ্রসন্ন হয় আপনার অন্তর এ কারণে যে, তারা বলে, কেন তার উপর অবতীর্ণ করা হয় না কোন ধন-ভাণ্ডার কিংবা আসে না তার সাথে কোন ফিরেশতা। (আপনি অবিচল থাকুন, কেননা) আপনি তো শুধু সতর্ককারী, আর আল্লাহ তো সবকিছুরই ব্যবস্থাপক।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما يحسبه (কিসে আযাব ঠেকিয়ে রেখেছে ?) প্রশ্নের উদ্দেশ্য হচ্ছে তাচ্ছিল্য ও উপহাস, তাই উপহাসের ভাষায় তরজমা করা হয়েছে। 'কোন জিনিস আযাব রোধ করে রেখেছে'– এ তরজমায় উপহাসের ছাপ নেই।

(খ) ثم نزعناها منه (তারপর তুলে নেই তা তার থেকে) এখানে نزع এর তরজমা হতে পারে, 'তুলে নেয়া/ প্রত্যাহার করে নেয়া/সরিয়ে নেয়া ইত্যাদি', কিন্তু ছিনিয়ে নেয়া– এই তরজমা সুসংগত নয়।

(গ) يؤوس كفور (চরম হতাশ [ও] কৃতঘ্ন) يؤوس ও كفور শব্দ দু'টি অতিশয়তাজ্ঞাপক। সুতরাং তরজমায় সেটা বিবেচিত হওয়া উচিত।

(ঘ) ذهب السيئات عني (চলে গেছে সব অমঙ্গল আমার [উপর] থেকে)
মূল আয়াতে উৎফুল্লতার একটি ভাব রয়েছে। তা প্রকাশ করার জন্য তরজমায় বাক্য-বিন্যাস পরিবর্তন করা হয়েছে। আমার বিপদাপদ কেটে গেছে/আমার অমঙ্গল দূর হয়ে গেছে– বাক্যের এই স্বাভাবিক বিন্যাসে সেই ভাবটুকু ফোটে না।

তাছাড়া 'আমার বিপদাপদ বা আমার অমঙ্গল' মূলানুগ তরজমা নয়।

'চলে গেছে' এর তুলনায় 'কেটে গেছে' এ ক্ষেত্রে অধিকতর উপযোগী, তবে 'চলে গেছে' হচ্ছে অধিকতর শব্দানুগ।

(ঙ) فرح فخور (উল্লসিত [ও] গর্বিত) একটি তরজমায় আছে, উৎফুল্ল ও অহংকারী। 'অহংকারী বা গর্বিত' এর বিপরীতে উৎফুল্ল শব্দটি সমস্তরের নয়, তাই 'উল্লসিত' ব্যবহার করা হয়েছে।

(চ) لعلك تارك (হয়ত আপনি বর্জন করবেন) কাফিরদের উপহাস ও প্রত্যাখ্যানের ফলে নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের অন্তরে যে বিষণ্ণতা ছিলো নিছক সেই বিষণ্ণতার প্রেক্ষিতে এটা বলা হয়েছে। অন্যরা لعل কে প্রশ্নের অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন; অর্থাৎ এ বিষণ্ণতার কারণে তা বর্জন করা স্বাভাবিক তবে কি আপনি ছেড়ে দেবেন।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ أمَّةٍ

٢ - أعرب قوله : الا يومَ يأتيهم ليس مَصروفًا عنهم إعرابا مفصلا .

٣ - لم لا يجوز عطف ضائقٌ على تاركٌ ؟

٤ - أعرب قوله : أن يقولوا

٥ - نزعنا এর তরজমাগুলোর উপযোগিতা আলোচনা করো

٦ - ذهب এর তিনটি তরজমার উপযোগিতা আলোচনা করো

(٢) اَمْ يقولون افتَرٰىه، قل فاتُوا بعَشْرِ سور مثله مفتَريٰتٍ و
ادعوا مَنِ استَطعتم مِن دون الله اِن كُنتم صٰدقين * فَالَّم
يستَجيبوا لكم فاعلَموا اَنَّما اُنزِلَ بعلم الله و أَن لَّا اِلٰه الا هو،
فهل اَنتم مسلمون * مَنْ كان يريد الحيٰوة الدنيا و زينتَها
نُوَفِّ اليهم اعمالَهم فيها و هم فيها لا يُبْخَسون * اولئك الذين
ليس لهم في الاٰخرَة اِلا النارُ، و حبط ما صنَعوا فيها و بٰطِل
ما كانوا يعمَلون * اَ فَمَن كان على بيِّنةٍ من ربِّه و يتلوه شاهِدٌ

منه و مِنْ قبلِه كتٰب موسى إماماً و رحمةً، اولئك يؤمنون به، و مَنْ يكفر به مِنَ الاحزاب فالنارُ موعِدُه، فلا تك في مِرْيةٍ منه، إنه الحقُّ من ربك و لٰكنَّ اكثرَ الناس لا يؤمنون *

بيان اللغة

مفتريات (جمع مُفتَرًى، لأنه مذكرٌ غيرُ عاقلٍ)

مِرية : شك · امترىٰ في شيءٍ : شك فيه (امتراءً)

ماراه (مِراءً و مُماراةً) ناظرَه و جادَلَه، قال تعالى : فلا تُمارِ فيهم إلَّا مِراءً ظاهرا ·

تمارىٰ القوم : تجادلوا

تمارىٰ في شيءٍ : شك فيه : قال تعالى : فَبِأَيِّ آلاءِ ربك تتمارىٰ

بيان الإعراب

أم يقولون افتَراه : أم هنا منقَطِعةٌ بمعنى بل، و تقديره : بل أَ يقولون، و ضمير افتراه يعود إلى القرآن

فأتوا بعشر سور مثله مفتريات : الفاء الفصيحة، أي : إن صَدَقتم فأتوا، و مثلِه صفة لـ : سور، و مِثْلٌ و إن كانت بلفظ المفرد فإنها يُوصَف بها المثنّى و المجموع و المؤنث، جاء في القرآن : أ نؤمن لِبشَرين مثلِنا، و تجوز المطابَقة، قال تعالى : و حورٌ عِينٌ كَأَمثالِ اللؤلؤ المكنون ·

و مفتريات حال من مجرور الباء، لأنه مفعول به معنًى ·

مَنِ استَطعتم : موصول و صلة، مفعول به، و العائد محذوف، أي : من استطعتموهم معدودين من دون الله ·

بعلم الله : أي : أنزِلَ القرآن متلبسا بعلم الله، و فاءُ فإن لم استئنافية، أو عاطفة عَطفَتِ الجملةَ على الجملة المقدرة بعدَ قل، و فاء فاعلموا رابطة ·

و أن لا إلهَ إلا هو : أن مخففة من الثقيلة، و اسمها ضمير الشأن

محذوف، و المصدر المؤول معطوف على : أَنَّما أنزِلَ

فهل أنتم .. : الفاء فصيحة، أي : إن ثبَتَ إنزالُ القرآن بِعلم الله فهل أنتم مسلمون، و الاستفهام بمعنى الأمر

أعمالَهم : أي أجورَ أعمالِهم، حُذِف المفعول المضافُ، و حل المضاف إليه مَحَلَّه، و فيها متعلق بـ : نُوَف، أو متعلق بمحذوف حال من ضمير أعمالهم، أي : موجودين فيها ·

و هم فيها لا يُبخَسون : الواو عاطفة، و الجملة معطوفة على جواب الشرط · و فيها يتعلق بـ : لا يُبخَسون، و مفعول الفعل الثاني محذوف، أي لا يُبخَسون ذرةً ·

أولئك : في محل رفع مبتدأ، و الموصول في محل رفع خبر، و جملة ليس لهم في الآخر إلا النارُ صلة الموصول ·

و إلا أداة حصر، و النار اسم ليس المؤخر، و لهم متعلق بخبر ليس المقدم المقدر، و في الآخرة متعلق به أيضا، أو متعلق بمحذوف، حال من النار، أي : كائنةً في الآخرة ·

حبط ما صنَعوا فيها : معطوفة على جملة الصلة · و ما مصدرية أو موصولة ·

و بُطِل : خبر مقدم، و الموصول أو المصدر المؤول مبتدأ مؤخر، و الجملة معطوفة على حبط ·

أ فمن كان على بينة من ربه : الهمزة للاستفهام، و الفاء زائدة، و الموصول مع صلته مبتدأ، و على بينة متعلق بخبر كان المحذوف، أي : قائمًا على بينة نازلةٍ من ربه ·

و خبر المبتدأ محذوف، أي : ثابِتٌ كمن ليس قائمًا على بينة، و جواب الاستفهام أيضا محذوف، أي : لا يستَويان ·

و يتلوه شاهد منه : أي : و يتبَع هذا الدليلَ و البرهانَ شاهد منزَّل من الله، فضمير يتلوه يعود على بينة بمعنى دليلٍ و برهانٍ، و الشاهد القرآن · و جملة يتلوه شاهد منه عَطْف على جملة الصلة ·

و من قبله كتٰب موسى : كتٰب موسى معطوف على شاهدٌ، أي : يتلوه

شاهد من ربه و كتٰبُ موسى، فهذا عطفُ مفردٍ على مفرد . و من قبله متعلق بمحذوف حال مقدم مِن : كتٰبُ موسى، و لا يُعتَبَر الجار فاصلا بين المعطوف و المعطوف عليه .

و يرى البيضاويُّ بمحذوف خبر مقدم، و كتٰب موسى مبتدأ مؤخر، فهذا عطفُ جملةٍ على جملة . ٨ أنّ من قبله متعلق

إمامًا : حال من كتٰب موسى، و رحمةٌ معطوف على إماما .

الترجمة

বরং তারা কি বলে, তিনি তা রচনা করেছেন? আপনি বলুন, তাহলে তোমরা আনয়ন করো তার অনুরূপ দশটি সূরা, যা (তোমাদের পক্ষ হতে) রচিত, আর তোমরা ডেকে নাও যাকে পারো তাকে, আল্লাহ্ ছাড়া, যদি তোমরা (তোমাদের দাবীতে) সত্যবাদী হয়ে থাকো।

যদি তারা সাড়া না দেয় তোমাদের আহ্বানে তাহলে তোমরা (নিশ্চিত) জেনে নাও যে, কোরআন নাযিল করা হয়েছে আল্লাহ্রই ইলমের সাথে, এবং (আরো জেনে নাও যে,) তিনি ছাড়া নেই কোন ইলাহ্, সুতরাং তোমরা কি আত্মসমর্পণ করবে ?

যে ব্যক্তি কামনা করে পার্থিব জীবন ও তার শোভা আমি তাদেরকে পূর্ণরূপে চুকিয়ে দেই তাদের আমলের প্রতিদান দুনিয়াতে, আর সেখানে তাদেরকে (কণা পরিমাণ) কম দেয়া হয় না।

ওরাই তারা যাদের জন্য আখেরাতে আগুন ছাড়া কিছু নেই। আর দুনিয়াতে তারা যা করেছে (আখেরাতে গিয়ে দেখবে যে,) তা নিষ্ফল হয়েছে এবং যা কিছু আমল তারা করতো তা বাতিল সাব্যস্ত হবে। আচ্ছা, যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে (নির্ধারিত) সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর অবিচল রয়েছে, আর প্রমাণের অনুবর্তী হচ্ছে আল্লাহর পক্ষ হতে অবতীর্ণ সাক্ষী (কোরআন) এবং তার পূর্বে অবতীর্ণ মূসার কিতাব, যা পথ প্রদর্শক ও রহমত (সে কি অন্যের মত হতে পারে? পারে না)

ওরা তো ঈমান রাখে কোরআনের প্রতি, আর অন্যান্য সম্প্রদায়ের যারা অস্বীকার করবে কোআনকে আগুন হবে তাদের প্রতিশ্রুত স্থান। সুতরাং তুমি সন্দেহে পড়ো না কোরআন সম্পর্কে। নিঃসন্দেহে তা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রেরিত সত্য, কিন্তু অধিকাংশ লোক ঈমান রাখে না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ام يقولون افتراه (তারা কি বলে, তিনি তা রচনা করেছেন) শায়খুলহিন্দ (রহ) افتراه এর তরজমায় যামীরের مرجع উল্লেখ করেছেন। আর উভয় শায়খ افترى এর তরজমা করেছেন بنا لايا (বানিয়ে এনেছেন) এবং خطاب এর তরজমা করেছেন।

শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা–

তারা কি বলে যে, তুমি কোরআন বানিয়ে এনেছো ?

থানবী (রহ) এর তরজমা– তারা কি এমন বলে যে, আপনি নিজে তা বানিয়ে এনেছেন?

তরজমার ক্ষেত্রে غيبوبة থেকে خطاب এর দিকে পরিবর্তন করার বিশেষ প্রয়োজন আছে বলে মনে হয় না।

(খ) مفتريات শায়খুলহিন্দ (রহ) حال রূপে তরজমা করেছেন– তোমরাও আনো এমন দশটি সূরা বানিয়ে।

থানবী (রহ) ছিফাতরূপে তরজমা করেছেন– তাহলে তোমরাও অনুরূপ দশটি বানানো সূরা আনো।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– তাহলে তোমরাও আনো স্বরচিত দশটি সূরা।

এ তরজমায় مثله অংশটি বাদ পড়েছে।

(গ) و ادعو من استطعتم ... (আর তোমরা ডেকে নাও যাকে পারো তাকে আল্লাহ ছাড়া) এটি মূল তারকীবের অনুগামী তরজমা।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– আর ডেকে নাও যাকে ডাকতে পারো আল্লাহকে ছাড়া।

থানবী (রহ) লিখেছেন– আর যে যে গায়রুল্লাহকে ডাকতে পারো ডেকে নাও।

শায়খায়ন এখানে استطعتم এর উহ্য مفعول به উল্লেখ করেছেন, যার তেমন প্রয়োজন আছে বলে মনে হয় না।

শায়খুলহিন্দ (রহ) من এর শব্দগত দিক লক্ষ্য করে মুফরাদ তরজমা করেছেন। পক্ষান্তরে থানবী (রহ) من এর অর্থগত দিক বিবেচনা করে বহুবচনের তরজমা করেছেন। তদুপরি তিনি من এর স্থলে তার বয়ান دون الله কে স্থাপন করেছেন।

(ঘ) فإن لم يستجيبوا لكم (যদি তারা সাড়া না দেয় তোমাদের ডাকে) শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা– যদি তারা পূর্ণ না

করে তোমাদের কথা–
এখানে 'তারা' মানে গায়রুল্লাহরা, আর 'তোমাদের' মানে মুশরিকদের।
থানবী (রহ) ভিন্ন তরজমা করেছেন– যদি এই কাফিররা তোমাদের দাবী (পূরা) না করতে পারে–
এখানে 'তোমাদের' মানে মুসলমানদের। তাঁর তরজমা মতে فاعلموا এর مخاطبও মুসলমানগণ।
কিতাবের তরজমায় উভয় দিকের সম্ভাবনা রাখা হয়েছে।

(ঙ) لا يبخسون (তাদেরকে [কণা পরিমাণ] কম দেয়া হয় না) এখানে দ্বিতীয় مفعول به উল্লেখ করা হয়েছে।
نوف (পূর্ণরূপে চুকিয়ে দেই) বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে, 'পূর্ণরূপে দান করি' এতে তাচ্ছিল্যের ভাবটি প্রকাশ প্রায় না। শায়খায়েন তাদের তরজমায় তাচ্ছিল্যের ভাবটি প্রকাশ করেছেন।

(চ) حبط ما صنعوا فيها (আর দুনিয়াতে তারা যা করেছে তা নিষ্ফল হবে) থানবী (রহ) فيها এর তাআল্লুক حبط এর সাথে সাব্যস্ত করে তরজমা করেছেন– যা কিছু তারা করেছে তা আখেরাতে বেকার হবে।
আর পরবর্তী বাক্য و بطل ما كان يعملون এর তরজমা করেছেন– (প্রকৃতপক্ষে) যা কিছু তারা (এখন) করছে তা (দুনিয়াতেও) নিষ্ফল। – এ তরজমায় كانوا কে অতিরিক্ত সাব্যস্ত করা হয়েছে। কিতাবের তরজমায় দ্বিতীয় বাক্যকে প্রথম বাক্যের তাকীদ ধরা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ يُبخَسون
٢ – أعرب قوله : مثلِه مفترَيات
٣ – أعرب قوله : ما صنعوا فيها
٤ – علام عطف قوله : و يتلوه شاهد منه
٥ – و ادعو من استطعتم من دون الله এ ক্ষেত্রে শায়খায়নের তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – শায়খায়ন الاستجابة। এর কী তরজমা করেছেন এবং তরজমাটির প্রকৃতি কী ?

(٣) وَ الٰى عـاد اخاهم هـودًا ، قـال يٰقـومِ اعبُـدوا الله ما لكم مـن الٰـهٍ غـيرُه ، اِن اَنـتم اِلاَّ مفـتَرون * يٰقـومِ لا اسـئَـلكم عليـه اجرًا ، اِنْ اَجــريَ اِلاَّ على الذي فَـطَـرني ، اَفَـلا تـعـقِـلون * و يٰـقـومِ استغـفِروا ربَّكم ثم توبوا اليـه يُـرسـلِ السمـاءَ عليكم مِدرارًا و يَزِدْكم قـوةً الى قـوتكم و لا تَتَـولَّوا مـجرمين * قـالوا يٰهـود مـا جِئـتَنا بِبيـنة و مـا نحـن بِتاركي اٰلِهَـتِنا عن قـولك و مـا نحـن لك بمؤمنـين * اِن نـقـول اِلاَّ اعْـترٰىـك بعضُ اٰلِـهتنا بِسُـوءٍ ، قـال اِنِّي اُشـهِـد الله و اشـهَـدوا اَنِّي بَريـىء مما تـشـركون * مِن دونه فَكِيـدوني جميعًـا ثم لا تُنـظِرون * اِني توكلـت عـلى الله ربي و ربِّـكم ، مـا مِنْ دابة اِلاَّ هـو اٰخِـذ بِناصيَـتـهـا ، اِنَّ ربي على صـراطٍ مسـتَـقيم * فَـاِنْ تولَّوا فـقَـد اَبـلغـتُـكم مـا اُرسِلـت به اليـكم ، و يسـتَخلـف ربي قـومًـا غيـرَكم ، و لا تَضُـرونه شـيـئًـا ، اِنَّ ربي على كـل شـيءٍ حفـيظ *

بـيـان اللـغـة

مِـدرار : كـثـيـرُ الدُّرورِ . دَرَّت الـسـمــاءُ بالمطـر (ن، ض، دَرًّا و دُرورًا ،) : صبته كثيرا ، فـهي مـدرار ، و سـحـاب مـدرار : كـثـير المـاء (للمذكر و المؤنـث) .

اعـتراه أمـر : لَحِقَـه أو أصـابـه أمرٌ . (اعـتراه بِسُـوءٍ : اَلحق به سُوءًا)

ناصِـيـة : مقدم الرأس، شعر مقدم الرأس إذا طال .

أخذ بناصـيته : أذلـه، و اسـتولى عليه

ناصيَـتُنا بيـدك : نحـن منقـادون لك .

ببيـان الإعـراب

و إلى عـاد : يتعلق بمحذوف، أي : أرسلنا ، عـطـف على قوله : أرسلنا نوحـا

ما لكم مِن إلٰهٍ غيرُه : مِن حرف جر زائد، و إلٰه مجرور لفظًا، مرفوع محلا، لأنه مبتدأ مؤخر، و غيرُه نعت لـ : إلهٍ، أخذَ إعرابَ محلِّه، و لكم متعلق بخبر محذوف .

مدرارا : حال من السماء (المدرار مفعال للمبالغة فيستوي فيه المذكر و المؤنث)

و يزدكم قوة إلى قوتكم : يزد مجزوم عطفا على يرسلْ . و قوة مفعول به ثان، و إلى قوتكم متعلق بنعت لـ : قوةً، أي : قوة مضمومة إلى قوتكم .

و يجوز أن تكون إلى بمعنى مع، أي:قوة مجتمعة مع قوتكم .

عن قولك : عن هنا للتعليل، أي لِقولك متعلق بـ : تاركي .

اعتراك : الجملة في محل نصب بمصدر محذوف، و ذلك المصدر منصوب بـ : نقول، أي : لا نقول إلا قولَنا : اعتراك، و بسوء متعلق بـ : اعتراك .

من دونه : متعلق بحالٍ محذوفَة من مَفعول تُشركون المحذوف، أي : مما تشركونه كائنًا مِن دون الله .

ما مِن دابة إلا هو آخذٌ بناصيَتها : دابة متبدأ مرفوع محلا، و جاز الابتداء بالنكرة لِسَبْقها بالنفي، و إلا أداة حصر، و جملة هو اخذ بناصيتها خبرٌ دابة

فإن تولوا : الفاء استئنافية، و تولوا مضارع مجزوم، و هو شرط

فقد : الفاء تعليلية، و جواب الشرط مقدر، أي : فلن يضرَّني تولِّيكم، أو هي رابطة، و الجملة في محل جزم جواب الشرط، و إن فيها معنَى التعليل

و يستخلف : الواو استئنافية .

الترجمة

আর আমি পাঠালাম আদের কাছে তাদের ভাই হূদকে, তিনি বললেন, হে আমার কাওম! ইবাদত করো তোমরা আল্লাহর, তোমাদের কোনই উপাস্য নেই তিনি ছাড়া। (মূর্তিপুজার বিশ্বাসের ক্ষেত্রে) তোমরা তো শুধু মিথ্যাচারী।

হে আমার কাওম,! আমি চাইনা তোমাদের কাছে আমি এর উপর কোন বিনিময়; আমার বিনিময় তো শুধু ঐ সত্তার উপর যিনি আমাকে অস্তিত্ব দান করেছেন; তবু কি তোমরা অনুধাবন করবে না?
আর হে আমার কাওম! তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা করো তোমাদের প্রতিপালকের নিকট (শিরকের পাপ থেকে), তারপর তাঁর অভিমুখী থাকো, (তাহলে) তিনি তোমাদের উপর বৃষ্টিবর্ষণ করবেন মুষলধারে। আর তিনি তোমাদেরকে বাড়িয়ে দেবেন আরো শক্তি, তোমাদের (বর্তমান) শক্তির সাথে। আর তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিও না অপরাধী হয়ে।
তারা বললো, হে হূদ! তুমি তো আনোনি আমাদের কাছে স্পষ্ট কোন প্রমাণ, আর আমরা পরিত্যাগ করছি না আমাদের উপাস্যদেরকে (শুধু) তোমার কথার কারণে এবং তোমাকে বিশ্বাসও করছি না। আমরা তো এটাই বলি যে, তোমাকে আচ্ছন্ন করেছে আমাদের উপাস্যদের কেউ অনিষ্ট দ্বারা।
তিনি বললেন, আমি তো সাক্ষী রাখছি আল্লাহকে, আর তোমরাও সাক্ষী থাকো যে, তোমরা আল্লাহকে ছাড়া যেগুলোকে শরীক করছো, আমি সেগুলো থেকে দায়মুক্ত। সুতরাং আমার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করো তোমরা সকলে, তারপর কোন সুযোগ দিও না আমাকে। আমি তো ভরসা করেছি আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহর উপর। বিচরণশীল প্রাণীমাত্রই, তিনি ধরে রেখেছেন তার ঝুঁটি। নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক সরল পথের উপর (প্রাপ্ত হন)। অনন্তর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে আমি (তো) পৌঁছে দিয়েছি তোমাদেরকে ঐ বাণী যা সহ আমি তোমাদের কাছে প্রেরিত হয়েছি। আর আমার প্রতিপালক তোমাদের ভিন্ন অন্য সম্প্রদায়কে স্থলবর্তী করবেন, আর তোমরা আল্লাহর কোন ক্ষতি করতে পারবে না। নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক সব কিছুরই উপর 'নেগাহবান'।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و إلى عاد (আদের কাছে) এটি শায়খায়নের তরজমা। বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে, 'আদজাতির কাছে'। এখানে 'জাতি' শব্দটি সংযোজনের তেমন প্রয়োজন নেই।
(খ) فطرني (আমাকে অস্তিত্ব দান করেছেন) এ শব্দটিতে

'অনস্তিত্ব থেকে অস্তিত্বে আনা' এভাবটি রয়েছে, তাই এ তরজমা করা হয়েছে। থানবী (রহ) বন্ধনী যোগ করে এদিকে ইঙ্গিত করেছেন। সৃষ্টি/পয়দা করেছেন– এ তরজমাও চলতে পারে।

(গ) يرسل السماء (বৃষ্টি বর্ষণ করবেন) السماء এর শাব্দিক অর্থ, যা কিছু তোমার উপরে রয়েছে। মেঘ এবং বৃষ্টি অর্থে এর ব্যবহার রয়েছে। এখানে সে অর্থেই গ্রহণ করা হয়েছে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– তিনি ছেড়ে দেবেন তোমাদের উপর আসমান থেকে বারিধারা– অর্থাৎ তিনি السماء কে প্রকৃত অর্থে গ্রহণ করেছেন এবং منصوب بنزع الخافض ধরেছেন। আর مدرارا কে يرسل এর مفعول ধরেছেন।

পক্ষান্তরে কিতাবের তরজমায় السماء কে রূপকভাবে বৃষ্টি অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে, আর مدرارا কে السماء থেকে حال ধরা হয়েছে। এ তরজমা থানবী (রহ) এর।

তোমাদের উপর মেঘ পাঠাবেন, যা মুষলধারে বৃষ্টি বর্ষণ করবে– এ তরজমা চলতে পারে। এখানে مدرارا কে ছিফাত বাক্য দ্বারা তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) و لا تتولوا مجرمين (আর তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিওনা অপরাধী হয়ে) একটি তরজমায় রয়েছে, তোমরা কিন্তু অপরাধীদের মত বিমুখ হয়ো না– এ তরজমা ঠিক নয়।

(ঙ) بتاركي এবং بمؤمنين এর তরজমায় 'পরিত্যাগ করবো না' এবং 'বিশ্বাস করবো না'– এর পরিবর্তে 'পরিত্যাগ করছি না' এবং 'বিশ্বাস করছি না' ব্যবহার করা হয়েছে তাকীদের অর্থ প্রকাশ করার জন্য, যা অতিরিক্ত ب অব্যয় থেকে বোঝা যায়। কিছুতেই পরিত্যাগ করবো না– এ তরজমাও করা যায়।

(চ) اعتراك بعض آلهتنا بسوء (তোমাকে আচ্ছন্ন করেছে আমাদের উপাস্যদের কেউ অনিষ্ট দ্বারা)

বিকল্প তরজমা– আমাদের কোন কোন উপাস্য তোমাকে অশুভ দ্বারা আবিষ্ট/আক্রান্ত করেছেন।

একটি তরজমায় রয়েছে, আমাদের উপাস্যদের মধ্যে কেউ তোমাকে অশুভভাবে আচ্ছন্ন করেছেন। এখানে 'মধ্যে' শব্দটি অতিরিক্ত। তাছাড়া ب অব্যয়টির ভুল অর্থ করা হয়েছে।

একটি তরজমায় রয়েছে– আমাদের কোন দেবতা তোমার

উপরে শোচনীয় ভূত চাপিয়ে দিয়েছে। এ তরজমা ভুল।

(ছ) و اشهدوا أني بريء مما تشركون من دونه (আর তোমরা সাক্ষী থাকো যে, তোমরা যেগুলোকে শরীক করছো আল্লাহকে ছাড়া, আমি সেগুলোর থেকে দায়মুক্ত) কিতাবের তরজমায় من دونه কে تشركون এর সাথে সংশ্লিষ্ট ধরা হয়েছে।

কেউ কেউ তরজমা করেছেন, সুতরাং 'তাকে ছাড়া, তোমরা সকলে আমার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করো। এ তরজমায় من دونه কে كيدوني এর সাথে সংশ্লিষ্ট ধরা হয়েছে। এটা হতে পারে।

(জ) إني توكلت على الله ربي و ربكم (আমি তো ভরসা করেছি আমার প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহর উপর) শায়খুলহিন্দের তরজমা- আমি ভরসা করেছি আল্লাহর উপর, যিনি রব আমার এবং তোমাদের। - মূল আয়াতে رب শব্দটি দু' বার এসেছে।

থানবী (রহ) এর তরজমা- আমি তাওয়াক্কুল করে নিয়েছি আল্লাহর উপর, যিনি আমারও মালিক এবং তোমাদেরও মালিক। رب এর প্রতিশব্দ মালিক নয়।

(ঝ) آخذ بناصيتها (তিনি ধরে রেখেছেন তার ঝুঁটি) এটি শাব্দিক তরজমা। উদ্দেশ্য হলো পূর্ণ নিয়ন্ত্রণ বোঝানো। এ হিসাবে কেউ কেউ তরজমা করেছেন- তা তাঁর পূর্ণ আয়ত্তাধীন।

(ঞ) إن ربي على صراط مستقيم (নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক সরল পথের উপর [প্রাপ্ত] হন) অর্থাৎ সরল পথের উপর চলার মাধ্যমে তাঁকে পাওয়া যায়।

অন্য তরজমা- নিশ্চয় আমার প্রতিপালক সরল পথের উপর অবিচল রয়েছেন। অর্থাৎ তিনি কারো উপর অবিচার করেন না।

শায়খায়ন তরজমা করেছেন- অবশ্যই আমার রব সরল পথের উপর রয়েছেন। এ তরজমায় উভয় ব্যাখ্যার অবকাশ রয়েছে। তবে থানবী (রহ) বন্ধনীতে প্রথম অর্থের দিকে ইঙ্গিত করেছেন।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ مدرارٍ .

٢ - اشرح إعرابَ غيرُه في قوله : ما لكم من إلهٍ غيرُه .

٣ - بم يتعلق قوله : إلى قوتكم ؟
٤ - أعرب قوله : بناصيتها .
٥ - يرسل السماء عليكم مدرارا এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - هو آخذ بناصيتها এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) قالوا يٰصٰلح قد كنتَ فينا مَرجوًّا قبل هذا اَتنهٰنا اَنْ نعبدَ ما يعبد اٰباؤُنا وإننا لَفي شكٍّ مما تَدعونا اليه مُريبٍ * قال يٰقوم اَرَءيتم اِنْ كنت على بينَةٍ من ربي و اٰتٰني منه رحمةً فمن ينصُرني مِنَ الله اِنْ عصيتُه، فما تَزيدونني غيرَ تَخسيرٍ * و يٰقوم هذه ناقةُ الله لكم اٰيةً فذَرُوها تاكُلْ في اَرض الله و لا تَمَسُّوها بِسوء فياخُذَكم عذابٌ قريب * فَعَقَروها فقال تَمتَّعوا في داركم ثَلٰثةَ اَيَّامٍ، ذلك وعدٌ غيرُ مَكذوبٍ * فَلَما جاء اَمرُنا نجينا صٰلِحًا و الذين اٰمَنوا معه برحمةٍ منا و مِنْ خزي يومِئِذٍ، اِن ربَّك هو القوي العزيز * و اَخذ الذين ظلَموا الصيحةُ فاصبحوا في ديارهم جٰثِمين * كَاَن لَّم يغنَوا فيها، اَلا اِنَّ ثمود كفَروا ربَّهم، اَلا بُعدًا لِثمودَ *

بيان اللغة

مريب : أرابَ الأمرُ (إرابَةً) : صار ذا رِيْبَةٍ — বিষয়টি সন্দেহপূর্ণ হলো
أرابَ الرجلُ : صار مرتابًا و صار ذا رِيبَةٍ — সন্দিহান হলো, সন্দেহপূর্ণ হলো।
أرابَه الأمرُ أو الرجلُ : جعله شَاكًّا — তাকে সন্দিহান করলো
رابَه الأمرُ أو الرجلُ (ض، رَيْبًا، رِيبَةً) = أرابه
اِرتابَ فيه و به : شَكَّ .
تَخسير : خَسَّر فلانا : أبعده من الخير .
عَقر البعيرَ (ض، عَقْرًا) قطَعَ إحدى قَوائِمِه لِيسقُطَ و يُمكِنَ ذبحُه .

مكذوب : كذَبَه الوعدَ : وعدَه وعدًا كاذبا، فالرجل كاذب و الوعدُ مكذوب .

خِزيٌ : مَذلة (و الجمع مَخازٍ) লাঞ্ছনা

جُثمين : جَثَم الحيَوانُ و الإنسان (ض، جُثومًا) لزم مكانه أو لصق بالأرض মাটিতে লেগে পড়ে থাকলো

لم يغنَوا فيها : لم يُقيموا فيها .

بيان الإعراب

فينا : يتعلق بـ : مرجُوًّا .

أن نعبُد : المصدر المؤول منصوب بنزع الخافض، أي : عن أن نعبد .

مما تدعونا : يتعلق بـ : شَكٌّ، و مريبٍ صفة لـ : شك، تُؤكِّد الشكَّ .

إن كنت : أي : (ثابتا) على بينة (نازلة) من ربي، و آتاني معطوفة على كنتَ .

رحمة : معفول ثان لـ : آتاني، و منه متعلق بمحذوف، و هو في الأصل نعت لـ : رحمة، تقدم على الموصوف فصار حالا منه، أما قوله تعالى : و آتاني رحمة من عنده، فـ : من عنده نعت لا حال، لأنه لم يتقدم على الموصوف .

فمن ينصرني : هذا جواب الشرط، و إنِ الثانيةُ شرطية جوابها محذوف، دل عليه الجواب السابق .

غيرَ تخسير : غيرَ هنا للاستثناء، أي : ما تزيدونني إلا تخسيرًا .

هذه ناقة الله لكم آيةً : لكم متعلق بـ : مخلوقةٌ، كانت في الأصل صفة لـ : آيةً، تقدمت فصارت حالا، و آية حال من ناقةُ الله .

فيأخذَكم : الفاء سببية، و يأخذ مضارع منصوب بـ : أنِ المضمَرَةِ بعد فاء السببية،

و المصدر المؤول معطوف على مصدر مؤول مفهوم من الكلام المتقدم، أي : لا يَكُنْ منكم مسُّها فَأَخْذُ العذابِ إياكم، و هذا الإعراب يجري في كل منصوب بعد فاء السببية و واو المعية .

برحمة : يتعلق بـ : نجينا، و الباء سببية، أو يتعلق بمحذوف، حال من

فاعل نجينا، أي متلبسين برحمة منا، و الباء للملابسة .

و من خزي يومئذ : يتعلق بمحذوف، أي : و نجيناهم من خزي يومئذ . و يوم مضاف إليه مجرور، أضيف إلى ظرف مبني على السكون، و التنوين عِوَضٌ عن جملة محذوفة يدل عليها الكلام السابق، أي : من خزيِ يومِ إذ جاءَ أمر الله و أحد الظرفين زائِدٌ، أي : من يوم خزي مجيء أمر الله .

كأن : مخففة من الثقيلة، و اسمها ضمير محذوف عائد إلى ثمود، أي كأنهم .

بُعدًا : مفعول مطلق لفعل محذوف، و حرف الجر يتعلق بالمصدر، على رَأي قومٍ .

الترجمة

তারা বললো, হে ছালিহ্‌, এর পূর্বে তুমি তো ছিলে আমাদের মাঝে সম্ভাবনাময়। (এখন তোমার একি হলো!) তুমি কি নিষেধ করছো আমাদেরকে ঐ সবের উপাসনা হতে যে সবের উপাসনা করে আসছে আমাদের পূর্বপুরুষেরা। যে বিষয়ের দিকে তুমি আমাদেরকে ডাকছো আমরা তো সে বিষয়ে অবশ্যই ঘোরতর সন্দেহে রয়েছি।

তিনি বললেন, হে আমার কাওম, দেখো তো, যদি আমি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে স্পষ্ট প্রমাণের উপর, আর তিনি (প্রতিষ্ঠিত) থাকি আমাকে দান করে থাকেন আপনার পক্ষ হতে রহ্‌মত, তারপর যদি আমি তার নাফরমানি করি তাহলে কে সাহায্য করবে আমাকে আল্লাহর মোকাবেলায়? সুতরাং তোমরা তো আমার কিছুই বৃদ্ধি করবে না, কল্যাণ থেকে বঞ্চিত করা ছাড়া।

আর হে আমার কাওম, এটা হলো আল্লাহ্‌র উটনী, যা তোমাদের জন্য (আল্লাহর কুদরতের) নিদর্শন। সুতরাং তোমরা ছেড়ে দাও একে, যাতে সে চরে খায় আল্লাহর যমিনে। আর তোমরা তাকে স্পর্শও করো না মন্দভাবে, তাহলে তোমাদেরকে পাকড়াও করবে ত্বরিত শাস্তি। অনন্তর তারা তার পা কেটে ফেললো। তখন ছালেহ বললেন, উপভোগ করো তোমরা তোমাদের ঘরে তিনদিন। এ এমন ওয়াদা যা মিথ্যারূপে প্রদত্ত নয়।

তো যখন এসে গেলো আমার ফায়ছালা, তখন আমি আমার

অনুগ্রহের কারণে নাজাত দিলাম ছালেহকে এবং তাদেরকে যারা ঈমান এনেছিলো তার সঙ্গে। আর (তাদেরকে নাজাত দিলাম) সেদিনের লাঞ্ছনা থেকে। নিঃসন্দেহে আপনার প্রতিপালকই শক্তিমান, প্রতাপশালী। আর যারা অবিচার করেছিলো তাদেরকে পাকড়াও করলো এক বিকট গর্জন। ফলে তারা পড়ে থাকলো নিজেদের ঘরে উপুড় হয়ে, যেন তারা (কখনো) বসবাসই করেনি সেখানে। শোনো, ছামুদ অস্বীকার করেছিলো তাদের প্রতিপালককে, শোনো, ছামূদের জন্য হোক (রহমত থেকে) বঞ্চনা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قد كنت فينا مرجوا (তুমি তো ছিলে আমাদের মাঝে সম্ভাবনাময়) থানবী (রহ) مرجوا এর প্রতিশব্দ ব্যবহার করেছেন هونهار (বা চৌকশ এবং প্রতিভাবান) কিতাবে ব্যবহৃত প্রতিশব্দটি মূলের নিকটতর।

শায়খুলহিন্দ (রহ) মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা করেছেন- তোমার থেকে তো আমাদের আশা ছিলো।

(খ) و إننا لفي شك (আমরা তো সন্দেহে রয়েছি) এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আমাদের সন্দেহ রয়েছে।

مريب এর তরজমা তিনি করেছেন, (এমন সন্দেহ) যে মন সায় দেয় না, এটি মূল থেকে অনেক দূরবর্তী তরজমা।

থানবী (রহ) লিখেছেন, যা আমাদেরকে দ্বিধায় ফেলে রেখেছে। এটি মূলের কাছাকাছি।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, আমরা বিভ্রান্তিকর সন্দেহে রয়েছি- সন্দেহটি যদি বিভ্রান্তিকর হয় তাহলে সন্দেহটির গ্রহণযোগ্যতা থাকে না। সুতরাং এটি কাফিরদের বক্তব্য হতে পারে না। তাছাড়া এটি مريب এর প্রতিশব্দও নয়।

যেহেতু এই ছিফাতের উদ্দেশ্য হচ্ছে সন্দেহকে জোরালো করা, সেহেতু উদ্দেশ্যের প্রেক্ষিতে সঠিক তরজমা হবে, ঘোরতর বা ভীষণ সন্দেহ।

(গ) أرأيت (দেখো তো) এটি শায়খুলহিন্দের তরজমা। উদ্দেশ্য হচ্ছে বিস্ময় ও অসন্তোষ প্রকাশ করা।

থানবী (রহ) লিখেছেন, বলো দেখি, এটিও গ্রহণযোগ্য, তবে

মূলানুগ নয়।
একটি বাংলা তরজমায় আছে, তোমরা কি ভেবে দেখেছো, এতে অনাবশ্যক দীর্ঘতা রয়েছে।

(ঘ) من ينصرني من الله (কে সাহায্য করবে আমাকে আল্লাহর মোকাবেলায়) এটি মূলানুগ তরজমা। শায়খায়ন লিখেছেন– কে রক্ষা করবে আমাকে আল্লাহ্ থেকে, এটি মূলানুগ না হলেও গ্রহণযোগ্য।
শায়খুলহিন্দ (রহ) من الله এর তরজমা করেছেন, 'তাঁর থেকে'– তিনি পূর্ববর্তী ربي এর দিকে যামীর ফিরিয়েছেন। এটি অপ্রয়োজনীয় পরিবর্তন।

(ঙ) فما تزيدونني غير تخسير (তোমরা তো আমার কিছুই বৃদ্ধি করবে না কল্যাণ থেকে বঞ্চিত করা ছাড়া) এ তরজমাটি তাফসীর গ্রন্থগুলোর অনুকূল।
থানবী (রহ) লিখেছেন, তোমরা তো আগা-গোড়া আমাদের ক্ষতিই করছো।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তোমরা আমার ক্ষতি ছাড়া কিছুই বৃদ্ধি করছো না। বাংলা তরজমাগুলোতে এ তরজমাই অনুসরণ করা হয়েছে। এটি تخسير এর সাধারণ আভিধানিক অর্থ।
'তোমরা তো আমাকে শুধু কল্যাণবঞ্চিতই করে যাবে'। এ তরজমা গ্রহণযোগ্য। এখানে ক্রমবর্ধমানতা এর অর্থ এসে গেছে।

(চ) و لا تمسوها بسوء (আর তোমরা তাকে স্পর্শও করো না মন্দভাবে) থানবী (রহ) লিখেছেন, 'তাকে হাতও লাগিও না'– অর্থাৎ বড় কোন ক্ষতি করা তো দূরের কথা মন্দভাবে ছোঁবেও না। – এভাবটুকু রক্ষা করার জন্য তিনি 'ও' ব্যবহার করেছেন। শায়খুলহিন্দ (রহ) তা করেন নি। কিতাবের তরজমা অধিকরত মূলানুগ।

(ছ) عقروها (তারা তার পা কেটে ফেললো) এটি عقر এর আভিধানিক অর্থ। শায়খুলহিন্দ (রহ) এ তরজমা করেছেন। থানবী (রহ) লিখেছেন, مار ڈالا (মেরে ফেললো)। ঘটনা এই যে, প্রথমে তারা পা কেটেছে, তারপর হত্যা করেছে। আয়াতে তাদের দুষ্কর্মের প্রথম অংশটি বর্ণনা করা হয়েছে। থানবী

(রহ) ঘটনার পরিণতির দিক থেকে তরজমা করেছেন।

(জ) وعد غير مكذوب (এমন ওয়াদা যা মিথ্যারূপে প্রদত্ত নয়) এটি শাব্দিক তরজমা।

থানবী (রহ) লিখেছেন, ‘এমন ওয়াদা যাতে সামান্য মিথ্যা নেই। (মিথ্যার লেশমাত্র নেই)

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যা মিথ্যা হবে না।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, তা সুনিশ্চত ওয়াদা। এটি ভাবতরজমা, এবং গ্রহণযোগ্য।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ عَقَرَ

٢ - أعرب قوله : منه رحمةً

٣ - أعرب قوله : لكم آيةً

٤ - علام عطف قوله : يأخذَكم

٥ - لفي شك مريب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - لا تمسوها এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ الى مديَنَ اخاهم شُعيبًا ، قال يٰقوم اعبُدوا الله ما لَكم مِن
اِله غيرُه، و لا تنقُصوا المِكيالَ و الميزان اِني اَرٰكم بخير و
اِني اَخاف عليكم عذابَ يومٍ محيطٍ * و يٰقوم اَوفُوا المكيالَ
و الميزان بالقِسط و لا تبخَسوا الناسَ اَشياءَهم و لا تَعثَوا
في الارض مُفسدين * بَقِيَّتُ الله خير لكم اِن كنتُم
مؤمنين، وَ ما اَنا عليكم بِحَفيظٍ * قالوا يٰشُعيب اَصلوٰتُك
تَامُرُك اَنْ نترُكَ ما يعبُد اٰباؤُنا او ان نفعَل في اَموالنا ما
نَشٰؤا ، اِنك لَاَنت الحليم الرشيد * قال يٰقوم اَرءيتم اِن كنتُ
على بينةٍ من ربي و رزقَني منه رزقًا حسنا ، و ما اُريد اَنْ
اخالِفَكم الى ما اَنهٰكم عنه، اِنْ اُريد اِلا الاصلاحَ ما
استطعتُ، و ما تَوفيقي اِلّا بالله، عليه توكلت و اليه اُنيب *

بيان اللغة

لا تعثَوا (لا تُفسدوا) : عَثِيَ (س، عُثُوًّا، عُثِيًّا، عَثَيَانًا) : أفسَد أشَدَّ الإفسادِ ·

حليم : مَنْ يضبط نفسَه عندَ غضَبٍ أو مَكروهٍ مع قدرَةٍ، و الحليم مِنْ أسماء الله الحُسْنٰى، و حَلُمَ (ك، حِلْمًا) كان حليما، و تلبس بالحِلْمِ ·

الحِلم : ضَبْط النفسِ عَنْ غضَبٍ أو مكروهٍ مع قدرة و قوة، و الحِلم أيضا العقل، و الجمع أحلام · قال تعالى : أتأمرهم أحلامهم بهذا ·

رشيد : ذو عقل و صَلاحٍ، مستقيمٌ و صالِحٌ · و الرشيد من أسماء الله الحسنى ·

الرُّشْدُ و الرَّشَد خلاف الغَيِّ، يستَعمَل استعمالَ الهداية · قال تعالى : قد تَبين الرشدُ مِنَ الغَيِّ، و قال تعالى : و لقد آتينا ابرهيمَ رُشدَه مِنْ قبلُ ·

و الرُّشْد أن يبلُغ الصبيُّ حدَّ الصَّلاح في أموره، قال تعالى : فإن آنستم منهم رُشدًا فادفعوا إليهم أموالَهم ·

رَشَد (ن، رُشْدًا) اهتدى و استقام

الرَّشاد : الاهتداء و الاستقامة

أرشده الله : هداه · أرشده إلى أمر : دله عليه ·

بيان الإعراب

إني أراكم بخير : الجملة تُعَلِّل النهيَ عَنِ النَّقْصِ في المكيال و الميزان ·

بالقِسْطِ : هذا في مَعنى الحالَ، أي : عادلين، أو متعلق بحال، أي متلبسين بالقسط ·

مفسدين : حال مؤكدة، لأن معنى لا تعثَوا : لا تُفسِدوا، فهذه الحال لا تَضُمُّ إلى الفعل معنًى جديدا سِوَى التاكيد ·

بقية الله : أي : رزقُه الباقي بعدَ إيفاء الكيل و الوزن خير لكم ·

أن نترُكَ ما يعبد آباؤنا : المصدر المؤول في مَحَل نصب بنزع الخافض، و ما موصولة .

أو أن نفعَلَ : المصدر المؤول معطوف على ما الموصولة، أي : أَ صلاتُك تأمرك بِتَرْكِ معبودِ الآباء، و بِتَرْكِ فَعْلِنا في أموالنا على مَشِيئَتِنا . و قد يَتَبادَرُ إلى الذهن عطفُ أن نفعلَ على أن نتركَ، و ذلك باطل، لأنه لم يأمُرْهم أن يفعَلوا في أموالهم ما يَشاؤون .

رزقني : الجملة معطوفة على : كنتُ، و رِزقًا حَسَنًا مفعول به ثان لـ : رزقني، و ليس مصدرًا، لأن مصدرَ رزَقَ بفتح الراء . و منه متعلق بمحذوف، و هو حال مقدمة .

إلى ما أنهاكم عنه : إلى يتعلق بـ : أخالِفَ، و مراد " ما " هو أهواء القوم، و المعنى : لا أريد أن أسبِقَكم إلى أهوائِكم التي أنهاكم عنها .

ما استطعت (أي : ما دمت استطيع الإصلاح) فـ : ما مصدرية ظرفية، و المصدر المؤول المتضمن معنى الظرف يتعلق بـ : أريد

و يجوز أن تكون ما اسمًا موصولا، في محل نصبٍ، بدلاً من الإصلاحَ، أي : المقدارَ الذي استطعتُه من الإصلاح .

الترجمة

আর আমি পাঠালাম মাদয়ান (বাসীদের) কাছে তাদের ভাই শোয়াইবকে। তিনি বললেন, হে আমার কাওম, ইবাদত করো তোমরা আল্লাহর। নেই তোমাদের (জন্য) কোন ইলাহ তিনি ছাড়া। আর কম করো না তোমরা মাপ ও ওযন। (কারণ) আমি তো দেখছি তোমাদেরকে সচ্ছলতার অবস্থায়। (সুতরাং কেন অন্যায় করবে?) আর (অন্যায় করার ক্ষেত্রে) অবশ্যই আমি আশংকা করছি তোমাদের বিষয়ে এক 'ঘিরে ফেলা' দিনের [১] আযাবের।

আর হে আমার কাওম, তোমরা পূর্ণ করো মাপ ও ওযন ন্যায়পরায়ণতার সাথে, আর কম দিও না লোকদেরকে তাদের প্রাপ্যবস্তু, আর যমীনে ফাসাদ করে বেড়িও না।

(মানুষের প্রাপ্য আদায়ের পর) আল্লাহর দেয়া অবশিষ্টই তোমাদের জন্য কল্যাণকর, যদি তোমরা বিশ্বাসী হও (তাহলে আমার কথা

১. অর্থাৎ এমন দিন যা বিভিন্ন আযাব দ্বারা মানুষকে ঘিরে ফেলবে।

বিশ্বাস করো, আর (বিশ্বাস না করলে আমার কী!) আমি তো নেই তোমাদের উপর পাহারাদার।
তারা বললো, হে শোয়াইব, তোমার ছালাত কি তোমাকে এ-ই আদেশ দেয় যে, আমরা পরিত্যাগ করবো ঐ উপাস্যকে যার উপাসনা করতো আমাদের পিতৃপুরুষেরা, কিংবা (আমরা পরিত্যাগ করবো) আমাদের সম্পদে আমাদের ইচ্ছামত আচরণ করা। তুমি তো বড় জ্ঞানী-গুণী!
তিনি বললেন, হে আমার কাওম, দেখো তো, যদি আমি (প্রতিষ্ঠিত) থাকি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে (প্রেরিত) স্পষ্ট প্রমাণের উপর, আর (যদি) তিনি আমাকে দান করে থাকেন তার পক্ষ হতে উত্তম রিযিক (তাহলে কীভাবে আমি তার নাফরমানি করতে পারি!)
আর আমি চাই না যে, আমি তোমাদেরকে ছাড়িয়ে যাবো ঐ প্রবৃত্তির দিকে যা থেকে আমি তোমাদের নিষেধ করছি। আমি তো শুধু সংশোধন চাই, যুতটুকু (সংশোধন) করতে পারি, আর আমার তাওফীক (ও কার্যসাধন) তো আল্লাহরই সাহায্যে হয়। (সুতরাং) তাঁরই উপর আমি ভরসা করেছি, এবং তাঁরই দিকে আমি অভিমুখী হই।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و إلى مدين (আর মাদয়ান [বাসীদের] কাছে) থানবী (রহ) এ বন্ধনী দ্বারা ইশারা করেছেন যে, এখানে مضاف উহ্য রয়েছে। অর্থাৎ إلى أهل مدين

(খ) و لا تنقصوا المكيال و الميزان (আর কম করো না তোমরা মাপ ও ওযন) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা, যা মূল তারকীবের অনুগামী। এ জন্য কিতাবে তা অনুসরণ করা হয়েছে।
থানবী (রহ) লিখেছেন- আর তোমরা মাপে ও ওযনে কম করো না। বাংলা তরজমাগুলোতে এটাকেই অনুসরণ করা হয়েছে।

(গ) إني أراكم بخير (আমি তো দেখছি তোমাদেরকে সচ্ছলতার অবস্থায়) এটি থানবী (রহ)-এর মূল তারকীব অনুগামী তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আমি দেখছি

তোমাদেরকে সচ্ছল।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে– সমৃদ্ধশালী। অন্যটিতে রয়েছে– প্রাচুর্যের অধিকারী। এগুলো গ্রহণযোগ্য।

(ঘ) محيط এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন ঘেরাওকারী।

থানবী (রহ) লিখেছেন– এমন দিনের আযাব যা বিভিন্ন মুছীবতকে একত্রকারী হবে।

বলাবাহুল্য যে, এটি হচ্ছে সম্প্রসারিত ভাবতরজমা, আর প্রথমটি হচ্ছে শব্দানুগ তরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– আমি তোমাদের উপর এমন একদিনের আযাবের আশংকা করছি যে দিনটি হবে পরিবেষ্টনকারী।

এখানে অতিশাব্দিকতার আশ্রয় নিয়ে عليكم এর তরজমা করা হয়েছে, 'তোমাদের উপর' যা বাংলাভাষায় গ্রহণযোগ্য নয়। 'দিন' শব্দটির পুনরুক্তিও গ্রহণযোগ্য নয়, আর পরিবেষ্টনকারী শব্দটির চেয়ে ঘেরাওকারী / ঘিরে ফেলা শব্দটি আয়াতের ভাব ও মর্মের অধিক উপযোগী।

একটি তরজমায় রয়েছে– তোমাদের জন্য আশংকা করছি এক সর্বগ্রাসী দিনের আযাবের।

সর্বগ্রাসী শব্দটি ভাবতরজমারূপে গ্রহণযোগ্য, তবে 'জন্য' শব্দটি ঠিক নয়।

(ঙ) أوفوا المكيال و الميزان (তোমরা পূর্ণ করো মাপ ও ওযন ন্যায়পরতার সাথে) এখানে بالقسط শব্দটি এসেছে মূলত أوفوا এর তাকীদের উদ্দেশ্যে। সেদিকে লক্ষ্য রেখে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, তোমরা মাপ ও ওযন পূর্ণরূপে করো।

শায়খুলহিন্দ (রহ) بالقسط এর স্বতন্ত্র তরজমা করেছেন– ইনছাফের সাথে।

কোন কোন বাংলা তরজমায় আছে, তোমরা ন্যায়সঙ্গতভাবে মাপো এবং ওযন করো।

এখানে অপ্রয়োজনে مفعول কে ফেয়েলে রূপান্তরিত করা হয়েছে, আর মূল ফেয়েলকে বাদ দেয়া হয়েছে।

(চ) أصلاتك تأمرك أن (তোমার ছালাত কি তোমাকে এই

আদেশ দেয় যে, ...) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, তোমার ধার্মিকতা কি তোমাকে আদেশ করে ....

তিনি বলেন, এখানে দ্বীনের একটি প্রধান অংশ বলে সমগ্র দ্বীন বোঝানো হয়েছে। তাই এ তরজমা করা হয়েছে। কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর শব্দানুগ তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে। অবশ্য তিনি صلاة কে মাছদার ধরে তরজমা করেছেন, তোমার 'নামায পড়া'

(ছ) إنك لأنت الحليم الرشيد (তুমি তো বড় জ্ঞানী-গুণী!)
বাংলা তরজমাগুলো এরূপ– (ক) তুমি তো এক ধৈর্যধারী সদাচারী (খ) তুমি তো অবশ্যই সহিষ্ণু, ভালো মানুষ (গ) তুমি তো একজন খাছ মহৎ ব্যক্তি ও সৎ পথের পথিক। এগুলোতে কটাক্ষের মূল ভাবটি উঠে আসেনি। এমন তরজমা হতে পারে– তুমি তো হে বড় সাধু ও ধার্মিক!

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ رُشدٍ شرحا بسيطا

٢ – أعرب قوله : بالقسط

٣ – اشرح عطف قوله : أن نفعل

٤ – اشرح إعراب ما استطعت

٥ – أصلاتك تأمرك এর 'থানবী-তরজমা' পর্যালোচনা করো

٦ – إنك لأنت الحليم الرشيد এর তরজমাগুলোর তুলনামূলক আলোচনা করো

(٦) ذلك مِنْ اَنبـاء القُرٰى نقُصُّه عليك منها قائِمٌ و حَصيد * و ما
ظَلَمنٰهم و لٰكن ظلَموا انفُسَهم فَما اغنَتْ عنهم الِهَتُهم التي
يَدعون مِنْ دون الله من شَيءٍ لما جاءَ امرُ رَبِّك، و ما زادوهم
غيرَ تتبيبٍ * و كذلك اخذُ ربك اِذا اَخَذَ القُرٰى و هي ظالِمَة،
اِن اخذَه اليم شَديد * اِن في ذلك لاٰيَةً لمن خاف عذابَ
الاخرة، ذلك يومٌ مجموع له الناسُ و ذلك يوم مشهود * و ما
نُؤَخِّره اِلَّا لِاَجَلٍ معدود * يومَ ياتِ لا تَكَلَّم نَفسٌ اِلَّا بِاِذْنِه،

فمنهم شَقِيٌّ و سَعيد * فَأمَّا الذين شَقُوا ففي النار لهم فيها زَفير و شَهيق * خٰلدين فيها ما دامَتِ السمٰوٰت و الارضُ إلا ما شاءَ ربُّك، إن ربَّك فعَّال لما يُريد * وَ أمَّا الذين سَعِدوا ففي الجنة خٰلدين فيها ما دامَت السمٰوٰت و الارضُ إلَّا ماشاءَ ربك، عطاءً غيرَ مجذوذٍ *

بيان اللغة

حَصيد (أي : محصود، لم يبق له أثَرٌ كالزَّرعِ المحصُودِ)
تَتْبيب : تَبَّبَه (تتبيبًا) أهلَكه . قال له : تَبًّالك ، الحَقَ به الخسارةَ
تَبَّ (ض، تَبًّا) انقَطع . خَسِرَ و هلَك . يقال في الدعاء .
تَبَّتْ يدُه/يداه، و يقال : تَبًّا له .
شَقُوا : (س، شَقاءً) : تَعِسَ — হতভাগা/দুর্ভাগা হলো
ساءت حالُه — দুর্দশাগ্রস্ত হলো
أشقاه : أوقَعَه في الشَّقاءِ .
الشَّقاء و الشقاوَة و الشِّقْوَة : تَعاسَة — দুর্ভাগ্য — سوء الحال — দুর্দশা
شَقِيٌّ : تَعِسٌ، سَيِّءُ الحال (ج) أَشقِياءُ
زفير : إخراج النفَس بعدَ مَدِّه — দীর্ঘ নিঃশ্বাস ফেলা
زَفَرَ (ض، زَفْرًا و زَفيرًا) أخرج نفَسه بعدَ مدِّه إياه
زَفَرَتِ النارُ : سُمِعَ لها صوتٌ
شَهيق : صَوت شديد - إدخال النفَس إلى الصدر
مَجذوذ : مقطوع، جَذَّه (ن، جَذًّا) : قطَعَه أو كسَره

بيان الإعراب

من أنباء القُرٰى : خبر ذلك الأولُ، و جملة نقُصُّه خبر ذلك الثاني، و يجوز أن تكون حالا . و يجوز أن يكون ذلك مفعولا به لفعل محذوف يفسره الفعل الآتي أي : نَقُصُّ ذلك (معدودًا) من أنباء القُرٰى . و الإشارة بـ : ذلك إلى المذكور من قِصَص الأنبياء

منها قائم و حصيد : قائم مبتدأ مؤخر، و حصيد معطوف عليه، و منها متعلق بخبر مقدم محذوف .

و قيل : حصيد مبتدأ و خبره محذوف، أي منها حصيد، فيكون عطف الجملة على الجملة . و الجملة في مَوضِع الحال من مفعولِ نقُصُّ .

مِن دون الله من شيءٍ : من دون الله متعلق بمحذوف حال من مفعول يدعون، و مِنِ الثانيةُ زائدة، و شيءٍ مجرور لفظًا منصوبٌ محلا، لأنه مفعول به لـ : ما أغنَت، أو مفعول مطلق نائب عن المصدر، أي : إغناءً قليلا

لما جاء أمر ربك : يتعلق بـ : ما أغنت .

غيرَ تتبيب : مفعول ثان لـ : زادوهم

و كذلك أخذ ربك : الكاف اسم بمعنى مثل في محل رفع خبر مقدم، و أخذ ربك مبتدأ مؤخر، أو هو حرف جر متعلق بخبر مقدم محذوف، و هو ثابت .

إذا أخذ القرى : الظرف مجرد مِن معنَى الشرط، متعلق بالمصدر .

ذلك يوم مجموع له الناس : ذلك مبتدأ و يوم خبر، و مجموع صفة يوم، و له متعلق بـ : مَجموعٌ، و الناسُ نائب فاعلٍ لـ : مجموعٌ، أي : ذلك يومٌ يجمَعُ فيه الناسُ .

يومَ يأت لا تكلم نفس إلا بإذنه : الظرف متعلق بـ : تَكَلَّمُ، و فاعِلُ يَأتِ هو ضميرٌ يعود على يومٌ مجموع له الناس، أي : لا تتكلم نفس يوم يأتي ذلك اليوم الذي يُجمَع له الناس .

و حذفت ياء يأتي اختصارًا، و الكسرة دالة عليها .

إلا أداة حصر، بإذنه : يتعلق بـ : تكلم .

لهم فيها زفير و شهيق : لهم متعلق بخبر مقدم محذوف، و فيها متعلق به أيضا، أو هو متعلق بحال من زفير، و هي صفة تقدمت على الموصول فصارت حالا . و إعراب زفير و شهيق كإعراب قائم و حصيد .

و هذه الجملة في محل نصب حال من النار ٠

خالدين فيها : حال من الضمير في لهم ٠

ما دامت : ما مصدرية ظرفية، و دامت هنا تامّةٌ بمعنى بَقِيَت، و المصدر المؤول في محل نصب على الظرفية، أي مُدَّةَ بقائِهما (والمراد بهذا التوقيتِ الابديَّةُ على عادَةِ العرَب)

إلا ما شاءَ ربك : إلا أداة استثناء، و ما موصولة في محل نصب على الاستثناء، و المعنى : خالدين فيها مدةَ بقاءِ السمٰوٰت و الأرض إلا المدةَ التي يريد الله زيادَتها ٠ قال بعض أهل العلم : إنه استثناء في زيادة العذاب لأهل النار، و زيادة النعيم لأهل الجنة ٠

عطاءً : مفعول مطلق لفعل محذوف، أي : يُعطون عطاءً

الترجمة

এ হলো (ধ্বংসকৃত) জনপদগুলোর কিছু অবস্থা, বর্ণনা করে শোনাই আমি তা আপনাকে। ঐ জনপদের কতক (এখনো) আবাদ রয়েছে, আবার কতক নির্মূল হয়েছে।

আমি কিন্তু যুলুম করিনি তাদের উপর, বরং তারাই যুলুম করেছে নিজেদের উপর। তো তাদের উপাস্যরা, যাদেরকে তারা আল্লাহর পরিবর্তে ডাকতো, তাদের কোনই উপকার করতে পারেনি যখন এসে গেলো আপনার প্রতিপালকের (আযাবের) আদেশ; বরং উপাস্যরা তাদের ধ্বংস ছাড়া আর কিছু বৃদ্ধি করেনি।

আর এমনই কঠিন আপনার প্রতিপালকের পাকড়াও, যখন তিনি জনপদসমূহকে পাকড়াও করেন যুলুম করা অবস্থায়। নিঃসন্দেহে তাঁর পাকড়াও বড় যন্ত্রণাদায়ক, সুকঠিন।

সুনিশ্চিতই তাতে রয়েছে নিদর্শন তাদের জন্য যারা ভয় করে আখেরাতের আযাবকে। তা এমন এক দিন যেখানে মানুষকে একত্র করা হবে, আর তা হলো সবার হাজিরির দিন। আর আমি মুলতবী রাখছি সেদিনটিকে শুধু কিছু সময়ের জন্য। যে দিন তা আসবে (অবস্থা এত ভয়াবহ হবে যে,) কেউ কথা বলবে না তাঁর অনুমতি ছাড়া। তখন তাদের মধ্য হতে কেউ হবে হতভাগা, আর কেউ হবে ভাগ্যবান।

তো যারা হতভাগা হবে তারা জাহান্নামে যাবে, এমন অবস্থায় যে

তাদের জন্য সেখানে থাকবে শুধু ভয়ঙ্কর ডাক ও চিৎকার। (এবং) সেখানে তারা চিরকাল থাকবে যতকাল বিদ্যমান থাকবে আসমান ও যমীন, তবে আপনার প্রতিপালক যা ইচ্ছা করেন। আপনার প্রতিপালক তো পূর্ণরূপে করতে পারেন যা ইচ্ছা করেন।
আর যাদেরকে ভাগ্যবান করা হয়েছে তারা জান্নাতে যাবে এমন অবস্থায় যে, তারা সেখানে চিরকাল থাকবে যতকাল বিদ্যমান থাকবে আসমান ও যমীন, তবে আপনার প্রতিপালক যা ইচ্ছা করেন। (তাদের দান করা হবে) অকর্তিত দান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ذلك من أنباء القرى এ হলো (ধ্বংসকৃত) জনপদগুলোর কিছু অবস্থা- এ বন্ধনী যোগ করে থানবী (রহ) বলেন, এ দ্বারা এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, القرى এর ال হচ্ছে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক (للعهد الخارجي) অর্থাৎ القرى المهلكة। এখানে من অব্যয়কে تبعيضي ধরে তরজমা করা হয়েছে 'কিছু অবস্থা'।
শায়খায়ন أنباء এর তরজমা করেছেন حالات (অবস্থা) কেউ কেউ তরজমা করেছেন। কিছু সংবাদ- এটা ঠিক আছে।
نقصه عليك (বর্ণনা করে শোনাই আমি তা আপনাকে) থানবী (রহ) লিখেছেন, 'যা আমি আপনার কাছে বর্ণনা করি।'
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যা আমি আপনাকে শোনাই।
قص ও على এ দুইয়ের সম্মিলিত তরজমা, 'বর্ণনা করে শোনাই' হলেই ভালো হয়।
কিতাবের তরজমায় এ বাক্যটিকে দ্বিতীয় খবর ধরা হয়েছে, শায়খায়ন 'হাল'-এর তারকীব গ্রহণ করেছেন।

(গ) منها قائم و حصيد (ঐ জনপদের কতক [এখনো] অবাদ রয়েছে, আর কতক নির্মূল হয়ে গেছে।) قائم এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, বিরান হয়ে আছে, (অর্থাৎ বাড়ীঘর দাঁড়িয়ে আছে, কিন্তু বাসিন্দারা ধ্বংস হয়ে গেছে।)*
কিতাবে শায়খায়নের তরজমা গ্রহণ করা হয়েছে। অর্থাৎ কিছু জনপদ এখনো আবাদ রয়েছে যেমন মিশর।
حصيد এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন সম্পূর্ণ নিশ্চিহ্ন

হয়ে গেছে। এটি ভাবতরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, গোড়া কেটে গেছে। এটি শাব্দিক তরজমা। কিতাবে মধ্যবর্তী তরজমা গ্রহণ করা হয়েছে।

(ঘ) الهتهم التي يدعون (তাদের উপাস্যরা যাদেরকে তারা ডাকতো) এটি শায়খুলহিন্দ (রহঃ) শব্দানুগ তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'পুজা/উপাসনা করতো'।

(ঙ) و ما زادوهم غير تتبيب (বরং উপাস্যরা তাদের ধ্বংস ছাড়া আর কিছু বৃদ্ধি করেনি) সহজায়নের জন্য একটি যামীরের মারজি উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে।

থানবী (রহ) এর তরজমা- উলটো তারা তাদের ক্ষতি করেছে।

একটি তরজমায় আছে, বরং তারা তাদের ধ্বংসই শুধু ডেকে এনেছে- এগুলো হচ্ছে ভাবতরজমা।

(চ) إذا أخذ القرى و هي ظالمة (যখন তিনি জনপদসমূহকে পাকড়াও করেন তাদের যুলুম করা অবস্থায়)

থানবী (রহ) القرى এর তরজমা করেছেন, কোন বস্তীর অধিবাসীদেরকে।

أخذ -এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'শাস্তি দেন', এটা চলতে পারে, তবে শায়খায়ন 'পাকড়াও' লিখেছেন, যা অধিকতর সঙ্গত।

'যখন তারা জুলুম করে' – এ তরজমা মূল তারকীব অনুসারী নয়।

(ছ) إن في ذلك لآية (সুনিশ্চিতই তাতে রয়েছে নিদর্শন) থানবী (রহ) آية এর তরজমা করেছেন 'শিক্ষণীয় বিষয়' তিনি বলেন, শিক্ষাগ্রহণ হচ্ছে 'নিদর্শন'-এর অনিবার্য অংশ। অনিবার্য অংশটি প্রাধান্যে আনার জন্য এ তরজমা করা হয়েছে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) 'নিদর্শন' তরজমা করেছেন।

(জ) لا تكلم (কথা বলবে না) শায়খায়ন তরজমা করেছেন- 'কথা বলতে পারবে না', কিতাবের যে তরজমা সেটারও উদ্দেশ্য এটাই। কেউ কেউ লিখেছেন, মুখ খুলতে পারবে না, এটা গ্রহণযোগ্য হলেও মূলানুগ নয়।

(ঝ) يوم يأت (যেদিন তা আসবে)- এখানে يأت এর যামীরের مرجع হচ্ছে কেয়ামতের দিন, সুতরাং তরজমা দাঁড়ায়- যেদিন

কেয়ামতের দিন আসবে। এতে জটিলতা সৃষ্টি হয়, এই জটিলতা এড়ানোর জন্য থানবী (রহ) লিখেছেন, যখন ঐ দিন আসবে, আর শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যে দিন তা আসবে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ زفيرٍ و كلمةَ شهيقٍ

٢ – أعرب " ذلك " في قوله تعالى : ذلك من أنباء القرى ·

٣ – أعرب قوله : من شيءٍ

٤ – أعرب قوله : عطاءً

٥ – وما زادوهم غير تتبيب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – يوم يأت এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) وَ جاءو على قَميصِه بِدَم كَذِبٍ، قال بَل سَوَّلَت لكم انفُسُكم امرًا ، فَصَبر جَميل، وَ اللّٰه المستعانُ على ما تَصِفون * و جاءَتْ سَيارَةٌ فارسَلوا وَاردَهم فَادلٰى دلوَه، قال يٰبُشرى هذا غُلٰم، وَ اَسَرُّوه بِضاعَةً، و الله عليم بما يعمَلون * و شَرَوه بِثَمَنٍ بَخْسٍ دراهِمَ معدودَةٍ، و كانوا فيه من الزاهدين * و قال الذي اشتَرٰه مِنْ مصرَ لِامْرَاَتِه اَكرمي مَثْوٰه عسى اَن ينفَعَنا او نتخذَه ولدًا ، و كذلك مَكَّنا لِيُوسُفَ في الاَرض، و لِنُعَلِّمَه من تَاويل الاَحاديث، و الله غالِبٌ على أمرِه وٰ لكنَّ اكثرَ الناس لا يعلَمون * وَ لما بلَغ اشُدَّه اٰتينٰه حُكمًا و عِلما ، و كذلك نجزي المحسنين *

بيان اللغة

سولت له نفسُه أمرًا : زينته له، و سهَّلته له ·

وصَفَ شيئا (ض، وَصْفًا) ذكَره بِصفَته و نَعْتِه، أظهَر حالَه و بين هيئَتَه · وصفَ الخبرَ : حكاه و بيَّنه

سيارة : قافلة ·
وارد : اسمٌ فاعلٍ من وَرَد (ض، وُرودًا)
وَرَدَ الماءَ : نزل ليشرَب أو ليأخُذَ الماء ·
وردَ الحديثُ : رُوِيَ
أوردَه الماءَ : جعله يَرِد الماءَ، ساقَه إلى الماء
أوردَ الحديثَ : رَواه، ذكَرَه
الوارد : الذي يسبِقُ القومَ لِطَلَبِ الماء
أدلىٰ دلوَه : ألقىٰ دلوَه في البئر
دَلْوٌ (ج) دِلاء (مؤنث و قد يذكر) إناء لِرَفعِ الماء من البئر، إناء لحَمْلِ الماء ·
شَرىٰ (ض، شِرًى) باع - اشترى
ثمن بخس : ثمن قليل حقير
زَهِد فيه / عنه (س، زُهْدًا، زَهادَةً) أعرَض عنه و تركه لاحتقاره، فَقَدَ رغبتَه فيه
زَهِد في الدنيا : تَرك حلالَها مخافَةَ حِسابه، و ترك حرامَها مخافَةَ عقابِه ·
مثواه : مَثْوًى : اسم ظرف، من ثَوىٰ بالمكان و في المكان (ثَواءً، ثُوِيًّا، ض) : أقام فيه، فالمعنى مكانُ النزولِ، المنزل، أو هو مصدر ميمي، أي : أكرمي أقامَتَه فينا
مَكَّنَ له في شيءٍ : جعل له عليه سُلطانًا — তাকে তার উপর ক্ষমতা দান করলো
بلغ أشُدَّه : اكتَمَلَ و بلَغ قوته، و مَعْنَى الأشُدِّ الاكتمال، و هو في صيغة الجمع، و لم يسمَع لها مفردٌ ·

بيان الإعراب

على قميصه : متعلق بمحذوف حال من دم، و أصل العبارة : و جاؤوا بدم كذب موجودا على قميصه ·
فصبر جميل : الفاء عاطفة عطفت الجملة التالية على جملة سَوَّلَتْ ·

و صبر جميل خبر لمبتدأ محذوف، أو مبتدأ خبره محذوف، أي فصبري صبر جميل، أو فصبر جميل واجب عَلَيَّ .

و الله المستعان : مبتدأ و خبر، و حرف الجر يتعلق بـ : المستعان، و الموصول في محل جر .

يا بشرى : يا حرف نداء و تعجُّبٍ، كانه نادى البشرٰى قائلا : اُحْضُري، فهذا وقتُ حضورِكِ .

أسروه بضاعة : ضمير الفاعل في أسروا عائد على الوارد و أصحابه، و قيل : على إخوة يوسف الذين عادوا، و كانوا يظنون أن يوسفَ قد مات، فقالوا : هذا عبد أَبِق (هرب) منا، فإن أردتم بعناه لكم .

و الهاء مفعول به على حذف مضاف، أي : أسروا أمرَه، و بضاعةً منصوب على الحال، و هو باعتبار المعنى مفعول به لعامل مقدر هو حال من فاعل أسروا، أي : أسروه جاعليه بضاعة .

دراهم معدودة : بدل من ثمن .

فيه : يتعلق بـ : الزاهدين

عسى أن ينفعَنا : عسى هنا تام بمعنى قرب، و المصدر المؤول فاعله

وكذلك مكنا ليوسف : أي : مكنا ليوسف، تمكينًا كذلك أو مثل ذلك التمكينِ . و الإشارة بـ : ذلك إلى التمكين في قلب العزيز . و يوسف يتعلق بـ : مكنا، و مَكَّنَ يتعدى بنفسه و باللام، كما هنا

و لنعلمه : هذا معطوف على محذوف، مكناه لِنُمَلِّكَه و لنُعَلمه، و يجوز أن تكون الواو زائدة، فالجار يتعلق بـ : مكنا .

من تأويل الأحاديث : من للتبعيض، فهو في المعنى مفعول به لـ : نعلم، أي لنعلمه بعض تأويل الأحديث .

الترجمة

আর তারা লাগিয়ে এনেছিলো তার জামায় মিথ্যা রক্ত। তিনি বললেন, (এটা সত্য নয়) বরং সাজিয়ে দিয়েছে তোমাদের জন্য তোমাদের মন একটি বিষয়। সুতরাং সুন্দর ধৈর্য (আমার জন্য উত্তম) আর আল্লাহই (আমার) সাহায্য চাওয়ার ক্ষেত্র ঐ বিষয়ে যা তোমরা বলছো।

আর এলো একটি কাফেলা, অনন্তর তারা প্রেরণ করলো তাদের পানি সংগ্রহকারীকে, অনন্তর সে (তার) বালতি নিক্ষেপ করলো। সে বলে উঠলো, কী সুখবর! এ যে বালক! আর তারা লুকিয়ে রাখলো তাকে 'পণ্যদ্রব্য' গণ্য করে। আর আল্লাহ্ তাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে পূর্ণ অবগত ছিলেন।

আর তারা বিক্রি করে দিলো তাকে অত্যন্ত কম মূল্যে, মাত্র কয়েক দিরহামে। কারণ তার প্রতি তারা ছিলো নিস্পৃহ।

আর মিশরের যে ব্যক্তি তাকে খরিদ করলো সে তার স্ত্রীকে বললো, তাকে সসম্মানে রাখো, হয়ত সে আমাদের উপকারে আসবে, কিংবা আমরা তাকে পুত্র বানিয়ে নেবো।

আর ওভাবেই আমি প্রতিষ্ঠা দান করেছিলাম ইউসুফকে (উক্ত) ভূখণ্ডে, যেন তাকে শিক্ষা দান করি যাবতীয় কথার মর্ম। আর আল্লাহ্ নিজের (সকল) বিষয়ে অপ্রতিহত, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ (তা) জানে না। আর যখন সে উপনীত হলো পরিপক্বতায় তখন তাকে দান করলাম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান, আর ওভাবেই আমি প্রতিদান দিয়ে থাকি সৎকর্মশীলদেরকে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) دم كذب (মিথ্যা রক্ত) অর্থাৎ বাস্তবে যা ইউসুফের রক্ত ছিলো না। কেউ কেউ তরজমা করেছেন কৃত্রিম রক্ত। মর্মগতদিক থেকে এ তরজমা সুন্দর, তবে চিকিৎসার পরিভাষায় কৃত্রিম রক্ত বলে, যা রক্ত নয়, কিন্তু রক্তের বিকল্প রূপে কাজ করতে পারে। সেদিক থেকে এ তরজমা সুন্দর নয়।

(খ) سولت لكم أنفسكم أمرا (সাজিয়ে দিয়েছে তোমাদের জন্য তোমাদের মন একটি বিষয়) এটি মূলানুগ তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, বরং তোমরা নিজেদের মনে একটি কাহিনী তৈরী করে নিয়েছো। (تم نے اپنے دل سے ایك بات بنالي هے) উর্দূতে بات শব্দটি ঘটনা, কাহিনী, বিষয় অর্থে ব্যবহৃত হয়। উপরোক্ত উর্দূকে অনুসরণ করে কেউ কেউ বাংলায় তরজমা করেছেন, একটি 'কথা' তৈরী করে নিয়েছো।

(গ) فصبر جميل এখানে শব্দানুগ ও তারকীবানুগ তরজমা করা হয়েছে। থানবী (রহ) লিখেছেন, সুতরাং আমি ছবরই করবো, যাতে অনুযোগের লেশমাত্র থাকবে না। তিনি বলেন, আমি

جميل এর ব্যাখ্যামূলক তরজমা করেছি। তিনি এই ব্যাখ্যামূলক তরজমার স্বপক্ষে তাবারী থেকে একটি হাদীছ এনেছেন- صبرٌ لا شَكْوى فيه

একটি বাংলা তরজমায় আছে, সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়। এ তরজমা তারকীবানুগ নয়

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, এখন ছবরই উত্তম। উভয় তরজমা থেকে ধারণা হয় যে, جميل হচ্ছে খবর।

(ঘ) و الله المستعان (আর আল্লাহই সাহায্য চাওয়ার স্থল)

বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে, আল্লাহই আমার সাহায্যস্থল। এটি مستعان এর সঠিক প্রতিশব্দ নয়। তাছাড়া 'আমার' শব্দটি বন্ধনীতে আসা উচিত।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আমি আল্লাহরই কাছে সাহায্য চাইবো।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর যে সব কথা তোমরা বানিয়ে বলছো সে বিষয়ে আল্লাহই যেন সাহায্য করেন।

এগুলো হচ্ছে ভাবতরজমা, যার অনিবার্য প্রয়োজনীয়তা নেই।

(ঙ) دلوه (তার) বালতি - এখানে বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, বাংলা তরজমায় যামীরটির অনুল্লেখ সুন্দর।

'নিক্ষেপ করলো' 'ফেললো' নামিয়ে দিলো- أدلى এর এই তিনটি তরজমা করেছেন বিভিন্ন মুতারজিম। প্রথমটি সর্বোত্তম।

(চ) يا بشرى (কী সুখবর) শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন- كيا خوشي كي بات (কী আনন্দের বিষয়!)

থানবী (রহ) লিখেছেন, ارے بڑی خوشي کی بات هے (আরে, বড় খুশির বিষয়) একটি বাংলা তরজমায় আছে, কী আনন্দের কথা! - এখানে কথা শব্দের ব্যবহার সঠিক নয়।

একটি তরজমায় আছে, 'আরে বাহ! - এটি সুন্দর, তবে তাতে লঘুতা রয়েছে।

غلام এর তরজমা 'কিশোর' নয়, বালক। শায়খায়ন لڑکا ব্যবহার করেছেন।

(ছ) فأرسلوا واردهم (অনন্তর তারা প্রেরণ করলো তাদের পানি সংগ্রহকারীকে) থানবী (রহ) লিখেছেন, 'তারা নিজেদের লোককে পানি আনার জন্য পাঠালো'- এটি মূলানুগ তরজমা

নয়। কিতাবে শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা অনুসরণ করা হয়েছে।

(জ) هذا غلام (এ যে বালক!) এর তরজমা থানবী (রহ) লিখেছেন, এ তো বড় ভালো ছেলে উঠে এসেছে!

তিনি বলেন, غلام এর তানবীন থেকে বিশেষণটি গ্রহণ করা হয়েছে।

কিন্তু 'উঠে এসেছে'– এ অংশটুকুর প্রয়োজন ছিলো বলে মনে হয় না। এতে ধারণা হয় যেন কিছু একটা ওঠে আসার আশা ছিলো তাদের।

(ঝ) معدودة এর ইঙ্গিতার্থ হলো অল্প। শাব্দিক অর্থ হলো গণনাযোগ্য। কেউ কেউ তরজমা করেছেন– গুনাগুণতি / হাতে গোণা কয়েক দিরহাম– এগুলো সুন্দর তরজমা নয়।

(ঞ) عسى أن ينفعنا – আমাদের কাজে/উপকারে আসবে। এখানে দ্বিতীয় শব্দটি মূলের নিকটতর।

(ট) أكرمي مثواه (তাকে সসম্মানে রাখো) এর শাব্দিক অর্থ– 'তার থাকার স্থানকে সম্মানজনক করো।' এখানে সকলেই ভাবতরজমা করেছেন।

'তার আদর যত্ন করো'– এ তরজমা গ্রহণযোগ্য।

(ঠ) تأويل الأحاديث (যাবতীয় কথার মর্ম) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা, যা ব্যাপকতাজ্ঞাপক, এতে স্বপ্নের ব্যাখ্যাসংক্রান্ত- জ্ঞানও অন্তর্ভুক্ত, কিন্তু থানবী (রহ) শুধু 'স্বপ্নের ব্যাখ্যা' তরজমা করেছেন।

(ড) و لما بلغ أشده (যখন সে উপনীত হলো পরিপক্বতায়) শায়খুলহিন্দ লিখেছেন, 'যখন সে তার শক্তিতে পৌঁছলো। থানবী (রহ) লিখেছেন, যখন সে যৌবনে উপনীত হলো।

أسئلة :

١ - إشرح كلمة المثوى

٢ - بم يتعلق قوله : على قميصه ؟

٣ - أعرب قوله : فصبر جميل

٤ - أعرب قوله : بضاعة

٥ - فصبر جميل এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - بلغ أشده এর তিনটি তরজমা উল্লেখ করো

(٨) و قال الملك إني أرى سبعَ بقرٰتٍ سِمانٍ ياكلُهن سبع عِجافٌ و سبعَ سُنبلٰتٍ خُضْرٍ و أُخَرَ يٰبسٰتٍ، يايها الملأ أفتوني في رُءياي إن كنتم للرءيا تعبُرون * قالوا أضغاث أحلامٍ، و ما نحن بتاويل الاحلام بعٰلمين * و قال الذي نجا منهما وَ ادَّكر بعدَ امَّةٍ أنا أُنبِّئُكم بتاويله فارسِلُونِ * يوسُف أيُّها الصديق أفتِنا في سَبع بَقرٰتٍ سِمان ياكلُهن سبعٌ عِجاف و سبعِ سُنبلٰتٍ خضرٍ و أُخَرَ يٰبسٰت، لَعلي ارجِعُ الى الناس لعلَّهم يعلَمون * قال تزرَعون سبعَ سنينَ دَابًا، فما حصَدتم فذَرُوه في سُنبلِه إلَّا قليلا مما تاكلون * ثم ياتي من بعد ذلك سبعٌ شِداد ياكُلْنَ ما قدمتم لَهن إلَّا قليلا مما تُحصنون * ثم ياتي من بعد ذلك عامٌ فيه يُغاث الناس و فيه يَعْصِرون *

بيان اللغة

سمان : جمعُ سَمينٍ و سمينةٍ

سَمِنَ و سَمُن (س، و ك، سِمَنا، و سَمانة) : كثر لحمُه و شحمُه

سَمَّنه : جعله سمينا .

عَجِفَ (س، عَجَفًا) هَزَل (ن) صار هزيلا — শীর্ণ হলো

فهو أعجَفُ و هي عَجْفاء و الجمع عُجْفٌ و عِجاف (على غير القياس)

تعبُرون : عبَر الرؤيا (ن، عَبْرًا) : فسرها

أضغاث أحلام : أحلام يصعُب تاويلها، أو فاسِدةٌ لا حقيقة لها .

إدَّكر : أصله إذْتكَر، أي : ذكر (وقعت تاءُ الافتعال بعد الذال فأبدلت دالًا فاجتمَعَ متقاربان، فأبدل الأولُ بجنس الثاني و أدغِمَ)

بعد أمة : بعد مدة طويلة

دَأَبَ في العمل (ف، دَأْبًا و دَأَبًا) داوم على العمل و استَمَرَّ فيه

লাগাতার / অবিরাম করলো

شداد جمع شديد و شديدة، و جمع شديد أشداء، و جمع شديدة شدائد

تُحصِنون (تحفَظون) أحْصَن شيئًا : صانَه و حفِظَه

أحصن الرجلُ : تزوج

أحصن الرجلُ / أحصنت المرأةُ : صار عفيفا و صارت عفيفة

পবিত্র চরিত্রের অধিকারী হলো

يُغاث الناس :يُنَزَّل عليهم المطَرُ، مجهول من غاث)

غاث الله البلاد (ض، غَيْثًا و غِيَاثًا) أنزل بها الغيثَ، أي : المطرَ

الغَيْثُ : المطر، مطرٌ خيرٍ، و يطلَق مجازًا على السماء و

السَّحاب وَ الكَلإ (ج) غُيوث و أغيات

غاثه الله (ن، غَوْثا) نصره و أعانه

أغاثه : أعانه

يقال : أغاثهم الله برحمته، و أغاثهم بالمطر .

الغوث : الإعانة و النصرة

يعصرون : عصر شيئا (ض، عَصْرا) استخرج ما فيه من دُهن أو ماء

নিংড়ালো, চিপে রস বের করলো

و هذا كناية عن الخِصْبِ — সচ্ছলতার প্রতি ইঙ্গিত

بيان الإعراب

يأكلُهن : الجملة في محل جر نعت لبقرات، أو في محل نصب نعت لـ : سبعَ، أو في محل نصب حال من بقراتٍ، لأنها وُصِفت .

و سبعَ سنبلات : عطف على سبعَ الأولى، و أُخَرَ عطف على سبعِ سنبلات، و يابساتٍ صفة لـ : أخَرَ .

كنتم للرؤيا تعبرون : تعبرون خبر كنتم، و اللام زائدة للتقوية، و الرؤيا مجرور لفظا منصوب محلا مفعول به مقدم .

بتأويل الأحلام : متعلق بـ : عالمين .

و ادكر : عطف على نجا، و منهما حال من فاعل نجا

يوسف : منادًى حذف منه أداة النداء، مبني على الضم في محل نصب .

و أيُّ منادىً لِأَداة نداءٍ ثانيةٍ محذوفة، و الصديق نعت لـ : أيُّ تابع له على اللفظ، أو بَدَلٌ من أيُّ، و يجوز أن يكون أيُّ بدلاً من يوسُفُ، مبني على الضم في محل نصب على التبعية، و الصديق نعت لـ : أيُّ

سبعَ سنين : سبع ظرف زمان منصوب ناب من الظرف الأصلي متعلق بـ : تزرَعون

دَأَبًا : مفعول مطلق لفعل محذوف، أو حال بمعنى دائبين .

ما حصدتم : ما اسم شرط جازم مبني في محل نصب مفعول مقدم لـ : حصدتم . و حصدتم فعل الشرط في محل جزم بـ : ما، و الفاء رابط لجواب الشرط، و ذروه جواب الشرط .

مما تأكلون : متعلق بنعت لـ : قليلا .

من بعد ذلك : يتعلق بـ : يأتي، أو يتعلق بحال مقدمة ، من : سبعٌ شِدادٌ، و أصل العبارة : ثم يأتي سبع شداد كائنةٌ من بعد ذلك . و جملة يأكل .. صفة ثانية لـ: سبعٌ .

يغاث الناس : صفة لـ: عام .

الترجمة

আর বাদশাহ্ বললেন, আমি (স্বপ্নে) দেখি সাতটি মোটাতাজা গাভী, খেয়ে ফেলছে সেগুলোকে শীর্ণ সাতটি (গাভী) এবং (দেখি) সাতটি সবুজ শীষ এবং অপর (সাতটি) শুষ্ক (শীষ)। হে দরবারিগণ! তোমরা আমাকে অভিমত দাও আমার স্বপ্ন সম্পর্কে, যদি তোমরা স্বপ্নের ব্যাখ্যা করতে পারো।

তারা বললো, (এ হলো) অর্থহীন স্বপ্ন। আর আমরা এমন স্বপ্নের ব্যাখ্যা সম্পর্কে জ্ঞাত নই।

ঐ দুজনের মধ্য হতে যে রেহাই পেয়েছিলো এবং অনেক দিন পর (ইউসুফের কথা) মনে পড়েছিলো সে বললো, আমি খবর এনে দেবো তোমাদেরকে এ স্বপ্নের ব্যাখ্যা সম্পর্কে, সুতরাং তোমরা আমাকে (ইউসুফের কাছে) পাঠাও।

(হে) ইউসুফ! হে পরম সত্যবাদী, আমাদেরকে অভিমত দান করুন, (স্বপ্নে দেখা) সাতটি মোটাতাজা গাভী সম্পর্কে, যাদেরকে

খেয়ে ফেলছে সাতটি শীর্ণ (গাভী) এবং (অভিমত দান করুন) সাতটি সবুজ শীষ এবং অপর (সাতটি) শুষ্ক (শীষ) সম্পর্কে, যাতে (আপনার প্রদত্ত ব্যাখ্যা নিয়ে) আমি লোকদের কাছে ফিরে যেতে পারি, যাতে তারা (প্রকৃত বিষয়) জানতে পারে।

তিনি বললেন, তোমরা ফসল করবে সাত বছর লাগাতার। অনন্তর যে ফসল কাটবে তা রেখে দেবে তার শীষেই, সামান্য কিছু ছাড়া যা থেকে তোমরা আহার করবে। তারপর ঐ সাত বছরের পর আসবে এমন কঠিন সাত বছর যা খেয়ে ফেলবে ঐ শস্য যা তোমরা ঐ বছরগুলোর জন্য সঞ্চয় করে রেখেছিলে, সামান্য কিছু ছাড়া যা তোমরা (বীজরূপে) সংরক্ষণ করবে।

তারপর ঐ সময়ের পর এমন এক বছর আসবে যাতে মানুষকে প্রচুর বৃষ্টি দান করা হবে এবং ঐ বছর মানুষ রস নিংড়াবে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إني أرى (আমি [স্বপ্নে] দেখি) শায়খুলহিন্দ (রহ) স্বপ্নে শব্দটি বন্ধনী ছাড়া এনেছেন, আর থানবী (রহ) বন্ধনীর মাঝে এনেছেন। দুটিরই যুক্তি রয়েছে।

(খ) يأكلهن (সেগুলোকে খেয়ে ফেলছে) এটি শায়খুলহিন্দের তরজমা। অবশ্য তিনি লিখেছেন, খায় বা খাচ্ছে। কিন্তু বিষয়টির চমকপ্রদত্ব বোঝানোর জন্য 'খেয়ে ফেলছে' তরজমা করা সঙ্গত।

থানবী (রহ) مضارع কে মাযীর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন, খেয়ে ফেলেছে।

(গ) وسبع سنبلات এবং (দেখি) সাতটি শীষ যেহেতু আতফ আমিলের তাকরার দাবী করে সেহেতু তরজমা সহজবোধ্য করার জন্য বন্ধনীতে 'দেখি' যোগ করা হয়েছে। পরবর্তী ক্ষেত্র সম্পর্কেও একই কথা।

(ঘ) أضغاث أحلام এর তরজমা বিভিন্নজন বিভিন্ন রকম করেছেন। থানবী (রহ) লিখেছেন, এগুলো হচ্ছে 'এমনি পেরেশানিপূর্ণ চিন্তাসমূহ। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, খেয়ালি স্বপ্নসমূহ। বাংলা তরজমাগুলোতে আছে অর্থহীন স্বপ্ন / বিভ্রান্ত স্বপ্ন / আজগুবি স্বপ্ন।

(ঙ) أنبئكم (খবর এনে দেবো তোমাদেরকে) এটি থানবী (রহ)

এর তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আমি তোমাদেরকে এর তাবীর বাতাবো। একটি তরজমায় আছে জানাবো/ অবহিত করবো।

أنبئكم এর শাব্দিক অর্থ, তোমাদেরকে খবর দেবো, তবে বাস্তব ঘটনার আলোকে খবর এনে দেবো তরজমা করা হয়েছে।

ثم يأتي من بعد ذلك سبع شداد يأكلن ما قدمتم لهن (তারপর ঐ সাত বছরের পর আসবে এমন কঠিন সাত বছর যা খেয়ে ফেলবে ঐ শস্য যা তোমরা ঐ বছরগুলোর জন্য সঞ্চয় করে রেখেছিলে) এটি তারকীবানুগ তরজমা। সরল তরজমা এমন হতে পারে- ঐ সাত বছর পর আসবে এমন কঠিন সাত বছর যা তোমাদের সঞ্চয় করে রাখা ফসল সাবাড় করে ফেলবে।

(চ) يعصرون এর ইঙ্গিতার্থ বিবেচনা করে তরজমা করা যায়- লোকেরা প্রাচুর্য লাভ করবে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة سمان و ملحقاته .

٢ - أعرب جملة يأكلهن

٣ - اشرح إعراب أخر يابسات في المكانين

٤ - أعرب قوله : دأبا

٥ - إني أرى এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - أضغاث أحلام এর বিভিন্ন তরজমা উল্লেখ করো

(١) وَ ما أُبَرِّئُ نفسي، إن النَّفسَ لَأمَّارة بالسُّوءِ إلَّا ما رحم ربي، إنَّ ربي غَفور رحيم * وَ قال الملِك ائتوني به أَستخلِصْه لِنَفسي، فَلَمَّا كَلَّمه قال إنَّك اليومَ لدينا مَكين أمين * قال اجعَلْني على خَزائِنِ الأَرْضِ، إني حَفيظ عليم * وَ كذلك مَكَّنا لِيوسفَ في الأرْضِ، يَتَبَوَّأ منها حيثُ يَشاء، نُصيب برحمتنا مَنْ نشاء وَ لا نُضيع أجرَ المحسنين *

بيان اللغة

إستخلَصَه : اختارَه و خَصَّه لنفسه

مَكين : عظيمُ المنزِلَةِ . مَكُن عندَ الناس (ك، مَكانَةً) عظُم عندَهم، فَهو مَكين (ج) مُكَناءُ

خَزائن (الواحد) خِزانَة : مَكان الخَزْنِ، و يُرادبه أيضًا ما في الخَزائن

সঞ্চয় করে রাখার স্থান, সঞ্চয় কৃত দ্রব্য।

خَزَن الشيءَ (ن، خَزْنًا) : جعلَه في خِزانَةٍ

يَتبَوَّأ : (يَنزِل و يُقيم) تَبَوَّأ المكانَ و به : نَزَله و أقامَ فيه

بَوَّأَ فلانًا مَنْزِلاً و فيه (تَبْوِئَةً) : أنزَله

بيان الإعراب

إلا ما رَحِم ربي : إلَّا أداة استثناء، وَ المراد بـ : " ما " بعضُ النفوس، أي إلا بعضَ النفوس التي يرحَمها ربي، فانها لا تأمُر بالسوءِ .

و يجوز أن تكونَ ما مصدرية زمانية : في محل نصب، أي : إن النفس لَأمَّارة بالسوء كلَّ وقتٍ إلا وقتَ رحمةِ ربي .

و يجوز أن يكون الاستثناء منقطعا، فتكون إلا بِمَعْنٰى لٰكِنْ، و ما مصدرية، أي : إن النفسَ لأمارة بالسوء، و لٰكِنْ رحمَةُ ربي تَصرِفُ الإساءَةَ عَمَّن شاءَ و متىٰ شاء .

على خزائن الأرض : يتعلق بـ : اجعَلْ؛ أو بمفعوله الثاني المحذوف، أي : اجعلني قَيِّما (و أمينا) على خزائن الأرض .

و كذلك مَكنا ليوسفَ في الأرض : انظر إعرابَه فيما مضى أي : مَكَّنا تمكينًا باطِنًا كذلك التَّمكينِ الظاهِرِ .

حيثُ : اسم مبني على الضم في محل نصب على الظرفية المكانية متعلق بـ: يتبَوَّأُ، و جملة يَشاء في محل جر بالإضافة، أي : يتبوأ من الأرض مكانَ مشيئَتِه .

الترجمة

আর আমি দোষমুক্ত বলি না আমার নফসকে, (কারণ) (মানুষের) নফস তো অবশ্যই আদেশদানকারী মন্দ বিষয়ে, তবে আমার প্রতিপালক যাকে দয়া করেছেন। নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক পরম ক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

আর বাদশাহ্ বললেন, আনো আমার কাছে তাকে, আমি 'একান্ত' করে নেবো তাকে আমার জন্য। অনন্তর যখন তিনি ইউসুফের সঙ্গে কথা বললেন, তখন তিনি (তাকে) বললেন, অবশ্যই তুমি আজ আমাদের কাছে অত্যন্ত মর্যাদাবান, বিশ্বস্ত। ইউসুফ বললেন, কর্তৃত্ব প্রদান করুন আমাকে দেশের ধনভাণ্ডারগুলোর উপর। (কারণ) অবশ্যই আমি উত্তম রক্ষক, সুবিজ্ঞ।

আর ওভাবেই আমি কর্তৃত্ব দান করলাম ইউসুফকে ঐ ভূখণ্ডে (এমনভাবে যে,) ঐ ভূখণ্ডের যেখানে ইচ্ছা সেখানে সে অবস্থান করতে পারে। আমি আমার রহমত যাকে ইচ্ছা করি (তাকে) দান করি। আর আমি নষ্ট করি না নেককারদের প্রতিদান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ما أبرأ نفسي (আমি দোষমুক্ত বলি না আমার নফসকে)
নফস শব্দটি থানবী (রহ) ব্যবহার করেছেন, এবং এক্ষেত্রে এটাই শরীয়তের ব্যবহৃত শব্দ।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, اور میں پاک نہیں کہتا اپنے جی کو
(আমি নিজের মনকে পবিত্র বলি না)
এখানে নফস ব্যবহার করাই সঙ্গত। তাছাড়া 'পবিত্র বলি না' – এটি ابرأ এর সঠিক প্রতিশব্দ নয়।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'আমি নিজেকে নির্দোষ মনে করি না।' – এটি গ্রহণযোগ্য তরজমা।

(খ) (কারণ) এই বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, পরবর্তী বাক্যটি হচ্ছে কারণবাচক।

(গ) إن النفس لأمارة بالسوء (নফস তো অবশ্য আদেশ দানকারী মন্দ বিষয়ে) শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, جي تو سكهلا تى هے براىٔ (মন তো শিক্ষা দেয় মন্দ)

থানবী (রহ) লিখেছেন, نفس تو برى هى بات بتلاتا هے (নফস তো মন্দ কর্মই বাতলায়)

তিনি পুরো বাক্যের আবহ থেকে 'হাছর' এর অর্থ গ্রহণ করেছেন।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, মানুষের মন অবশ্যই 'মন্দ কর্মপ্রবণ'– এটি মূলানুগ তরজমা নয়। এখানে أمر এর ভাব ও মর্ম আসেনি।

أمارة এর মূল প্রতিশব্দ, আদেশ দানকারী; তাই কিতাবে সেটি ব্যবহার করা হয়েছে।

أمارة এর মাঝে অতিশয়তার দিক রয়েছে, সেটি প্রকাশ করতে হলে বলতে হবে, মন্দের আদেশদানে তৎপর।

(ঘ) استخلصه لنفسي (আমি 'একান্ত' করে নেবো তাকে আমার জন্য)। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন– আমি তাকে আমার নিজের কাজে একান্ত করে রাখবো।) তিনি 'কাজ; শব্দটি যোগ করেছেন, যা মূল আয়াতে নেই।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আমি তাকে বিশেষভাবে নিজের জন্য রাখবো। এটি মূলানুগ তরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, আমি তাকে আমার একান্ত সহচর নিযুক্ত করবো।

এখানে সহচর শব্দটি অতিরিক্ত এবং নিযুক্ত শব্দটিও অগ্রহণযোগ্য। নিযুক্তি হয় কর্মচারীর ক্ষেত্রে, সহচরের ক্ষেত্রে নয়।

'আমি তাকে আমার অন্তরঙ্গরূপে গ্রহণ করবো'– এ তরজমা হতে পারে।

(ঙ) حفيظ ও عليم উভয় শব্দ অতিশয়তাজ্ঞাপক। তাই কিতাবের তরজমায় উত্তম রক্ষক এবং সুবিজ্ঞ বলা হয়েছে।

শায়খয়ান عليم এর ক্ষেত্রে 'খুব' শব্দ ব্যবহার করেছেন, কিন্তু حفيظ এর তরজমায় অতিশয়তার দিকটি বিবেচনা করেননি।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, আমি বিশ্বস্ত রক্ষক ও অধিকজ্ঞানবান– এটি সুন্দর তরজমা নয়। তাছাড়া আতফের অব্যয় গ্রহণযোগ্য নয়।

(চ) (এমনভাবে যে,) এ বন্ধনী হালনির্দেশক।

أسـئـلـة :

١ - اشـرح كلمةَ خزائِنَ

٢ - أعـرب قـوله : إِلَّا ما رحم ربي باعتبار الاستثناء منقَطِعًا .

٣ - بم يتعلق قوله : على خَزائن الأرض ؟

٤ - أعـرب قـوله : اليومَ و لَدَيْنا

٥ - أمارة بالـسـوء এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - حفيظ ও عليم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) وَ جاء اِخوةُ يوسفَ فَدخَلوا عليه فَعَرفَهم و هم له مُنكِرون * وَ لَمَّا جهَّزهم بِجَهازهم قال ائتوني بِاَخٍ لكم مِن اَبيكم، اَلا تَرون اَني اُوفِ الكيلَ و اَنا خيرُ المُنزِلين * فَإن لَّم تاتوني به فَلا كيلَ لكم عندي و لا تَقْرَبون * قالوا سَنراوِد عنه اَباه و اِنَّا لفاعِلون * و قال لِفتيٰنه اجعَلوا بِضاعَتهم في رحالهم لَعلهم يعرِفونها اِذا انْقَلبوا الى اَهلِهم لعلَّهم يرجعون * فَلَمَّا رجَعُوا الى اَبيهم قالوا يٰاَبانا مُنع مِنَّا الكيلُ فَاَرسِل معَنا اَخانا نَكْتَلْ و اِنا له لحٰفِظون *

بيـان اللـغـة

أنكَرَ شيئًا : جَهِلَه . أنكر الحَقَّ : جَحَده، و لم يَعترِف به

أنكَرَ عليه فِعْلَه : ذَمَّه على فِعْلِه — তার কর্মের নিন্দা করলো

جَهَّزه بـ : زَوَّده بـ : أعد له جَهازَه

جَهاز و جِهاز : ما يُحتاج إليه প্রয়োজনীয় সরঞ্জাম

لا تقربون (তোমরা আমার কাছেও আসবে না)

قَرِبَ شيئًا (س، قُرْبًا و قُربانًا) دنا منه

قَرُبَ الشيءُ (ك، قُرْبَةً و قَرابَةً) دنا

يقال : قرُب منه و قرُب إليه

راوَدَه عن أمرٍ কোন বিষয়ে তাকে প্ররোচিত করলো

نَكْتَلْ : (نأخذ كيلَه) إكتالَ منه/عليه : أخَذَ منه كيلًا

তার কাছ থেকে পরিমাপ করে নিলো

بيان الإعراب

و جاء إخوة يوسفَ : الكلام معطوف على كلام سابق يُفهَم من سياق القصة، أي : أصابَت يعقوبَ و أولادَه مجاعَة .

فدخلوا عليه : الفاء للعطف، و الجملة معطوفة على : جاء

فعرفهم : معطوفة على دخلوا

بجَهازهم : متعلق بـ : جَهَّز

بأخ : متعلق بـ : ايتُوني، و لكم ومن أبيكم متعلقان بصفة محذوفة لـ : أخ، أي : بأخ ثابتٍ لكم من أبيكم .

لا كيلَ لكم عندي : حرف الجر و ظرف المكان متعلقان بخبر " لا " المحذوفِ، أي : لا كيلَ موجودٌ لكم عندي .

و لا تقرَبون : الواو استئنافية، و لا ناهية جازمة، و النون لِلوِقايَة .

إذا : اسم ظرف مجرد من معنى الشرط، متعلق بـ : يعرفونها، مضاف إلى الجملة التي بعدها، أي : عند انقلابهم .

منع منا الكيل : أي سَيُمْنَع منا الكيلُ، وقَعَ الماضي موقِعَ المستقبل لِتاكيدِ مَا سَيَقَعُ، أشارُوا بِهذا القول إلى قول يوسفَ : فإن لم تأتوني به فلا كيلَ لكم .

نكتل : مضارع مجزوم، لأنه جواب الطلب .

الترجمة

আর ইউসুফের ভাইয়েরা এলো, অনন্তর তার সামনে হাজির হলো। তখন তিনি তাদেরকে চিনে ফেললেন, অথচ তারা তাকে চিনতে পারলো না।

আর যখন তিনি সরবরাহ করলেন তাদেরকে তাদের সামগ্রী তখন বললেন, তোমরা আমার কাছে নিয়ে এসো তোমাদের পিতার ঔরসজাত তোমাদের এক ভাইকে। তোমরা কি দেখছো না যে, আমি পূর্ণ করে দেই 'পরিমাপপাত্র', আর আমি (মেহমান) সমাদরকারীদের সর্বোত্তম।

তবে যদি তোমরা না আনো আমার কাছে তাকে তাহলে তোমাদের জন্য আমার কাছে কোন বরাদ্দ নেই, আর তোমরা আমার কাছেও ভিড়বে না।

তারা বললো, অবশ্যই আমরা সম্মত করার চেষ্টা করবো তার বিষয়ে তার পিতাকে, এবং আমরা অবশ্যই তা করবো।

আর ইউসুফ বললেন তার সেবকদেরকে, তোমরা রেখে দাও তাদের পণ্যমূল্য তাদের সওয়ারিতে। সম্ভবত তারা তা চিনতে পারবে, যখন তারা ফিরে যাবে তাদের পরিবারে, (তখন) সম্ভবত তারা ফিরে আসবে।

অনন্তর যখন তারা ফিরে এলো তাদের পিতার কাছে তখন বললো, হে (আমাদের) আব্বা! আমাদের জন্য বরাদ্দ নিষিদ্ধ করা হয়েছে। সুতরাং প্রেরণ করুন আমাদের সঙ্গে আমাদের ভাইকে, যাতে আমরা (আমাদের বরাদ্দ) মেপে নিতে পারি। আর অবশ্যই আমরা তাকে হেফাজত করবো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) دخلوا عليه (তার সামনে হাজির হলো)

على অব্যয়যোগে دخل এর এ অর্থই হয়। থানবী (রহ) লিখেছেন, তারা ইউসুফের কাছে পৌছলো।

কিন্তু শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তারা তার কাছে প্রবেশ করলো। এখানে 'অতিশাব্দিকতা' রয়েছে, এর প্রয়োজন নেই। থানবী (রহ) আশ্চর্যজনকভাবে এখানে প্রতিটি সর্বনামের পরিবর্তে 'ইউসুফ' নামটি ব্যবহার করেছেন। লিখেছেন, ইউসুফের ভাইয়েরা এলো, তারপর ইউসুফের কাছে পৌছলো

তখন ইউসুফ তাদেরকে চিনে ফেললেন, কিন্তু তারা ইউসুফকে চিনলো না।

সম্ভবত তিনি 'প্রিয়নাম'রূপে বারংবার তা উচ্চারণ করেছেন। শায়খুলহিন্দ (রহ) অবশ্য সর্বনামই ব্যবহার করেছেন। 'চিনে ফেললেন' দ্বারা দেখামাত্র চেনার দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে। 'চিনতে পারলো না' দ্বারা 'চেনা উচিত ছিলো' বোঝানো হয়েছে।

و هم له منكرون (অথচ তারা তাকে চিনলো না) مثبت এর তরজমা منفي করা হয়েছে বাংলা (এবং উর্দূর) শব্দদৈন্যের কারণে। অবশ্য এ তরজমা কিছুটা গ্রহণযোগ্য হতে পারে, 'অথচ তারা তাকে অপরিচিত ভাবলো।'

(খ) بأخ لكم من أبيكم (তোমাদের পিতার ঔরসজাত তোমাদের এক ভাইকে) থানবী (রহ) লিখেছেন, তোমরা তোমাদের বৈমাত্রেয় ভাইকে। এটি ভাবতরজমা। কিতাবের তরজমাটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর।

(গ) أوف الكيل (পূর্ণ করে দেই পরিমাপপাত্র) এখানে الكيل কে ما يكال به অর্থে গ্রহণ করা হয়েছে।

এটিকে مصدر অর্থে গ্রহণ করে এ তরজমা করা যায়– আমি পরিমাপকে পূর্ণ করি।

(ঘ) فلا كيل لكم عندى (তাহলে তোমাদের জন্য আমার কাছে কোন বরাদ্দ নেই) একটি বাংলা তরজমায় আছে– তবে আমার নিকট তোমাদের জন্য কোন বরাদ্দ থাকবে না– এখানে অপ্রয়োজনে কোরআনের তারতীব পরিবর্তন করা হয়েছে।

كيل দ্বারা এখানে পরিমাপপাত্রের পরিবর্তে পরিমাপকৃত সামগ্রী বোঝানো হয়েছে। তাই 'বরাদ্দ' তরজমা করা হয়েছে। 'কোন খাদ্য নেই' এ তরজমা হতে পারে।

(ঙ) سنراود عنه اباه (অবশ্যই আমরা সম্মত করার চেষ্টা করবো তার বিষয়ে তার পিতাকে) এখানে 'প্ররোচিত করবো' ব্যবহার করা সঙ্গত নয়। 'উদ্বুদ্ধ করবো' চলতে পারে।

(চ) رحال এর তরজমা 'সওয়ারি' হতে পারে। সওয়ারিতে রক্ষিত সামানপত্রও হতে পারে।

(ছ) إذا انقلبوا إلى أهلهم (যখন তারা ফিরে যাবে তাদের

পরিবারে) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন, 'নিজেদের ঘরে'। একটি বাংলা তরজমায় আছে– যখন তারা গৃহে পৌছবে। এগুলো শব্দানুগ তরজমা নয়। একটি তরজমায় আছে, 'স্বজনদের কাছে' – এটি গ্রহণযোগ্য।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ أَنْكَرَ

٢ - علام عطف قوله : وجاءَ إخوة يوسف

٣ - بم يتعلق قوله : لكم من أبيكم

٤ - عَرِّفِ الفاءَ في قوله : فأرسل مَعَنا أَخانا

٥ - عَرَفَهم و هم له منكرون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - سنراود এর সঙ্গত ও অসঙ্গত তরজমা আলোচনা করো

(٣) قال هل اٰمَنُكم عليه اِلَّا كما اَمِنْتُكم على اَخِيه مِنْ قَبلُ، فالله خَيرٌ حِفظًا و هو اَرْحَمُ الرّٰحمين * وَ لما فَتَحوا مَتاعَهم وَجدوا بِضاعَتَهم رُدَّت اِليهم، قالوا يٰاَبانا ما نَبْغِي، هذه بِضاعَتُنا رُدَّتْ اِلينا، وَ نَمِير اَهْلَنا و نَحْفَظ اَخانا و نَزْدادُ كَيلَ بعيرٍ، ذلك كيلٌ يَسير * قال لَنْ اُرسِلَه مَعَكم حتى تُؤتونِ مَوْثِقًا من اللّٰه لَتَاتُنَّني به اِلَّا اَنْ يُحاطَ بِكم، فَلَمَّا اٰتَوه مَوثِقَهم قال اللّٰه على ما نَقول وَكيل * وَ قال يٰبَنِيَّ لا تدخُلوا من باب وَاحِدٍ وَ ادخُلوا مِنْ اَبوابٍ مُتفَرِّقة، و ما اُغنِي عَنكم مِنَ اللّٰه مِنْ شيءٍ، اِنِ الحكمُ اِلَّا لِلّٰه، عليه توكلتُ، و عليه فَلْيَتَوكَّلِ المتوكلون *

بيان اللغة

نَمير : مارَ أهلَه (ض، مَيْرًا) أعد لهم المِيْرَةَ، أي الطعامَ اِمتار لِأَهلِه أو لنفسه : جمع الميرةَ

রসদ المِيرة : الطعام يجمع للسفَر و نحوِه

مَوثِقًا : (عَهْدًا) ج مَواثِقُ . الميثاق ج مَواثيق . العهد

متفرِّقةٍ : (مختَلِفَةٍ)

بيان الإعراب

إلا : أداة حصر، كما آمِنتُكم، أي : إلا أَمْنًا كأَمْني إيَّاكم على أَخيه . و الكاف، حرف أو اسم .

حافِظًا : تمييز أو حال

رُدت إليهم : الجملة في محل نَصب حال من مفعول وَجَدوا ، و إذا كان وَجَدَ بمعنى عَلِم، كما يقال : وجد الحِلْمَ نافعا ، فالجملة في محل مفعول وجدوا الثاني، أي : وجدوا البِضاعَةَ مردودةً .

ما نبغِي : ما اسم استفهام في محل نصب مفعول مقدم لـ : نبغي، أي : أيَّ شيءٍ من الكرامَة و الإحسان نَبغي و نطلُب ؟

و يجوز أن تكون حرفَ نفيٍ، أي : لا نَبغي شيئًا بعدَ هذا الإحسان .

هذه : مبتدأ، و بضاعتنا خبر، أو بدل من هذه، و الجملة خبر .

و نمير : الجملة معطوفة على محذوفة، أي : نَستعين بهذه البِضاعَة و نَمير أهلَنا .

كيلَ بعيرٍ : تمييز من نسبةِ نزداد، و إذا كان هذا الفعل مِن : ازداد شيئًا له (أي : زادَه لِنَفسه) فكيلَ بعير مفعول به لـ : نزداد .

موثقا : مفعول به ثان لـ : تؤتوني ؟

لَتَأتُنَّني : اللام واقعة في جواب القسَم الذي يدل عليه قوله : موثقا من الله .

و تَأتون مضارع مرفوع بثبوت نون الإعراب، و قد حذفت لاجتماع نونات .

و حذفت واو الجماعة لالتقاء الساكنين، و النون المشددة للتوكيد، و النون الأخيرة للوِقاية، و ياء المتكلم مفعول به .

إلا أن يُحاطَ بكم : إلا أداة استثناء، و المصدر المؤول مستثنًى من عُموم

الأحوال، أي : لَتأتُنَّني به كلَّ حالٍ إلا حالَ الإحاطَةِ بكم .

و ما أُغنِي عنكم مِنَ اللّٰهِ من شَيءٍ : من الله، أي : من عذاب الله، متعلق بمحذوف، حال من : شيءٍ، و هو مجرور لفظًا منصوب محلا على أنه مفعول به، لأن المعنى : ما أدفَعُ عنكم شيئًا من عذاب الله .

الترجمة

তিনি বললেন, আমি কি বিশ্বাস করবো তোমাদেরকে তার বিষয়ে, পূর্বে তার ভাইয়ের বিষয়ে তোমাদেরকে বিশ্বাস করারই মত। যাই হোক, আল্লাহই সর্বোত্তম, হিফাজতকারী হিসাবে এবং তিনিই দয়ালুদের শ্রেষ্ঠ দয়ালু।

আর যখন খুললো তারা তাদের সামান, তখন দেখতে পেলো যে, তাদের পণ্যমূল্য ফেরত দেয়া হয়েছে তাদেরকে। তারা বললো, হে (আমাদের) আব্বা, আমরা কী চাই! এই যে আমাদের পণ্যমূল্য, তা ফেরত দেয়া হয়েছে আমাদেরকে। (আমরা অবশ্যই যাবো) এবং রসদ আনবো আমাদের পরিবারের জন্য এবং হেফাযত করবো আমরা আমাদের ভাইকে এবং অতিরিক্ত আনবো এক উটের (পরিমাণ) খাদ্যসামগ্রী। আর (বাদশাহর পক্ষে) তা খুবই সামান্য খাদ্যশস্য।

তিনি বললেন, কিছুতেই পাঠাবো না আমি তাকে তোমাদের সঙ্গে, যতক্ষণ না তোমরা প্রদান করবে আমাকে অঙ্গীকার আল্লাহর পক্ষ হতে যে, তোমরা তাকে আমার কাছে অবশ্যই নিয়ে আসবেই; তবে তোমাদেরকে (বিপদাপদ দ্বারা) ঘিরে ফেলা অবস্থায়। তো যখন তারা প্রদান করলো তাকে তাদের অঙ্গীকার তখন তিনি বললেন, আল্লাহ, আমরা যা বলছি তার উপর নেগাহবান।

আর তিনি বললেন, হে আমার পুত্রগণ, তোমরা প্রবেশ করো না এক দরজা দিয়ে, বরং প্রবেশ করো বিভিন্ন দরজা দিয়ে। আর আমি হটাতে পারবো না তোমাদের থেকে আল্লাহর আযাব হতে কোন কিছু। বিধান তো শুধু আল্লাহরই, তাঁরই উপর আমি ভরসা করেছি, আর তাঁরই উপর যেন ভরসা করে ভরসাকারীরা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) هل أٰمَنكم عليه إلا كما أمِنتكم على أخيه من قبل (আমি কি তোমাদেরকে বিশ্বাস করবো তোমরা আমাকে অঙ্গিকার তার

বিষয়ে, পূর্বে তার ভাইয়ের বিষয়ে তোমাদেরকে বিশ্বাস করারই মত) থানবী (রহ)-এর তরজমা এরকম– বস্, তার সম্পর্কেও আমি তোমাদেরকে তেমনই বিশ্বাস করছি, যেমন এর পূর্বে তার ভাই সম্পর্কে তোমাদেরকে বিশ্বাস করেছি।

এটি সরল অনুবাদ।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা– আমি কি বিশ্বাস করবো তার সম্পর্কে তোমাদেরকে, কিন্তু যেমন বিশ্বাস করেছিলাম তার ভাই সম্পর্কে এর পূর্বে।

এটি প্রায় মূলানুগ তরজমা। কিতাবে পূর্ণ মূলানুগ তরজমা করা হয়েছে।

উভয় শায়খ قبل এর مضاف إليه সহ তরজমা করেছেন।

সরল তরজমা এমন হতে পারে– আমরা কি তার বিষয়ে তোমাদেরকে বিশ্বাস করবো, যেমন ইতিপূর্বে তার ভাইয়ের বিষয়ে তোমাদেরকে বিশ্বাস করেছি?

(খ) فالله خير حافظا (আল্লাহই সর্বোত্তম, হিফাযতকারী হিসাবে) এ তরজমা মূল তারকীবানুগ।

থানবী (রহ) তামীযকে ছিফাতরূপে তরজমা করে লিখেছেন; আল্লাহই সবচেয়ে বড় হিফাযতকারী।

তিনি خير এর তরজমা করেছেন মূল থেকে সরে গিয়ে।

(গ) يا أبانا হে (আমাদের) আব্বা– বন্ধনী দ্বারা ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, বাংলা তরজমায় যামীরটির অনুল্লেখ উত্তম।

(ঘ) هذه بضاعتنا (এই যে আমাদের পণ্যমূল্য, আমাদেরকে তা ফিরিয়ে দেয়া হয়েছে) এখানে بضاعتنا কে هذه এর বদল রূপে তরজমা করা হয়েছে। এটি শায়খায়নের তরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– এ হলো আমাদের প্রদত্ত পণ্যমূল্য, আমাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হয়েছে।

এখানে بضاعتنا কে খবর এবং جملة স্বতন্ত্র বাক্যরূপে তরজমা করা হয়েছে। তবে 'প্রদত্ত' শব্দটির ব্যাকরণগত কোন প্রয়োজন ছিলো না।

(ঙ) و نميـر أهلنا (আমরা অবশ্যই যাবো) এবং আমাদের পরিবারের জন্য রসদ আনবো– বন্ধনীটি আতফের ব্যাকরণগত প্রয়োজনে যুক্ত হয়েছে।

(চ) تؤتون موثقا من الله (প্রদান করবে তোমরা আমাকে অঙ্গিকার

আল্লাহর পক্ষ হতে) এটি তারকীবানুগ তরজমা।
থানবী (রহ) লিখেছেন, আল্লাহর কসম করে/খেয়ে পাকা ওয়াদা করবে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন 'যতক্ষণ না তোমরা প্রদান করবে আমাকে আল্লাহর প্রতিশ্রুতি'।
একটি বাংলা তরজমায় আছে– যতক্ষণ না তোমরা আমার কাছে আল্লাহর নামে ওয়াদা করবে।
এগুলো মূলানুগ তরজমা নয়, এবং এ পরিবর্তন অনিবার্য নয়।

(ছ) لتأتنني به (তোমরা তাকে আমার কাছে অবশ্যই নিয়ে আসবেই) দু'টি তাকীদ অব্যয়ের প্রেক্ষিতে এ তরজমা করা হয়েছে।
থানবী (রহ) লিখেছেন, ضرور لے هي آؤگے (অবশ্যই নিয়েই আসবে)
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, অবশ্যই তাকে আমার কাছে পৌঁছে দেবে। তিনি একটি তাকীদ অব্যয় ব্যবহার করেছেন এবং ফেয়েলের শব্দানুগ তরজমা রক্ষা করেননি।

(জ) إلا أن يحاط بكم (তবে তোমাদেরকে ঘিরে ফেলা অবস্থায়) এটি ব্যাকরণসম্মত তরজমা।
একটি বাংলা তরজমায় আছে, অবশ্য যদি একান্ত অসহায় হয়ে না পড়ো, এটি ভাবতরজমা এবং সহজবোধ্য।
'তবে যদি তোমরা বিপদ বেষ্টিত হয়ে পড়ো' – এ তরজমা হতে পারে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة نمير
٢ – أعرب رُدَّتْ إليهم في قوله تعالى : وَجَدُوا بِضاعَتَهم ...
٣ – أعرب قوله : ما نبغي
٤ – أعرب قوله : كَيلَ بعير
٥ – فالله خير حافظا এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – موثقا من الله এর তরজমাগুলো আলোচনা করো

(٤) وَ رَفَعَ اَبَوَيْهِ علي العرشِ و خَرُّوا له سُجَّدا ، و قال يٰاَبَتِ هذا تَاوِيلُ رُءْيايَ مِنْ قبلُ، قد جعَلَها ربي حقا ، وَ قد احسَنَ بي

إذ أَخْرَجَنِي مِنَ السجنِ و جاءَ بِكم مِنَ البَدوِ مِن بَعدِ أَنْ نزغَ الشيطٰن بَينِي و بَيْنَ إخوتي، إن ربي لَطيف لما يَشاء، إنه هو العَليم الحكيم * رَبِّ قد آتيْتَني مِنَ الملك وَ علَّمتني مِن تَاويل الأحاديث، فاطِرَ السمٰوٰت و الارضِ، أنت وَلِيِّ في الدنيا وَ الآخِرَة، توفَّني مسلمًا و أَلحِقني بالصّٰلحين * ذلك مِن أَنباء الغَيْبِ نُوحيه اليك، و ما كنتَ لديهم إذ أَجْمَعوا أمْرَهم و هم يَمكُرون *

بيان اللغة

خَرَّ (ض، خَرًّا) سقَط و وقَع، يقال خَرَّ ساجدًا

البدو : البادية، أهل البادية — পল্লী, মরুপল্লী। পল্লীবাসীগণ

البادية : فَضاء واسِع فيه المرعٰى و الماءُ، و تطلَق على أهل البادية

উন্মুক্ত প্রান্তর, যেখানে চারণভূমি ও জলাশয় রয়েছে।

মরুপল্লীর অধিবাসীদেরও البادية বলা হয়

وَ النسبة إليها بَدَوِي (على غَيرِ قياسٍ)

البَداوة : الحياة في البادِيَة — মরুজীবন, যাযাবর জীবন

نَزغَ بينَ القومِ : (ف، ض، نَزْغًا) أفسَد و حمَل بعضَهم على بعضٍ ·

نزغَه إلى المعَاصي : حَثَّه و حَرَّضه عليها

لَطيف : غامض و خَفِيٌّ — সূক্ষ্ম ও নিগূঢ় : رَقيق — কোমল ও সদয়

: غَيرُ خشِنٍ — কোমল ও মসৃণ

: غيرُ كثيفٍ (الهواء لَطيف) — বায়বীয়

اللطيف من أسماء الله تعالى : الرفيق بالعباد و العالم بدقائق الأمور

بيان الإعراب

أبت : منادى مضاف منصوب بالفتحة الظاهرة، و التاء بدل من ياء المتكلم، فلا يقال : يا أبتي، لأن البدَلَ لا يجتَمِع مع أصلِه ·

من قبل : متعلق بمحذوف، حال من المصدر المضاف : رؤياي، و المعنى :
رُؤيايَ التي كانت من قبلُ، و العامل فيها "هذا"، أي : أشير إلى
تأويلِ رُؤيايَ كائنةً من قبل ·
قد جعلَها ربي حَقا : حال، و حَقًّا صفةُ مصدَرٍ محذوفٍ، أي : جَعْلًا
حَقًّا، و يجوز أن يكونَ جعَل بمعنى صَيَّر، فـ : حقا حينئذٍ
مفعول به ثان ·
قد أحسَنَ بي : أي : أحسَنَ إلَيَّ، و إذ ظرف لـ : أحسن .
من المُلْك و من تأويل الأحاديث : من للتبعيض، أي : بعضَ الملك و
بعضَ التاويل
فاطرَ السمٰوٰت : أي : يا فاطِرَ السمٰوٰت
في الدنيا : متعلق بـ : ولي
ذلك من أنباء الغيب : مبتدأ و خبر، و نوحيه إليك خبر ثان ·
لديهم : متعلق بخبر كنت، أي : موجودًا لديهم، و إذ متعلق به أيضا ·

الترجمة

আর তিনি উঠালেন তার আম্মা-আব্বাকে সিংহাসনের উপর। আর তারা তাঁর উদ্দেশ্যে সেজদায় পড়ে গেলো। আর তিনি বললেন, হে (আমার) প্রিয় আব্বা, এ হলো আমার পূর্ববর্তী স্বপ্নের ব্যাখ্যা, অবশ্যই আমার প্রতিপালক তা সত্য করেছেন, আর তিনি অনুগ্রহ করেছেন আমার প্রতি, যখন তিনি আমাকে বের করেছেন কারাগার থেকে এবং আপনাদেরকে নিয়ে এসেছেন পল্লী থেকে, আমার মাঝে এবং আমার ভাইদের মাঝে শয়তান কলহ সৃষ্টি করার পর। নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক যা ইচ্ছা করেন তার জন্য কুশলী হয়ে থাকেন। অবশ্যই তিনি পূর্ণ অবহিত, মহাপ্রজ্ঞাময়।

হে আমার প্রতিপালক, অবশ্যই দান করেছেন আপনি আমাকে রাজত্বের বিরাট অংশ এবং শিক্ষা দিয়েছেন আমাকে কথার তাৎপর্য বর্ণনার বিরাট যোগ্যতা। হে আসমান ও যমীনের স্রষ্টা, আপনিই আমার অভিভাবক দুনিয়াতে এবং আখেরাতে। ওয়াফাত দান করুন আপনি আমাকে মুসলিম অবস্থায় এবং যুক্ত করুন আমাকে সৎ লোকদের সঙ্গে।

ওসব হলো গায়বের খবরসমূহের অন্তর্ভুক্ত, যা (এখন) আমি অহী

(যোগে প্রেরণ) করি আপনার কাছে। আর আপনি তো ছিলেন না তাদের কাছে যখন তারা তাদের সিদ্ধান্তকে সুদৃঢ় করেছিলো, এবং চক্রান্ত করছিলো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) رفع أبويه على العرش (তিনি ওঠালেন তার আম্মা-আব্বাকে সিংহাসনের উপর)

এখানে رفع এর শব্দানুগ তরজমা করা হয়েছে। শায়খায়ন লিখেছেন, তখতের উপর উচ্চ করে বসালেন।

বসানোর অর্থটি শব্দ থেকে নয়, বরং সাধারণ অবস্থা থেকে গৃহিত, কিন্তু কিতাবের তরজমায় শব্দকে তার নিজস্ব অর্থের উপর রাখা হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– সিংহাসনের উপর বসালেন– এতে رفع এর মূল অর্থটি বাদ পড়েছে। 'উপনীত করলেন' – এ তরজমা করা যায়।

(খ) هذا تأويل رؤياي من قبل (এ হলো আমার পূর্ববর্তী স্বপ্নের ব্যাখ্যা) এখানে من قبل এই 'হাল' কে ছিফাতরূপে তরজমা করা হয়েছে তরজমার সরলতা রক্ষার উদ্দেশ্যে।

থানবী (রহ) লিখেছেন, এ হলো আমার স্বপ্নের ব্যাখ্যা যা পূর্ববর্তী সময়ে দেখেছিলাম।

এ তরজমার ভিত্তি এই যে, من قبل হচ্ছে উহ্য رأيتها এর সাথে متعلق

(গ) من الملك শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, 'রাজত্বের কিছু অংশ'। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন 'রাজত্বের বিরাট অংশ'।

প্রকৃতপক্ষে তা সমগ্র পৃথিবীর রাজত্বের তুলনায় সামান্য ছিলো, কিন্তু ইউসুফ (আঃ)-এর দৃষ্টিতে তার নিজের জন্য এটা ছিলো বিরাট। আর بعض এর অর্থে যেহেতু দুটোরই সম্ভাবনা রয়েছে সেহেতু উভয়ে আলাদা আলাদা দৃষ্টিকোণ থেকে তরজমা করেছেন।

বাংলা তরজমাগুলোতে রয়েছে, রাজ্য দান করেছেন, অর্থাৎ من অব্যয়টিকে অতিরিক্ত ধরা হয়েছে। ফলে একটি সূক্ষ্ম ইঙ্গিত তরজমা থেকে বাদ পড়েছে।

(ঘ) من تأويل الأحاديث (কথার তাৎপর্য বর্ণনার বিরাট যোগ্যতা) থানবী (রহ) এটিকে স্বপ্নের ব্যাখ্যাগত জ্ঞানের সাথে খাছ করেছেন। তিনি লিখেছেন, এবং আমাকে 'স্বপ্নের ব্যাখ্যা করা' শিক্ষা দান করেছেন।', কিন্তু শায়খুলহিন্দ (রহ) এটিকে সামাগ্রিকভাবে কথার তাৎপর্য বর্ণনার যোগ্যতা অর্থে গ্রহণ করেছেন, স্বপ্নের ব্যাখ্যাগত জ্ঞান যার অংশমাত্র।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ البَدْوِ و أخَواتها

٢ – اشرح إعرابَ أبتِ

٣ – أعرب كلمةَ حقًّا

٤ – أعرب كلمة إذ في الاية : و ما كنت لديهم إذ أجمعوا أمرهم

٥ – من الملك এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – تأويلِ الأحاديث এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) المر، تلك اٰيٰتُ الكتٰبِ، و الذي اُنزِلَ اليك من ربك الحَقُّ و لٰكن
اكثَرَ الناس لا يؤمنون * اللّٰه الذي رفَع السمٰوٰت بِغيرَ عَمَدٍ
تَرونَها ثم استَوى على العَرشِ و سَخَّر الشمسَ و القمَرَ، كلٌّ
يَجري لِأجَلٍ مُسمًّى، يُدبِّر الأمْرَ يفصِّل الاٰيٰتِ لعلَّكم بِلِقاء
ربكم تُوقِنون * وَ هو الذي مَدَّ الأرْضَ و جعَل فيها رَواسِيَ و
اَنْهٰرًا، وَ مِنْ كُلِّ الثمٰرٰتِ جَعَل فيها زَوْجَينِ اثنَينِ يُغشِي
الَّيلَ النهارَ، اِنَّ في ذلك لَاٰيٰتٍ لقومٍ يتفكرون *

بيان اللغة

عَمُود : عِماد، كل ما رَفَع شيئًا و حَمَله، (و الجمع) أعمِدة و عُمُد و عَمَدٌ
খুঁটি, স্তম্ভ

رَواسِيَ : رسا الشيءُ (ن، رَسْوًا، رُسُوًّا) : ثَبَتَ — স্থির হলো, অবিচল / সুদৃঢ় হলো

رَسا الجبلُ : ثَبَتَ أصلُه في الأرضِ — পাহাড় অটল হলো

رسَتْ قَدَمُه : ثَبَتَت في الحربِ و غيرِها

رسَتِ السفينةُ : وقفَت عن السير

أرسى الشيءُ : رسا، يقال : أرسَتِ السفينةُ

أرسى شيئًا : أثبَته — স্থির করলো, অটল করলো, গাড়লো

يقال : أرسَيْتُ السفينةَ، أرسيتُ الوَتَدَ في الأرض

راسٍ (الراسي) ج رَواسٍ (الرواسي) الثابِتُ الراسِخ — স্থির, অটল,

راسِية (مؤنث الراسي) ج : رَاسِيات — নোঙ্গর করা (জলযান)

يُغشِي اللَّيلَ النهارَ (أي يَجعَل الليلَ يَغشٰى النهارَ، فيأتي الظلامُ بعد الضياءِ) — রাত্রকে এমন করেন যে, তা দিনকে ঢেকে ফেলে, ফলে আলোর পর অন্ধকার আসে

غَشِيَ الليلُ (س، غَشًا) : أظلم

غَشي الأمرُ فلانًا (غَشًا و غَشْيًا) — বিষয়টি তাকে আচ্ছন্ন করে ফেললো

يقال : غشِيه النعاسُ، غشيه الموج، غشيه الموت

غشي المكانَ : أتاه

غشي الأمرَ : باشره — বিষয়টি সম্পাদন করলো

أغشٰى الليلُ : غَشِيَ

أغشى اللّٰهُ بصرَه : جعل عليه غِشاءً يُغَطِّيه

أغشى فلانًا الأمرَ : جعله يَغْشٰى الأمرَ — অমুককে বিষয়টি সম্পাদন করার কাজে লাগালো

غَشّٰى الشيءَ / على الشيءِ : ألقى عليه غِشاءً

بيان الإعراب

تلك : اسم إشارةٍ مبنيٌّ على السكون الظاهر على الياء، و هي محذوفة لالتقاء الساكنين، و اللام للبعد، و الكاف للخطاب، و الإشارة إلى آيات السورة . و هي في محل رفع مبتدأ، و آيات الكتاب خبر .

و الذي أنزل : الموصول مع صلته مبتدأ، و الحق خبره،

الله الذي رفع : لفظ الجلالة مبتدأ و الموصول خبره . و يجوز أن يكون الموصول نَعتا لِلفظ الجلالَة، و جملةٌ يدبر الأمرَ خبرٌ لفظِ الجلالَة .

بِغير عمَدٍ : متعلق بـ : رفع، و يجوز أن يكون هذا الجار و المجرور في محل نصب في معنى الحال، أي : رفَعَها خاليةً عن أعمدة، أو رفعَها غيرَ معتمِدة على شيءٍ .

ترونها : الجملة حال من السمٰوت، و إذا اختلف زمانُ الحال، سُميت الحال مقدَّرةً، كما ترى هنا، فإننا لم نُخلَق حينَ الرفع .

و يجوز أن تكون صفة لـ : عمد، و الضمير عائد إلى العمد، و يجوز أن تكون مستأنفة .

استوى : عطف على : رفع بـ : ثم، و سخر عطف على : استوى .

كل يجري : الجملة الإسمية في محل نَصبٍ حالٌ من مفعولِ سَخَّر .

و من كل الثمرات : متعلق مقدم بـ : جعل، أو متعلق بمحذوف هو حال مِن اثنَين، لأنه في الأصل صفته، أي : زوجَينِ اثنَين معدودَينِ من كل الثمرات .

الترجمة

আলিফ-লাম- মীম-রা। ঐ গুলো হচ্ছে কিতাবের আয়াত। আর যা কিছু আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে অবতীর্ণ করা হয়েছে সেটাই সত্য, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ ঈমান আনে না।

আল্লাহ (ঐ মহান সত্তা) যিনি সমুচ্চ করেছেন আসমানসমূহকে এমন 'স্তম্ভদল' ছাড়া যা তোমরা দেখতে পাবে। তারপর তিনি সমাসীন হয়েছেন আরসে এবং নিয়ন্ত্রণাধীন করেছেন সূর্য ও চন্দ্রকে, (এমনভাবে যে,) প্রতিটি ভেসে চলে একটি নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত। তিনি পরিচালনা করেন সকল বিষয় (এবং) বিশদভাবে বর্ণনা করেন প্রমাণাদি, যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের সাক্ষাৎকে বিশ্বাস করো।

তিনিই (ঐ মহান সত্তা) যিনি বিস্তৃত করেছেন ভূমিকে এবং তাতে সৃষ্টি করেছেন স্থির পর্বত ও নদীসমূহ, এবং তাতে প্রত্যেক প্রকার ফল থেকে সৃষ্টি করেছেন দুটি করে জোড়া। তিনি আচ্ছাদিত করেন

দিনকে রাত্র দ্বারা। নিঃসন্দেহে তাতে রয়েছে বিভিন্ন নিদর্শন এমন সম্প্রদায়ের জন্য যারা চিন্তা করে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) تلك (ঐগুলো) এর তরজমা সকলেই করেছেন, 'এইগুলি' তাতে মর্যাদাগত দূরবর্তিতার প্রতি ইঙ্গিতটি অপ্রকাশিত থেকে যায়।

(খ) آيت الكتب থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, এক বিরাট কিতাবের আয়াতসমূহ। তিনি বলেন, الكتاب কে مطلق বা নিঃশর্তরূপে উল্লেখ করা দ্বারা বিরাটত্ব ও পূর্ণতার অর্থ প্রকাশ পায়। যেন এটাই একমাত্র কিতাব, আর কোন কিতাব নেই। একটি বাংলা তরজমায় আছে, কোরআনের আয়াতসমূহ, কিন্তু প্রশ্ন হলো ايت القرآن না বলে ايت الكتب কেন বলা হয়েছে? তরজমায় সেটা অবশ্যই বিবেচনায় রাখতে হবে।

(গ) أنزل (অবতীর্ণ করা হয়েছে) এর তরজমা থানবী (রহ) 'নাযিল করা হয়' কেন লিখেছেন, তা উল্লেখ করেননি। সম্ভবত কারণ এই যে, কোরআনের অবতরণ তখনো অব্যাহত ছিলো। শায়খুলহিন্দ (রহ) অতীতক্রিয়া ব্যবহার করেছেন, তবে তিনি اترا (অবতীর্ণ হয়েছে) লিখেছেন।
والذي এর তরজমা শায়খায়ন লিখেছেন, 'যা কিছু' অর্থাৎ তারা সামগ্রিকতার দিকটি নির্দেশ করেছেন।
কোন কোন বাংলা তরজমায় আছে, যা অবতীর্ণ হয়েছে।

(ঘ) يجري (ভেসে চলে) অন্যদের মত কিতাবের তরজমায় আবর্তন শব্দটি ব্যবহার করা হয়নি, যা চক্রাকারে ভ্রমণ বোঝায়। এর আরবী প্রতিশব্দ হলো يدور (প্রদক্ষিণ করে) শায়খায়ন তরজমা করেছেন, چلتا ہے / چلتا رهتاهے (চলে/ চলতে থাকে)
এতে বোঝা যায় যে, একেকটির চলার রূপ একেক রকম হতে পারে।

(ঙ) يفصل الآيت (বিশদভাবে বর্ণনা করেন প্রমাণাদি) শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, নিদর্শনসমূহ প্রকাশ করেন।
থানবী (রহ) লিখেছেন, প্রমাণাদি ছাফছাফ বয়ান করেন।

(চ) رواسي এর তরজমা প্রায় সকলেই পাহাড়/পর্বত করেছেন।

তাতে رواسي এর শব্দগত অর্থটি প্রকাশ পায় না। তাই স্থির পর্বত তরজমা করা হয়েছে।
থানবী (রহ) এখানে جعل কে خلق (সৃষ্টি করেছেন) অর্থে গ্রহণ করেছেন। আর শায়খুলহিন্দ (রহ) وضع (স্থাপন করেছেন) অর্থে গ্রহণ করেছেন।
'স্থাপন করেছেন' কথাটা পবর্তের ক্ষেত্রে প্রযুক্ত হলেও أنهار -এর ক্ষেত্রে সুপ্রযুক্ত নয়। পক্ষান্তরে সৃষ্টি করেছেন কথাটি উভয়ের ক্ষেত্রে সুপ্রযুক্ত।

أسئلة :

١ – اشرح مادةَ كلمةِ رواسي

٢ – أعرب قوله : بغير عمد

٣ – اشرح محل إعراب الجملة "ترونها"

٤ – بم يتعلق قوله : و من كل الثمرات ؟

٥ – آيٰت الكتٰب এর তরজমা সম্পর্কে থানবী (রহ)-এর মতামত উল্লেখ করো

٦ – يجري এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) لِلذين استَجابوا لِربهم الحُسنٰى، و الذين لم يستَجيبُوا له لو اَنَّ لهم ما في الارض جميعًا و مثلَه معه لَافْتَدوا به، اولٰئك لهم سُوء الحِساب، و مَاوٰىهم جَهنَّم، و بِئس المِهاد * اَفَمَن يَّعلم اَنَّما اُنزِل اليك مِن ربك الحقّ كَمَنْ هو اَعْمٰى، اِنما يتذكر اُولوا الالبابِ * الذين يُوفون بِعَهْدِ اللّٰهِ و لا ينقُضون الميثاقَ * وَ الذين يَصِلون ما اَمر اللّٰهُ به اَنْ يُوصَلَ و يخشَون ربَّهم و يخافون سُوءَ الحساب * وَ الذين صبَروا ابتِغاءَ وجهِ رَبهم و اَقاموا الصلٰوة و انفَقوا مما رَزقنٰهم سِرًّا و عَلانِيَةً و يدرَءون بالحَسَنةِ السيئةَ اولٰئك لهم عُقبَى الدار * جنّٰتُ عدنٍ يدخلونها و مَن صلَح مِنْ ابائهم و اَزواجهم و ذرِّيّٰتهم و

الملٰئكةُ يدخلون عليهم مِن كلِّ باب * سَلٰم عليكم بِما صبَرتم فَنِعْمَ عُقْبَى الدار * وَ الذين ينقُضون عهدَ الله مِن بعد ميثاقِه وَ يقطَعون ما أمَرَ اللّٰهُ به أنْ يُوصَلَ و يُفسِدون في الأَرض، اولئك لهم اللَّعنة و لهم سُوء الدار * الله يبسُط الرزقَ لمن يَشاء و يَقْدِر، و فَرِحوا بالحيٰوة الدنيا، وَ ما الحيٰوة الدنيا في الاٰخِرة إلاَّ مَتاع *

بيان اللغة

وَصَل شيئًا بِشيءٍ (ض، وَصْلًا) : ضَمَّه به، جمعه به — কিছুকে কিছুর সাথে সংযুক্ত করলো

وَصَل فُلانًا (وَصْلًا، صِلَةً) ضِدُّ هَجَرَه — তার সাথে সম্পর্ক রক্ষা করলো, সদাচার করলো

وَصَل رَحِمَه : ছিলারেহমী করলো, আত্মীয়তার হক আদায় করলো

دَرَأَ شيئًا و بشيءٍ (ف، دَرْءًا) دفَعه، أبعَده

دَرَأَ عنه شيئًا بكذا : دفعَه عنه

عُقْبٰى : الآخرة، العاقِبة، جزاءُ الأمرِ، آخِرُ كلِّ شيءٍ و خاتِمَتُه ٠

بيان الإعراب

للذين استجابوا لربهم الحسنى : الحسنى مبتدأ مؤخر، و للذين متعلق بالخبر المقدم ٠

الذين لم يَستجيبوا له : الموصول مبتدأ، و جملةُ لو أَنَّ لهم خبر الموصول

أن لهم ما في الأرض جميعا و مثلَه معَه : الموصول مع صلته اسم أن، و مثلَه (أي و مثلَ ما في الأرض) معطوف على اسم أن، و معه متعلق بحال محذوفة، أي :و مثلَه كائنا معه ٠

(و المطلوب منك أن تُعرب المصدرَ المؤول، فقد تقدَّم هذا الإعرابُ أكثرَ من مرةٍ، و أن تُعَيِّن شرطَ لو و جوابَه ٠

أفمن يعلم : الهمزة للاستفهام الإنكاري، و الفاء استئنافية) ٠

و من اسم موصول في محل رفع مبتدأ، و الجملة التي بعده صلته

ما أنزل : الموصول مع صلته اسم أن، و الحقُّ خبرُ أن، و المصدر المؤول في مَحَل نَصبٍ سَدَّ مَسَدَّ مفعولَيْ يَعْلَمُ .

كمن هو أعمى : الكاف اسم بمعنى مثل خبرّ الموصول الأوّل، و جملة هو أعمى خبر الموصول الذي قبلَه، و هذه الجملة في محل جرٍّ بإضافتها إلى الكافِ المِثْلِيّ .

الذين يُوفون .... : الموصول مبتدأ، و خبره اولئك لهم عقبى الدار

و احترازًا عن طول الفصل بين المبتدأ و خبره يجوز أن تقول : إن الموصول نعت أو بدل من أولو الألباب .

و كذا يجوز أن يكون الموصول خبرًا لمبتدأ محذوف، أي : هم الذين، أو مفعولا به لفعل محذوف، أي : أَمدَحُ الذين .

الذين يصلون : معطوف على الموصول الأول . ما موصول و مفعول به لـ : يصلون، و جملة أمر الله به صلته، و مفعول أمر محذوف، أي : ما أمرهم الله .

و به متعلق بـ : أَمَرَ، و الضمير عائد إلى الموصول، و المصدر المؤول : أن يوصل بدل من الضمير العائد .

و أصل العبارة : يَصِلون ما أمرَهم الله بِوَصْلِه

جنّٰت عدنٍ : بدَل من عقبى الدار، أو خبر لمبتدأ محذوف، أي : هي جنت عدن، وجملة يدخلونها حالية، أو جنت عدن مبتدأ و جملة يدخلونها خبر .

و من صلح : معطوف على الضمير المرفوع المتصل، و لا حاجة إلى توكيده بالمرفوع المنفصل لوجود الفصل بالضمير المنصوب .

و يجوز أن يكون الواو للمعية .

من آبائهم : من هذه بيانية تتعلق بحال محذوفة .

و الملائكة : الواو حالية .

سلام عليكم : الجملة مقول قول محذوف، أي : قائلين .

و بما صبرتم يتعلق بفعل محذوف، أي : نُكْرِمكم بِصَبْرِكم.
فنعم عقبى الدار : الفاء الفصيحة، أي : إذا كانت هذه هي العُقْبٰى فَنِعم عقبَى الدار .

الترجمة

যারা সাড়া দিয়েছে আপন প্রতিপালকের আহ্বানে তাদের জন্য রয়েছে উত্তম (প্রতিদান), আর যারা সাড়া দেয়নি তাঁর আহ্বানে, যদি তাদের জন্য হতো যা কিছু পৃথিবীতে আছে, (তা) সমস্ত এবং (হতো) তার সাথে তার অনুরূপ তাহলে অবশ্যই তারা তা মুক্তিপণ দিয়ে দিতো। ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে মন্দ হিসাব। আর তাদের ঠিকানা হলো জাহান্নাম। আর তা কত না মন্দ আবাসস্থান।

তো যারা বিশ্বাস করে যে, আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে যা নাযিল করা হয়েছে তা সম্পূর্ণ সত্য, সে কি তার মত হতে পারে যে অন্ধ! বস্তুত উপদেশ গ্রহণ করে শুধু জ্ঞানের অধিকারীরা।

যারা আল্লাহর (সঙ্গে কৃত) ওয়াদা পূর্ণ করে এবং প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করে না, এবং যারা ঐ সম্পর্ক অক্ষুণ্ন রাখে যা অক্ষুণ্ন রাখার আদেশ আল্লাহ (তাদেরকে) করেছেন এবং ভয় করে আপন প্রতিপালককে এবং আশংকা রাখে মন্দ হিসাবের এবং যারা ছবর করেছে আপন প্রতিপালকের সন্তুষ্টি লাভের জন্য এবং কায়েম করেছে ছালাত এবং আমি তাদেরকে যে রিযিক দান করেছি তা থেকে (আমার রাস্তায়) খরচ করেছে গোপনে ও প্রকাশ্যে এবং (যারা) দূর করে ভালো দ্বারা মন্দকে; ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে আখেরাতের (উত্তম) পরিণাম, অর্থাৎ চিরস্থায়ী বসবাসের বাগবাগিচা। তাতে প্রবেশ করবে তারা এবং তাদের মা-বাবা, স্ত্রীগণ ও সন্তান-সন্ততিদের মধ্য হতে যারা সৎকর্ম করেছে।

আর ফিরেশতাগণ উপস্থিত হবে তাদের সামনে প্রত্যেক দরজা দিয়ে, (আর বলবে) শান্তি হোক তোমাদের প্রতি, তোমাদের ছবর করার কারণে। সুতরাং কত না উত্তম আখেরাতের সুপরিণাম।

আর যারা আল্লাহর (সঙ্গে কৃত) ওয়াদা ভঙ্গ করে তা সুদৃঢ় করার পর এবং কর্তন করে ঐ সম্পর্ক যা আল্লাহ অক্ষুণ্ন রাখার আদেশ করেছেন, এবং ফাসাদ সৃষ্টি করে যমীনে; ওরা, তাদেরই জন্য রয়েছে 'লা'নাত' এবং তাদেরই জন্য রয়েছে আখেরাতের মন্দ পরিণতি।

আল্লাহ রিযিক প্রশস্ত করেন যার জন্য ইচ্ছা করেন এবং সংকুচিত করেন (যার জন্য ইচ্ছা করেন)।
আর এরা উল্লসিত হয়েছে পার্থিব জীবন নিয়ে, অথচ (এই) পার্থিব জীবন আখেরাতের মোকাবেলায় তুচ্ছ ভোগসামগ্রী ছাড়া কিছু নয়।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) استجابوا لربهم (সাড়া দিয়েছে আপন প্রতিপালকের আহ্বানে) শায়খানের তরজমা– যারা মান্য করেছে/ মেনে নিয়েছে আপন প্রতিপালকের আদেশ / কথা।
এখানে مضارع এর তরজমা করা ঠিক নয়, যেমন কেউ কেউ করেছেন। কারণ لو দ্বারা বোঝা যায় যে, এখানে আখেরাতের চিত্র উপস্থিত করা হয়েছে।

(খ) سوء الحساب (মন্দ হিসাব) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর শব্দানুগ তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, তাদের কঠিন হিসাব হবে– এটি ভাবতরজমা।

(গ) الميثاق ও عهد الله উভয় শব্দের তরজমা শায়খায়েন عهد (প্রতিশ্রুতি) এই অভিন্ন শব্দ দ্বারা করেছেন। কিতাবের তরজমায় মূলের শব্দভিন্নতা রক্ষা করা হয়েছে।
পরবর্তীতে يخافون ও يخشون এর শব্দভিন্নতা শায়খায়ন রক্ষা করেছেন। অর্থাৎ يخشون এর ক্ষেত্রে ڈرتے ہیں (ভয় করে) এবং يخافون এর ক্ষেত্রে اندیشہ رکھتے ہیں (আশংকা রাখে/ করে, লিখেছেন। সুতরাং উপরেও শব্দভিন্নতা রক্ষা করাই স্বাভাবিক ছিলো।
একটি বাংলা তরজমায় উভয় ক্ষেত্রে 'ভয় করে' ব্যবহার করা হয়েছে, এটা সঠিক নয়।

(ঘ) الذين صبروا (যারা ছবর করেছে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'অবিচল থাকে'। তিনি বলেন, পূর্ববর্তী ফেয়েলগুলোর কারীনা থেকে বোঝা যায় যে, এখানে ماضي দ্বারা مستقبل ই উদ্দেশ্য। আর তিনি 'ছবর'-এর ভাবতরজমা করেছেন।

(ঙ) يدرؤون بالحسنة السيئة (দূর করে ভালো দ্বারা মন্দকে) থানবী (রহ) লিখেছেন– (তাদের প্রতি মানুষের) মন্দ আচরণকে (নিজেদের) সদাচরণ দ্বারা দূরীভূত করে/সরিয়ে দেয়।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন- برائي کے مقابلہ میں بھلائي کرتے ھیں (মন্দের মোকাবেলায় উত্তম করে) এটি উপরের তরজমার সমার্থক হতে পারে। আবার এ অর্থও হতে পারে যে, মন্দ কাজ করার পর তার প্রায়শ্চিত্তরূপে তারা ভালো কাজ করে। এভাবে নিজেদের ভালো আমল দ্বারা নিজেদের মন্দ আমলগুলো দূরীভূত করে। তাফসীরে উভয় অর্থের প্রতি সমর্থন রয়েছে।

কিতাবের তরজমায় ব্যাপক শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে যাতে সকল অর্থের সম্ভাবনা থাকে।

(চ) الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه (তা সুদৃঢ় করার পর) এ তরজমা শায়খায়নের। তাফসীরে এরই প্রতি সমর্থন রয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে- যারা আল্লাহর সঙ্গে দৃঢ় অঙ্গীকারে আবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে।

أسئلة :

١ - اشرح مَعانِيَ وَصَلَ

٢ - أعرب قوله : الذين يوفون

٣ - أعرب قوله : أن يوصَلَ

٤ - أعرب قوله : جنت عدن

٥ - يخافون سوء الحساب এবং يخشون ربهم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - يدرؤون بالحسنة السيئةَ এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) وَ الذين اٰتينٰهم الكتٰبَ يفرَحون بِما انزِل اليك و مِنَ الاحزاب مَن يُّنكِر بعضَه، قل اِنما اُمِرت ان اعبُد اللّٰهَ و لا اُشرك به، اليه اَدعوا وَ اِليه مَاب * و كذلك اَنزلنٰه حُكْمًا عَرَبِيًّا، و لَئِنِ اتَّبعتَ اَهواءَهم بعدَما جاءَك مِنَ العِلْم، ما لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّليٍّ و لا وَاقٍ * وَ لقد ارسَلْنا رُسُلًا مِن قبلك و جَعلنا لهم اَزواجًا و ذرِّيَّةً، و ما كان لِرسولٍ ان ياتيَ بٰاية اِلّا باذن الله،

لِكلِّ اَجَلٍ كتابٌ * يَمحو اللّٰهُ ما يَشاء و يُثبِتُ، و عنده اُمُّ الكتٰب * وَ إن مّا نُرِيَنّك بعضَ الذي نَعِدهم اَوْ نَتَوفَّيَنّك فَإنما عليك البَلٰغُ و عَلينا الحِساب * اَوَلم يروا اَنّا نأتي الارضَ ننقُصها مِن اَطرافها، وَ الله يحكم لا مُعَقِّبَ لحكمه، و هو سريع الحساب *

بيان اللغة

مآب : هذا مصدر ميمي من آب يؤوب (أَوْبًا و إيَابًا) آبَ إلى الله : رجع عن ذنبه و تاب إلى الله .

و المآب : اسم ظرف من آب : مكانُ الأوبَةِ

طَرَف (ج) أطراف : ناحية و جانب، طائفة من شيء

(طَرَف من الليل রাত্রের একাংশ)

أحَدُ المتَعاقِدَين চুক্তি (সম্পাদনকারীদ্বয়)-এর একপক্ষ

أمُّ الكتٰب : أصلُ الكتٰبِ، و المراد منه عِلْمُ اللّٰهِ أو اللَّوْحُ المحفوظ .

لا معقب : لا رَادَّ

بيان الإعراب

الذين آتينٰهم الكتٰبَ : مبتدأ، و هم المسلمون من أهل الكتب .

و يفرحون خبر الموصول، و سِرُّ فرَحِهم بالقرآن أنَّ كُتُبَهم تصدِّق هذا القرآن .

و مِن الأحزاب مَن ينكر بعضَه : أصل العبارة : مَن يُنكِر بعضَ القرآن معدودٌ من الأحزاب، و المراد بالأحزاب، اليهود و النصارى و المشركون .

إليه أدعو إليه مآب : إليه الأولى تتعلق بـ : أدعو، و إليه الثانية متعلقة بخبر مقدم محذوف، و مآبِ مبتدأ مؤخر، و حذف عنه ياء المتكلم، و بقيت الكسرة التي كانت قبلَها، أي مآبي ثابت إليه .

و كذلك : الإشارة بـ : ذلك إلى إنزال الكتُبِ السابقة، أي : أنزلناه إنزالا

كإنزال أو مِثلَ إنزال الكتُب السابقة ·

حُكْماً : حال منصوبة من مفعول أنزلنا ، أي : حاكِمًا بينَ الناس، و عَرَبِيًّا نَعت لـ: حُكْمًا أو حال ثانية، و سُمى القرآن حكمًا ، لأنه مصدر الأحكامِ ·

مالَك مِنَ اللهِ مِن وليٍّ و لا وَاقٍ : أعرب هذه الجملة مستعينا بما سبَق · و الجملةَ جواب القسَم، و لهذا لم تقتَرِنْ بالفاء، و جواب الشرط محذوف دل عليه جواب القسَم، أو هو قائم مقامَ جوابِ الشرط ·

و ما كان لرسول أن يأتيَ بآية : المصدر المؤول اسم كان المؤخر، و (جائزا) لرسول خبرُ الناقص ·

بإذن الله : متعلق بمحذوف، و هو حال و مستثنًى من عُمومِ الأحوال، أي : في حالٍ إلا متلبسًا بإذن الله ·

إن مَّا نُرينك : يُقرَأ إنِ الشرطيةُ مُدغَمَةً في : ما الزائدةِ، و تُكتَبُ في المُصْحَفِ منفصِلةً عن ما ، و المضارع مبني على الفتح في محل جزم ·

و نتوفينك معطوف بـ : أو على السابق، و جوابه محذوف، أي فذلك كافيك، و فاء فانما للتعليل ·

الترجمة

আর যাদেরকে দান করেছি আমি কিতাব, তারা খুশী হয়, তা দ্বারা যা নাযিল করা হয়েছে আপনার প্রতি। তবে বিভিন্ন দলে এমনও লোক রয়েছে যারা অস্বীকার করে অবতীর্ণ কিতাবের কিছু অংশ। আপনি বলুন, আমাকে তো শুধু আদেশ করা হয়েছে যে, আমি ইবাদত করবো আল্লাহর এবং শরীক করবো না (কোন কিছুকে) তার সাথে। তাঁরই দিকে আমি আহ্বান করি, এবং তাঁরই দিকে হবে (আমার) প্রত্যাবর্তন।

সেভাবেই আমি নাযিল করেছি একে বিধানরূপে, আরবী ভাষায়। আর যদি আপনি অনুসরণ করেন তাদের খেয়ালখুশির আপনার কাছে (হকের) ইলম আসার পর (তাহলে) আল্লাহর মোকাবেলায় আপনার না থাকবে কোন সাহায্যকারী, আর না কোন রক্ষাকারী।

আর অতিঅবশ্যই আমি প্রেরণ করেছি বিভিন্ন রাসূল আপনার পূর্বে

এবং দান করেছি তাদেরকে স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততি [১] আর কোন রাসূলের অধিকার নেই আল্লাহর হুকুম ছাড়া কোন বিধান আনার। প্রত্যেক যুগের জন্য রয়েছে বিশেষ বিধান। আল্লাহ বিলুপ্ত করেন যে বিধান ইচ্ছা করেন এবং বহাল রাখেন (যে বিধান ইচ্ছা করেন)। আর তাঁরই কাছে রয়েছে উম্মুল কিতাব।

আর যদি আপনাকে দেখিয়ে দেই ঐ আযাবের কিছু যার হুঁশিয়ারি আমি প্রদান করি তাদেরকে, কিংবা (এর পূর্বেই) তুলে নেই আপনাকে (তাহলে আপনার তো কোন ক্ষতি নেই)। কারণ আপনার কর্তব্য শুধু পৌঁছে দেয়া, আর আমার দায়িত্ব হিসাব নেয়া। তারা কি দেখেনি যে, আমি (তাদের) ভূখণ্ডকে সংকুচিত করে আনছি সকল দিক থেকে। আর আল্লাহই আদেশ করেন; তাঁর আদেশের কোন রদকারী নেই; আর তিনি ত্বরিত হিসাব গ্রহণকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ينكر بعضه (অস্বীকার করে অবতীর্ণ কিতাবের কিছু অংশকে) যামীরের পরিবর্তে এ তরজমা করার উদ্দেশ্য হচ্ছে বক্তব্যকে সহজবোধ্য করা।

(খ) بعد ما جاءك من العلم (আপনার কাছে [হকের] ইলম আসার/পৌঁছার পরে) এটি শায়খায়নের তরজমা।
একটি বাংলা তরজমায় আছে, জ্ঞানপ্রাপ্তির পর– এটি অগ্রহণযোগ্য তরজমা। কারণ জ্ঞানপ্রাপ্তির সাধারণ অর্থ হলো সংজ্ঞাপ্রাপ্তি, বা জ্ঞান লাভের বয়সে উপনীতি।

(গ) ما لك من الله من ولي و لا واق (আল্লাহর মোকাবেলায় আপনার না থাকবে কোন সাহায্যকারী, আর না কোন রক্ষাকারী) হরফে নফীর পুনরুক্তি দ্বারা যে তাকীদ করা হয়েছে তা তরজমায় প্রকাশ করা হয়েছে, যা কোন কোন বাংলা তরজমায় করা হয়নি।
আল্লাহর বিরুদ্ধে তোমার কোন অভিভাবক ও রক্ষক থাকবে না– এ তরজমায় জোরালোতা প্রকাশ পায় নি।
শায়খায়নের তরজমায় মূলের জোরালোতার বিষয়টি বিবেচিত হয়েছে।

(ঘ) أن يأتي باية (কোন বিধান আনা) শায়খুলহিন্দ (রহ)

১. আপনারও যদি স্ত্রী ও সন্তান থাকে তাহলে তাতে তাদের আপত্তি কেন, এটা তো রিসালতের পরিপন্থী কিছু নয়।

তরজমা করেছেন, কোন নিদর্শন (বা মুজিযা) উপস্থিত করা।
থানবী (রহ) লিখেছেন, একটি আয়াতও আনতে পারা।

(ঙ) لكل أجل كتاب (প্রত্যেক যুগের জন্য রয়েছে বিশেষ বিধান) এটি থানবী (রহ) এর তরজমা।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন– هر ايك وعده هے لكها هوا (প্রতিটি ওয়াদা রয়েছে লিপিবদ্ধ) এ তরজমা স্পষ্ট নয়।

(চ) يمحو الله ما يشاء و يثبت (আল্লাহ্ বিলুপ্ত করেন যে বিধান ইচ্ছা করেন এবং বহাল রাখেন [যে বিধান ইচ্ছা করেন]) থানবী (রহ) ما এর স্থানীয় অর্থ উল্লেখ করে তরজমা করেছেন। ফলে বিষয়টি বোঝা সহজ হয়েছে।
তবে তিনি يثبت এর উহ্য مفعول উল্লেখ করেছেন আর কিতাবের তরজমায় তা বন্ধনীতে আনা হয়েছে। পক্ষান্তরে থানবী (রহ) তা বন্ধনী ছাড়া মূল তরজমায় এনেছেন।
আল্লাহ্ যা ইচ্ছা করেন নিশ্চিহ্ন করেন / মিটিয়ে দেন এবং বহাল/ প্রতিষ্ঠিত রাখেন– এ তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর, কিন্তু তা স্পষ্ট নয়।
তবে শায়খুলহিন্দ (রহ) ما এর অর্থকে মুক্ত রেখেছেন, যাতে বিষয়ব্যাপকতা আসে। যেমন, আল্লাহ্ যে বিধান ইচ্ছা বিলুপ্ত করেন এবং বহাল রাখেন; তদ্রূপ আল্লাহ্ যে জাতিকে ইচ্ছা নিশ্চিহ্ন করেন এবং প্রতিষ্ঠিত করেন ইত্যাদি।

(ছ) و عنده أم الكتاب (আর তাঁরই কাছে রয়েছে উম্মুল কিতাব) শায়খায়ন এর তরজমা করেছেন, 'আসল কিতাব'। কিতাবের তরজমায় আয়াতের মূল শব্দ বহাল রাখাই শ্রেয় মনে হয়। কারণ এটি গভীর মর্মসম্পন্ন শব্দ। তরজমা দ্বারা মূল মর্মের ব্যত্যয় ঘটার আশংকা রয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ أطرافٍ
٢ – أعرب قوله : إليه مآبِ
٣ – أعرب قوله : و كذلك أنزلناه
٤ – بم يتعلق قوله : إلا بإذن الله
٥ – لكل أجل كتاب এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ – أم الكتاب এর তরজমা সম্পর্কে তোমার মত বলো

(٨) وَ قال الذين كفروا لِرُسُلِهم لَنُخرِجنَّكم مِن اَرضنا اَوْ لَتَعودُنَّ
في ملَّتِنا، فَاَوْحٰى إليهم ربُّهم لَنُهلِكن الظّٰلمين * و
لَنُسكِنَنكم الارضَ من بعدهم، ذلك لمن خافَ مَقامي و خاف
وَعيدِ * و استفتَحوا و خاب كلُّ جبار عنيدٍ * مِن ورائه
جهنَّمُ و يُسقٰى مِن ماءٍ صديدٍ * يتجرَّعه و لا يَكاد يُسِيغُه
وَ ياتيه الموت مِن كل مَكانٍ و ما هو بِمَيِّتٍ، و مِن ورائه عذاب
غَليظ * مَثَل الذين كفَروا بربهم اَعمالُهم كَرمادٍ اشتدَّت به
الريحُ في يومٍ عاصِفٍ، لا يَقدِرون مِمَّا كَسَبوا على شيءٍ،
ذلك هو الضلٰل البعيد * اَلَمْ تَرَ اَنَّ الله خلَق السمٰوٰتِ و
الارضَ بالحق، إن يَّشا يُذهِبكم و يَاتِ بخلق جديدٍ * و ما
ذلك على الله بعزيز *

بيان اللغة

استفتح الباب : فتحه، طلب فتحه . استفتح فلانا : استنصره

عنيد : عَنَد فلانٌ (ض، عَنْدًا) : استكبَر و تجاوَزَ الحدَّ في العِصيان،
خالَفَ الحقَّ وردَّه و هو يعرِفه
فهو عانِد (و الجمع) عَنَدَة، و هو عَنيد (و الجمع) عُنُدٌ
و هي عاند و عاندة (و الجمع) عَوانِدُ
عانَد فلان (معاندة و عِنادا) : خالَف ورَدَّ الحق و هو يعرفه
عانَده : خالَفَه و عارَضَه

صديد : قَيْحٌ في الجُرح، و مُثِّلَ به شرابُ أهل النار، و هو ما يَسيل من
جُلود أهل النار .

تجرَّع : شَرِبَ جَرْعَةً جَرْعَةً كارِهًا জোর করে ঢোক ঢোক করে পান করল

يُسيغ : أساغَ الطعامَ و الشرابَ : وجده سائِغًا .

ساغَ شيءٌ (ن، سَوْغًا، سَواغًا) : طابَ
ساغ الطعام/الشرابُ : سَهُلَ دخولُه في الحَلْقِ و طابَ

بيـان الإعراب

ذلك لمن خاف : الإشارة بـ : ذلك إلى النصر و الإسكان
و خاب : الجملة معطوفة على مقدر، أي : فنصروا و خاب كل ...
من ورائه جهنم : جهنم مبتدأ مؤخر، و (موجودة) من ورائه خبر مقدم،
و هذه الجملة في محل جر صفة ثانية لجبار، أو في محل رفع
نعت لـ : كُلُّ جبار .
و يُسقَى من ماءٍ : الجملة معطوفة على مقدَّر، كأنه قيل : فَمَاذا يكون
إذًا ؟ قيل : يُلْقَى فيها و يُسْقَى
صديد : بدَل من ماء، و قيل : هو نعت لـ : ماء على إسقاط أداة
التشبيه، أي : مِثْلِ صَديدٍ .
يتجرعه : في محل جر نعت لـ : ماء، أو في محل نصب حال من ضمير
يسقى، أو هي جملة مستأنفة، جاءت لِلرَّد على سُؤالٍ، كَأنَّه
قيل : فَماذا يُفعَل بذلك الماء ؟ فقيل : يتجرعه .
مَثَلُ الذين كفَروا : مبتدأ و خبره محذوف، أي : ظاهِرٌ .
أعمالهم : مبتدأ، و الكاف بمعنى مِثْلِ خبرٌ، و الجملة مستأنفة جاءت
للرد على سؤال مقدرٍ، كأنه قيل : و ما ذلك المَثَلُ ؟ فقيل :
أعمالهم كرماد .
ويجوز أن يكون مَثل الذين كفروا مبتدأ، و أعمالُهم بدَلُ اشتمالٍ
من الموصول، أي : مثل أعمال الذين كفروا، و كرماد خبر .
و جملة اشتدت به الريح صفة لـ : رماد .
على شيء : متعلق بـ : لا يقدرون، و مما كسبوا متعلق بمحذوف، حال من
: شيء، لأنه في الأصل صفته .

الترجمة

আর যারা কুফুরি করেছে তারা বললো তাদের রাসূলদের উদ্দেশ্যে,
অবশ্যই বের করে দেবো আমরা তোমাদেরকে আমাদের ভূখণ্ড

থেকে, কিংবা তোমাদেরকে ফিরে আসতেই হবে আমাদের ধর্মে। তখন অহী পাঠালেন রাসূলদের নিকট তাদের প্রতিপালক, অবশ্যই আমি ধ্বংস করে ছাড়বো যালিমদেরকে এবং অতিঅবশ্যই আবাদ করবো তোমাদেরকে ঐ ভূখণ্ডে তাদের পরে। তা তাদের জন্য, যারা ভয় করে আমার সামনে দাঁড়ানোকে এবং (আমার) হুঁশিয়ারিকে ভয় করে।

আর রাসূলগণ (কাফিরদের বিরুদ্ধে) সাহায্য প্রার্থনা করলেন, (এবং তাদেরকে সাহায্য করা হলো), আর ধ্বংস হলো প্রত্যেক পরাক্রমশালী (ও) হঠকারী।

তাদের পিছনে রয়েছে জাহান্নাম (তাতে তারা নিক্ষিপ্ত হবে) এবং তাদেরকে পান করানো হবে পানি, পুঁজ। তারা তা ঢোক গিলে পান করবে। আর তা গলা দিয়ে সহজে নামাতেই পারবে না। আর (ছুটে) আসবে তার কাছে মৃত্যু সর্বদিক থেকে। অথচ সে কিছুতেই মরবে না। আর তার পিছনে থাকবে (অন্যান্য) কঠিন আযাব।

যারা কুফুরি করেছে তাদের উদাহরণ (পরিষ্কার, তা এই যে,) তাদের আমলগুলো এমন ছাইভস্মের মত যা বাতাস বেগে উড়িয়ে নিয়ে যায় ঝড়ের দিনে। যা কিছু তারা আমল করেছে তার কিছুই তারা ধরে রাখতে পারবে না। সেটাই হলো চরম ভ্রষ্টতা।

তুমি কি লক্ষ্য করোনি যে, আল্লাহ সৃষ্টি করেছেন আসমান (সমূহ) ও যামীন যথাযথভাবে। যদি তিনি ইচ্ছা করেন তাহলে বিলুপ্ত করতে পারেন তোমাদেরকে এবং আনয়ন করতে পারেন নতুন সৃষ্টি।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لنخرجنكم এবং لتعودن এবং لنهلكن এর প্রতিটিতে দু'টি তাকীদ-অব্যয় রয়েছে। তরজমায় সেটা কীভাবে বিবেচনা করা হয়েছে দেখো।

(খ) من أرضنا (আমাদের ভূখণ্ড থেকে) দেশ থেকে বা আমাদের দেশ থেকে– এ তরজমা সুন্দর নয়। তাচ্ছিল্য প্রকাশের দিক থেকে অবশ্য 'দেশছাড়া করবো', বলা যায়। কিন্তু লক্ষ্য রাখতে হবে যে, যারা বলছে তারা নেতৃস্থানীয় হলেও যাদেরকে বলা হচ্ছে তাঁরা কাউমের অভিজাততম। এজন্যই কোরআনে بلدنا বা ملكنا এর পরিবর্তে أرضنا ব্যবহার করা হয়েছে।

(গ) أوحى إليهم ربهم (অহী পাঠালেন রাসূলদের নিকট তাদের প্রতিপালক) যামীরের مرجع নির্ধারণের জটিলতা পরিহার করার জন্য একটি ক্ষেত্রে যামীরের পরিবর্তে مرجع উল্লেখ করা হয়েছে।

(ঘ) و خاف وعيد (এবং ভয় করে [আমার] হুঁশিয়ারিকে) কেউ লিখেছেন, 'আমার আযাব।' কেউ লিখেছেন, 'আমার আযাবের ওয়াদা।' কিন্তু وعيد মানে আযাব নয় এবং ওয়াদাও নয়, তাই থানবী (রহ) লিখেছেন, আমার হুঁশিয়ারিকে ভয় করে।

خاف মাযী ব্যবহারের উদ্দেশ্য হলো এদিকে ইঙ্গিত করা যে, বিষয়টি ঘটা আল্লাহর কাম্য। অন্য ভাষায় এই ইঙ্গিতপূর্ণ ব্যবহারের প্রচলন নেই। বলেই مضارع দ্বারা তরজমা করা হয়েছে।

তবে 'ভয় গ্রহণ করবে' দ্বারা 'কাম্যতা' কিছুটা প্রকাশ পায়।

(ঙ) و استفتحوا (আর রাসূলগণ সাহায্য প্রার্থনা করলেন) থানবী (রহ) استفتحوا এর যামীর কাফিরদের দিকে ফিরিয়ে তরজমা করেছেন– তারা (আস্পর্ধার সাথে চূড়ান্ত) নিষ্পত্তি দাবী করলো।

(চ) خاب (বরবাদ/ধ্বংস হলো) এটি ব্যাখ্যামূলক তরজমা, অর্থাৎ ব্যর্থতার স্বরূপ ব্যাখ্যা করা হয়েছে। থানবী (রহ) 'তারা 'নাকাম' হলো' লিখে বন্ধনীতে (অর্থাৎ ধ্বংস হলো) লিখেছেন।

(ছ) و من ورائه جهنم (তাদের পিছনে রয়েছে জাহান্নাম) এখানে 'পিছনে' এর স্থূল অর্থ উদ্দেশ্য নয়, উদ্দেশ্য হলো ভবিষ্যতে। তাই থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, তাদের 'সামনে' জাহান্নাম (-এর আযাব) আসছে।

একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'তাদের প্রত্যেকের জন্য পরিণামে জাহান্নাম রয়েছে'– এ তরজমা মানসম্মত নয়।

কারণ وراء এর প্রতিশব্দ 'পিছনে' যেমন হতে পারে তেমনি 'সামনে' হতে পারে। কিন্তু 'পরিণাম' وراء -এর প্রতিশব্দ নয়। তা ছাড়া এখানে শব্দবাহুল্য রয়েছে।

(জ) يُسقى من ماء صديد (তাদেরকে পান করানো হবে পানি, পুঁজ) ماء صديد এর তরজমা গলিত পুঁজ/পুঁজ মিশ্রিত পানি

হতে পারে, তবে কিতাবে বদলের তারকীবানুগ তরজমা করা হয়েছে। অন্য তারকীবের ভিত্তিতে 'পুঁজের মত পানি' তরজমা হতে পারে। থানবী (রহ) তা করেছেন।

(ঝ) يتجرعه (ঢোক গিলে তা পান করবে) تجرع এর অর্থের মাঝে কষ্টের যে ভাব রয়েছে তা এ তরজমায় সুন্দরভাবে এসে গেছে।

শায়খায়ন লিখেছেন, ঢোক ঢোক করে পান করবে, এটা আধিক্যপ্রকাশক, কষ্টপ্রকাশক নয়। থানবী (রহ) অবশ্য পান আধিক্যের কারণরূপে বন্ধনীতে লিখেছেন, (চরম পিপাসার কারণে) কিন্তু স্বাভাবিকভাবে এটা মনে হয় যে, চরম পিপাসার কারণে পুজেঁর মত জঘন্য পদার্থ তারা মুখের সামনে নেবে, কিন্তু لا يكاد يسيغه দ্বারা বোঝা যায় যে, তারা গলা দিয়ে তা নামাতে পারবে না।

(ঞ) و لا يكاد يسيغه (আর তা গলা দিয়ে সহজে নামাতেই পারবে না।)

থানবী (রহ) লিখেছেন– তা সহজে গলা দিয়ে নামার কোন উপায় হবে না। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, অথচ গলা দিয়ে নামাতে পারে না– এগুলো ভাবতরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– এবং তা গলাধঃকরণ করা প্রায় সহজ হবে না।

'প্রায় সহজ না হওয়া' -এর অর্থ হলো সহজ না হওয়ার কাছাকাছি হওয়া, সুতরাং এখানে আয়াতের মর্ম উঠে আসেনি।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة عنيدٍ و أخواتِه

٢ – علام عُطف قوله : خاب كل جبار عنيد

٣ – اذكر محل إعراب الجملة : يتجرعه

٤ – ما إعراب قوله : صديد

٥ – لنخرجنكم এবং لتعودن এর لنهلكن এই ফেয়েলগুলোর তরজমা বিশদ পর্যালোচনা করো

٦ – وعيد এর তরজমা আলোচনা করো

(٩) وَ بَرزوا لله جميعًا فقال الضُّعَفٰؤا لِلذين استكبَروا إنا كنا
لكم تَبَعا فهل أنتُم مُّغنونَ عنا مِن عذاب اللّٰه مِن شيءٍ،
قالوا لَوْ هَدٰنا الله لَهَدينٰكم، سَواءٌ علينا أجَزِعنا أمْ صَبَرنا
ما لَنا مِن مَّحيصٍ * و قال الشيطٰن لما قُضِي الامرُ إن اللّٰهَ
وَعَدكم وَعْدَ الحق وَ وعدُتكم فَاخلَفْتُكم، و ما كان لِيَ عليكم
من سُلطٰن إلّآ أنْ دعوتُكم فاستَجَبتم لي، فَلا تلوموني
وَلُوموا انفُسَكم، ما أنا بِمُصْرِخكم و ما أنتم بِمُصْرِخِيَّ،
إني كفَرت بِما أشركتُمونِ مِنْ قبلُ، إنَّ الظّٰلمين لهم عذاب
اليم *

بيان اللغة

جَزِع (س، جَزَعًا) : لم يصبر على المصيبة، اضطَرَب — অস্থির হলো, অধৈর্য হলো

مَحيص (مَهْرَب) اسم ظرف من حاصَ القومُ (ض، حَيْصًا) : جالُوا جَوْلَةً، يطلُبون الفِرار و المهرَبَ

مُصْرِخٌ : (مُغيث) أصرَخَه : أغاثَه

صَرَخ (ن، صُراخًا و صَريخًا) : صاح صِياحا شديدا ، استغاث

بيان الإعراب

تَبَعًا : خبر كنا، و هو جمعُ تابِعٍ، و لكم متعلق مقدم بـ : تبعا، و قال البعض : هو متعلق بمحذوف، حال مقدمة، لأنه في الأصل صفة لـ : تبعا .

من شيء : من هذه زائدة، و شيء مفعول به معنًى لـ : مغنون، و من عذابِ الله متعلق بحال محذوفَةٍ مقدَّمة، لأنها كانت في الأصل صفة لـ : شيءٍ

سواء : خبر مقدم مرفوع، و علينا متعلق به،

أجزعنا : الهمزة للتسوية، و الفعل بعدَ همزة التسويَةِ يُؤَوَّلُ بمصدرٍ، فَهذا المصدر المؤول مبتدأ مؤخر، و صبرنا معطوف به : أم على : جزعنا .

أخلفتكم : أي : أخلفتكم الوعدَ .

ما كان لي عليكم من سلطان : سلطان مجرور لفظا، مرفوع محلا، لأنه اسم كان، ولي متعلق به : بمحذوف خبر مقدم له : كان، و عليكم متعلق بمحذوف حال من سلطان، لأنه كان في الأصل صفة لسلطان، تقدمت عليه فصارت حالا .

و أصل العبارة : ما كان سلطانٌ ثابتًالي كائنا عليكم .

إلا أن دعوتكم : إلا أداة استثناء، و المصدر المؤول مستثنًى، و هو استثناءٌ منقَطِعٌ، لأن الدعاءَ ليس من جنس السلطان .

و استجبتم لي، معطوف بالفاء على : دعوتكم .

بما أشركتموني من قبل : ما مصدرية، و المصدر المؤول في محل جر بالباء، و من قبل متعلق به : أشركتم، أي : من قبل هذا اليوم .

الترجمة

আর তারা আল্লাহর সামনে পেশ হবে, সকলে, তখন দুর্বল লোকেরা বলবে তাদের উদ্দেশ্যে যারা বড়ত্ব প্রদর্শন করেছিলো, আমরা তো ছিলাম তোমাদের অনুগামী; সুতরাং তোমরা কি হটাতে পারো আমাদের থেকে আল্লাহর আযাবের কোন কিছু।

তারা বলবে, যদি আল্লাহ্ আমাদেরকে (বাঁচার) কোন পথ বাতলে দিতেন তাহলে আমরা তোমাদেরকে (ঐ) পথ বাতলে দিতাম। (এখন তো) আমাদের (সকলের) জন্য বেছবর হওয়া কিংবা ছবর করা সমান; (কারণ) আমাদের জন্য নেই পলায়নের কোন স্থান।

আর যখন নিষ্পন্ন করা হয়ে যাবে সমস্ত ফায়ছালা তখন শয়তান বলবে, নিশ্চয় আল্লাহ্ প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন তোমাদেরকে সত্য প্রতিশ্রুতি, আর আমিও প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম তোমাদেরকে। কিন্তু আমি ওয়াদা ভঙ্গ করেছি তোমাদের সাথে ।

কিন্তু আমার তো তোমাদের উপর ছিলো না কোন ক্ষমতা; শুধু এই যে, আমি ডাক দিয়েছি তোমাদেরকে, আর তোমরা সাড়া দিয়েছো

আমার ডাকে। সুতরাং তিরস্কার করো না তোমরা আমাকে, বরং তিরস্কার করো নিজেদেরকে। (আজ) আমি কিছুতেই তোমাদেরকে উদ্ধারকারী নই, আর তোমরাও কিছুতেই আমাকে উদ্ধারকারী নও। (আজকের) পূর্বে (আল্লাহর সঙ্গে) আমাকে তোমাদের শরীক করাকে আমি অবশ্যই প্রত্যাখ্যান করছি। নিঃসন্দেহে যালিমগণ, তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) برزوا لله جميعا (তারা আল্লাহর সামনে পেশ হবে সকলে) এখানে প্রকাশ লাভ করা এবং সামনে এগিয়ে আসার অর্থ রয়েছে। এদিক থেকে থানবী (রহ) এর তরজমাই সবচে' মূলানুগ, যা কিতাবে গ্রহণ করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তারা আল্লাহর সামনে দাঁড়াবে– এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য। উপস্থিত হবে– এ তরজমাও কেউ কেউ করেছেন।

(খ) قال الضعفاء (দুর্বল লোকেরা বলবে) এটি শাইখুলহিন্দ (রহ)-এর শব্দানুগ তরজমা।
থানবী (রহ) লিখেছেন, ছোট স্তরের লোকেরা বড় স্তরের লোকদেরকে বলবে, এটি ভাবতরজমা।

(গ) لو هدانا الله (যদি আল্লাহ আমাদেরকে [বাঁচার] কোন পথ বাতলে দিতেন) থানবী (রহ)-কে অনুসরণ করে এ তরজমা করা হয়েছে এবং এটি স্থানোপযোগী তরজমা।
শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা এরূপ– যদি (দুনিয়াতে) আল্লাহ্ আমাদেরকে সত্যের পথ প্রদর্শন করতেন তাহলে আমরাও তোমাদেরকে সত্যের পথ প্রদর্শন করতাম। (তাহলে আজ এ দুর্গতি হতো না) – এ তরজমারও অবকাশ রয়েছে।

(ঘ) ما لنا من محيص (আমাদের জন্য নেই পলায়নের কোন স্থান) এটি শব্দানুগ তরজমা।
এখানে محيص কে اسم ظرف ধরে তরজমা করা হয়েছে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আমাদের রেহাই/নিষ্কৃতি নেই। এটিও শব্দানুগ তরজমা। তিনি محيص কে মাছদার ধরেছেন।
থানবী (রহ) লিখেছেন, আমাদের বাঁচার কোন উপায় নেই– এটি ভাবতরজমা।

(ঙ) لا تلوموني (তিরস্কার করো না তোমরা আমাকে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তারকীবানুগ তরজমা অনুসরণে। তিনি লিখেছেন– تم الزام نه دو مجهكو (তোমরা দোষ দিও না আমাকে)
থানবী (রহ) লিখেছেন– তোমরা আমার প্রতি/উপর দোষারোপ করো না, (تم مجهه پر ملامت مت کرو) – এই তারকীব পরিবর্তনের প্রয়োজন ছিলো না।

أسئلة :

١ – اشرح مادة " صَرْخ "
٢ – بم يتعلق "لكم" في قوله : كنا لكم تبعا ؟
٣ – أعرب قوله : سواء علينا أ جزعنا أم صبرنا
٤ – أعرب قوله : إلا أن دعوتكم .
٥ – لو هدانا الله لهديناكم এর দু'টি তরজমা আলোচনা করো
٦ – ما لنا من محيص এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١٠) وَ إذ قال ابراهيم ربِّ اجعَلْ هذا البلدَ اٰمِنًا و اجنُبْني و بَنِيَّ اَن نعبُدَ الاصنام * ربِّ اِنهن اَضلَلْنَ كثيرًا من الناس، فَمَن تبِعني فَاِنه مني، و مَن عصاني فانك غفور رحيم * رَبَّنا اِني اَسكَنتُ مِن ذريتي بِوادٍ غيرِ ذي زَرعٍ عند بيتِك المحرَّمِ، ربَّنا لِيُقيموا الصلٰوة فاجعل اَفئِدَةً من الناس تَهْوِي اِليهم وَ ارزقهم مِنَ الثمرٰت لعلهم يشكرون *

بيان اللغة

اُجْنُبْني (أبعِدني) (ن، جَنْبًا)
جَنَبَ شيئًا : بَعُد عنه ، أبعَده
جَنَبَ فُلانًا شيئًا — অমুককে কোন কিছু থেকে সরিয়ে রাখলো
جَنَّبَه شيئا : أبعَدَه عنه
اجتنب شيئا : ابتعد عنه
تَهوِي إليه : تَميل و تُسرع

بيـان الإعراب

أن نعبد : المصدر المؤول منصوب بنزع الخافض، أي : عن أن نعبد

إنهن : الضمير يعود على الأصنام، و نُزِّل غيرُ العاقل منزلَةَ العاقل لِكَونِ الأصنام آلهةً معبودة ·

منْ ذريتي : من للتبعيض، بمعنى بَعضٍ، فهو متعلق بـ: اسكنت لفظًا و مفعول به له معنًى، أي : أسكنتُ بعضَ ذريتي، و قال البعض : المفعول به محذوف، أي أسكنت ذرية معدودة من ذريتي ·

غيرِ : صفة لـ : وادٍ، و هو مضاف إلى ذي، و هو مضاف إلى زرعٍ ·

عند : الظرف يتعلق بـ : أسكنت، أو بنعت ثان محذوف لـ : واد ·

ربنا : كَرَّرَ نداءَ ربَّنا تاكيدًا للابتهال ·

من الناس : من للتبعيض، أي أفئدة بعض الناس ·

الترجمة

আর (ঐ সময়কে স্মরণ করুন) যখন ইবরাহীম বললেন, (হে আমার) প্রতিপালক, আপনি করুন এই শহরকে নিরাপদ এবং দূরে রাখুন আমাকে ও আমার পুত্রদেরকে প্রতিমার পূজা করা হতে।

(হে আমার) প্রতিপালক, এ সকল প্রতিমা তো ভ্রষ্ট করেছে বহু মানুষকে। সুতরাং যে অনুসরণ করবে আমাকে সে আমার দলভুক্ত হবে, আর যে অমান্য করবে আমাকে; তো (তার বিষয়ে) আপনি অবশ্যই পরম ক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

(হে) আমাদের প্রতিপালক, অবশ্যই আমি আবাদ করলাম আমার বংশধরদের কতককে এক নিষ্ফলা উপত্যকায় আপনার পবিত্র গৃহের নিকট; (হে) আমাদের প্রতিপালক, যেন তারা ছালাত কায়েম করে। সুতরাং আপনি আকৃষ্ট করে দিন কিছু লোকের অন্তরকে তাদের প্রতি এবং রিযিকরূপে দান করুন তাদেরকে কিছু ফলফলাদি, যাতে তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) (প্রতিমার পূজা করা হতে) যেহেতু أن نعبد হচ্ছে ফেয়েল ও ফায়েল দ্বারা তৈরী মাছদার, সেহেতু 'প্রতিমার পূজা হতে' এর পরিবর্তে 'পূজা করা হতে' ব্যবহার করা হয়েছে।

(খ) فإنه منى (তো সে আমার দলভুক্ত হবে) – বিকল্প তরজমা হলো–

(ক) সে আমারই থেকে গণ্য হবে।

(খ) সে আমারই একজন হবে।

প্রথমটি যদিও প্রচলিত তরজমা, কিন্তু তার তুলনায় (ক)-এ আপনত্বের ভাব বেশী রয়েছে এবং তা তারকীবানুগও। পক্ষান্তরে (খ)-এ পূর্ণ আপনত্ব প্রকাশ পায়, যদিও তরজমাটি মূল থেকে কিছুটা দূরবর্তী এবং অপ্রচলিত।

(গ) غير ذي زرع (নিষ্ফলা) এটি এক শব্দের সংক্ষিপ্ত এবং মানসম্মত তরজমা। 'তৃণশূন্য'– এ তরজমাও করা যায়। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যেখানে 'ক্ষেতি' নেই। থানবী (রহ) লিখেছেন, যা ফসলের/কৃষিকাজের উপযুক্ত নয়। এ দুটি তরজমায় অসহায়ত্ব ও প্রতিকূলতার ভাবটি পূর্ণরূপে প্রকাশ পায়নি, বাংলা তরজমা দুটিতে যেমন প্রকাশ পেয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة ذرية

٢ – أعرب قوله : أن نعبد الأصنام

٣ – أعرب قوله : من ذريتي

٤ – لم كرر نداء ربنا

٥ – أن نعبد এর তরজমা ব্যাখ্যা করো

٦ – إنهن এর তরজমা আলোচনা করো

(١) الر، تِلك ايٰت الكِتٰب و قرآنٍ مبين * ربما يَوَدُّ الذين كفَروا لَوْ كانوا مُسلمين * ذَرْهم ياكلوا و يتمتَّعوا و يُلْهِهِمُ الأَمَل فسوفَ يَعلمون * وَ ما أهْلكنا مِن قرية إلاَّ ولها كتاب معلوم * ما تَسبِق مِن أُمَّة اجلَها و ما يستاخِرون * و قالوا يٰاَيُّها الذي نُزِّل عليه الذكر إنك لمجنون * لو ما تَاتينا بالمٰلئِكة إنْ كنتَ مِن الصّٰدقِين * ما نُنَزل المٰلئِكة إلاَّ بالحق و ما كانوا إذًا مُنْظَرين * إنا نحن نزلنا الذكرَ و إنا له لَحٰفظون *

بيان اللغة

رب : حرف جر يَجُرُّ النكرةَ، و هو لا يتعلق بشيءٍ، لأنه كالزائد، و تَلحَقه ما الكافةُ، فيدخل على الأفعال و المعارف، و قد يُخَفَّف مَع ما الكافَّةِ، كما تَرى هنا . و يكون رب للتقليل أو التكثير، و يتعين ذلك بالقرينة .

يُلهِهم : مضارع مجزوم بإسقاط اللام، من باب الإفعال

ألهٰى فلانا عن شيءٍ (يُلهي، إلهاءً) : شغَله عنه و أنساه إياه

قال تعالى : رجال لا تُلهيهم تجارةٌ و لا بَيْعٌ عن ذكر الله

لَها بِشَيءٍ (ن، لَهْوًا) لعب به، اشتغل به

لها عَن شيءٍ : نسي و ترك ذِكرَه

اللَّهْوُ : ما يَشغَل الإنسانَ عما ينفعه، كل ما تتمع به، قال تعالى : وما الحياة الدنيا إلا لَهْوٌ و لعب

بيان الإعراب

و قرآن مبين : معطوف على الكتاب، و جاز عطف قرآنٍ على الكتاب مع اتحادهما في المعنى للتعدُّدِ اللفظيِّ و لزيادة صفةٍ في المعطوف، و تنكير القرآن للتعظيم و كذا تعريف الكتاب .

لو كانوا مسلمين : لو مصدرية لوقوعها بعد ود يود، و المعنى : يودون كونَهم مسلمين . و يجوز أن تكون لَوْ امتناعيّةً، و جوابُها محذوف، أي لو كانوا مسلمين لَسُرُّوا بِذلك، و مفعول يود على هذا الوجه " النجاةَ "

فسوف يعلمون : أي عاقبةَ أمرهم و سوءَ صنيعهم، و الفاء الفصيحة .

من قرية : مجرور لفظا منصوب محلا على المفعولية

إلا : أداة حصر، و الواو حالية، و الجملة حال من مفعول أهلكنا .

من أمة : فاعلٌ تسبِق محلا، و عاد ضمير أجلَها إلى لَفظ الأمةِ، فَأَفرِدَ و أنِّث، وعاد ضمير الواو إلي معنى الأمة، فجُمِع و ذُكِّر .

لوما : حرف تحضيض و عرض، و لا يدخل إلا علي الفعل .

و جواب الشرط محذوف دل عليه القرينة، أي : إن كنت من الصدقين فاتنا بالملائكة .

إلا بالحق : إلا أداة حصر، و بالحق متعلق بحال، أي متلبسين بالحق، أو هو نعت لمصدر محذوف، أي إلا تنزيلا متلبسا بالحق .

الترجمة

আলিফ-লাম-রা। ঐগুলো (হচ্ছে) এক পরিপূর্ণ কিতাবের এবং সুস্পষ্ট কোরআনের আয়াত। যারা কুফুরি করেছে তারা বারবার আকাঙ্ক্ষা করবে যে, (দুনিয়াতে) তারা যদি মুসলমান হতো! ছেড়ে দিন আপনি তাদেরকে (তাদের অবস্থার উপর), তারা খানাদানা করুক এবং মউজ করুক, আর উদাসীন করে রাখুক তাদেরকে তাদের (অলীক) আশা। অতিসত্বর তারা জানতে পারবে (তাদের আচরণের পরিণতি)।

আর যে কোন জনপদ আমি ধ্বংস করেছি তার জন্য ছিলো একটি নির্দিষ্ট, লিখিত সময়কাল। কোন জাতিই তার নির্ধারিত কালকে ত্বরান্বিত করতে পারে না এবং পারে না বিলম্বিত করতে।

আর তারা বলে, হে ঐ ব্যক্তি যার উপর কোরআন নাযিল করা হয়েছে, তুমি তো আসলেই উন্মাদ। কেন তুমি আনয়ন করো না আমাদের কাছে ফিরেশতাদেরকে, যদি তুমি সত্যবাদী হয়ে থাকো! আমি তো (এভাবে) নাযিল করি না ফিরেশতাদেরকে, তবে (নাযিল করি) চূড়ান্ত ফায়ছালার জন্য, আর তখন তাদেরকে অবকাশ দেয়া হবে না।

আমিই নাযিল করেছি কোরআন এবং অবশ্যই আমি নিজেই তার হেফাজতকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) ربما (বারবার) এটি থানবী (রহ) এর তরজমা। তিনি বলেন, বারংবারতার অর্থ এ জন্য যে, কাফিররা কেয়ামতের কঠিন সময় যখনই নতুন কোন কঠিন অবস্থার সম্মুখীন হবে তখনই তাদের মনে এ আকাক্ষা জেগে ওঠবে।
শায়খুলহিন্দ (রহ) শব্দটিকে كثرة এর পরিবর্তে قلة এর অর্থে গ্রহণ করে তরজমা করেছেন- কখনো/কখনো কখনো কাফিররা আকাঙ্ক্ষা করবে।

(খ) تلك آيت الكتاب এক পরিপূর্ণ কিতাবের আয়াত- এ তরজমায় এদিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, الكتاب এর ال এসেছে كمال বোঝানোর জন্য। সুতরাং সত্তার অভিন্নতা সত্ত্বেও গুণভিন্নতার কারণে عطف বৈধতা লাভ করেছে।

(গ) لو كانوا مسلمين (তারা যদি মুসলিম হতো!) لو অব্যয়টি ব্যাকরণগত দিক থেকে مصدرية সুতরাং ব্যাকরণ-অনুগামী তরজমা হলো, 'তারা 'অতীত মুসলিম' হওয়ার আকাঙ্ক্ষা করবে'। তবে শায়খায়ন এখানে আকাঙ্ক্ষার অর্থকে প্রাধান্য দিয়ে তরজমা করেছেন- কত না ভালো হতো যদি তারা মুসলমান হতো। কিতাবেও আকাঙ্ক্ষাবাচক তরজমা করা হয়েছে, তবে তার জন্য আলাদা শব্দ যোগ করা হয়নি।

(ঘ) يأكلوا و يتمتعوا খানাদানা ও মউজ শব্দ দুটি চয়ন করা হয়েছে উপহাসের ভাব প্রকাশ করার জন্য, যা এখানে বিদ্যমান রয়েছে।
'আহার করুক এবং উপভোগ করুক'- এ তরজমায় উপহাসের ভাব নেই।

يلههم الأمل (উদাসীন করে রাখুক তাদেরকে [তাদের অলীক] আশা) অন্যান্য তরজমায় শুধু আশা ব্যবহৃত হয়েছে। এ তরজমায় ال অব্যয়টির বিশেষ অর্থ বিবেচিত হয়েছে। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, খেয়ালি পরিকল্পনা তাদেরকে গাফলতে ফেলে রাখুক।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তারা আশায় লেগে থাকুক– এটি ভাবতরজমা।

يلههم এর তরজমা কেউ করেছেন, আশা তাদেরকে মোহাচ্ছন্ন রাখুক– এটি গ্রহণযোগ্য।

يتمتعوا و يلههم এখানে প্রথম و এর প্রতিশব্দরূপে 'এবং' আর দ্বিতীয়টির প্রতিশব্দরূপে 'আর' ব্যবহার করা হয়েছে। কারণ أكل ও تمتع প্রথম দু'টি হচ্ছে এক শ্রেণীর বিষয়, আর তৃতীয়টি অর্থাৎ يلههم হচ্ছে ভিন্ন শ্রেণীর বিষয়।

(ঙ) ما تسبق من أمة أجلها و ما يستأخرون (কোন জাতিই তার নির্ধারিত কালকে ত্বরান্বিত করতে পারে না এবং পারে না বিলম্বিত করতে– এ শৈলী গ্রহণের উদ্দেশ্য হলো বক্তব্যের জোরালোতা প্রকাশ করা।

কোন জাতিই– এখানে 'ই' এসেছে অতিরিক্ত من এর জন্য। শায়খুলহিন্দ (রহ) এ বাক্যটিকে মূলনীতিনির্দেশকরূপে গ্রহণ করে مضارع এর শাব্দিক তরজমা করেছেন।

আর থানবী (রহ) অতীতের অনুসৃত নীতিরূপে তরজমা করেছেন– কোন সম্প্রদায় তার নির্ধারিত মেয়াদের আগে ধ্বংস হয়নি এবং পরেও ধ্বংস হয়নি।

(চ) إن كنت من الصدقين শায়খুলহিন্দ (রহ) কোরআনী তারতীব অনুসরণ করে এ অংশের তরজমা পরে এনেছেন। থানবী (রহ) তরজমার স্বাভাবিকতা রক্ষা করে তা আগে এনেছেন। 'যদি সত্যবাদী হও'– এর তুলনায় 'যদি সত্যবাদী হয়ে থাকো' অধিকতর সঙ্গত। এতে তাদের সত্যবাদী হওয়ার প্রতি কাফিরদের সন্দেহ ও অস্বীকৃতি ফুটে ওঠে।

(ছ) إلا بالحق (কিন্তু চূড়ান্ত ফায়ছালার জন্য) ال দ্বারা كمال বোঝানো হয়েছে, তাই 'চূড়ান্ত' শব্দটি আনা হয়েছে। الحق। দ্বারা ফায়ছালা বা আযাব উদ্দেশ্য। এর স্বপক্ষে থানবী (রহ) রূহুল মাআনীর বরাতে হযরত মুজাহিদ ও হাসান বছরী (রহ)

এর বর্ণনা এনেছেন। আয়াতের পূর্বাপরও তা সমর্থন করে। সুতরাং এ তরজমা ঠিক নয়– 'আমি ফিরেশতাদেরকে প্রেরণ করি না যথার্থ কারণ ছাড়া'।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ رُبَّ

٢ – أعرب قوله : لو كانوا مسلمين

٣ – أعرب قوله : مِنْ أمةٍ

٤ – أعرب قوله : إلا بالحق

٥ – لو كانوا مسلمين এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – ما تسبِق من أمة أجلَها এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) وَ ما خلقنا السمٰوتِ و الارضَ و ما بينَهما اِلَّا بالحق، و اِنَّ الساعَةَ لآتية فاصفَحِ الصَّفْحَ الجميلَ * اِنَّ ربك هو الخلّٰق العليم * وَ لَقد اٰتينٰك سَبْعًا مِنَ المثاني و القرآنَ العظيمَ * لا تَمُدَّنَّ عينَيك الى ما مَتَّعنا به أزواجًا منهم و لا تحزَنْ عليهم وَ اخفِضْ جناحَك للمؤمنين * و قل اِنيِّ اَنا النذير المبين * كَمَا اَنْزَلنا على المقتَسِمين * الذين جَعلوا القرآنَ عِضينَ * فَوَ رَبِّك لَنَسئَلَنَّهم اَجمعين * عما كانوا يعمَلون * فَاصْدَع بما تُؤمَر و اَعرِضْ عَنِ المشركين * اِنّا كفينٰك المستَهزِءين * الذين يجعَلون مع الله اِلٰهًا اٰخَرَ، فسوف يعلَمون *

بيان اللغة

المثاني : جمع المَثْنٰى، و هو كل شيءٍ يُكَرَّر، و المراد بالمثاني الفاتحة، لأنها تُثَنّٰى، أي : تُكَرَّر قراءتُها في الصلاة، و المعنى : و لقد أعطيناك سبعَ آياتٍ هي الفاتحة التي تُثَنّٰى و تُكرر في الصلاة.

زوج (و الجمع أزواج) كل واحدٍ معه آخَرُ من جنسِه কোন কিছুর জোড়া
نوع و صنف و طائفة প্রকার, শ্রেণী, দল
المقتَسِمين : اقتَسَم القومُ شيئًا : أخذ كلٌ منهم قِسما منه
লোকেরা কোন কিছু ভাগ করে নিলো।
و المراد بالمقتسمين اليهود و النصارى، و اقتسامُهم الكتابَ أنهم
آمَنوا بِبَعْضِه و كفروا بِبعضه
عضين : جمع عِضَةٍ، جزءٌ و حصة
اِصْدَعْ (اِجْهَرْ) صَدع بالحق : جهَر به و أعلَنه

بيان الإعراب

إلا بالحق : إلا أداة حصر، و بالحق متعلق بمحذوف، هو حال من فاعلِ الخَلْقِ، أي : متلبسين بالحق، أو نعت لمصدر محذوف، أي : خلقا متلبسا بالحق و الحكمة .
من المثاني : متعلق بنعت لـ: سبعا، و من تبعيضية، أي : سبعا كائنا من المثاني، أو هي بيانية، أي : سبعا هي المثاني .
و القرآنَ : معطوف على : سبعا .
أزواجا منهم : أي : طائفة معدودة من الكفار، مفعول به لـ : متعنا .
كما أنزلنا : إن كان الكاف بمعنى مثلٍ، فهو نعت لمفعول مطلق محذوف، و إن كان حرف جر للتشبيه فهو متعلق به، أي : لقد أنزلنا عليك القرآن إنزالاً مثلَ إنزالنا (أو كإنزالنا) على أهل الكتاب .
الذين : نعت لـ : المقتسمين، أو خبر لمبتدأ محذوف، أي هم الذين .
عضين : مفعول به ثان منصوب بالياء، لأنه ملحق بجمع المذكر السالم، و هي جمع عضة، و أصلها عِضوة على وزن فعلة (بكسر الفاء)
فو ربك : الفاء استئنافية، و الواو للقسم و للجر، متعلق بـ : أقسم المحذوف .
فاصدع : الفاء الفصيحة، أي : إذا عرفت هذا فاصدع، أو هي استئنافية .
بما تؤمر، أي : بما تؤمر به .

المستهزئين : مفعول به ثان لـ : كفينك
مع الله : ظرف متعلق بـ : يجعلون، أو متعلق بمحذوف، مفعول به ثان مقدم لـ : يجعلون .

الترجمة

আর আমি আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীকে এবং যা তাদের মাঝে রয়েছে তা কল্যাণযুক্ত ছাড়া সৃষ্টি করিনি। আর কেয়ামত অবশ্যই আসবে। সুতরাং আপনি পরম সৌজন্যের সাথে (তাদের দুষ্কৃতিকে) মার্জনা করুন। নিঃসন্দেহে আপনার প্রতিপালকই মহাস্রষ্টা, মহাজ্ঞানী। আর অবশ্যই আমি করেছি আপনাকে পুনঃ পুনঃ পঠিত সাত আয়াত এবং মহান কোরআন দান। .

আপনি চোখ তুলে তাকাবেন না ঐ ভোগ-বস্তুর দিকে যা আমি দান করেছি তাদের বিভিন্ন শ্রেণীকে। আর আপনি আপনার পক্ষপুট অবনমিত করুন তাদের (ঈমান না আনার) উপর দুঃখ করবেন না। আর আপনি মুমিনদের জন্য। আর বলুন, আমিই তো সুস্পষ্ট সতর্ককারী।

(আমি কোরআন আপনার উপর নাযিল করেছি) যেমন নাযিল করেছি বিভক্তকারীদের উপর (আসমানী কিতাব), যারা বানিয়েছে কোরআনকে বিভিন্নভাবে বিভক্ত।

তো কসম আপনার রাবের, অবশ্যই আমি জিজ্ঞাসা করবো তাদেরকে, সকলকে, ঐ দুষ্কর্ম সম্পর্কে যা তারা করতো। সুতরাং আপনি প্রকাশ্যে প্রচার করুন ঐ বিষয় যা আপনাকে আদেশ করা হয়। আর উপেক্ষা করুন মুশরিকদেরকে। আমিই আপনার জন্য যথেষ্ট বিদ্রূপকারীদের বিরুদ্ধে, যারা সাব্যস্ত করে আল্লাহর সঙ্গে অন্য কোন ইলাহ। তো শীঘ্রই তারা জানতে পারবে (তাদের পরিণতি)

ملاحظات حول الترجمة

(ক) إلا بالحق (কল্যাণযুক্ত ছাড়া) থানবী (রহ)-এ তরজমার স্বপক্ষে যুক্তি প্রদর্শন করে লিখেছেন, حق শব্দটি باطل এর বিপরীত, আর باطل হলো এমন বিষয় যাতে কল্যাণ ও উপকারিতা নেই। সুতরাং হক হবে এমন বিষয় যাতে কল্যাণ ও উপকারিতা রয়েছে।

একটি তরজমায় রয়েছে, আমি অযথা/তাৎপর্যহীন সৃষ্টি করিনি। (এখানে বিপরীত শব্দ দ্বারা بالحق এর তরজমা করা হয়েছে। এটা চলতে পারে, তবে আয়াতের লক্ষ্য কিন্তু নফী নয়, বরং ইছবাত। সুতরাং ইছবাতি তরজমাই উত্তম হবে।)

(খ) إن الساعة لآتية (কেয়ামত অবশ্যই আসবে/আসছে) কেয়ামত অবশ্যম্ভাবী- এ তরজমা গ্রহণযোগ্য।

(গ) فاصفح الصفح الجميل (পরম সৌজন্যের সাথে মার্জনা করুন) থানবী (রহ) লিখেছেন, خوبي كے ساتهـ (সুন্দরভাবে) তারকীবানুগ তরজমা হলো, আপনি মার্জনা করুন উত্তম মার্জনা।

যেহেতু এখানে সাধারণ শব্দ عفو এর পরিবর্তে বিশেষ শব্দ صفح ব্যবহার করা হয়েছে সেহেতু তরজমায় সাধারণ শব্দ 'ক্ষমা' এর পরিবর্তে বিশেষ শব্দ 'মার্জনা' ব্যবহার করা হয়েছে।

(ঘ) سبعا من المثاني (পুনঃ পুনঃ পঠিত সাত আয়াত) سبعا এর তরজমায় উহ্য تمييز কে উল্লেখ করা হয়েছে অর্থাৎ سبع آيات। আর من المثاني কে ছিফাতরূপে উল্লেখ করা হয়েছে।

একটি তরজমায় রয়েছে- সাত আয়াত, যা বার বার পঠিত হয়।

(ঙ) لا تمدن عينيك (চোখ তুলেও তাকাবেন না) এর শাব্দিক অর্থ- আপনার দুই চক্ষু প্রসারিত করবেন না। মতলব হলো, প্রাপ্তির ইচ্ছা ও আগ্রহের দৃষ্টিতে তাকানো। এই ভাবটি থানবী (রহ) এর তরজমায় সুন্দরভাবে ফুটে উঠেছে। তাই তা গ্রহণ করা হয়েছে। তার তরজমা- آنكهـ اٹها كر بهي نه ديكهيں

(চ) و اخفض جناحك (অবনমিত করুন আপনার পক্ষপুট) এটি শব্দানুগ তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, নত করুন আপনার বাহু। এ তরজমার কারণ এই যে, মানুষের ডানা হলো তার বাহু। এটিও প্রায় শব্দানুগ তরজমা।

থানবী (রহ) ভাবতরজমা করে লিখেছেন, স্নেহশীল হোন। তিনি বলেন, পাখী তার ছানার প্রতি এভাবে মমতা প্রকাশ করে: তা থেকে স্নেহ ও মমতা প্রকাশের অর্থে এর ব্যবহার হয়।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة المثاني

٢ - أعرب قوله : من المثاني

٣ - أعرب قوله : كما أنزلنا

٤ - عرف الفاء في قوله : فاصدع

৫ - إلا بالحق এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - واخفض جناحك এর কী তরজমা করেছেন থানবী (রহ) এবং কেন ?

(٣) اتى اَمْرُ الله فلا تستَعجِلوه، سُبحٰنه و تَعالى عَمّا يُشركون * يُنَزِّل المٰلئِكةَ بالرّوح من اَمْرِه على مَنْ يَشاء مِنْ عباده اَنْ اَنذِرُوا اَنّه لا اِلٰه اِلّا اَنا فاتقون * خلَق السمٰوٰت و الارضَ بالحق، تَعٰلىٰ عَمّا يُشركون * خلَق الانسانَ مِنْ نُطفة فَاِذا هو خَصيم مبين * وَ الانعامَ خلَقها لكم فيها دِفءٌ و مَنافِعُ و منها تاكلون * وَ لكم فيها جَمال حين تُريحون و حين تَسْرَحون * و تحمِل اثقالَكم الى بَلدٍ لم تكونوا بٰلغيه اِلّا بِشِقِّ الانفُسِ، اِنَّ ربكم لَرَءوف رحيم * و الخيلَ و البِغالَ و الحميرَ لِتَركَبوها و زينَةً، و يخلُق ما لا تعلمون *

بيان اللغة

تَعالى : تَرفَّع و تنَزَّه — নীচতা থেকে উর্ধ্বে হলো এবং পবিত্র হলো

عَلا شيءٌ (ن، عُلُوًّا) ارتفَع، فهو عال (علا النهارُ، علا الماءُ)

و يقال : علا فلان في الأرض : تكبَّر و تجبَّر

قال تعالى : إن فرعونَ علا في الأرض

و قال : فاستكبَروا و كانوا قومًا عالين

و قال : تلك الدار الآخرة نجعَلها للذين لا يريدون عُلُوًّا في الأرض و لا فسادًا

و في سورة النمل : أَلَّا تعلُّوا عَلَيَّ و أتوني مسلمين .
عَلا شيئًا/على شيءٍ و فيه : صعِدَه
أَعْلَىٰ شيئًا : رفَعه و جعَله عاليًا
استعلى : طلَب العُلُوَّ أو العَلاءَ বড়াই ও বড়ত্ব দাবী করলো কিংবা উচ্চ মর্যাদা পেতে চাইল।
استكبَر অহংকার করলো
قال تعالى : قد أفلَح اليومَ مَنِ استعلىٰ (أي : تَغلَّبَ)
نطفة : قطرةٌ ماءٍ
دِفء : نَقيض البَرْدِ শীতলতার বিপরীত, উষ্ণতা
دَافِئٌ : ساخن উষ্ণ
أدفَأه : اَسخَنَه তাকে উষ্ণ করলো
استدفَأ : طلَب الدِّفْءَ উষ্ণতা লাভ করলো, লাভ করতে চাইলো
: لَبِسَ ما يُدفِئه গরম কাপড় পরলো
مَنفعة : كل ما ينتفع به (ج) مَنافِع
تُرِيحون (تَرجعون بها عَشِيًّا من المرعىٰ)
راح (ن، رَواحا) سار في العشي، ويستعمل للمسير في أيِّ وقتٍ كان، ليلا أو نهارا، و كذلك الغُدُوُّ، وُضِع للسير عند الفجر، و يستعمل للسير المطلق
راح الإبلُ و غيرها (ن، س، رَوْحًا) عادت بعد الغروب إلى مُراحها (أي : مأواها)
أراح الإبلَ و غيرَها : رَدَّها إلى مُراحها
أراح الرجلُ : دخل في الرَّواح (و هو من زوال الشمس إلى الليل)
أراحه من شيءٍ : خلَّصه منه
تَسرحون (تخرجون بها صَباحا إلى المرعى)
السَّراح : الخروج بالماشية صباحا إلى المرعى (ف)
أثقال (ج) ثِقْل : حمل ثقيلٌ ভারী বোঝা
ثَقَلٌ (ج) أثقال : متاع، شيء نفيس .

في الحديث : إني تارك فيكم الثَّقَلين : كتابَ الله و عِتْرَتي (أي : أهلَ بيتي) و الثقَلان : الجن و الإنس .

الشِّقُّ : الجُهد و المَشَقَّة، و شِقُّ الشيء : جزءُه أو نِصفه أو جانبه .

بيان الإعراب

سبحنه : مفعول مطلق لفعل محذوف، أي : أسبح، و هو لا يستعمل إلا مضافا .

عما يشركون : يتعلق بـ : تعالى . و ما مصدرية أو موصولة أو نكرة بمعنى شيء، و الجملة نعت للنكرة .

بالروح : أي : بالوحي أو بالقرآن أو بالرحمة و الهداية، كما في التفسير . يتعلق بمحذوف، حال من الملائكة، أي : مصحوبَةً بالوحي .

من أمره : أي : معدودًا من أمره، و من للتبعيض أو للبيان .

من عباده : هذا لبيان الموصول، حال من مفعول يشاء المحذوفِ، أي : على من يشاءه معدودًا من عباده .

أن أنذروا : أن حرف تفسير، لأن التنزيل وحي، و فيه معنى القول .

أنه لا إله إلا أنا : مصدر مؤول في محل جر بحرف جر محذوف، و أصل العبارة : أنذروا بكوني الإلهَ الواحدَ .

فاتقون : الفاء الفصيحة، أي : إذا ثبت تنزيل الوحي فاتقوني .

فإذا هو خصيم مبين : إذا فجائية، لا محل لها من الإعراب، و هي تدخل على الجملة الاسمية .

الأنعام : مفعول به لفعل محذوف يفسره الفعل الذي بعده، لأنه مشتغل بضميره .

لكم : يتعلق بـ : خلَق، إذا كان الوقفُ بعدَ : لكم، و إن كان الوقف بعدَ : خلقها، فهو متعلق بخبر مقدم لـ : دفءٌ، و فيها يتعلق بالخبر المقدم المحذوف، أي : الدفء ثابت لكم في الأنعام .

و منافع عطف على : دفء

و جملة لكم فيها دفء و منافع حالية أو مسأنفة .

حين تريحون : الظرف متعلق بنعت لـ : جمال، أي : جمال حاصل حينَ رَواحِكم .

إلا بشق الأنفس : إلا أداة حصر، و حرف الجر متعلق بـ : بالغيه .

لتركبوها : متعلق بفعل مقدر، أي : و سَخَّر هذه الدوابَّ لركوبكم، و الجار مع مجروره في محل نصب مفعول لأجله .

و زينة : الواو عاطفة، و زينة مفعول به لفعل محذوف، أي : وجعَلَها زينة، فيكون عطف جملة على جملة، أو مفعول لأجله، معطوف على محل لتركبوها و المعنى : خلقها للركوب و للزينة .

الترجمة

এসে পড়েছে আল্লাহর (আযাবের) হুকুম, সুতরাং তাড়াহুড়া মাচিও না তোমরা তা নিয়ে। তিনি চিরপবিত্র এবং চিরসমুচ্চ ঐ সকল উপাস্য থেকে যাকে তারা (তাঁর সঙ্গে) শরীক করে। অবতীর্ণ করেন তিনি ফিরেশতাদেরকে অহীসহ অর্থাৎ আপন আদেশসহ, আপন বান্দাদের মধ্য হতে যার উপর ইচ্ছা করেন, এই মর্মে যে, তোমরা (লোকদেরকে) সতর্ক করো যে, নেই কোন ইলাহ আমি ছাড়া; সুতরাং ভয় করো তোমরা আমাকে। সৃষ্টি করেছেন তিনি আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীকে প্রজ্ঞার সাথে। তিনি ঐ সকল উপাস্য থেকে চিরসমুচ্চ যাকে তারা (তাঁর সঙ্গে) শরীক করে।

মানুষকে সৃষ্টি করেছেন তিনি একটি 'নুতফা থেকে, অথচ 'হতে না হতেই' সে প্রকাশ্য বিবাদকারী (হয়ে পড়েছে)।

আর চতুষ্পদ জন্তু, তিনি তা সৃষ্টি করেছেন তোমাদের জন্য। তাতে রয়েছে উষ্ণতা (লাভের উপকরণ) এবং বহু উপকার। আর তা থেকেই তোমরা আহার করো।

আর তাতে রয়েছে তোমাদের জন্য সৌন্দর্য যখন তোমরা সন্ধ্যায় ফিরিয়ে আনো এবং ভোরে (চারণভূমিতে) নিয়ে যাও।

আর সেগুলো বহন করে নিয়ে যায় তোমাদের 'ভার-বোঝা' এমন (দূর) দেশে যেখানে তোমরা পৌঁছতে পারতে না জানের কষ্ট ছাড়া। নিঃসন্দেহে তোমাদের প্রতিপালক অতি কোমল, চিরদয়ালু।

আর (তিনি সৃষ্টি করেছেন) ঘোড়া ও খচ্চর ও গাধা তোমাদের আরোহণের জন্য এবং (তোমাদের) শোভার জন্য। আর তিনি সৃষ্টি করেন (এমন অনেক কিছু) যা তোমরা জানো না।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أتى أمر الله (এসে পড়েছে আল্লাহর হুকুম) শুধু এসেছে-এর পরিবর্তে এসে পড়েছে বা এসে গেছে – তরজমা করা উত্তম। কেননা বিষয়টির আগমনের অতিআসন্নতা এবং অতিনিশ্চয়তা বোঝানোর জন্যই مضارع এর পরিবর্তে ماضي ব্যবহার করা হয়েছে। আর তা দ্বিতীয় তরজমায় বেশী প্রকাশ পায়। তাছাড়া তাতে একটা ব্যস্তসমস্ততার ভাব রয়েছে।

'আল্লাহর হুকুম এসে পড়লো বলে' – এ তরজমা সুন্দর নয়, কারণ এতে কিঞ্চিৎ লঘুভাব রয়েছে।

শায়খায়ন أتى এর তরজমা মাযী দ্বারাই করেছেন। একটি বাংলা তরজমায় আছে, অবশ্যই আসবে– অর্থাৎ তাতে নিশ্চয়তার মর্মটুকু 'অবশ্যই' দ্বারা আলাদাভাবে প্রকাশ করা হয়েছে। এবং বাস্তবতার বিবেচনায় مضارع এর শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে।

أمر الله এর তরজমা কেউ করেছেন, আল্লাহর বিধান/হুকুম। এটি শাব্দিক অর্থ। কেউ তরজমা করেছেন আযাব। এটি উদ্দেশ্যগত তরজমা। কিতাবে উভয় দিক বিবেচনা করে 'আল্লাহর (আযাবের) হুকুম' তরজমা করা হয়েছে।

(খ) فلا تستعجلوه (সুতরাং তাড়াহুড়া মাচিও না তোমরা তা নিয়ে) থানবী (রহ) লিখেছেন, جلدي مت مچاو বাংলায় উপযুক্ত কোন প্রতিশব্দ না পেয়ে সেটাই ব্যবহার করা হয়েছে। আয়াতের তিরস্কারের ভাবটি তরজমায় ফুটে উঠেছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– তা তরান্বিত করতে চেয়ো না– এতে মূলের মত তরজমায়ও مفعول به এর সরাসরি ব্যবহার এসেছে, কিন্তু আয়াতে তিরস্কারের যে ভাব ছিলো তা ফুটে উঠেনি।

একটি তরজমায় আছে, এর জন্য তাড়াহুড়া করো না– মূলানুগ না হলেও এটাও গ্রহণযোগ্য তরজমা।

(গ) سبحنه و تعالى عما يشركون (তিনি চিরপবিত্র এবং চিরসমুচ্চ ঐ সকল উপাস্য থেকে যাকে তারা [তাঁর সঙ্গে] শরীক করে।) এই তরজমার ভিত্তি এই যে, عما يشركون এর সম্পর্ক হচ্ছে سبحنه ও تعالى উভয়ের সঙ্গে। এটি থানবী (রহ) এর তরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– তিনি মহিমান্বিত এবং তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে। এ তরজমা মতে عما ... এর সম্পর্ক শুধু تعالى এর সঙ্গে।

(ঘ) بالروح من أمره (অহী অর্থাৎ আপন আদেশসহ) কিতাবের তরজমার ভিত্তি এই যে, من أمره হচ্ছে الروح এর ব্যাখ্যা। থানবী (রহ) এ তরজমা করেছেন। শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা– তিনি নাযিল করেন ফিরেশতাদেরকে রহস্য (অহী) দিয়ে, আপন আদেশে।

এ তরজমার মর্ম এই যে, ফিরেশতারা আল্লাহর হুকুমে অবতীর্ণ হন।

(ঙ) فإذا هو خصيم مبين (অথচ 'হতে না হতেই' সে প্রকাশ্য বিবাদকারী [হয়ে পড়েছে]) إذا এর আকস্মিকতা প্রকাশ করার জন্য, এখানে 'হতে না হতেই' ব্যবহার করা হয়েছে। সাধারণত 'হঠাৎ দেখা গেলো' বলা হয়।

একটি তরজমায় আছে, 'অথচ দেখো',–এটি মোটামুটি গ্রহণযোগ্য।

একটি তরজমায় আছে, 'তা সত্ত্বেও'– এখানে আকস্মিকতার ভাব নেই।

(চ) فيها دفء (তাতে রয়েছে উষ্ণতা) دفء এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, 'শীতের সামান' – এ তরজমা শব্দানুগ নয়। একটি বাংলা তরজমায় আছে, শীত নিবারক উপকরণ। এ সম্পর্কেও একই কথা।

(ছ) و الأنعام خلقها (আর চতুষ্পদ জন্তু, তিনি তা সৃষ্টি করেছেন) এ তরজমা হচ্ছে তারকীবানুগ। 'আর তিনি চতুষ্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন'– এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে তারকীবানুগ নয়।

(জ) لكم فيها جمال (তোমাদের জন্য তাতে রয়েছে সৌন্দর্য) এটি শব্দানুগ ও তারকীবানুগ তরজমা। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, সেগুলোর কারণে তোমাদের মর্যাদা হয়।

থানবী (রহ) 'মর্যাদা' এর পরিবর্তে 'জাঁকজমক' ব্যবহার করেছেন। দুটোই ভাবতরজমা।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, তোমরা তার সৌন্দর্য উপভোগ করো– এটি মূল থেকে বেশ দূরবর্তী তরজমা।

(ঝ) و تحمل أثقالكم (আর সেগুলো বহন করে নিয়ে যায়)

কেউ লিখেছেন, শুধু বোঝা, কেউ লিখেছেন, শুধু 'ভার'। বহুবচনের অর্থ প্রকাশের জন্য কিতাবে 'ভার-বোঝা' ব্যবহার করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح معاني إراحَةً و رَواحًا
٢ - بم يتعلق قوله : بالروح و ما إعرابُ مِن أمره ؟
٣ - أعرب قولَه : و الأنعام
٤ - أعرب قولَه : و زينةً
٥ - أتى أمرُ الله এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - أثقالكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٤) قَد مَكَرَ الذين مِن قَبلِهم فَاتى الله بُنيانَهم مِنَ القَواعد فَخَرَّ عليهم السقفُ من فَوقِهم و اتٰهم العَذاب مِنْ حيث لا يشعُرون * ثم يومَ القيٰمة يُخزيهم و يقول اَين شُرَكاءِي الذين كنتم تُشاقون فيهم، قال الذين اُوتو العلمَ اِنَّ الخزيَ اليومَ و السوءَ على الكٰفرين * الذين تَتوفّٰهم الملٰئكةُ ظالمي انفسهم، فالقَوا السَّلَم ما كنا نعمَل مِن سوءٍ، بلى اِنَّ الله عليم بما كنتم تعملون * فَادخُلوا ابوابَ جهنم خٰلدين فيها ، فَلبِئسَ مَثْوَى المتكبرين *

بيان اللغة

بنيان : مصدر بني (بِناءً، ض) و يستعمل بمعنى المبني، أي : ما بني .
و القاعدة من البناء : أساسَه، (و الجمع) قواعد
السَّلَم : الاستسلام، ألقى السَّلَم : استسلم

بيان الإعراب

من القواعد : يتعلق بـ : اَتٰى، أي : أتى البنيانَ من ناحيَة القَواعد .

من فَوقهم : متعلق ثان بـ : خر، أو بحال محذوفة من فاعلِ خَرَّ، أي : كائِنًا من فَوقهم ·

من حيث لا يشعرون : يتعلق بـ : أتاهم، و الجملة مضافة إلى الظرف، أي : مِن مَكان عدَمِ شُعورهم ·

أين شركائي الذين كنتم تشاقون فيهم : أين اسم استفهام و ظرف في محل نَصب يتعلق بخبر مقدم محذوف، و شُركائي مبتدأ مؤخر ·

و مفعول تشاقون محذوف، أي : كنتم تخالفون و تُعادون الأنبياءَ في الشركاء ·

إن الخزي اليومَ و السوءَ على الكٰفرين : اليوم ظرف زمان يتعلق بخبر إن، و السوءَ معطوف بالواو على : الخزيَ، و على الكفرين يتعلق بخبر إن، أي : إن الخزي و السوء واقعان اليوم عليهم ·

ظالمي أنفسهم : أضيف شبه الفعل إلى مفعوله · و هو حال من مفعول تتوفى ·

فألقَوا السَّلَم : الفاء عاطفة عطفت بها الجملة على : تتوَفّٰهم، لأن المضارع بمعنى الماضي، أو هي استئنافية ·

ما كنا نعمَل من سوءٍ : الجملة في محل نصب مقول القول، أي : و قالوا : و من حرف جر زائد لتأكيد معنى النفي، وسوءٍ مجرور لفظا منصوب محلا على أنه مفعول به ·

فلبئس : الفاء استئنافية و اللام للتوكيد، و المخصوص بالذم محذوف، أي : هي ·

الترجمة

অবশ্যই চক্রান্ত করেছে তারা যারা তাদের পূর্বে (বিগত হয়েছে)। তখন আল্লাহ ধ্বংস করে দিয়েছেন তাদের (চক্রান্তের) ইমারতকে সমূলে। ফলে (যেন ধ্বসে পড়েছিলো তাদের উপর (ঐ ঘরের) ছাদ তাদের উপর থেকে। আর আপতিত হলো তাদের উপর আযাব এমন দিক থেকে যা তারা ভাবতেও পারেনি।

তারপর কেয়ামতের দিন অপদস্থ করবেন তিনি তাদেরকে এবং বলবেন, কোথায় আমার শরিকদাররা যাদের বিষয়ে তোমরা

(রাসূলের সাথে) বিরোধ করতে। যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছে তারা বলবে, নিঃসন্দেহে আজ লাঞ্ছনা ও মন্দ (পরিণাম) (পতিত হবে) কাফিরদের উপর, যাদেরকে ফিরেশতারা (জান) কব্য করেছিলো এ অবস্থায় যে, তারা নিজেদের উপর যুলুম করছিলো, তখন তারা আত্মসমর্পণ নিবেদন করবে, (আর বলবে,) আমরা তো কোনই মন্দ কাজ করতাম না। (জবাবে আল্লাহ বলবেন) অবশ্যই (তোমরা তা করতে)। নিঃসন্দেহে আল্লাহ পূর্ণ অবহিত ঐ বিষয়ে যা তোমরা করতে। সুতরাং ঢোকো তোমরা জাহান্নামের দরজা দিয়ে, তাতে চিরস্থায়ীরূপে। তো অহংকারীদের ঠিকানা (জাহান্নাম) কত না মন্দ!

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قد مكر الذين من قبلهم (অবশ্যই চক্রান্ত করেছে তারা যারা তাদের পূর্বে [বিগত হয়েছে])- বন্ধনীটি যুক্ত হয়েছে ব্যাকরণের প্রয়োজনে। থানবী (রহ) এটি বন্ধনী ছাড়া যোগ করেছেন। বাংলা তরজমাগুলোতে 'তাদের পূর্ববর্তীগণ' লেখা হয়েছে, এটি গ্রহণযোগ্য, তবে তারকীবানুগ নয়।

(খ) فأتى الله بنيانهم من القواعد (তখন আল্লাহ ধ্বংস করে দিয়েছেন তাদের [চক্রান্তের] ইমারতকে সমূলে)- বন্ধনী দ্বারা বিষয়টির রূপকতার প্রতি ইঙ্গিত করা হয়েছে। অর্থাৎ তাদের চক্রান্ত নস্যাৎ করে দেয়াকে রূপকভাবে তাদের ইমারত সমূলে ধ্বসিয়ে দেয়া সাব্যস্ত করা হয়েছে।

من القواعد এর মূল অর্থ হলো ভিত্তি বা বুনিয়াদের দিক থেকে, অর্থাৎ ধ্বংসের আঘাতটি বুনিয়াদের দিক করা হয়েছিলো। ফলে তা সমূলে ধ্বংস হয়েছিলো।

পুরো বাক্যটির শাব্দিক অর্থ হলো- তখন এলেন আল্লাহ তাদের ভবনে ভিত্তির দিক থেকে-এর ইঙ্গিতার্থ হলো ধ্বংস করা।

(গ) أين شركائي (কোথায় আমার শরিকদাররা) একটি বাংলা তরজমায় আছে, আমার শরীকদাররা কোথায়?

কোথায় শব্দটি আগে আনা হলে আয়াতের বক্তব্যের জোরালোতা রক্ষিত হয়।

(ঘ) الذين كنتم تشاقون فيهم (যাদের সম্পর্কে তোমরা বিরোধ

করতে) থানবী (রহ) এর তরজমা করেছেন, যাদের সম্পর্কে তোমরা লড়াই ঝগড়া করতে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যাদের সম্পর্কে তোমাদের হঠকারিতা/অনমনীয়তা ছিলো।

দুটোই ভাবতরজমা। শব্দানুগ তরজমা হলো, যাদের বিষয়ে তোমরা (নবীদের) বিরোধিতা করতে।

(ঙ) من حيث لا يشعرون (এমন দিক থেকে যা তারা ভাবতেও পারেনি) এটি মূলানুগ তরজমা। শুধু مضارع এর স্থলে ماضي বসানো হয়েছে। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'এমনভাবে এসেছে যা তাদের ধারণাও ছিলো না'। তিনি حيث কে স্থানবাচক না ধরে অবস্থাবাচক ধরেছেন। এর অবকাশ রয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে- যা ছিলো তাদের ধারণারও অতীত। এটি মূলানুগ নয়।

(চ) السوء এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, আযাব, এটি ভাব তরজমা।

(ছ) فألقوا السلم (তখন তারা আত্মসমর্পণ নিবেদন করবে) শাব্দিক তরজমা- তারা আত্মসমর্পণ (মূলকবক্তব্য) নিক্ষেপ করবে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তারা আনুগত্য প্রকাশ করবে। এ তরজমা শব্দানুগ নয়।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ بُنيانٍ

٢ - ما هو مفعول تشاقُّون ؟

٣ - أعرب قوله : ظالمي أنفُسِهم

٤ - أعرب قوله : من سوءٍ

٥ - তাদের (চক্রান্তের) ইমারতকে- এই বন্ধনীর উদ্দেশ্য ব্যাখ্যা করো

٦ - من حيث لا يشعرون এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ قيل لِلذين اتقَّوا ماذا أنزل ربكم، قالوا خيرًا، لِلذين أحسَنوا في هذه الدنيا حَسَنة، و لَدار الأخِرة خيرٌ، و لَنِعمَ دار المتقين * جَنّٰت عدن يدخلونها تجري من تحتها الأنهر

لَهم فيها ما يَشاءون، كذلك يَجزي الله المتقين * الذين تَتَوفّهم الملٰئِكة طيِّبين يقولون سَلام عليكم ادخلوا الجنةَ بِما كنتم تعمَلون * هل ينظُرون إلّا ان تاتيَهم الملٰئِكة او ياتيَ امرُ ربك، كذلك فَعَل الذين مِنْ قَبلِهم، و ما ظلَمَهم الله و لكن كانوا انفُسَهم يظلِمون * فَاَصابَهم سيات ما عملوا و حاقَ بهم ما كانوا به يَستهزءون *

بيان اللغة

حاق به شيءٌ : (ض، حَيْقًا، حُيوقا، حَيَقانا) : أصابه و أحاط به
حاق به الأمرُ : لَزِمه و وجب عليه

بيان الإعراب

خيرًا : أي : أنزل خيرًا، و حسنة مبتدأ مؤخر، و للذين متعلق بخبر مقدم محذوف، و هذه الجملة في محل نصب بدل من خيرًا، أي : قالوا : أنزل ربنا هذا الكلام، و يجوز أن تكون الجملة كلاما مستأنفا بيانيا .

و لدار الآخرة : اللام لام الابتداء، و لامُ لَنِعم للتوكيد .

جنت عدن : خبر مبتدأ محذوف، أي : هي جنات عدن، و الجمل التي بعدها صفاتها، و يجوز أن تكون جنّتُ عدنٍ مخصوصةً بالمدح، فتكون مبتدأ مؤخرا، خبره جملة نعم دار المتقين، و جملة يدخلونها حالية، و تجري حال ثانية، و لهم فيها ما يشاؤون حال ثالثة .

كذلك يجزي الله : الإشارة بـ : ذلك إلى الجزاء الذي ذكر في الآية السابقة، أي : يجزي الله جزاء كذلك أو مثل ذلك الجزاء .

الترجمة

আর যারা (শিরক থেকে) বেঁচে থাকে তাদেরকে বলা হয়, কী নাযিল করেছেন তোমাদের প্রতিপালক? তারা বলে, উত্তম (কথা

নাযিল করেছেন, অর্থাৎ) যারা সৎ কাজ করে এই পৃথিবীতে, তাদের জন্য রয়েছে কল্যাণ। আর আখেরাতের আবাস আরো উত্তম। আর মুত্তাকীদের বাসস্থান কত না উত্তম!

তা হচ্ছে চিরস্থায়ী বসবাসের বাগবাগিচা যাতে তারা প্রবেশ করবে, যার তলদেশ দিয়ে প্রবাহিত হয় নহর-নালা, যাতে তাদের জন্য রয়েছে (ঐ সব কিছু) যা তারা চাইবে। সেভাবেই আল্লাহ পুরস্কৃত করবেন মুত্তাকীদের, যাদের (জান) কবয করেন ফিরেশতাগণ পবিত্র অবস্থায়। (আর) তারা বলেন, সালাম তোমাদের প্রতি। প্রবেশ করো তোমরা জান্নাতে ঐ আমলের বিনিময়ে যা তোমরা (দুনিয়াতে) করতে।

তারা শুধু প্রতীক্ষা করে যে, আগমন করবে তাদের কাছে (মৃত্যুর) ফিরেশতা; কিংবা এসে যাবে আপনার প্রতিপালকের হুকুম (কিয়ামত কিংবা আযাব)। তেমনই করেছে যারা তাদের পূর্বে বিগত হয়েছে।

আর যুলুম করেননি তাদের উপর আল্লাহ, বরং তারাই নিজেদের উপর যুলুম করতো। অবশেষে পাকড়াও করেছে তাদেরকে তাদের কৃত মন্দ আমলের শাস্তি এবং বেষ্টন করেছে তাদেরকে ঐ আযাব যে সম্পর্কে তারা উপহাস করতো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) قيل للذين اتقوا (যারা [শিরক] পরিহার করেছে তাদেরকে বলা হয়) মক্কার বাইরের লোকেরা মক্কায় এসে জিজ্ঞাসা করতো যে, মুহম্মদের উপর কী নাযিল হচ্ছে ? মুশরিকরা তাদেরকে বিভ্রান্ত করার জন্য বলতো, (নাযিল হয়েছে) আদি পূর্ববর্তীদের আজগুবি সব কথা। আর জিজ্ঞাসিত ব্যক্তি মুমিন হলে সে তাদেরকে উদ্বুদ্ধ করার জন্য বলতো, (নাযিল হয়েছে) বড় উত্তম কথা।

পূর্বের আয়াতে মুশরিকদের কথিত বক্তব্যের নিন্দা করা হয়েছে। আর বর্তমান আয়াতে মুমিনদের বক্তব্যের প্রশংসা করা হয়েছে।

আয়াতের এই শানে নুযূলের প্রেক্ষিতে এটাকে পিছনের ঘটনা হিসাবে 'বলা হয়' এবং 'বলে' তরজমা করা হয়েছে।

পক্ষান্তরে এটাকে আখেরাতের ঘটনা হিসাবে কেউ কেউ 'বলা

হবে' এবং 'বলবে' তরজমা করেছেন।

للذين اتقوا এটি যেহেতু মুশরিকদের বিপরীতে এসেছে, এজন্য থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, যারা শিরক থেকে বেঁচে থাকে, অর্থাৎ তিনি عن الشرك উহ্য ধরেছেন।

সাধারণভাবে এ তরজমা করা যায়, 'যারা ধার্মিকতা অবলম্বন করে', অথবা, 'যারা আল্লাহকে ভয় করে'।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর পরহেযগারদেরকে বলা হয়েছে।

(খ) للذين أحسنوا في هذه الدنيا حسنة (যারা সৎকাজ করে এই পৃথিবীতে তাদের জন্য রয়েছে কল্যাণ) কিতাবে তরজমায় في অব্যয়টি أحسنوا এর সাথে সম্পৃক্ত। পক্ষান্তরে থানবী (রহ) এর তরজমায় এটি حسنة এর সাথে সম্পৃক্ত। তিনি লিখেছেন, 'যারা নেক আমল করে তাদের জন্য দুনিয়াতেও রয়েছে কল্যাণ, আর আখেরাতের আবাস তো আরো উত্তম'।

(গ) سلام عليكم (সালাম তোমাদের প্রতি) এর তরজমা থানবী (রহ) করেছেন, ফিরেশতারা বলতে থাকেন, আসসালামু আলাইকুম।

শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, তোমাদের উপর শান্তি হোক। কিতাবের তরজমাটি হচ্ছে, মধ্যবর্তী।

يقولون (আর) বলেন- এ বাক্যটি আরবী তারকীবে হাল হয়েছে, তবে সরল তরজমার তাগিদে এখানে عطف এর তরজমা করা হয়েছে।

(ঘ) ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون (প্রবেশ করো তোমরা জান্নাতে ঐ আমলের বিনিময়ে যা তোমরা করতে) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, তোমরা জান্নাতে চলে যাও নিজেদের আমলের কারণে। শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, যাও বেহেশতে ঐ আমলের বিনিময়ে যা তোমরা করতে। উভয় তরজমার মাঝে দু'টি পার্থক্য রয়েছে। প্রথমত ب এর অর্থ নির্ধারণের ক্ষেত্রে, দ্বিতীয়ত ما এর পরিচয় নির্ণয়ের ক্ষেত্রে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ حاقَ

٢ - أعرب قوله : و لنعم دار المتقين .

٣ - أعرب قوله : طيبين
٤ - ما فاعل حاق
٥ - قالوا ও قيل এর দু'টি তরজমার সূত্র আলোচনা করো
٦ - بما كنتم تعملون শায়খায়নের তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) وَ اِن لكم في الانعام لَعِبرةً، نُسقِيكم مما في بُطونه من بَينِ فَرْثٍ و دم لبنا خالصا سائغا لِلشّٰربين * و من ثَمَرٰت النخيل و الاعناب تتخذون منه سَكَرًا و رزقا حَسَنًا، اِنَّ في ذلك لآيَةً لقوم يعقِلون * و اَوْحٰى ربك الى النحلِ اَنِ اتخذي مِنَ الجبال بُيوتا و مِنَ الشجَر و مما يعرِشون * ثم كُلي من كل الثمرٰت فاسلُكي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلا، يخرج من بطونها شراب مختَلِف اَلوانُه فيه شفاء للناس، اِن في ذلك لَآيَةً لقوم يتفكرون * و الله خلَقَكم ثم يتوفّٰكم و منكم من يُرَدُّ الى اَرْذَلِ العمُر لكي لا يعلَمَ بعدَ علِمٍ شيئا، اِن الله عليم قدير *

بيان اللغة

سَقٰى فلانا (ض، سَقْيًا) و أَسقاه : أَرْواه، قال تعالى : و سَقاهم ربُّهم شرابا طَهورًا . و قال : و اَسقَيناكم ماءً فراتا
السقي أن تعطيَه ما يشرب، و الإسقاء أبلَغُ من السقي، لأن الإسقاءَ أن تجعَلَ له ما يَسْتقِي منه و يشرَب، تقول : اَسقيتُه نَهْرًا
استسقى فلانًا / من فلانٍ : طلَب منه السُّقْيا .
و السُّقْيَا الاسم من السَّقْيِ، يقال : سُقْيَا رحمَةٍ لا سُقْيا عَذابٍ : أي : اِسْقِنا غَيثًا فيه نفع بلا ضَرَرٍ .
استقى فلانا / من فلان : طلب منه السقيَ .
استقى من النهر / البئر و نحوهما : أخذ من مائهما
استقى العلومَ أو المعارفَ أو الأخبارَ من كذا ... حصل عليها من كذا

السِّقايَة عملُ السَّقْيِ ·

فَرْثٌ و فُراثَة : بقايا الطعام في الكَرِشِ، (و هو كالمَعِدَة للإنسان)

سائغا (لذيذًا هَنِّئًا)

سَكَرًا : السَّكَر كل ما يُسكِر من خَمْرٍ و شراب

يَعرِشون : (يبنُون) (ض، ن، عَرْشًا) عَرَشَ : بنى عَرِيشًا

و العَرِيش : ما يُستَظَلُّ به — ছাউনী, যার ছায়া গ্রহণ করা হয়

: ما عُرِشَ للكَرْمِ — আঙ্গুরের জন্য তৈরী মাচা

: السقف (و الجمع عُرُش) — ছাদ

ذَلول (ج) ذُلُلٌ : منقاد مسخَّر — অনুগত ও বশীভূত

أرذل العمُر : أضعفُ العمرِ — বয়স ও বার্ধক্যের দুর্বলতম কাল

بيان الإعراب

إن لكم في الأنعام لعبرة : حرفا الجر يتعلقان بخبر إن المقدم المحذوف ·

مما في بطونه : من هذه تبعيضية، لأن اللبنَ بعضُ ما في بطون الأنعام، تتعلق بـ : نُسقي · و في بطونه متعلق بمحذوف، صلةٌ ما · و في الأنعام وجهان، أحدهما أن يكون اسمًا مفرَدًا مقتضيًا لمعنَى الجمعِ، و ثانيهما أن يكون تكسيرَ نَعَمٍ، فيجوز تذكيرُه لكونه مُفرَدًا لفظا، و يجوز تأنيثه لكونه جمعًا معنًى، أو لكونه تكسيرَ نَعَمٍ · فجاز عود الضمير المفرد إليه، كما جاز عود الضمير مؤنثا في سورة المؤمنين : و إن لكم في الأنعام لعبرة نسقيكم مما في بطونها ·

من بين فرث و دم : متعلق بمحذوف حال مقدمة من : لبنا، أي : كائنا من بين فرث و دم، و لو تأخر الجار و المجرور، فقيل : لبنا من بين فرث و دم لكان صفةً له ·

لبنا : مفعول نسقي الثاني، أو هو تمييز، فتكون مِن التبعيضيَّةُ قائما مقام المفعول الثاني، أي : بعضَ ما في بطونه ·

و من ثمرات النخيل و الأعناب : يتعلق بمحذوف دل عليه نُسقيكم السابق، أي : و نسقيكم من ثَمَرات النخيل و الأعناب عصيرًا ·

فالمفعول الثاني محذوف، و عطفت الجملة على الجملة، و جملة تتخذون حال .

و قال أبو حَيَّانَ : هذا متعلق بـ : تتخذون، و تكررت : منه للتوكيد، و إفراد الضمير باعتبار معنى الثمرات، و هو الثمر .

ذُلُلا : حال من السبل، لأن تعالى ذَلَّلَها لها؛ فلا تَضِلُّ السُّبُلَ ذهابا و إيابا .

الترجمة

আর নিঃসন্দেহে তোমাদের জন্য গবাদিপশুর মাঝে রয়েছে শিক্ষার বিষয়। পান করতে দেই আমি তোমাদেরকে তাদের উদরে বিদ্যমান কিছু পদার্থ, গোবর ও রক্তের মধ্যখান হতে; অর্থাৎ বিশুদ্ধ দুধ যা পানকারীদের জন্য সুপেয়।

আর (আমি তোমাদেরকে পান করতে দেই) খেজুর ও আঙ্গুরের ফল থেকে। এগুলো থেকে তোমরা সুরা ও উত্তম খাদ্য তৈরী করে থাকো। অবশ্যই এতে রয়েছে নিদর্শন, যে সম্প্রদায় বুদ্ধি রাখে তাদের জন্য।

আর 'ইঙ্গিতনির্দেশ' প্রক্ষেপণ করলেন আপনার প্রতিপালক মৌমাছির প্রতি এই মর্মে যে, তৈরী করো পাহাড়ে-পর্বতে বাসা (চাক) এবং বৃক্ষে এবং মানুষ যে উঁচু চাল তৈরী করে তাতে। তারপর আহার করে বেড়াও প্রত্যেক প্রকার ফল থেকে। অনন্তর তোমার প্রতিপালকের সুগম পথ অনুসরণ করো। বের হয় তার উদর হতে পানীয়, যার বর্ণ বিভিন্ন। তাতে রয়েছে শিফা মানুষের জন্য। নিঃসন্দেহে তাতে রয়েছে নিদর্শন যারা চিন্তা করে তাদের জন্য।

আর আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে, তারপর তিনি জান কব্য করেন তোমাদের, আর তোমাদের মাঝে রয়েছে এমন (ব্যক্তি) যাকে পৌছানো হয় 'অথর্ব' বয়স পর্যন্ত, ফলে সে (এক সময় সবকিছু) জানার পর (ঐ সময়) কিছুই জানতে পারে না। নিঃসন্দেহে আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) الأنعام এর তরজমা কেউ করেছেন, চতুষ্পদ জন্তু। এটা ঠিক

নয়। থানবী (রহ) লিখেছেন, مواشي বা গবাদিপশু। এটাই সঠিক, কারণ আভিধানিকভাবে শব্দটি উটের জন্য বিশিষ্ট, তবে উটের সঙ্গে গরু ও মেষকেও أنعام বলে। তাছাড়া এখানে গবাদিপশুর প্রসঙ্গই আলোচিত হয়েছে, সাধারণভাবে চতুষ্পদ জন্তুর আলোচনা হয়নি।

(খ) عبرة এর অর্থ কেউ করেছেন, চিন্তার ক্ষেত্র। কেউ করেছেন, শিক্ষা। কেউ করেছেন, শিক্ষার বিষয়।

(গ) نُسقي এবং نَسقي এর তরজমাগত পার্থক্য না করে শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, পান করাই। কিন্তু থানবী (রহ) উভয়ের অর্থগত পার্থক্য বিবেচনা করেছেন। তিনি نُسقيكم এর অর্থ লিখেছেন, পান করতে দেই। এ সূক্ষ্ম বিষয়টি কোন বাংলা তরজমায়, এমন কি অন্য কোন উর্দু তরজমায়ও আসেনি।

(ঘ) نسقيكم مما في بطونه من بين فرث و دم لبنا خالصا (পান করতে দেই আমি তোমাদেরকে তাদের উদরে বিদ্যমান কিছু পদার্থ, গোবর ও রক্তের মধ্যখান হতে অর্থাৎ বিশুদ্ধ দুধ) এর তরজমায় অনেকেই জটিলতার সম্মুখীন হয়েছেন। কিতাবে مما এর তরজমা করা হয়েছে بعض ما في بطونها অর্থাৎ এটিকে نسقيكم এর দ্বিতীয় مفعول ধরে, আর لبنا خالصا কে এর বদল বা ব্যাখ্যা ধরে তরজমা করা হয়েছে।

(ঙ) أوحى ربك إلى النحل (আর 'ইঙ্গিতনির্দেশ' প্রক্ষেপণ করলেন আপনার প্রতিপালক মৌমাছির প্রতি) এর তরজমা বিভিন্নজন বিভিন্ন রকম করেছেন। যেমন–

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তোমার প্রতিপালক মৌমাছিকে আদেশ করেছেন যে,।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আপনার প্রতিপালক মৌমাছির অন্তরে এ কথা ঢেলে দিয়েছেন যে,।

আব্দুল মাজিদ দরয়াবাদী (রহ) লিখেছেন– আপনার প্রতিপালক মৌমাছির অন্তরে প্রক্ষেপণ করেছেন যে,

একটি বাংলা তরজমায় আছে– ইঙ্গিত দ্বারা নির্দেশ করেছেন যে, ...

কিতাবে সবকটি তরজমা সামনে রেখে একটি সমন্বিত তরজমা করা হয়েছে।

(চ) من كل الثمرات এর তরজমা সকলে করেছেন, প্রত্যেক ফল থেকে। থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, প্রত্যেক প্রকার ফল থেকে। তাঁর মতে এখানে الثمرات كل দ্বারা ফলের শ্রেণীসমগ্রতা নির্দেশ করা উদ্দেশ্য।

كلي আহার করো- এটি শাব্দিক তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য, তবে যেহেতু এখানে এটি দীর্ঘ সময়ব্যাপী কর্ম তাই কিতাবে আহার করে বেড়াও তরজমা করা হয়েছে।

থানবী (রহ) লিখেছেন, চুষে বেড়াও। অর্থাৎ তিনি كلى এর শব্দগত তরজমা না করে মৌমাছির আহারের নিজস্ব রূপটি তুলে ধরেছেন।

(ছ) أرذل العمر এর শব্দগত তরজমা হচ্ছে, নিকৃষ্টতম বয়স; কিন্তু তাতে উদ্দেশ্য পরিষ্কার হয় না। তাই শায়খায়ন উদ্দেশ্যভিত্তিক তরজমা করেছেন- 'অথর্ব' বয়স। কিতাবে তা অনুসরণ করা হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, অকর্মণ্য বয়সে। এটি গ্রহণযোগ্য।

أسئلة :

١ - اشرح الفرق بينَ سَقى و أَسْقى
٢ - أعرب قوله : مما في بطونه
٣ - أعرب قوله : و من ثمرات النخيل
٤ - أعرب قوله : ذللا
٥ - الأنعام এর তরজমা পর্যালোচনা করো
٦ - كلي এর থানবী-তরজমা ব্যাখ্যা করো

(٧) و يعبُدون من دون اللّٰهِ ما لا يَملِك لهم رِزقًا من السمٰوٰت و
الارضِ شيئًا و لا يَستطيعون * فَلا تضربوا لله الأمثال،
اِنَّ الله يعلَم و انتم لا تَعلمون * ضرب الله مَثَلًا عبدًا مملوكا لا
يقدِر على شيءٍ و مَن رزقنه منا رِزقًا حَسَنا فهو يُنفق منه
سِرًّا وَ جَهرا ، هل يستوٗن، الحمد لله، بل اكثَرهم لا

يعلمون* و ضَرَبَ الله مَثَلاً رجُلَين اَحدُهما اَبْكَمُ لا يقدِر على شيءٍ و هو كَلٌّ على مَولٰه، اَيْنَما يُوَجِّهْهُ لا يَاتِ بخير، هل يستوي هو و من يامر بالعَدل و هو على صراط مستقيم * و لِلّٰهِ غيبُ السمٰوٰت و الأرض، و ما اَمْرُ الساعَةِ اِلاَّ كَلَمْحِ البصَر او هو اَقْرَب، اِن الله على كلِّ شيءٍ قدير *

بيان اللغة

كَلٌّ : من يكون عِبْئًا على غيره — যে অন্যের উপর বোঝা হয়ে দাঁড়ায়

لَمَحَ البصَرَ (ف، لَمْحًا) : امتد البَصَر إلى شيءٍ — চোখের দৃষ্টি কোন দিকে প্রসারিত হলো।

يقال : لَمَحه بِبَصَره : صَوَّب بَصَره إليه — তার দৃষ্টি সেদিকে তাক করলো, নিবদ্ধ করলো।

لَمَحَ الشيءَ / إلى الشيء : أبصَر بِنَظَرٍ خَفيفٍ، أو اختَلَس النظَرَ إليه — হালকা বা চোরা দৃষ্টিতে তার দিকে তাকালো। তার দিকে চকিতে তাকালো।

لَمْحُ البَصَرِ : نَظْرَةٌ سريعة عَجْلَى، كنايةٌ عن السرعة و قلة الوقت

بيان الإعراب

لا يملك لهم رزقا من السمٰوٰت و الأرض شيئا : حرف الجر متعلق بصفة لـ : رزقا، إذا كان الرزق بمعنى المرزوق، أي : رزقا آتيا من السمٰوٰت و الأرض، أو متعلق بـ : رزقا، إذا كان مصدرًا ، و شيئا مفعول به لـ : رزقا إذا كان مصدرًا، و بدل منه إذا كان بمعنى المرزوق

و لا يستطيعون : الجملة معطوفة على صلة ما، لأن ما هنا مفرد لفظا جمع معنًى، و يجوز أن تكون مستأنفة، و على كل حال الواو عائد على : ما، و المراد بها آلهتهم ·

عبدا : بَدَل من مَثَلاً، و لا يقدر على شيءٍ صفة ثانية لـ : عبدا ·

و من رزقناه منا رزقا حسنا : كلمة مَن معطوفة على : عبدا، و هي

موصولة، أو نكرة موصوفة، كأنه قيل : و حُرًّا رزقناه، و جملة رزقناه صلة علي الوجه الأول، وصفة على الوجه الثاني ·

و رزقا مفعول به ثان لـ : رزقنا، إذا أردت به المرزوق، و مفعول مطلق إذا أردت به المصدر ·

سرا و جهرا : مصدران بمعنى اسم الفاعل، حال من فاعل ينفق، أي مُسِرًّا و مجاهرا، أو مفعول مطلق نائب من المصدر، أي إنفاق سر و جهر

رجلين : بدل من مثلا

أحدهما أبكم : الجملة مستأنفة بيانية، أو هي نعت لـ: رجلين في محل نصب، و الرابط الضمير العائد : هما ·

على مولاه : متعلق بـ : كل ·

أينما : اسم شرط جازم في محل نصب على الظرفية المكانية، و هو متعلق بفعل الشرط أو بجوابه على اختلاف النحاة ·

كلمح البصر : متعلق بخبر محذوف، و إلا أداة حصر · و أو حرف عطف، و الجملة معطوفة على الخبر المقدر للمبتدأ : أمرُ الساعَةِ

الترجمة

আর তারা পূজা করে আল্লাহ্ ছাড়া এমন উপাস্যের যারা তাদের জন্য আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী থেকে কোন রিযিক দান করার অধিকার রাখে না এবং তারা (সেই অধিকার অর্জন) করতে পারে না। সুতরাং সাব্যস্ত করো না তোমরা আল্লাহর জন্য (বাদশাহদের) বিভিন্ন উদাহরণ। নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ জানেন, আর তোমরা জানো না।

বর্ণনা করেছেন আল্লাহ একটি উদাহরণ, মালিকানাধীন এক দাস, যে কোন কিছুর উপর ক্ষমতা রাখে না, এবং (বর্ণনা করেছেন একটি উদাহরণ) এমন এক ব্যক্তি যাকে আমি দান করেছি আমার পক্ষ হতে উত্তম রিযিক, ফলে সে খরচ করে তা থেকে গোপনে এবং প্রকাশ্যে। এরা কি সমান হতে পারে? সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর, বরং তাদের অধিকাংশ (প্রকৃত সত্য) জানে না।

আর বর্ণনা করেছেন আল্লাহ আরেকটি উদাহরণ, দু' ব্যক্তি, তাদের

একজন বধির, যে কোন কিছুর উপর ক্ষমতা রাখে না, তদুপরি সে তার মনিবের 'গলগ্রহ'। যেখানে সে তাকে পাঠায় (সেখান থেকে) সে কোন কল্যাণ আনতে পারে না।

(তো) বরাবর কি হতে পারে সে এবং ঐ ব্যক্তি যে আদেশ করে ইনছাফের, এমন অবস্থায় যে সে সরল পথের উপর রয়েছে?

আর আল্লাহরই জন্য রয়েছে আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর (সকল) অদৃশ্য বিষয়।

আর কেয়ামতের বিষয়টি তো চোখের পলকের মত, কিংবা তা আরো দ্রুত। নিঃসন্দেহে আল্লাহ সর্ববিষয়ের উপর ক্ষমতাবান।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) لا يملك لهم رزقا من السموت و الارض شيئا (যারা তাদের জন্য আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী থেকে কোন রিযিক দান করার অধিকার রাখে না)

لا يملك এর তরজমা বিভিন্নজন এভাবে করেছেন, শক্তি নেই/ অধিকারী নয়/ অধিকার নেই– এ তরজমা শব্দানুগ নয়।

থানবী (রহ) লিখেছেন– না তাদের আসমান থেকে রিযিক পৌঁছানোর ইখতিয়ার আছে, না যমীন থেকে। এটি মূলতঃ لا من السماء و لا من الأرض এর তরজমা। তবে তিনি সম্ভবতঃ شيئا শব্দটির দ্বারা সৃষ্ট জোরালোতা প্রকাশ করেছেন এভাবে। তাই তিনি شيئا এর জন্য স্বতন্ত্র কোন প্রতিশব্দ ব্যবহার করেননি।

(খ) فلا تضربوا لله الأمثال (সুতরাং সাব্যস্ত করো না তোমরা আল্লাহর জন্য [বাদশাহদের] বিভিন্ন উদাহরণ) – এ তরজমা শায়খায়নের, আর বন্ধনীটি থানবী (রহ)-এর। এ বন্ধনীর সাহায্যে তিনি তরজমার মর্ম স্পষ্ট করেছেন। অর্থাৎ বাদশাহদের উদাহরণ টেনে এ কথা বলো না যে, বাদশাহরা যেমন বিভিন্ন দায়িত্ব বিভিন্ন অধীনস্থদের হাতে অর্পণ করেন এবং তাদেরকে কার্য সম্পাদনের ক্ষমতা প্রদান করেন তদ্রূপ আল্লাহ বিভিন্ন দেবতাকে বিভিন্ন দায়িত্ব ও ক্ষমতা অর্পণ করেছেন।

হযরত ইবনে আব্বাস (রাঃ)-এর তাফসীর অনুযায়ী কেউ কেউ তরজমা করেছেন– সুতরাং তোমরা আল্লাহর জন্য কোন

সদৃশ সাব্যস্ত করো না। (কারণ আল্লাহর সদৃশ কোন কিছু নেই।)

(গ) ضرب الله مثلا عبد مملوكا (বর্ণনা করেছেন আল্লাহ একটি উদাহরণ, মালিকানাধীন এক দাস) শায়খুলহিন্দ (রহ) তার মূলনীতি অনুযায়ী উপরোক্ত শব্দানুগ তরজমা করেছেন।

مملوك এর অর্থ থানবী (রহ) مملوك ই রেখে দিয়েছেন, যার বাংলা অর্থ হয় মালিকানাধীন। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, پرایہ مال (অন্যের মাল)

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'অপরের অধিকারভুক্ত।

عبدا مملوكا এর তরজমা হতে পারে, ক্রীতদাস। কারণ তাতেও মালিকানাধীন হওয়ার অর্থ রয়েছে।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আল্লাহ একটি উদাহরণ বর্ণনা করেছেন যে, একটি মালিকানাধীন গোলাম রয়েছে। এ তরজমায় عبدا مملوكا অংশটি পূর্ণ বাক্যে পরিণত হয়েছে। কিতাবের তরজমায় মূল তারকীব অনুসরণ করা হয়েছে।

(ঘ) و هو كل على مولاه (তদুপরি সে তার মনিবের গলগ্রহ) দেখো, كل এর সুন্দর তরজমা হচ্ছে গলগ্রহ, কিন্তু তাতে على এর স্থানে إضافة এর তরজমা করতে হয়। পক্ষান্তরে 'বোঝা' শব্দটি ব্যবহার করলে على এর তরজমা অক্ষুণ্ন রাখা যায়, কিন্তু এখানে শব্দটির ব্যবহার সুন্দর নয়।

(ঙ) رزقا حسنا (উত্তম রিযিক) শায়খায়ন তরজমা করেছেন, প্রচুর রিযিক।

এ প্রসঙ্গে থানবী (রহ) লিখেছেন, 'প্রচুর' হচ্ছে حسن এর রূপক অর্থ। কারণ এর মূল অর্থ হলো এমন রিযিক যাকে মানুষ পছন্দ করে। আর সাধারণভাবে প্রচুর সম্পদকেই মানুষ পছন্দ করে।

কিন্তু এখানে রূপক অর্থের আশ্রয় গ্রহণের প্রয়োজনীয়তা আছে বলে মনে হয় না।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, চমৎকার রুযী। এখানে 'চমৎকার' শব্দের প্রয়োগ অসুন্দর।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ لَمْحٍ

٢ - أعرب قوله : رزقا حسنا

٣ - أعرب قوله : سرا و جهرا
٤ - أعرب قوله : كلمح البصر
٥ - من السموت و الأرض এর যে তরজমা থানবী (রহ) করেছেন তা পর্যালোচনা করো
٦ - رزقا حسنا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) وَ إِذا بَدَّلنا اٰيةً مَكانَ اٰيَةٍ و الله اَعلَم بِما يُنَزل قالوا اِنما اَنت مُفتَرٍ، بل اكثرُهم لا يعلَمون * قل نَزَّله روحُ القدُسِ مِن ربك بالحق لِيُثَبِّتَ الذين اٰمَنوا و هُدًى و بُشرٰى للمسلمين * و لَقَد نعلَم انهم يقولون اِنما يُعلِّمه بَشَرٌ، لِسان الذي يُلحِدون إليه اَعْجَميٌّ و هذا لِسانٌ عَرَبيٌّ مبين *

بيان اللغة

يُلحدون إليه (يَميلون إليه بِقَولهم : إنما يُعَلمه بشر) ألحد إليه : مال
ألحد عن الدين : مال و حاد
ألحد في الدين : طعَنَ فيه — দ্বীনের দোষ বের করলো
قال تعالى : إن الذين يُلحدون في اٰيتنا لا يَخفَون علينا
أعجَمي و عَجَمي : المنسوب إلى العَجَم، و العجَم خلاف العرَب، و العُجْمَةُ : اللُّكْنَة في الكلام و عدَمُ الإفصاح في الكلام ·

بيان الإعراب

مكانَ آية : مفعول به ثان لـ : بدلنا، أو ظرف مكان متعلق بـ : بدلنا ·
و الله أعلم : الواو اعتراضية، و الجملة معترضة بين شرط إذا و جوابها، فلا محل لها من الإعراب ·
بالحق : متعلق بحال محذوفة من فاعل نزل، أي : متلبسا بالحق ·
ليثبت : اللام لام التعليل، و ليثبت في محل نصب مفعول لأجله،
و هُدًى و بشرٰى : المصدران معطوفان على مَحَلِّ لِيُثَبت، أي : تثبيتًا و هدايةً و بشرٰى ·

و لقد نعلم : الواو استئنافية، و اللام موطئة للقسم، و قد حرف تحقيق، لأن علم الله محقّق ثابت ·

لسان الذي : مضاف و مضاف إليه، و المضاف مبتدأ مرفوع، و أعجمي خبره ·

الترجمة

আর আমি যখন বদল করি এক আয়াতের স্থানে অন্য আয়াত– আর আল্লাহ্ যা অবতীর্ণ করেন সে সম্পর্কে তিনি অধিক অবগত– তখন তারা বলে, তুমি তো শুধু (আল্লাহর নামে) মিথ্যা আরোপকারী। বরং তাদের অধিকাংশই জানে না।

আপনি বলুন, তা অবতীর্ণ করেছেন পবিত্র ফিরেশতা আপনার প্রতিপালকের পক্ষ হতে নিশ্চিত সত্যের সঙ্গে, যেন তা (সত্যের উপর) অবিচল রাখে, তাদেরকে যারা ঈমান এনেছে এবং (যেন তা) মুসলিমদের জন্য হেদায়াত ও সুসংবাদ হতে পারে।

আর অতি অবশ্যই আমি জানি যে, তারা বলে, তাকে তো শিক্ষা দেয় এক মানুষ। যার দিকে তারা ইঙ্গিত করে তার ভাষা তো আজমি, অথচ এটা তো সুস্পষ্ট আরবীভাষা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) بدلنا এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন, বদল/পরিবর্তন করি। কেউ কেউ লিখেছেন, প্রেরণ করি বা উপস্থিত করি। – মূলের সঙ্গে তরজমার এই শব্দভিন্নতা সঙ্গত নয়।

الله أعلم এর তরজমা শায়খায়ন করেছেন, আর আল্লাহ্ই ভালো করে জানেন। উভয়ের দৃষ্টিকোণ এই যে, আল্লাহর ক্ষেত্রে তুলনামূলক অর্থ গ্রহণের অবকাশ নেই, বরং অতিশয়তা ও চূড়ান্ততার অর্থই সেখানে উদ্দেশ্য।

কিতাবে শব্দানুগ তরজমা করা হয়েছে। তবে যে অর্থে আল্লাহ তুলনামূলক শব্দ ব্যবহার করেছেন বাংলা তুলনামূলক শব্দটি দ্বারাও সেটাই উদ্দেশ্য হবে।

ينزل এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ্) লিখেছেন, 'অবতীর্ণ করেন'। থানবী (রহ্) ما এর স্থানীয় অর্থ করেছেন 'বিধান', আর ينزل এর অর্থ করেছেন প্রেরণ করেন।

(খ) إنما أنت مفتر (তুমি তো শুধু মিথ্যা আরোপকারী) এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, তুমি তো বানিয়ে বলো।

থানবী (রহ) লিখেছেন, آپ تو افترا کرتے ہیں অর্থাৎ তিনি আরবী শব্দের বিপরীতে আরবী শব্দই ব্যবহার করেছেন। এতে উদ্দেশ্য পরিষ্কার হয় না।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, আপনি তো মনগড়া উক্তি করেন। – এটি গ্রহণযোগ্য।

(গ) بالحق শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা করেছেন, بلا شبہ (নিঃসন্দেহরূপে)

থানবী (রহ) লিখেছেন, حکمت کے موافق (প্রজ্ঞার দাবী অনুযায়ী)

অর্থাৎ তিনি বলতে চান যে, بالحق দ্বারা এ কথা বুঝানো হয়েছে যে, আসমানী প্রজ্ঞার আলোকেই আয়াত পরিবর্তন করা হয়।

(ঘ) أعجمي এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন 'আরবী নয়'। 'তার ভাষা আরবী নয়, অথচ এটি সুস্পষ্ট আরবী' – এ তরজমায় সৌন্দর্য রয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ أَعْجَمِيٌّ

٢ – أعرب قوله : مكانَ آية

٣ – أعرب قوله : و هُدًى و بشرٰى

٤ – أعرب قوله : أعجمي

٥ – بدلنا এর তরজমা সম্পর্কে আলোচনা করো

٦ – الله أعلم এর দু'টি তরজমার দৃষ্টিকোণ আলোচনা করো

(٩) ثم إنَّ ربك لِلذين هاجَروا من بَعدِ ما فُتِنوا ثم جاهَدوا و صَبَروا ، إن ربك مِن بَعدها لَغفور رحيم * يومَ تاتي كلُّ نفسٍ تُجادِل عَنْ نفسِها و تُوَفّٰى كلُّ نفسٍ ما عملت و هم لا يُظلَمون * و ضرب الله مَثلا قريَةً كانت آمنَةً مطمَئِنَّةً

يأتيها رزقُها رَغَدًا مِن كلِّ مكانٍ فكَفَرَت بِأَنْعُمِ الله فأذاقَها الله لِباسَ الجوع و الخوف بما كانوا يصنَعون * و لقد جاءهم رَسول منهم فَكذَّبوه فأخَذَهم العذاب و هم ظٰلمون * فَكُلوا مما رزقَكم الله حَلٰلاً طَيبا، و اشكروا نعمَتَ الله إنْ كنتم إياه تعبدون *

بيان اللغة

رَغَدًا : (واسعا طيبا) رَغِدَ العيشُ (رَغَدًا، س) طاب و اتَّسَعَ، فالعَيشُ رَغْدٌ و رَغَدٌ و رَغيد

أذاقَها (أي : أصابها الله بالجوع و الخوف)

بيان الإعراب

ثم : للترتيب مع التراخي، استُعمل هذا الحرف للإشارة إلى تَباعُد حال هٰؤلاءِ الذين هاجَروا من بعدِ ما فُتِنوا عَن حال أولئك الذين طبع الله على قلوبهم .

ربك : اسم إن، و غفور خَبر إن الأولِّ، و للذين متعلق مقدم بـ : غفور .

من بَعدِ ما فُتِنوا : متعلق بـ : هاجَروا، و ما مصدرية، و المعنى : من بَعدِ ما امتُحِنوا في دينهم بالعَذاب و الإكراه على الكُفْر .

ثم جاهدوا : معطوفة على هاجروا .

إن ربك من بعدها : بدَل من : إن ربك الأولى، و كُرِّرت للتاكيد .

و من بعدها، أي : من بعد هذه الأفعال، و هي الهجرة و الجهاد و الصبر، متعلق بحال محذوفة مقدمة، من غفور رحيم، أي : إن ربك لَغفور رحيم كائنتَين من بعدها، و ضميرُ شبهِ الفعل : كائنتَينِ يعود إلى المغفرة و الرحمة .

يوم تأتي : أي : اذكر يومَ تأتي ... و جملة تُجادل حال من فاعلِ تأتي . و جازت إضافَةُ النفسِ إلى النفسِ، وَ مِنْ شَرط الإضافَةِ التغايُرُ،

لأن المرادَ بالنفس الأولى الإنسانُ و بالثاني ذاتُه، فكأنَّه قال : يومَ يَأتي كلُّ إنسانٍ يُجادل عن ذاته، أي يعتذر عن ذاته، لا يفكر في شأن غيره ·

و ضرب الله مثلا قرية : الواو استئنافية، و قرية بدل من مثلا، أي : جعَل القريةَ الموصوفةَ بهذه الصفات مَثلا لكل قوم أنعَم الله عليهم فكفَروا، و جملة كانت آمنة صفة لـ : قريةً، و جملة يأتيها خبر ثالث للفعل الناقص ·

بما كانوا يصنعون : الباء حرف جر للسببية، و ما مصدرية، أي : بسبب صنعهم، أو موصولة، أي : بسبب العمل الذي كانوا يصنعونه، أو نكرة عامة، أي : بسبب عملٍ كانوا يصنعونه ·

الترجمة

তারপর নিঃসন্দেহে আপনার প্রতিপালক ঐ লোকদের জন্য, যারা নিপীড়ন ভোগ করার পর হিজরত করেছে, তারপর জিহাদ করেছে, এবং ছবর করেছে, নিঃসন্দেহে আপনার প্রতিপালক ঐ সবকিছুর পর (তাদের জন্য) পরম ক্ষমাশীল, চিরদয়ালু।

(স্মরণ করো ঐ দিনকে) যে দিন আসবে প্রত্যেক ব্যক্তি নিজের পক্ষ হতে অজুহাত পেশ করা অবস্থায় এবং পূর্ণরূপে দেয়া হবে প্রত্যেক ব্যক্তিকে যা সে অর্জন করেছে, আর তাদের প্রতি অবিচার করা হবে না।

আর বর্ণনা করেছেন আল্লাহ একটি উদাহরণ এক জনপদ, যা ছিলো নিরাপদ (ও) শান্তিপূর্ণ, তাদের কাছে আসতো তাদের জীবনোপকরণ প্রাচুর্যের সাথে সর্বস্থান থেকে, অনন্তর তারা অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করলো আল্লাহর নেয়ামতের প্রতি, ফলে আল্লাহ তাদেরকে ক্ষুধা ও ভীতির আচ্ছাদন আস্বাদন করালেন তাদের মন্দ আচরণ করতে থাকার কারণে।

আর অবশ্যই এসেছে তাদের কাছে তাদেরই মধ্য হতে একজন রাসূল। অনন্তর তারা তাকে 'ঝুটলিয়েছে', ফলে পাকড়াও করেছে তাদেরকে আযাব, এমন অবস্থায় যে, তারা (ছিলো) অবিচারকারী।

সুতরাং আহার করো তোমরা তা থেকে যা দান করেছেন আল্লাহ তোমাদেরকে হালাল (ও) পবিত্ররূপে। আর শোকর আদায় করো

তোমরা আল্লাহ্‌র নেয়ামতের, যদি তোমরা তাঁরই ইবাদত করে থাকো।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) من بعد ما فتنوا (নিপীড়ন ভোগ করার পর) এ তরজমা শায়খুল হিন্দ (রহ) এর অনুসরণে করা হয়েছে, তিনি নিপীড়নের পরিবর্তে মুছীবত লিখেছেন। থানবী (রহ) এর তরজমা হলো, তারা কুফুরিতে লিপ্ত হওয়ার পর। তিনি লিখেছেন, এখানে কয়েকটি ব্যাখ্যা রয়েছে, তার মাঝে এটি এই স্থানের সঙ্গে অধিকতর সঙ্গত।

إن ربك এর যে تكرار রয়েছে তরজমায় সেটা অনুকরণের চেষ্টা করা হয়েছে, শায়খায়ন তাদের তরজমায় تكرار এর বিষয়টি বিবেচনায় রেখেছেন।

একটি বাংলা তরজমা এ রকম– যারা নির্যাতিত হওয়ার পর হিজরত করে, পরে জিহাদ করে এবং ধৈর্যধারণ করে, তোমার প্রতিপালক এই সবের পর তাদের প্রতি অবশ্যই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

এখানে تكرار বিবেচিত হয়নি। দ্বিতীয়ত এখানে বিষয়টি মূলনীতিরূপে বর্ণিত হয়েছে। উদ্দেশ্যের দিক থেকে এ তরজমা ঠিক আছে, তবে আয়াতে অতীতক্রিয়াযোগে তৎকালীন লোকদের অবস্থা বর্ণনা করা হয়েছে।

থানবী (রহ) صبروا এর তরজমা করেছেন, (ঈমানের উপর) অবিচল থেকেছে।

(খ) يوم تأتي كل نفس تجادل عن نفسها (যেদিন আসবে প্রত্যেক ব্যক্তি নিজের পক্ষ হতে অজুহাত পেশ করা অবস্থায়) থানবী (রহ) লিখেছেন, যে দিন প্রত্যেক ব্যক্তি নিজেরই পক্ষসমর্থনে বক্তব্য রাখবে– তিনি تأتي এর তরজমা করেন নি।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যেদিন প্রত্যেক প্রাণ আসবে নিজের পক্ষ হতে জওয়াব-সুয়াল করা অবস্থায়– তিনি পূর্ণ শাব্দিক ও তারকীবানুগ তরজমা করেছেন।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– স্মরণ করো সেই দিনকে যেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি আত্মসমর্থনে যুক্তি উপস্থিত করতে আসবে।

এখানে حال কে سببية রূপে তরজমা করা হয়েছে।

(গ) تُوَفّٰى كل نفس ما عملت (পূর্ণরূপে দেয়া হবে প্রত্যেক ব্যক্তিকে যা সে অর্জন করেছে) এর তরজমা কেউ করেছেন, প্রত্যেককে তার কৃতকর্মের পূর্ণফল দেয়া হবে। এখানে 'পূর্ণ ফলকে' 'দেয়া হবে' এর নায়েবুল ফায়েল করা হয়েছে, যা মূল তারকীব এর সঙ্গে সঙ্গতিপূর্ণ নয়, তবু এটি গ্রহণযোগ্য।

থানবী (রহ) লিখেছেন, 'পূর্ণ প্রতিদান মিলবে'– এটি শব্দানুগ তরজমা নয়।

ما عملت এর তরজমা থানবী (রহ) লিখেছেন, 'নিজের কৃতকর্মের'।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, প্রত্যেকেরই পূর্ণ মিলবে যা সে কামাই করেছে।

(ঘ) كانت أمنة مطمئنة (নিরাপদ [ও] শান্তিপূর্ণ ছিলো) শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমায় লিখেছেন, چین امن سے (নিশ্চিন্তে নিরাপদে)। এ তরজমা শব্দানুগও নয়, তারকীবানুগও নয়। থানবী (রহ) লিখেছেন, امن اطمنان سے (নিরাপদে স্বস্তিতে)

এ তরজমা শব্দানুগ, তবে তারকীবানুগ নয়। কিতাবের তরজমা শব্দানুগ ও তারকীবানুগ, তবে বন্ধনীতে 'ও' যোগ করে দেখানো হয়েছে, বাংলায় এখানে عطف এর তরজমা সাবলীল হয়।

(ঙ) ياتيها رزقها رغدا (আসতো তাদের কাছে তাদের জীবনোপকরণ প্রাচুর্যের সাথে) رزق এর তরজমা শায়খুলহিন্দ (রহ) করেছেন, 'রুযি', থানবী (রহ) করেছেন, পানাহারের সামগ্রী। আর একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, জীবনোপকরণ। এটি ব্যাপকতর শব্দ এবং এখানে উদ্দেশ্যের সাথে সঙ্গতিপূর্ণ, তাই কিতাবের তরজমায় সেটা গ্রহণ করা হয়েছে। কিন্তু 'প্রচুর জীবনোপকরণ আসতো'– এ তরজমা তারকীবানুগ নয়।

من كل مكان এর শাব্দিক তরজমা হলো, সর্বস্থান থেকে, তবে থানবী (রহ) লিখেছেন, চতুর্দিক থেকে।

(চ) أذاقها الله لباس الجوع و الخوف (আস্বাদন করালেন আল্লাহ তাদেরকে ক্ষুধা ও ভীতির আচ্ছাদন।) এর তরজমা

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, তাই আল্লাহ তাকে স্বাদ আস্বাদন করিয়েছেন, যাতে তাদের শরীরের কাপড় হয়ে গেলো ক্ষুধা ও ভয়।

শাব্দিকতা রক্ষা করে মূলানুগ তরজমা করা অসুবিধাজনক মনে করেই তিনি মূল থেকে দূরবর্তী এ তরজমা করেছেন, অবশ্য তাতে শাব্দিকতাও পূর্ণ রক্ষিত হয়নি, আবার বক্তব্যও সুস্পষ্ট হয়নি।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন– আল্লাহ তাদেরকে তাদের এ সকল আচরণের কারণে এক সর্বগ্রাসী দুর্ভিক্ষ ও ভীতির স্বাদ আস্বাদন করিয়েছেন। – এটি ভাবতরজমা।

লিবাস মানুষের সমগ্র দেহ আচ্ছাদন করে, তা থেকে সর্বব্যাপী বা সর্বগ্রাসী অর্থটি তিনি গ্রহণ করেছেন।

কিতাবের তরজমায় শব্দানুগতা, মূলানুগতা ও তারকীবা-নুগতার রেয়ায়াত করা হয়েছে।

أسئلة :

١ – اشرح كلمةَ رَغَدٍ

٢ – لِمَ استُعمل ثم في قوله تعالى : ثم إن ربك ؟

٣ – عَيِّنْ مرجعَ الضمير في قوله : من بَعدِها ، و ما إعراب من بعدها ؟

٤ – أعرب قوله : رَغَدًا

٥ – يوم تأتي كل نفس تجادل عن نفسها এর উল্লেখকৃত তরজমাগুলো পর্যালোচনা করো

٦ – أذاقَها الله لِباسَ الجوعِ و الخوفِ এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(١) سُبْحٰنَ الذي اَسْرٰى بِعَبْدِه لَيلاً من المسجِد الحَرام الى
المسجد الاَقْصا الذي بٰركنا حَوْلَه لِنُرِيَه مِنْ اٰيٰتِنا ، اِنَّه هو
السَّميع البَصير * وَ اٰتَيْنا مُوسى الكِتٰبَ و جَعَلنٰه هُدًى
لِبَني اسرا ءيلَ اَلَّا تتخذوا مِنْ دُوني وَكيلا * ذرِّيَّةَ مَنْ حَملنا
مَع نُوح، اِنَّه كان عَبدًا شَكورا * و قَضينا اِلٰى بني اسرا ءيلَ
في الكِتٰب لَتُفسِدُنَّ في الاَرْضِ مرتَين و لَتَعْلُنَّ عُلوًّا كبيرا
* فَاِذا جاءَ وعدُ اولٰهما بَعثنا عليكم عبادًا لنا اُولى باسٍ
شَديد فَجاسوا خِلٰلَ الديار، و كان وَعْدًا مفعولا * ثم
رَدَدْنا لكم الكَرَّةَ عليهم و اَمْدَدنٰكم بِاموال و بَنين و جعلنٰكم
اكثرَ نَفيرًا * اِنْ احسَنتم اَحسنتم لِاَنفُسِكم، و اِنْ اَساتم
فَلَها ، فَاذا جاءَ وعدُ الاٰخرةِ لِيَسُوءا وجوهَكم و لِيَدخُلوا
المسجدَ كمَا دخلوه اَوَّلَ مَرَّةٍ و لِيُتَبِّروا ما عَلَوا تَتْبِيرًا *
عسى رَبُّكم اَنْ يرحمَكم، وَ اِن عُدتم عدنا ، و جعلنا جَهنَّم
لِلْكٰفرين حَصيرًا *

بيان اللغة

أَسْرٰى : سارَ ليلًا (إسراءً)
أسراه و أسرى به : سَيَّرَه ليلا
سَرى (ض، سُرًى و مَسْرًى) سارَ ليلًا ، فهو سارٍ و الجمع سُراةٌ .
سَرٰى به : أسْرٰى به .
الأقصى : الأبْعَدِ، و المؤنث القُصْوٰى (اسم تفضيل) و قَصِيٌّ : بعيد

قَصا المكان (ن، قَصْوًا و قُصُوًّا) بَعُد
أقصى فلانًا عن شيءٍ : أبعَدَه
أقصى شيئا : بَلغ أقصاه কোন কিছুর চূড়ান্তসীমায় পৌঁছলো
جاسوا : طافوا، و الجَوْسُ الطواف ليلا و الطلَب مع الحرص
يقال : جاسَ القوم بيْنَ البيوت/ خلالَ الديار : داروا فيها سَعْيًا بالفَسَاد .
الكَرَّة : الغلَبة، كَرَّ : عاد (ن، كَرًّا)
كرَّ الليلُ و النهار : عادا مرةً بعد أخرى
كَرَّ على العدو : عادَ و حَمَل عليه .
اكثرَ نفيرًا : أكثرَ عددًا أو عشيرة و رجالا، و النفيرُ لغةً : مَن ينفِر مَع الرجل من قومه .
لِيَسوؤوا وجوهَكم : لِيَحزُنوكم حَزْنًا يبدو آثارُه على وجوهكم .
تَبَّر : أهلَك و دمَّر . حصيًرا : سِجنا و مَحْبِسًا .

بيان الإعراب

بعبده : يتعلق بـ : أسرى، و الباء للتعدية، و ليلا متعلق بـ : أسرى و ذَكَرَ ليلا مع أن الإسراءَ لا يكون إلا بالليل، لِتَثبيت هذا الجزءِ من المعنى في نَفس المخاطَبِ، و للإشارة بِتَنكير الليل إلى تقليلِ مُدَّته، لأن هذا التنكيرَ قد دل على معنَى البعضيَّةِ، و لو قيل أسرى بعبده الليلَ، لدل على استغراق السير لجميع أجزاء الليل .
من المسجد : متعلق بحال محذوفة، أي : مبتدئا من المسجد الحرام، و إلى المسجد حال أيضا، أي : منتهيا إلى المسجد الأقصى .
لنريه : متعلق بـ : أسرى، أو متعلق بخبر محذوف لمبتدأ محذوف، أي : و ذلك حاصل لِنُريه .
و من للتبعيض، فهو نائب عن المفعول الثاني لـ : نُرِي، أي : لنريه بعضَ آياتنا .
ألا : مكونة من أن التفسيرية و لا الناهية، و جاز أن تكون أن مفسرة، لأن "آتينا" يدل على معنى القول .

ذرية : اِضطرَبت أقوال المعربين في نَصبها ، و الأصحّ أنها منصوبة بأداة نداء محذوفة، و مَنْ مضاف إليه .

إلى بني اسرائيل : قضينا في الأصل فعل يتعدى بنفسه، و لكنه تَعدّى هنا بـ : إلى لتضمّنه معنى أوحينا .

في الكتٰب : متعلق بحال محذوفة، أي : كائنًا ذلك الوحيُ في الكتٰب، و يجوز أن يكون متعلقا بـ : قضينا .

لَتفسدن : اللام جواب قسم محذوف، و مرتين نائبة عن المفعول المطلق، أي : لتفسدن في الأرض إفسادَين .

إذا جاء وعد أولاهما بعثنا عليكم عبادا لنا : يعود الضمير "هما" إلى المرتين، و هنا حذف، أي : إذا جاء وعدُ عقابِ أولىٰ المرتين، و بعثنا جواب الشرط . و لنا متعلق بصفة محذوفة بـ : عبادًا ، و أولى بأس صفة ثانية لـ : عبادًا .

و كان وعدا مفعولا : اسم كان ضمير يعود على الوعد بالعقاب، و وعدًا خبر كان .

الكرةَ : مفعول به لـ : رَدَدْنا ، و عليهم يتعلق بـ : الكرة .

أكثرَ : مفعول به ثان لـ : جعلنا ، و نفيرا تمييز .

و إن أسأتم فَلَها : الفاء رابطة لجواب الشرط ، و لها متعلق بخبر محذوف لمبتدأ محذوف، أي : فَإِساءَتُكم ثابِتَةٌ لها ، و القياس يقتضي عَلىٰ، و جاء اللام لرعايَة المشاكَلَة مع اللام الأولى، و هي لام لِأنفسِكم و قيل : اللام هنا بمعنى على .

ليسوؤوا وجوهكم : متعلق بجواب إذا المحذوف، أي بعثناهم ليسوؤوا ، و قد دل على الجواب جواب إذا الأولى .

و ليدخلوا المسجد : عطف على ليسوؤوا .

كما دخلوه : أي : دخولا كدخولهم، أو مثل دخولهم أول مرة، و أول مرة منصوب على الظرفية .

ما علوا : الموصول مفعول به لـ : يتبروا ، أي : ليهلكوا كل شيء غلبوه و استولَوْا عليه .

و يجوز أن تكون ما مصدرية ظرفية، و مفعول يتبروا محذوف، أي
: ليهلكوا الحرث و النسل مدّةَ علوِّهم على البلاد .

الترجمة

পবিত্রতা বর্ণনা করি সেই মহান সত্তার যিনি যাত্রা করিয়েছেন তাঁর বান্দাকে রাতে রাতে মসজিদে হারাম থেকে মসজিদে আকছা পর্যন্ত, যার চতুর্পার্শ্বে আমি বরকত রেখেছি। (যাত্রা করিয়েছি) তাকে দেখাতে আমার (কুদরতের) কিছু নিদর্শন। নিঃসন্দেহে তিনিই সর্বশ্রোতা সর্বদর্শী।

আর দান করেছি আমি মূসাকে কিতাব এবং সেটাকে হিদায়াত (এর মাধ্যম) বানিয়েছি বনী ইসরাঈলের জন্য এই মর্মে যে, নির্ধারণ করো না তোমরা আমার পরিবর্তে (কাউকে) ব্যবস্থাপক, হে ঐ লোকদের বংশধর যাদেরকে আমি নূহের সঙ্গে (কিশতিতে) বহন করেছি। নিঃসন্দেহে তিনি ছিলেন শোকরগুজার বান্দা।

আর আমি ফায়ছালা শুনিয়েছি বনী ইসরাঈলকে কিতাবে (অহীযোগে) যে, অতিঅবশ্যই ফাসাদ সৃষ্টি করবে তোমরা ভূখণ্ডে দু'বার, এবং অতিঅবশ্যই অবাধ্যতা করবে তোমরা বড় অবাধ্যতা।

অনন্তর যখন আসবে ঐ দুবারের প্রথম বারটির (শাস্তির) নির্ধারিত সময় তখন পাঠাবো আমি তোমাদের বিরুদ্ধে আমার এমন কতিপয় বান্দাকে যারা হবে ভীষণ পরাক্রমের অধিকারী। অনন্তর তারা ছড়িয়ে পড়বে সমগ্র শহরে। আর তা এমন ওয়াদা যা কার্যকর হবেই হবে।

তারপর (তোমাদের তাওবার কারণে) ফিরিয়ে দেবো আমি তোমাদেরকে তাদের উপর তোমাদের বিজয়। আর তোমাদেরকে আমি শক্তি যোগাবো (তোমাদের লুণ্ঠিত) সম্পদ ও পুত্রদের (ফিরিয়ে দেয়া) দ্বারা। আর তোমাদেরকে করে দেবো যুদ্ধজনবলে অধিক।

যদি তোমরা নেক আমল করো তাহলে তোমরা নেক আমল করবে তোমাদের নিজেদেরই পক্ষে, আর যদি বদ আমল করো তাহলে তা করবে নিজেদেরই বিপক্ষে।

অনন্তর যখন পরবর্তী বারের (শাস্তির) নির্ধারিত সময় আসবে (তখন আমি তোমাদের বিরুদ্ধে পাঠাবো অন্য একটি দলকে) যেন তারা বিসাদগ্রস্ত করে দেয় তোমাদের মুখমণ্ডলকে এবং যেন তারা

ঢুকে পড়ে মসজিদে (আকছায়) যেমন পূর্ববর্তী দলটি তাতে ঢুকে পড়েছিলো প্রথমবার, এবং যেন তারা ধ্বংস করে (সবকিছু) যতদিন তারা (তোমাদের উপর) চড়াও হয়ে থাকে।

খুবই সম্ভব যে, তোমাদের প্রতিপালক দয়া করবেন তোমাদের প্রতি। আর যদি তোমরা (মন্দের দিকে) প্রত্যাবর্তন করো তাহলে আমিও (শাস্তির দিকে) প্রত্যাবর্তন করবো। আর বানিয়েছি আমি জাহান্নামকে কাফিরদের জন্য কয়েদখানা।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أسرى بعبده ليلا (যাত্রা করিয়েছেন তাঁর বান্দাকে রাত্রে রাত্রে) الإسراء মানেই হলো নৈশযাত্রা। তারপর ليلا শব্দটির উল্লেখের উদ্দেশ্য হলো الإسراء এর অর্থের এ অংশটিকে শ্রোতার অন্তরে বিশিষ্টভাবে গ্রথিত করা। ليلا এর নাকিরাত্ব দ্বারা এ কথা বোঝানো হয়েছে যে, এ যাত্রা এত ক্ষিপ্রতার সাথে হয়েছে যে, রাত্রের খুব সামান্য অংশ তাতে লেগেছে। এই সূক্ষ্ম বিষয়টি বিবেচনা করেই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, راتوں رات (রাত্রে রাত্রে / রাত থাকতে থাকতে) কিতাবের তরজমায় শায়খুলহিন্দ (রহ)-কে অনুসরণ করা হয়েছে। থানবী (রহ) লিখেছেন, شب کے وقت (রাত্রের সময়)। এখানেও রাত্রের আংশিকতার প্রতি ইঙ্গিত রয়েছে, কিন্তু ক্ষিপ্রতার প্রতি ইঙ্গিত স্পষ্ট হয়নি।

বাংলা তরজমাগুলোতে আছে, 'রাত্রে' – তাতে আংশিকতা ও ক্ষিপ্রতা কোনটির প্রতি ইঙ্গিত আসেনি।

(খ) ذرية من حملنا مع نوح (হে ঐ লোকদের বংশধর যাদেরকে আমি বহন করেছি নূহের সঙ্গে) এখানে উহ্য حرف النداء কে উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে। একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, 'নূহের সাথে যাদেরকে আমি আরোহণ করিয়েছিলাম তোমরা তো তারই বংশধর' – এটি আয়াতের ব্যাকরণের সাথে সম্পর্কহীন তরজমা, এবং অগ্রহণযোগ্য।

(গ) قضينا إلى بني اسرائيل في الكتب আমি ফায়ছালা শুনিয়েছি বনী ইসরাঈলকে কিতাবে– (অহীযোগে) – قضينا এর শাব্দিক অর্থ হলো, ফায়ছালা করেছি, কিন্তু إلى অব্যয়ের কারণে তাতে أوحينا এর অর্থ অন্তর্ভুক্ত হয়েছে, কিতাবের

তরজমায় উভয় অর্থ রক্ষা করা হয়েছে, তবে অন্তর্ভুক্ত অর্থটি বন্ধনীতে আনা হয়েছে।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর আমি বনী ইসরাঈলকে কিতাবে (ভবিষ্যদ্বাণী রূপে) এ কথা বলে দিয়েছিলাম যে, ... এখানে 'কথা' অর্থ ফায়ছালা। সুতরাং এ তরজমা সুস্পষ্ট ও গ্রহণযোগ্য।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, আর আমি কিতাবে বনী ইসরাঈলকে জানিয়ে দিলাম। এটি قضينا ও إلى এর সঠিক তরজমা নয়।

(ঘ) بعثنا عليكم (পাঠাবো আমি তোমাদের বিরুদ্ধে) এখানে على কে বিরুদ্ধতার অর্থে গ্রহণ করে بعثنا এর শাব্দিক তরজমা করা হয়েছে।

থানবী (রহ) على কে তার মূল অর্থে বহাল রেখে بعثنا কে (তাযমীনের সূত্রে) سلطنا এর অর্থে গ্রহণ করেছেন। তাঁর তরজমা হলো- তোমাদের উপর চাপিয়ে দেবো/আধিপত্য দান করবো।

أولي بأس এর মাঝে শক্তির প্রচণ্ডতার অর্থ রয়েছে। তদুপরি بأس এর ছিফাতরূপে شديد যুক্ত হয়েছে। সুতরাং শুধু শক্তিমান বা বলশালী দ্বারা মূলভাবটি প্রকাশ পায় না। তাই কিতাবে তরজমা করা হয়েছে 'ভীষণ পরাক্রমের অধিকারী'। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'ভীষণ যুদ্ধপ্রিয়'। শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, শক্ত লড়াকু।

(ঙ) فجاسوا خلال الديار (অনন্তর তারা ছড়িয়ে পড়বে সমগ্র শহরে) এটি শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা। তিনি جاسوا এর শাব্দিক তরজমা করেছেন। থানবী (রহ) লিখেছেন, তারা ঢুকে পড়বে (তোমাদের) ঘরসমূহে- তিনি جاسوا এর ভাবতরজমা করেছেন।

একটি বাংলা তরজমায় আছে- ওরা ঘরে ঘরে ঢুকে সব ধ্বংস করে দিয়েছিলো। - এটি সম্প্রসারিত তরজমা, যার তেমন প্রয়োজন ছিলো না, তদুপরি যেহেতু এটি ভবিষ্যদ্বাণী, সেহেতু তরজমায় অতীত ক্রিয়ার ব্যবহার সঙ্গত নয়। আরবীতে মাযী এর ব্যবহার এসেছে ঘটনার নিশ্চিতি প্রকাশ করার জন্য।

(চ) ثم رددنا لكم الكرة عليهم (তারপর ফিরিয়ে দেবো আমি

তোমাদেরকে তাদের উপর তোমাদের বিজয়) এখানে ل। কে مضاف إليه এর পরিবর্তে ধরে তরজমা করা হয়েছে।

থানবী (রহ) লিখেছেন, তাদের উপর তোমাদের বিজয় দান করবো- অর্থাৎ তিনি لكم ও عليهم কে الكرة। এর সাথে متعلق ধরে তরজমা করেছেন, আর رددنا এর ভাবতরজমা করেছেন।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, তারপর আমি আবার তোমাদেরকে তাদের উপর প্রতিষ্ঠিত করলাম। এখানে 'প্রতিষ্ঠিত' শব্দটি সুপ্রযুক্ত নয় এবং অতীতক্রিয়ার ব্যবহার সঙ্গত নয়।

(ছ) و جعلنكم أكثر نفيرا (আর করে দেবো তোমাদেরকে যুদ্ধজনবলে অধিক) نفير শব্দ দ্বারা বোঝানো হয়েছে এমন সকল লোক যারা যুদ্ধে যাত্রা করতে সক্ষম। সুতরাং তরজমায় সেটির প্রকাশ ঘটা উচিত। তাই কিতাবে এ তরজমা করা হয়েছে। এ কারণেই শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর আমি অধিকতর করে দিলাম তোমাদের বাহিনী।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর আমি তোমাদের দল বাড়িয়ে দেবো- এখানে نفير এর মূল ভাবটি উঠে আসেনি।

(জ) إن أحسنتم أحسنتم لأنفسكم و إن أسأتم فلها (যদি নেক আমল করো তোমরা তাহলে নেক আমল করবে তোমরা তোমাদের নিজেদেরই পক্ষে, আর যদি বদ আমল করো তাহলে [তা সাব্যস্ত হবে] নিজেদেরই বিপক্ষে)

সমশ্রুতি বা মুশাকালা রক্ষার জন্য উভয় ক্ষেত্রে ل অব্যয়টি ব্যবহার করা হয়েছে, অথচ দ্বিতীয় ক্ষেত্রে উপযুক্ত অব্যয় হচ্ছে على বাংলা তরজমায় 'পক্ষে' ও 'বিপক্ষে' দ্বারা সমশ্রুতি যেমন রক্ষা করা হয়েছে, তেমনি অর্থগত ভিন্নতাও প্রকাশ করা হয়েছে। শায়খায়ন শাব্দিক অর্থ করে লিখেছেন, 'নিজেদেরই জন্য'।

(ঝ) وليدخلوا المسجد كما دخلوه أول مرة (এবং যেন তারা ঢুকে পড়ে মসজিদে [আকছায়] যেমন পূর্ববর্তী দলটি তাতে ঢুকে পড়েছিলো প্রথমবার) পূর্ববর্তী দলটি - এই তারজমা দ্বারা ليدخلوا এবং دخلوا এর যামীরের ভিন্নতার দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة جاسوا.

٢ - اشرح فائدةَ ذِكْرِ ليلًا مع الإسراء، و فائدةَ تنكيرِ الليل.

٣ - بم يتعلق قوله : في الكتب

٤ - أعرب قوله : فلبها

٥ - 'রাত্রে' এবং 'রাত্রে রাত্রে' ليلا এর এ দুটি তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - بعثنا عليكم এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٢) وَ كلَّ انسان اَلزمنٰه طٰئِرَه في عنُقه، و نُخرِجُ له يومَ القيٰمة كتٰبا يلقٰه منشورًا * اِقرأ كتٰبك، كفى بِنَفْسِك اليومَ عليك حَسيبا * مَنِ اهتَدٰى فانما يهتدي لِنَفسه، و مَنْ ضَلَّ فَاِنَّما يَضِلُّ عليها، و لا تَزِرُ وازِرَةٌ وِزْرَ اُخرٰى، و ما كنا معذِّبين حتى نَبْعَثَ رَسولا * و اِذا اَردنا ان نُهلِك قريَة اَمرنا مُترَفيها فَفَسقوا فيها فَحَقَّ عليها القولُ فدمرنٰها تَدميرًا * و كم اَهْلَكنا مِنَ القُرون مِنْ بَعد نوحٍ، و كفى بربك بِذُنوب عباده خبيْرًا بصيرا *

بيان اللغة

طائر : ما تَطيَّرتَ به — যা দ্বারা কুলক্ষণ বা সুলক্ষণ গ্রহণ করা হয়

(و أصله طائرٌ يُتَطَيَّرُ به، ثم استُعمِل في كلِّ ما يُتَطَيَّرُ به)

: الحظ من الخير و الشر.

و طائر الإنسان : حظه من الخير و الشر، أو عمله الذي طار عنه من خير وشر.

مُتْرَفٌ : (من وُسِّع عليه النعَمُ)

أَترفَ فلان : أصرَّ على البَغْيِ

أترف فلانا : وَسَّع عليه النعَمَ

أترَفَتْه النعمَةُ : ساقته إلى العِصيان

دمرناها : أهلكناها

بيـان الإعراب

كلَّ إنسان ألزمناه طَئِرَه في عنقه : منصوب على الاشتغال، أي : إشتَغَل الفعل الذي بعدَه بضميره، فَنُصِبَ بفعل مقدر، يفسره الفعل المذكور ·

و طائره مفعول به ثان لـ : ألزمناه، و في عنقه متعلق بـ : ألزمنا، أو متعلق بحال محذوفة، أي كائنا في عنقه ·

يلقاه منشورا : الجملة صفة لـ : كتابا، و منشورا حال من الضمير المنصوب، أو صفة ثانية لـ : كتابا

كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا : نفسك مرفوع محلا على الفاعلية، و اليوم منصوب على الظرفية متعلق بـ : كفى، و عليك : متعلق بـ : حسيبا، و هو تمييز، و الفعيل هنا بمعنى الفاعل على رَأيِ سيبَوَيْهَ، و يجوز أن يكون حسيباً حالا من الفاعل الحكمي، لأنه مُشتَقٌّ ·

يَضِل عليها : الجار و المجرور في موضع نصب على الحال، أي : واقعًا ضلالُه عليها ·

أمرنا مترَفيها : أي : أمرناهم بالطاعة على لسانِ رُسُلنا، فَعَصَوا أمرَنا وخرجوا عن طاعَتنا و فسَقُوا ·

كم أهلكنا من القرون من بعد نوح : كم خبرية تدل على الكثرة، في محل نصب مفعول أهلكنا، أي : أهلكنا كثيرا من القرون ·

و من القرون : في محل نصب تمييز لـ : كم، و بيان له ·

فـ : مِن هذه بَيانية، و مِنِ الثانيةُ للابتداء : تتعلق بـ : أهلكنا ·

الترجمة

আর প্রত্যেক মানুষকে, আমি অবিচ্ছেদ্য করে দিয়েছি তার আমলকে তার সঙ্গে, তার কণ্ঠে। আর আমি বের করবো তার কিয়ামতের দিন জন্য (আমলের) একটি কিতাব, যা সে দেখতে পাবে খোলা

অবস্থায়। (আর তাকে বলা হবে) পড়ো তোমার আমলনামা। তুমিই যথেষ্ট আজ তোমার হিসাব গ্রহণকারীরূপে। যে সরল পথে চলে সে নিজেরই (কল্যাণের) জন্য সরল পথে চলে, আর যে ভ্রান্তপথে চলে সে নিজেরই ক্ষতি সাধনের জন্য ভ্রান্তপথে চলে। আর বহন করবে না কোন বহনকারী অন্য কারো বোঝা। আর আমি আযাব দেই না কোন রাসূল প্রেরণ না করা পর্যন্ত।

আর যখন আমি ইচ্ছা করি কোন জনপদকে ধ্বংস করার তখন আদেশ দান করি ঐ জনপদের বিলাসীদেরকে (আমার আনুগত্যের)। অনন্তর তারা সেখানে পাপাচারে মেতে ওঠে, ফলে ঐ জপদের উপর অনিবার্য হয়ে পড়ে আযাব। তখন আমি বিধ্বস্ত করে ফেলি ঐ জনপদকে সম্পূর্ণরূপে।

আর কত সম্প্রদায়কে আমি ধ্বংস করেছি নূহের পর থেকে। আর আপনার প্রতিপালক যথেষ্ট আপন বান্দাদের গোনাহসমূহের খবরদার ও নযরদাররূপে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و كل إنسان ألزمناه طائره في عنقه (আর প্রত্যেক মানুষকে, আমি অবিচ্ছেদ্য করে দিয়েছি তার আমলকে তার সঙ্গে, তার কণ্ঠে।) এটি যথাসম্ভব তারকীবানুগ তরজমা। সহজ তরজমা এমন হতে পারে, 'প্রত্যেক মানুষের আমলকে আমি তার গলায় ঝুলিয়ে লাগিয়ে দিয়েছি'।

হার যেমন গলায় লেগে থাকে, তেমনি মানুষের আমল হাশর পর্যন্ত তার সাথে লেগে থাকবে; তার থেকে পৃথক হবে না। সেজন্য এখানে মানুষের আমলকে গলার হারের সাথে প্রচ্ছন্নরূপে উপমা দেয়া হয়েছে। এই প্রচ্ছন্ন উপমার ভিত্তিতে থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, প্রত্যেক মানুষের আমলকে আমি তার গলার হার বানিয়ে রেখেছি।

থানবী (রহ) আয়াতকে ব্যাপক অর্থে গ্রহণ করে طائر এর অর্থ করেছেন 'আমল', তা নেক আমল হোক, বা বদ আমল। পক্ষান্তরে শায়খুলহিন্দ (রহ) طائر এর তরজমা করেছেন, 'মন্দ ভাগ্য'। অর্থাৎ আয়াতকে তিনি কাফিরদের ক্ষেত্রে প্রযুক্ত ধরেছেন।

(খ) اقرأ كتابك (পড়ো তোমার আমলনামা) আয়াতে ধমক ও

কটাক্ষের যে ভাব রয়েছে তা প্রকাশ করার জন্য তরজমা-বাক্যের এ বিন্যাস গ্রহণ করা হয়েছে। একটি বাংলা তরজমায় আছে, তুমি তোমার কিতাব পড়ো। এখানে মর্মগত দিক থেকে বাক্যের এ বিন্যাস সঠিক নয়।

(গ) كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا (তুমিই যথেষ্ট আজ তোমার হিসাব গ্রহণকারীরূপে) একটি তরজমায় আছে, 'তোমার হিসাবনিকাশের জন্য' এটি তারকীবানুগ না হলেও গ্রহণযোগ্য। তবে হিসাব শব্দটি আখেরাতের ক্ষেত্রে প্রযোজ্য হলেও হিসাবনিকাশ শব্দটি সাধারণত দুনিয়ার ক্ষেত্রে ব্যবহৃত হয়।

(ঘ) ولا تزر وازرة وزر أخرى (আর বহন করবে না কোন বহনকারী অন্য কারো বোঝা) এটি শব্দানুগ তরজমা এবং গ্রহণযোগ্য।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, আর কারো উপর পড়ে না অন্যের বোঝা। – মূল থেকে এভাবে সরে আসার তেমন কোন প্রয়োজন নেই।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর কোন ব্যক্তি কারো বোঝা ওঠাবে না (বহন করবে না) এটি শব্দানুগ নয়, তবে তারকীবানুগ, এবং গ্রহণযোগ্য।

(ঙ) أمرنا مترفيها (আদেশ দান করি ঐ জনপদের বিলাসীরেদকে) এখানে যামীরের مرجع উল্লেখ করে তরজমা করা হয়েছে। 'সেখানকার বিলাসীদেরকে' এ তরজমাও গ্রহণযোগ্য।

(চ) فحق عليها القول (ফলে অনিবার্য হয়ে পড়ে ঐ জনপদের উপর আযাব)

فدمرناها تدميرا (তখন ঐ জনপদকে বিধ্বস্ত করে ফেলি সম্পূর্ণরূপে)

শায়খুলহিন্দ (রহ) উদ্দেশ্যভিত্তিক তরজমা করে লিখেছেন, 'তাদের উপর' এবং 'তাদেরকে', কারণ আযাব জনপদের উপর হয় না, হয় জনপদের অধিবাসীদের উপরে।

থানবী (রহ) دمرناها এর তরজমা করেছেন, আমি ঐ বস্তিকে ধ্বংস করে ফেলি।

পক্ষান্তরে فحق عليها القول এর তরজমা করেছেন, তাদের উপর হুজ্জত পূর্ণ হয়ে যায়। তিনি القول কে 'আযাব'-এর

পরিবর্তে হুজ্জত ও প্রমাণ অর্থে গ্রহণ করেছেন।

কিতাবের তরজমায় উভয় ক্ষেত্রে ها এর প্রকৃত مرجع উল্লেখ করা হয়েছে।

(ছ) من بعد نوح (নূহ-এর পর থেকে) من দ্বারা যেহেতু ধ্বংস করার সূচনাকাল বোঝানো হয়েছে। শুধু ধ্বংস করার কাল বোঝানো উদ্দেশ্য নয়, সেহেতু সূচনাবাচক অব্যয় 'থেকে' উল্লেখ করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمةَ طائرٍ

٢ - اشرح إعرابَ كلَّ إنسان

٣ - أعرب قوله : إذا أردنا أن نهلك قرية أمرنا مترفيها ، إعرابا مُوجَزًا

٤ - أعرب قوله : خبيرا بصيرا .

٥ - كل إنسان ألزمناه طائره في عنقه থানবী (রহ) এর যে তরজমা করেছেন তা পর্যালোচনা করো।

٦ - دمرنها تدميرا ঐ জনপদকে ধ্বংস করে ফেলি সম্পূর্ণরূপে - এখানে 'সম্পূর্ণরূপে' শব্দটির উদ্দেশ্য বলো

(٣) وَ لقد صَرَّفنا في هذا القرآن لِيَذَّكَّروا ، و ما يَزيدهم اِلاَّ نُفورًا * قل لَوْ كانَ معه اٰلِهَةٌ كما يقولون اِذا لَّابتَغَوا الى ذي العَرش سبيلا * سُبحٰنه و تعالى عما يقولون علُوًّا كبيرا * تُسبح له السمٰوٰت السَّبْعُ و الارض و مَنْ فيهن، وَ اِن مِّنْ شيءٍ اِلاَّ يُسبح بحمده و لٰكِن لَّا تفقَهون تسبيحَهم، اِنه كان حليما غفورا * وَ اِذا قراتَ القرآن جعلنا بينَك و بين الذين لا يؤمنون بالاٰخرة حِجابا مَستورا * و جعلنا على قُلوبهم اَكِنَّة اَنْ يفقَهوه و في اٰذانهم وَقْرًا ، وَ اِذا ذَكَرْتَ ربك في القرآن وحدَه وَلَّوا على اَدبارهم نُفورا * نَحن اَعْلَمُ بما

يستمعون به إذ يستمعون اليك وَ إذهم نَجْوٰى إذ يقول الظّٰلمون إنّ تتبعون إلاّ رجلا مسحورا *

بيان اللغة

صرفنا (بَيَّنا بيانا مكرَّرا) صَرَّف الأمرَ : بيَّنه بيانا مُوَسَّعا

صرَّف الأمر : دبَّره و وجَّهه পরিচালনা করলো

نُفورا (تباعُدًا و كراهِيَةً) : نَفَر من الشيء (ض، نُفورا) : تباعَدَ عنه غيرَ راضٍ به ·

حليما : الحِلم ضبطُ النفس و الطبْع عن هَيَجانْ الغضَب مع القدرة و القوة، و الرجل حليم و الجمع حلماء، و الحِلم العقل و جمعه أحلام، قال تعالى : أم تأمرهم أحلامهم بهذا، و ليس الحلم في الحقيقة هو العقل، و لكن فسروه بذلك لكونه مصدَرَ الحلم ·

حِجابا (سِتارا) حَجَب شيئا (حَجْبًا، ن) ستَرَه

حَجب فلانا : منَعه من الدخول

حجابا مستورا، أي حجابا خَفِيًّا لا يُرٰى، و حجابٌ ساتِر، أي : يستُر الأشياءَ عن الأنظار ·

أكِنَّةً : جمْع كِنان : غِطاء، و كلُّ شيءٍ يستُر شيئًا يسمّٰى كنانا ·

وَقرا : الوَقْر الثِّقَل في الأذُن أو الصَّمَم

وَقرَت أذنُه (تَقِرُ، وَقْرًا) ثقُلت أو صَمَّت

وَقَر الله أذنَه : أثقَلَ سمْعَها أو أذهب كلَّه

نجوى : أصله مصدر، وهو إسرار الحديث، و قد يوصف به، فيقال هو نجوى و هم نجوى (أي متناجون و مُسِرُّون الحديث)

بيان الإعراب

صرفنا : مفعوله محذوف، أي : أمثالًا و مَواعِظَ و حِكَمًا و قِصَصًا و غيرَها، و حُذف لكونه معلومًا ·

وما يزيدهم إلا نفورا : الواو حالية أو استئنافية، و فاعل يزيد مستتر،

أي : هو العائد على مصدرِ صرَّفنا ٠

و إلا أداة حصر لا عمل لها، و نفورا مفعول يزيد الثاني، أو هو تمييز منصوب، و المتعلق محذوف، أي : نفورا عن الحق ٠

و المعنى : و لقد بَيَّنَّا في هذا القرآن الأمثالَ و المواعظَ و الوعدَ و الوعيدَ بيانا مكرَّرا ليتعظوا و يعتَبِروا، و لكن لا يزيدهم هذا البيان المكرر إلا تباعُدًا عن الحق ٠

لو كان معه آلهة : الظرف متعلق بخبر الناقص المقدم، و آلهة اسم الناقص المؤخر، أي : لو كان آلهَةٌ ثابتةً مع الله ٠

كما يقولون : الكاف اسم بمعنى مثل أو حرف جر للتشبيه، نعت لمصدر محذوف، أو متعلق به، أي : لو كان معه آلهة كونًا كقولهم أو مثلَ قولهم ٠

إذا لابتغوا إلى ذي العرش سبيلا : إذًا حرف جواب لا محل لها، دالَّةٌ على أنَّ ما بعدَها - و هو لَابْتَغَوا - جواب عن مَقالَةِ المشركين ٠

إلى ذي العرش متعلق بـ : ابتغوا، و يجوز أن يتعلق بمحذوف، هو حال من سبيلا، لأنه كان في الأصل نعتا لـ : سبيلا، فتقدم عليه، فصار حالا، و سبيلا مفعول به لـ : ابتغوا ٠

علوا : مفعول مطلق، لأنه مصدر واقع موقِعَ تَعالٍ ٠

و إن من شيء إلا يسبح بحمده : إن نافية، و من زائدة، و شيء مجرور لفظا مرفوع محلا على الابتداء، و جاز أن تكون النكرة مبتدأ لتقدم النفي، و إلا أداة حصر، لا محل لها، و المعنى : كل شيء من الموجودات يسبح بحمده ٠ و بحمده حال، أي : متلبسا بحمده ٠

جعلنا بينك : يجوز في جعلنا أن يتضمن معنى الوضع، فالظرف متعلق به، وحجابا مفعول به، و المعنى وضعنا بينك و بينهم حجابا ٠

و يجوز أن يكون متعديا لاثنين، فالظرف حينئذ متعلق بالمفعول الثاني المقدر، و حجابا مفعول به أول، و أصل العبارة : جعلنا

الحجاب موجودا بينك و بينهم ·

على قلوبهم : يتعلق بـ : جعلنا أو بالمفعول الثاني المقدر، و أكنة مفعول به أول، أو هو المفعول به الوحيد،

أن يفقهوه : في موضع النصب مفعول لأجله، أي : كراهَةَ أن يفقَهوه، كما يقول البصريون، أو لِأَن لا يفقَهوه كما يقول الكوفيون ·

و يجوز أن يكون منصوبا بنزع الخافض، أي : من أن يفقهوه، و حرف الجر يتعلق بـ : أكنة، لأن فيها معنَى المنعِ مِنَ الفِقْه، فكأنه قيل : و منعناهم (من) أن يفقهوه ·

و في أذانهم وقرا : عطف على : قلوبهم أكنة

وحدَه : حال من مفعول ذكرت، لأنه في قوة النكرة، أي : منفردا ·

على أدبارهم : يتعلق بـ : وَلّوا، أو بمحذوف حال من فاعل ولوا، أي : منقلبين على أدبارهم ·

ونفورا جمع نافر، فهو حال، أي : نافرين، أو هو مصدر في موضع الحال، و يجوز أن يكون مفعولا مطلقا، لأنه مرادف للتولية، أو هو مفعول لأجله ·

بما يستمعون به : بما يتعلق بـ : أعلم، و الباء في "به" سببية، أي نحن أعلم بالأمر الذي يستمعون القرآن بسببه، و هو الهُزْءُ بك و بالقرآن ·

و إذهم نجوى : الواو للعطف مع الحذف، أي : و بما يتناجون به إذ هم نجوى و نجوى خبر على حذف مضاف، أي : ذو نجوى، أو على المبالغة، و يجوز أن يكون نجوى جمع نَجِيٍّ ·

إذ يقول : بدل من إذهم نجوى ·

الترجمة

আর অতিঅবশ্যই আমি (তাওহীদের সত্যতা এবং শিরকের ভ্রান্তি) বিভিন্নভাবে বর্ণনা করেছি এই কোরআনে, যাতে তারা বুঝতে পারে; কিন্তু তা (সত্যের প্রতি) তাদের বিমুখতাকেই শুধু বাড়িয়ে দেয়। আপনি বলুন, যদি থাকতো তাঁর সঙ্গে অন্যান্য ইলাহ্ যেমন তারা বলছে, তাহলে তো (কবেই) তারা আরশের অধিপতির দিকে পথ

খুঁজে নিতো। আমি তাঁর পবিত্রতা বর্ণনা করি। আর তিনি অতি উচ্চ ঐ সমস্ত কথা থেকে যা তারা বলে।

তাঁর পবিত্রতা বর্ণনা করে সাত আসমান এবং যমীন এবং যারা তাতে রয়েছে। বস্তুত এমন কোন সৃষ্টি নেই যা প্রশংসাসহ তার পবিত্রতা বর্ণনা করে না। তবে বুঝতে পারো না তোমরা তাদের পবিত্রতা বর্ণনা করা। নিঃসন্দেহে তিনি পরম সহনশীল, পরম ক্ষমাশীল।

আর যখন আপনি পাঠ করেন কোরআন তখন আমি রেখে দেই আপনার মাঝে এবং যারা আখেরাতকে বিশ্বাস করে না, তাদের মাঝে একটি প্রচ্ছন্ন পর্দা, অর্থাৎ রেখে দেই তাদের অন্তরের উপর আবরণ, যাতে তারা কোরআন বুঝতে না পারে। আর তাদের কানে (রেখে দেই) বধিরতা।

আর যখন আপনি কোরআনে আপনার প্রতিপালকের একক আলোচনা করেন তখন তারা পিঠ ফিরিয়ে সরে পড়ে, বিমুখতার কারণে।

যখন তারা আপনার দিকে কান পাতে, তখন যে কারণে তারা কান পাতে তা আমি বেশ জানি। আর যখন তারা চুপিচুপি কথা বলে (তখন তাদের চুপিচুপি কথা বলার বিষয়ও আমি বেশ জানি) যখন এই জালিমরা বলে, তোমরা তো অনুসরণ করছো শুধু এক যাদুগ্রস্ত লোকের।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و لقد صرفنا এর অর্থ শুধু 'বর্ণনা করা' নয়, বরং তাতে صرف বা ফেরানোর অর্থ বিদ্যমান রয়েছে। এই মূল অর্থের দিকে লক্ষ্য রেখে শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, আর আমি ফিরিয়ে ফিরিয়ে বুঝিয়েছি।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর আমি বিভিন্নভাবে বর্ণনা করেছি। (তবে উভয় তরজমায় لقد এর তাকীদ বাদ পড়েছে।)

ليذكروا (যেন তারা বুঝতে পারে) এর তরজমা উভয় শায়খ করেছেন যথাক্রমে–

(ক) যেন তারা চিন্তা করে (খ) যেন তারা ভালোভাবে বুঝে নেয়। (গ) অন্যরা তরজমা করেছেন, যেন তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

এখানে তিনটি অর্থেরই অবকাশ রয়েছে। (তারা صرفنا এর উহ্য مفعول به উল্লেখ করেছেন এ ভাবে– বিভিন্ন উদাহরণ ও ঘটনা এবং পুরস্কারের ওয়াদা, আর শাস্তির হুঁশিয়ারি বর্ণনা করেছি)

থানবী (রহ) যে مفعول به উল্লেখ করেছেন সেটাই কিতাবের তরজমায় গ্রহণ করা হয়েছে।

(খ) و ما يزيدهم إلا نفورا (কিন্তু তা [সত্যের প্রতি] তাদের বিমুখতাকেই শুধু বাড়িয়ে দেয়) এটি তারকীবানুগ তরজমা। একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'কিন্তু এতে ওদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পায়'। – এ তরজমা তারকীবানুগ না হলেও গ্রহণযোগ্য।

থানবী (রহ) লিখেছেন, আর (তাওহীদের প্রতি) তাদের ঘৃণাই শুধু বেড়ে যেতে থাকে/বৃদ্ধি পেতে থাকে– আয়াতের মাঝে বৃদ্ধির অব্যাহততার ভাব রয়েছে, তরজমায় সেটা তিনি বিবেচনা করেছেন।

তিনি বলেন, আমি 'ফলশ্রুতিগত' তরজমা করেছি, কারণ এখানে يزيد ফেয়েলটির ইসনাদ ফায়েলের দিকে নয়, বরং সবব-এর দিকে করা হয়েছে। (অর্থাৎ বিভিন্নভাবে তাওহীদের সত্যতা ও শিরকের ভ্রান্তির বর্ণনার ফল হয়েছে তাদের ঘৃণা অব্যাহতভাবে বৃদ্ধি পাওয়া।)

(গ) لو كان معه الهة (যদি থাকতো তাঁর সঙ্গে অন্যান্য ইলাহ তাহলে তো [কবেই] তারা আরশের অধিপতির দিকে পথ খুঁজে নিতো) অন্যান্য ইলাহের অস্তিত্বের ক্ষেত্রে ابتغاء سبيل এর অনিবার্যতার যে প্রকট ভাবটি এখানে রয়েছে তা প্রকাশ করার জন্য থানবী (রহ) তার তরজমায় বন্ধনীতে 'কবেই' শব্দটি যোগ করেছেন। এত সূক্ষ্ম বিষয় উপলব্ধি করা সবার পক্ষে সম্ভব নয়।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, 'পথ বের করে নিতো'। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'পথ তালাশ করে নিতো'। দুটোই গ্রহণযোগ্য। ابتغاء এর শাব্দিক অর্থ অবশ্য তালাশ করা, আর পথ বের করা হচ্ছে পথ তালাশ করার ফল।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– ওদের কথা মতো যদি তাঁর সঙ্গে আরো উপাস্য থাকতো তবে তারা আরশের অধিপতির

প্রতিদ্বন্দ্বিতা করার উপায় খুঁজতো– এটি ভাবতরজমা।

(ঘ) إنه كان حليما غفورا (নিঃসন্দেহে তিনি পরম সহনশীল, পরম ক্ষমাশীল) শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, নিঃসন্দেহে তিনি সহনশীল, ক্ষমাশীল। শব্দ দুটিতে অতিশয়তার যে মাত্রা রয়েছে তা বিবেচনা করে থানবী (রহ) লিখেছেন, তিনি বড় সহনশীল, বড় ক্ষমাশীল। তবে এখানে إن এর তাকীদ বাদ পড়েছে।

কিতাবের তরজমায় তাকীদ ও অতিশয়তা দুটোই রক্ষা হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– তিনি সহ্য করেন, ক্ষমাও করেন। এ তরজমা গ্রহণযোগ্য নয়। কেননা এখানে অপ্রয়োজনে ক্রিয়াযোগে তরজমা করা হয়েছে।

(ঙ) و جعلنا على قلوبهم أكنة (অর্থাৎ রেখে দেই তাদের অন্তরের উপর আবরণ) 'অর্থাৎ' শব্দটি দ্বারা এদিকে ইংগিত করা হয়েছে যে, পরবর্তী বাক্যটি হচ্ছে পূর্ববর্তী বাক্যের ব্যাখ্যা।

(চ) و لوا على أدبارهم (তারা সরে পড়ে পিঠ ফিরিয়ে) একটি বাংলা তরজমায় আছে, তারা সরে পড়ে– এখানে على أدبارهم এর তরজমা বাদ পড়েছে।

'তারা সোজা উল্‌টো দিকে হাঁটা দেয়'– এটি শব্দানুগ তরজমা নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

(ছ) إن تتبعون إلا رجلا مسحورا (তোমরা তো অনুসরণ করছো শুধু এক যাদুগ্রস্ত লোককে) এটি মূলানুগ তরজমা।

থানবী (রহ) লিখেছেন, 'তোমরা তো শুধু এমন লোকের সঙ্গ দিচ্ছো যার উপর যাদু আছর করে ফেলেছে'। এটি গ্রহণযোগ্য তরজমা হলেও মূল থেকে এভাবে সরে আসার প্রয়োজন ছিলো না।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যার কথায় তোমরা চলো, তিনি নন, কিন্তু যাদুগ্রস্ত– এটাও মূলানুগ তরজমা নয়।

أسئلة :

١ – اشرح معنى الحِلْم

٢ – أعرب قوله : و جعلنا على قلوبهم أكنة

٣ – بم يتعلق قوله : على أدبارهم ؟

٤ - أعرب كلمةَ نُفورًا ·

৫ - ليذكروا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

৬ - ولوا على أدبارهم এর একটি তরজমা হলো, 'তারা সরে পড়ে', এ তরজমার ত্রুটি চিহ্নিত করো ·

(٤) ربُّكم الذي يُزجِي لكم الفُلكَ في البحر لِتَبتغوا مِن فَضله، إنه كان بكم رحيما * و إذا مَسكم الضُّر في البحر ضَلّ مَن تَدعون إلّا إياه، فَلَما نَجّكم الى البَرِّ اعرَضتم، و كان الانسان كَفورا * اَفَاَمِنتُم اَن يَخسِفَ بكم جانِبَ البَرِّ او يُرسِلَ عليكم حاصبًا ثم لا تجدوا لكم وكيلا * اَمْ اَمِنتم اَن يُعيدَكم فيه تارةً اخرى فَيُرسِل عليكم قاصفًا مِنَ الريح فيُغرِقَكم بما كفَرتم، ثم لا تَجدوا لكم عَلينا به تَبيعًا *

بيان اللغة

يُزجي : (يَسوق، يدفَع، يُسَيِّر) إزجاءً، مادته : زجو
و المُزْجى : الشيء القليل، و هي مُزجاة، قال تعالى : و جئنا ببضاعة مزجاة ·

خَسَف الله بهم الأرضَ : غيَّبهم في الأرض، (ض، خَسْفًا)
قال تعالى : فخسفنا به و بداره الأرضَ ·
خَسَفَت الأرضُ (ض، خَسْفًا و خُسوفا) غارت بما عليها (أي : غابت إلى أسفَلَ)

حاصبا : الحاصب و الحَصْباء هي الحِصَى الصغار، و قال الزَّجّاج : الحاصب التراب الذي فيه الحَصْباء، فالحاصِبُ ذو الحَصْباءِ ·
و يقال للسحابة التي تَرْمي بالبَرَد : حاصِب،
و قيل : الحاصب الريح التي تَحصِبُ، أي ترمي بالحَصْباء، و هي الحجارة الصغيرَة، و الواحدة حَصَبَة، و حَصَبَ (من باب ضرب)

قاصفا : القاصف ما يَقصِف الشيءَ، أي : يكسِره بشدة ٠
و الريح الشديدة التى لا تمر بشيءٍ إلا قصَفَته ٠
تبيعا : التبيع المطالب

بيان الإعراب

ضل من : فعل و فاعل، و إلا إياه، استثناء ٠ و المعنى : غابَ عَنْ خاطِرِكم كلُّ من تَدعونه إلاَّ إياه، فَإنكم عندَئِذٍ تذكرونه وحدَه ٠

أفأمنتم أن يخسف بكم : الهمزة للإستفهام الانكاري، و الفاء حرف عطف، و الجملة "أمنتم" معطوفة على جملة محذوفة، أي : أَ نَجَوتُم فأَمِنتم، فَحَمَلَتكم نجاتُكم على الإعراض ٠
والمصدر المؤول في محل نصب بنزع الخافض، أى : من أن يخسف، و بكم حال، أي : مصحوبا بكم، فالباء للمصاحبة، أو هي سببية يتعلق بـ : يخسف ٠

لا تجدوا لكم وكيلا : عطف بحرف التراخي على : يرسل و لكم متعلق بمحذوف حال، لأنه كان في الأصل نعتا لـ : وكيلا، و تقدم عليه فصار حالا ٠

تارة : أصلها تأرة، حذفت الهمزة لكثرة الاستعمال، و هي ظرف زمان بمعنى حين، يتعلق بـ : يعيد ٠

من الريح : متعلق بصفة محذوفة لـ : قاصفا، أي : كائنامن الريح ٠

لكم علينا : متعلقان بمحذوف حال من : تبيعاً، لأنه في الأصل نعت لـ : تبيعا، أي : تبيعا ثابتا لكم علينا ٠
و به متعلق بـ : تبيعا، أي : مطالبا بثأر الإغراق، و يجوز أن يتضمن تبيعا معنى ناصرا، فيكون علينا و لكم متعلقان بـ : تبيعا، أي : ناصرا لكم علينا ٠

الترجمة

তোমাদের প্রতিপালক তো তিনিই যিনি চালিত করেন তোমাদের (কল্যাণের) জন্য জলযানকে সমুদ্রে, যাতে সন্ধান করতে পারো

তোমরা তাঁর অনুগ্রহ। নিঃসন্দেহে তিনি তোমাদের প্রতি পরম দয়ালু।

আর যখন তোমাদেরকে ধরে কোন দুর্গতি সমুদ্রে তখন যাদেরকে তোমরা ডাকো তারা হারিয়ে যায়, আল্লাহ ছাড়া। অনন্তর যখন উদ্ধার করে আনেন তিনি তোমাদেরকে ডাঙ্গায় তখন তোমরা ফিরে যাও। আর (স্বভাবতই) মানুষ বড় অকৃতজ্ঞ।

তো তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছো (এ বিষয় থেকে) যে, তিনি তোমাদেরকেসহ ধ্বসিয়ে দেবেন স্থলের অংশকে, কিংবা প্রেরণ করবেন তোমাদের উপর 'প্রস্তরঝঞ্ঝা' তারপর পাবে না তোমরা নিজেদের জন্য কোন কার্যউদ্ধারকারী। কিংবা তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছো (এ বিষয় থেকে) যে, ফিরিয়ে আনবেন তিনি তোমাদেরকে সমুদ্রে আরেকবার, অনন্তর প্রেরণ করবেন তোমাদের উপর সর্বসংহারকারী ঝড়, অনন্তর ডুবিয়ে দেবেন তোমাদেরকে তোমাদের কুফুরি করার কারণে, তারপর পাবে না তোমরা আমার বিপক্ষে নিজেদের জন্য ঐ বিষয়ে কোন কৈফিয়ত তলবকারী।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) الفلك في البحر (জলযানকে সমুদ্রে) জাহাজ বা কিশতি এর পরিবর্তে 'জলযান' ব্যবহার করা হয়েছে ব্যাপকতার উদ্দেশ্যে। একই কারণে 'সমুদ্রে'-এর স্থলে 'জলভাগে' তরজমা করা যায়।

শায়খায়ন 'কিশতি' এবং 'দরিয়া' ব্যবহার করেছেন।

(খ) و إذا مسكم الضر في البحر (আর যখন তোমাদেরকে ধরে কোন দুর্গতি সমুদ্রে) الضر এর অর্থ শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন 'বিপদ', যার আরবী প্রতিশব্দ آفة বা مصيبة থানবী (রহ) লিখেছেন, 'কষ্ট'। এটাই ضر এর সঠিক প্রতিশব্দ। এর চেয়ে উত্তম প্রতিশব্দ হলো, দুর্গতি।

مس এর শাব্দিক অর্থ 'স্পর্শ', আরবীতে ভালো ও মন্দ এবং কোমল ও কঠিন উভয় ক্ষেত্রে এটি ব্যবহৃত, কিন্তু স্পর্শ শব্দটি বাংলায় কোমল ক্ষেত্রে ব্যবহৃত। এ জন্য এর পরিবর্তে 'ধরে' বা পাকড়াও করে ব্যবহার করা সংগত। আরবী তারকীব থেকে সরে এসে, 'আর যখন তোমাদের উপর দুর্গতি আপতিত হয় বা নেমে আসে' লেখা যায়।

(গ) وكان الإنسان كفورا (মানুষ বড় অকৃতজ্ঞ) এখানে অসন্তোষের যে ভাব রয়েছে বাংলা তরজমায় তা প্রকাশ করার অবকাশ নেই; উর্দূতে সেটার অবকাশ রয়েছে। যেমন, স্বাভাবিক উর্দূ তরজমা হলো- انسان بڑا ناشکر هے এখন هے কে আগে এনে যদি বলা হয় إنسان هے بڑا نا شکر তখন অসন্তোষের ভাব প্রকাশ পায়। থানবী (রহ) এভাবেই তরজমা করেছেন।

(ঘ) أ فأمنتم أن يخسف بكم جانب البر (তো তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছো [এ বিষয় থেকে] যে, তিনি তোমাদেরসহ ধ্বসিয়ে দেবেন স্থলের অংশকে) এ তরজমা পূর্ণ তারকীবানুগ। এ তরজমা করা হয়েছে مصحوبا بكم এই তারকীবকে অনুসরণ করে।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন- তোমরা কি নির্ভয় হয়ে গেছো এ বিষয় থেকে যে, তিনি তোমাদেরকে ধ্বসিয়ে দেবেন স্থলভাগের প্রান্তে। - এটিও তারকীবানুগ তরজমা। এ তরজমায় অনুসৃত তারকীব এই যে, ب অব্যয়টি অতিরিক্ত এবং كم হচ্ছে يخسف এর مفعول به আর جانب البحر হচ্ছে ظرف

থানবী (রহ) লিখেছেন- তো তোমরা কি এ বিষয় থেকে নিশ্চিন্ত হয়ে গেছো যে, তিনি তোমাদেরকে স্থলভাগের কিনারে এনে ভূমিতে ধ্বসিয়ে দেবেন!

এ তরজমা আয়াতের তারকীব থেকে কিঞ্চিত দূরবর্তী, যার তেমন প্রয়োজন নেই।

একটি বাংলা তরজমায় আছে- তোমরা কি নিশ্চিত আছো যে, তিনি তোমাদেরকে স্থলে কোথাও ভূর্গভস্থ করবেন না। - এ তরজমা তারকীব থেকে দূরবর্তী, আবার গ্রহণযোগ্যও নয়। কারণ 'স্থলে কোথাও' এটি হচ্ছে স্বতন্ত্র দুটি ظرف পক্ষান্তরে جانب البر হচ্ছে একটি মাত্র ظرف আর ভূগর্ভস্থ করা এবং ভূমিতে ধ্বসিয়ে দেয়া এক বিষয় নয়।

এ তরজমাটি গ্রহণযোগ্য হতে পারে এভাবে, তো তোমরা কি নিশ্চিন্ত আছো যে, তিনি তোমাদেরকে স্থলভাগের প্রান্তে ধ্বসিয়ে দেবেন না!

أسئلة :

١ - اشرح كلمة حاصِب.

٢ - علام عطفت جملة أمنتم ؟

٣ - أعرب "لكم" في قوله : ثم لا تجدوا لكم وكيلا

٤ - بم يتعلق "به" في قوله تعالى : ثم لا تجدوا لكم علينا به تبيعا ؟

٥ - إذا مسكم الضر এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ - وكان الإنسان كفورا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٥) وَ مِنَ الَّيلِ فَتَهَجَّدْ به نافِلَةً لك، عسى أن يبعَثَك ربك مقاما محمودًا * و قل رب أَدخِلني مُدخَلَ صِدْقٍ و أَخرِجني مُخْرَجَ صدقٍ و اجعَل لي من لدنك سُلطٰنا نصيرا * و قل جاء الحق و زَهَقَ الباطل، إِنَّ الباطِلَ كان زَهوقا * و نُنَزِّل من القرآن ما هو شِفاء و رَحمة للمؤمنين، و لا يَزيد الظّٰلمين إلا خَسارا * وَ إذا أَنعمنا على الانسان أَعرض و نَاٰ بِجانبه، و إذا مَسَّه الشَّر كان يَئُوسا * قل كلٌّ يعمَل على شَاكِلَته، فربكم أَعْلَمُ بِمَنْ هو أَهْدٰى سبيلا *

بيان اللغة

هَجَد (ن، هُجودًا) نام، فالهُجود النوم، و الهاجِد النائم، و وَزْنُ تفَعَّلَ يأتي لِسَلب المادة، فمعنى تَهَجَّد : تَرَكُ الهُجود للصلاة .
و قال ابن الأعرابي : تهَجَّد : صَلّٰى من الليل، و تَهَجَّد : نام

نافلة : النافلة : ما زاد على النصيب أو الحق أو الفرض . يقال : هو يصلي النافلة، و النافلة الحفيد، كما قال تعالى : و وهبنا له إسحٰقَ و يعقوبَ نافِلَةً، و الجمع نوافل، و أصل النفل الزيادة على الواجب .

مُدخَل : مصدر ميمي كمَدخل، فمَدخَل من دخل و مُدخَل من أدخل

زهوق : (زائل)، زَهَق الباطِلُ (ف، زَهْقًا، زُهوقًا) : زالَ و اضمَحَلَّ (أي : ضَعُفَ)، فهو زاهق و زَهوق

و زَهَقت نفسُه (ف، زُهوقًا) : خرجَت من الأَسف على الشيء، و الأصل في الزُّهوق الخروج بِصُعوبة .

قال تعالى : إنما يريد الله أن يعذبهم بها في الدنيا و تَزهَقَ أنفسُهم و هم كٰفرون .

نَأَى عنه (يَنأى، نَأْيًا، ف) بعد عنه، و يقال للرجل إذا تكبر و أعرض : نَأى بِجَانِبِه (لأن النأيَ بالجانب دِينُ المستكبِرين)

يؤوس : (قانط) يَئِسَ منه (يَيْأَسَ، يَأْسًا، س) : انقطع أَملُه منه .

على شاكلته : على سَجِيَّته و طَبْعِه، و المعنى : كل إنسان يعمَل حَسَب طبعِه، فإن كانت نفسُه طيبة صدرت عنه أعمال صالحة طيبة، و إن كانت نفسه خبيثة صدرت عنه أعمال خبيثة فاسدة .

بيان الإعراب

و من الليل فتهجد به نافلة لك : الواو عاطفة، و من للتبعيض، متعلق بـ : تهجد، و الفاء زائدة للتزيين، أي : و تهجد بعضَ الليل، أو هو متعلق بمحذوف، أي قم بعض الليل، و الفاء حينئذ عاطفة . و به (أي : بالقرآن) متعلق بـ : تهجد .

نافلة حال، و لك متعلق بـ : نافلة، أو بصفة محذوفة لـ : نافلة، أي : صل صلاة التهجد حال كونها نافلة (ثابتة) لك .

و يجوز أن تكون نافلة مصدرا كالعافية و العاقبة، و المعنى : فتنفل نافلة .

مقاما محمودا : منصوب على الظرفية، و يجوز أن يكون حالا، أي : عسى أن يبعثك يوم القيامة ذا مقام محمود .

و يجوز أن يكون مصدرا لفعل محذوف، أي : أن يبعثك فتقوم مقاما محمودا .

مُدخَلَ صدقٍ : مفعول مطلق، لأنه مصدر ميمي، و هذا من إضافة الموصوف إلى صفته، أي : أدخِلْني إدخالاً صادِقًا (أي : حَسَنًا)

و اجعَل لي من لدنك سُلطانا نَصيرًا . لي متعلق بمفعول ثان محذوف لـ : اجعَل، و سُلطانا مفعول به أوّلُ لـ : اجعل، أي : اجعَلِ السلطان ثابتًا لي .

و مِن لدنك حال من سلطانًا، لأنه كان في الأصل نعتا لـ : سلطانا، أو هو متعلق بما تعلق به الجار الأول .

و إذا تضمَّن اجعَل معنى أَعْطِ، فهما متعلقان بـ : اجعَل .

و المعنى : اجعَل لي من عندك دليلا و بُرهانًا ينصرني لإظهار دينك و إعلاء كلمَتِك . أو اجعَل لي من عندك قوةً تنصرني بها على أعدائِك .

كلٌّ يعمَل على شاكِلَته : كل مبتدأ، أي : كلٌّ أحدٍ أو كلٌّ إنسانٍ، فحذف المضاف إليه، و نُوِّنَ المضاف .

بِمَن هو أهدى سبيلا : مَن موصول، و الجملة صلتُه، قال أبو البَقاء : يجوز أن يكونَ أهدى أفعلَ مِنْ : هَدٰى غيرَه، أو مِنْ هَدٰى بمعنى اهتدٰى فيكون لازما .

الترجمة

আর (উঠুন) রাতের কিছু অংশে, অনন্তর তাহাজ্জুদ আদায় করুন কোরআনযোগে, আপনার জন্য অতিরিক্তরূপে। অবশ্যই উন্নীত করবেন আপনাকে আপনার রব মাকামে মাহমূদে।

আর আপনি এই দুআ করুন, হে আমার প্রতিপালক, দাখেল করুন আপনি আমাকে উত্তমরূপে এবং বের করুন (আপনি আমাকে) উত্তমরূপে। এবং দান করুন আমাকে আপনার পক্ষ হতে 'নোছরাতযুক্ত ক্ষমতা'।

আর আপনি বলে দিন, এসেছে হক এবং বিলুপ্ত হয়েছে বাতিল। বাতিল তো বিলুপ্ত হবেই। আর আমি নাযিল করি যা মুমিনদের জন্য শিফা ও রহমত, অর্থাৎ কোরআন। আর তা যালিমদেরকে শুধু ক্ষতিই বাড়িয়ে দেয়।

আর যখন নেয়ামত দান করি আমি (কিছু) মানুষকে তখন সে মুখ

ফিরিয়ে নেয় এবং অহংকার প্রদর্শন করে। আর যখন আক্রান্ত করে তাকে কোন অনিষ্ট তখন সে (আল্লাহর রহমত থেকে) হতাশ হয়ে পড়ে।

আপনি বলে দিন, প্রত্যেকেই নিজ প্রকৃতি অনুযায়ী (ভালো বা মন্দ) আমল করে থাকে। তো আপনার প্রতিপালক তার সম্পর্কে পূর্ণ অবগত যে অধিক পথপ্রাপ্ত।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) و من الليل فتهجد به (আর রাতের কিছু অংশে [দাঁড়ান/উঠুন], অনন্তর কোরআন যোগে তাহাজ্জুদ আদায় করুন) এ তরজমা হচ্ছে এই তারকীবের ভিত্তিতে যে, ف হচ্ছে حرف العطف এবং পরবর্তী বাক্যটি পূর্ববর্তী উহ্য বাক্যের উপর মাতূফ, আর من الليل হচ্ছে উহ্য فعل এর সাথে সম্পৃক্ত।

পক্ষান্তরে 'রাতের কিছু অংশে তাহাজ্জুদ পড়ুন' এ তরজমা হচ্ছে এই তারকীবের ভিত্তিতে যে, ف অব্যয়টি অতিরিক্ত, আর من الليل হচ্ছে تهجد এর সাথে متعلق

শায়খুলহিন্দ (রহ)-এর তরজমা- কিছু রাত কোরআনসহ জাগতে থাকুন। - তিনি تهجد এর পারিভাষিক তরজমার পরিবর্তে শাব্দিক তরজমা করেছেন, উদ্দেশ্য কিন্তু তাহাজ্জুদের নামায, রাত জেগে নিছক কোরআন পাঠ করা নয়। সুতরাং উদ্দেশ্যের দিক থেকে 'কোরআনযোগে তাহাজ্জুদ পড়ুন' এ তরজমা উত্তম।

থানবী (রহ) এর তরজমা- রাতের কিছু অংশে (ছালাত আদায় করুন) অর্থাৎ তাতে তাহাজ্জুদ পড়ুন। তিনি তার তরজমার ব্যাখ্যা দিয়ে বলেছেন, من الليل হচ্ছে উহ্য أقم এর সাথে متعلق আর পরবর্তী বাক্যটি হচ্ছে এর ব্যাখ্যা। (সুতরাং ف হরফুল আতফ নয়) আর ب হচ্ছে في এর সমার্থক এবং যমীরের مرجع হচ্ছে الليل

(খ) نافلة لك (আপনার জন্য অতিরিক্তরূপে) হালের তারকীব অনুসরণ করে এ তরজমা করা হয়েছে। একই তারকীব অনুসরণ করে থানবী (রহ) লিখেছেন- যা আপনার জন্য অতিরিক্ত।

শায়খুলহিন্দ (রহ) স্বতন্ত্র বাক্যে এভাবে তরজমা করেছেন, এটি আপনার জন্য অতিরিক্ত। একটি বাংলা তরজমায় আছে– 'এটি তোমার জন্য অতিরিক্ত কর্তব্য'।

থানবী (রহ)-এর মতে 'কর্তব্য' শব্দটি যুক্ত করা ঠিক নয়, যাতে নফল হিসাবে অতিরিক্ত এবং ফরয হিসাবে অতিরিক্ত দুটোরই অবকাশ থাকে, আর নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের তাহাজ্জুদ সম্পর্কে দুটো মতই রয়েছে।

(গ) عسى (অবশ্যই) এ তরজমার ভিত্তি এই যে, আল্লাহর ক্ষেত্রে عسى নিশ্চয়তার অর্থ প্রকাশ করে।

থানবী (রহ) শাব্দিক তরজমা করে বন্ধনী যোগ করেছেন। তাঁর তরজমা– আশা (অর্থাৎ ওয়াদা) রয়েছে যে,

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, 'অতিসত্বর'। অর্থাৎ তিনি عسى কে فعل المقاربة রূপে গ্রহণ করেছেন। এ তরজমা উত্তম।

(ঘ) يبعثك مقاما محمودا (আপনাকে উন্নীত করবেন মাকামে মাহমূদে) কেউ কেউ শাব্দিক তরজমা করেছেন, 'প্রেরণ করবেন'।

থানবী (রহ) এর তরজমা– মাকামে মাহমূদে আপনাকে স্থান দেবেন। তিনি বলেন, আমি بعث এর ফলশ্রুতিভিত্তিক তরজমা করেছি।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, খাড়া করবেন/দাঁড় করবেন। একটি বাংলা তরজমায় রয়েছে, প্রতিষ্ঠিত করবেন।

কিতাবের তরজমাটি অধিকতর উপযোগী। কারণ তা متضمن ও متضمن উভয় অর্থকে ধারণ করছে।

(ঙ) قل এখানে তিনটি قل রয়েছে, অন্যরা তিন ক্ষেত্রেই 'বলুন' এই শাব্দিক তরজমা করেছেন এবং তা গ্রহণযোগ্য। কিন্তু থানবী (রহ) প্রথমটির তরজমা করেছেন, আপনি এই দুআ করুন। বিষয়বস্তুর দিক থেকে এ তরজমা অধিকতর উপযোগী।

(চ) سلطانا نصيرا (নোছরাতযুক্ত ক্ষমতা) অর্থাৎ এমন ক্ষমতা যার সঙ্গে আপনার নুছরত ও মদদ যুক্ত রয়েছে। এটি থানবী (রহ) এর তরজমা।

কোন কোন বাংলা তরজমায় রয়েছে–

(ক) সাহায্যকারী ক্ষমতা (খ) এমন কর্তৃত্ব যা আমার

সাহায্যে আসে। - আয়াতের যে মূলভাব, তার সঙ্গে এ তরজমা সঙ্গতিপূর্ণ নয়।

(ছ) جاء الحق زهق الباطل (এসেছে হক এবং বিলুপ্ত হয়েছে বাতিল) হক ও বাতিল শব্দ দুটির আলাদা বৈশিষ্ট্য রয়েছে, তাই এর বাংলা প্রতিশব্দ ব্যবহার করা হয়নি।

থানবী (রহ) হক ও বাতিল ব্যবহার করেছেন। আর শায়খুলহিন্দ উর্দূ প্রতিশব্দ سچ ও جهوٹ (সত্য ও মিথ্যা) ব্যবহার করেছেন।

(জ) و ننزل من القرآن ما هو شفاء و رحمة للمؤنين (আর আমি নাযিল করি যা মুমিনদের জন্য শিফা ও রহমত, অর্থাৎ কোরআন) এ তরজমায় ইঙ্গিত রয়েছে যে, من অব্যয়টি ما এর বয়ানের জন্য এসেছে।

আর আমি কোরআন নাযিল করি মুমিনদের জন্য শিফা ও রহমতরূপে- এ তরজমা মূলানুগ নয়, তবে গ্রহণযোগ্য।

(ঝ) و إذا أنعمنا على الإنسان (আর যখন নিয়ামত দান করি আমি [কিছু] মানুষকে) এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা, কারণ এখানে সমস্ত মানুষ উদ্দেশ্য নয় الإنسان بعض অর্থাৎ কাফিররাই শুধু উদ্দেশ্য।

(ঞ) نأى بجانبه (অহংকার প্রদর্শন করে) এর শাব্দিক অর্থ হলো সে তার পার্শ্ব সরিয়ে ফেলে। শায়খায়ন এ তরজমাই করেছেন। কিন্তু এটি একটি আরবী বাগ্‌ধারা, যার অর্থ হলো অহংকার প্রদর্শন করা। সহজায়নের জন্য কিতাবে বাগ্‌ধারাভিত্তিক তরজমা করা হয়েছে।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة نافِلَةً

٢ - أعرب قوله : مقاما محمودا

٣ - أعرب قوله : مُخرَجَ صدق

٤ - أعرب قوله : إلا خَسارا

৫ - تهجد به এর তরজমা পর্যালোচনা করো

৬ - سلطانا نصيرا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٦) الحمدُ لِلّٰه الذي اَنْزَلَ على عَبدِهِ الكتٰب و لَمْ يَجعَل له عِوَجًا
* قَيما لِيُنذِر بَاْسًا شَديدا مِن لَدنه و يُبَشِر المؤمنين
الذين يَعملون الصّٰلِحٰت اَنَّ لهم اجرًا حَسَنا * ماكِثين فيه
اَبَدًا * و يُنذِرَ الذين قالوا اتَّخَذَ اللّٰه وَلَدًا * ما لهم به مِنْ
عِلْم وَ لا لِاٰبائِهم، كَبُرَت كلِمَةً تخرُج من اَفواهِهم، اِن
يقولون اِلّا كَذِبا * فَلعَلَّك باخِع نفسَك على اٰثارهم اِن لم
يؤمنوا بِهذا الحديث اَسَفًا *اِنا جَعلنا ما على الارضِ زينَةً
لها لِنَبلُوَهم اَيُّهم اَحْسَنُ عَمَلا * و اِنا لجٰعِلون ما عليها
صعيدًا جُرزًا *

بيان اللغة

عَوِجَ العُود و نحوُه (س، عَوَجًا) : مال و انحنى

عَوِجَ الطريقُ : التوٰى

عَوِجَ الإنسانُ : ساءَ خُلُقه، انحَرَف دينه .

قال الإمام الراغب : العَوَجُ يقال فيما يُدرَك بالبَصَر سَهْلا كالخَشَب و العُود، و العِوَج يقال فيما يُدرَك بالفكر و البَصيرة، كالدين و السُّلوك .

و قال صاحب الأساس : يقال في العُود العَوَج، و في الرَّأْيِ عِوَجٌ .

و قول غير ذي عِوَجٍ : أي مستقيمٌ سليم، كما قال تعالى : و قرآنا عَربيا غيرَ ذي عِوَجٍ .

قيما : مستقيما، أو مُقوِّما لمصالح العباد، فباعتبار هذا المعنَى الثاني وُصِفَ الكتابُ أولا بالكَمال ثم بالتَّكميل، و في القاموس : القيم عَلَى الأمرِ مُتولِّيه، كَقَيِّم الوَقْفِ، و قَيِّمُ المرأةِ زوجُها .

و أمر قيم : مستقيم، و الدين القيم : المستقيم الذي يقوِّم أمورَ العباد .

قال تعالى : وذلك دينُ القيِّمةِ، أي : دين الأمة المستقيمة .

بٰخِعٌ نفسَك : مُهلكها و قاتلها . بَخَع الرجلُ نفسَه (بَخْعًا، بُخوعا، ف) : أهلَكها غيظا .

بأسا : عذابا، و صعيدا جُرُزًا : ترابا ظاهرا لا أثرَ فيه للنبات .

بيان الإعراب

و لم يجعل له عِوجا : يجوز أن تكون الواو عاطفة، و الجملة داخلة في حيز الصلة، و يجوز أن تكون اعتراضية، فالجملة معترضة بين الحالِ - و هو قيما - و صاحِبِها - و هو الكتاب .

و أنكر الزمخشريُّ أن يكون قيما حالا من الكتاب، لأن واو و لم يجعل للعطف عنده، فيقع بين الحال و ذي الحال فَصْلٌ بِبَعضِ الصلة، و لا يَرِدُ هذا على من جَعَل الواوَ اعتراضيةً .

و قال الطبري : هذا من المقدَّمِ و المؤخَّرِ، أي : أنزَلَ على عبدِه الكتابَ قيما، و لم يجعل له عِوَجًا .

ليُنذِر : متعلق بـ : أنزَل، و هو متعد إلى مفعولين، أي : ليُنذِر الكافرين بأسًا شديدا (صادرا) من لدنه .

أن لهم : هذا المصدر المؤول مفعول به ثان لـ : يُبشِّرَ عند من يرى أن بَشَّر يتعدى إلى مفعولين، و عند غيرهم هو منصوب بنزع الخافض، أي : بأن لهم

و ينذر الذين : هنا حُذف المفعول به الثاني، لأنه سبَق ذكره، و هو البأسَ .

كبرت : فعل ماض لإنشاء الذم كبئس، و الفاعل ضمير مستتر فيه، و كلمة تمييز للضمير الفاعل منصوب، و المخصوص بالذم محذوف، أي مقالَتُهم المذكورة .

إلا كذبا : مفعول به منصوب بـ : يقولون، أو نعت لمصدر محذوف، أي : إلا قولا كذبا .

الحديث : (أي : القرآن) بدل من : هذا، و أسفا مفعول لأجله، أو مصدر في موضع الحال من ضمير باخع .

الترجمة

সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্‌রই জন্য, যিনি নাযিল করেছেন আপন বান্দার উপর এই কিতাব সরলরূপে, এবং রাখেন নি তিনি তাতে কোন বক্রতা, যাতে তা (কাফিরদেরকে) সতর্ক করে আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে সাব্যস্ত কঠিন আযাব সম্পর্কে, এবং সুসংবাদ দান করে মুমিনদেরকে, যারা বিভিন্ন নেক আমল করে, (এই মর্মে) যে, তাদের জন্য রয়েছে উত্তম প্রতিদান, যাতে তারা থাকবে চিরকাল। এবং সতর্ক করে (কঠিন আযাব সম্পর্কে) তাদেরকে যারা বলে, আল্লাহ্ গ্রহণ করেছেন সন্তান। এ বিষয়ে নেই কোন জ্ঞান, (না) তাদের এবং না তাদের পূর্বপুরুষদের। কী সাংঘাতিক কথা, যা তাদের মুখ থেকে বের হয়! তারা তো শুধু মিথ্যা বলে।

তো মনে হয় আপনি তাদের পিছনে নিজের জান দিয়ে দেবেন আফসোস করে করে, যদি তারা বিশ্বাস স্থাপন না করে এই বাণীর প্রতি।

পৃথিবীর উপর যা কিছু রয়েছে সেগুলোকে তো আমি বানিয়েছি পৃথিবীর শোভা, যাতে আমি পরীক্ষা করি লোকদেরকে (যে,) কর্মে তাদের কে শ্রেষ্ঠ। আর অবশ্যই আমি পরিণত করবো পৃথিবীর উপর যা কিছু আছে সেগুলোকে ধূ-ধূ প্রান্তরে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) أنزل على عبده الكتاب (নাযিল করেছেন আপন বান্দার উপর এই কিতাব) 'এই' শব্দটি থানবী (রহ) যোগ করেছেন, কারণ الكتاب এর ال হচ্ছে বিশিষ্টতাজ্ঞাপক এবং উদ্দেশ্য হচ্ছে আলকোরআন।

'নাযিল করেছেন এই কিতাব সরলরূপে', এ তরজমার ভিত্তি এই যে, قيما হচ্ছে الكتاب থেকে হাল।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'এই কিতাব নাযিল করেছেন আর তাতে বিন্দুমাত্র বক্রতা রাখেন নি, তিনি এটিকে পূর্ণ সরল করেছেন'। – এ তরজমার ভিত্তি এই যে, قيما হচ্ছে উহ্য جعله এর দ্বিতীয় মাফঊল। نفي এর পরে নাকিরাহ عموم বোঝায়, সুতরাং عوجا এর তরজমা হবে কোন বক্রতা, বিন্দুমাত্র/ কিছুমাত্র/ সামান্যও বক্রতা। কোন কোন বাংলা তরজমায় বিষয়টি লক্ষ্য রাখা হয়নি।

কেউ কেউ عوجا এর অর্থ করেছেন, 'অসংগতি' – এ তরজমায় 'অসংগতি' রয়েছে।

قيما এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, 'একে সুপ্রতিষ্ঠিত করেছেন', তা সঠিক নয়, কারণ অভিধানে শব্দটির এ অর্থ নেই।

(খ) لينذر (যাতে তা সতর্ক করে) থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'যাতে ঐ কিতাব সতর্ক করে', তিনি বলেন, যেহেতু الكتاب হচ্ছে لينذر এর যামীরের নিকটতর শব্দ, সেহেতু لينذ এর যামীরকে عبده এর পরিবর্তে الكتاب এর দিকে ফিরিয়ে এ তরজমা করা হয়েছে। পক্ষান্তরে সুরাতুল ফোরকানে রয়েছে تبارك الذي نزل الفرقان على عبده ليكون للعلمين نذيرا (বরকতময় হয়েছেন ঐ সত্তা যিনি নাযিল করেছেন আল ফোরকান আপন বান্দার উপর যাতে তিনি হতে পারেন সতর্ককারী জগদ্বাসীর জন্য) এখানে ليكون এর যামীরকে عبده এর দিকে ফিরিয়ে তরজমা করার কারণ এই যে, عبده শব্দটি এখানে নিকটতর।

(গ) كبرت كلمة تخرج من أفواههم (কী সাংঘাতিক কথা, যা বের হয় তাদের মুখ থেকে) এটি ভাবতরজমা।

তারকীবানুগ তরজমা হলো, তা গুরুতর হয়েছে এমন কথা হিসাবে, যা তাদের মুখ থেকে বের হয়। (অর্থাৎ তাদের পূর্ববর্তী কথা) দুর্বোধ্যতার কারণে এটি গ্রহণযোগ্য তরজমা নয়।

অপেক্ষাকৃত সহজ তরজমা, 'বড় গুরুতর এই কথা যা তাদের মুখ থেকে বের হয়/ তাদের মুখ থেকে বের হওয়া এ কথা বড় গুরুতর।

শায়খুলহিন্দ (রহ) এর তরজমা– কী গুরুতর কথা তাদের মুখ থেকে বের হয়! – আয়াতে বিদ্যমান বিস্ময় ও ক্ষোভ– এর ভাব তরজমায় ফুটে উঠেছে, কিন্তু এখানে অপ্রয়োজনে মূল তারকীব ত্যাগ করা হয়েছে। সবদিক বিবেচনায় কিতাবের তরজমাটি সর্বোত্তম।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'উদ্ভট কথাই তাদের মুখ থেকে বের হয়'।– এতে গুরুতরতার বিষয়টি আসেনি, যা كبرت এ রয়েছে।

অন্য তরজমায় আছে, 'তাদের মুখনিসৃত বাক্য'– এটি সুন্দর নয়। কারণ 'মুখনিসৃত' কে উত্তম ক্ষেত্রে ব্যবহার করা হয়।

(ঘ) أسفا (আফসোস করে করে) এটি শায়খুলহিন্দের তরজমা। এ তরজমায় নবী ছাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের প্রতি করুণার প্রকাশ রয়েছে, যা আয়াতের ভাবের অন্তর্ভুক্ত। থানবী (রহ) লিখেছেন, 'দুঃখে' – এতে শব্দের অর্থ এসেছে, কিন্তু ভাব আসেনি।

(ঙ) صعيدا جرزا (ধূ-ধু প্রান্তরে) উদ্ভিদশূন্য ময়দানে/ বিরানভূমিতে / পরিষ্কার ময়দানে– এগুলোর চেয়ে কিতাবের তরজমা আয়াতের ভাবের সাথে অধিকতর সংগতিপূর্ণ।

(চ) باخع نفسك (নিজের জান দিয়ে দেবেন) কেউ কেউ তরজমা করেছেন, নিজেকে শেষ করে দেবেন/ আত্মবিনাশী হবেন। আয়াতের ভাবের সঙ্গে কিতাবের তরজমা অধিকতর উপযোগী।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة عِوَجٍ و عَوَجٍ

٢ - أعرب قوله : قيما

٣ - في أي موقع من الإعراب وقع قوله : أن لهم أجرا حسنا ؟

٤ - أعرب قوله : كذبا

٥ - 'নাযিল করেছেন এই কিতাব সরলরূপে' এ তরজমার ভিত্তি কী?

٦ - أسفا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٧) و تحسَبهم اَيقاظا و هم رُقود، و نُقَلِّبهم ذاتَ اليمينِ و ذاتَ
الشمال، و كلبُهم باسِطٌ ذراعَيه بالوَصيد، لَوِ اطلَعْتَ عليهم
لَوَلَّيتَ منهم فِرارًا و لَمُلِئْتَ منهم رُعبا * و كذلك بعثنٰهم
ليَتسا ءلوا بينَهم، قال قائل منهم كم لبثتم، قالوا لَبثنا يومًا
اَو بعضَ يوم، قالوا ربكم اَعْلَمُ بما لبثتم، فابعَثوا احدكم
بِوَرِقكم هذه الى المدينة فلينظُر اَيُّها ازكٰى طعامًا فلياتِكم
برزق منه و ليتلَطَّف و لا يُشعرن بكم اَحَدًا * اِنهم اِنْ يظهَروا

عليكم يرجُموكم اَوْ يُعيدوكم في مِلتهم و لن تُفلحوا اِذاً ابَدا * و كذلك اَعثرنا عليهم ليَعلموا اَنَّ وعدَ الله حقٌّ و اَنَّ الساعَةَ لا ريبَ فيها ، اِذْ يَتنازَعون بينَهم اَمْرَهم فقالوا ابنوا عليهم بُنيانًا ، ربُّهم اعلَمُ بهم ، قال الذين غَلَبُوا على اَمْرِهم لنتخذن عليهم مسجدًا *

بيان اللغة

أيقاظا : جمع يَقِظٌ ، (غير نائم) و هي يَقِظة .

يَقْظان : بمعنى يَقِظ ، و هي يَقْظَي ، و جمعهما يَقاظى .

رُقود و رُقَّد : جمع راقد . (رَقَد ، ن ، رُقودا) نام

ذاتَ اليمين : جِهةَ اليمين

ذِراع : العُضو المعروف ، أي : اليَدُ من كل حيَوانٍ .

الوصيد : فِناء الدار و البيتِ . عَتَبَةُ البابِ . الكهفُ

اِطَّلَع على أمرٍ : عَلِمه

اطلع على شيءٍ : أشرَفَ عليه — উঁকি দিলো, ঝুঁকে দেখলো

اطلع إلى شيءٍ : تَطلَّع ، أي : رفَعَ بصَرَه ينظر إليه

رُعبا (خَوفا و فَزَعًا) . رَعَبَ (ف ، رَعْبًا ، رُعبا) خاف و فَزِع

رَعَبَه : خَوَّفه و أفزَعَه

وَرِقٌ : (بفتح الواو و كسر الراء) الفِضة مضروبةً كانت أو غيرَ مضروبةٍ

أزكى : أطيَبُ ، أفعَلُ مِن : زكا (ن ، زَكاءً) نما و زاد . طاب

تلطف للأمر و في الأمر و بالأمر : تصرف فيه بِلُطفٍ و رِفْقٍ

تَلطَّفَ بفلان : احتالَ له حتى اطَّلعَ على أسراره — তার ভিতরের খবর জানার জন্য তার সঙ্গে কৌশলপূর্ণ আচরণ করলো।

بيان الإعراب

ذات اليمين : أي جهةَ اليمين ، ظرف منصوب بـ : نقلب .

لوليتَ منهم فرارًا و لملئت منهم رعبا : منهم الأولى تتعلق بـ : وليت أو بـ :

فِرارًا، و فرارا مفعول مطلق، لأن معنى وَلَّيتَ : فَرَرْتَ، أو نائب عن المفعول المطلق، لأنه مرادف لمصدرِ وَلَّيت . و الغرض منه توكيد الفعل، أو هو مصدر في موضع الحال، أي : فارًّا .

و منهم الثانية تتعلق بـ : رُعبا، و رعبا تمييز .

كذلك : الكاف حرف جر يتعلق بمصدر محذوف، هو مفعول مطلق، عامِلُه بعثناهم، أو هو اسم بمعنى مثل في محل نصب نائب عن المفعول المطلق، و الإشارة بـ : ذلك إلى التنويم، أي : بعثناهم بعثا كما أنمناهم/ أو مثلما أنمناهم

كم لبثتم : كم اسم استفهام مبني، في محل نصب على الظرفية الزمانية، و تمييزه مقدر، أي كم يوما

فابعثوا أحدكم بورقكم هذه : هذه بدل من ورقكم، و قال البعض : هي صفة للورق

بورقكم متعلق بـ : ابعثوا، أو بمحذوف حال من أحدكم، و الباء للملابسة و المصاحبة، أي : متلبسا بها و مصاحبا لها .

أيُّها أزكى طعاما : أي : أيُّ أهلِ المدينَة، فأيٌّ اسم استفهامٍ مبتدأ، خبره أزكى، و طعاما تمييز، و الجملة الاسمية في محل نصب مفعول به لـ : ينظر

برزق منه : منه متعلق بمحذوف، نعت لـ : رزق، أي برزق مشترى من الرجل الأزكى طعاما . أو برزق معدود من الطعام .

إنهم إن يظهروا عليكم يرجموكم : و الجملة الشرطية - المكونة من الشرط و جوابه - في محل رفع خبر إن

في ملتهم : أي إلى ملتهم، و إيثار كلمة في على كلمة إلى، للدلالة على معنى الاستقرار .

اعثرنا عليهم : المفعول به محذوف، أي : الناس، و ضميرُ لِيَعلَموا عائد على : الناس .

إذ يتنازعون : الظرف مفعول به لفعل محذوف، أي : اذكر، و أمرَهم منصوب بنزع الخافض، أي : اذكر وقتَ تنازُعِ القوم الذين عَثَروا

على أصحاب الكهف في أمر أصحاب الكهف

ابنوا عليهم بنيانا : أي : على باب كهفهم، و بنيانا مفعول به، و هو مصدر بمعنى ما يُبْنَى

ربهم أعلم بهم : الضمير يعود على أصحاب الكهف، و الجملة من مقول الذين دعوا إلي بناء البنيان، و كانوا كفارا ·

غلبوا على أمرهم : أي أهل الحكومة، و كانوا مؤمنين ·

الترجمة

আর (তুমি যদি তাদেরকে দেখতে তাহলে) ধারণা করতে তাদেরকে জাগ্রত, অথচ তারা (ছিলো) নিদ্রিত। আর আমি পার্শ্বপরিবর্তন করাচ্ছিলাম তাদেরকে, (কখনো) ডান দিকে এবং (কখনো) বাম দিকে। আর তাদের কুকুর তার বাহুদ্বয় প্রসারিত করে ছিলো (গুহার) অঙ্গনে। যদি উঁকি দিতে তুমি তাদের দিকে তাহলে অবশ্যই তুমি তাদের থেকে পিছন ফিরে পালিয়ে যেতে, আর অবশ্যই তুমি আচ্ছন্ন হয়ে যেতে তাদের ভয়ে।

আর অনুরূপভাবে পুনঃজাগ্রত করেছিলাম আমি তাদেরকে যেন তারা জিজ্ঞাসাবাদ করে নিজেদের মাঝে। তাদের (মধ্য হতে) একজন বললো, কত (সময়) অবস্থান করেছো তোমরা? তারা (তাদের একদল) বললো, অবস্থান করেছি আমরা একদিন বা দিনের কিছু অংশ। তারা (তাদের অন্যদল) বললো, তোমাদের প্রতিপালকই অধিক অবগত তোমাদের অবস্থানকাল সম্পর্কে। এখন পাঠাও তোমরা তোমাদের একজনকে তোমাদের এই রৌপ্যমুদ্রা দিয়ে শহরে; অনন্তর সে যেন খোঁজ করে (যে,) শহরের কার খাদ্য পূর্ণ হালাল। অনন্তর সে যেন তোমাদের জন্য নিয়ে আসে ঐ খাবার হতে কিছু খাদ্য। আর সে যেন কুশলতার পরিচয় দেয় এবং যেন জানতে না দেয় তোমাদের সম্পর্কে কাউকে। কেননা যদি তারা কাবু পেয়ে যায় তোমাদের উপর তাহলে তোমাদেরকে পাথর ছুঁড়ে মেরে ফেলবে, কিংবা ফিরিয়ে নেবে তোমাদেরকে নিজেদের ধর্মে। আর তখন তোমরা কখনো কিছুতেই সফলকাম হবে না। আর এভাবেই আমি (মানুষকে) তাদের বিষয়ে অবগত করলাম যেন তারা বিশ্বাস করে যে, আল্লাহর ওয়াদা চিরসত্য, আর কিয়ামত, তাতে নেই কোন সন্দেহ।

(আর ঐ সময়টি স্মরণযোগ্য) যখন তারা (সন্ধান লাভকারীরা) বিবাদ করছিলো নিজেদের মাঝে আছহাবে কাহফের বিষয়ে। অনন্তর তারা (তাদের একদল) বললো, নির্মাণ করো তোমরা তাদের স্থানে একটি স্মৃতিসৌধ। তাদের প্রতিপালকই তাদের সম্পর্কে পূর্ণ অবগত। যারা প্রবলতা লাভ করলো নিজেদের বিষয়ে, তারা বললো, আমরা তো অবশ্যই নির্মাণ করবো তাদের স্থানে একটি মসজিদ।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) আর (তুমি যদি তাদেরকে দেখতে তাহলে) ধারণা করতে তুমি তাদেরকে জাগ্রত। – তাফসীরে রূহুল মাআনীর হাওয়ালা দিয়ে থানবী (রহ) এভাবে বন্ধনীযুক্ত তরজমা করেছেন।

(খ) و هم رقـود (অথচ তারা [ছিলো] নিদ্রিত) এখানে واو এর তরজমা কেউ কেউ করেছেন, কিন্তু, থানবী (রহ) লিখেছেন, حالانکه (অথচ) এটাই তারকীবের দাবী।
অতীতের বিষয় হিসাবে বন্ধনীতে 'ছিলো' যোগ করা হয়েছে।

(গ) ذراعيه (বাহুদ্বয়) যেহেতু رجل এর পরিবর্তে ذراع ব্যবহার করা হয়েছে, সেহেতু 'বাহুদ্বয়' তরজমা করাই সঙ্গত। শায়খায়ন তাই করেছেন। যারা 'পা' তরজমা করেছেন তাদেরকে 'সম্মুখের' এই অতিরিক্ত শব্দ যোগ করতে হয়েছে।

(ঘ) لو اطلعت عليهم (যদি উঁকি দিতে তুমি তাদের দিকে তাহলে ...) একটি তরজমায় আছে, 'তুমি তাদের দিকে তাকালে' এ তরজমার প্রথম ত্রুটি এই যে, এখানে شرط এর তরজমায় সংকোচনের শৈলী গ্রহণ করা হয়েছে, অথচ যেখানে চিত্রটিকে ধীরে ধীরে এবং পূর্ণমাত্রায় ফুটিয়ে তোলা উদ্দেশ্য হয় এবং কোন বিষয়ের প্রতি গুরুত্ব আরোপ করা উদ্দেশ্য হয় সেখানে شرط এর সম্প্রসারিত শৈলী ব্যবহার করা উত্তম।
দ্বিতীয় ত্রুটি এই যে, إطلاع এর মাঝে উঁকি দেয়ার বা চোখ তুলে দৃষ্টি প্রসারিত করার অর্থ রয়েছে, নিছক তাকানোকে إطلاع বলে না।

(ঙ) ملئت منهم رعبا (আচ্ছন্ন হয়ে যেতে তুমি তাদের ভয়ে) ملئتِ এর মাঝে পূর্ণ হওয়ার এবং ভরে যাওয়ার অর্থ রয়েছে।

সুতরাং 'ভরে যেতো তোমার মাঝে তাদের ভিতি।' – এ তরজমা তারকীবানুগ না হলেও শব্দানুগ, তবে সহজ সাবলীল নয়।

থানবী (রহ) লিখেছেন, তোমার ভিতরে তাদের ভয় ভীতি ছেয়ে যেতো।

এটি অপেক্ষাকৃত সুন্দর তরজমা, এবং এটিকে অবলম্বন করেই কিতাবের তরজমাটি করা হয়েছে। ফলে তা আরো সুন্দর হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, 'তাদের ভয়ে তুমি আতংকগ্রস্ত হয়ে যেতে'। এটি মূলানুগ তরজমা নয়।

(চ) بعثنا (পুনঃজাগ্রত করেছিলাম) এর তরজমা সকলেই করেছেন 'জাগ্রত করেছি'। কিন্তু মূল শব্দে এ ভাব রয়েছে যে, এই দীর্ঘ নিদ্রার আগে তারা যেমন জাগ্রত ছিলো, তাদেরকে পুনরায় সেই জাগ্রত অবস্থার দিকে ফেরানো হয়েছে। অন্যথায় بعثنا এর পরিবর্তে أيقظنا বলাই যথেষ্ট ছিলো।

(ছ) قالوا (তারা [তাদের একদল] বললো,) বন্ধনী দ্বারা এ দিকে ইঙ্গিত করা হয়েছে যে, মূল আয়াতে শুধু যমীর রয়েছে, যা তাদের একাংশের দিকে প্রত্যাবর্তন করেছে। সুতরাং যদি তরজমা করা হয়, 'তাদের একদল বললো/ কেউ কেউ বললো', তাহলে তাহলে শব্দানুগ না হলেও তরজমা গ্রহণযোগ্য হবে।

(জ) قال قائل منهم (তাদের মধ্য হতে একজন বললো)– বাংলা তরজমায় قائل এর মূল প্রতিশব্দ ব্যবহার করার সুযোগ নেই। উর্দূতে রয়েছে, তাই থানবী (রহ) লিখেছেন, ان میں سے ایک کہنے والے نے کہا (তাদের মধ্য হতে এক 'বলনেওয়ালা' বললো।

(ঝ) أيها أزكى طعاما (শহরের কার খাদ্য পূর্ণ হালাল) কিতাবে যে তারকীব উল্লেখ করা হয়েছে, এ তরজমা সেই তারকীব অনুসারে করা হয়েছে।

থানবী (রহ) তরজমা করেছেন, 'কোন্ খানা' হালাল। এ তরজমা করা হয়েছে أي الأطعمة أزكى এই তারকীব অনুসারে অর্থাৎ তামীযটি মূলত مضاف إليه ছিলো।

أزكى এর তরজমা 'উত্তম' করা ঠিক নয়। কারণ বিষয়টি

ছিলো হালাল-হারামের, উত্তম অনুত্তমের নয়।

(ঞ) فليتنظر (যেন সে খোঁজ/অনুসন্ধান করে) এটি থানবী (রহ)-এর তরজমা। শায়খুলহিন্দ লিখেছেন, যেন সে দেখে, এই দেখা চোখের দেখা নয়, চিন্তার দেখা।

(ট) وليتلطف (আর যেন সে কুশলতার পরিচয় দেয়) থানবী (রহ) লিখেছেন, যেন সে সুচারুরূপে কাজ করে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, যেন সে বিচক্ষণতার সাথে কাজ করে। তিনটি তরজমাই কাছাকাছি, তবে 'কুশলতা' শব্দটি সর্বোত্তম।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, যেন সে নম্রভাবে যায়– এ তরজমায় মূল বক্তব্যটি আসেনি।

(ঠ) إن يظهروا عليكم (যদি তারা কাবু পেয়ে যায় তোমাদের উপর) শায়খায়ন তরজমা করেছেন, যদি তারা তোমাদের খবর পেয়ে যায়– এ তরজমা গ্রহণযোগ্য, তবে ظهور এর পর على অব্যয়টি বিজয়ী হওয়া ও আধিপত্য বিস্তার করা বোঝায়। সেজন্য কিতাবে ঐ তরজমা করা হয়েছে।

একটি বাংলা তরজমায় আছে, যদি তারা তোমাদের বিষয় জানতে পারে। এটি মূল থেকে দূরবর্তী তরজমা, যার প্রয়োজন নেই।

أسئلة :

١ – اشرح كلمة ذراع

٢ – اشرح إعراب فرارًا

٣ – أعرب قوله : كذلك بعثناهم

٤ – بم يتعلق قوله : بورقكم

٥ – ذراعيه এর তরজমা পর্যালোচনা করো

٦ – بعثنا এর তরজমা পর্যালোচনা করো

(٨) و وُضِعَ الكتٰبُ فَتَرى المجرمين مُشفِقين مما فيه و يقولون يٰوَيْلَتَنا مَالِ هذا الكتٰبِ لا يُغادر صغيرةً و لا كبيرةً إلَّا أَحْصٰها ، و وَجَدوا ما عَمِلوا حاضِرًا ، و لا يَظلِم ربك أحَدًا * و

إِذْ قُلنا لِلْمَلٰئِكة اسْجُدوا لِاٰدمَ فَسَجدوا إِلَّا إِبليسَ، كان مِنَ الجِنِّ فَفَسَق عن أَمر ربه، أَ فَتَتخِذونه و ذريته أَولياءَ مِن دوني وَ هم لكم عدو، بِئس لِلظّٰلمينَ بَدَلا *

بيان اللغة

مشفقين (خائفين)، أشفَقَ منه : خافَه و حَذِرَ منه
أشفق عليه : خاف عليه و عَطَف عليه،
يا وَيْلَتَنا (يا حَسْرَتنا) و الويلَةُ كالوَيْلِ : الهلاك . لايغادر : لا يترك
فَسَقَ (ن، فِسْقًا و فُسوقا) عَصٰى و جاوَز حُدودَ الشرع .
يقال : فَسَق عن أمر ربه : خرَج عن طاعَتِه .

بيان الإعراب

يٰويلَتَنا : شُبِّه الويلَةُ بشَخْصٍ يُطلَب إقبالُه، كَأَنَّه قيل : يا هَلاكَنا أَقْبِل، فَهٰذا أوانُكَ، و المراد إظهارُ التحسُّرِ .
لكم عدو : حرف الجر يتعلق بـ : عدو، أو بمحذوف، حال مقدمة من عدو .
بِئْسَ : فعلٌ ماضٍ جامد لإنشاء الذم، و فاعِلُه ضمير مستَتِرٌ مفسَّر بِنَكِرَةٍ بعدَه، و هي بَدَلاً .
و للظالمين متعلق بـ : بدلا، أو بحال محذوفة. و هي في الأصل صفة لـ : بدلا، و المخصوص بالذم محذوف، أي : إبليسُ .
و المعنى : بِئسَ البَدَل من الله إبليسُ لمن استَبْدَلَه فأطاعَه بَدَلَ طاعَتِه .

الترجمة

আর রেখে দেয়া হবে আমলনামা (তাদের সামনে) তখন দেখতে পাবেন আপনি অপরাধীদেরকে, সন্ত্রস্ত, ঐ বিষয় থেকে যা তাতে (লিপিবদ্ধ) রয়েছে। আর তারা বলবে হায়, আমাদের বরবাদি! কী অদ্ভূত এ আমলনামা, না বাদ দিয়েছে কোন ছোট গোনাহ, না কোন বড় গোনাহ, বরং সবই শুমার করে রেখেছে! আর পাবে তারা তাদের কৃতকর্ম (আগাগোড়া) উপস্থিত। কারণ যুলুম করেন না

আপনার প্রতিপালক কারো প্রতি। আর (স্মরণ করুন ঐ সময়কে) যখন আমি বললাম ফিরিশতাদেরকে, সিজদা করো তোমরা আদমকে, তখন তারা সিজদা করলো, ইবলীস ছাড়া। সে ছিলো জ্বিন সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত। তাই সে বের হয়ে গেলো তার প্রতিপালকের আনুগত্য থেকে। তবু কি গ্রহণ করবে তোমরা তাকে এবং তার অনুচরদেরকে বন্ধুরূপে আমার পরিবর্তে, অথচ তারা তোমাদের শত্রু। যালিমদের জন্য কত নিকৃষ্ট বদল সে।

ملاحظات حول الترجمة

(ক) وضع الكتاب (আর রেখে দেয়া হবে আমলনামা) শায়খুলহিন্দ (রহ) তরজমা করেছেন, 'হিসাবের কাগজ' – হিসাব এবং কাগজ কোনটাই الكتاب এর তরজমা নয়। এবং এটি الكتاب এর ব্যবহৃত প্রতিশব্দও নয়। ব্যবহৃত প্রতিশব্দ হচ্ছে 'আমলনামা'।

একটি বাংলা তরজমায় আছে– উপস্থিত করা হবে। এটি আক্ষরিক অনুবাদ নয়, এবং এই শব্দ পরিবর্তনের প্রয়োজনও ছিলো না।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, 'রাখা হবে', আর থানবী (রহ) লিখেছেন, রেখে দেয়া হবে।

কেয়ামতের দিন তো আল্লাহর আদালত কায়েম হবে যেখানে বান্দাদের বিচার হবে। আর 'রেখে দেয়া হবে আমলনামা' এ তরজমায় আদালতের ভাব ফুটে উঠেছে।

(খ) ما لهذا الكتاب (কী অদ্ভু এ আমলনামা!) তাদের এ প্রশ্নে বিস্ময়ের চেয়ে বেশী রয়েছে হতাশা ও নৈরাশ্যের ভাব। তরজমায় সেটাই ফুটিয়ে তোলার চেষ্টা করা হয়েছে। যদি তরজমা করা হয়, 'এ আমলনামার হলো কী! তাহলে বিস্ময়ের এবং ক্ষোভের ভাব প্রধান হয়।

শায়খুলহিন্দ (রহ) লিখেছেন, کیسا ہے یہ کاغذ (কেমন এই কাগজ!)

থানবী (রহ) লিখেছেন, এই আমলনামার অবস্থা তো বড় অদ্ভুত!

(গ) و لا يظلم (কারণ ....) বাক্যটি হচ্ছে পূর্ববর্তী বাক্যের হেতু। সেহেতু واو এর এ তরজমা করা হয়েছে। واو কে استئنافية ধরে তরজমা করা যায় 'আর'।

(ঘ) مما فيه (ঐ বিষয় থেকে) من এর মাজরূরটি হচ্ছে ভয়ের বস্তু বা ভয়ের বিষয়। ভয়ের কারণ নয়, সুতরাং এ তরজমা ঠিক নয়, 'ঐ বিষয়ের কারণে যা ....'।

أسئلة :

١ - اشرح كلمة فَسَقَ

٢ - أعرب قوله : ما عملوا

٣ - ما إعراب كلمة حاضرا

٤ - أعرب قوله : من دوني

٥ - وُضِعَ এর তরজমা আলোচনা করো

٦ - ما لهذا الكتاب এর তরজমা পর্যালোচনা করো

تم بعون الله